THE NEW TESTAMENT OF OUR LORD AND SAVIOUR JESUS CHRIST,

IN THE

HINDI´ LANGUAGE.

TRANSLATED FROM THE GREEK

BY

THE CALCUTTA BAPTIST MISSIONARIES,

WITH NATIVE ASSISTANTS.

CALCUTTA:

PRINTED AT THE BAPTIST MISSION PRESS, CIRCULAR ROAD, FOR THE BIBLE TRANSLATION SOCIETY, AND THE AMERICAN AND FOREIGN BIBLE SOCIETY.

1848.

धर्म्मपुस्तकका अन्तभाग।

अर्थात्

प्रभु यीशु खीष्टके चार सुसमाचार

और

प्रेरितोंकी क्रियाओंका बिवरण

और

उपदेशादिक औ भविष्यद्वाक्यका पत्र।

यूनानीय भाषासे हिन्दीभाषामें किया गया;

और

इंगलंडदेशीय धर्म्मसमाजके उपकारसे छापा ऊआ।

कलकत्ता

हिंदुस्थानी सन १९०५ यीशवी सन १८४८

सूची पत्र।

मथिलिखित सुसमाचार।

१ पहिला अध्याय।

खीष्ट की बंशावलि।

१ इब्राहीमका सन्तान दायूद्, उसका सन्तान यीशु खीष्ट,
२ उसकी बंशावली यही है। इब्राहीमका पुत्र इस्हाक्; इस-
हाकका पुत्र याकूब्; याकूबका पुत्र यहूदा औ उसके भाई।
३ तामर औ यहूदासे फारिस् और सारह जन्मे; इसी फारिस-
४ का पुत्र हिस्रोण्; हिस्रोणका पुत्र अराम्; अरामका
पुत्र अम्मीनादब्; अम्मीनादब्का पुत्र नहशोन्; नहशोनका
५ पुत्र सल्मोन्। राहब् औ सल्मोनसे बोयस जन्मा; रूत्
६ औ बोयस से ओबेद् जन्मा; ओबेदका पुत्र यिशय्। यिशय-
का सुत दायूद् राजा; दायूद राजा औ ऊरियकी बिधवासे
७ सुलिमान जन्मा। सुलिमानका पुत्र रिहबियम्; रिहबि-
८ यमका पुत्र अबिय; अबियका पुत्र आसा। आसाका पुत्र
यिहोशाफट्; यिहोशाफटका पुत्र यिहोरम्; यिहोरमका
९ सन्तान उसिय। उसियका पुत्र योथम्; योथमका पुत्र
१० आहस्; आहसका पुत्र हिस्किय। हिस्कियका पुत्र मनशि;
११ मनशिका पुत्र अमोन्; आमोनका पुत्र योशिय। और
बाबिल् नगरको जानेके समय उसी योशियके सन्तान यिख-
१२ निय औ उसके सब भाई। बाबिल्को जाने के पीछे यिखनिय-
का पुत्र शियल्तियल्; शियल्तियलका पुत्र सिरुबाबिल्।
१३ सिरुबाबिलका पुत्र आबिहूद्; आबिहूदका पुत्र इलियाकीम्
१४ इलियाकीमका पुत्र असोर्। असोरका पुत्र सादोक्; सादोक-
१५ का पुत्र आखीम्; आखीमका सुत इलीहूद्। इलीहूदका पुत्र
इलियासर्; इलियासरका सुत मत्तन्; मत्तनका पुत्र याकूब्।

याकूबका पुत्र युसफ्, वह मरियमका स्वामी था; इसी १६ मरियम्से यीशु उत्पन्न ऊआ जो खीष्ट कहावता है। सो इब्राहीमसे दायूद तक् चौदह पीढ़ी; और दायूदसे लेके १७ बाबिलको जाने लों चौदह पीढ़ी; और बाबिलको जानेके समयसे खीष्ट तक् चौदह पीढ़ी।

और उसके जन्म की कथा।

यीशु खीष्टके जन्मकी बात यही है। उसकी माता मरियम् १८ युसफसे बचनदत्त ऊई; दोनोंके एकठे होनेके पहिले मरियम पवित्र आत्मासे गर्भवंती पाई गई। इसपर उसके स्वामी १९ युसफने, जो भला मनुष्य था, उसपर प्रगटमें दोष लगाने न चाहके उसे चुपकेसे त्यागने ठहराया। जब वह इन बातोंकी २० चिन्ता करता था, देखो, प्रभुके किसी दूतने स्वप्नमें उसे दर्शन देके कहा कि हे दायूदके सन्तान युसफ, तू अपनी स्त्री मरियम्को अपने यहां लानेसे मत डर क्योंकि जो उसमें है सो पवित्र आत्मासे ऊआ है; वह पुत्र जनेगी, और तू उसका २१ नाम यीशु (अर्थात् त्राणकर्ता) रखेगा; वह अपने लोगोंको २२ उनके पापोंसे त्राण करेगा। इसीमें यही बात पूरी ऊई जो प्रभु ने भविष्यद्वक्ताके मुखसे कही थी अर्थात कि देखो, कोई कुआंरी २३ गर्भवंती होके पुत्र जन्मावेगी, जिसका नाम इम्मानुयेल होगा, अर्थात् ईश्वर हमारे संग। पीछे युसफने नींदसे उठ कर २४ वैसा ही किया जैसा प्रभुके दूतने उसे कहा; वह अपनी स्त्रीको अपने यहां लाया; परंतु जबतक मरियम अपने पहि- २५ लौटा पुत्र न जनी तबतक युसफ उसके निकट न गया; पीछे उसने अपनी स्त्रीके पुत्रका नाम यीशु रखा।

२ दूसरा अध्याय।

ज्योतिषियोंका पूरबसे यिरूशालममें यीशुके खोजके लिये आना।

जब हेरोद् राजाके समयमें यहूदा देशके बैत्लिहिम् नगर १ में यीशुका जन्म ऊआ, तो देखो, किसी किसी ज्योतिषियोंने पूरबसे यिरूशालम नगरमें आयके कहा कि यहूदियोंका राजा २

जिसने जन्म लिया है वह कहां है? हमने पूरबमें रहके उसका तारा देखा है, और उसको प्रणाम करने आए हैं।
३ हेरोद राजाने ये बातें सुनके, यिरूशालम नगरके सब निवासी
४ समेत, घबराया गया; और सब प्रधान याजकों औ अध्यापकोंको
५ बुलाके पूछा कि खीष्ट कहां जन्मेगा? उन्होंने उससे कहा कि यहूदा देशके बैत्लिहिम नगरमें क्योंकि भविष्यद्वक्ताने ऐसा
६ लिखा है कि हे यहूदा देशकी बैत्लिहिम नगरी, यहूदा देशकी सकल राजधानियोंमें तू सबसे छोटी नहीं है क्योंकि तुझमेंसे एक राजा निकलेगा, जो मेरे इस्रायेली लोगोंको
७ पालन करेगा। तब हेरोद राजाने उन ज्योतिषियोंको चुपकेसे बुलाके उनसे ठीक पूछा कि वह तारा किस समय
८ देखाई दिया? औ उसने उनको बैत्लिहिम नगरको यह कहके भेजा कि जाके यत्न करके बालकका ठिकाना करो, और उसे पाकर मुझे संदेश पहुंचाओ कि मैं भी वहां आयके
९ उसको प्रणाम करूं। पीछे वे हेरोद राजाकी बात सुनके चले गए; और देखो, जो तारा उन्होंने पूरब से देखा था वही उनके आगे२ जा कर जिस स्थानमें वह बालक था उसी
१० स्थानके उपर पहुंचकर ठहर गया। यह देखकर वे महा
११ आनन्दित हुए। तब उन्होंने घरमें पैठकर बालकको, उसकी माता मरियम समेत, देखके प्रणाम किया; और अपने धनका
१२ डिब्बा खोलके सोना औ लोबान औ गन्धरस भेंट दिई। पीछे हेरोद राजाके समीप फिर न जाना, यह उन्हें स्वप्नमें ईश्वरसे कहा गया, इस लिये वे दूसरी मार्गसे अपने देशको चले गये।

और युसफका यिशु औ मरियमको मिसरमें ले जाना।

१३ जानेके पीछे देखो, प्रभुके दूतने स्वप्नमें युसफको दर्शन देके कहा कि उठ, बालक औ उसकी माताको लेके मिसर देशको भाग; जबलों मैं तुझे न कहूं तबलों वहां रह क्योंकि
१४ हेरोद राजा बालकको मार डालनेको ढूंढेगा। इसपर युसफ नींदसे उठके बालक औ उसकी माताको ले रातको मिसर देशको चला गया, और हेरोद राजाके मरने तक वहां रहा;

इसीरीति यही बचन, जो ईश्वरने भविष्यद्वक्तासे कहा था, पूरा ज़ुआ, अर्थात् कि मैंने मिसर देशमेंसे अपने पुत्रको १५ बुलाया है।

हेरोद राजाका बैत्‌लिहिम नगरके बालकोंको बध कर्ना।

जब हेरोद राजाने देखा कि ज्योतिषीयोंने मुझसे ठट्टा १६ किया है तो वह बड़ा क्रोधी ज़ुआ, और मनुष्योंको भेजके सब बालकोंको, जो बैतलिहिम नगरमें औ उसके सारे सिवानोंमें थे, मार डालवाया, क्या दो बरसके क्या दो बरससे छोटे थे, उस समयके समान कि उसने ज्योतिषीयोंसे पूछा था। इसी- १७ रीति यही बचन, जो यिरमिय भविष्यद्वक्ताने कहा था, पूरा ज़ुआ, अर्थात् कि रामायुरमें रोना औ शोक औ बिलापका शब्द सुना गया है, राहेल स्त्री अपने बालकोंके लिये रोते रोते १८ किसी प्रकारसे शांत होने नहीं चाहती है क्योंकि वे नहीं हैं।

युसफका योशु औ मरियम्‌को मिसरमें फेर जाना औ नासिरित्‌में बसाना।

हेरोद राजाके मरनेके पीछे देखो, प्रभुके दूतने स्वप्नमें १९ युसफको मिसर देशमें दर्शन देके कहा कि उठ, बालक और २० उसकी माताको लेके फिर इस्रायेली देशमें जा; जिन्होंने बालकको मार डालने चाहता था, सो सब मर गये हैं; २१ तब वह उठके बालक औ उसकी माताको लेके इस्रायेली देशमें आया। परंतु जब उसने सुना कि यऊदा देशमें २२ आर्खिलाय अपने हेरोद पिताके सिंहासन पर बैठके राज कर्त्ता है, तो वह वहां जानेसे डरा। सो स्वप्नमें ईश्वरसे उपदेश २३ पाके गालील् देशकी ओर जाके नासिरित् नगरमें बास किया; तिससे यही बचन, जो भविष्यद्वक्ताओंने कहा था, पूरा ज़ुआ, अर्थात कि वह नासिरतीय कहावेगा।

३ तीसरा अध्याय।

योहनका वृत्तान्त।

उस समय योहन डुबकी दिलानेहारेने यऊदा देशके १

२ दिहातमें होके उपदेश करके कहा कि मन फिराओ, स्वर्गका
३ राज निकट हुआ है। यह योहन वही है जिसके बिषयमें
यिशायिय भविष्यद्वक्ताने येही बातें कहीं हैं अर्थात कि
दिहातमें कोई यह पुकारता है कि प्रभुका पथ बनाओ
४ और उसके राज मार्ग चौरस करो। योहनका वस्त्र ऊंटके
रोमका था, उसकी कटिमें चमड़ेका पटुका था, और टिड्डी
५ औ बनका मधु उसका भोजन था। यिरूशालम नगर निवासियों
औ सब यहूदा देश औ यर्दन नदीकी चहूंओरके रहनेहारोंने
६ निकलके उसके समीप आके अपने अपने पापोंको मान करके
यर्दन नदीमें उसके हाथोंसे डुबकी लिई।

यर्दननें लोगोंको डुबकी दिलानेका समाचार।

७　परंतु जब उसने देखा कि बहुतेरे फिरूशी औ सिदूकी
लोग उसके समीप डुबकी लेनेको चले आते हैं, तो उसने
उनसे कहा कि हे सांपोंके बंश, तुमको आनेहारे क्रोधसे भाग-
८ नेको किसने चिताया है? वही फल जो फिराये हुये मनके
योग्य है सो लाओ और अपने अपने मनमें यह चिंता मत
९ करो कि हमारे पिता इब्राहीम है; मैं तुमसे कहता हूं कि
ईश्वर इन्हीं पत्थरोंसे इब्राहीमके लिये सन्तान उत्पन्न कर
१० सक्ता है; पेड़ोंके जड़ पर इस् समय कुल्हाड़ी लगी है; जिस्
पेड़पर भला फल नहीं लगता है सो काटा जाता और आगमें
११ फेंका जाता है; मैं तो तुम्हें मन फिरावनेको जलमें डुबकी
दिलाता हूं परन्तु वह जो मेरे पीछे आता है सो मुझसे बड़ा
१२ है, मैं उसकी जूती उठानेके योग्य नहीं; वह तुमको पवित्र
आत्मा औ आगमें डुबकी दिलावेगा। उसके हाथमें सूप है;
वह अपने खलिहानको झाड़ बुहारकर गेहूंको एकठा करके
खत्ते में रक्खेगा, और भूसीको, उस आगमें जो कभी नहीं
बुझती है, जलावेगा।

औ योहनका खीष्टको डुबकी दिलाना।

१३　यीशु योहनके हाथसे डुबकी लेनेको गालील् देशसे यर्दन्

के तीरपर उसके निकट आया परंतु योहनने उसको बरजके कहा कि आप क्यों मेरे निकट आता है? चाहिये कि मैं आपके हाथसे डुबकी लेऊं। यीशुने उत्तर दिया कि अब ऐसा होने दे; इसी भांतिमें सब धर्म साधन करना हमको उचित है; तिससे उसने होने दिया। जब यीशु योहनसे डुबकी पा चुका तब तुरन्त जलमेंसे निकल उपर आया, और देखो, उसके उपर स्वर्ग खुल गया; उसने ईश्वरके आत्माको कपोतकी नाईं उतर्ते अपने उपर आते देखा; और देखो, यही आकाशबाणी ऊई कि यही मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अति प्रसन्न हों। १४ १५ १६ १७

४ चौथा अध्याय।

बंचक से ख्रीष्टकी परीक्षा होनी।

तब आत्मासे यीशु बयाबानमें पऊंचाया गया कि शैतानसे परखा जाय। वह चालीस रात दिन कुछ न खाया; पीछे भूखा ऊआ। इसपर परीक्षाकर्ताने उसके समीप आके कहा कि जो आप ईश्वरका पुत्र हैं तो कहइये कि ये पत्थर रोटीआं बन जावें। यीशुने कहा कि यह लिखा है कि मनुष्य केवल रोटीसे नहीं परंतु उन सब आज्ञाओंसे जो ईश्वरके मुखसे निकलतीं हैं जीयेगा। तब शैतान् उसको पवित्र नगरमें ले गया, और मंदिरके एक कंगूरे पर चढ़ा कर कहा कि जो आप ईश्वरका पुत्र हैं तो इसपरसे अपनेको गिरा दीजिये क्योंकि यह लिखा है कि ईश्वर आपकी रक्षा करनेको अपने दूतोंको आज्ञा करेगा; वे आपको हाथों पर उठा लेंगे न हो कि आपके पांव पत्थर पर लगें। तब यीशुने उससे कहा कि यह भी लिखा है कि तू अपने प्रभु परमेश्वरकी परीक्षा न कर। फिर शैतान उसे एक अति ऊंचे पर्बतपर ले गया, और जगत्का समस्त राज्य औ उसका ऐश्वर्य्य दिखाकर बोला कि जो आप झुकके मुझे प्रणाम करें तो मैं ये सब आपको दूंगा। यीशुने उसको कहा कि हे शैतान् दूर रह क्योंकि यह लिखा है कि १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

तू अपने प्रभु परमेश्वरको प्रणाम कर, और केवल उसकी सेवा
११ कर। तब शैतान्ने उसको छोड़ गया, और देखो, स्वर्गके दूतोंने
आके उसकी सेवा किई।

उसका कफर्नाऊममें रहना।

१२ योहन कैदखानेमें डाला गया है; यह सुनके यीशु गालील
१३ देशको चला। तिस् पीछे उसने नासिरित् नगरको छोड़-
कर कफर्नाऊम नगरमें, जो समुद्रके तीर पर सिबूलन औ
१४ नप्ताली देशोंके सिवानेोंमें है, आके बास किया। इसरीति
यही बचन, जो यिशायिय भविष्यदक्ताने कहा है, पूरा ऊआ,
१५ अर्थात कि हे सिबलून औ नप्ताली देश जो समुद्रके समीप
औ यर्दन नदीके पार है अर्थात अन्यदेशीयोंके गालील् देश,
१६ तेरे लोग जो अंधेरेमें बैठे थे, बड़ी ज्योतिको देखेंगे और जो
मृत्युके देश औ छायामें बैठे थे, उनपर ज्योति चमकेगी।

उसका सुसमाचार प्रकाश कर्ना।

१७ उसी समयसे यीशु सुसमाचार प्रचार कर यह बात कहने
लगा कि अपना मन फिराओ; स्वर्गका राज्य निकट
ऊआ है।

पितर औ आंद्रिय औ याकूब औ योहनको बुलाना।

१८ जब यीशु गालील देशके समुद्रके तीर पर फिरता था
उसने दो भाईयोंको अर्थात शिमोनको जो पितर कहलाता
है, और उसके भाई आंद्रियको समुद्रमें जाल डालते देखा
१९ क्योंकि वे मछुवे थे। उसने उनसे कहा कि मेरे पीछे आओ,
२० मैं तुमको मनुष्योंके मछुवे बनाऊंगा। तब वे तुरंत जालोंको
२१ छोड़ उसके पीछे चले। और वहांसे बढ़के उसने दो और भाई-
योंको अर्थात् सिबदीके पुत्र याकूब औ योहनको अपने पिता
सिबदीके संग नाव पर बैठे ऊए अपने जाल सुधारते देखकर
२२ बुलाया। वे तुरन्त नाव औ अपने पिताको छोड़ उसके पीछे
चले।

खीष्टके हाथसे रोगियोंके चंगा होना।

२३ तिस् पीछे यीशु मंदिरोंमें उपदेश कर्ते ऊए, ईश्वरके

राज्यका सुसमाचार प्रचार कर्ते ऊए, और लोगोंके सब प्रकार-
के रोग औ सब प्रकारकी पीड़ा चंगे कर्ते ऊए, गालील
देशमें फिरने लगा। और सब सुरिया देशमें उसकी चर्चा २४
फैल गई। तब लोग उन् रोगियोंको जो नाना प्रकारक
रोगोंसे दुःखी थे और भूतग्रस्तों और मिरगिहों और अर्धां-
गियोंको उसके समीप लाए और उसने उनको चंगा किया।
और गालील औ दिकापलि औ यिरूशालम् और यहूदा २५
देश औ यर्दन नदीके पारसे बऊत लोग उसके पीछे चले।

५ पांचवां अध्याय।

खीष्टका पर्वत पर उपदेश कर्नेका आरंभ।

यीशु लोगोंको देखकर किसी पर्वत पर चढ़ बैठा; और जब १
उसके शिष्य उसके समीप आये उसने उन्हें यों सिखलाया। २

धन्य लोग कौन हैं उसका निर्णय।

धन्य वे जो मनमें दीन हैं क्योंकि स्वर्गका राज उन्होंका है। ३
धन्य वे जो दुःखी हैं क्योंकि वे शान्ति पावेंगे। धन्य वे जो नरम ४
हैं क्योंकि वे पृथ्वीका अधिकारी होंगे। धन्य वे जो धर्मके ५
भूखे औ पियासे हैं क्योंकि वे तृप्त होंगे। धन्य वे जो दयावंत ६
हैं क्योंकि उनपर दया किई जायगी। धन्य वे जिनका मन ७
निर्मल हैं क्योंकि वे ईश्वरको देखेंगे। धन्य वे जो मेल करवैये ८
हैं क्योंकि वे ईश्वरके संतान कहावेंगे। धन्य वे जो धर्मके ९
लिये सताये जाते हैं क्योंकि स्वर्गका राज उन्होंका है। धन्य १०
तुमही हो जब मनुष्य मेरे लिये तुमको निन्दा करें औ ११
सतावें औ झूठ करके तुम्हारे विरुद्धमें सब प्रकारकी बुरी बात
कहें; उसी समय तुम आनंदित औ आह्लादित होओ क्योंकि १२
तुम स्वर्गमें बऊत फल पाओगे; उन्होंने उन भविद्वक्ताओंको,
जो तुम्हारे आगे थे, इसी रीति सताया।

खीष्टके शिष्योंका लवण और दीप्तिरूप होनेकी कथा।

तुम भूमिके लोन हो, परंतु जो लोनका स्वाद जाता रहे तो १३
वह किसरीतिसे स्वादित किया जायगा? वह किस कामका

नहीं केवल फेंके जानेके औ मनुष्योंके पांवके नीचे रौंदे जानेके
१४ योग्य है। तुम जगतका उजियाला हो; जो नगर पर्बत पर
१५ बना है सो छिप नहीं सक्ता। लोग दीपकको बारकर ढकनेके
नीचे नहीं रखते परंतु दीअट पर रखते हैं; तब दीपक सबों-
१६ को जो घरमें हैं उजियाला देता है। तुम अपने उजियालेको
मनुष्योंके सन्मुख चमकने दो कि वे तुम्हारे सत कर्मोंको देखके
तुम्हारे स्वर्गनिवासी पिताका गुणानुबाद करें।

ईश्वरके आज्ञा बर्णन कर्नेके लिये ख्रीष्टका अवतार।

१७ मत बिचार करो कि मैं ब्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओंकी
बातें मिटानेको आया हूं, मैं उन्हें मिटानेको नहीं आया परंतु
१८ पूरी कर्नेको आया हूं। मैं तुमसे सच कहता हूं कि जबलग
आकाश औ पृथ्वी लोप नहीं हो जाय तबलग ब्यवस्थाकी एक
१९ मात्रा अथवा एक बिंदु लोप नहीं होगा। जो कोई इन्हीं आ-
ज्ञाओंमेंसे एक छोटी आज्ञाको लंघन करे औ लोगोंको वैसाही
शिक्षा देवे, सो स्वर्गके राज्यमें सबसे छोटा गिना जायगा;
परंतु जो कोई इन् आज्ञाओंको पालन करे औ वैसाही शिक्षा
२० देवे, सो स्वर्गके राज्यमें बड़ा गिना जायगा। मैं तुमसे कहता
हूं कि जो तुम्हारा धर्म्म अध्यापक औ फिरूशी लोगोंके धर्म्मसे
अधिक न होवे तो ईश्वरके राज्यमें पैठने नहीं पाओगे।

हिंसा औ क्रोध कर्नेका निषेध।

२१ तुमने सुना है कि आगेके लोगोंसे यह कहा गया है कि तू
हत्या न कर और जो कोई हत्या करे सो बिचार स्थानमें दंडके
२२ योग्य होगा; परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि जो कोई अपने
भाई पर अकारण क्रोध करे सो बिचार स्थानमें दंडके योग्य
होगा; औ जो कोई अपने भाईको भ्रष्ट कहे, सो महा बिचार
सभामें दंडके योग्य होगा; औ जो कोई उसे नास्तिक कहे
२३ सो नरकके आगके दंडके योग्य होगा। जो तू अपने नैवेद्यको
बेदीपर पहुंचावे और वहां चेत करे कि तेरे भाई तुझपर
२४ कुछ बिबाद रखता है तो बेदीके सन्मुख अपने नैवेद्यको छोड़के
चला जा; पहिले अपने भाईसे मिलाप कर, पीछे आके अपने

नवेद्यको चढ़ा। जब तक तू अपने बिबादीके संग मार्गमें है तो २५ जलदी करके उससे मिलाप कर, न हो कि वह तुझे बिचार-कर्त्ताको सौंपे और बिचारकर्त्ता तुझे पहरूओंको सौंपे और तू कैदखानेमें डाला जाय; मैं तुझसे सच कहता हूं कि जब २६ लग तू कौड़ीर भर न देवे तबलग वहांसे कभी नहीं छूटेगा।

व्यभिचार कर्नेका निषेध।

तुमने सुना है कि आगेके लोगोंसे यह कहा गया है कि तू २७ व्यभिचार न कर; परंतु मैं तुमसे कहता हूं कि जो कोई २८ किसीकी स्त्रीपर काम बासनासे दृष्टि करे, सो अपने मनमें उससे व्यभिचार कर चुका है। जो तेरा दहिना नेत्र तुझे पाप २९ करावे तो निकाल डाल क्योंकि भला है कि तेरे अंगोंमेंसे एक नाश होवे और कि तेरा सकल शरीर नरकमें न डाला जावे; और जो तेरा दहिना हाथ तुझे पाप करावे तो काट डाल ३० क्योंकि भला है कि तेरे अंगोंमेंसे एक नाश होवे और कि तेरा सकल शरीर नरकमें न डाला जावे।

यह कहा गया है कि जो कोई अपनी स्त्रीको त्याग करने ३१ चाहे सो उसको त्याग पत्र देवे; परंतु मैं तुमसे कहता हूं कि ३२ जो कोई अपनी स्त्रीको, जिसने व्यभिचार नहीं किया है, त्याग देवे सो उसे व्यभिचार करवाता है; और जो कोई उस छुड़ाई हुई स्त्रीसे बिवाह करे सो भी व्यभिचार कर्त्ता है।

हर बचनमें किरिया कर्नेका वरजना।

फिर तुमने सुना है कि आगेके लोगोंसे यह कहा गया है ३३ कि तू झूठी किरिया मत खा परंतु प्रभुके लिये अपनी किरि-योंको पूरी कर; परंतु मैं तुमसे कहता हूं कि कोई किरिया ३४ न खाओ; न स्वर्गकी क्योंकि वह ईश्वरका सिंहासन है; न ३५ भूमिकी क्योंकि वह उसके पांवओंकी चौकी है; न यिरूशालम-की क्योंकि वह महाराजकी पुरी है; न अपने सिरकी ३६ क्योंकि तू एक बालको उजला अथवा काला न कर सकता है। परंतु बोलनेमें केवल हां और ना कहीइयो क्योंकि जो कुछ ३७ कि इनसे अधिक होवे सो पापात्मासे होता है।

औ अन्याय करनेका निषेध।

३८ तुमने सुना है कि यह कहा गया है कि नेत्रकी संती नेत्र ३९ औ दांतकी संती दांत; परंतु मैं तुमसे कहता हूं कि बुराई-४० का पलटा मत लेओ; जो कोई तेरे दहिने गालपर थपेड़ा मारे तो उसकी ओर दूसरा गाल भी फिरा दे; जो कोई तुझे बिचार आसनके सन्मुख ले जाके तेरा कबा लेने चाहे तो ४१ अपना कूरता भी लेने दे; जो कोई तुझे बेगारी लेके एक ४२ कोश ले जावे तो उसके संग दो कोश चला जा; जो कोई तुझसे कुछ मांगे तो उसे दे; और जो कोई तुझसे उधार लेने मांगे तो उसे मुंह न फेर।

शत्रुयोंके संग प्रेम करनेकी व्यवस्था।

४३ तुमने सुना है कि यह कहा गया है कि तू अपने परोसीको ४४ प्यार कर और अपने बैरी से बैर कर; परंतु मैं तुमसे कहता हूं कि अपने बैरीको प्यार करो; जो तुम्हें श्राप देवें उनको आशीस् देओ; जो तुमसे बैर करें उनसे भलाई करो; और जो तुमको निन्दा करें औ सतावें उनके लिये प्रार्थना करो। ४५ सो तुम अपने स्वर्गबासी पिताके संतान होओगे; वह सत औ असत लोगों पर सूर्योदय कर्ता है और धार्मिक औ अधा-४६ र्मिकों पर मेंह बरसाता है। जो तुम केवल् उनसे प्रेम करो जो तुमसे प्रेम करता है तो तुम्हारा क्या फल होगा? क्या ४७ नीच लोग ऐसा नहीं कर्ते हैं? जो तुम केवल अपने भाई-योंको नमस्कार करो तो कौन बड़ा कर्म करते हो? क्या देव-४८ पूजक लोग ऐसा नहीं कर्ते हैं? जैसा तुम्हारा स्वर्गनिवासी पिता पूर्ण है वैसेही तुम् भी पूर्ण होओ।

६ छठवां अध्याय।

धर्म कर्मका उपदेश।

१ सावधान होओ कि तुम मनुष्योंसे देखे जानेको उनके सन्मुख अपने भले कर्मोंको न करो, नहीं तो तुम अपने स्वर्गनिवासी पितासे कुछ फल न पाओगे।

दान कर्नेका बर्णन।

जब तू दान करे तो अपने सन्मुख तुरही मत बजवाइयो; २
कपटी लोग मंदिरों औ मार्गोंमें ऐसा करते हैं कि वे मनुष्योंसे
बड़ाई पावें; मैं तुमसे सच कहता हूं कि वे अपना फल पा
चुके हैं; परंतु जब तू दान करे तो जो कुछ कि तेरा दहिना ३
हाथ कर्त्ता है सो अपने बाएं हाथको न जनाइयो। इसीरीति ४
तेरा दान गुप्त रहेगा; औ तेरा पिता जो गुप्तमें देखता है सो
प्रगटमें तुझको फल देगा।

प्रार्थना कर्नेका बखान।

जब तू प्रार्थना करे तो कपटियोंकी रीतिके अनुसार मत कर; ५
वे मंदिरों औ मार्गोंके कोनोंमें प्रार्थना करनेको खड़ा होना
भला जानते हैं क्योंकि वे मनुष्योंसे वहां देखे जाते हैं; मैं तुमसे
सच कहता हूं कि वे अपना फल पा चुके हैं। परंतु जब तू ६
प्रार्थना करे तो अपनी कोठरीमें जा औ द्वारको बंद करके
अपने पितासे, जो गुप्तमें है, प्रार्थना कर; और तेरा पिता जो
गुप्तमें देखता है सो तुझको प्रगटमें फल देगा। प्रार्थना कर- ७
नेमें देवपूजकोंकी रीतिके अनुसार बड़बड़ाओ मत; वे बूझते
हैं कि हमारे बऊत बोलने से हमारी बात सुनी जायगी;
उनकी नाईं तुम मत होओ क्योंकि जो कुछ कि प्रयोजन है सो ८
तुम्हारे मांगनेके पहिले तुम्हारा स्वर्गनिवासी पिता जानता
है। तुम इस रीति प्रार्थना करो; हे हमारे स्वर्गनिवासी ९
पिता; तेरा नाम पूज्य होवे; तेरा राज होवे; तेरी इच्छा १०
जैसी स्वर्गमें वैसी पृथ्वी पर होवे। दिनका भोजन आजही ११
हमें दे। हमारे रिणियोंको क्षमा कर जैसे हमभी अपने १२
रिणियोंको क्षमा करते हैं; और हमको परीक्षामें न डाल १३
परन्तु पापात्मासे रक्षा कर (क्योंकि राज औ पराक्रम औ
गौरब सर्बदा तेरा है। आमेन्।

जो तुम मनुष्योंका अपराध क्षमा करो तो तुम्हारा स्वर्ग १४
निवासी पिता तुम्हारे अपराध क्षमा करेगा; परन्तु जो तुम १५

मनुष्योंको अपराध क्षमा न करो तो तुम्हारा स्वर्गनिवासी पिता तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।

उपवास करनेकी रीति।

१६ उपवास करनेमें तुम कपटियोंकी नाईं अपनेको उदास रूप मत बनाओ; वे अपने मुंहको मलीन करते हैं कि वे मनुष्योंको उपवास करनेहारे दिखाई देवें; मैं तुमसे सच
१७ कहता हूं कि वे अपना फल पा चुके हैं; परंतु जब तू उपवास करे तो अपने सिरको चिकना कर, और अपने मुंहको
१८ धो; इसी रीति तू मनुष्योंको उपवास करनेहारा न दिखाई देगा परंतु अपने पिताको जो गुप्तमें है ऐसाही दिखाई देगा; और तेरा पिता जो गुप्तमें देखता है सो प्रगटमें तुझे फल देगा।

धन सञ्चय करनेका उपदेश।

१९ अपने लिये पृथिवीपर धन मत बटोरो जहां कीड़ा औ
२० काई बिगाड़ें और जहां चोर सेंध देकर चोरी करें परंतु अपने लिये स्वर्गमें धन बटोरो जहां कीड़ा औ काई नहीं
२१ बिगाड़ें औ जहां चोर सेंध दे चोरी न करें। जहां तुम्हारा
२२ धन है वहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा। शरीरका दीपक नेत्र है; जो तेरे नेत्र अच्छे होवें तो तेरा सब शरीर जोतिमय
२३ होगा परंतु जो तेरे नेत्र बुरे होवें तो तेरे सब शरीर अंधकारमय होगा। जो वह जोति जो तुझमें है अंधकार हो जावे तो वह अंधकार कैसा बड़ा होगा।

धर्मके चेष्टा करनेकी आवश्यकता।

२४ कोई मनुष्य दो स्वामीयोंकी सेवा नहीं कर सक्ता है; वह एकको प्यार करके दूसरेसे बैर करेगा अथवा एकसे लगके दूसरेको तुच्छ करेगा; तुम धनकी औ ईश्वरकी सेवा नहीं कर
२५ सक्ते हो। मैं तुमसे कहता हूं कि अपने प्राणके लिये यह चिंता मत करो कि हम क्या खायेंगे अथवा हम क्या पीयेंगे? न अपने शरीरके लिये कि हम क्या पहिरेंगे? क्या भोजनसे
२६ प्राण औ वस्त्रसे शरीर बड़ा नहीं है? आकाशके पक्षिओंको देखो; वे तो न बोते हैं, न लोते हैं, और न खत्तेमें बटोरते

हैं, तौभी तुम्हारा स्वर्गनिवासी पिता उनको खिला देता है ;
क्या तुम उनसे बड़े नहीं हो? तुम्हारे बीचमें कौन है जो २७
चिन्ता करके अपने जीनेके समय एक हाथ बढ़ा सक्ता है?
बस्त्रकी चिंता क्यों करते हो? खेतके सोसनके फूलोंको देखो, २८
वे कैसे बढ़ते हैं ; वे न परिश्रम करते हैं और न सूत काटते
हैं, तौभी मैं तुमसे कहता हूं कि सुलिमान् राजा अपने सारे २९
ऐश्वर्यमें उनमेंसे एकके तुल्य शोभित नहीं था। जो ईश्वर खेत ३०
की घासको, जो आज है और कल चूल्हेमें फेंकी जायेगी, ऐसी
शोभा देता है, तो, हे अल्प बिश्वासियो, क्या वह तुमको
नहीं पहिरावेगा? इसलिये यह चिन्ता न करो कि हम क्या ३१
खायेंगे अथवा हम क्या पीयेंगे अथवा हम क्या पहिरेंगे; देव- ३२
पूजक लोग इन सब बस्तुओंको खोज करते हैं ; और तुम्हारा
स्वर्ग निवासी पिता जानता है कि तुम्हें इन सारी बस्तुओंका
आवश्यक है। पहिले ईश्वरके राज्यका औ उसके धर्मका खोज ३३
करो, और येही समस्त बस्तु तुमको अधिक दिये जायेंगे। तुम ३४
कलके लिये चिंता न करो ; कल आपही अपने लिये चिन्ता
करेगा ; आजहीकी चिन्ता सो आजहीके लिये बस है।

७ सातवां अध्याय।

खीष्टका किसीपर दोष लगानेसे निषेध करना।

दोष न लगाओ कि तुम पर दोष न लगाया जाय क्योंकि १
जैसे तुम दोष लगाते हो तैसे ही तुम पर दोष लगाया २
जायगा ; और जिस नापसे तुम नापते हो उसीसे तुम्हारे
लिये नापा जायगा। क्यों तू उस तिनकेको, जो तेरे भाईके ३
नेत्रमें है, देखता है ; परंतु उस कड़ीको, जो तेरे नेत्रमें है, नहीं
देखता है? अथवा क्यों तू अपने भाईसे कहता है कि हे भाई, ४
रहीयो, मैं इस तिनकेको, जो तेरे नेत्रमें है, निकालूंगा;
और देखो, एक कड़ी तेरेही नेत्रमें है? हे कपटी, तू पहिले ५
अपने नेत्रसे कड़ीको निकाल डाल तब तू अच्छी रीतिसे

६ अपने भाईके नेत्रसे तिनकेको निकाल सकेगा। जो वस्तु पवित्र है उसको कुत्तोंके सन्मुख मत डालो, औ सुअरोंके सन्मुख अपने मोतियोंको मत फेंको, न होवे कि वे उन्हें अपने पांवोंसे रौंदें और फिरके तुमको फाड़ डालें।

प्रार्थना करनेका उपदेश।

७ मांगो, तो तुमको दिया जायगा; ढूंढो, तो तुम पाओगे; ८ खट्खटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जायगा। जो मांगता है सो पाता है, जो ढूंढ़ता है उसे मिलता है. और जो खट्खटाता है ९ उस के लिये खोला जाता है। तुममेंसे ऐसा कौन पिता है १० जिसका पुत्र जो रोटी मांगे तो उसको पाथर देगा? अथवा ११ मछली मांगे तो उसको सर्प देगा? जो तुम जो बुरे हो अपने बालकोंको उत्तम वस्तु देने जानते हो, तो क्या तुम्हारा स्वर्गनि- १२ वासी पिता उन सबोंको, जो उससे मांगते हैं, उत्तम वस्तु नहीं देगा? सब कुछ कि तुम चाहते हो कि मनुष्य तुमसे करें सो तुम भी उनसे करो; व्यवस्था औ भविष्यद्वक्ताओंकी बातका यही सार है।

छोटे फाटकसे पैठनेका वर्णन।

१३ तुम छोटे फाटकसे पैठो क्योंकि बड़ा है वह फाटक, औ चौड़ा है वह मार्ग, जो नरकको पहुंचाता है, और बहुतेरे हैं १४ जो उससे पैठते हैं; वह फाटक भी कैसा छोटा है, औ वह मार्ग कैसा सकरा है, जो स्वर्गको पहुंचाता है; और वे जो उससे पैठते हैं कैसे थोड़े हैं।

झूठे भविष्यद्वक्ताओंसे वराव करनेका बखान।

१५ झूठे भविष्यद्वक्ताओंसे सावधान होओ; वे भेड़के भेषमें तुम्हारे निकट आते हैं परन्तु अंतरमें फाड़नेहारे भेड़िये हैं। १६ उनके फलोंसे तुम उनको जानने सकोगे; क्या मनुष्य कांटोंके १७ पेड़ोंसे दाख अथवा ऊंटकटारोंसे गूलर बटोर्ते हैं? इसीरीति हरएक उत्तम पेड़पर उत्तम फल लगता है, औ बुरे पेड़पर १८ बुरा फल लगता है; भला पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता है, १९ और न बुरा पेड़ भला फल; सब पेड़ जो बुरा फल लाता है

सो काटा औ आगमें डाला जाता है; सो तुम उन्हें उनके २० फलोंसे जानने सकोगे।

ईश्वरकी आज्ञा पालन कर्नेकी आवश्यकता।

वे जो मुझे प्रभु, प्रभु, कहते हैं, उनमेंसे हर एक स्वर्गके २१ राजमें नहीं पैठने पावेगा परंतु वही जो मेरे स्वर्गनिवासी पिताकी इच्छापर चलता है सोई स्वर्गके राजमें पैठेगा। उसी २२ दिनमें बज्रतेरे मुझे कहेंगे कि हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने आपके नामसे भविष्यद्वाक्य नहीं कहा, और आपके नामसे भूतोंको नहीं दूर किया, औ आपके नामसे बज्रत आश्चर्य कर्म नहीं किया? तब मैं उनको यह उत्तर देऊंगा कि हे दुष्कर्मकारियो, २३ मैंने तुमको कभी नहीं जाना; मेरे निकटसे दूर होओ।

ज्ञानी और अज्ञानीका दृष्टान्त।

जो कोई मेरी ये बातें सुनके पालन कर्ता है, मैं उसको उस २४ बुद्धिमान से उपमा देऊंगा जिसने चटानपर अपने घर बनाया; जब जल बरसा और बाढ़ आई औ आंधी चली, २५ औ उस घरपर लगी तो वह न गिरा क्योंकि वह चटान पर बनाया गया था। परंतु जो कोई मेरी ये बातें सुनकर पालन २६ न करे सो उस मूर्खसे उपमा दिया जायगा जिसने बालूपर अपना घर बनाया। जब जल बरसा औ बाढ़ आई औ आंधी २७ चली औ उस घरपर लगी तो वह गिरा और उसका गिर्ना भयानक था।

ख्रीष्टके उपदेशकी समाप्ति।

जब यीशु ये बातें कह चुका तो लोगोंने उसके उपदेशसे २८ आश्चर्य्य ज्ञान किया क्योंकि उसने अध्यापकोंके समान नहीं २९ परंतु अधिकारीके ऐसा उन्हें सिखाता रहा।

८ आठवां अध्याय।

ख्रीष्टका कुष्ठीको चंगा कर्ना।

जब वह उस पर्वतसे उतरा बज्रतसे लोग उसके पीछे हो १

२ लिये और देखो, किसी कोढ़ीने आके उसको प्रणाम करके कहा कि हे प्रभु, जो आप चाहें तो मुझे पवित्र कर सक्ते हैं।
३ यीशुने हाथ बढ़ायके उसको छूआ और कहा कि मेरी इच्छा
४ है कि तू पवित्र हो जा; तुरंत उसकी कोढ़ जाती रही। तब यीशुने उससे कहा कि देख, किसीसे न कहियो, परंतु याजक के निकट जाके अपनेको दिखाइयो, और वही दान, जो मूसाने ठहराया है, सोई चढ़ा कि पवित्र होनेका प्रमाण लोगोंको दिया जावे।

दलपतिके एक दासको चंगाकर्ना।

५ जब यीशु कफर्नाहूम् नगरमें पैठता था किसी सूबादारने
६ उसके समीप आके यह बिनती किई कि हे प्रभु, मेरा सेवक
७ अर्द्धांगी होके अति पीड़ित घरमें पड़ा है। यीशुने उससे
८ कहा कि मैं आके उसको चंगा करूंगा। सूबादारने यीशुको उत्तर दिया कि हे प्रभु, मैं इस योग्य नहीं कि आप मेरे घरमें आवें परंतु केवल आज्ञा कीजिये तो मेरा सेवक चंगा हो
९ जायगा; मैं दूसरेके अधीन हूं तौभी जब मैं अपने सिपाहियोंमेंसे एकको कहता है कि जा, तो वह जाता है, और दूसरेको कि आ, तो वह आता है, और अपने सेवकको कि
१० यह कर, तो वह करता है। यीशुने यह सुनके आश्चर्य किया औ उनसे, जो उसके पीछे चले आते थे, कहा कि मैं तुमसे सच कहता हूं कि मैंने इस्रायेली लोगोंके बीचमें ऐसा बिश्वास
११ नहीं पाया है; और भी मैं तुमसे कहता हूं कि बहुतेरे लोग पूर्बसे औ पश्चिमसे आवेंगे, औ स्वर्गके राज्यमें इब्राहीम् औ
१२ इसहाक् औ याकूबके साथ बैठेंगे, परंतु इस राजके लोग बाहिरके अंधियारेमें डाले जायेंगे जहां रोना औ दांत किच-
१३ किचाना होगा। तब यीशुने सूबादारसे कहा कि जाइये, जैसा तेरा बिश्वास है वैसाही तेरे मंगल होगा। और उसका सेवक उसी घड़ीमें चंगा हो गया।

पितरकी सासको चंगा कर्ना।

१४ यीशुने पितरके घरमें आके देखा कि उसकी सास ज्वरसे

पीड़ित होके पड़ी है। उसने उसके हाथ छूआ; इससे १५ उसका ज्वर छूट गया; तब उसने उठके उनकी सेवा किई।

बहुतेरे रोगियोंको चंगा कर्ना।

जब सांझ हुआ लोग उसके निकट बहुतसे भूतग्रस्तोंको १६ लाये; तब उसने केवल एक बचन बोलनेसे भूतोंको दूर किया औ सब रोगियोंको चंगा किया; सो यही बात जो १७ यिशायिय भविष्यद्वक्तासे कही गई थी, पूरी हुई, अर्थात कि उसने हमारी दुर्बलताओंको ले लिया है और रोगोंको उठा लिया है।

शिष्य होनेकी रीतिका उपदेश।

यीशुने चारों ओर बहुतेरे लोगोंको देखके उस पार १८ जानेकी अपने शिष्योंको आज्ञा किई। उस समय किसी अध्या- १९ पकने आकर उससे कहा कि हे गुरु, जहां कहीं आप जावेंगे आपके पीछे मैं जाऊंगा। यीशुने उससे कहा कि २० लोमड़ियोंको मांदें हैं औ आकाशके पक्षियोंको बसेरे हैं परंतु मनुष्यके पुत्रको सिर रखनेका स्थान कुछ नहीं है। इसपीछे उसके शिष्योंमेंसे एकने उससे कहा कि हे प्रभु, २१ मुझे जाने दीजिये कि मैं अपने पिताको गाड़ू, पीछे मैं फिर आऊंगा; यीशुने उससे कहा कि होने दे कि मृतक् लोग २२ अपने मृतकोंको गाड़ने देवे; तू मेरे पीछे आ।

आंधीको निवारण कर्ना।

यीशु अपने शिष्योंके संग नाव पर चढ़ा। और देखो, २३ समुद्र में ऐसी आंधी उठी कि नाव लहरोंसे छिप गई; परंतु २४ वह नींदमें था। तब उसके शिष्योंने उसके निकट आयकर २५ उसे जगाके कहा कि हे प्रभु, हमें बचाइये, हम मरते हैं। तब उसने उनसे कहा कि हे अल्प बिश्वासियो, तुम क्यों २६ डरते हो? तब उसने उठके बयार औ समुद्रको डांटा; सो बड़ा चैन हुआ। इससे लोगोंने बड़ा आश्चर्य्य करके कहा २७ कि यह कैसा जन है कि बयार औ समुद्र उसके आज्ञा-कारी हैं।

भूतोंको दो मनुष्योंसे छुड़ा देना ।

२८ जब वह पार ऊआ अर्थात गिदेरीय देशमें पऊंचा तब दो भूतग्रस्त मनुष्य गोरस्थानमेंसे निकलके उसे मिले; वे ऐसे
२९ भयंकर थे कि उस मार्गसे कोई नहीं जा सक्ता था। देखो, उन्होंने पुकारके कहा कि हे यीशु, ईश्वरके पुत्र, हमें आपसे क्या काम है? क्या आप यहां आये हैं कि समयके आगे हमें
३० पीड़ा देवें? उसी समयमें बऊतसे सुअर उनसे कुछ दूर
३१ चरते थे। सो भूतोंने उससे बिनती कर्के कहा कि जो हमको निकाल देवें तो हमको सुअरोंके झुंडमें जाने दीजिये।
३२ उसने उनसे कहा कि जाओ। इसपर वे निकलके सुअरोंके झुंडमें गये; और देखो, सुअरोंके सारे झुंड कड़ाड़ेसे दौड़के
३३ समुद्रमें जा गिरा औ जलमें डूब मरा। तब चरानेहारे भागके और नगरमें जाके सब बातोंका, औ जो कुछ कि भूत
३४ ग्रस्तोंसे ऊआ था, उन सबोंका बर्णन किया। और देखो, नगरके सब लोग यीशुकी भेंट कर्नेको बाहिर निकले और उसको देखके यह बिन्ती किई कि आप हमारे सिवानोंसे चले जाईये।

९ नवां अध्याय ।

एक अर्द्धांगीको चंगा कर्ना औ उसका पाप क्षमा कर्णा ।

१ यीशु नाव पर चढ़के उस पार गया औ अपने नगरमें
२ आया। और देखो, कोई कोई लोग किसी अर्द्धांगीको, जो खाट पर लेटता था, उसके निकट लाये। यीशुने उनका बिश्वास देखके उस अर्द्धांगीसे कहा कि हे पुत्र, सुस्थिर हो, तेरे पाप
३ क्षमा किये गये हैं। तब किसी किसी अध्यापकोंने अपने अपने
४ मनमें कहा कि यह ईश्वरकी निंदा कर्ता है। यीशुने उनके मन की बात जानके कहा कि तुम लोग क्यों ऐसी बुरी बात अपने
५ अपने मनमें कर्त्ते हो? तेरे पाप क्षमा किये गए हैं, अथवा तू उठके चल, इन दो बातोंमें से कौन बात कहनी सहज है?
६ परंतु मैंने वही बात कही कि तुम यही जानो कि पृथ्वीपर मनुष्यके पुत्रको पाप क्षमा कर्णेकी सामर्थ्य है; तब उसने उस

अर्द्धांगीसे कहा कि उठ, अपनी खाट उठाकर अपने घरको चला जा। तब वह उठके अपने घरको चला गया। लोगोंने ७ यह देखके आश्चर्य किया और ईश्वरकी स्तुति किई क्योंकि ८ उसने मनुष्योंको ऐसी सामर्थ्य दिई थी।

मथिको बुलाना।

जब यीशु वहांसे आगे जाता था उसने किसी मनुष्यको ९ कर लेनेके स्थानमें बैठे देखा जिसका नाम मथि था; उसने उससे कहा कि मेरे पीछे आ; तब वह उठके उसके पीछे हो लिया।

उसके गेहमें भोजन कर्ना।

जब यीशु घरमें भोजन पर बैठा था तो देखो, बहुतसे कर १० लेनेहारे औ पापी लोग आके उसके और उसके शिष्योंके साथ भोजन पर बैठ गए। फिरूशियोंने यह देखके उसके शिष्योंसे ११ कहा कि तुम्हारा गुरु किस लिये कर लेनेहारों औ पापियोंके साथ भोजन कर्ता है? यीशुने यह सुनके उत्तर दिया कि १२ जो अरोग हैं उनको वैद्यका प्रयोजन नहीं परंतु उनको जो रोगी हैं; तुम जाके इसका अर्थ बूझो कि मैं यज्ञ कर्मसे १३ दयाको अधिक चाहता हूं; मैं धर्मी लोगोंको बुलाने नहीं आया परंतु मन फिरानेको पापी लोगोंको बुलाने आया हूं।

शिष्योंका उपवास न कर्नेके कारण निरपराध ठहरानेकी कथा।

उस समय योहनके शिष्योंने आकर यीशुसे कहा कि १४ फिरूशी और हम लोग बहुत बार उपवास कर्ते हैं परंतु आपके शिष्य उपवास क्यों नहीं कर्ते? यीशुने कहा, क्या बराती १५ लोग जब उनके संग दुलहा है उदास हो सक्ते हैं? परंतु दिन आवेंगे जब दुलहा उनसे अलग हो जायगा तब वे उपवास करेंगे। कोई मनुष्य कोरे कपड़ेकी थेगली पुराने वस्त्रपर १६ नहीं लगाता है क्योंकि थेगली वस्त्रको फाड़ लेती है और उसका फटना और बड़ा हो जाता है। न कोई मनुष्य पुराने १७ कुप्पेमें नये दाखका रस भरता है नहीं तो कुप्पे फट जाते हैं और दाखका रस बह जाता है, और दोनों नष्ट होते हैं;

परंतु मनुष्य नये दाखका रस नये कुप्पोंमें भरते हैं; सो दोनों बच रहते हैं।

एक स्त्री जिसको रक्तका रोग था उसको चंगा करना।

१८ जिस समय वह उनसे यह बात कहता था, देखो, किसी प्रधानने उसको प्रणाम करके कहा कि मेरी पुत्री अभी मरने पर है परंतु जो आप आकर अपना हाथ उस पर रखें तो १९ वह जीती रहेगी। यीशु उठके अपने शिष्योंके सहित उसके २० पीछे२ चला; इतनेमें किसी स्त्रीने, जो बारह बरससे लहूके बहनेसे दुःखी थी, उसके पीछे आके उसके झब्बेको छूआ। २१ स्त्रीने अपने मनमें कही थी कि जो मैं केवल उसके बस्त्रको २२ छूऊं तो मैं चंगी हो जाऊंगी। यीशुने फेरके उसको देख कर कहा कि हे पुत्री, सुस्थिर हो; तेरे बिश्वासने तुझे चंगा किया है; सो वही उसी घड़ी से चंगी हो गई।

एक प्रधानकी मृत कन्याको जीवदान करना।

२३ यीशुने उस प्रधानके घरमें पहुंच कर बजनियों और बहुत २४ लोगोंको रोते पीटते देखा; इससे उसने उनसे कहा कि अलग होओ, कन्या मरी नहीं, नींदमें है; इसपर उन्होंने २५ उससे हंसी किई। लोगोंके निकालने पर उसने भीतर जाकर २६ कन्याका हाथ पकड़ा और वह जी उठी। सो इसकी चर्चा उस सारे देशमें फैल गई।

दो अंधोंको नेत्र देना।

२७ जब यीशु वहांसे चलता था तो दो अंधे मनुष्य उसके पीछे पुकारते हुए यह बोले कि हे दायूदके संतान, हम पर कृपा २८ कीजिये। जब वह घरमें पहुंचा तब वे दोनों अंधे उसके निकट आए; यीशुने उनसे कहा कि क्या तुम बिश्वास करते हो कि मैं तुम्हारे नेत्रोंको खोल सकता हूं? वे बोले कि हां प्रभु। २९ तब उसने उनके नेत्रोंको छूके कहा कि जैसा तुम्हारा बिश्वास ३० है वैसाही होवे; इस पर उनके नेत्र खुल गए। यीशुने उन्हें ३१ चिताके कहा कि किसीको यह बात मत कहइयो; परंतु उन्होंने जाकर उस सारे देशमें उसकी कीर्ति प्रचार किई।

भूत लगे ऊए गूंगको चंगा करना।

जब वे बाहिर गये तो देखो, लोग किसी भूत लगे ऊए ३२ गूंगेको उसके निकट लाए। जब भूत निकाला गया तो गूंगा ३३ बातें करने लगा; लोगोंने आश्चर्य करके कहा कि इस्रायेल्के देशमें ऐसा कभी देखा गया नहीं। परंतु फिरूशियोंने कहा ३४ कि वह भूतोंके प्रधानके सहायतासे भूतोंको निकाल देता है।

दीन हीनके ऊपर खीष्टकी दया करना।

यीशु सब नगरों औ गांवओंमें जाके उनके मंदिरोंमें उप- ३५ देश देता औ राजके सुसमाचार प्रचार करता औ लोगोंके सब रोग औ पीड़ाको दूर करता फिरता रहा। और जब ३६ उसने लोगोंको देखा तो वह उनपर दयाल ऊआ क्योंकि वे उन भेड़ोंके समान, जिनका कोई चरवाहा नहीं है, फाड़े औ छोड़े ऊये हैं। तब उसने अपने शिष्योंसे कहा कि ३७ कटनी तो बड़ी है परंतु काटनेहारे थोड़े हैं; इस लिये कटनी- ३८ के स्वामीकी बिन्ती करो कि वह अपने खेतमें काटनेहारोंको पऊंचा देवे।

१० दशवां अध्याय।

खीष्टका बारह शिष्योंको भेजना।

यीशुने अपने बारह शिष्योंको निकट बुलाके उन्हें अपवित्र १ भूतोंको निकालनेकी और सब प्रकारके रोग औ पीड़ाको चंगा करनेकी सामर्थ्य दिई। बारह प्रेरितोंके नाम येही हैं, पहिला, २ शिमोन् जिसको पितर कहते हैं, और उसका भाई आन्द्रिय; सिबदिका पुत्त्र याकूब्, और उसका भाई योहन्; फिलिप ३ और बर्थलमय; थोमा और मथि जो कर लेनेहारा था; आलफीयका पुत्त्र याकूब् और लिब्बेय जिसको थद्दय कहते हैं; किनानीय शिमोन् और ईष्करयोतीय यिऊदा जिसने ४ यीशुको पकड़वाया। यीशुने इन बारहोंको यह कहके भेजा ५ कि अन्यदेशियोंकी ओर मत जाइयो और शोमिरोनियोंके किसी नगरमें मत पैठइयो; परंतु इस्रायली घरानेके खोये ६ ऊये भेड़ोंकी ओर जाइयो; और जाते जाते प्रचार करके ७

८ कहो कि स्वर्गका राज निकट हुआ है; रोगियोंको भी चंगा करो, कोढ़ियोंको पवित्र करो, मृतकोंको जिलाओ, भूतोंको निकाल देओ; सेतमेत तुमने पाया है, सेतमेत देओ; अपने
९ बटुएमें सोना अथवा रूपा अथवा तांबा न रखीयो; यात्राके
१० लिये न झोली न दो कूरते न जूती न लाठी ले जाइयो;
११ मजूर अपने भोजनके योग्य है; जिस नगरमें अथवा गांवमें तुम प्रवेश करो पूछ लीजियो कि इसमें कौन जोग्य है? और जब तक वहांसे न निकलो तब तक उस घरमें
१२ रहो; जिस घरमें तुम प्रवेश करो उस पर आशीष देओ;
१३ जो घर जोग्य होय तो तुम्हारा कल्याण उसको पहुंचके फलेगा, जो योग्य नहीं होय तो तुम्हारा कल्याण तुमको
१४ फिरके फलेगा। परंतु जो कोई तुमको ग्रहण न करे और तुम्हारी बात न सुने तो उस घरसे अथवा उस नगरसे
१५ निकलके अपने पांवओंकी धूल झाड़ देओ; मैं तुमसे सच कहता हूं कि बिचारके दिनमें उस नगरकी दशासे सिदोम् और अमोरा नगरकी दशा सहज होगी।

उनको आगेसे दुःखका समाचार देना।

१६ देखो, मैं तुम्हें भेड़ोंके समान भेड़ियोंके बीचमें भेजता हूं; तुम सांपोंके समान बुद्धिमान और कपोतोंकी नाईं सूधो
१७ होओ; लोगोंसे सावधान होओ; वे तुमको राज सभामें
१८ सौंपेंगे, और अपनी सभामें तुमको कोड़े मारेंगे; तुम मेरे लिये प्रधानों और राजाओंके सन्मुख किये जाओगे कि उनको
१९ औ अन्यदेशीय लोगोंको साक्षी दिया जावे। परंतु जब वे तुम्हें सौंपें तो चिन्ता मत करियो कि हम किस रीतिसे अथवा कौनसा उत्तर देंगे क्योंकि जो कुछ कि तुमको कहना होगा सो
२० उसी घड़ीमें तुम्हें दिया जायगा; जो कहनेहारा है सो तुमही नहीं हो परंतु तुम्हारे पिताका आत्मा तुम्हारे द्वारासे
२१ कहता है। भाई भाईको और पिता पुत्रको मार डाले जाने सौंपेंगे; सन्तान अपने माता पिताके शत्रु होके उनको
२२ मार डालवावेंगे; और मेरे नामके लिये सब लोग तुमसे

बैर करेंगे परंतु जो कोई अंततक सहके रहेगा सोई परि-
त्राण पावेगा। जब वे तुम्हें एक नगरमें सतावें तो दूसरेमें भाग २३
जाओ; मैं तुमसे सत्य कहता हूं कि जब तक मनुष्यका पुत्र
न आवे तब तक् तुम इस्रायेलके सब नगरोंमें गये नहीं होंगे।
गूरुसे शिष्य बड़ा नहीं, न स्वामीसे दास; शिष्य अपने गूरुके २४
तुल्य और दास अपने स्वामीके तुल्य होवे, यह बस है; २५
जो उन्होंने घरके स्वामीका नाम भूतराजा रक्खा है तो क्या
वे उसके घरके लोगों पर ऐसा नाम नहीं रखेंगे? परंतु २६
उनसे डरो मत; कुछ छिपा नहीं है जो प्रगट न होगा,
और गुप्त नहीं जो जाना न जायगा। जो कुछ कि मैं तुम्हें अंध- २७
कारमें कहता हूं सो तुम उजालेमें कहो; और जो कुछ कि
तुम्हारे कानमें कहा जावे सो कोठोंकी छतपर प्रचार करो। जो २८
शरीरको मार डालने सकते हैं परंतु आत्माको मारडालने
नहीं सकते हैं उनसे डरो मत परंतु उसीसे डरो जो शरीर
औ आत्मा दोनोंको नरकमें डालने सकता है; क्या एक २९
पैसेको दो गौरिया नहीं बिकतीं? परंतु बिना तुम्हारे पिताकी
इच्छासे उनमेंसे एक पृथ्वी पर नहीं गिरती। तुम्हारे सिरके ३०
सब बाल गिने गये हैं; सो डरो मत; तुम बहुत गौरिया- ३१
ओंसे बड़े मोलके हो। जो कोई मनुष्योंके सन्मुख मुझे ३२
मान लेगा, उसे मैं अपने स्वर्गनिवासी पिताके सन्मुख मान
लूंगा; परंतु जो कोई मनुष्योंके सन्मुख मुझे नहीं मान ३३
लेगा, मैं अपने स्वर्गनिवासी पिताके सन्मुख उसको नहीं
मान लूगा

ख्रीष्टके उपदेशका फल।

मत बूझो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप करवानेको आया हूं, ३४
मैं मिलाप करवानेको नहीं आया परंतु तलवार चलानेको
आया हूं। मैं आया हूं कि पुत्रको अपने पितासे औ पुत्री ३५
को अपनी मातासे औ बहूको अपनी साससे अलग करवाऊं;
मनुष्योंके बैरी उसीके घरके लोग होंगे। जो कोई अपने ३६
माता पिताको मुझसे अधिक प्रेम कर्ता है सो मेरे योग्य ३७

नहीं; जो कोई अपने पुत्र अथवा पुत्रीको मुझसे अधिक
३८ प्रेम कर्ता है सो मेरे योग्य नहीं। जो कोई अपना क्रूश
३९ लेके मेरा पीछे नहीं आता है सो मेरे योग्य नहीं। और जो
कोई अपने प्राणको बचाता है सो उसे खोवेगा परंतु जो कोई
मेरे लिये अपना प्राण गवांता है सो उसकी रक्षा करेगा।

शिष्यों पर सहायता कर्नेका फल।

४० जो कोई तुम्हें ग्रहण कर्त्ता है सो मुझे ग्रहण कर्ता है;
ऐसेही जो मुझे ग्रहण कर्ता है सो उसे ग्रहण करता जिसने
४१ मुझे भेजा है; जो कोई भविष्यद्वक्ताके नाम पर भविष्य-
द्वक्ताको ग्रहण करता है सो भविष्यद्वक्ताका फल पावेगा; जो
कोई धार्मिकके नाम पर धार्मिकको ग्रहण करता है सो धार्मिक-
४२ का फल पावेगा; और जो कोई इन छोटोंमेंसे किसीको
मेरा शिष्य जानके एक कटोरा शीतल जलका पिलावेगा, मैं
तुमसे कहता हूं कि वह अपना फल नहीं खोवेगा।

११ एगारहवां अध्याय।

सुसमाचार उपदेश कर्नेको खीष्टका जाना।

१ जब यीशु अपने बारह शिष्योंको आज्ञा कर चूका तब
वहांसे उनकी बस्तियोंमें उपदेश औ सुसमाचार प्रचार
कर्नेको चला गया।

योहनका अपने शिष्योंका खीष्टके निकट भेजना।

२ योहनने कैदखानेमें खीष्टके कर्मोंकी चर्चा सुनके अपने
३ शिष्योंमेंसे दोको यह बात पूछनेको भेजा कि क्या आप वही हैं
जिनके आनेके बिषयमें आगमज्ञानियोंसे बात कही गई है
४ अथवा हम दूसरे की बाट जोहेंगे? यीशुने उत्तर दिया कि
जाके, जो कुछ कि तुम सुनते औ देखते हो सो योहनको
५ सुनाओ अर्थात् कि अंधे देखते हैं, लंगड़े चलते हैं, कोढ़ी
पबित्र होते हैं, बहिरे सुनते हैं, मृतक जी उठते हैं,
६ और कंगालोंको सुसमाचार सुनाया जाता है; जो मुझसे
अप्रसन्न नहीं होता है सो धन्य है।

योहनके बिषयमें ख्रीष्टका साक्षी देना ।

योहनके शिष्योंके जानेके पीछे यीसुने लोगोंसे योहनके ७ बिषयमें कहा कि तुम दिहातमें क्या देखनेको निकले? क्या उस नरकटको जो पवनसे हिलता है। फिर तुम क्या ८ देखने निकले? क्या किसी मनुष्यको जो सुथरा बस्त्र पहरा है? देखो, जो सुथरा बस्त्र पहरते हैं, वे राजाओंके घरोंमें रहते हैं। फिर तुम क्या देखनेको निकले? क्या किसी भविष्य- ९ द्वक्ताको? हां मैं तुमसे कहता हूं कि योहन जो है सो भविष्यद्वक्तासे बड़ा है। यह वही है जिसके बिषयमें यह १० बात लिखी थी अर्थात कि देखो, मैं अपने दूतको तेरे आगे भेजता हूं, वह तेरे आगे जाकर तेरा पथ सीधा करेगा। मैं ११ तुमसे सच कहता हूं कि उनमेंसे जो मनुष्यों औ स्त्रियोंसे उत्पन्न ऊये हैं योहन डुबकी दिलानेहारेसे कोई बड़ा नहीं है; तौभी जो स्वर्गके राज्यमें सबसे छोटा है सो योहनसे बड़ा है। योहन् डुबकी दिलानेहारेके समयसे अबतक स्वर्गके राज १२ में लोग साहस करके पैठनेका परिश्रम करते हैं और साहस करनेहारे उसमें पैठ जाते हैं; सब भविष्यद्वक्ताओं औ व्यवस्था १३ ने योहनके दिनोंतक आगेसे जताया (कि स्वर्गका राज होगा परंतु योहनने कहा कि वह निकट ऊआ है); जो तुम इसी १४ बातको ग्रहण कर सकते हो तो जानो कि योहन वह एलीय १५ है जो आनेहारा था। जिसको सुननेके कान हों सो सुने।

ख्रीष्टका किसी२ नगरके लोगोंको धिक्कार कर्ना।

मैं इस समयके लोगोंको किससे उपमा देऊं? वे उन १६ बालकोंके समान हैं जो हाटोंमें बैठके अपने संगियोंको पुकार- के कहते हैं कि हमने तुम्हारे लिये बांसली बजाई है परंतु १७ तुम न नाचे; हमने तुम्हारे लिये बिलाप किया है परंतु तुमने छाती न पीटी। योहन न खाता न पीता आया, १८ और वे कहते हैं कि उसके संग भूत है। मनुष्यके पुत्र १९ खाता औ पीता आया है और वे कहते हैं कि देखो, कैसा

बड़ा खाने औ पीनेहारा है और कर लेनेहारों औ पापियोंका मित्र है; परंतु ज्ञानी लोग ज्ञानको निर्दोष जानते हैं।

कोरासीन् इत्यादि नगरके बिषयमें ख्रीष्टका बिलाप।

२० तब वह उन नगरोंके लोगोंको, जिन्होंके बीचमें उसने बज्जतसे आश्चर्य कर्म किया था, धमकाने लगा क्योंकि उन्होंने २१ अपने मन नहीं फिराया था; उसने यों कहा कि हे कोरासीन नगर, हाय तुझे; हे बैतसैदा नगर, हाय तुझे; जो सोर औ सीदोन नगरोंके लोगोंके बीचमें वे आश्चर्य कर्म किये गये थे जो तुम्हारे बीचमें किये गये हैं तो वे जलदी करके टाट पहन २२ कर औ राख मलकर पछताते। परंतु मैं तुमसे कहता हूं कि बिचारके दिनमें तुम्हारी दशासे सोर औ सिदोन् नगरोंकी २३ दशा सहज होगी। हे कफर्नाऊम नगर, तू जो स्वर्गतक ऊंचा किया गया है, नरकमें डाला जायगा; जो सिदोम नगरमें वे आश्चर्य कर्म किये गये थे जो तेरे बीचमें किये गये हैं तो २४ वह आजके दिन तक बना रहता; परंतु मैं तुससे कहता हूं कि बिचारके दिनमें तेरी दशासे सिदोमको दशा सहज होगी।

ख्रीष्टका परमेश्वर पर धन्यबाद कर्ना।

२५ उसी समय यीशुने फिर कहा कि हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वीके प्रभु, मैं आपका धन्यबाद करता हूं कि आप ज्ञानवानों औ बुद्धिमानोंसे इन बातोंको छिपाया है और उन्हें बा-२६ लकों पर प्रकाश किया है; सो, हे पिता, यह आपकी २७ दृष्टिमें अच्छा लगा है। मेरे पिताने मुझे सब कुछ सोंपा है; पिताके बिना कोई पुत्रको नहीं जानता, और पुत्रके बिना, औ उसके बिना जिस पर पुत्र प्रकाश किया चाहे, और कोई पिताको नहीं जानता है।

दुःखी लोगोंका निमंत्रण करके बुलाना।

२८ हे सब श्रमी औ बोझे ऊये लोगो, मेरे निकट आओ, मैं २९ तुमको बिश्राम देऊंगा; मेरा जूआ अपने ऊपर ले लेओ और मुझसे सीखो; मैं नरम औ दीन हूं; इससे तुम

अपने मनमें बिश्राम पाओगे। मेरा जूआ सहज और मेरा ३०
बोझा हलका है।

१२ बारहवां अध्याय।

बिश्रामवारके बिषयमें खीष्टका उपदेश कर्ना।

यीशु बिश्रामवारको अनाजके खेतोंमें जाता था; उसी १
समयमें उसके शिष्य भूखे होके अनाजकी बालें तोड़२ खाने
लगे। फिरूशियोंने यह देखके यीशुसे कहा कि देखो, जो कर्म २
बिश्रामके दिनमें करना उचित नहीं है सो तेरे शिष्य करते
हैं। उसने उनसे कहा कि क्या तुमने नहीं पढ़ा है कि ३
दायूदने क्या किया जब वह आपही और उसके संगी लोग
भूखे थे? वह क्योंकर ईश्वरके मंदिरमें जाके भेंटकी उस
रोटीको खाया जो न उसको न उसके संगीयोंको ठहराई गई ४
परंतु केवल याजकोंको ठहराई गई? फिर क्या तुमने व्यवस्थामें ५
नहीं पढ़ा है कि याजकलोग बिश्रामके दिनोंमें मंदिरमें
बिश्राम न लेके निर्दोष रहते हैं? परंतु मैं तुमसे कहता हूं ६
कि यहां एक है जो मंदिरसे बड़ा है। जो तुम इन बातों- ७
का अर्थ जानते अर्थात कि मैं दयाको चाहता हूं, न बलिदान-
को, तो तुम निरदोषोंको दोषी न ठहराते। (सच है कि) ८
मनुष्यका पुत्र बिश्रामवारका प्रभु भी है।

सूखे हुए हाथको चंगा कर्ना।

फिर वह वहांसे जाकर उनके मंदिरमें पैठा, और देखो, ९
वहां कोई मनुष्य था जिसका हाथ सूख गया। उन्होंने यीशु १०
पर दोष लगानेको उससे यह कहके पूछा कि क्या बिश्रामके
दिनमें चंगा कर्ना उचित है कि नहीं? उसने उनसे कहा कि ११
तुममेंसे कौन ऐसा मनुष्य है जो अपने उस भेड़को, जो
बिश्रामके दिनमें गड़हेमें गिर पड़े, पकड़के न निकालेगा?
तो मनुष्य भेड़से कितना बड़ा है? इसलिये बिश्रामके दिनमें १२
चंगा कर्ना उचित है। तब यीशुने उस मनुष्यसे कहा कि १३
अपना हाथ बढ़ा; उसने बढ़ाया, और उसका हाथ दूसरेकी
नाईं चंगा हुआ।

फरीसियोंका कुछ परामर्श करना।

१४ तब फिरूशियोंने निकलकर आपसमें बिचार किया कि
१५ किस रीतिसे उसे मार डालें। यीशु यह जान कर वहांसे चला
१६ गया। और बहुतेरे लोग उसके पीछे हो लिये, जिन सभोंको
उसने चंगा किया; परंतु उसने उनको यही आज्ञा दिई कि तुम
१७ मुझे प्रगट न करो। इसी प्रकारसे यही बात, जो यिशायिय
१८ भविष्यद्वक्तासे कही गई थी पूरी हुई अर्थात् कि देखो, मेरा
सेवक जो मुझे मनभावना है और मेरा प्रिय जिससे मेरा मन
प्रसन्न है; मैं अपने आत्मा उसको दूंगा; वह अन्य देशि-
१९ योंको शिक्षा करेगा; वह न झगड़ा करेगा, न धूम मचावेगा,
२० न मार्गोंसे कोई उसका शब्द सुनेगा; वह कुचले हुये नर-
कटको न तोड़ डालेगा और न धूआं देनेहारी बत्तीको बुझा-
२१ वेगा परंतु वह अपनी बात जैवंत करेगा; और अन्यदेशी
लोग उसके नामपर आशा करेंगे।

भूतग्रस्त अंधे गूंगेको चंगा करना।

२२ उस समय कोई कोई यीशुके समीप किसी भूतग्रस्त अंधे
गूंगे मनुष्यको लाए, और उसने उसको ऐसा चंगा किया कि
उसने देखने और बोलनेकी सामर्थ्य पाई। इसपर सब लोग आश्च-
२३ र्यित होके कहा कि क्या यह दायूदका सन्तान नहीं है? परंतु
२४ फिरूशियोंने यह सुनके कहा कि यह अपनेसे भूतोंको दूर
नहीं कर्ता परंतु बालसिबूब् नाम भूतोंके राजाके द्वारासे
२५ उन्हें दूर करता है। यीशुने उनके मनकी बात जानके
उनसे कहा कि जैसा वही राज, जिसके लोग दो भाग
हो गये हैं, बिनास हो जायगा और वही नगर अथवा
वही घर, जिसके लोग दो भाग हो गये हैं, स्थिर नहीं
२६ रहेगा, वैसाही जो शैतान शैतानको दूर करे तो वह अपना
बैरी हो गया है, और उसका राज किसी रीतिसे स्थिर
२७ रहने नहीं सकेगा; जो मैं बालसिबूबके द्वारासे भूतोंको
दूर करता हूं तो तुम्हारे सन्तान किसके द्वारासे उन्हें दूर
२८ करते हैं? इसमें वे तुम्हारे बिचार करनेहारे होंगे; परंतु जो

मैं ईश्वरके आत्माके द्वारासे भूतोंको दूर करता हूं तो निश्चय करके ईश्वरका राज तुम्हारे निकट ज़ुआ है। जो २९ बलवान मनुष्यको कोई पहिले न बांधे तो उसके घरमें पैठके उसकी सामग्री लूटने नहीं सकेगा परंतु जो उसे पहिले बांधे तो उसकी घरकी सामग्री लूट सकेगा। जो कोई मेरा ३० मित्र नहीं है सो मेरा बैरी है; और जो कोई मेरे संग एकठा नहीं कर्ता है सो बिथराता है।

दोषी कर्म की कथा।

मैं तुमसे कहता हूं कि मनुष्योंको सब प्रकारके पाप और ३१ निंदा क्षमा हो सकता परंतु वह निन्दा जो पवित्र आत्माके बिरुद्धमें हो सो मनुष्योंको क्षमा नहीं हो सकता। जो ३२ कोई मनुष्यके पुत्रके बिरुद्धमें कुछ कहे उसको क्षमा हो सकता परंतु जो कोई पवित्र आत्माके बिरुद्धमें कुछ कहे उसको न इस लोकमें न परलोकमें क्षमा हो सकेगी। जो ३३ पेड़को भला कहो तो उसके फलको भी भला कहो; जो पेड़को बुरा कहो तो उसके फलको भी बुरा कहो; क्योंकि पेड़ अपने फलसे जाना जाता है। हे सांपोंके बंशियो, तुम ३४ बुरे होके किस प्रकारसे भली बात कह सकते हो? मनके भंडारसे मुख बोलता है; अच्छा मनुष्य अपने मनके भले ३५ भंडारमेंसे उत्तम बात निकालता है, औ बुरा मनुष्य बुरे भंडारमेंसे बुरी बात निकालता है। मैं तुमसे सत्य कहता हूं ३६ कि हर एक बुरी बात जो मनुष्य कहते हैं वे बिचारके दिनमें उसका लेखा देंगे क्योंकि तू अपनी बातोंसे निर्दोष ३७ अथवा अपनी बातों से दोषी गिना जायगा।

यूनस औ दक्षिण देशकी राणीकी कथासे चिह्नके चेष्टाकारियोंपर अनुयोग।

तब किसी किसी अध्यापक औ फिरूशियोंने कहा कि ३८ हे गुरू, हम आपसे किसी चिह्न देखने चाहते हैं; उसने ३९ उन्हें उत्तर देके कहा कि यह दुष्ट औ व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूंढ़ते हैं परंतु यूनस् भविष्यद्वक्ताके चिन्हको छोड़ उनको और

४० कोई चिन्ह दिया नहीं जायगा; जिस रीति यूनस् तीन रात दिन बड़े मछलीके पेटमें था, इसरीति मनुष्यका पुत्र ४१ तीन रात दिन पृथ्वीके भीतर रहेगा। नीनीवी नगरके लोग बिचारके दिनमें इस समयके लोगोंके संग खड़े होके उन्हें दोषी ठहरावेंगे क्योंकि उन्होंने यूनस भविष्यद्वक्ताके उपदेश सुनके ४२ मन फिराया परंतु देखो, यहां यूनससे एक बड़ा है। दक्षिण-की राणी बिचारके दिनमें इस समयके लोगोंके संग खड़े होके उन्हें दोषी ठहरावेगी; वह सुलिमान राजाका ज्ञान सुननेको पृथ्वीके अन्तसे आई थी, औ देखो, यहां सुलिमान-से एक बड़ा है।

सूतग्रस्त लोगोंका व्याख्यान करना।

४३ जब अपवित्र आत्मा मनुष्यसे निकल गया है तो सूखे ४४ स्थानोंमें फिरके बिश्राम ढूंढ़ता है; न पायके तब कहता है कि मैं अपने घरमें जहांसे निकला हूं फिर जाऊंगा; सो वह आके ४५ उसे सूना झाड़ा बुहारा सुथरा पाता है। तब फिर जाकर अपनेसे सात अधिक दुष्ट भूतोंको संग ले आता है और वे उसी घरमें पैठके एक संग रहते हैं; सो उस मनुष्य की पिछली दशा पहिलेसे अधिक बुरी होती है; इस समयके दुष्ट लोगोंकी दशा ऐसीही होवेगी।

कौन लोग खीष्टके संबंधी हैं उसका बखान।

४६ जिस समय यीशु लोगोंसे यह बात कहता था, तो देखो, उसकी माता औ उसके भाई बाहिर खड़ेहुए उससे बात करने ४७ चाहते थे; इसपर किसीने उससे कहा कि देखिये, आपकी माता औ आपके भाई बाहिर खड़े हुए आपसे बात कहने ४८ चाहते हैं; उसने उसे कहा कि मेरी माता, और मेरे ४९ भाई कौन हैं? तब अपने शिष्योंकी ओर हाथ बढ़ाके कहा ५० कि देखो, मेरी माता औ मेरे भाई येही हैं; जो कोई मेरे स्वर्गनिवासी पिताकी इच्छाके अनुसार करता है सोई मेरे भाई औ बहिन औ माता है।

१३ तेरहवां अध्याय।

बीज बोनेहारे किसानका दृष्टान्त।

यीशु उसी दिन घरसे निकलकर समुद्रके तीर पर जा १ बैठा; इसपर उसके निकट ऐसे बहुतेरे लोग एकठे हुये कि २ वह नाव पर चढ़ गया; औ सब लोग तीर पर खड़े रहे। तब उसने उन्हें दृष्टान्त करके बहुतसी बातें कहीं, कि देखो, ३ कोई किसान बीज बोनेको बाहिर गया; बोनेके समय ४ कुछ कुछ मार्गपर पड़े जिनको पंक्षियोंने आके चुगा। कुछ ५ कुछ पत्थरैली भूमिपर पड़े जहां उनको बहुत मिट्टी न मिली; और गहरी मिट्टी न मिलनेसे जलद निकले, परंतु सूर्यके ६ उठने पर जल गये और जड़ न रखनेसे सूख गये। कुछ कुछ ७ कांटोंके बीचमें पड़े; और कांटोंने बढ़के उनको दबा दिया। और कुछ कुछ अच्छी भूमिपर पड़े; वे फल लाये, कुछ कुछ ८ सौ गुने, कुछ कुछ साठ गुने, और कुछ कुछ तीस गुने। जिसको ९ सुननेके कान हों सो सुने।

शिष्योंके संग बातें करनी।

इस पर शिष्योंने उसके निकट आयके पूछा कि आप क्यों १० उनसे दृष्टांत करके बात कहते हैं? उसने उनको उत्तर ११ दिया कि तुमको स्वर्गके राजके भेदोंकी समझ दिई गई है, परंतु उनको यह नहीं दिई गई है। जो कुछ कि कोई पायके १२ बढ़ा देता है उसीको और दिया जायगा और उसको बहुतायत होगी परंतु जो कुछ कि कोई पायके बढ़ा न देता है उसीसे, जोकुछ कि उसको दिया गया था सोभी ले लिया जायगा। मैं दृष्टांत करके उनसे बात कहता हूं क्योंकि वे १३ देखते हुये नहीं देखते, और सुनते हुये नहीं सुनते, औ नहीं बूझते हैं; उनमें येही बातें जो यिशायिय भविष्यद्वक्तासे १४ कही गई हैं पूरी हुई अर्थात कि तुम कानोंसे सुनोगे परंतु बूझोगे नहीं; नेत्रोंसे देखोगे परंतु समझोगे नहीं क्योंकि इन १५ लोगों के मन मोटा हो गया है; वे अपने कानोंसे ऊंचा सुनते

हैं औ अपने नेत्रोंको बंद किया है न होवे कि वे कभी नेत्रोंसे देखें और कानोंसे सुनें औ मन लगाके बूझें औ फिराये जावें
१६ औ मैं उन्हें चंगा करूं। परंतु धन्य तुम्हारे नेत्र हैं जो देखते
१७ हैं, और धन्य तुम्हारे कान हैं जो सुनते हैं; मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो कुछ कि तुम देखते हो, सो बज़तेरे भविष्य-दक्ताओं और धर्मी लोगोंने देखने की इच्छा किई परंतु देखने न पाया; और जो कुछ कि तुमने सुना है सो उन्होंने सुनने की इच्छा किई परंतु सुनने नहीं पाया।

शिष्योंके दृष्टान्तका अर्थ बताना।

१८ किसानके दृष्टांतका अर्थ सुनो। जो बीज मार्गपर पड़े
१९ सो वेही हैं जो इस राजकी बात सुनके मानते नहीं; जो कुछ कि उनके मनमें बोया गया था सो पापात्मा आके
२० छीन लेता है। जो बीज पत्थरैली भूमिपर पड़े सो वेही हैं
२१ जो बात सुनके तुरंत ग्रहण करते हैं परंतु अपनेयोंमें न जड़ रखके केवल थोड़े दिनतक रहते हैं; बातके लिये क्लेश
२२ औ अंधेर होने पर वे तुरंत हट जाते हैं। जो बीज कांटोंके बीचमें पड़े सो वेही हैं जो बात सुनकर इस संसारकी धंधा
२३ औ छली धनपर मन लगायके बचनको दबने देते हैं। और जो बीज अच्छी भूमिपर पड़े सो वेही हैं जो बात सुनके मानते हैं और फल भी लाते हैं, कोई सौ गुणे, कोई साठ गुणे, और कोई तीस गुणे।

बनके तृणका दृष्टान्त।

२४ फिर उसने एक और दृष्टांत करके यह कहा कि स्वर्गका राज्य उस मनुष्यके तुल्य है जिसने भले बीजको अपने खेतमें
२५ बोया; परंतु लोगोंके सोनेपर उसका बैरी आके गेहूंके बीच-
२६ में जंगले बीज बोके चला गया; जब अंकुर निकला औ बाल
२७ लगी तब जंगले भी देखनेमें आये; इसपर गृहस्थके दासों-ने आके उससे कहा कि हे महाराज, क्या आपने अपने खेतमें
२८ भले बीज न बोये? तो जंगले कहांसे आये है? उसने उनसे

कहा कि किसी बैरीने यह किया है; दासोंने कहा कि जो आपकी आज्ञा होय तो हम जाके उनको निकाल फेंके? उसने कहा कि सो नहीं, न होवे कि जब तुम जंगलोंको उखाड़ो २९ तो उनके संग गेहूंको भी उखाड़ लेओ। कटनीके समयलग ३० दोनोंको बढ़ने देओ; तब मैं काटनेहारोंको कहूंगा कि पहिले जंगलोंको एकठे करके जलानेको गट्ठे बांधो परंतु गेहूंको मेरे खत्तेमें एकठा करो।

राईके दानेका दृष्टान्त।

उसने उन्हें एक और दृष्टान्त करके कहा कि स्वर्गका राज्य ३१ राईके बीजके तुल्य है जिसे किसी मनुष्यने लेके अपने खेतमें बोया; वह सब बीजोंसे छोटा है परंतु जब बढ़ गया है तो ३२ सब तरकारियोंसे बड़ा होता है, और ऐसा पेड़ हो जाता है कि आकाशके पंछी आके उसके डालों पर बसेरा करते हैं।

खमीरका दृष्टान्त।

फिर उसने एक और दृष्टांत करके कहा कि स्वर्गका राज ३३ उसी खमीरके समान है जिसको किसी स्त्रीने लेके तीन सेर आटेमें डाला जिसके द्वारासे सब खमीरी हो गया।

खीष्टके विषयमें भविष्यद्वाक्यका सिद्ध होना।

यीशुने दृष्टांत करके ये सब बातें लोगोंसे कहीं और बिन ३४ दृष्टांतसे उनसे कुछ न कहा; सो यह बात, जो भविष्य- ३५ द्वक्ताके द्वारासे कही गई, पूरी हुई अर्थात कि मैं दृष्टांत करके उपदेश दूंगा और उन बातोंको, जो संसारके आरंभसे गुप्त थीं, बर्णन करूंगा।

पूर्वोक्त दृष्टांतके अर्थका व्याख्यान।

यीशु सब लोगोंको बिदा करके किसी घरमें गया; तब उसके ३६ शिष्योंने उसके समीप आके कहा कि खेतके जंगले बीजके दृष्टान्तका अर्थ हमें समझा दीजिये। यीशुने उनसे उत्तर ३७ किया कि वह जो अच्छे बीज बोता है सो मनुष्यका पुत्र है; ३८ खेत जो है सो संसार है; अच्छे बीज जो हैं सो इस राजके

सन्तान हैं ; जंगले बीज जो हैं सो पापात्माके सन्तान हैं ;
३९ बैरी जो उनको बोता है सो पापात्मा है ; कटनीके समय
जो है सो इस संसारका अंत है ; और काटनेहारे जो हैं
४० सो स्वर्गके दूत हैं ; जिस रीति जंगले एकठे किये जाते औ
आगमें जलाये जाते हैं इसीरीति इस जगतका अंतमें होगा ;
४१ मनुष्यका पुत्र अपने दूतोंको भेजेगा और वे उसके राज्य-
मेंसे सब पाप करानेहारोंको औ अधर्मी लोगोंको एकठे
४२ करके उन्हें उस आगके कुंडमें डालेंगे जहां रोना औ दांत पीसना
४३ होगा। तब धार्मिक लोग अपने पिताके राज्यमें सूर्यकी नाईं
चमकेंगे। जिसके सुननेको कान हों सो सुने।

गुप्त धनका दृष्टान्त।

४४ फिर स्वर्गका राज उस धनके समान है जो खेतमें छिपाया
गया है ; उसीखेतको कोई मनुष्य पायके नहीं बताता है
परंतु आनन्दके मारे जाता है और अपने सब कुछ बेचके
खेतको मोल लेता है।

मुक्ताका दृष्टान्त।

४५ फिर स्वर्गका राज्य उस बैपारीके तुल्य है जो भले मोति-
४६ योंको ढूंढ़ता है ; बड़े मोलके मोती पानेपर वह जाके
अपने सब कुछ बेचके उसे मोल लेता है।

जाल फेंकनेका दृष्टान्त।

४७ फिर स्वर्गका राज्य उस जालके समान है जो समुद्रमें डाला
४८ जाता है, औ हर एक प्रकारकी मछली पकड़ लेता है ; भर
होनेपर लोग तीरपर खेंच लाते हैं, और बैठके भलियोंको
४९ चुन कर पात्रोंमें रखते हैं, औ बुरोंको फेंक देते हैं ; वैसाही
इस संसारके अंतमें होगा ; स्वर्गके दूत आवेंगे, औ धर्मी
५० लोगोंमेंसे पापियोंको अलग करके उन्हें आगके कुंडमें डाल
देंगे जहां रोना औ दांत पीसना होगा।

शिष्योंको उपदेश करना।

५१ तब यीशुने उनसे पूछा कि क्या तुमने ये सब बातें बूझी हैं ?

उन्होंने उससे कहा कि हां प्रभु; उसने उनसे कहा कि जिस ५२ अध्यापकने स्वर्गके राज्यका उपदेश पाया है, वह उस गृहस्थके तुल्य है जो अपने भंडारमेंसे नई औ पुरानी वस्तु निकाल देता है।

स्वदेशी लोगोंसे खीष्टका अपमान होना।

जब यीशु ये सब दृष्टान्त कह चुका तो तह वहांसे चला ५३ गया; और उसने अपने देशमें आके मन्दिरमें ऐसा उपदेश ५४ किया कि लोग अचंभित होके बोले कि उसको ऐसा ज्ञान औ आश्चर्य क्रिया कहांसे ऊई? यह क्या बढ़ईका पुत्र ५५ नहीं है? क्या उसकी माताका नाम मरियम नहीं है? क्या याकूब् औ यूसफ औ शिमोन् औ यऊदा उसके भाई नहीं हैं? और उसकी बहिनें क्या वे सब हमारे साथ यहां ५६ नहीं हैं? तो उसको यह सब कहांसे मिला; इसी रीति ५७ उन्होंने उसे हलका जाना; यीशुने उनसे कहा कि भविष्य-दक्ता आदर रहित नहीं है परंतु केवल अपने देश औ अपने घरमें। और उसने उस स्थानमें उनके अबिश्वासके हेतुसे ५८ बऊत आश्चर्य क्रिया नहीं दिखाई।

१४ चौदहवां अध्याय।

डुबकी दिलानेहारे योहनकी मृत्यु।

उस समय हेरोद राजाने यीशुकी चर्चा सुनके अपने सेवकों- १ से कहा कि योहन डुबकी दिलानेहारा यही है; वह मृतकों- २ मेंसे जी उठा है; इसी लिये उससे ऐसी आश्चर्य क्रिया प्रकाश होती हैं। हेरोदने हेरोदियाके लिये, जो उसके भाई ३ फिलिपकी स्त्री थी, योहनको पकड़के कैदखानेमें डाल दिया था क्योंकि योहनने उससे कहा था कि इस स्त्रीको रखना ४ तुझे उचित नहीं है। जब उसने योहनको मारडालने की ५ इच्छा किई तो लोगोंसे डरा क्योंकि वे उसे भविष्यदक्ता जानते ६ थे। सो जब हेरोदका जन्म दिन ऊआ तो हेरोदियाकी पुत्रीने सभामें नाच करके हेरोदको ऐसा प्रसन्न किया कि ७

उसने सोंह खाकर कहा कि जो कुछ कि आप मांगेंगी सो मैं
८ आपको दूंगा। तब कन्या अपनी मातासे सिखाई ऊई बोली
कि योहन डुबकी दिलानेहारे का सिर थालमें मुझे दीजिये।
९ इसपर राजा उदास ऊआ परंतु उसने किरियाके औ
१० जेवनहरियोंके हेतुसे देनेकी आज्ञा किई। सो उसने कैद-
११ खानेमें लोगोंको भेज कर योहनका सिर कटवाके थालमें
१२ कन्याको दिया और कन्या अपनी माताके निकट ले गई। पीछे
योहनके शिष्योंने आकर उसकी लोथ उठाके गाड़ दिया,
और यीशुके निकट जाके सब बात सुनाई।

खीष्टका प्रान्तरमें पांच सहस्र मनुष्योंको पांच रोटी औ दो
मीनांसे तृप्त करना।

१३ जब यीशुने यह सुना तब नावपर एकेला चढ़के निरालेमें
गया; और लोग यह सुनके नगरोंमेंसे निकलके पांव पांव
१४ पर उसके निकट आये। यीशुने बाहिर आकर बऊतेरे
लोगोंको देखा और उनपर दया करके उनके रोगियोंको
१५ चंगा किया। सांझ होनेपर उसके शिष्योंने उसके निकट
आकर कहा कि यह तो जंगल है औ दिन भी बीत गया है;
लोगोंको बिदा कीजिये कि वे बस्तीयोंमें जाके अपने लिये
१६ खाने मोल लेवें; परंतु यीशुने शिष्योंसे कहा कि उनका जाना
१७ आवश्यक नहीं, तुमही उन्हें खानेको देओ। उन्होंने उससे
१८ कहा कि यहां हमारे निकट केवल पांच रोटियां औ दो
१९ मछलियां हैं। उसने कहा कि उनको मेरे समीप लाओ। तब
उसने लोगोंको घास पर बैठनेकी आज्ञा दिई; और उन
पांच रोटियों औ दो मछलियोंको ले स्वर्गकी ओर देखके
धन्यबाद कर रोटी तोड़ कर शिष्योंको दिया, और शिष्योंने
२० लोगोंको बांट दिया। वे सब खाके तृप्त ऊए; और उन
२१ टुकरोंसे जो बच गये थे उन्होंने बारह टोकरियां भर कर
उठाईं। और जिन्होंने भोजन किया था सो स्त्रीयों औ बालकों-
को छोड़ पांच एक सहस्र पुरूष थे।

खीष्टका समुद्र पर चलना।

तब यीशुने अपने शिष्योंको यह आज्ञा दिई कि जब लग २२ मैं लोगोंको बिदा करूं तुम नावपर चढ़के मुझसे आगे उस पार जाओ। वह लोगोंको बिदा करके प्रार्थना करनेको किसी २३ पर्बतपर निरालेमें चढ़ गया ; सांझ होनेपर वह वहां अकेला था। परंतु उस समय सन्मुखकी बयारसे समुद्रमें लहरोंसे २४ नाव डगमगाती थी। रात के चौथे पहरमें यीशु समुद्रपर २५ चलते चलते उनके समीप आया ; जब शिष्य उसको समुद्र २६ पर चलते ऊये देखा तो वे घबराकर बोले कि यह कोई प्रेत है ; और डरके मारे चिल्लाने लगे। यीशुने तुरंत उनसे कहा कि २७ सुस्थिर होओ, मैंही हूं, डरो मत। तब पितरने उत्तर दिया २८ कि हे प्रभु, जो आपही हैं तो मुझे अपने निकट जलपर आनेकी आज्ञा दीजिये ; उसने कहा कि आ ; तब पितर नाव- २९ परसे उतर कर यीशुके समीप आनेको जल पर चलने लगा ; परंतु बड़ी आंधीको देखकर वह डर गया और डुबते ऊये ३० चिल्लाने लगा कि हे प्रभु, मुझे बचा लीजिये। इसपर यीशुने ३१ तुरंत हाथ बढ़ाया औ उसको पकड़के कहा कि हे अल्प बिश्वासी, तूने किस लिये संदेह किया? जब वे नाव पर ३२ चढ़े तब आंधी थम गई। तब वे जो नाव पर थे सब आके ३३ यीशुको प्रणाम करके कहने लगे कि सत्य है आप ईश्वरका पुत्त हैं।

अनेक रोगीयोंका चंगा करना।

वे पार उतरके गिनिसिरित देशमें आये ; तब वहांके ३४ लोगोंने यीशुको जान कर उस देशके चहुं ओर समाचार ३५ भेजा ; इससे लोग अपने सब रोगियोंको उसके समीप लाए। उन्होंने उससे यह बिन्ती किई कि हे प्रभु, केवल हमको अपने ३६ बस्त्रके झब्बेको छूनेको दीजिये ; सो जिन्होंने छूने पाया वे चंगे हो गये।

---

१५ पंद्रहवां अध्याय।

यीशुका अध्यापक औ फिरूशियोंको धिक्कार कर्ना।

१ यिरूशालम नगरसे किसी किसी अध्यापकों औ फिरूशि-
२ योंने यीशुके समीप आके कहा कि आपके शिष्य लोग बिन धोय
हुये हाथोंसे भोजन कर्के प्राचीन लोगोंके व्यवहारोंको क्यों लंघन
३ कर्ते हैं? यीशुने उनको उत्तर दिया कि तुम अपनी आज्ञासे
४ ईश्वरकी आज्ञाको क्यों लंघन कर्ते हो? ईश्वरने यह आज्ञा
किई कि अपने माता पिताका सन्मान कर, और जो कोई अपने
५ माता पिताकी निंदा करे सो प्राणसे मारा जायगा। परंतु
तुम कहते हो कि जो कोई अपने माता पिताको कहे कि
जो कुछ कि तुमको मुझसे देना उचित था सो मैंने ईश्वरको
६ दिया है तो उसने अपने माता पिताके सन्मान करनेसे छुट्टी
पाई है। इसी रीतिसे तुम अपने व्यवहारोंसे ईश्वरकी
७ आज्ञाको लोप किया कर्ते हो। हे कपटियो, यिशायिय
भविष्यद्वक्ताने तुम्हारे बिषयमें यह कैसी अच्छी बात कही
८ है अर्थात कि येही लोग अपने मुखसे मेरी स्तुति कर्ते हैं,
९ और होंठोंसे मेरा सन्मान कर्ते हैं परंतु उनका मन मुझसे
दूर है; वे मेरी आज्ञाओंसी मनुष्योंकी आज्ञा सिखावते
मेरा सन्मान नहीं करते हैं।

कौनसी बस्तु मनुष्योंको अपबित्र कर्ती है उसका बर्णन।

१० फिर यीशुने लोगोंको अपने निकट बुलाके कहा कि तुम
११ यह सुनके बूझो कि जो कुछ कि मुखमें जाता है सो मनुष्यको
अपबित्र नहीं कर्ता है परंतु जो कुछ कि मुखसे निकलता है
१२ सो मनुष्यको अपबित्र कर्ता है। पीछे उसके शिष्योंने आके
कहा कि क्या आप जानते हैं कि फिरूशी लोग यह बचन सुन-
१३ कर अप्रसन्न हुये? उसने उत्तर दिया कि जो पेड़ मेरे स्वर्ग-
निवासी पिताने नहीं लगाया है सो उखाड़ा जायगा।
१४ उनको रहने दो, वे आपही अंधे होकर अन्धोंको मार्ग
दिखाने कहते हैं; जो अंधे लोग अंधोंको मार्ग दिखाने जावें तो

दोनों गड़हेमें गिर पड़ेंगे। तब पितरने उसको उत्तर १५ दिया कि इसी दृष्टान्तका अर्थ हमको बूझा दीजिये। यीशुने १६ कहा कि क्या तुम भी अबतक निरबुद्धी हो? क्या तुम अबतक १७ यह नहीं बूझते हो कि जो कुछ कि मुखमें जाता है सो पेटमें पैठता है और फिर फेंका जाता है; परंतु जो १८ कुछ कि मुखसे निकलता है सो मनसे निकलके मनुष्यको अपबित्र कर्ता है? मनसे कुचिंता, हत्या, परस्त्रीगमन, १९ व्यभिचार, चोरी, झूठी साक्षी, औ ईश्वरकी निंदा निकलते हैं। येही हैं जो मनुष्योंको अपबित्र कर्ते हैं; परंतु बिन २० धोये हुये हाथोंसे भोजन करना सो मनुष्यको अपबित्र नहीं करता है।

एक किनानी स्त्रीकी कन्याको चंगा कर्ना।

यीशु वहांसे चलके सोर औ सीदोन नगरोंके सिवानोंमें २१ आया। तब देखो, किनानी देशकी किसी स्त्रीने उस सिवानोंमेंसे २२ आके उसे पुकारके कहा कि हे प्रभु, दायूदके सन्तान, मेरी पुत्री भूतग्रस्त हो दुःखित है, मुझ पर दया कीजिये। परंतु २३ यीशुने उसको कुछ उत्तर नहीं दिया; इसपर उसके शिष्योंने आके उससे बिन्ती करके कहा कि यह स्त्री हमारे पीछे पुकारती हुई आती है, उसको बिदा कीजिये। उसने उत्तर २४ दिया कि इस्रायेल्के घरानेके खोई हुई भेड़ोंको छोड़ में और किसीके समीप भेजा नहीं गया हूं। तब स्त्रीने आकर उसको २५ प्रणाम कर्के कहा कि हे प्रभु, मेरी सहायता कीजिये। परंतु २६ उसने उसको उत्तर दिया कि बालकोंकी रोटी लेके कुत्तोंको देना उचित नहीं है। स्त्रीने कहा कि हे प्रभु, यह सत्य है, २७ परंतु कुत्ते भी उन टुकरोंको, जो अपने स्वामियोंके थालसे गिर पड़ते हैं, खाते हैं। यीशुने उसको उत्तर दिया कि हे नारि, २८ तेरा बिश्वास बड़ा है; जो तेरे मनकी इच्छा है सो पूरी किई गई है। सो उसकी पुत्री उसी घड़ीमें चंगी हुई।

बहुतेरे लोगोंको चंगा कर्ना।

फिर यीशु वहांसे जाके गालीली देशके समुद्रके निकट २९

३० आया और पर्बत पर चढ़कर बैठा। बज़तेरे लोगोंने अपने संग लंगड़ों, अंधों, गूंगों, टुंडों औ बज़तसे औरोंको लाके यीशुके चरणोंके निकट रख दिया, औ उसने उनको चंगा ३१ किया। जब लोगोंने देखा कि गूंगे बोलते हैं, औ टुंडे चंगे हैं, और लंगड़े चलते हैं, और अंधे देखते हैं तो आश्चर्य्य ज्ञान कर्के इस्रायेली लोगोंके ईश्वरकी स्तुति किई।

सात रोटी औ थोड़ी मीनसे चार सहस्र लोगोंको भोजन कराके तृप्त कर्ना।

३२ तब यीशुने अपने शिष्योंको बुलाके कहा कि मुझे इन लोगों पर दया आती है; वे तीन दिनसे मेरे संग रहते हैं, और उनके निकट कुछ खाना नहीं है; मैं नहीं चाहता हूं कि उनको भूखे होते बिदा करूं, न हो कि वे मार्गमें निर्बल हो जावें। ३३ उसके शिष्योंने कहा कि हम इस जंगलमें ऐसे बज़त लोगोंको ३४ तृप्त कर्नेको इतनी रोटियां कहां पावेंगे? यीशुने उनसे पूछा कि तुम्हारे निकट कितनी रोटियां हैं? उन्होंने कहा कि सात, ३५ औ थोड़ी छोटीसी मछलियां हैं। यीशुने लोगोंको भूमि पर बैठनेकी आज्ञा किई और उन सात रोटीयों औ मछलियोंको लेकर ईश्वरका धन्यबाद कर्के उनको टूक २ कर अपने ३६ शिष्योंको दिया औ शिष्योंने लोगोंको दिया। और सब ३७ भोजन कर्के तृप्त ज़ए; और उन्होंने उन टूकोंसे जो बच ३८ रहे थे सात टोकरियां भरकर उठाईं। और जिन्होंने भोजन ३९ किया सो स्त्री औ बालकोंको छोड़ चार सहस्र पुरुष थे। तब यीशु उनको बिदा कर्के नाव पर जा बैठा, और मगदला देशके सिवानेमें आया।

१६ सोलहवां अध्याय।

फिरूशियोंका यीशुसे स्वर्गके अद्भुत चमत्कारकी चेष्टा कर्नी।

१ तब फिरूशियों औ सिदूकियोंने आके यीशुको परीक्षा करनेको यह बिन्ती किई कि हमें स्वर्गसे लक्षण दिखा- २ इये। उसने उनको उत्तर दिया कि सांझ होनेपर तुम कहते

हो कि कल दिन अच्छा होगा क्योंकि आकाश लाल है; और बिहान होनेपर तुम बोलते हो कि आज आंधी होगी ३ क्योंकि आकाश लाल औ श्याम है। हे कपटियो, तुम आकाश मंडलका आकार बूझते हो परंतु इस समयके लक्षणोंको क्यों नहीं बूझते हो? इस समयके दुष्ट औ व्यभिचारी लोग लक्षण ४ देखने चाहते हैं परंतु यूनस् भविष्यद्वक्ताके लक्षणको छोड़ और कोई लक्षण उन्हें नहीं दिखाया जावेगा: तब वह उनको छोड़के चले गये।

यीशुका अपने शिष्योंको फिरूशियों औ सिदूकियोंकी शिक्षापर चलनेका भय दिखाना।

उसके शिष्य पार पहुंचे परंतु रोटी अपने संग लेनी भूल ५ गए थे। इसपर यीशुने उनसे कहा कि सावधान होओ, ६ फिरूशियों औ सिदूकियोंके खमीरसे परे रहो। उन्होंने ७ आपसमें बात कर्के कहा कि हम रोटी लेनी भूल गये हैं इस लिये उसने यह बात कही है। यीशुने उनकी बात जानके ८ उनसे कहा कि हे अल्प बिश्वासियो, क्यों आपसमें कहते हो कि उसने यह कहा है क्योंकि हम रोटी लेनी भूल गये हैं? क्या तुम अबतक न बूझते हो और न चेत करते हो कि तुमने ९ उन पांच सहस्र लोगोंकी पांच रोटियोंके चूरचारोंसे कितनी टोकरियां भर कर उठाईं? और उन चार सहस्र लोगोंकी १० सात रोटियोंके चूरचारोंसे कितनी टोकरियां भरके उठाईं? ११ तुम क्यों नहीं बूझते हो कि मेरे इस कहनेमें अर्थात कि फिरूशियों औ सिदूकियोंके खमीरसे परे रहो, तो मैं रोटीके बिषयमें कुछ नहीं कहा। तब उन्होंने बूझा कि उसने उन्हें १२ रोटीके खमीरके बिषयमें नहीं कहा परंतु फिरूशियों औ सिदूकियोंके उपदेशके बिषयमें सावधान होनेको कहा।

खीष्टके बिषयमें लोगोंका अनुमान औ पितरका स्वीकार कर्ना।

यीशुने कैसरिया फिलिपीके सिवानोंमें आके अपने शिष्योंसे १३ यह बात पूछी कि मैं जो मनुष्यका पुत्र हूं लोग मुझे किसको

१४ कहते हैं? उन्होंने कहा कि कोई कहते हैं कि आप डुबकी दिलाने हारा योहन हैं; कोई कहते हैं कि आप एलिय हैं; औ कोई कहते हैं कि यिरमिय, अथवा कोई भविष्य-
१५ दक्ता हैं। तब उसने उनसे पूछा कि तुम मुझे किसको कहते
१६ हो? शिमोन् पितर्ने उत्तर दिया कि आप अमर ईश्वरका
१७ पुत्र ख्रीष्ट हैं। यीशुने उसको उत्तर दिया कि हे यूनसका पुत्र शिमोन्, तू धन्य है. किसी मनुष्यने तुझे यह ज्ञान नहीं दिया
१८ है परंतु मेरे स्वर्ग निवासी पिताने। मैं तुझे कहता हूं कि तू पितर (अर्थात् पाथर) है औ मैं इसी पाथर पर अपनी मंडली बनाऊंगा; और नरकके फाटक उसपर प्रबल नहीं
१९ होंगे। मैं तुझको स्वर्गके राज्यकी कुंजियां देऊंगा; जो कुछ कि तू पृथ्वी पर बांधेगा सो स्वर्गमें बांधा जायगा; और जो
२० कुछ कि तू पृथ्वी पर खोलेगा सो स्वर्गमें खोला जायगा। तब उसने अपने शिष्योंको आज्ञा दिई कि किसीसे न कहियो कि मैं जो यीशु हूं सो ख्रीष्ट हूं।

ख्रीष्टका अपनी मृत्युके समाचारका प्रकाश कर्ना औ पितर पर झुंझलाना।

२१ उस समयसे यीशु अपने शिष्योंको बताने लगा कि मुझे उचित है कि यिरूशालम नगरमें जाऊं और प्राचीन लोगों औ प्रधान याजकों औ अध्यापकोंसे बहुतसे दुःख भोग करूं,
२२ औ मार डाला जाऊं, औ तीसरे दिन जी उठूं। तब पितर-ने यीशुको हाथ पकड़के यह कहते उसको डांटने लगा कि
२३ नाहिं, हे प्रभु, ऐसा आपको कभी न होगा। उसने फिरके पितरको कहा कि हे बिरोधी, परे रह; तू मेरे मार्गमें ठोकर है; तू ईश्वरकी बातोंको नहीं परंतु मनुष्योंकी बातोंको मानता है।

अपने पिछलगुए लोगोंको उपदेश कर्ना।

२४ तब यीशुने अपने शिष्योंसे कहा कि जो कोई मेरे पीछे आनेकी इच्छा करे, तो वह अपने प्राणके बचानेकी चिंता न
२५ करे औ अपने क्रूशको उठावे तब मेरे पीछे आवे क्योंकि जो

कोई अपने प्राणकी रक्षा कर्नेकी इच्छा करेगा सो उसे गवां-वेगा परंतु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोवेगा सो उसे पावेगा। जो कोई मनुष्य समस्त संसारको पा कर पीछे अपना २६ प्राण गवांवे तो उसको क्या लाभ होगा? वह अपने प्राणकी सन्ती क्या देगा। मनुष्यका पुत्र अपने दूतों सहित अपने पिताके ऐश्वर्यमें आवेगा; तब वह एक एक मनुष्यको २७ उसकी क्रियाके अनुसार फल देगा। मैं तुमसे सच कहता २८ हूं कि जब लग मनुष्यके पुत्रको अपने राज्यमें आते न देखें तब लग कोई कोई जो यहां खड़े हैं मृत्युका स्वाद न चीखेंगे।

१७ सतरहवां अध्याय।

खीष्टका दूसरा रूप धारण कर्ना।

छः दिनके पीछे यीशु पितर् औ याकूब् औ उसके भाई १ योहनको संग लेकर किसी ऊंचे पर्वत पर एकान्तमें चढ़ गया और वहां उनके सन्मुख उसका रूप औरही हो गया। २ उसका मुख सूर्यके तुल्य तेजोमय हुआ, औ उसके वस्त्र जोतिकी नाईं उजला हुआ। और देखो, मूसा औ एलियने ३ उससे बातें कर्ते हुए दर्शन दिया। इसपर पितरने यीशुसे ४ कहा कि हे प्रभु, हमारे लिये यहां रहना भला है; जो आपकी इच्छा होय तो हम तीन तंबूओंको यहां बनावें, एक आपके लिये, एक मूसाके लिये, औ एक एलियके लिये। जब ५ पितर यह बात कहता था तो देखो, एक उजले मेघने उन पर छाया किई औ उसी मेघसे यह आकाश बाणी हुई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिसे मैं अति प्रसन्न हूं, उसकी बात सुनो। शिष्य लोग यही बचन सुनके बड़े डरके मारे औंधे मुह ६ गिरे। यीशुने उनके समीप आके उनको छूआ औ कहा कि ७ उठके डरो मत। तब उन्होंने अपने नेत्र खोलके यीशुको छोड़ ८ और किसीको न देखा।

अपने शिष्योंको एलियको आनेके संदेसा कहना ।

९ जब वे पर्बतसे उतरते थे यीशुने उनको यही आज्ञा दिई कि जब लग मनुष्यका पुत्र म्रतकोंमेंसे जी न उठे तब लग इस
१० दर्शनकी बात किसीसे न कहियो। तब शिष्योंने उससे यह पूछा कि अध्यापक लोग क्यों यह कहते हैं कि एलियका आना
११ पहिले आवश्यक है? यीशुने उत्तर दिया कि एलिय पहिले
१२ आवेगा औ सब कुछ सुधारेगा, यह बात सच है; परंतु मैं तुमसे कहता हूं कि एलिय आ चुका है औ उन्होंने उसको नहीं जाना परंतु जो कुछ कि उन्होंने चाहा सो उन्होंने उससे किया; मनुष्यका पुत्र भी उनसे वैसाही दुःख भोग करेगा।
१३ तब उसके शिष्योंने बूझा कि उसने योहन डुबकी दिलाने-हारेके बिषयमें यही बात कही।

मिर्गीहारे रोगीको चंगा करना।

१४ जब वे लोगोंके निकट आए तो किसी मनुष्य यीशुके समीप
१५ आया औ घुटना टेकके उससे कहा कि हे प्रभु, मेरे पुत्र पर दया कीजिये, वह मिर्गीके रोगसे बड़ा पीड़ित है; कभी
१६ कभी आगमें कभी कभी जलमें गिर पड़ता है; उसको मैं आपके शिष्योंके समीप लाया परंतु वे उसे चंगा नहीं कर
१७ सके। यीशुने उत्तर दिया कि हे अबिश्वासी औ हठीले लोगो, कब लग मुझे तुम्हारे संग रहना होगा? औ कब तक मुझको
१८ तुम्हें सहना होगा? उसको मेरे समीप लाओ। यीशुने भूतको धमकाया; तब वह निकल गया औ बालक उसी घड़ीमें चंगा
१९ हो गया। तब शिष्योंने निरालेमें यीशुके समीप आकर कहा
२० कि हम उस भूतको किस हेतुसे निकाल न सकें? यीशुने उनसे कहा कि तुम्हारे अबिश्वासके हेतुसे। मैं तुमसे सत्य कहता हूं कि जो तुम्हारा बिश्वास राईका दाना सा इतना होता तो तुम इस पर्बतको कहते कि यहांसे वहां चला जा और वह जायगा; और कोई कर्म तुमसे अनहोना नहीं होगा;
२१ परंतु बिना प्रार्थना औ उपवाससे इस प्रकारका भूत निकाला नहीं जाता।

अपनी मृत्युके संदेसका प्रकाश कर्ना।

जब वे गालील देशमें फिरते थे तो यीशुने उन्हें कहा कि २२ यह निश्चय है कि मनुष्यका पुत्त्र मनुष्योंके हाथोंमें सोंपा जायगा; वे उसको मारडालेंगे; परंतु वह तीसरे दिन जी २३ उठेगा; तब वे अतीही दुःखित ऊए।

कर देनेके लिये आश्चर्य्य क्रिया कर्नी।

जब वे कफरनाहूम नगरमें आए तो किसी किसी कर २४ लेनेहारोंने पितरके निकट आके कहा कि क्या तुम्हारा गूरू कर देता अथवा नहीं देता है? पितरने कहा कि हां, दिया कर्ता है। जब पितर घरमें आया तो यीशुने उसके कुछ बोल- २५ नेके पहिले उससे कहा कि हे शिमोन, पृथ्वीके राजा लोग किनसे कर औ घरद्वारी लेते हैं? क्या अपने सन्तानोंसे अथवा औरोंसे? इसमें तुझे क्या समझ है? पितरने उससे २६ कहा कि औरोंसे। यीशुने कहा, सो तो सन्तान कुछ नहीं देते हैं। तौभी तू समुद्रको जाके बंसी डाल और जिस मछलीको २७ पहिले पकड़े उसका मुंह खोलकर एक रूपैयाको पावेगा; उसे लेके मेरे औ अपने लिये उन्हें दे; सो हम उनके मार्गमें ठोकर न होवेंगे।

१८ अठारहवां अध्याय।

नम्रता होनेका औ उपवास न कर्नेका उपदेश।

उस समय शिष्योंने आकर यीशुसे कहा कि स्वर्गके राज्यमें १ कौन सबसे बड़ा है? यीशुने किसी छोटे बालकको अपने निकट २ बुलाके उनके बीचमें बैठाकर कहा कि मैं तुम्हें सच कहता हूं ३ कि जो अपने मन न फिराओ औ छोटे बालकोंके तुल्य न हो जाओ, तो स्वर्गके राज्यमें पैठने नहीं पाओगे। जो कोई ४ अपनेको इस बालकके तुल्य छोटा जाने सो ईश्वरके राज्यमें सबसे बड़ा है। जो कोई मेरे नामके लिये ऐसे बालकको ग्रहण ५ करे सो मुझे ग्रहण कर्ता है। परंतु जो कोई इन छोटोंमेंसे जो ६ मुझ पर बिश्वास कर्ते हैं, एकके मार्गमें ठोकरको रखे तो उसको

भला होता कि उसके गलेपर चक्कीका पाट बांधा जाता औ
७ समुद्रके बीचमें डुबाया जाता। ठोकरोंके कारणसे हाय
संसारको; ठोकरोंका होना तो अवश्य है परंतु हाय उस
८ मनुष्यको जो ठोकर रखता है। जो तेरा हाथ अथवा तेरा
पांव तुझे पाप करावे तो उन्हें काट डाल; लंगड़ा अथवा टुंडा
होके स्वर्गमें पैठना, दो हाथों अथवा दो पांवओंको रखके
९ नरकके आगमें डाले जानेसे, तुझे भला है। जो तेरा नेत्र
तुझे पाप करावे तो उसे निकाल डाल; काना होके स्वर्गमें
पैठना, दो नेत्रोंको रखके नरकके आगमें डाले जानेसे, तुझे
१० भला है। सावधान होओ कि तुम इन्हीं छोटोंमेंसे एकको
तुच्छ ज्ञान न करो; मैं तुमसे सच कहता हूं कि स्वर्गमें उनके
दूत हमारे स्वर्गनिवासी पिताके मुखका दर्शन नित्य कर्ते हैं।
११ मनुष्यका पुत्र भूले हुए लोगोंको बचाने आया है। इसमें
१२ तुमको क्या समझ है? जो किसी मनुष्यकी एक सौ भेड़
होवें, औ उनमेंसे एक खो जाय, तो क्या वह पर्बतों पर निन्नान-
१३ वेको छोड़ कर उस खोई हुई भेड़को नहीं ढूंढ़ता है? मैं
तुमसे सत्य कहता हूं कि जो वह उसको पावे तो वह उन
निन्नानवे भेड़ोंसे जो खोई नहीं हुई थी, इस भेड़के लिये अधिक
१४ आनन्द करता है। ऐसाही तुम्हारे स्वर्ग निवासी पिताकी
इच्छा नहीं है कि इन छोटों में से एक नष्ट होवे।

दोषी भाईसे कैसा व्यवहार किया चाहिये उसका बर्णन।

१५ जो तेरा भाई तुझसे कुछ अपराध करे तो उसके निकट
१६ जाके एकान्तमें उसको उसका दोष समझा दे। जो वह तेरी
बात सुने तो तूने अपने भाईको पाया है; परंतु जो न सुने तो
एक अथवा दो जनको अपने संग ले जा कि दो अथवा तीन
१७ साक्षियोंके मुखसे हर एक बात ठहराई जाय। जो वह उनकी
बात न माने तो मंडलीको जता; जो मंडलीको भी न माने
तो जाने दे, वह तेरे निकट देवपूजक औ कर लेनेहारेके तुल्य
१८ हुआ है। मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो कुछ कि तुम पृथ्वी पर
बांधोगे सो स्वर्गमें बांधा जायेगा और जो कुछ कि पृथ्वीपर खो-

लोग से स्वर्गमें खोला जायगा। फिर मैं तुमसे कहता हूं कि जो १९ पृथ्वीपर तुममेंसे दो मनुष्य एक चित होके प्रार्थना करके कुछ मांगे ते उनको मेरे स्वर्गनिवासी पितासे दिया जायगा। और जिस स्थानमें दो अथवा तीन मनुष्य मेरे नामपर एकठे २० होवें उसी स्थानमें मैं उनके बीचमें हूं।

भाईका अपराध कितनी बार क्षमा किया चाहिये उसका बखान।

पितरने उसके निकट आके कहा कि हे प्रभु, मेरा भाई २१ के बेर मुझसे अपराध करे और मैं उसको क्षमा करूं? क्या सात बेर तक? यीशुने कहा कि मैं तुमसे नहीं कहता हूं कि २२ सात बेर तक्, परन्तु सत्तर गुणे सात बेर तक्।

क्षमा करनेका दृष्टान्त।

स्वर्गका राज उस राजाके समान है जिसने अपने चा- २३ करोंसे लेखा लेना ठहराया। लेखा लेनेपर चाकरोंमेंसे एक, २४ जो उसके दस सहस्र तोड़े धारता था, उसके सन्मुख पहुंचाया गया परंतु भर देनेको उसको कुछ न था; इस लिये उसके २५ स्वामीने उसको और उसकी स्त्रीको और उसके बाल बच्चोंको और जो कुछ उसका था बेचनेकी आज्ञा दिई कि उसका उधार भर दिया जाय; इसपर उस दासने प्रभुके चरणोंपर गिर कर २६ प्रणाम करके कहा कि हे प्रभु, आप धीरज धरिये, मैं आपको सब भर देऊंगा। तब उस दासके स्वामीको दया लगी और उसने २७ उसका सारा उधार क्षमा करके उसे जाने दिया। बाहिर जाने २८ पर उसी दासने अपने संगी दासोंमेंसे एकको पाया जो उसके पचास रूपैये धारता था; उसने उसको पकड़ा और उसका कंठ घोंटकर कहा कि जो तूं धारता है सो मुझे दे। तब २९ उसके संगी सेवकने उसके चरणों पर गिरकर बिनती करके कहा कि धीरज धर और मैं सब भर दूंगा। उसने न ३० माना परंतु उसे ले जाके कैदखानेमें डाला कि वहां रहे जब तक उधार न भर देवे। उसके और संगी सेवक यह देखके ३१ बड़े दुःखित हुए, और अपने स्वामीके निकट जाके उसे सब

३२ सुनाया। उनके स्वामीने उसको बुलाके कहा कि हे दुष्ट सेवक, जोंही तूने मेरी बिन्ती किई तोंही मैंने तुझे सब उधार क्षमा
३३ किया; सो जैसा मैंने तुझपर दया किई क्या तुझे उचित नहीं
३४ था कि तू भी अपने संगी दासपर ऐसोही दया करे? और उसके स्वामीने क्रोध कर उसे दारोगोंके हाथोंमें सोंप दिया कि कैदखानेमें रहे जबतक सब जो धारता था न भर देवे।
३५ सो मेरा स्वर्गनिवासी पिता तुमसे वैसाही करेगा जो तुममेंसे हरएक अपने अपने मनसे अपने भाईका अपराध क्षमा न करे।

१९ उन्निसवां अध्याय।

यीशुका रोगियोंको चंगा कर्ना।

१ जब यीशु ये बातें कह चुका तो गालील देशसे जाकर यर्दन
२ नदीके उस पार यहूदी देशके सिवानेमें आया। और बहुतेरे लोग उसके पीछे हो लिये, जिनको उसने चंगा किया।

बिवाहिताके त्याग पत्रका बर्णन कर्ना।

३ फिरूशियोंने उसके समीप आके परीक्षा करनेको पूछा कि क्या उचित है कि मनुष्य हरएक कारणसे अपनी स्त्रीको
४ त्याग करे? उसने उत्तर दिया कि क्या तुमने नहीं पढ़ा है कि ईश्वरने आरंभमें एक पुरुष औ एक नारीको उत्पन्न किया
५ औ कहा कि इस लिये पुरुष अपने माता पिताको छोड़ेगा और अपनी स्त्रीसे मिला रहेगा, और वे दोनों एकसा होंगे?
६ इस लिये वे अब दो सा नहीं परंतु एक सा हैं; जो कुछ कि
७ ईश्वरने जोड़ा है, सो मनुष्य अलग न करे। फिर उन्होंने उससे कहा कि मूसाने क्यों यह आज्ञा दिई कि अपनी स्त्रीको त्याग
८ पत्र देके उसे छोड़ दे? उसने उनसे कहा कि मूसाने तुम्हारे मनकी कठोरताके हेतुसे तुमको यह अधिकार दिया कि अपनी स्त्रीयोंको त्याग करो परंतु आरंभमें ऐसा नहीं था।
९ और मैं तुमसे कहता हूं कि जो कोई बिना व्यभिचारसे अपनी स्त्रीको त्याग करे, औ दूसरीसे बिवाह करे सो व्यभि-

चार कर्ता है; औ जो कोई उस छोड़ी ऊई स्त्रीसे बिवाह कर सो भी ब्यभिचार कर्ता है। उसके शिष्योंने उससे कहा १० कि जो पुरुषको स्त्रीके साथ इस प्रकारका संबंध है तो बिवाह कर्ना भला नहीं। उसने उनसे कहा कि उनको छोड़ जिन्हें ११ दिया गया है और कोई अनबिवाहा रहने नहीं सकता। कोई कोई खोजे हैं जो अपने जन्मसे ऐसे ऊये हैं; और १२ कोई कोई खोजे हैं जो मनुष्योंसे ऐसे किये गये; और कोई कोई खोजे हैं जिन्होंने अपनेको स्वर्गके राजके लिये ऐसे किया है। जो कोई ग्रहण कर सकता है सो ग्रहण करे।

बालकोंका ग्रहण कर्ना।

उस समय कोई कोई बालकोंको यीसुके समीप लाए कि १३ वह उनपर अपना हाथ रखके प्रार्थना करे; परंतु शिष्य उन पर झुंझलाए। यीसुने यह देखके कहा कि बालकोंको मेरे १४ समीप आने दो और उन्हें न बरजो क्योंकि स्वर्गका राज ऐसोंका है। तब उसने अपना हाथ उनपर रखकर वहांसे चला गया। १५

एक युवा पुरुषको उपदेश देना।

देखो, किसी जवानने उसके निकट आके उससे पूछा कि १६ हे परम गुरु, मैं कौनसा सत कर्म करूं कि मैं अनंत जीवन पाऊं? यीसुने उससे कहा कि तू क्यों मुझे परम कहता १७ है? ईश्वरको छोड़ कोई परम नहीं है परंतु जो तू अनंत जीवन पाने चाहे तो आज्ञाओंको पालन कर। जवानने पूछा कि १८ कौन २ आज्ञा? यीसुने कहा कि हत्या न कर, पर स्त्री गमन न कर, चोरी न कर, झुठी साक्षी न दे, अपने माता पिताका १९ सन्मान कर, और अपने पड़ोसीको अपने समान प्रेम कर। जवानने कहा कि मैंने बालकालसे इन सबको माना है, सो २० मुझे और क्या करना होगा? यीसुने उससे कहा कि जो तू २१ सिद्ध होने चाहे तो जा और जो कुछ कि तेरा है सो बेचके कंगालोंको बांट दे; तू स्वर्गमें धन पावेगा; और आके मेरे पीछे हो ले। जवान इसबात सुननेसे उदास होके चला गया २२ क्योंकि उसका धन बऊत था।

धनी लोगोंको स्वर्गके राज्यमें प्रवेश करना अति कठिन है उसका बर्णन।

२३ तब यीशुने अपने शिष्योंसे कहा कि मैं तुमसे सच कहता हूं कि धनवानको स्वर्गके राज्यमें प्रवेश करना कठिनतासे २४ होगा। फिर भी मैं तुमसे कहता हूं कि स्वर्गके राज्यमें धनवानको प्रवेश करनेसे सूईके छेदसे ऊंटका आना जाना सहज २५ है। यह बचन सुनके उसके शिष्योंने अति अचंभित होके २६ कहा कि तो किसका चाण हो सक्ता है? यीशुने उनपर दृष्टि करके कहा कि यह मनुष्योंके निकट अनहोना है, परंतु ईश्वरके निकट सब कुछ हो सकता है।

खीष्टका शिष्योंके संग भले फल की प्रतिज्ञा करनी।

२७ तब पितरने उससे कहा कि देखिये, सब कुछ हम छोड़के २८ आपके पीछे हो लिये हैं, सो हम क्या पावेंगे? यीशुने उनसे कहा कि मैं तुम्से सच कहता हूं कि नई सृष्टिमें जब मनुष्यका पुत्र अपने ऐश्वर्यवंत सिंहासन पर बैठेगा, तब तुम भी, जो मेरे पीछे हो लिये हो, बारह सिंहासनों पर बैठके इस्रा- २९ येलके बारह बंशोंका बिचार करोगे। और जिस किसीने मेरे नामके लिये घरों अथवा भाइयों अथवा बहिनों अथवा माता पिता अथवा स्त्री अथवा सन्तान अथवा भूमिको छोड़ा है सो सौ गुना पावेगा, औ अनन्त जीवनका अधिकारी होगा।

२० बीसवां अध्याय।

किसानोंका दृष्टान्त।

१ बहुतेरे जो आगे हैं सो पीछे पड़ेंगे, औ बहुतेरे जो पीछे हैं सो आगे होवेंगे; क्योंकि स्वर्गका राज्य किसी गृहस्थके समान है, जो भोरको अपने दाखकी बारीमें मजूर लोग लगानेको २ निकला। जब उसने एक एक मजूरसे दिन भरकी एक एक सूकी चुकाई उसने उनको अपने दाखकी बारीमें भेजा। ३ एक पहरके बीतने पर वह फिर बाहिर जाके हाटमें औरोंको बिना कर्म्मके खड़े देखकर उनसे कहा कि तुम

भी दाखकी बारीमें जाओ, और जो कुछ कि ठीक है ४
सो मैं तुम्हें दूंगा; सो वे भी गए। फिर इसी रीतिसे उसने ५
दूसरे और तीसरे पहरके समयपर बाहिर जाकर वैसाही
किया। पीछे एक घड़ी दिन रहते वह फिर बाहिर ६
जाके किसी और लोगोंको बिना कर्मके खड़े देखके कहा कि
तुम क्यों यहां दिन भर बिना कर्मके खड़े हो? उन्होंने कहा ७
कि किसीने हमको कर्म पर नहीं लगाया है; उसने कहा
कि तुम भी दाखकी बारीमें जाओ और जो कुछ कि ठीक है
सो तुम भी पाओगे। जब सांझ हुआ दाखकी बारीके स्वामीने ८
अपने भंडारीसे कहा कि मजूरोंको बुलाके पीछेसे लेके
पहिले तक उन्हें मजूरी दे। जब वे, जिन्होंने एक घंटाका ९
काम किया था, आये तो एक एक मनुष्यने एक एक सूकी पाई
परंतु जब वे, जिन्होंने भोरसे काम किया था, आये, उन्होंने १०
आशा किई कि हम अधिक पावेंगे; तौ भी उन्होंमेंसे एक
एक भी केवल एक एक सूकी पाई। उन्होंने लेकर स्वामीसे ११
कुड़कुड़ाके कहा कि इन पिछलोंने केवल एक घंटाका काम
किया है परंतु आपने जैसा हमको, जिन्होंने धूपमें समस्त दिन १२
काम किया है, दिया है तैसा उनको दिया है। उसने १३
उनमेंसे एकको उत्तर दिया कि हे मित्र, मैंने तुझपर कुछ
अन्याय नहीं किया है; क्या तूने मुझसे एक सूकी लेनेको नहीं
ठहराया? जो कुछ कि तेरा है सो लेके चला जा; जितना १४
मैं तुझको देता हूं इतना पिछलोंको भी देता हूं, यह मेरी
इच्छा है; क्या मुझको उचित नहीं है कि जो कुछ कि मैं
चाहूं सो अपने धनसे करूं? मैं दाता हूं क्या तू इसलिये १५
अप्रसन्न है? इसी रीति जो आगे हैं सो पीछे होंगे और
जो पीछे हैं सो आगे होंगे क्योंकि बुलाये हुये बहुत हैं १६
परंतु ठहराये हुये थोड़े हैं।

ख्रीष्टका अपनी मृत्युको प्रकाश करना।

यीशुने यिरूशालम् नगरको जाते हुए मार्गमें बारह १७
शिष्योंको एकान्तमें बुलाके कहा कि देखो, हम यिरूशालम्को १८

जाते हैं; और वहां मनुष्यका पुत्त्र प्रधान याजकों औ अध्या-
१९ पकोंके हाथोंमें सोंपा जायगा; वे उसे पर मारडालनेकी आज्ञा देंगे और वे उसको अन्यदेशियोंको सोंपेंगे कि वे उसे ठट्ठा करें औ कोड़े मारें और क्रुशपर मारडालें; परंतु वह तीसरे दिन जी उठेगा।

दो शिष्योंको उत्तर देके नम्र होनेका उपदेश कर्ना।

२० तब सिबदीकी स्त्री अपने पुत्त्रोंको संग लेके यीशुके निकट आई और प्रणाम कर्के उससे कहा कि मैं आपसे कुछ बिन्ती
२१ करने चाहती हूं। उसने कहा कि तू क्या चाहती है? स्त्रीने कहा कि आप अपने राजमें मेरे दो पुत्त्रोंमेंसे एकको अपनी दहनी ओर पर और दूसरेको अपनी बाईं ओरपर बैठने
२२ दीजिये; यीशुने उत्तर दिया कि जो कुछ कि तुम चाहते हो सो तुम बूझते नहीं; जिस कटोरेमेंसे मैं पीनेपर हूं क्या तुम उसीमेंसे पीने सकोगे? और वही डुबकी जो मैं खानेपर हूं
२३ सोई तुम खा सकोगे? उन्होंने कहा कि हम सकते हैं; उसने उनसे कहा कि तुम अवश्य मेरे कटोरेमेंसे पीओगे, और वह डुबकी जो मैं खाने पर हूं सोई तुम खाओगे परंतु जिनके लिये हमारे पिताने ठहराया है उनको छोड़ और किसीको अपनी दाहनी औ बाईं ओरपर बैठनेको मुझे अधिकार नहीं है।
२४ जब दश शिष्योंने यह बात सुनी तब दोनों भाइयों पर क्रोधी
२५ हुए। परंतु यीशुने उनको अपने समीप बुलाके कहा कि तुम जानते हो कि अन्य देशियोंके राजा उन् पर राज कर्ते हैं,
२६ और वे जो बड़े हैं उनपर अधिकार रखते हैं। परंतु तुम
२७ में ऐसा न होगा; तुममेंसे जो कोई सबसे बड़ा होने चाहे सो तुम्हारा सेवक हो; और तुममेंसे जो कोई प्रधान होने
२८ चाहे सो तुम्हारा दास हो; मनुष्यका पुत्त्र सेवा पानेको नहीं आया परंतु सेवा करनेको और अपने प्राण बहुतोंके सन्ती देनेको आया है।

दो अंधोंके नेत्रमें ज्योति देनी।

२९ यिरीहो नगरमेंसे उन्होंके निकलनेपर यीशुके पीछे बहुतसे

प्रधान पुरोहित औ प्राचीन लोगोंको निरुत्तर करना।

जब वह मन्दिरमें जाके उपदेश करने लगा तब उसके २३ निकट प्रधान याजकों औ प्राचीन लोगोंने आकर पूछा कि तू किसकी आज्ञासे ये कर्म कर्ता है? और तुझको यह आज्ञा किसने दिई है? यीशुने उत्तर दिया कि मैं भी तुमसे एक बात २४ पूछूंगा; जो तुम उसका उत्तर देओगे तो मैं तुम्हें बताऊंगा कि किसकी आज्ञासे मैं ये कर्म कर्त्ता हूं। योहनकी डुबकी २५ किसकी आज्ञासे ऊई? ईश्वरसे अथवा मनुष्यसे? तब उन्होंने आपसमें बिचार करके कहा कि जो हम कहें कि ईश्वरसे ऊई तो वह कहेगा कि तुमने क्यों योहनपर बिश्वास नहीं किया? जो २६ हम कहें कि मनुष्योंसे ऊई तो लोगोंसे हम डरते हैं क्योंकि सब योहनको भविष्यदक्ता बूझते हैं। सो उन्होंने यीशुको उत्तर २७ दिया कि हम नहीं जानते हैं; तब उसने उनसे कहा, तो मैं भी तुमको नहीं बताता कि किसकी आज्ञासे मैं ये कर्म कर्ता हूं।

दो पुत्रोंके दृष्टांत की कथा।

इसमें तुम क्या बूझते हो? किसी मनुष्यके दो पुत्र थे; २८ उसने बड़ेके निकट जाके कहा कि हे पुत्र, आजके दिन मेरे दाखकी बारीमें काम करनेको जाइयो; उसने उत्तर दिया २९ कि मैं नहीं जाऊंगा; परंतु पीछे पछताके गया। फिर उसने ३० छोटेके समीप जाकर वैसाही कहा; उसने उत्तर दिया कि हे प्रभु, मैं जाता हूं; परंतु नहीं गया। इन दोनोंमें से ३१ अपने पिताकी आज्ञा किसने पालन किई? उन्होंने उससे कहा कि बड़ेने; तब यीशुने उनसे कहा कि मैं तुमसे सच कहता हूं कि कर लेनेहारे औ बेश्या तुमसे आगे ईश्वरके राज्यमें प्रवेश कर्ते हैं; क्योंकि योहन तुम्हारे निकट धर्म्म मार्गसे आया ३२ औ तुम उसे न माना; परंतु कर लेनेहारों औ बेश्याओंने उसे माना; औ तुमने देखा तौभी पछतायके उसे न माना।

माली औ दाखके अधिपतिका दृष्टांत।

एक और दृष्टांत सुनो; किसी बड़े मनुष्यने दाखकी बारी ३३ लगाई और उसकी चहुंओर घेरा बांधा, औ उसमें कोल्हू

गाड़ा औ गढ़ बनाया; पीछे उसे मालियोंके हाथमें देके
३४ परदेशको चला गया। फलके समय होनेपर उसने कुछ
३५ पानेको अपने दासोंको मालियोंके समीप भेजा। परंतु मालि-
योंने उसके दासोंको पकड़ कर एकको मारा, दूसरेको मार
३६ डाला, औ तीसरे को पथराया। फिर उसने बहुत और
३७ दासोंको भेजा; और मालियोंने उनसे भी वैसाही किया। पीछे
उसने यह कहके अपने पुत्रको उनके निकट भेजा कि वे
३८ मेरे पुत्रको आदर करेंगे। परंतु जब मालियोंने उसके पुत्रको
देखा, तो आपसमें यह कहा कि यही अधिकारी है, आओ,
३९ उसे मारडालें, तब उसका अधिकार हमारा होगा। इस
पर उन्होंने उसे पकड़ कर दाखके बारीसे बाहिर निकाल-
४० कर मार डाला। सो जब दाखकी बारीका स्वामी आवेगा,
४१ तो उन मालियोंपर क्या करेगा? उन्होंने उत्तर दिया कि वह
उन पापियोंको बड़े कष्टसे नाश करेगा औ दाखकी बारी
४२ और मालियोंको, जो रितुमें फल पहुंचा देंगे, सोंपेगा। यीशुने
उनसे कहा कि क्या तुमने कभी धर्म ग्रंथोंमें यही नहीं पढ़ा
है कि जिस पत्थरको थवइयोंने अग्राह्य किया सोई कोनेका
सिरा हुआ है; यह ईश्वरका कर्म है औ हमारी दृष्टिमें अद्भुत
४३ है? मैं तुमसे कहता हूं कि तुमसे ईश्वरका राज्य लिया
जायगा और और लोगोंको, जो उसके फलोंको लावेंगे, दिया
४४ जायगा। जो कोई इस पाथर पर गिरेगा सो कुचल जायगा,
४५ और जिसपर वह गिरेगा सो चूरा जायगा। जब प्रधान
याजकों औ फिरूशियोंने उसका दृष्टांत सुना तो वे बूझ गये
४६ कि वह हमारे विषयमें यह कहता है। और उन्होंने उसे
पकड़ने चाहा परंतु लोगोंसे डरे क्योंकि वे उसको भविष्यद्वक्ता
जानते थे।

२२ बाईसवां अध्याय।

राजपुत्रके बिवाहका दृष्टांत।

१ यीशुने फिर उनसे दृष्टान्तोंमें कहा कि स्वर्गका राज उस

राजाके तुल्य है जिसने अपने पुत्रकी ब्याही किई; उसने अपने २
सेवकोंको भेज दिया कि मित्रोंको ब्याहीमें बुलावे परंतु उन्होंने ३
न आने चाहा। फिर उसने और सेवकोंको यह कहके भेजा ४
कि उनसे, जो बुलाये गये हैं, कहा कि देखो, राजाने अपने
भोजन तैयार करवाया है और उसके बैल औ मोटे पशु मारे
गये हैं और सब कुछ तैयार है, सो ब्याहीमें आओ; परंतु मित्र- ५
लोग निसचिन्तित होके चले गये, एक अपने खेतको औ दूसरा
अपने बैपारको और औरोंने उसके सेवकोंको पकड़कर कुव्य- ६
वहार करके उन्हें मार डाला। राजा यह सुनके क्रोधित ७
ऊआ और अपने सिपाहियोंको भेजकर उन हत्यारोंको नाश
कर्के उनके नगरको जला दिया। तब उसने सेवकोंसे कहा ८
कि ब्याही तो तैयार है परंतु वे जो बुलाए गए थे सो अयोग्य
थे। सो राज मार्गोंमें जाओ औ जितने लोग तुम्हें मिलें ९
उन सबोंको ब्याहीमें बुलाओ। सो सेवकोंने मार्गोंमें जाके १०
जितने, क्या बुरे क्या भले, उन्हें मिले, सबोंको एकठे कर्के
लाए; इस रीतिसे ब्याहीका स्थान बैठनेहारोंसे भर गया। तब ११
राजा बैठनेहारोंको देखने भीतर आया, और यहां किसी
मनुष्यको, जो बिवाहके बस्त्रहीन था, देखके उससे कहा कि १२
हे मित्र, तू बिन बिवाह बस्त्रसे क्यों यहां आया है? वह
चुपका हो रहा। इसपर राजाने सेवकोंसे कहा कि इसके १३
हाथ पांव बांधकर ले जाओ, और बाहिर अंधकारमें डाल
दो जहां रोना औ दांत पीसना होगा। इसी रीति बऊत १४
बुलाए गए हैं परंतु ठहराये ऊये थोड़े हैं।

कैसर राजाको कर देनेका उपदेश।

तब फिरूशियोंने जाकर आपसमें यह बिचार किया कि १५
हम किस रीतिसे उसे उसकी बातोंमें फंसावें? सो वे हेरो- १६
दीय लोगोंके संग अपने शिष्योंको उसके निकट यह कहने
भेजा कि हे गुरू, हम जान्ते हैं कि आप सत्य हैं, औ ईश्वर-
का मार्ग सचाईसे बताते हैं, औ किसीकी चिंता नहीं करते हैं
क्योंकि आप मनुष्योंके मुंहचाह नहीं करते हैं, आप क्या

१७ बूझते हैं? कैसर राजाको कर देना हमको उचित है अथवा
१८ नहीं देना? हमसे कहीये। यीशुने उनकी दुष्टता जान कर
१९ कहा कि अरे कपटियो, तुम क्यों मेरी परीक्षा करते हो?
करका रूपैया मुझे दिखा देओ। तब वे उसके समीप एक
२० सूकी लाए। उसने उनसे कहा कि यह मूर्ति किसकी है? और
२१ यह सिक्का किसका है? वे बोले कि कैसरका। तब उसने
उनसे कहा कि जो कुछ कि कैसरका है सो कैसरको दो, और
२२ जो कुछ कि ईश्वरका है सो ईश्वरको दो। उन्होंने यह सुनके
आश्चर्य ज्ञान किया, और उसको छोड़ कर चले गए।

जी उठनेका उपदेश।

२३ उसी दिन कोई सिदूकी लोग उसके निकट आये अर्थात
वेही लोग जो कहते हैं कि मृतकोंका जी उठना नहीं होगा;
२४ उन्होंने यह कहके उससे पूछा कि हे गूरू, मूसाने यह कहा
है कि जो कोई पुरुष निःसन्तान होके मर जाय तो उसका
भाई उसकी बिधवासे बिवाह करे औ अपने भाईके नामके
२५ लिये बंश चलावे। सो हमारे बीचमें सात भाई थे; उनमेंसे
बड़ेने बिवाह किया, और निःसन्तान होके मर गया; फिर
२६ दूसरे भाईने औ तीसरे भाईने सातवें भाईतक बिधवासे
२७ बिवाह किया औ निःसन्तान होके मर गये; सबके पीछे
२८ स्त्री भी मर गई; सो मृतकोंके जी उठनेके दिन इन सातोंमेंसे
वह किसकी स्त्री होगी? क्योंकि सबोंने उससे बिवाह
२९ किया था। यीशुने उनको उत्तर दिया कि तुम धर्मपुस्तक
३० और ईश्वरकी शक्तिको न बूझके भूलमें पड़े हो। मृतकों-
के जी उठनेके दिनमें वे न बिवाह कर्ते हैं, और न
बिवाहमें दिये जाते हैं परंतु ईश्वरके स्वर्गी दूतोंकी भांति
३१ होते हैं। क्या तुमने नहीं पढ़ा है कि ईश्वरने मृतकोंके जी
३२ उठनेके बिषयमें तुमसे क्या कहा है अर्थात कि मैं इब्राहीम्
का ईश्वर, और इस्हाक् का ईश्वर, औ याकूबका ईश्वर हूं?
सो ईश्वर मृतकोंका ईश्वर नहीं, परंतु जीवतोंका ईश्वर

है। यह बात सुनकर सब लोगोंने उसके उपदेशसे आश्चर्य ३३ किया।

बड़ी आज्ञाका निर्णय।

जब फिरूशी लोगोंने सुना कि यीशुने सिदूकियोंका मुंह ३४ बंद किया तो वे एकठे आये; औ उनमेंसे एकने, जो व्यवस्था- ३५ पक था, उसकी परीक्षा करनेको उससे पूछा कि हे गुरू, ३६ व्यवस्थामें कौन आज्ञा सबसे बड़ी है? यीशुने उससे कहा कि ३७ तू अपने प्रभु परमेश्वरको अपने सारे मनसे औ अपने सारे प्राणसे औ अपने सारे बुद्धिसे प्रेम कर, यही पहिली औ बड़ी ३८ आज्ञा है; उसीके समान दूसरी आज्ञा यह है कि तू जैसा ३९ अपनेसे वैसा अपने भाईसे प्रेम कर। येही दोनों आज्ञा ४० समस्त व्यवस्था औ भविष्यद्वाक्योंका सार है।

खीष्टका अपने बिषयमें फिरूशियोंको निरुत्तर कर्ना।

जिस समय फिरूशी लोग एकठे थे उसी समय यीशुने ४१ उनसे पूछा कि खीष्टके बिषयमें तुमको कैसा समझ है? वह ४२ किसका सन्तान है? वे बोले कि दायूदका सन्तान है। तब ४३ उसने उनसे कहा, तो दायूद् पवित्र आत्माकी शिक्षासे क्योंकर उसे प्रभु कहलाके यों कहता है कि परमेश्वरने मेरे प्रभुको ४४ कहा कि जब लग मैं तेरे शत्रुओंको तेरे चरणोंकी पीढ़ा न बनाऊं तब लग तू मेरे दाहनी ओर बैठ। जो दायूद् उसे प्रभु ४५ कहता है तो वह किस रीतिसे उसका पुत्र हो सके? इसके ४६ उत्तरमें कोई मनुष्य उसको एक बात न कह सका; सो उसी दिनसे किसीको उससे और कुछ पूछनेका साहस न हुआ।

२३ तेईसवां अध्याय।

फिरूशियों औ अध्यापकोंकी शिक्षा माननेका औ उनके आचार त्याग कर्नेका उपदेश।

यीशुने सब लोगोंसे और अपने शिष्योंसे कहा कि अध्यापक १ औ फिरूशी लोग मूसाके आसन पर बैठते हैं; इस लिये सब २ कुछ कि वे तुम्हें माननेको कहें सो मानियो, औ पालन ३

करियो; परंतु उनके कर्मके समान न करियो; क्योंकि वे कहते
४ हैं और नहीं करते हैं। वे भारी बोझ बनाते हैं, जिनका उठाना
कठिन है, औ उन्हें लोगोंके कांधोंपर रखते हैं परंतु वे आपही
५ उन्हें टोने नहीं चाहते हैं। वे अपने सब काम इस लिये
करते हैं कि वे मनुष्योंसे देखे जावें। वे अपने जंत्रोंको चौड़े
६ करते हैं औ अपने बस्त्रोंके झब्बे लंबे बनाते हैं; वे जेवना-
रोंमें प्रधान आसनों औ सभास्थानोंमें प्रधान चौकियोंपर
७ बैठने, और हाटोंमें नमस्कार पाने, और उपदेशक उपदेशक
८ कहलाये जाने चाहते हैं; परंतु तुम अपनेको उपदे-
शक उपदेशक कहने किसीको मत देओ क्योंकि एक उपदे-
शक तुम्हारा है अर्थात खीष्ट है और तुम सब चेल हो।
९ पृथ्वीपर किसीको धर्मपिता मत कहो क्योंकि,एक धर्म पिता
१० तुम्हारा है अर्थात वही जो स्वर्गमें है। न अपनेको गुरू
कहने किसीको देओ क्योंकि एक गुरू तुम्हारा है अर्थात
११ खीष्ट है। जो तुम्हारे बीचमें बड़ा है सो तुम्हारा सेवक होगा;
१२ और जो कोई अपनेको बड़ा बनाता है सो छोटा किया
जायगा और जो कोई अपनेको छोटा बनाता है सो बड़ा
किया जायगा।

उनके लंवपन औ कपटपर उनका सन्ताप प्रकाश कर्ना।

१३ हाय२ कपटी अध्यापको औ फिरूशियो, तुम मनुष्योंके
साम्हने स्वर्गके राज्यके मार्ग बंद करते हो; न आपही उसमें
जाते हो और न उनको, जो उसमें जाने चाहते हो, प्रवेश
१४ करने देते हो। हाय२ कपटी अध्यापको और फिरूशियो, तुम
छलसे देर तक प्रार्थना करके बिधवाओं की संपत लेते हो;
१५ इस लिये तुमको बड़ा दंड होगा। हाय २ कपटी अध्यापको
औ फिरूशियो, तुम एक जनको अपने मतमें लानेको सब
भूमंडलमें फिरते हो और किसीको पाके अपनेसे दूने नरक-
१६ का पुत्र बनाते हो। हाय२ अंधे मार्ग देखानेहारो, तुम
यह कहते हो कि जो कोई महामन्दिरकी किरिया खावे
तो वह कुछ नहीं करता है परंतु जो कोई महामंदिरके

सोने की किरिया खावे तो उसको मानना उचित है; हे १७ निर्बुद्धियो औ अंधो, वह सोना अथवा वह मंदिर जो सोनेको पवित्र करता है, इन दोनोंमें से कौन बड़ा है? फिर १८ तुम कहते हो कि जो कोई बेदीकी किरिया खावे तो वह कुछ नहीं करता है परंतु जो कोई उस दानकी किरिया खावे, जो बेदी पर है, तो उसको मानना उचित है; हे १९ निर्बुद्धियो औ अंधो, वह दान अथवा वह बेदी जो दानको पवित्र करता है, इन दोनोंमेंसे कौन बड़ा है? इस लिये २० जो कोई बेदी की किरिया खाता है सो उसकी औ सबकी, जो उसपर है, किरिया खाता है; और जो कोई महा मंदिरकी २१ किरिया खाता है सो उसकी औ उसके रहने हारेकी किरिया खाता है; और जो कोई स्वर्गकी किरिया खाता है २२ सो ईश्वरके सिंहासनकी औ उसकी, जो उसपर बैठता है, किरिया खाता है। हाय २ कपटी अध्यापको औ फिरूशियो, २३ तुम सब पुदीना और सोए औ जीरेका दसवां भाग देते हो परंतु व्यवस्थाकी भारी बातोंको अर्थात् न्याय औ दया औ सचाई नहीं करते हो; उचित है कि तुम इन्हें करते औ उन्हें नहीं छोड़ते। हे अंधे मार्गदेखानेहारो, तुम मच्छड़को २४ छांक देते हो, और ऊंटको निगलते हो। हाय २ कपटी २५ अध्यापको औ फिरूशियो, तुम कटोरा औ थालको बाहिरसे मांजते हो, परंतु वे भीतर लूट औ अधर्मसे भरे हुये हैं; हे अंधे फिरूशी, पहिले कटोरा औ थालको भीतरसे मांजो २६ तो वे बाहिरसे निर्मल होवें। हाय २ कपटी अध्यापको औ २७ फिरूशियो, तुम छुहाई हुई गोरोंके समान हो जो बाहिरसे देखनेमें सुन्दर हैं परंतु भीतरसे मृतकोंकी हाड़ोंसे औ नाना प्रकारकी अपवित्र वस्तुओंसे भरे हुये हैं; इसी रीति तुम २८ सब बाहिरसे लोगोंके देखनेमें धर्मी हो, परंतु भीतरमें कपट औ अन्यायसे भरे हुये हो। हाय २ कपटी अध्यापको औ २९ फिरूशियो, तुम भविष्यद्वक्ताओंकी गोरोंको बनाते हो औ साधु लोगोंकी गोरोंको सिंगार करते हो, और कहते हो कि ३०

जो हम अपने पितरोंके दिनोंमें होते तो हम उनके संग
३१ भविष्यद्वक्ताओंको नहीं मारडालते। सो ऐसे कहनेसे तुम
साक्षी देते हो कि तुम आपही उन्होंके सन्तान हो जिन्होंने
३२ भविष्यद्वक्ताओंको मारडाला; अच्छा, तुम अपने पितरोंके
३३ परिमाणको पूर्ण करो। हे सांपो और काले सांपोंके बंशियो,
तुम किस रीतिसे नरकके दंडसे बच जाओगे?

यिरूशालमके बिनाशके बिषयमें भविष्यद्वाक्य।

३४ देखो, मैं तुम्हारे निकट भविष्यद्वक्ताओं औ बुद्धिमानों औ
अध्यापकोंको भेजता हूं, परंतु तुम उनमेंसे किसी किसीको
मार डालोगे, किसी किसीको क्रूशपर मारोगे, और किसी
३५ किसीको अपने मंदिरोंमें कोड़े मारोगे, औ नगर नगरमें
उन्हें सताओगे; सो सब धर्मियोंके लोहू, जो पृथ्वीपर बहाया
गया है, तुम पर आवेगा अर्थात सत्पुरुष हाबिलके लोहूसे
बिरखियका पुत्र सिखरियके लोहू तक जिसको तुमने मंदिर
३६ औ यज्ञ बेदीके बीचमें मारडाला हां मैं तुमसे सच् कहता हूं
कि इन सबोंके लोहूके बहानेके अपराधका दंड इसी समयके
३७ लोगोंपर पड़ेगा। हे यिरूशालम, हे यिरूशालम, तू जो
भविष्यद्वक्ताओंको मारडालता है औ उन्हें, जो तेरे निकट
भेजे गये हैं, पथराता है, बार बार मैंने चाहा कि तेरे
बालकोंको ऐसे एकठे करूं जैसी कुक्कुटी अपने पंखोंके नीचे
३८ अपने बच्चोंको एकठे करती है परंतु तूने न चाहा; देखो,
३९ तेरा घर तुझको उजाड़ छोड़ा जाता है; मैं तुमसे कहता हूं
कि अबसे तुम मुझे फिर नहीं देखोगे जबतक यह न कहोगे
कि धन्य वही है जो प्रभुके नामपर आता है।

२४ चौबीसवां अध्याय।

मन्दिर बिनाश होनेका भविष्यद्वाक्य।

१ यीशु जब महामंदिरसे निकलकर बाहिर आया, तब
उसके शिष्यलोग उसके निकट आके उससे मंदिरके बिषयमें
२ बात करने लगे। यीशुने उनसे कहा कि क्या तुम इन सबोंको

देखते हो? मैं तुमसे सच कहता हूं कि यहां एक पाथर दूसरे पर नहीं छूटेगा; सब गिराये जायेंगे।

बिनाशक समयका दुःख शिष्योंका दुःख।

जब यीशु जैतून नामके पहाड़ पर जा बैठा तो उसके ३ शिष्योंने निकट आकर एकान्तमें उससे पूछा कि यह सब कब होगा? औ आपके आनेका औ समयके अंत होनेका लक्षण क्या है? सो कहिये। यीशुने उत्तर दिया कि सावधान ४ होओ कि कोई तुम्हें धोखा न देवे; क्योंकि बहुतेरे मेरे नाम ५ लेके यह कहते हुये आवेंगे कि मैं खीष्ट हूं; और वे बहुतेरोंको भुलावेंगे। तुम लड़ाईयां औ लड़ाईयोंके समाचार सुनोगे; ६ देखो, घबराइयो मत; इन सबोंका होना अवश्य है परंतु अन्त अबतक नहीं हुआ है क्योंकि लोग लोगपर और ७ राजा राजापर चढ़ेंगे। औ स्थान२ में काल औ मरी औ भुंई-डोल होंगे। परंतु यह सब क्लेशोंका केवल आरंभ है। ८

उसी समय वे तुम्हें दुःख भोग करनेको सोंपेंगे, और ९ मारडालेंगे; औ मेरे नामके लिये सब लोगोंसे तुम घिनित हो जाओगे। बहुतेरे भी हट जायेंगे और एक एकको पकड़- १० वायेंगे और एक एकसे बैर करेंगे। बहुतसे झूठ भविष्यद्वक्ता ११ आयके बहुतेरोंको धोखा देंगे; और कुकर्मके बढ़नेसे बहुते- १२ रोंका प्रेम ठंडा हो जायगा परंतु जो कोई अंत तक हट नहीं १३ जायेगा वह बच जायगा। और इस राजका सुसमाचार १४ समस्त संसारमें प्रचारा जायगा कि वह सब देशोंके लोगोंको साक्षी होवे; तब अन्त होगा।

लोगोंका भागना।

सो जब तुम उस नाशकारी औ घिनित बस्तुको, जिसके १५ बिषयमें दानियेल भविष्यद्वक्ताने कहा है, पवित्रस्थानमें खड़ा होता देखोगे (जो कोई पढ़े सो बूझे) तो वे जो यहूदा देशमें १६ होवें सो पर्वत पर भागें; जो कोठे पर होवें सो अपने १७ घरमेंसे कुछ निकालनेको न उतर आवें; और जो खेतमें १८

१९ होवें सो अपना वस्त्र लेनेको पीछे न फिरें। उसी समय गर्भ-
२० वंती और दूध पिलानेहारी स्त्रीयोंको बड़ा दुःख होगा। तुम
प्रार्थना करो कि जाड़ेमें अथवा बिश्रामवारमें तुम्हारा भागना
२१ न होवे। उस समयमें ऐसा महा क्लेश होगा जैसा कि संसार-
के आरंभसे आज तक् कभी न ऊआ, और कभी न होगा।
२२ जो वे दिन थोड़े न किये जाते तो कोई मनुष्य न बचता;
परंतु पियारे लोगोंके लिये वे दिन थोड़े किये जायेंगे।

झूठे खीष्टोंका आना।

२३ उस समय जो कोई तुमसे कहे कि देखो, खीष्ट यहां है
२४ अथवा वहां है तो उनकी बात सच मत जानो। क्योंकि झूठे
खीष्ट औ झूठे भविष्यद्वक्ता आकर ऐसे बड़े चिन्ह औ अद्भुत
लक्षण दिखलावेंगे कि जो हो सकता तो पियारे लोगोंको भी
२५ भरमाते। देखो, मैंने आगेसे तुम्हें बतलाया है। जो वे तुमसे
२६ कहें कि देखो, खीष्ट दिहातमें है, तो बाहिर न जाइयो;
अथवा देखो कि वह एकान्तमें है, तो सच न जानइयो।
२७ जिस रीतिसे बिजुली पूर्वसे निकलती है औ पश्चिम तक्
लौकती लौकती जाती है, इसी रीतिसे मनुष्यके पुत्रका आना
२८ होगा। क्योंकि जिस स्थानमें लोथ रहती है वहां ही गिद्ध
एकठे होते हैं।

यिहूदीय देशकी दुर्दशा।

२९ उन दिनोंके कष्टके थोड़े पीछे सूर्य्य अंधियारा हो जायगा
चंद्रमा अपना उजियाला न देगा, तारे स्वर्गसे गिर पड़ेंगे
३० और स्वर्गके ग्रह हिलेंगे; तब मनुष्यके पुत्रका लक्षण स्वर्गमें
दिखाई देगा; और जब पृथ्वीके सब लोग मनुष्यके पुत्रको
सामर्थ्य औ महातेजसे आकाशके मेघोंपर आते देखेंगे तब वे
३१ छाती पीटेंगे। वह बड़े बड़े शब्द करनेहारी तुरही बजाकर
अपने दूतोंको भेजेगा और वे उसके सब पियारे लोगोंको जो
पृथ्वीपर रहते हैं एकठे करेंगे।

गूलर वृक्षका दृष्टांत

३२ गूलरके पेड़से एक दृष्टान्त सीखो; जब गूलरके पेड़की

डाली नरम हो जाती और उसके पत्ते निकल आते तो तुम जानते हो कि गरमीके दिन निकट आये हैं; इसरीति जब ३३ तुम इन सब बातोंको देखोगे तो जानो कि वह निकट है हां द्वार पर है। मैं तुमसे सच कहता हूं कि इस समय- ३४ के सब लोग नहीं मरेंगे जबतक ये सब बातें पूरीं नहीं हो जायेंगी; स्वर्ग और पृथ्वी टल जायेंगे परंतु मेरी बातें ३५ न टलेंगी।

प्रलय कालके सदृश दुर्दशा।

उस दिन औ उस घड़ीके विषयमें मेरे पिताको छोड़ ३६ कोई जतानेहारा नहीं है हां स्वर्गके दूतोंमेंसे कोई नहीं है। जिस रीति नोह नामके समयमें था वैसाही मनुष्यके पुत्रके ३७ आनेके समयमें भी होगा। जैसे लोग जलमयके समयतक, ३८ अर्थात उस दिनतक जिसमें नोह जहाजपर चढ़ा औ आंधीने आयेके उन सबोंको नाश किई, हां उसी दिन तक लोग निसचिन्तित होके खाते पीते औ बिवाह करते औ बिवाहमें ३९ दिये जाते रहे, तैसा मनुष्यके पुत्रके आनेके समय भी होगा। तब दो जन खेतमें होंगे, एक पकड़ा जायगा और दूसरा छुट ४० जायगा; और दो स्त्री चक्की पीसेंगे, एक पकड़ी जायगी और ४१ दूसरी छुट जायगी।

सचेत होनेका उपदेश।

तुम्हारा प्रभु किस घड़ीमें आवेगा सो तुम नहीं जानते हो, ४२ इसलिये जागते रहो। और यह जानो कि जो घरका स्वामी ४३ जानता कि किस पहरमें चोर आता तो वह जागता रहता औ अपने घरमें सेंध देने न देता। इसलिये तुम भी सचेत ४४ रहो क्योंकि जिस समय तुम न जानो उसी समय मनुष्यका पुत्र आवेगा।

बिश्वासी और अबिश्वासी दासोंका दृष्टान्त।

वह सच्चा औ बुद्धिमान सेवक कहां है जिसको प्रभु अपने ४५ घरके लोगोंपर प्रधान ठहरावेगा कि समयमें उन्हें भोजन करावे? वही सेवक धन्य है जिसको उसका प्रभु आकर ऐसा ४६

४७ करते पावेगा। मैं तुमसे सत्य कहता हूं कि उसका प्रभु उसे
४८ अपने सब धनपर प्रधान ठहरावेगा। परंतु जो वह सेवक
दुष्ट होके अपने मनमें कहे कि मेरा प्रभु आनेमें बिलंब कर्ता
४९ है; औ अपने संगी सेवकोंको मारने, और मदमाते लोगोंके
५० संग खाने पीने कर्ने लगे तो जिस समय वह दास बाट न
जोहता है और जिस घड़ी वह नहीं जानता है उसी समय
५१ में उसका प्रभु आवेगा औ उसको अलग कर्के कपटियों
के संग उसको रहने देगा जहां रोना औ दांत पीसना
होगा।

२५ पचीसवां अध्याय।

दस कुमारियोंका दृष्टान्त।

१ उस समयमें स्वर्गका राज उन दस कुंआरियोंके तुल्य होगा
जो अपने अपने दीपकको लेकर दुल्हाके मिलनेको बाहिर
२ निकलीं। उन्होंमें पांच बुद्धि और पांच निर्बुद्धि थीं। जो निर्बुद्धि
३ थीं उन्होंने अपने अपने दीपकको लेकर तेल अपने संग न
४ लिया; परंतु जो बुद्धि थीं उन्होंने दीपकोंके संग अपने
५ पात्रोंमें तेल लिया। सो दुल्हाके बिलंब करने पर सब कुंआरी
६ ऊंघीं औ सो गईं; पीछे आधी रातको यह धुम मची कि दुल्हा
७ आता है, उसके मिलनेको बाहिर निकलो; तब सब कुआंरी
८ उठकर अपने दीपकोंको सवांरने लगे; इतनेमें निर्बुद्धियोंने
बुद्धियोंसे कहा कि अपने तेलमेंसे कुछ हमको दीजियो, हमारे
९ दीपक ठंडे हो गए हैं। परंतु बुद्धियोंने उत्तर दिया कि
हमारे तुम्हारे लिये बस नहीं है, तो भला है कि तुम बचने-
१० हारोंके निकट जाके अपने लिये मोल लेओ। जब वे तेल
मोल लेनेको गईं तब इतनेमें दुलहा वहां आ पहुंचा; और
जो तैयार थीं, सो उसके संग ब्यादीके घरमें गईं और द्वार
११ बंद हुआ। पीछे और कुआंरी आकर कहने लगीं कि हे
१२ प्रभु, हे प्रभु, द्वार खोल दीजिये; उसने उत्तर दिया कि मैं तुमसे
१३ सच कहता हूं कि मैं तुमको नहीं जानता हूं। इस लिये जागते

रहो; क्योंकि इसी रीति मनुष्यका पुत्र भी किस दिन औ किस घड़ी आवेगा सो तुम नहीं जानते हो।

दूरदेश जानेहारे एक महाजन औ उसके सेवकोंका दृष्टान्त।

यह उस मनुष्यके तुल्य है जिसने दूर देशको जाते हुये १४ अपने सेवकोंको बुलाकर उनको अपना धन सौंपा; किसीको १५ पांच तोड़े, किसीको दो तोड़े, और किसीको एक तोड़ा, एक-एकको उसकी जोग्यताके अनुसार देकर तुरंत चला गया। इस पीछे जिस दासने पांच तोड़े पाए थे उनसे बैपार कर १६ पांच और तोड़े बढ़ाए। जिसने दो तोड़े पाए थे, उसने भी १७ इसी रीति बैपार करके दो तोड़े और बढ़ाए। परंतु जिसने १८ एक तोड़ा पाया था, उसने जाकर भूमिको खोदकर अपने स्वामीका धन गाड़ दिया। बहुत दिनोंके पीछे उनका स्वामी १९ आया औ उनसे लेखा लेने लगा। तब जिसने पांच तोड़े पाए २० थे, उसने पांच तोड़े और लाकर कहा कि हे प्रभु, आपने मुझे पांच तोड़े सौंपे थे; देखीये, मैंने उनसे पांच तोड़े और कमाये। उसके स्वामीने कहा कि धन्य, हे उत्तम औ सच्चे २१ दास, तू थोड़े पायके सच्चा पाया गया है, मैं तुझे बहुत दूंगा, आ, मेरे संग आनन्द कर। पीछे जिसने दो तोड़े पाए थे २२ उसने भी आके कहा कि हे प्रभु, आपने मुझे दो तोड़े सौंपे थे; देखीये, मैंने उनसे दो तोड़े और कमाये। उसके स्वामीने कहा २३ कि धन्य, हे उत्तम औ सच्चे दास, तू थोड़े पायके सच्चा पाया गया है, मैं तुझे बहुत दूंगा, आ, मेरे संग आनन्द कर। तब जिसने एक तोड़ा पाया था, उसने आके कहा कि हे २४ प्रभु, मैं आपको कठिन मनुष्य जानता हूं; आप जहां आपने नहीं बोवाया, वहां कटवाते हैं और जहां आपने नहीं छीटवाया, वहां एकठा करवाते हैं; सो मैं डरा और जाकर २५ आपके तोडेको भूमिमें छिपा रखा; देखीये, यह जो आपका है सो ले लीजीये। इसपर उसके स्वामीने उसे उत्तर दिया २६ कि हे दुष्ट औ आलसी दास, तू जानता था कि जहां मैंने बोवाया नहीं, वहां मैं कटवाता हूं, और जहां मैंने छीटवाया

२७ नहीं, वहां मैं एकठा करवाता हूं, तो मेरे रुपैयोंको बेपारीकी कोठीमें देना तुझे उचित था, तब मैं आकर अपना धन
२८ सूद समेत पावता। इसलिये उससे वह तोड़ा लेकर जिसके
२९ निकट दश तोड़े हैं उसे देओ क्योंकि जिसके निकट बढ़ती है उसे दिया जायगा, औ जिसके निकट बढ़ती नहीं है
३० उससे जो कुछ कि उसके निकट है फेर लिया जायगा। सो उस निकम्मे दासको बाहिर अंधकारमें डाल देओ जहां रोना औ दांत पीसना होगा।

बिचारके दिनका बर्णन।

३१ जब मनुष्यका पुत्र पवित्र दूतोंको अपने संग लेके ऐश्वर्य्यमें आवेगा तब वह अपने ऐश्वर्य्यवंत सिंहासन पर बैठेगा, और
३२ उसके सन्मुख समस्त देशके लोग एकत्र किये जायेंगे। जैसा गड़ेरिया भेड़ोंसे बकरियोंको भिन्न २ कर्ता है, वैसाही मनुष्य-
३३ का पुत्र लोगोंको एकसे दूसरेको भिन्न भिन्न करेगा; वह भेड़ोंको अपनी दाहनी ओर औ बकरियोंको बाईं ओर
३४ रक्खेगा। पीछे राजा उनसे जो उसके दाहनी ओर हैं कहेगा कि हे मेरे पिताके धन्य लोगो, इधर आओ, वह राज जो संसारके आद्यसे तुम्हारे लिये तैयार किया गया है उसके
३५ अधिकारी होओ क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे खाना दिया; मैं प्यासा था और तुमने मुझे जल पिलाया; मैं पर-
३६ देशी था और तुमने मुझे अपने घरमें उतारा; मैं बस्त्रहीन था और तुमने मुझे पहिराया; मैं रोगी था और तुमने मेरी सेवा किई; मैं कैदखानेमें था और तुम मेरे समीप आए।
३७ तब धर्मी लोग उसको यह उत्तर देंगे कि हे प्रभु, कब हमने आपको भूखा देखकर भोजन कराया? अथवा प्यासा देखकर
३८ जल पिलाया? कब हमने आपको परदेशी देखकर अपने घरमें उतारा? अथवा बस्त्रहीन देखकर आपको पहिराया?
३९ औ कब हमने आपको रोगी अथवा कैदखानेमें देखकर
४० आपके समीप आये? तब राजा उनको उत्तर देगा कि मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो कुछ कि तुमने मेरे इन छोटे

भाईयोंके एकपर किया सो तुमने मुझपर किया। तब राजा ४१ उनसे जो बाईं ओर हैं कहेगा कि हे स्रापितो, मेरे सन्मुखसे उस अनन्त आगमें चले जाओ जो शैतान् और उसके दूतों-के लिये तैयार किया गया है क्योंकि मैं भूखा था और ४२ तुमने मुझको खाना नहीं दिया; प्यासा था और तुमने मुझे जल नहीं पिलाया; परदेशी था और तुमने मुझे अपने घरमें ४३ नहीं उतारा; बस्त्रहीन था और तुमने मुझे नहीं पहिराया; रोगी औ कैदखानेमें था और तुमने मेरी सेवा नहीं किई। तब ये भी यह उत्तर देंगे कि हे प्रभु, हमने कब आपको ४४ भूखा अथवा प्यासा अथवा परदेशी अथवा बस्त्रहीन अथवा रोगी अथवा कैदखानेमें देखकर तेरी सेवा न किई? तब ४५ वह उत्तर देगा कि मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो कुछ कि तुमने इन छोटोंके एकपर न किया सो तुमने मुझपर न किया। सो ये लोग अनन्त दुःख भोगेंगे और धर्मी लोग अनन्त ४६ जीवन पावेंगे।

२६ छबीसवां अध्याय।

खीष्टको प्रधान पुरोहित औ अध्यापकोंका मार डालनेका परामर्श।

जब यीशुने ये बातें कह चुका तो अपने शिष्योंसे कहा कि १ तुम जानते हो कि दो दिनके पीछे निस्तार पर्व होगा; औ २ मनुष्यका पुत्र क्रूशपर मारडाले जानेको पकड़वाया जायगा। उसी समय प्रधान याजक औ अध्यापक औ प्राचीन लोग ३ कियफा नाम महायाजकके घरमें एकठे होके आपसमें यह ४ बिचार किया कि किस छलसे हम यीशुको पकड़के मार डालेंगे? परंतु उन्होंने कहा कि पर्वके दिनमें नहीं, न हो कि ५ लोगोंमें ऊल्लड़ होवे।

खीष्टके ऊपर एक स्त्री का सुगंधि तेल डालना।

जब यीशु बैथनिया नगरमें शिमोन कोढ़ीके घरमें था, तो ६ कोई स्त्री सिंहमरमर पाथरकी डिबियामें बड़ मोलका ७ सुगंधि तेल लाई; और जिस समय वह भोजन पर बैठा

८ था उसके सिर पर ढाल दिया । उसके शिष्य यह देखकर अप्रसन्न होके बोले कि यह व्यर्थ उठान किस कारणसे है?
९ जो यह सुगंधि तेल बिक जाता तो बहुत रूपैये मिलते
१० औ कंगालोंको दिये जाते। यीशुने यह जानके उनसे कहा कि इस स्त्रीको क्यों दुःख देते हो? उसने मुझपर सत्कर्म
११ किया है; कंगाल लोग तो तुम्हारे संग सदाही हैं परंतु मैं
१२ तुम्हारे संग सदा नहीं हूं। उसने मेरे शरीर पर यह सुगंधि
१३ तेल ढाला है कि मैं गाड़े जानेको तैयार हो जाऊं । मैं तुमसे सत्य कहता हूं कि सारे संसारके बीचमें जिस किसी स्थानमें यह सुसमाचार प्रचारा जायगा उसी स्थानमें यही जो इस स्त्रीने किया है उसके स्मरणके लिये कहा जायेगा ।

यिहूदाके बिश्वासघातकरनेका बर्णन।

१४ तब बारह शिष्योंमें एकने, जिसका नाम इस्कारियोतीय
१५ यिहूदा था, प्रधान याजकोंके समीप जाकर कहा कि जो मैं यीशुको आप लोगोंके हाथमें पकड़ा देऊं तो मुझे क्या देंगे?
१६ उन्होंने उसको तीस रूपैये देनेको कहा। सो वह उसी समयसे यीशुको पकड़वा देनेको घातमें लगा।

निस्तार पर्बका भोजन कर्ना।

१७ अखमीरी रोटीके पर्ब अर्थात निस्तार पर्बके पहिले दिनमें शिष्योंने यीशुके निकट आकर पूछा कि आपके लिये निस्तार पर्बके भोजन हम कहां तैयार करें? आपकी क्या आज्ञा है?
१८ उसने कहा कि नगरमें अमुक मनुष्यके निकट जाके कहो कि गुरूने कहा है कि मेरा समय निकट आया है; मैं अपने
१९ शिष्योंके संग तेरे घरमें निस्तार पर्बका भोजन करूंगा। जैसी यीशुने आज्ञा किई वैसाही शिष्योंने किया, और उसी स्थानमें
२० निस्तार पर्बका भोजन तैयार किया। सांझ होनेपर यीशु
२१ अपने बारह शिष्योंके संग जा बैठा । जब वे भोजन कर रहे थे तो यीशुने कहा कि मैं तुमसे सच कहता हूं कि तुममेंसे एक
२२ है जो मुझे पकड़वाय देगा। इसपर वे अति दुःखित होकर एकएक उससे कहने लगे कि हे गुरू, क्या मैं वही हूं?

यीशुने उत्तर दिया कि जो मेरे संग भोजन पात्रमें हाथ २३ डालता है सोई मुझे पकड़वाय देगा। मनुष्यके पुत्रके बिषयमें २४ जैसा लिखा है वैसी उसकी दशा होगी; परंतु हाय उस मनुष्यको जिसके हाथसे वह पकड़वाया जायगा; जो वह मनुष्य उत्पन्न न होता तो उसके लिये भला होता। तब २५ यिहूदाने, जिसने उसे पकड़वाया, उत्तर देके कहा कि हे गुरु, क्या मैं वही हूं? उसने कहा कि तूने आप ही सत्य कहा है।

प्रभुके भोजनका निरूपण।

भोजन करते करते यीशुने रोटी लेके ईश्वरका धन्यबाद २६ करके तोड़ी औ शिष्योंको देकर कहा कि लेओ, खाओ, यही मेरा शरीर सा है। फिर उसने दाखके रसका कटोरा २७ हाथमें लेकर ईश्वरका धन्यबाद कर यह कहके उनको दिया कि तुम सब इसमेंसे पीओ; यह मेरा लोहसा है अर्थात् २८ यह नये नियमका लोहसा है जो बहुतेरोंके पापोंकी क्षमा करनेको बहाया जाता है। मैं तुमसे कहता हूं कि जब २९ लग मैं तुम्हारे संग अपने पिताके राज्यमें दाखका नया रस नहीं पीऊं तब लग फिर कभी दाखका रस नहीं पीऊंगा। तब वे भजन गाकर जैतून नाम पर्वत पर चले गये। ३०

पितरका खीष्टके अस्वीकार कर्नेमें भविष्यद्वाक्य।

उसी समय यीशुने उनसे कहा कि तुम सब इसी रात में ३१ मुझे छोड़के भाग जाओगे क्योंकि यह लिखा है कि मैं गड़ेरियेको मारूंगा, औ भेड़ोंका झुंड तितर बितर हो जायगा। परंतु मेरे जी उठनेके पीछे मैं तुमसे आगे गालील देशको ३२ जाऊंगा। पितरने उत्तर दिया कि जो सब आपको छोड़के ३३ भागें तोभी मैं कभी छोड़के न भागूंगा। यीशुने पितरसे ३४ कहा कि मैं तुझसे सत्य कहता हूं कि तू इसी रातमें कुक्कुटके बोलनेसे आगे तीन बार कहेगा कि मैं यीशुको नहीं जानता हूं। पितरने उससे कहा कि जो मेरा मरना आपके संग हो तो ३५ भी मैं यह नहीं कहूंगा; और सब शिष्योंने भी वैसाही कहा।

फुलवारीमें खीष्टका दुःख पाना ।

३६ तब यीशु शिष्योंके संग किसी स्थानमें जो गेतशिमिनी कहावता था आके उनसे कहा कि यहां बैठइयो, मैं वहां जाकर ३७ प्रार्थना करूं। और उसने पितरको और सिबदीके दो पुत्रोंको ३८ अपने संग ले गया; और शोकी औ अति दुःखित होने लगा। और उसने उनसे कहा कि मरनेकी नाईं मेरे जी को ३९ अति दुःख होता है; तुम यहां मेरे संग जागते रहो। और वह थोड़े आगे जाकर मुंहपर गिर पड़ा औ यह कहके प्रार्थना किई कि हे मेरा पिता, जो हो सके तो इस कटोरेको मुझसे जाने दीजिये; परंतु मेरी इच्छाके अनुसार न होवे ४० आपकी इच्छाके अनुसार होवे। तब उसने शिष्योंके निकट आके उनको नींदमें देखके पितरसे कहा, क्या तुम मेरे संग ४१ घंटे भर न जाग सके? जागो और प्रार्थना करो कि परीक्षामें ४२ न पड़ो; आत्मा तो बलवंत है परंतु शरीर दुर्बल है। फिर उसने जाकर यही कहके प्रार्थना किई कि हे मेरे पिता, बिना पीनेसे जो यह कटोरा मुझसे नहीं जाय तो जैसी ४३ आपकी इच्छा है वैसीही होवे। फिर उसने आके उन्हें सोते ४४ पाया क्योंकि उनके नेत्र निद्रासे भरे हुए थे। तब उनको छोड़के फिर जाके तीसरी बार वही बात कहके प्रार्थना ४५ किई। फिर अपने शिष्योंके निकट आकर उनसे कहा कि क्या तुम अब सोते औ बिश्राम करते हो? देखो, समय निकट आ पहुंचा है जिसमें मनुष्यके पुत्र पापियोंके हाथमें पकड़वाया ४६ जाता है। उठो, हम चले जावें; देखो, जो मुझे पकड़वाता है सो आ पहुंचा है।

उसका परायोंके हाथमें पकड़ा जाना।

४७ जिस समय यीशु यह बात कहता था तो देखो, यिहूदा, जो बारह शिष्योंमेंसे एक था, पहुंचा, और प्रधान याजकोंकी औ प्राचीन लोगोंकी ओरसे बहुतसे लोग खड्ग औ लाठी लेके ४८ उसके संग आया। औ यीशुके पकड़ानेहारेने इन लोगोंको यह कहके बताया था कि जिसको मैं चूमों वही है, उसको पकड़ो।

तब वह तुरंत यीशुके निकट आकर बोला कि हे गुरू, प्रणाम, ४६
औ उसको चूमा। यीशुने उससे कहा कि हे मित्र, तू किस ५०
लिये आया है? इतनेमें लोगोंने आकर यीशुको पकड़ा। और ५१
देखो, उनमें से जो यीशुके संग था एकने हाथ बढ़ाके अपने
खड्गको निकाला औ महायाजकके किसी दासका कान उड़ा
दिया। यीशुने उससे कहा कि अपने खड्गको उसके काठीमें ५२
रख; सब जो खड्गको खींचते हैं सोई खड्गसे मार डाले जायेंगे।
क्या तू नहीं जानता है कि जो मैं अब प्रार्थना करूं तो मेरे ५३
स्वर्गी पिता तुरंत मेरे निकट स्वर्गी दूतोंके बारह सेनाओंसे
अधिक पहुंचा देगा? परंतु जो मैं ऐसा करूं तो धर्म पुस्त- ५४
कोंकी यह बात क्योंकर पूरी किई जायेगी, अर्थात कि यह
सब होगा? उसी समय यीशुने लोगोंसे कहा कि क्या तुम ५५
खड्ग औ लाठी लेके मुझे चोरके नाईं पकड़नेको निकले हो?
मैं तो दिन दिन तुम्हारे संग मन्दिरमें बैठके उपदेश करता
था, तब तुमने मुझे नहीं पकड़ा; परंतु इसी सब होनेमें
भविष्यदक्ताओंकी लिखी ऊई बात पूरी ऊई है। तब सब ५६
शिष्य उसे छाड़के भागे।

उसको कियफा महापुरोहितके समीप ले जाना।

जिन्होंने यीशुको पकड़वाया वे कियफा नाम महायाजकके ५७
निकट उसे ले गये जहां अध्यापक औ प्राचीन लोग एकठे
थे। और पितर दूरसे उसके पीछे पीछे महायाजककी कच- ५८
हरी तक हो लिये और भीतर जाके प्यादोंके संग बैठ गया
कि देखें क्या होगा।

उसको मार डालनेकी आज्ञा देनी।

तब प्रधान याजकों औ प्राचीन लोगों औ मंत्रियोंने यीशु ५९
पर झूठा साक्षी ढूंढ़ा कि उसे मार डालें परंतु कुछ न पाया;
सच है, बऊतेरे झूठे साक्षी आये तौभी कुछ दोष न पाया गया। ६०
निदान दो झूठे साक्षी आके कहा कि इसने कहा कि मैं ६१
ईश्वरके मंदिरको ढाकर उसे तीन दिनमें फिर बना सक्ता हूं।
तब महायाजकने उठकर यीशुसे कहा कि क्या तू कुछ उत्तर ६२

६३ नहीं देता है? ये तुझपर क्या साक्षी देते हैं? परंतु यीशु चुपका रहा। तब महायाजकने फिर कहा कि मैं तुझे अमर ईश्वरकी सोंह देता हूं कि हमसे कह कि तू ख्रीष्ट है ६४ अर्थात ईश्वरका पुत्र है कि नहीं? यीशुने उत्तर दिया कि आपने आपही सत्य कहा है; तिसपर भी मैं आपसे सच कहता हूं कि इसके पीछे आप मनुष्यके पुत्रको सर्वशक्तिमानके दाहनी ओर बैठे हुए और आकाशके मेघों पर आते ६५ हुये देखोगे। तब महायाजकने अपने वस्त्र फाड़के कहा कि यह ईश्वरकी निंदा कर चुका है, अब हमें और साक्षियोंका क्या प्रयोजन है? देखो, तुमने आपही अभी उसके मुखसे ६६ ईश्वरकी निंदा सुनी है? अब क्या सोचते हो? उन्होंने उत्तर ६७ दिया कि यह मारडाले जानेके योग्य है। तब उन्होंने उसके मुख पर थूका; और किसी किसीने उसे घूंसे; और किसी-६८ किसीने थपेड़े मार कर कहा कि हे ख्रीष्ट, किसने तुझे मारा है, सो बतला।

पितरका अस्वीकार औ पछतावा करना।

६९ पितर कचहरीके बाहिर बैठा था; इतनेमें एक दासी उसके निकट आकर बोली कि तू भी गालीली यीशुका संग ७० था। इसपर पितरने सबके सन्मुख मुकरके कहा कि जो ७१ कुछ कि तू बोलती है सो मैं नहीं बूझता हूं। और जब वह दिहलीमें बाहिर गया तो एक और दासीने उसे देखकर उन लोगोंसे, जो वहां थे, कहा कि यह भी नासरतीय यीशुके ७२ संग था। तब पितरने सोंह करके फिर मुकरके कहा कि मैं ७३ इस मनुष्यको नहीं चीन्हता हूं। थोड़े देरके पीछे उन्होंने जो वहां खड़े थे पितरके समीप आके कहा कि निश्चय तू भी ७४ उनमेंसे एक है, तू तेरे बोलीसे जाना जाता है। इसपर पितर धिक्कारके औ किरिया खाके कहने लगा कि मैं इस मनुष्यको नहीं चीन्हता हूं; और तुरन्त कुक्कुट बोल उठा। ७५ तब पितरको चेत आया कि यीशुने यह बात कही थी कि

कुक्कुटके बोलनेसे आगे तू तीन बार कहेगा कि मैं तुझे नहीं जानता हूं। सो पितर बाहिर जाकर बिलख बिलख रोया।

२७ सताईसवां अध्याय

खीष्टको पिलातके हाथमें सौंपना।

जब भोर हुआ तब महायाजकों औ प्राचीन लोगोंने आपसमें बिचार किया कि हम किस भांतिसे यीशुको मार डालें। १
इस पीछे उन्होंने उसे बांधकर ले गये औ पन्तिय पिलात प्रधानको उसे सौंप दिया। २

यिहूदाका अपने गलेमें फसरी लगाना।

जब यिहूदाने, अर्थात जिसने उसे पकड़वाया था, देखा कि यीशुपर मारडालनेकी आज्ञा दिई गई है तब पछताके उन तीस रुपैयोंको जिन्हें उसने आगे पाया था, प्रधान याजकों औ प्राचीन लोगोंके निकट लाके कहा कि मैंने इस निर्दोषीको पकड़ाके पाप किया है; वे बोले, तो हमें क्या है? तूही जान। ३ ४
तब यिहूदा मन्दिरमें उन रुपैयोंको फेंककर चला गया, औ जाकर अपनेको फांसी दिई। पीछे प्रधान याजकोंने रुपैयोंको उठाकर कहा कि ये रुपैये लोहूके मोल हैं, उन्हें महामंदिरके भण्डारमें रखना उचित नहीं है। सो उन्होंने आपसमें बिचार करके कुम्हारका खेत उन रुपैयोंसे मोल लिया कि उसमें परदेशी लोग गाड़े जावें; इसीसे वह खेत आजके दिन तक लोहूका खेत कहलाती है। तब यही बात जो सिखरिय भविष्यद्वक्ताके द्वारासे कही गई है पूरी हुई अर्थात कि मैंने उन तीस रुपैयोंको लिया जो उसीका मोल था जो इस्राइली लोगोंसे बेचा गया था, हां मैंने उन रुपैयोंको लेके उन्होंसे कुम्हारके खेतको मोल लिया जैसा कि प्रभुने मुझको आज्ञा दिई थी। ५ ६ ७ ८ ९ १०

खीष्टका पिलातके सम्मुख चुपका रहना।

यीशु पन्तीय पिलात प्रधानके सन्मुख खड़ा था; औ प्रधानने उससे पूछा कि क्या तू यिहूदियोंका राजा है? यीशुने ११

१२ कहा कि आपने आपही सत्य कहा है। जब प्रधान याजकों
औ प्राचीन लोगोंने उसपर दोष लगाया तो उसने कुछ उत्तर
१३ नहीं दिया। इसपर पिलातने उससे पूछा कि ये तुझ पर
१४ क्या साक्षी देते हैं? क्या तू सुनता नहीं? तौभी उसने एक
बचनका भी उत्तर नहीं दिया। इससे प्रधानने अति ही
आश्चर्य किया।

यिहूदीय लोगोंकी रीति।

१५ निस्तार पर्बके समयमें यही रीति थी; बंधुये लोगोंमेंसे
एकको, जिसे किसीको लोगोंने मांग लिया सोई प्रधानने
१६ छुड़ा दिया। उसी समयमें उनका एक प्रसिद्ध बंधुआ था
१७ जिसका नाम बरब्बा था। सो जब सब लोग एकठे ऊए थे
पिलातने उनसे पूछा कि मैं किसको छोड़ दूं? तुम्हारी क्या
इच्छा है? क्या बरब्बाको क्या यीशुको जो खीष्ट कहलाता है
१८ मैं छोड़ दूं? क्योंकि वह जानता था कि उन्होंने डाहसे उसे
पकड़वाय दिया था।

यिऊदीय लोगोंकी रीति।

१९ जब प्रधान बिचारके आसन पर बैठा था उसकी स्त्रीने
उसे कहला भेजा कि तुम इस धर्मी मनुष्यपर कुछ न करो,
मैंने आजके दिनमें स्वप्नमें उसके हेतुसे बऊतसा दुःख पाया
२० है। परंतु प्रधान याजकों और प्राचीनोंने लोगोंको उसकायके
कहा कि बरब्बाको मांग लओ औ यीशुको मारडालने कहो।
२१ फिर प्रधानने उनसे पूछा कि तुम्हारी क्या इच्छा है? उन
दोनोंमेंसे तुम किसको चाहते हो कि मैं छोड़ दूं? उन्होंने
२२ कहा कि बरब्बाको। तब पिलातने उनसे पूछा तो मैं
यीशुको, जो खीष्ट कहवाता है, क्या करूं? सबोंने कहा कि
२३ वह क्रूशपर मार डाला जाय। प्रधानने कहा कि क्यों?
उसने क्या अपराध किया है? परंतु उन्होंने बऊतसा चिल्ला-
२४ यके कहा कि वह क्रूश पर मारा जाय। जब पिलातने देखा
कि कुछ न बन पड़ता है और बड़ा ऊल्लड़ होता है तो उसने
जल लिया और लोगोंके सन्मुख अपने हाथोंको धोकर कहा

कि मैं इस धर्मी मनुष्यके लोहूसे निर्दोष हूं, तुम्ही यह बूझो। इसपर सब लोगोंने उत्तर दिया कि उसके लोहूका अपराध २५ हम पर औ हमारे संतानों पर होवे। तब उसने बरब्बाको २६ छोड़ दिया, औ यीशुको कोड़े मार कर क्रूश पर मार डाले जानेको सोंप दिया।

पिलातके आचरणका वर्णन।

उस समय प्रधानके सिपाहियोंने यीशुको चौकी खानेमें ले २७ जाके सब सिपाहियोंको उसको चारों ओर एकठे किया; और उसके बस्त्र उतारके लाल बस्त्र उसे पहिराए। औ २८ कांटोंका मुकुट सजके उसके सिरपर रखा; औ उसके दहिने २९ हाथमें नरकट देके उसके सन्मुख घुटना टेक कर ठट्ठा मारा औ कहा कि हे यिहूदियोंका राजा, प्रणाम। फिर उन्होंने ३० उस पर थूका, औ उस नरकटको लेकर उसके सिरपर मारा। जब वे इस रीतिसे ठट्ठा कर चुके तो उन्होंने उस ३१ लाल बस्त्रको उतारा और उसीका बस्त्र फिर पहिनाया और उसे क्रूशपर चढ़ानेको ले गये। जब वे बाहिर आए ३२ तो उन्होंने कूरीनी देशके किसी मनुष्यको पाया, जिसका नाम शिमोन था; उन्होंने उसे बेगार लिया कि वह क्रूशको उठाके ले चला।

खीष्टको क्रूशपर चढाना।

जब वे किसी स्थानमें पहुंचा जिसका नाम गुल्गल्ता था ३३ अर्थात खोपड़ीका स्थान, तब उन्होंने सिरकामें पितपापड़ा ३४ मिलाके यीशुको पीनेको दिया, परंतु उसने उसको चीखकर पीने की इच्छा न किई। उन्होंने उसको क्रूशपर चढाके उसके ३५ बस्त्रों पर चिट्ठी डालके बांट लिया; इसी प्रकारसे जो भविष्यद्वक्ताने कहा था सो पूरा हुआ अर्थात कि वे मेरे बस्त्र आपसमें बांटेंगे, और मेरे बागेपर चिट्ठियां डालेंगे। औ ३६ पहरुए वहां बैठके उसका पहरा देने लगे। और उन्होंने ३७ यही दोष पत्र लिखके उसके क्रूशके सिरपर लगा दिया अर्थात कि यह यिहूदियोंका राजा यीशु है। उसी समय ३८

दो डाकू उसके निकट क्रूश क्रूशपर चढ़ाये गये थे एक उसको दहिनी ओर और दुसरा उसको बाईं ओर।

उस पर लोगोंका हसना।

३९ तब वे लोग जो इधर उधर जाते थे अपने सिरको हिला-
४० कर निन्दा करके कहते थे कि हे तू जो मंदिरका तोड़नेहारा औ तीन दिनमें बनानेहारा है, अपनेको बचा; जो तू ईश्वर-
४१ का पुत्र है तो क्रूशपरसे उतर आ। इसी रीतिसे प्रधान याजकों औ अध्यापकों औ प्राचीन लोगोंने भी ठट्ठा करके
४२ कहा कि उसने औरोंको बचाया परंतु अपनेको बचा नहीं सकता है; जो वह इस्रायेलका राजा है तो अब क्रूश परसे
४३ उतर आवे, सो हम उसपर बिश्वास करेंगे; उसने ईश्वर पर भरोसा रक्खा; जो वह ईश्वरका पियारा है तो अब ईश्वर उसको छुड़ावे क्योंकि उसने कहा कि मैं ईश्वरका पुत्र
४४ हूं। और वे चोर जो उसके संग क्रूशपर चढ़ाए गये थे, उन्होंने भी इसीरीति उसको निन्दा किई।

ख्रीष्टका क्रूश पर दुःखसे पुकारणा।

४५ तब दो पहरसे तीन पहर तक उस सारे देशमें अंधकार
४६ हुआ। तीन पहरके समय यीशुने बड़े शब्दसे चिल्लायके कहा कि एली एली लामा शिबक्तनी, अर्थात्, हे मेरे ईश्वर,
४७ हे मेरे ईश्वर, क्यों तूने मुझे त्याग किया है? उनमेंसे जो वहां खड़े थे किसी किसीने यह सुनके कहा कि यह एलियको
४८ बुलाता है। उनके बीचमेंसे एकने तुरंत दौड़ा और मरा-बादल सिरकेसे भरके और नल पर रखके उसे पीनेको
४९ दिया। औरोंने कहा कि रहने दो, हम देखें कि एलिय उसे छुड़ानेको आवेगा कि नहीं।

ख्रीष्टका प्राण त्यागना, औ अद्भुत लक्षणका प्रकाश होना।

५० तब यीशुने फिर बड़े शब्दसे पुकारके प्राणको जाने दिया।
५१ औ देखो, मंदिरकी ओट ऊपरसे नीचे लग फट गई, औ
५२ भुईंडोल हुआ, औ पर्वत तड़क गये, औ गोरें खुल गई औ
५३ बहुत पुण्यवानोंकी लोथें, जो सोती थीं, जाग उठीं; और

उसके जी उठनेके पीछे गोरोंमेंसे निकलकर पुण्य नगरमें गईं औ बझतेरोंको दिखाई दिईं। तब वह सूबादार औ ५४ उसके संगी जो यीशुका पहरा देते थे भुईंडोलको और जो कुछ कि बीत गये थे देखकर डर गये औ बोले कि सत्य है यह ईश्वरका पुत्र है।

स्त्रीयोंका क्रूशके समीप उपस्थित होना।

वहां बझतेरी स्त्रियां, जो यीशुकी सेवा करते करते ५५ गालील देशसे उसके पीछे आई थीं, दूरसे देखतीं थीं। उन्होंमें मगदलिनी मरियम्, औ याकूब की औ योसिकी ५६ माता मरियम्, औ सिबदीके पुत्रोंकी माता थीं।

खीष्टके गोरमें देनेका।

जब सांझ झई, अरिमथिया नगरका कोई धनवान आया, ५७ जिसका नाम यूसफ था, वह भी यीशुका शिष्य था; उसने ५८ पिलातके निकट जाकर यीशुकी लोथ मांगी। पिलातने लोथ देनेकी आज्ञा दिई। यूसफने लोथ लेकर धोए झये ५९ सूती बस्त्रमें लपेटी और उसे अपनी ही उस नये गोरमें रखी ६० जो उसने पत्थरमें खोदवाई थी, और बड़ा पत्थर गोरके द्वार पर ढुलका के चला गया। परंतु मगदलिनी मरियम् औ ६१ दूसरी मरियम् उसी गोरके सन्मुख बैठी थीं।

गोर पर पहरुओंका बर्णन रहा कर्ना।

निस्तार पर्बके तैयार कर्नेके दिनके पीछे अर्थात् सनीचरके ६२ दिनमें प्रधान याजकों और फिरूशियोंने एकठे होकर पिलातके निकट जाकर कहा कि हे प्रभु, हमें चेत है कि ६३ उस धोखा देनेहारेने जीते जी कहा कि तीन दिनके पीछे मैं फिर जी उठोंगा। सो तीसरे दिन तक उसी की गोर- ६४ पर पहरुओंको खड़े होनेकी आज्ञा कीजिये, न हो कि उसके शिष्य रातको आके उसकी लोथ चुरा ले जावें औ लोगोंसे कहें कि वह गोरमेंसे जी उठा है; तो पिछली चूक पहिलीसे बरी होगी। तब पिलातने उनसे कहा कि तुम्हारे ६५ समीप पहरुए हैं, जाके जो कुछ कि तुम्हारी जीमें आता है

६६ सो करो। सो वे गये और गोरके द्वारपर छाप देके और पहरा बैठायके गोरस्थानकी रक्षा करवाई।

२८ अठाईसवां अध्याय।

खीष्टका गोरसे जी उठना।

१ बिश्रामवारके पीछे जब अठवारेके पहिले दिन फटने लगा तब मगदलिनी मरियम् और दूसरी मरियम् गोरको देखने
२ आईं। औ देखो, बड़ा भुईंडोल हुआ; और परमेश्वरका दूत स्वर्गसे उतर आया और गोरके द्वारसे उस पत्थरको
३ सरकाके उस पर बैठा। उसका मुख बिजलीसा औ उसका
४ वस्त्र पालाकी नाईं श्वेत था; और उसके डरके मारे पहरुए
५ कम्पित हो मृतकोंके समान हुए। उसने स्त्रियोंसे कहा कि डरो मत, मैं जानता हूं कि तुम यीशुको, जो क्रूश पर मार
६ डाला गया था खोजतीं हो; वह यहां नहीं है; जैसा उसने कहा, वैसा ही जी उठा है; इधर आओ, उसस्थानको देखो
७ जहां प्रभु लेटा था। और तुरंत जाके उसके शिष्योंसे कहो कि वह मृतकोंमेंसे जी उठा है; देखो, वह तुमसे आगे गालील देशको जाता है; तुम वहां उसको देखोगे; देखो, मैंने
८ तुमको जता दिया है। इसपर स्त्रियां तुरंत गोरसे भय औ
९ बड़े आनन्दसे उसके शिष्योंको कहने दौड़ीं। जब वे उसके शिष्योंको कहने जातीं थीं, देखो, यीशुने उन्हें दर्शन देकर कहा कि कल्याण हो; तब स्त्रियोंने आके उसके चरणोंको पकड़के
१० दंडवत किई; औ उसने उनसे कहा कि डरो मत, जाके मेरे भाइयोंसे कहदेयो कि गालील देशको जाके वहां प्रभुको देखेंगे।

पुरोहितोंका पहरुओंको घूस देना।

११ जिस समय स्त्रियां चली जाती थीं, देखो, उन पहरुओंमेंसे कोई कोई आया और सब कुछ जो हुआ था सो
१२ प्रधान याजकोंसे कह सुनाया। जब उन्होंने प्राचीन लोगोंके संग एकट्ठे होके बिचार किया था तो उन सिपाहियोंको

बज्जतसे रुपैये देके कहा कि तुम यह बात कहइयो कि रातको १३ जब हम सो गए थे, उसके शिष्य आके लोथको चुरा ले गए। जो यह बात प्रधानके सुननेमें आवे तो हम उसको बुझाके १४ तुम्हें बचावेंगे। सो सिपाहियोंने रुपैये लेकर जैसे सिखलाय १५ गये थे वैसाही किया; औ यिहूदी लोगोंमें यही बात आजके दिन तक कही जाती है।

ग्यारह शिष्योंको खीष्टका गालील देशमें दर्शन देना और आज्ञा देनी।

तब ग्यारह शिष्य गालील देशको, उस पर्वतपर जो यीशुने १६ ठहराया था, चले गये; और यीशुको वहां देखकर दंडवत १७ किई; तो भी किसी किसीको संदेह ज्ञआ। पीछे यीशुने १८ उनके निकट आकर कहा कि स्वर्ग औ पृथिवीका सारा अधिकार मुझको दिया गया है; इसलिये तुम जाके सब देशोंके १९ लोगोंको शिष्य करके उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्माके नामसे डुबकी दिलाओ; और जो जो आज्ञा मैंने २० तुमको दिई है उन सबोंका पालन करनेको शिक्षा देओ; और देखो, मैं संसारकी समाप्तिलों तुम्हारे संग सदा रहता हूं। आमीन।

मार्कलिखित सुसमाचार।

१ पहिला अध्याय।

योहन डुबकी दिलानेहारेका बिबरण।

१ ईश्वरके पुत्र यीशु खीष्टके सुसमाचार का आरंभ। भवि-
२ ष्यद्वक्ताओंके ग्रंथमें यह लिखा है, 'देखो मैं अपने दूतको तेरे आगे भेजता हूं, वह जाके तेरे आगे मार्गको सुधारेगा;
३ प्रभुका पथ बनाओ, उसका राज मार्ग सब चौरस करो;
४ प्रांतरमें इसरीतके प्रचार कर्नेहारे एक जनका शब्द है'। योहन प्रांतरमें डुबकी दिलाता था, और पापोंकी क्षमाके लिये मन फिरानेकी जो डुबकी, उसकी शिक्षा कर्ता था।
५ यहूदा देशके सब लोग औ यिरूशालम नगर निवासी बाहिर निकलके उसके समीप आके अपने २ पापोंका अंगीकार कर्के
६ उसके हाथसे यर्दन नदीमें डुबकी लेते थे। योहनका बस्त्र ऊंटके रोमका, उसकी कटीमें चामका पटुका, और उसका
७ आहार टिड्डी औ बनका मधु थे। वह शिक्षा देता औ कहता था, मेरे पीछे एक आता है जो मुझसे महापुरुष है, मैं निहुड़के उसकी पगतरीके बंधनको खोलनेके योग्य नहीं हूं।
८ मैंने तुम्हें जलमें डुबकी दिलाया है परंतु वह तुम्हें पवित्र आत्मामें डुबकी दिलावेगा।

खीष्टको डुबकी दिलाना।

९ उसी समयमें यीशुने गालील देशके नासिरित नगरसे
१० आके योहनके हाथसे यर्दन नदीमें डुबकी ली। ज्योंहीं पानी मेंसे निकला त्योंही मेघका द्वार खुल गया, औ उसने
११ आत्माको कपोतके तुल्य अपने उपर उतर्ते देखा। उस समय यही आकाश बाणी हुई, तू मेरा प्रिय पुत्र है, तुझसेही मेरा परम संतोष है।

खीष्टकी परीक्षा।

तुरन्त आत्मा उसको बनमें ले गया। वहां चालीस दिन लों १२ बनके पशुओंके संग रहते शैतानसे परीक्षित हुआ; औ १३ स्वर्गके दूतोंने आकर उसकी सेवा की।

खीष्टका उपदेश कर्ना।

कैदखानेमें योहनके बन्ध होनेके पीछे यीशुने गालील १४ देशमें आके ईश्वरके राज्यका सुसमाचार प्रचार कर्के कहा, समय पूरा होता है, ईश्वरका राज्य निकट आता है, तुम १५ लोग मन फिराओ और सुसमाचारमें बिश्वास करो।

शिमोन औ आंद्रिय इत्यादिका बुलाना।

गालील समुद्रके तीर पर फिर्ते हुए शिमोन औ आंद्रिय १६ उसका भाई इन्हीं दोनों मछलियोंके अहेरियोंको सागरमें जाल फेंकते देखके उनसे कहा, तुम मेरे पीछे आओ, मैं १७ तुमको मनुष्योंके अहेरी बनाऊंगा। वे वहीं अपने जालोंको १८ तजके उसके पीछे हो लिये। वहांसे थोड़ आगे जाके याकूब १९ औ योहन नाम सिबदीके दो पुत्रोंको नाव पर जाल सुधारते देखके तुरंत यीशुने उन्हें बुलाया। वे अपने पिता सिबदीको २० निज दासोंके संग नाव पर त्याग कर उसके पीछे चले।

भूत लगे हुयको चंगा कर्ना।

तब कफर्नाहूम नगरमें उनके पहुंचनेके पीछे बिसराम- २१ वारको मंदिरमें पैठके यीशु उपदेश कर्ने लगा। उसके उप- २२ देशसे वे आश्चर्यित हुये क्योंकि उसने अध्यापकोंकी रीतिसे उपदेश न देके योग्य मनुष्यकी रीतिसे उपदेश दिया; उसी मंदिरमें अपवित्र भूत लगा हुआ एक मनुष्य था। उसने २३ चिल्लाके कहा, हे नासरतीय यीशु, हमको रहने दे, हमसे आपसे क्या काम है? तू क्या हमें नष्ट कर्ने आता है? मैं २४ आपको जानता हूं, आप ईश्वरके पवित्र जन हैं। यीशुने २५ उसको डांटके कहा, चुप रह इसमेंसे निकल जा। तब २६ अपवित्र भूत उसको मरोड़ कर चिचियाके उसमेंसे निकल गया। सब लोग आपसमें अचंभित होके कहते थे, यह क्या २७

२८ है? कैसा नया उपदेश है; यह अपवित्र भूतोंको अपनी योग्यतासे आज्ञा कर्ता है और वे इसके आज्ञाकारी हैं। तब गालील देशके चहुं ओर उसकी कीर्त्ति तुरंत फैल गई।

पितरकी सासको चंगा कर्ना।

२९ यीशु मंदिरसे बाहिर निकलके याकूब औ योहनको संग
३० लेके शिमोन औ आंद्रियके गृहमें गया। और पितरकी सास ज्वरसे पीड़ित होके खाट पर पड़ी थी; और तुरंत उन्होंने
३१ उसके बिषयमें उसे कहा; तब उसने आके उसका हाथ पकड़के उठाया; और तुरंत उसका ज्वर छूट गया और उसने उनकी सेवा की।

अनेक लोगोंको चंगा कर्ना औ एकांतमें प्रार्थना मांगनी।

३२ सांझको जब सूर्य अस्त हुआ तब लोग यीशुके समीप
३३ समस्त रोगीयों औ भूत लगे हुओंको लाए, तब नगरके
३४ सब निवासी आके द्वारपर एकठे हुए। उसने अनेकको जो नाना प्रकारके रोगोंसे व्याकुल थे चंगा किया औ बहुतसे भूतोंको छुड़ाया परंतु भूतोंको बोलने न दिया
३५ क्योंकि वे उसे चीन्हते थे। बड़े भोर उठके बाहिर जाके
३६ एकांतमें प्रार्थना की। और शिमोन और उसके सब संगीने उसके पीछे जाके और उसे पाके कहा, सब लोग आपको
३७ ढूंढ़ते हैं। उसने उन्हें कहा, आओ हम आस पासके नगरोंमें
३८ जावें क्योंकि मैं वहां बात प्रचार कर्नेको बाहिर आया हूं।
३९ उसने सब गालील देशके मंदिरोंमें बात प्रचार किई औ भूतोंको छुड़ाया।

एक कोढ़ीको चंगा कर्ना।

४० एक कोढ़ीने आकर उससे बिनती करके ठेवने टेककर कहा, जो आपकी इच्छा हो तो मुझे पवित्र कर सक्ते
४१ हैं। तब यीशुने दयाल होके हाथ बढ़ाकर उसे छूके
४२ कहा, मेरी इच्छा है तू पवित्र हो। यह बचन कहते ही
४३ उसका कोढ़ जाता रहा और वह पवित्र हो गया। यीशुने
४४ तुरंत बिदा कर्के उसे आज्ञा देके कहा, देख, किसीसे

कुछ न कह, परंतु पुरोहितको अपना शरीर दिखा और अपने पवित्र होनेके निमित्त जो दान मूसाने ठहराया है सो लोगोंको प्रमाण देके चढ़ा दे। परंतु वह मनुष्य बाहिर ४५ जाके वह कर्म ऐसा फैलायके प्रचार कर्ने लगा कि यीशु फिर प्रगट होके नगरमें न जा सकता था परंतु प्रांतरमें रहता था; तौ भी लोग चहूं ओरसे उसके निकट आए।

२ दूसरा अध्याय।

खीष्टके निकट बहुतसे लोगोंका एकत्र होना।

केएक दिन बीते यीशु कफर्नाहूम् नगरमें फिर गया और १ चर्चा हुई कि वह किसी घरमें है; तब यीशुके निकट इतने लोग आके एकठे हुए कि गेह वा बाहिर द्वारपर सबको २ स्थान न मिला, औ वह उनसे उपदेशकी बात कहने लगा।

पक्षाघातीका चंगा कर्ना, और पापोंकी क्षमा कर्ना।

चार जन एक पक्षाघातीको उठाके उसके समीप लाए। ३ परंतु जब भीड़के मारे उसके निकट न ला सके, तब जहां ४ यीशु था वहांकी छातको खोलके छेद कर्के खाट सहित पक्षाघातीको उतारा। यीशुने उनका बिश्वास देखके उस ५ पक्षाघातीसे कहा, हे पुत्र तेरे पाप क्षमा हुए। तब उस ६ स्थानके बैठनेहारोंमेंसे कै एक अध्यापक अपने मनमें कहते ७ थे, यह मनुष्य ईश्वरकी ऐसी निंदा क्यों कर्ता है? ईश्वरके बिन पापोंकी क्षमा कर्नेकी सामर्थ्य किसकी है? तुरंत यीशुने अपने मनमें उनके मनकी बात बूझकर उनसे कहा, ८ तुम अपने मनमें ऐसी बात क्यों कहते हो? तेरे पाप ९ क्षमा हुए, अथवा खाट उठाके चला जा, इन दोनों बच- १० नोंमेंसे इस पक्षघातीसे कौनसा बचन कहना सहज है? पृथ्वीपर पापोंकी क्षमा कर्नेकी सामर्थ्य मनुष्यके पुत्रको है, तुम्हारे यह जाननेके लिये (उसने इसी पक्षाघातीसे कहा,) ११ उठ, अपनी खाट लेके अपने गेहमें जा, मैं तुझको यही आज्ञा देता हूं। वह तुरंत उठके खाट उठाके सबके आगे चला १२

गया; औ सब चमत्कृत होके कहने लगे, ऐसा कर्म हमने कभी नहीं देखा है, यह बचन कहके ईश्वरका धन्यबाद किया।

मथिको बुलाना, औ पापियोंके संग बैठके भोजन कर्ना।

१३ यीशु वहांसे फिर समुद्रके तीर पर गया और सब लोग
१४ उसके निकट आए, तब उसने उनको उपदेश दिया। जाते जाते उसने कर उगाहनेके स्थानमें आल्फेयके पुत्र लेविको बैठे ऊए देखके उसको बुलाके कहा, मेरे पीछे आ; तब वह
१५ उठके उसके पीछे चला। जब यीशु उसके गेहमें भोजन करके बैठता था तब बऊतेरे कर उगाहनेहारे औ पापीलोग उसके औ उसके शिष्योंके संग एकठे बैठते थे क्योंकि बऊतसे
१६ लोग उसके पीछे चले आए थे। जब अध्यापक औ फिरूशि-योंने यीशुको कर उगाहनेहारे औ पापियोंके संग भोजन करते देखा तब उसके शिष्योंसे कहा, यह क्या है? वह कर
१७ उगाहनेहारे औ पापियोंके संग क्यों भोजन और पान कर्ता है? यीशुने यह बचन सुनके उत्तर दिया, अरोगी लोगोंको बैद्यका प्रयोजन नहीं परंतु रोगियोंको प्रयोजन है; मैं धर्मी लोगोंको बुलाने नहीं आया परंतु पापियोंको मन फिरानेके निमित्त बुलाने आया हूं।

योहनके शिष्य औ फिरूशियोंको उपवासके निमित्तमें निरुत्तर कर्ना।

१८ योहन औ फिरूशियोंके उपवास कर्नेहारे शिष्योंने यीसुके निकट आके कहा, योहन औ फिरूशियोंके शिष्य उपवास कर्ते हैं, तुम्हारे शिष्य उपवास क्यों नहीं कर्ते हैं? यीशुने उनको
१९ उत्तर दिया, जब लग दुलहा बरातियोंके संग रहता है क्या वे उपवास कर सक्ते हैं? जब ताईं दुलहा उनके संग
२० रहता है तब ताईं वे उपवास नहीं कर सक्ते हैं; जब उनसे दुलहा अलग किया जायगा तब वे उपवास करेंगे; ऐसा
२१ समय आवेगा। कोई नये कपड़ेकी थेगली पुराने कपड़ेपर नहीं लगाता है, जो लगावे तो उसकी थेगली पुराने कपड़ेको फाड़ लेती है और वह फाड़ और बुरा होता है। कोई
२२ पुराने कुप्पेमें नया मद्य नहीं रखता है क्योंकि नये मद्यके

तेजसे पुराना कुप्पा फट जाता है; इससे मद्य बह जाता है औ कुप्पा भी नष्ट होता है; इस कारण नया मद्य नये कुप्पेमें रखना उचित है

बिश्रामवारके दिन गेहूंकी बालें तोड़ने और खानेमें अपने शिष्योंको निर्दोषी ठहराना।

जब बिश्रामवारमें यीशु अन्नके खेतमें होके चला जाता २३ था तब उसके शिष्य जाते जाते अन्नकी बालें तोड़ने लगे। फिरूशियोंने कहा, यह देखो, बिश्रामवारमें जो कर्म नहीं २४ कर्ना चाहिये सो ये क्यों कर्ते हैं? तब उसने उनको उत्तर २५ दिया, दायूद् औ उसके सब संगियोंने भूखसे दुःखी होके जो कर्म किया सो क्या तुमने नहीं पढ़ा है? उसने क्योंकर २६ अबियाथर् नाम प्रधान पुरोहितके समयमें ईश्वरके मन्दिरमें पैठके भेंटकी रोटी खाई जो पुरोहितोंको छोड़ किसीको खाना उचित न था और अपने संगियोंको भी दी। और भी २७ कहा, मनुष्यके लिये बिश्रामवार ठहराया गया है परंतु मनुष्य बिश्रामवारके लिये नहीं। मनुष्यका पुत्त्र बिश्राम- २८ वारका भी स्वामी है।

३ तीसरा अध्याय

सूखे हुए हाथके एक मनुष्यको चंगा कर्ना।

यीशु मंदिरमें फिर पैठा; और वहां एक मनुष्य था जिसका १ हाथ सूख गया था। और लोग यीशुपर दोष ठहरानेके लिये चौकसीसे देख रहे थे, वह बिश्रामवारमें उस मनुष्यको २ चंगा करेगा वा नहीं; तब उसने सूखे हुए हाथवालेसे कहा, ३ बीचमें खड़ा हो। तब उसने उन्से पूछा, बिश्रामवारमें ४ भलाई कर्ना वा बुराई कर्ना, प्राणकी रक्षा कर्नी वा नष्ट कर्ना, इनमेंसे क्या कर्ना उचित है? परंतु उन्होंने उत्तर न दिया। उसने उनके मनकी कठिनताके कारणसे दुःखित होके ५ और क्रोधसे उन सबोंपर देखके उस मनुष्यसे कहा, अपना हाथ पसार; उसने हाथ पसारा, और उसका हाथ

६ जैसा दूसरा था वैसाही चंगा हो गया। फिर फिरूशी लोग तुरंत जाके उसको मार डालनेके निमित्त हेरोदियोंके संग
७ बिचार कर्ने लगे। तब यीशु उस स्थानको तजकर अपने शिष्योंके संग फिर समुद्रके तट पर गया; गालील औ यऊदा औ यिरूशालम् औ इदोम् औ यर्दन नदीके पारसे बऊतेरे
८ लोग उसके पीछे हो लिये। और सोर औ सीदोनके निकट अनेक रहनेहारे उसके आश्चर्य्य कर्मोंका समाचार
९ सुनके उसके निकट आए। जिससे भीड़ उसे दबाय न डाले, इससे यीशुने एक छोटी नाव समीप रखनेके लिये
१० अपने चेलोंको आज्ञा दी। क्योंकि उसने बऊतेरे लोगोंको चंगा किया इसलिये जितने रोगी थे उसे छूनेके लिये धक्कमधक्का
११ कर्ते थे। और जब अपबित्र भूतोंने उसको देखके दंडवत् कर्के
१२ ऊंचे शब्दसे कहा, आप ईश्वरका पुत्र हैं। तब उसने उनसे दृढ़तासे आज्ञा कर्के कहा, मुझको न जनाओ

बारह शिष्योंको ठहराना।

१३ 　फिर वह एक पर्वत पर गया औ जिसको २ चाहा उसको २
१४ बुलाया; और वे उसके निकट आए। उसने शिमोन्, औ सिबदीका पुत्र याकूब् औ उसका भाई योहन, औ आंद्रिय,
१५ औ फिलिप, औ बर्थलमी, औ मथि, औ थोमा, औ आल्फी-
१६ यका पुत्र याकूब् औ थद्दीय, औ कनानीय शिमोन्, और जो
१७ उसको पकड़वावेगा ईस्कारयूतीय यऊदा, इन्हीं बारह शिष्योंको ठहराया कि अपने संग रहें औ सुसमाचार प्रचार कर्नेको भेजे जांय औ सब प्रकारकी रोग दूर कर्नेकी औ भूतोंके छुड़ानेकी सामर्थ्य रखें, उसने शिमोन पर पितर
१८ नाम (अर्थात् पाथर) रखा औ सिबदीके पुत्र याकूब्पर
१९ औ याकूबके भाई योहनपर बिनेरेगश नाम (अर्थात् गर्ज्जनके पुत्र) रखा।

अध्यापकोंको निरुत्तर कर्ना।

२० 　फिर वे सब किसी घरमें आए, परंतु वहां ऐसी भीड़
२१ ऊई कि उन्होंने भोजन कर्नेका अवकाश न पाया। जब

उसके कुटुंबोंने यह समाचार पाया, तब वे उसे पकड़नेको गये क्योंकि उन्होंने कहा, वह अचेत है। यिरूशालमसे आए २२ हुए जो अध्यापक थे उन्होंने कहा, इसमें भूताधिपति है और वह भूताधिपतिके सहायसे भूतोंको छुड़ाता है। उसने उनको बुलाके दृष्टांतों करके कहा, शैतान किस प्रकारसे २३ शैतानको छुड़ा सकता है? जो कोई राज बिरोधसे दो भाग २४ हो जावें तो वह राज स्थिर नहीं रहेगा। जो किसीके २५ परिवार बिरोधसे दो भाग हो जावें तो वह भी स्थिर नहीं रह सकेगा। तैसेही शैतान जो अपना शत्रु होके दो भाग २६ हो जावें तो वह भी स्थिर नहीं रहेगा, उसका नाश होगा। २७ जो कोई किसी प्रबल मनुष्यको पहले न बांधे तो उसके गृहमें पैठके सामग्री लूट नहीं सक्ता; परंतु जो उसको पिहले बांधे तो उसके घरका धन लूट सकेगा। मैं तुमसे सत्य कहता २८ हूं, जो सब पाप और जितनी बुरी बात वे कहेंगे येही सब मनुष्योंके सन्तानोंको क्षमा किये जायंगे परंतु कोई जो पवित्र २९ आत्माके बिरोध बुरी बात कहे तो क्षमा कभी नहीं होगी; वह सदाके दंडके योग्य होगा। उसके संग एक अपवित्र भूत ३० है, उनकी यह कथा कहनेसे उसने यह बात कही।

खीष्टके कुटुंबका वर्णन कर्ना।

उस समय उसका भाई औ माताने आके बाहिर खड़े ३१ होकर उसको बुला भेजा। जो लोग उसके आस पास ३२ बैठते थे उन्होंने उससे कहा, देख आपकी माता औ भाई आपको बाहिर ढूंढ़ते हैं। उसने उनको उत्तर दिया, कौन ३३ है मेरी माता? औ कौन हैं मेरे भाई? उसने उन शिष्योंकी ३४ ओर जो उसके आस पास बैठते थे, देखके कहा, देखो, येही ३५ मेरी माता औ मेरे भाई हैं। जो कोई ईश्वरकी इच्छाके अनुसार क्रिया कर्ता है सोई मेरा भाई वा मेरी बहिन वा माता है।

४ चौथा अध्याय।

बीज बोनेहारे किसानका दृष्टांन्त।

१ फिर वह समुद्रके तटपर उपदेश कर्ने लगा; वहां बहुतसे लोग उसके समीप ऐसे एकठे हुए कि वह समुद्रमें एक नाव २ पर चढ़ बैठा, और सब लोग समुद्रके तीर पर रहते थे। उसने उन्हें दृष्टांतों करके अनेक बात सिखाया, औ उपदेश ३ देके उनसे कहा, सुनो, देखो, एक किसान बीज बोनेको गया; ४ बीज बोनेके समय कुछ बाटकी ओर पड़े, उसको आकाशके ५ पच्ची आके चुग लिये। कुछ बीज पथरैली भूमीमें पड़े जहां बहुत माटी न मिली, और बहुत माटीके न मिलनेसे उनके ६ अंकुर शीघ्र निकले; परंतु जब सूर्य उदय हुआ तब जल ७ गए, और जड़ न रखनेके हेतसे सूख गए। और कुछ बीज कांटोंमें पड़े, और कांटे बढ़के उनको घोंट लिया, औ फल ८ नहीं लगे। और कुछ बीज उत्तम भूमिमें पड़े, और उगे, ९ उनमेंसे कुछेकने तीस गुने, कुछेकने साठ गुने, औ कुछेकने सौ गुने फल दिये; फिर उसने उनसे कहा, जिसके कान सुननेको है सो सुने।

उसका अर्थ।

१० जब वह अकेला हुआ, तब जो उसके संगी थे उन्होंने ११ बारह शिष्योंसे मिलकर इस दृष्टांतका अर्थ उससे पूछा। तब उसने उनसे कहा, ईश्वरके राज्यकी गूढ़ बातोंका ज्ञान १२ तुम्हें दिया गया है परंतु जो बाहिर हैं उन्होंको दृष्टांतों करके सब होता है जिसते वे देखते हुए देखें और न जानें, औ सुनते हुए सुनें और न बूझें, न होय वे कभी फिराये जावें और उन्हें पाप क्षमा किये जायें। फिर उसने उनसे १३ कहा, क्या तुम यह दृष्टांत नहीं बूझते हो? तो सब दृष्टां- १४ तोंको क्योंकर बूझोगे? किसान बातके बीज बोता है; लोग १५ जो बात सुनते औ बुझते नहीं शैतान् आके तुरंत उस बातके बीजको जो उनके मनमें बोया गया ले जाता है, वेही

पथकी ओरके बीज हैं। वैसेही वे हैं जो बात सुनके तुरंत १६ प्रसन्नतासे ग्रहण कर्ते हैं औ हृदयमें जड़ न रखनेसे थोड़े काल स्थिर रहते हैं और जिस समय बातके लिये कोई क्लेश वा १७ उपद्रव उत्पन्न होते हैं वे तुरंत बिघ्न पाते हैं, वेही पथरैली भूमिमें बोय हुये बीज हैं। वे जो बात सुन्ते हैं, परंतु संसारकी १८ चिंता औ धनकी छलता औ और बस्तोंका लोभ समायके बातको घोंट डालती हैं, और वह निष्फल होता है, वेही १९ कांटोंकी भूमिमें बोये हुये बीज हैं। वे जो बात सुनके ग्रहण २० कर्ते हैं, और फल देते हैं, कोई तीस गुणे, कोई साठ गुणे, कोई सौ गुणे, वेही उत्तम भूमिमें बोय हुये बीज हैं।

दीपकका दृष्टांत।

उसने और भी कहा, क्या दीपक नांदके अथवा खाटके २१ नीचे रखा जाता है और दीवतट पर नहीं; कुछ गुप्त नहीं है २२ जो प्रकाश न होवे, औ कुछ ओटमें नहीं है जो प्रगट न होवे। २३ जिसके सुननेको कान होय सो सुने।

सुननेमें सावधान होनेका बचन।

और भी उसने उनसे कहा, जोर बात सुन्ते हो उसके बिष- २४ यमें तुम सावधान होओ क्योंकि जिस परिमानेसे तुम नापोगे उसी परिमानेसे तुम्हारे लिये नापा जायगा; औ तुम्हें जो २५ मानते हो अधिक दिया जायगा। जिसके निकट बढ़ता है उसे और भी दिया जायगा, परंतु जिसके निकट बढ़ता नहीं है उसका जो कुछ होय वह भी छीन लिया जायगा।

बीजको बोनेका दृष्टान्त।

उसने कहा, ईश्वरका राज्य ऐसा है जैसा एक जन जो २६ खेतमें बीज बोवे, फिर रात दिन सोवे जागे, और बीज २७ किस रीत उगके बढ़े, वह नहीं बूझता है; क्योंकि पृथ्वी २८ आपसे फल लाती है पहिले अंकूर, फिर बाल, पीछे बालमें २९ दाना। औ जब दाना पक चुका है तब वह अन्नकाटनेका समय जानके तुरंत हंसुआसे काटता है।

राईका दृष्टान्त।

३० फिर उसने कहा, ईश्वरका राज्य किसके समान है? औ
३१ किस वस्तुसे हम उसे उपमा देवें? वह एक राईके तुल्य है जो
३२ भूमिमें बोनेके समय पृथ्वीके सब बीजोंसे छोटा है परंतु बोनेके पीछे वह उगके सब सागोंसे बड़ा होता है; और उसकी ऐसी बड़ी डालियां होती हैं कि उसकी छाया तल आकाशके पक्षी बसेरा कर्ते हैं।

और और दृष्टांतोंकी कथा।

३३ वह उनकी बुद्धिके अनुसार उन्हें ऐसे बक्कतेरे दृष्टांतों करके उपदेश देता था, हां, दृष्टांतोंके बिना उसने कुछ न कहा।
३४ और निरालेमें होके अपने शिष्योंको सब बात समझाया।

आंधीको थांभ देना, समुद्रको अडोल कर्ना।

३५ उस दिन सांझको यीशुने शिष्योंसे कहा, आओ, हम उस पार
३६ चलें। वे लोगोंको बिदा कर्के झट पट उसको लेकर नाव पर
३७ ले चले, और २ छोटीं नावें उसके संग थीं। तब बड़ी आंधी
३८ उठी और नाव लहरोंके मारनेसे जलसे भर गई; इसमें वह नावकी पिछली ओर तकिये पर सिर धरके सोता था; तब उन्होंने उसको जगाके कहा, हे प्रभु, आप हमारी सुध नहीं
३९ लेते हैं? हमारे प्राण जाते हैं। तब उसने उठके बयारको दपटकर समुद्रसे कहा, ठहर औ थम जा; तब बयार बन्ध
४० ऊआ और समुद्र स्थिर ऊआ। फिर उसने उनसे कहा, तुम
४१ क्यों ऐसा डर्ते हो? बिश्वास क्यों नहीं रखते हो? वे सब अति भयमान होके आपसमें कहने लगे, यह कैसा मनुष्य है, बयार औ समुद्र उसके आज्ञाकारी हैं।

५ पांचवां अध्याय।

बक्कतेरे भूत लगे ऊओंको चंगा कर्ना।

१ वे समुद्र पार जाके गदरियोंके देशमें पऊंचे। जों वह
२ नाव परसे उतरा त्योंही एक मनुष्यने जिसमें अपबित्र भूत
३ लगा था गोरस्थानमेंसे निकल कर उससे भेट की। उसका

बास गोरस्थानमें था, कोई उसे सांकलोंसे भी बांध न सक्ता
था। क्योंकि वे बेर बेड़ियों औ सांकलोंसे बांधा गया था तौ ४
भी सांकलोंको तोड़ डाला औ बेड़ियोंको टूक टूक किया और ५
कोई उसे बशमें न कर सका। सदा दिन रात पर्बतोंपर
और गोरोंके बीचमें फिर्ता ऊआ चिचिया कर्ता था और ६
अपनेको पाथरोंसे काटता था। यीशुको दूरसे देखते ही दौड़
कर दंडवत की। औ ऊंचे शब्दसे चिचियाके कहा, हे अति- ७
महान ईश्वरके पुत्र यीशु, आपसे मुझे क्या काम है मैं
आपको ईश्वरकी सौंह देता, आप मुझे दुःख न दे। क्योंकि ८
यीशुने उससे कहा था, अरे अपबित्र भूत, इस मनुष्यसे दूर
हो। फिर उसने उससे पूछा, तेरा क्या नाम है? उसने उत्तर ९
दिया, मेरा नाम सेना है इस लिये कि हम बऊत हैं। हमें १०
इस देशसे न निकाल दीजिये मैं आपसे अति बिनती
करता हूं। उस समय पर्बतोंके समीप सूकरोंका एक बड़ा ११
झुंड चर्ता था; भूतोंने बिनती कर्के कहा, सुकरोंके इस
झुंडमें आसरा लेनेको हमें भेजिये। यीशुने उन्हें तुरंत १२
जाने दिया; तब वे बाहर जाके बराहोंके झुंडमें पैठ गये;
और वह झुंड जो न्यूनाधिक दो सहस्र था कड़ाड़े परसे
बेग दौड़कर समुद्रमें गिरके घोंट गया। सूकरोंके चरबाई १३
भागकर नगरमें औ ग्राममें यही सब ब्योरा कहने लगे;
और क्या क्या ऊआ इसे देखनेको लोग बाहिर आये। और वे १४
यीशुके निकट आके उसी भूत लगे ऊए को अर्थात् जिसमें १५
भूतोंकी सेना थी बस्त्र पहिरे सज्ञान बैठे देखकर भयमान
ऊए। औ भूत लगे ऊये मनुष्यका औ सूकरोंका ब्योरा १६
सुनके वे उनकी सीमेंसे निकल जाना उससे बिनती कर्ने
लगे। यीशुको नाव पर फिर चढ़नेमें उन भूतोंसे छुड़ाया १७
ऊया मनुष्य उसके संग रहनेकी प्रार्थना कर्ने लगा परंतु १८
यीशुने उसे आने न देके कहा, तू अपने घर औ कुटुंबके १९
निकट जा, औ प्रभुने तुझ पर दया कर्के जो २ बड़े कर्म किये हैं
उनको जना। वह जाके दिकापली देशमें उन बड़े कामोंको जो २०

यीशुने उसके लिये किये थे प्रचार कर्ने लगा; और सबोंको अचंभा ऊआ।

अध्यक्षकी कन्याको जिलाने जाना

२१ जब यीशु नावपर फिर पार आयके समुद्रके तीर पर खड़ा
२२ था तब बऊत लोग उसके समीप आए। औ यायीर् नाम मन्दिरके एक अध्यक्षने उसको देखतेही उसके चरणों पर गिरके बऊतसी बिनती कर्के कहा, मेरी छोटी बेटी मरने पर है;
२३ जो आप आके उसे चंगा कर्नेको उस पर हाथ धरें तो वह
२४ जीती रहेगी। तब यीशु उसके संग गया; और उसके पीछे बऊतसे लोग होके उसपर भीड़ करते थे।

प्रदर रोगिणीको चंगा कर्ना।

२५ उस समय कोई स्त्री जो बारह बर्षसे लोऊ बहनेके रोगसे
२६ पीड़ित थी औ बऊतसे बैद्योंसे बड़ा दुःख भोगके अपना सब
२७ धन उठान करके चंगी न होके अधिक पीड़ित होने लगी;
२८ उसने यीशुका समाचार सुनके अपने मनमें कहा, जो मैं केवल उसका बस्त्र छूने पाऊं तो चंगी हो जाऊंगी; इससे उसने उस भीड़में उसके पीछे आयके उसके बस्त्रको छूआ
२९ और तुरंत उसकी लोहूजारी सूख गई; तब उसने अपने
३० शरीरमें जान लिया कि मैं चंगी हो गई हूं। और यीशु भी अपनेसे यह जानके कि मुझमेंसे शक्ति निकली है तुरंत भीड़की ओर फेरके पूछा, मेरे कपड़ेको किसने छूआ है?-उसके
३१ चेलोंने कहा, आप देखते हैं कि आप पर लोग भीड़
३२ करते है तौभी आप यह कहते हैं किसने मुझे छूआ है? परंतु जिसने यह कर्म किया था उसे देखनेके लिये यीशु
३३ चहुं ओर दृष्टि करने लगा। तब उस स्त्रीने डरसे कांपके अपनेको चंगी ऊई जानके आकर उसके सन्मुख गिरके
३४ सत्यसे सब कहा। उसने कहा, हे पुत्री, तेरे बिश्वासने तुझे चंगा किया है; तू कुशलसे जा, अपने रोगसे बची रह।

अध्यक्षकी कन्याको जीव दान देना।

जब यीशु यह बात कहता था, मन्दिरके अध्यक्षके घरसे ३५ लोगोंने आके अध्यक्षसे कहा, तेरी बेटी मर गई है, अब गुरुको क्यों दुःख देता है? यीशुने यह बचन सुनके मन्दिरके ३६ अध्यक्षसे कहा, भय न कर, केवल बिश्वास कर। तब उसने ३७ पितर औ याकूब् औ उसके भाई योहनको छोड़ और किसीको अपने संग आने नहीं दिया। मन्दिरके अध्यक्षके ३८ घरके निकट आके धूम और रोदन औ महा बिलाप कर्नेहारोंको देखा। और घरमें जाके उन्हें कहा, तुम ऐसा ३९ धूम वा रोदन क्यों कर्ते हो? कन्या मरी नहीं है, सोती है। वे उस पर हंसे; तब उसने सबोंको बाहिर करके ४० कन्याकी माता औ पिता औ अपने संगियोंको लेके जहां कन्या पड़ी थी वहां पैठा। और कन्याका हाथ पकड़के उससे ४१ कहा, 'तालिथा कूमी' अर्थात् हे कन्या उठ,। तुरंत वह कन्या जो बारह बर्षकी थी उठके चलने लगी; और वे बड़े ४२ अचंभेसे चमत्कृत हुए। बत उसने उनसे कहा उसको कुछ ४३ खानेको देओ; और उसने उनको दृढ़तासे आज्ञा दिई कि यह किसीको न जनावें।

६ छठवां अध्याय।

खीष्टको लोगोंका तुच्छ जानना।

यीशु वहांसे जायके अपने देशमें आया और उसके चेले १ उसके पीछे हो लिये। जब बिश्रामवार आया तब उसने २ मन्दिरमें उपदेश कर्ने लगा; और बहुतेरे उसकी बात सुनके आश्चर्य कर कहने लगे, उसको ये कहांसे हुये? और यह ज्ञान क्या है जो उसको दिया गया है और जिससे ऐसे आश्चर्य कर्म उसके हाथोंसे किये जाते हैं? क्या वह मरि- ३ यमका पुत्र बढ़ई नहीं? याकूब् औ योसि औ यिहूदा औ शिमोन ये सब क्या उसके भाई नहीं? और उसकी बहिनें क्या ४ यहां हमारे समीप नहीं हैं? इसी रीति उन्होंने उससे बिघ्न

५ पाया। यीशुने उनसे कहा, केवल अपने देशमें औ अपने कुटुम्बोंमें औ अपने घरमें भविष्यद्वक्ताका अपमान और कहीं
६ नहीं है। और वह वहां कोई आश्चर्य कर्म न कर सकता था इनके बिना कि थोड़े रोगियों पर हाथ धरके उन्हें चंगा किया; और उसने उनके अबिश्वाससे अचंभा किया।

शिष्योंको सामर्थ्य देनो।

७ तब उसने चहुं ओरके ग्रामोंमें फिरकर उपदेश दिया। तब बारह चेलोंको बुलाकर और उन्हें दो दो करके उन्हें भेजने लगा; उनको भी अपबित्र भूतोंको बश कर्नेकी शक्ति
८ दिई। औ यही आज्ञा किई, तुम यात्राके लिये एक लाठीके बिन न झोली न रोटी न कटिमें रूपैया लेओ परंतु पांवोंपर
९ जुती पहिनो और दो अंगे न पहिनो। उसने और भी
१० उनसे कहा, तुम जिस किसीके घरमें जाओ जब तक उसीसे
११ न निकलो वहां रहो। जो कोइ तुम्हारी पऊंनई न करे वा तुम्हारा बचन न सुने वहांसे निकलके उनके विरूद्ध साक्षी देनेके लिये अपने पांवों की धूल झाड़ देओ; मैं तुमसे सच कहता हूं, बिचारके दिनमें उस नगरका दंडसे सिदोम् औ
१२ अमोरा नगरका दंड थोड़ा होगा। तब चेले जायके मन
१३ फिरानेका उपदेश कर्ने लगे। और उन्होंने बऊतेरे भूतोंको छुड़ाया औ बऊतेरे रोगियोंको तेल मलके उन्हें चंगा किया।

डुबकी दिलानेहारे योहनका बध कर्ना।

१४ इनही कामोंसे यीशुकी चर्चा चारों ओर फैल गई, और हेरोद् राजाने उसके बिषयमें कुछ सुनके कहा, योहन् डुबकी दिलानेहारा गोरमेंसे जी उठा है, इस लिये ये अद्भुत
१५ कर्म उससे किई जाती हैं। औरोंने कहा, यह मनुष्य एलिय है, और औरोंने कहा, यह एक भविष्यद्वक्ता है अथवा
१६ भविष्यद्वक्ताओंमेंसे किसी एक जनके समान है। परंतु हेरोदने यह सुनके कहा, यह योहन है जिसका सिर
१७ मैंने काटवाया, वही गोरमेंसे जी उठा है। हेरोदने

हेरोदियाके लिये जो उसके भाई फिलिपकी स्त्री थी, लोगोंको भेज कर योहन्को पकड़वाके कैदखानेमें बंद करवाया क्योंकि हेरोदने हेरोदियासे बिवाह किया था। औ योहन्ने उससे १८ कहा था, अपने भाईकी स्त्रीको रखना तुझे उचित नहीं है। इसीसे हेरोदिया योहन्की बैरी होके उसको मारडा- १९ लने की इच्छा कर्ती थी परंतु न सक्ती थी। क्योंकि हेरोद् २० योहन्को धार्मिक औ सतपुरुष जानके उससे डरके उसकी रच्छा कर्ता था और उसके उपदेश सुनके उसके अनुसार अनेक कर्म कर्ता था औ प्रसन्नतासे उसके उपदेश सुनता था। जब हेरोद्ने अपने जन्म दिनमें अपने प्रधान मनुष्यों औ २१ सेनापतियों औ गालील् देशके बड़े लोगोंके लिये बिआरी बनाई, उसी समयमें हेरोदियाकी कन्याने आके उस सभामें २२ नाच कर्के हेरोद्को औ उन्होंको जो उसके संग बैठते थे प्रसन्न किया; तब राजाने उस कन्यासे कहा, जो तू मुझसे चाहे सो मांग, मैं तुझे दूंगा। औ सोंह खाके कहा, जो २३ कुछ तू मेरा आधाराज लों मांगे सो तुझे दूंगा। कन्याने २४ बाहिर जायके अपनी मातासे पूछा, मैं क्या मांगूं? माता २५ बोली, योहन डुबकी दिलानेहारेके सिरको। कन्या तुरंत २६ राजाके समीप आके बोली, अब योहन डुबकी दिलानेहा- रेके सिर थालमें रक्खके मुझे दे, यह मेरी इच्छा है। राजा २७ अतिही दुःखित हुआ, तौभी अपनी सोंहके औ अपने संगके बैठनेहारोंके हेतसे अस्वीकार नहीं कर सकता था, इसलिये उसने तुरन्त योहनके सिर लानेकी आज्ञा देके पहरूआको भेज दिया। पहरूआने कैदखानेमें जायके योहनका सिर २८ काटडाला और थालमें लाके कन्याको दिया; और कन्याने उसे अपनी माताको दिया। योहनके शिष्योंने यह समाचार २९ पाके उसकी लोथको ले जायके गोरमें गाड़ी।

खीष्टका एकांतमें जाना।

फिर शिष्योंने यीशुके निकट एकठे आके जोर कर्म किये थे ३० और शिक्षा किई थी उनका बेओरा दिया। और उसने उनसे ३१

कहा, तुम निरालेमें आयके तनकि बिश्राम करो क्योंकि उसके निकट इतने लोग आते जाते थे कि उन्हें भोजनका
३२ अवकाश नहीं मिलता था। तब वे नावपर बैठके एक उजाड़
३३ स्थानमें चले गये। परंतु लोगोंने उनको जाते देखा और बहुतेरे उसको चीन्हके सब नगरोंमेंसे दौड़के उनसे आगे
३४ पहुंचके उसके समीप आये। यीशुने नावसे उतर बहुतसे लोगोंको देखके उन पर दया किई क्योंकि वे अपालक भेड़ोंकी नाई थे; और उन्हें बहुतसा उपदेश देने लगा।

पांच रोटी औ दो मछलियोंसे पांच सहस्र लोगोंको भोजन कर्ना।

३५ जब दिन थोड़ा रहा तब उसके चेलोंने समीप आके
३६ उससे कहा, यही अति उजाड़ स्थान है, औ अबेर बहुत हुई। अब चारों ओरके खेतों औ ग्रामोंमें जानेको, कि अपने लिये खाना मोल लेवें, इन लोगोंको बिदा कीजिये,
३७ क्योंकि उनके संग खानेको कुछ नहीं है। उसने उनको उत्तर दिया, तुम उनको भोजन कराओ; उन्होंने कहा, क्या हम जायके दो सौ रूपैयोंकी रोटी कीनके उनको भोजन करावें?
३८ उसने उनसे पूछा, तुम्हारे निकट कितनी रोटियां हैं? जायके देखो; उन्होंने देखके कहा, पांच रोटियां औ दो मछलियां
३९ हैं। तब उसने उन सबको हरी घास पर पांती पांती बैठ-
४० नेकी आज्ञा दिई। तब वे सौ२ जन औ पचास२ की पांती
४१ बांधके बैठ गये। और उसने उन पांच रोटियां औ दो मछलियोंको लेके आकाशकी ओर देखके ईश्वरका धन्यबाद किया; और रोटियोंको तोड़के उन लोगोंको परोसनेके लिये शिष्योंको दिया, और दो मछलियोंको भी भाग कर्के
४२ सबोंको दिलाने दिया। और सब लोग भोजन कर्के तृप्त
४३ हुए। और उन्होंने रोटियोंके टूकोंसे और बची हुई मछ-
४४ लीयोंसे बारह टोकरियां भरकर उठा लीं। भोजन कर्नेहारे पांचएक सहस्र पुरुष थे।

समुद्र पर पावोंसे चलना।

४५ फिर उसने उन लोगोंको बिदा कर्ते२ चेलोंको नाव पर

चढ़ाके आगे उस पार बैत्सैदा नगरमें जानेकी दृढ़ आज्ञा दी।
सबोंको बिदा कर्के आप प्रार्थना कर्नेके लिये एक पर्वत पर ४६
गया। जब सांझ ऊई नाव समुद्रके बीचमें थी परंतु आप ४७
भूमिपर अकेला था। तब सन्मुखकी बतासमे शिष्य खेवते ४८
खेवते परिश्रम कर्ते थे, यह देखके रातके चैाथे पहरमें उसने
समुद्र पर पावोंसे चलते ऊए उनके निकट आके उनके आगे
जाने पर था। उन्होंने उसको समुद्र पर चलते ऊए देख ४९
उसको भूत जानके चिचिया उठे क्योंकि उसको देखके सब ५०
व्याकुल ऊए। इसपर उसने उनसे तुरंत बार्त्ता कर्के कहा,
सुस्थिर रहो, मैं हूं, भय न करो। जब वह नावपर चढ़के ५१
उनके निकट गया तब पवन थम गया; इससे वे अतिही
अचंभित ऊए ओैर बऊत आश्चर्य्य ज्ञान किया। क्योंकि उन्होंने
अपने मनकी कठोरताके हेतसे उन रोटियोंके आश्चर्य्य कर्मको ५२
न समझा।

बऊतेरे लोगोंके चंगा कर्ना।

वे पार होके गिनिसिरित् देशमें जायके तीरपर पऊंचे। ५३
जब उन्होंने नाव परसे उतरे लोगोंने तुरंत उसको चीन्हा, ५४
ओैर चारों ओरसे दौड़के जितने पीड़ित थे उनको खाटोंपर
धरके जिस२ स्थानमें उसका समाचार पाया उसी२ स्थानमें
उन्होंको लाया। ओै जिस२ ग्राम ओै जिस२ नगर ओै ५६
जिस२ पुरमें वह जाता था उनके मार्गोंमें रोगियोंको
रक्खा; ओैर केवल उसके बस्त्रके झब्बेको कूनेकी बिनती
कर्ते थे ओैर जिन्होंने उसे कूआ वे सभी चंगे ऊए।

७ सातवां अध्याय।

हाथ धोने बिन भोजन कर्ना अपवित्र नहीं कर्ता है उसका बखान।

जो फिरूशी ओै अध्यापक यिरूशालम नगरसे आए थे वे १
उसके निकट एकठे ऊए। जब उन्होंने उसके किसी किसी शि- २
ष्योंको अपवित्र हाथोंसे अर्थात् बिन धोय ऊये हाथोंसे भोजन
कर्ते देखा तब उनको दोषी ठहराया। क्योंकि फिरूशी ओै सब ३

यहूदियोंने प्राचीनोंकी बातें जो होती आई हैं उनको मान
४ मानके बिन धोय ऊये हाथोंसे भोजन नहीं कर्ते। और हाटोंसे
आके जब लग डुबकी न लेवें तब लग भोजन नहीं कर्ते;
औ जल पात्रों औ भोजन पात्रों औ पीतल पात्रों औ आसनों
डुबानेका व्यवहार और ऐसे बऊत व्यवहार उनके हैं।
५ उन्ही फिरूशियों औ अध्यापकोंने उससे पूछा, आपके शिष्य
प्राचीन लोगोंके चलती ऊई बातोंके अनुसार आचरण न
६ कर्के बिन धोये ऊये हाथोंसे भोजन क्यों कर्ते हैं? उसने उनको
उत्तर दिया, हे कपटियो तुम्हारे बिषयमें यिशायिय भविष्य-
द्वक्ताने बिलक्षण कहा है, जैसा लिखा है, 'येही लोग अपने
होंठोंसे मेरे सन्मान कर्ते हैं परंतु उनके मन मुझसे दूर
७ रहते हैं। वे मनुष्योंकी आज्ञायोंको बिधिसा शिक्षा कर्के मेरी
सेवा वृथा कर्ते हैं।' तुम ईश्वरकी आज्ञाको त्यागके भोजन
८ पात्रों औ जल पात्रों डुबाके मनुष्योंकी बात पर चलते
हो और ऐसे ऐसे व्यवहार भी बऊत किया करते हो।
९ उसने और भी उनसे कहा, अपने व्यवहार पालन करनेसे
तुम बिलक्षण रूपसे ईश्वरकी आज्ञाको लोप कर्ते हो क्योंकि
१० मूसाने कहा है, 'अपने माता पिताको सन्मान करो। और
जो कोई अपने माता अथवा पिताकी निन्दा करे सो प्राणसे
मारा जायगा।' परंतु तुम कहते हो, अपनी माता अथवा
११ पिताको यह कह, जिस संपतसे तेरा उपकार मुझसे होता
सो कुरबान है अर्थात् ईश्वरके नामके लिये रखी गई है,
१२ ऐसे उपदेश देनेसे तुम मनुष्यको उसके माता पिताका उपकार
कर्ने नहीं देते हो। इसी रीति तुम अपने व्यवहारोंसे जो
१३ तुम सिक्षा देते हो ईश्वरकी आज्ञाको वृथा कर्ते हो; ऐसे
ऐसे व्यवहार भी बऊत किया करते हो।

मनुष्यको कौन बस्तु अपवित्र कर्ती है उसका बर्णन।

१४ फिर उसने सब लोगोंको निकट बुलाके कहा, तुम सब
१५ मेरी बात सुनो औ बूझो। जो बस्तु बाहरसे मनुष्यमें पैठती
है सो उसको अपवित्र नहीं कर सकती है परंतु जो बस्तु

उससे बाहर निकलती है सोई मनुष्यको अपवित्र कर्ती है । जिसको सुननेके कान होय सो सुने । जब वह लोगोंको छोड़के १६ घरमें पैठा तब शिष्योंने इस दृष्टांतका अर्थ पूछा । उसने १७ उनसे कहा, क्या तुम भी ऐसे अबोध हो? क्या यह नहीं १८ बुझते हो, जो वस्तु बाहरसे मनुष्यमें पैठती है सो उसको अपवित्र नहीं कर शक्ती? क्योंकि वह उसके अंतःकरणमें १९ प्रवेश नहीं करती परंतु पेटमें पैठके सारे भोजनको ग्रहण कर्नेहारी संडासमें जाती है। और भी कहा, मनुष्यमेंसे जो वस्तु निकलती है सो मनुष्यको अपवित्र कर्ती क्योंकि २० अंतरमेंसे अर्थात् मनुष्यके मनहींमेंसे कुचिंता, परस्त्रीगमन, २१ बेश्यागमन, नरहत्या, चोरी, लोभ, उन्मत्तता, कपट, छिनाल-पन, कुदृष्टि, ईश्वरकी निंदा, अहंकार, अज्ञानता निकलते २२ हैं । येही सब बुरे बिषय अंतरमेंसे निकलके मनुष्यको २३ अपवित्र कर्ते हैं।

सुरफैनीकी कन्याको चंगा कर्ना ।

तब यीशु उठके वहां से सोर् औ सीदोन् नगर के सीमेमें २४ गया, और किसी घरमें पैठके चाहा कि मुझे कोई न चीन्हे परंतु २५ छिप न सका क्योंकि सुरफैनीकी देशकी यूनानी बंशकी किसी स्त्री की छोटी कन्या भूतग्रस्त थी। उसीने उसका समा- २६ चार पाके उसके निकट आके चरणों पर गिरकर अपनी कन्याको भूतसे छुड़ानेके लिये उसकी बिनती की। परंतु यीशुने २७ उससे कहा, पहिले बालकोंको तृप्त होने दे क्योंकि बालकोंके भोजन लेकर कुत्तोंके आगे फेंक देना उचित नहीं। तब २८ स्त्रीने उससे कहा, हे प्रभु, सो सत्य है, तौभी बालकोंसे जो टूक पड़े ऊए सो कुत्ते खाते हैं। उसने उसे कहा, इस २९ बातके हेतसे कुशलसे चली जा, तेरी कन्याको भूत छोड़ गया है। जब वह आपने घर पहुंचा तब देखा कि भूत छोड़ गया ३० है और कन्या खाट पर लेटी है।

एक बहिरे औ तोतलेका चंगा कर्ना।

फिर वह सोर औ सीदोन् नगरोंके सिवानोंसे निकलके ३१

दिकापलीके सिवानोंके बीचमें होके गालील समुद्र के समीप
३२ आया। लोगोंने किसी बहिरे औ तोतले मनुष्यको उसके निकट
३३ लाके उसकी बिनती किई कि अपना हाथ उसपर धरे। उसने
सब लोगोंमेंसे उसको निरालेमें लेकर अपनी अंगुलियां
३४ उसके कानोंमें डालीं और थूकके उसकी जीभ छूई। और
आकाशकी ओर दृष्टि करके लंबी स्वास छोड़के कहा, इफफतह,
३५ अर्थात् खुल जावे। और तुरंत उसके कान खुल गये और
उसकी जीभका बंधन भी खुला हुआ और वह सुधी रीत
३६ बोलने लगा। तब यीशुने उनसे आज्ञा करके कहा, तुम यह
बार्ता किसीसे न कहीये, परंतु जितना यीशुने उन्हें बर्जा
३७ था उतना वे उसकी चर्चा अधिक करते थे। और अतिही
अचंभित होके आपसमें यह कहते थे, उसने बहिरोंको
सुनने की शक्ति औ गूंगोंको बोलनेकी शक्ति देके भले प्रकारसे
समस्त कर्म किये हैं।

८ आठवां अध्याय।

सात रोटियों औ थोड़े मछलियोंसे चार सहस्र मनुष्योंको भोजन
कराना।

१ उस समयमें अनेक लोग एकठे हुए, और उनके समीप
भोजनको सामा कुछ न थी; यीशुने अपने शिष्योंको बुलाके
२ कहा, इस भीड़ पर मुझे दया होती है क्योंकि वे तीन दिनसे
३ मेरे संग हुये हैं, और कुछ खानेको नहीं रखते। जो बिन आ-
हार उनको घर बिदा करूं तो पथमें क्लेश पावेंगे क्योंकि कोई
४ कोई दूरसे आये हैं। शिष्योंने उत्तर दिया, इन सबोंके तृप्ति
करनेके लिये इतनी रोटियां इस उजाड़में हम कहांसे पावेंगे?
५ तब उसने पुछा, तुम्हारे संग कितनी रोटियां हैं? उन्होंने कहा
६ सात। इसपर उसने उन लोगोंको भूमि पर बैठने की आज्ञा
दिई, और उन सात रोटियोंको लेकर ईश्वरका धन्यबाद करके
टूक टूक कर परोसनेके लिये शिष्यों को दिया, तब चेलोंने
७ उन लोगोंको परोसीं। और उनके निकट थोड़ी छोटी२

मछलियां थी, सो भी लेकर ईश्वरका धन्यबाद कर्के परोसने की आज्ञा दिई। इसीसे वे सब भोजन कर्के तृप्त ज़ए; और ८ बची ज़ई रोटीयोंसे सात टोकरियां भर कर उठा लीं। और ९ भोजन कर्नेहारे चारएक सहस्र पुरुष थे; तब उसने उनको बिदा किया।

आकाशी चिन्ह देखानेको अंगीकार न कर्ना।

फिर वह तुरंत अपने शिष्योंके संग नावपर चढ़के दलमनु- १० थाकी सिवानोंमें आया। तब फिरूशियोंने आके उसके संग ११ बिबाद कर्के परीक्षाके लिये उससे आकाशका चिह्न देखने चाहा। उसने अंतरसे लंबी स्वास छोड़के कहा, इस समयके १२ लोग क्यों चिन्ह देखने की इच्छा कर्ते हैं? मैं तुमसे सच कहता हूं इस समयके लोगोंको कोई चिन्ह दिया नहीं जायगा। फिर १३ वह उनको छोड़के नाव पर चढ़ कर उस पार चला गया।

शिक्षा रूपसे खमीरके पाससे बराव कर्ना।

शिष्य लोग रोटी लेने को भूल गये थे, और नाव पर एक १४ रोटीसे उनके निकट अधिक न थी। तब उसने उनको यह १५ आज्ञा दिई, सावधान होके फिरूशियों और हेरोदियोंके खमीरसे बराव करियो। इससे वे आपसमें यह कहने लगे, १६ उसने यह कहा है क्योंकि हमारे समीप रोटी नहीं। यीशुने १७ यह बूझके उनसे कहा, क्यों आपसमें यही बात कहते हो कि उसने यह कहा है क्योंकि हमारे समीप रोटी नहीं? क्या तूम अबलग नहीं जानते औा नहीं बूझते? अबलग क्या तुम्हारा १८ मन कठिन हैं? नेत्र रहते ज़ए क्या नहीं देखते? कान रहते ज़ये क्या नहीं सुनते औा क्या तुम स्मरण नहीं कर्ते? मैं ने जब १९ पांच रोटियांको पांच सहस्र पुरुषोंके लिये तोड़के दिई, तब तुमने टूकोंसे कितनी टोकरियां भरके उठाईं? उन्होंने कहा, बारह टोकरियां। औा जब सात रोटियांको चार सहस्र २० पुरुषोंके लिये तोड़के दिई तब तुमने टूकोंसे कितनी टोकरियां भरकर उठाईं? वे बोले, सात टोकरियां। फिर उसने कहा, २१ तुम अबताईं क्यों नहीं बूझते?

अन्धोंको नेत्र देना।

२२ फिर बैतसैदा नगरमें उसके पहुंचने पर लोगोंने किसी अंधे २३ को उसके निकट लाके उसको छूनेकी बिनती किई। तब वह अंधेका हाथ पकड़के नगरके बाहिर ले गया और उसके नेत्रों पर थूक लगाके उसको छूके उससे पूछा, तू कुछ देखता है? २४ अंधेने नेत्र खोलके कहा, वृक्षोंके तुल्य मनुष्योंको चलते हुए २५ देखता हूं। उसने उसके नेत्रोंपर फिर हाथ लगाके उपर दृष्टि कराई; तब वह चंगा होके भली रीतिसे लोगोंको २६ देखने लगा। तब उसने उसे यह कहके उसके घर भेजा कि नगरमें न जा, और नगरके रहनेहारोंसे कुछ न कह

ख्रीष्ट कौन है उसका वर्णन।

२७ फिर यीशु चेलोंको संग लेके कैसरिया फिलिपी सिवानेके नगरोंमें गया; बाटमें जातेही शिष्योंसे पूछा, लोग क्या कहते हैं कि मैं कौन हूं? उन्होंने उत्तर दिया, वे आपको योहन् २८ डुबकी दिलानेहारा कहते हैं? परंतु कोई २ आपको एलिय २९ कहते हैं? और और कोई आपको भविष्यद्वक्ताओंमेंसे एक जनको कहते हैं। फिर उसने उनसे पूछा, तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूं? पितरने उत्तर दिया, आप अभिसिक्त त्राता ३० हैं। तब उसने उन्हें आज्ञा करके कहा, मेरे विषयमें यह बात किसीसे न कहियो।

ख्रीष्टका अपनी मृत्युका संदेसा।

३१ मनुष्यके पुत्रको अनेक भांतिका दुःख भोगने होगा औ प्राचीन लोगों औ प्रधान पुरोहितों औ अध्यापकोंसे निंदित औ मरण भी होंगे, औ तीसरे दिन जी उठने होगा, उसने ३२ अपने शिष्योंको ये बात समझायके सुनाया। तब पितर उसे ३३ लेके डांटने लगा। परंतु उसने फिरके और अपने शिष्योंको देखके पितरको धमकाके कहा, हे विघ्नकारी मुझसे दूर हो, ईश्वरकी बात की नहीं परंतु मनुष्यकी बात की तेरी रुचि है।

पक्षपात कर्नेहारोंको उपदेश कर्ना।

३४ उसने चेलोंके संग लोगोंको बुलाके कहा, जो कोई मेरे

पीछे आया चाहे वह अपनेको दमन करे औ अपने क्रुशको उठाकर मेरे पीछे आवे। क्योंकि जो कोई अपने प्राणको बचाने २५ चाहे सो उसे खोवेगा औ जो कोई मेरे वा सुसमाचारके कारण उसे खोवे सो उसको बचावेगा। मनुष्य जो सारे २६ जगतको पावे औ अपने प्राणको खोवे तो उसको क्या लाभ होगा? और मनुष्य अपने प्राणके पलटेमें क्या दे सकेगा? जो २७ कोई इस समयके परस्त्रीगामी वा पापी लोगोंके सन्मुख ३८ मुझसे अथवा मेरी बातसे लज्जायगा तो मनुष्यका पुत्र भी जब धर्म दूतोंके सहित पिताके प्रभावसे आवेगा उससे लज्जायगा।

भविष्यद्वाक्य।

तब उसने उन्हें कहा, मैं तुमसे सच सच कहता हूं, कि ३९ इनमेंसे जो यहां खडे होते है कोई कोई हैं जो मृत्युका स्वाद नहीं चीखेंगे जबलों ईश्वरके राजको प्राक्रमसे आते न देखेंगे।

९ नवां अध्याय।

खीष्टका दूसरी मूर्त्ति धारण कर्नी, औ एलियका निर्णय।

छः दिनके पीछे यीशु पितर औ याकूब औ योहनको संग १ लेकर ऊंचे पर्बत पर निरालेमें गया और उनके सन्मुख उसका रूप औरही हो गया। उसका बस्त्र चमकने लगा और २ बड़ा बड़ा उज्जल ऊआ जैसा कोई धोबी धरतीपर उजला नहीं कर सकता। एलिय औ मूसा उनको दर्शन देके यीशुसे बात ४ करते थे। तब पितरने यीशुसे कहा, हे गूरु हमारे लिये ५ यहां रहना भला है, हम तीन डेरे बनावें एक आपके लिये एक मूसाके लिये औ एक एलियके लिये। क्योंकि वह ६ नहीं जानता था क्या कहे क्योंकि वे सभी भयमान थे। इत-नेमें एक मेघने आके उन पर छाया किई; औ उस मेघसे एक ७ आकाश बाणी ऊई, यह मेरा प्रिय पुत्र है, उसकी बात सुनो

८ फिर उन्होंने अचानक चारों ओर दृष्टि किई तो यीशुको बिन
९ अपने संग और किसीको न देखा। जब वे पर्वत परसे उतरते
थे तब उसने उन्होंको यह आज्ञा दिई, जो कुछ तुमने देखा है
जब लग मनुष्यका पुत्र मरके गोरमेंसे जी न उठे तब लग
१० किसीसे न कहियो। वे अपनेहीमें इस बातको रखके आपसमें
पूछपाछ करते थे कि मरके गोरमेंसे जी उठनेका अर्थ क्या
११ है? फिर उन्होंने उससे पूछा, अध्यापक क्यों बोलते हैं कि
१२ एलियका आना पहिले होगा? तब उसने उनको उत्तर दिया,
एलिय पहिले निश्चय आके सब कुछको सुधारेगा; औ
मनुष्यके पुत्रके बिषयमें जैसा लिखा है वैसाही वह अनेक
१३ भांतिके दुःख भोगके तुच्छ किया जायगा। हां मैं तुमसे सत्य
कहता हूं, एलिय आया है, औ जो कुछ उन्होंने चाहा उससे
किया है जैसा उसके बिषयमें लिखा है।

एक गूंगे औ भूतग्रस्तको चंगा कर्ना।

१४ जब वह अपने शिष्योंके समीप आया तब उनके चारों
ओर बहुतेरे लोगोंको औ अध्यापकोंको उनसे बिबाद कर्ते
१५ देखा; सब लोगोंने उसे देखतेही बिस्मित होके उसके निकट
१६ दौड़के प्रणाम किया। उसने अध्यापकोंसे पूछा, तुम इनसे
१७ किस बातका बिबाद कर्ते हो? मंडलीमेंसे किसीने उत्तर देके
कहा, हे गुरू, मैं अपने पुत्रको आपके निकट लाया हूं,
१८ जिस पर गूंगा भूत लगा है। भूत उसको जहां कहीं पाता
है उसे पटकता है औ इससे उसके मुंहसे फेन निकलता औ
उसके दांत किचकिचाते और वह सूख हो जाता; भूतको
छुड़ानेके लिये मैंने आपके शिष्योंसे कहा परंतु वे न सके।
१९ उसने उसको उत्तर दिया, अरे अबिश्वासी बंश, कब लग मैं
तुम्हारे संग रहूंगा औ कब लग तुमको सहूंगा? बालकको मेरे
२० समीप लाओ। वे उसको लाए; ज्योंहीं भूतने यीशुको देखा
त्योंहीं बालकको मरोड़ने लगा; इससे बालक भूमि पर गिर
२१ पड़ा और फेन बहायके लोटने लगा। तब यीशुने उसके
पितासे पूछा, यह उसपर कितने दिनोंसे हुआ? उसने कहा,

बाल कालसे। और भूतने उसके प्राण मारनेके लिये बार बार २२
उसे आगमें औ जलमें फेंका है परन्तु जो आप कुछ कर सकें
तो मुझपर दयाल होके उपकार कीजिये। यीसुने उसको कहा, २३
जो बिश्वास कर सके तो बिश्वासियोंके लिये सब कुछ हो सक्ता
है। इसपर बालकके पिताने तुरंत चिल्लाके रोकर कहा, २४
हे प्रभु, मैं बिश्वास कर्ता हूं, मेरे अविश्वासका उपकार
कीजिये। बहुतसे लोग दौड़के एकठे हुए, यीसुने यह देखके २५
उस अपवित्र भूतको घुरका कर्के कहा, हे गूंगे बहिरे भूत, मैं
तुझे आज्ञा देता हूं तू इसमेंसे बाहिर हो और फिर कभी
उसमें न जा। तब भूत बहुत चिचियाके उसको बहुत मरोड़कर २६
बाहिर निकल आया; इसपर बालक ऐसी मूर्छा हो गया कि
बहुत लोगोंने कहा, वह मर गया है। यीसुने उसका हाथ २७
पकड़के उठाया, और वह खड़ा हुआ। जब यीसु घरमें आया २८
तब निरालमें शिष्योंने उससे पूछा, हम उस भूतको क्यों
निकालने न सकें? यीसुने कहा, बिन प्रार्थना औ उपवास कर्नेसे २९
इस प्रकारका भूत छुड़ाया नहीं जाता है।

खीष्टका आपनी मृत्यु औ गोरसे जी उठनेका संदेसा देना।

फिर वे वहांसे जाके गालील देशमें होकर निकल गए; औ ३०
उसने चाहा कि कोई न जाने। पीछे उसने अपने शिष्योंको ३१
उपदेश देके यह कहा कि मनुष्यका पुत्र मनुष्योंके हाथोंमें
सौंपा जायगा, औ वे उसको मारडालेंगे औ वह मरकर
तीसरे दिन जी उठेगा। परंतु यह बात उन्होंने नहीं बूझी, ३२
औ पूछनेको डरते रहे।

सबसे कौन बड़ा है उसका बखान।

उसने कफर्नाहूम् नगरमें आके घरमें होके उनसे पूछा, ३३
पथमें तुम किस बातका बिबाद कर्ते थे। वे चुप रहे ३४
क्योंकि उन्होंमेंसे कौन् सबसे बड़ा होगा इसी बातका उन्होंने
आपसमें बाटमें बिबाद किया था। तब उसने बैठके बारह ३५
शिष्योंको बुलाके कहा, जो कोई प्रधान होने चाहे वह सबोंसे
छोटा होगा, औ सबोंका सेवक होगा। तब उसने एक छोटे ३६

३७ बालकको लेकर उनके बीचमें उसे खड़ा किया; पीछे उसे गोदीमें लेके उनसे कहा, जो कोई मेरे नामके लिये ऐसे बालकोंमेंसे एक की पज्ञनई करे सो मेरी पज्ञनई कर्ता है; और जो कोई मेरी पज्ञनई कर्ता है सो केवल मेरी नहीं परंतु जिसने मुझे भेजा है उसकी पज्ञनई कर्ता है।

खीष्टके बज्रतेरे उपदेशकी बात।

३८ तब योहन शिष्यने उससे कहा, हे गुरु, हमने देखा कि एक जन आपका नाम लेके भूतोंको छोड़ाता था और हमारे संग नहीं चलता था, और हमने उसे बरजा क्योंकि वह हमारे संग ३९ नहीं चलता था। तब यीशुने कहा उसको बरजो मत क्योंकि जो कोई मेरे नाम लेके आश्चर्य कर्म करेगा सो तुरंत मेरी ४० निंदा न कर सकेगा। जो तुम्हारा शत्रु न होय सो तुम्हारा ४१ सहायक है। जो कोई तुमको मेरे शिष्य जानके मेरे नामके लिये एक कटोरा जल तुम्हें पीने देवे, मैं तुमसे सच कहता हूं वह ४२ अपना फल कभी न गवांवेगा। जो छोटे प्राणी मुझमें बिश्वास कर्ते हैं उन्होंमेंसे किसीको जौ कोई बिघ्न उत्पन्न करे तो उसके गलेमें एक जांतेका पाट बांधना औ उसे समुद्रमें डुबाना ४३ भला होता। जौ तेरा हाथ तुझे बाधा होजावे तो उसे काट डाल क्योंकि दो हाथ रखते ज़ए, जहां उनका कीड़ा न मरता ४४ औ आग ठंडो न होती, ऐसे नरकमें जानेसे एक हाथ टुंडा ४५ होके स्वर्गमें जाना तेरे लिये भला है। जौ तेरा चरण बाधा तुझे होजावे तो उसे काट डाल क्योंकि दो पांव रखते ज़ए, जहां उनका कीड़ा न मरता औ आग ठंडी न होती, ऐसे नरकमें ४६ जानेसे लंगड़ा होके स्वर्गमें जाना तेरे लिये भला है। जौ ४७ तेरा नेत्र तुझे बाधा होजावे तो उसे निकाल डाल क्योंकि दो ४८ नेत्र रखते ज़ए, जहां उनका कीड़ा न मरता औ आग ठंडी न होती, ऐसे नरककी आगमें डाला जानेसे ईश्वरके राज्यमें ४९ काना होके जाना तेरे लिये भला है। जैसे समस्त बलि लोणसे मिलाया जाता है वैसेही एक एक जन आगसे ५० मिलाया जायगा। लोण भला है, परंतु जौ लोणमें स्वाद

न रहे तो तुम उसे किस रीति खादित करोगे? आपमें लोण रखो औ आपसमें मेल पालन करते रहो।

१० दसवां अध्याय।

खीष्टके त्यागनेका वर्णन।

वह वहांसे उठके यर्द्दन नदीके उसपार यहूदा देशके १ सिवानेमें आया; फिर उसके निकट लोग एकठे ऊए, और वह अपनी रीतिपर फिर उनको उपदेश देना लगा। फिरूशि- २ योंने उसके निकट आके परीक्षा करके उससे पूछा, पुरूषको अपनी स्त्रीको त्यागना उचित है वा नहीं? उसने उनको ३ उत्तर दिया, मूसाने तुमको क्या आज्ञा दिई है? उन्होंने कहा, ४ त्याग पत्र लिखकर अपनी स्त्रीको त्याग कर, ऐसी आज्ञा मूसाने दिई है। यीशुने उत्तर किया, तुम्हारे मनकी कठिनताके ५ हेतसे मूसाने ऐसी आज्ञा लिखी है परंतु स्टष्टिके पहिलेसे ६ ईश्वरने मनुष्यको एक स्त्री औ एक पुरुष करके स्टष्टि किई है; ७ इस हेतसे पुरूष अपनी माता पिताको त्यागके अपनी स्त्रीसे मिला रहेगा, औ वे दोनों एकांग होंगे, सो वे अब ८ दो नहीं, वे एक अंग हैं। तो जिन्हें ईश्वरने जोड़ा है उन्हें ९ मनुष्य अलग न करे। घरमें उसके शिष्योंने फिर वही बात १० पूछा। उसने उनसे कहा, जो कोई अपनी स्त्रीको त्यागके ११ दूसरीसे बिवाह करे तो वह अपनी स्त्रीके बिरुद्ध व्यभिचारी १२ है; और जो कोई स्त्री अपने स्वामीको त्यागके दूसरे पुरुषसे बिवाह करे तो वह भी व्यभिचारिणी है।

बालकोंको आशीस् देनी।

कोई लोग बालकोंको यीशुके निकट लाए कि वह उन्हें छूवे, १३ परंतु शिष्योंने बालकोंके लानेहारों पर झुंझलाए। यीशुने यह १४ देखके असंतुष्ट होके उनसे कहा, बालकोंको मेरे समीप आने देओ, और उन्हें न बरजो क्योंकि ईश्वरका राज्य ऐसोंका है। १५ मैं तुमसे सच कहता हूं, जो कोई बालकके नाईं ईश्वरका राज्य ग्रहण न करे, वह कभी उसमें पैठने नहीं पावेगा। तब १६

उसने उन बालकोंको अपनी गोदीमें ले कर उन पर हाथ धरके आशीस् किई।

धनी लोगोंको उपदेश देना।

१७ जब वह बाटमें जाता था तब किसी जनने दौड़कर उसके आगे ठेंवने टेकके उससे पूछा, हे परम गुरू, अनन्त जीवनका
१८ अधिकारी होनेके लिये मैं क्या करूं? यीशुने उससे कहा, मुझको परम क्यों कहता है? परमेश्वरके बिना कोई परम
१९ नहीं है। तू परस्त्री गमन न कर, नरहत्या न कर, चोरी न कर, झुठी साक्षी न दे, छल न कर, माता पिताका सन्मान
२० कर; ये सब आज्ञा तू जानता है। उसने उत्तर दिया, हे गुरू, मैं बालकालसे आजलग इन सब आज्ञाओंको पालन कर्ता
२१ आया हूं। यीशुने प्रेमसे उसपर दृष्टि कर्के कहा, तुझको एक वस्तु घटी है, तू जाके अपनी सब वस्तुओंको बेच कर्के कंगालोंको बांट दे, तो स्वर्गमें धन पावेगा, और आके क्रुश
२२ उठाके मेरे पीछे हो ले। वह इस बचनसे अप्रसन्न हो उदास
२३ होके चला गया क्योंकि उसका बहुत धन था। यीशुने चारों ओर देखके अपने शिष्योंसे कहा, ईश्वरके राज्यमें धनवान
२४ का पैठना कैसा कठिन है। शिष्योंने उसकी बातोंसे अचंभा किया; तब यीशुने फिर उनसे कहा, हे बालको, जो
२५ धनपर आसा रखते हैं ईश्वरके राज्यमें उनका पैठना कैसा कठिन है। ईश्वरके राज्यमें धनवानके पैठनेसे सूईके
२६ छेदमें ऊंटका आना जाना सहज है। तब वे अतिही अचंभीत होके आपसमें बोले तो किसका परित्राण हो
२७ सक्ता है? यीशुने उन पर दृष्टि करके कहा, मनुष्योंसे यह अनहोना है, परंतु ईश्वरसे है क्योंकि ईश्वरसे सब कुछ हो सक्ता है।

शिष्योंके फलका निर्णय।

२८ पितरने उत्तर दिया, देखो हम सबको त्यागके आपके पीछे
२९ हो लिये हैं। यीशुने उत्तर दिया, मैं तुमसे सच कहता हूं जिसने मेरे औ सुसमाचारके लिये घर वा भाई वा बहिन

वा माता वा पिता वा स्त्री वा सन्तान वा भूमि छोड़ दिये हैं ३०
वह दुःख भोग करके इस समयमें घर वा भाई वा बहिन वा
माता वा सन्तान वा भूमि सौ गुणे पावेगा, औ परलोकमें
अनन्त जीवन पावेगा। परंतु बहुतेरे लोग जो आगे हैं ३१
पीछे होवेंगे औ बहुतेरे जो पीछे हैं आगे होवेंगे।

खीष्टकी मृत्युका भविष्यद्वाक्यसे वर्णन।

वे बाटमें होके यिरूशालम् नगरको जाते थे; यीशु उनसे ३२
आगे जाता था और वे अचंभित औ भयमान होके उसके
पीछे चलते थे। उसने बारह शिष्योंको फेर बुलाके जो कुछ ३३
उस पर होवेगा सो उनसे कहने लगे, देखो, हम यिरू-
शालम्को जाते हैं और प्रधान पुरोहितों औ अध्यापकोंको
मनुष्यका पुत्र सौंपा जायगा; औ वे उसे मार डालनेकी
आज्ञा देके अन्य देशियोंको सौंपेंगे। और वे हंसी करके उसे ३४
कोड़े मारेंगे औ उसपर थूकके मार डालेंगे, परंतु वह तीसरे
दिन जी उठेगा।

याकूब् औ योहनकी प्रार्थनाका अंगीकार न करना।

सिबदीका दोनों पुत्र याकूब् औ योहन्ने यीशुके समीप ३५
आके कहा, हे गुरू, हम चाहते हैं कि जो कुछ हम मांगे
सो आप हमारे लिये करें। उसने कहा, तुम क्या चाहते हो ३६
कि मैं तुम्हारे लिये करूं? उन्होंने कहा, हमारे लिये यह ३७
कीजिये कि एक आपकी दहिनी ओर औ दूसरा आपकी
बाईं ओर आपके ऐश्वर्यमें बैठें। यीशुने उन्हें उत्तर दिया, जो ३८
कुछ तुम चाहते हो सो तुम नहीं जानते; जिस पात्रमेंसे मैं
पीऊंगा क्या उस पात्रमेंसे तुम पी सकते हो? औ जिस
जलमें मैं डुबकी पाऊंगा क्या तुम उसमें डुबकी लेने सकते
हो? उन्होंने कहा, हम सकते हैं। यीशुने कहा, जिस पात्रमेंसे ३९
मैं पीऊंगा उसमेंसे तुम अवश्य पीओगे, औ जिस जलमें मैं
डुबकी पाऊंगा उसमें तुम भी डुबकी पाओगे; परंतु मेरी ४०
दाहिनी वा बाईं ओर बैठना उन्हें छोड़के जिनके लिये ठहराया
गया है और किसीको देना मेरा नहीं है। दश शिष्योंने ४१

यह सुनके याकूब औ योहन्से अति अप्रसन्न हुए; परंतु
४२ यीशुने उनको अपने निकट बुलाके कहा, तुम जानते हो
कि जो अन्यदेशियोंके प्रधान ठहराये गये हैं वे उन पर
प्रभुता कर्ते हैं, और जो उनके बड़े मनुष्य हैं वे उन पर
४३ अधिकार करते है। परंतु तुममें ऐसी रीति नहीं होवेगी;
तुममें जो कोई सबसे बड़ा होने चाहे सो तुम्हारा सेवक
४४ होगा; औ तुममें जो कोई प्रधान होने चाहे सो सबोंका
४५ दास होगा। क्योंकि मनुष्यका पुत्र सेवा लेने नहीं परंतु
सेवा कर्ने औ बहुतेरोंके परित्राणके लिये अपने प्राण देनेको
आया है।

खीष्टका एक अंधेको नेत्र देना।

४६ वे यिरीहो नगरमें आए; जब यीशु और उसके शिष्य
और बहुत लोग यिरीहो नगरसे निकलते थे तब तीमय्का
पुत्र बर्तीमय् नाम एक जन जो अंधा था उसी बाटकी ओर
४७ भीख मांगनेके लिये बैठता था। वह नासरतीय यीशुके आनेका
समाचार पायके चिल्लाने लगा, हे यीशु दायूद्के सन्तान,
४८ मुझ पर दया कीजिये। तब बहुतसे लोगोंने धमकाके कहा,
चुप रह; परंतु वह न मानकर अधिक चिल्लाया, हे दायूद्के
सन्तान, मुझपर दया कीजिये। यीशुने खड़े होके उसे
४९ बुलाने कहा; तब लोगोंने उसे बुलायके कहा, सुस्थिर
हो, उठ, वह तुझे बुलाता है। तब वह उठके अपना
५० कपड़ाको फेंकके यीशुके समीप आया। यीशुने उससे पूछा, तू
५१ क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं। अंधेने उससे कहा,
५२ हे प्रभु मैं अपनी दृष्टि पाऊं। यीशुने उससे कहा, चला जा,
तेरे विश्वासने तुझे चंगा किया है; तब उसने तुरंत अपनी
दृष्टि पाई और बाटमें यीशुके पीछे २ चला।

११ एग्यारहवां अध्याय।

यीरूशालम नगरमें यीशुका आना।

१ जब वे यिरूशालम् नगरके निकट बैत्फगी औ बैथनिया

नगरके समीप जैतून पर्वत पर आए, तब उसने अपने शिष्यों-
मेंसे दो को यह कहके भेजे तुम अपने सन्मुखके ग्राममें २
जाओ, औ प्रवेश करतेही एक बांधा ऊआ बकेरा पाओगे,
जिस पर कोई नहीं चढ़ा है उसे खोलके लाओ। जो कोई ३
तुमसे कहे कि तुम क्या करते हो तो यह कहिये कि प्रभुको
इसका आवश्यक है, तब वह उसे यहां तुरंत भेजेगा। उन्होंने ४
उसी ग्राममें जाके दो बाटोंके सिरे पर किसी द्वारकी ओर
उसी बकेरा पाके उसका बंधन खोला; इसपर वहांके खड़े
रहने हारोंमेंसे किसी किसीने कहा, बकेरेको क्यों खोलते हो? ५
शिष्योंने यीशुकी आज्ञानुसार उत्तर दिया, तब उन्होंने उसे
लेजाने दिया। तब वे यीशुके निकट बकेरेको ला उसी पर ६
अपने वस्त्रों रखके उस पर यीशुको चढ़ाया। अनेक लोगोंने भी ७
पथमें अपने वस्त्रोंको बिछाया, औरोंने वृक्षोंकी डालियां काटके
बाटमें बिछाईं और जो आगे पीछे जाते थे सो यह पुकारने ८
लगे, 'जो परमेश्वरके नामपर आता है वह धन्य है, उसकी
जय होवे। हमारे पूर्वपुरुष दायूदके राज जो परमेश्वरके ९
नामपर आता है सो धन्य है, सबसे ऊंचे स्थानमें उसकी जय
होवे।' यीशुने यिरूशालममें आके महामंदिरमें प्रवेश करके १०
चारों ओर सब वस्तुयों पर दृष्टि किई; इसमें सांझ ऊई तब ११
बारह शिष्योंको संग लेके बैथनियामें गया।

अंजीरके वृक्षको शाप देना।

दूसरे दिन जब वे बैथनिया नगरसे बाहिर आए तब १२
उसको भूख लगी। और वह पत्तोंसे भरा ऊआ किसी अंजीर
पेड़को दूरसे देखके उसपर फल ढूंढनेको गया परंतु उसने १३
उस पास आयके पत्तोंके बिना और कुछ न पाया क्योंकि १४
अंजीरोंका समय न ऊआ। तब यीशुने उसे कहा, अबसे
सदाकाल कोई मनुष्य तुझसे फल न खावे; और यह बात
उसके शिष्योंने सुनी।

महामन्दिरसे बेपारियोंको निकाल देना।

वे यिरूशालममें आए; और यीशु महामन्दिरमें जायके १५

उन्हें जो उसीमें बेचते मोल लेते थे बाहर किया और सर्राफोंके पटरोंको और कपोतोंके बेचनेहारोंकी चौकीयोंको
१६ उलटा दिई। औ किसी पात्र लेनेवालेको महामंदिरमें आने
१७ जाने नहीं दिया। और लोगोंको उपदेश कर्के कहा क्या शास्त्रमें यह नहीं लिखा है कि मेरा घर सब जातिका
१८ प्रार्थना घर कहलाता है, परन्तु तुमने उसे चोरों की मांद किई है। यह बात सुन अध्यापक औ प्रधान पुरोहित यीशुको किसी रीतिसे मार डालनेका खोज किया, इसलिये वे उसे
१९ डरते थे क्योंकि सब लोग उसके उपदेशसे बिस्मित ऊए थे। जब सांझ ऊई यीशु नगरसे बाहिर गया।

बिश्वासकी सामर्थ्यका बर्णन कर्ना।

२० बिहानको जब वे जाते थे उन्होंने उस अंजीर पेड़को जड़से
२१ सूखा देखा। पितरने पूर्ब बात स्मरण कर्के यीशुसे कहा, हे गूरू देखिये जिस अंजीरके पेडको आपने श्राप दिया था वह
२२ सूख गया है। यीशुने उत्तर दिया, तुम ईश्वर पर बिश्वास
२३ करो, मैं तुमसे सत्य कहता हूं, जो कोई इस पर्बतको कहे, यहांसे सरकके समुद्रमें गिर जा, और अपने मनमें संदेह न कर्के इसका बिश्वास करे कि जो कुछ मैं कहता हूं सो बन
२४ जायगा तो जो कुछ वह कहे सो हो जायगा। इस लिये मैं तुमसे कहता हूं, जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगोगे सो
२५ तुम पानेका बिश्वास करके अवश्य पाओगे। जब तुम प्रार्थना कर्ते२ खड़े हो, जो किसी पर कुछ अपवाद रखते हो तो उसको क्षमा करो; जिसतें तुम्हारा स्वर्गबासी पिता
२६ तुम्हारा अपराधोंको क्षमा करेगा। परंतु जो तुम क्षमा न करोगे तो तुम्हारा स्वर्ग बासी पिता तुम्हारे अपराधोंको क्षमा न करेगा।

प्रधान पुरोहितको निरुत्तर कर्ना।

२७ फिर वे यिरूशालममें आए; जब वह महामंदिरमें फिर्ता था तब प्रधान पुरोहित औ अध्यापक औ प्राचीन लोग उसके
२८ निकट आके बोले, तू किसकी आज्ञासे ये कर्म कर्ता है? और

तुझे ये कर्म करनेको किसने आज्ञा दिई? यीशुने उत्तर देके
उन्हें कहा मैं भी तुमसे एक बात पूछता हूं, जो तुम उसका २९
उत्तर देओ तो मैं किसकी आज्ञासे ये कर्म करता हूं कहूंगा।
योहन् की डुबकी जो थी सो ईश्वरसे थी वा मनुष्योंसे थी? ३०
मुझे इसका उत्तर दो। तब वे बिचार करके आपसमें कहने ३१
लगे, जो हम कहें कि वह ईश्वरसे थी तो वह कहेगा तो क्यों
तुमने उसपर बिश्वास न किया? और जो हम कहें कि वह ३२
मनुष्योंसे थी तो लोगोंसे डरते हैं क्योंकि सब योहन्को भबि-
ष्यद्वक्ता निश्चय जानते थे। तब उन्होंने यीशुको उत्तर दिया, ३३
हम बोलने नहीं सक्ते; यीशुने उत्तर दिया मैं भी किसकी
आज्ञासे ये कर्म कर्त्ता हूं सो तुमसे नहीं कहूंगा।

१२ बारहवां अध्याय।

दाखके उपवनका दृष्टांत।

यीशु दृष्टांतों करके उनको कहने लगा, किसी जनने दाखके १
बारी लगाई और चारों ओर बाड़ा बांधा औ कोल्हू खोदा
औ गढ़ बनाया और मालियोंको ठीका देके परदेशको चला
गया। फलके समयमें उसने मालियोंके निकट बारीकी फल २
लानेको एक दासको भेजा; परंतु उन्होंने उसको पकड़के ३
बहुतसा मारके छूछे हाथ फेर भेजा। फेर उसने दूसरे ४
दासको भेजा, और उन्होंने पाथरोंसे उसका माथा फोड़कर
अपमान करके फेर भेजा। फिर उसने तीसरेको भेजा और
उन्होंने उसे मारडाला। हां उसने बहुतोंको भेजा परंतु ५
उन्होंने किसीको मारा औ किसीको घात किया। उसका ६
एक अतिही प्रिय पुत्र रह गया; और उसने अंतमें यह
कहके उसे भी उनके निकट भेजा कि वे मेरे पुत्रका सन्मान
करेंगे। परंतु उन्होंने पुत्रको देखकर आपसमें कहा यह ७
अधिकारी है, आओ हम उसको मारडालें तब अधिकार
हमारा होगा। इसपर उन्होंने उसे पकड़के मार डाला और ८
दाखकी बारीसे बाहिर फेंक दिया। सो उस बारीका स्वामी ९

१० क्या करेगा? उसने आके उन मालियोंको नाश कर्के औरोंको
११ दाखकी बारी सौंप देगा। क्या तुमने यह लिखी ऊई बात नहीं पढ़ी है कि जिस पाथरको थवइयोंने निकम्मा माना है सोई कोनेका सिरा ऊआ है, यह प्रभुसे ऊआ है और हमारी
१२ दृष्टिमें अद्भुत है; तब उन्होंने उसे पकड़ने चाहा परंतु लोगोंसे डरें क्योंकि उन्होंने जाना कि उसने उनके बिषयमें यह दृष्टांत कहा था; तब वे उसे तजके चले गए।

कर देनेके बिषयमें फिरूशियोंको निरुत्तर कर्ना।

१३ बातमें उसे बझानेके लिये उन्होंने कइ एक फिरूशियों औ
१४ हेरोदियोंको उसके निकट भेजा। वे आके उससे कहने लगे, हे गूरू, हम जानते हैं आप सचे हैं औ किसीसे नहीं डरते क्योंकि आप मनुष्योंका पक्षपात नहीं कर्ते, परन्तु ईश्वरका पथ सचाईसे देखाते हैं, कैसरको कर देना उचित है वा नहीं?
१५ हम देवें वा नहीं देवें? उसने उनकी कपटता बूझके उनसे
१६ कहा, मेरी परीक्षा क्यों कर्ते हो? एक सूकी लाके मुझको दिखाओ। वे एक सूकी लाए; तब उसने उनसे पूछा, इसपर यह मूर्त्ति औ नाम किसकी है? उन्होंने कहा, कैसरकी।
१७ यीशुने उनको उत्तर देके कहा, कैसर की बस्तु कैसरको देओ, औ ईश्वर की बस्तु ईश्वरको देओ; यह सुनके वे अचंभित ऊए।

गोरसे जो उठनेके विषयमें सिदुकियोंको निरुत्तर कर्ना।

१८ फिर सिदूकी लोग जो कहते हैं कि मृतकोंका जी उठना
१९ नहीं है उसके निकट आके यह पूछा, हे गूरू, मुसाने हमारे लिये यह लिखा है कि जो कोई जन निःसन्तान होके मरे औ स्त्रीको छोड़े तो उसका भाई उसकी स्त्रीसे बिवाह कर्के अपने
२० भाईके लिये बंश चलावे। सो सात भाई थे; बड़ा भाई स्त्रीको
२१ बिवाह कर्के निःसन्तान होके मर गया। दूसरे भाईने उसीसे
२२ बिवाह किया, और निःसन्तान होके मर गया। और तीसरेने भी ऐसाही किया; उसीरीति सात भाई उसीसे बिवाह
२३ कर्के निःसन्तान होके मर गए। अंतमें स्त्री भी मर गई

मृतकोंके जी उठनेके समयमें जब वे जी उठेंगे तब वह उनमेंसे किसकी स्त्री होगी? क्योंकि सातोंने उससे बिवाह किया था। यीशुने उत्तर दिया, तुम धर्म शास्त्र औ ईश्वरकी २४ शक्ति न जानके चूक कर्ते हो; जब मृतक उठेंगे तब वे न २५ बिवाह करेंगे और बिवाहमें न दिये जायेंगे परंतु स्वर्गके दूतोंके तुल्य होंगे। मृतकोंके जी उठनेके बिषयमें क्या तुमने २६ मुसाकी पोथीमें नहीं पढ़ा है कि ईश्वरने झाड़ीमें रहके मुसासे कहा था कि मैं इब्राहीमका ईश्वर और इसहाकका ईश्वर और याकुबका ईश्वर हूं? वह जीवतोंका ईश्वर है, मृतकोंका २७ नहीं; तुम बड़ी भूलमें पड़े हो।

सबसे बड़ी आज्ञा कौन है उसका बखान।

एक अध्यापकने आके उनकी बातचीत सुनके यह बूझा २८ कि यीशुने ठीक उत्तर उन्हें दिया, इसीलिये उसने उससे पूछा, सब आज्ञाओंमें बड़ी आज्ञा कौन है? यीशुने उससे कहा, २९ सब आज्ञाओंमें बड़ी आज्ञा यह है, हे इस्रायेली लोग, सुन, हमारा प्रभु परमेश्वर एक है; तू अपने प्रभु परमेश्वरको अपने समस्त अंतःकरणसे औ अपने समस्त प्राणसे औ ३० अपने समस्त चित्तसे औ अपने समस्त शक्तिसे प्रेम कर, यही बड़ी आज्ञा है। औ पड़ोसीको अपने समान प्रेम कर, यह आज्ञा उसके तुल्य है; इन से और कोई आज्ञा ३१ बड़ी नहीं। उस अध्यापकने उससे कहा, भला, हे गूरू, आपने सच कहा है, ईश्वर एक है और उसके बिन और ३२ कोई नहीं है। और समस्त अंतःकरणसे औ समस्त चित्तसे औ समस्त प्राणसे औ समस्त शक्तिसे ईश्वरको प्रेम कर्ना, ३३ और पड़ोसीको अपने समान प्रेम कर्ना, यह सारे होमोंसे और बलिदानोंसे उत्तम है। उसने सुबुद्धिसे उत्तर दिया यीशुने यह देखके उससे कहा, तू ईश्वरके राज्यसे दूर ३४ नहीं। इस पीछे उससे कुछ पूछनेका साहस किसीको न हुआ।

३५ यीशुने महामंदिरमें उपदेश करके यह पूछा, अध्यापक
३६ लोग क्योंकर ख्रीष्टको दायूदका संतान कहते हैं? क्योंकि दायूद आपही पवित्र आत्माकी शिक्षासे यह बोला, प्रभुने मेरे प्रभुसे कहा, जब ताईं मैं तेरे शत्रुओंको तेरे पांवों की चौकी न करूं
३७ तब लग तू मेरे दाहिनी ओर बैठ। दायूद तो आपही उसको प्रभु कहता है, तो उसका पुत्र वह क्योंकर है? बहुतसे लोग उसकी यह बात सुनके आनंदित हुए।

अध्यापकके दोष प्रकाश कर्ना।

३८ उसने उनको उपदेश करके कहा, अध्यापकोंसे सावधान होओ जो लम्बे वस्त्र पिहनके चलते हैं औ हाटोंमें प्रणामों औ मंदिरोंमें ऊंचे आसनों औ जेवनारोंमें प्रधान स्थानोंको
३९ पियार कर्ते हैं, और छलसे बड़ी बेर लग प्रार्थना कर्के बिधवाओंके घरोंका धन निगलते हैं; उनको अधिक दंड होगा।

एक बिधवाकी दातृत्व का बर्णन।

४० यीशु भंडारके सन्मुख बैठके देखता था कि लोग भंडारमें किस रीतिसे रुपैये वा कौड़ी डालते हैं; अनेक धनवानोंने
४१ उसमें बहुत डाला। कोई कंगाल बिधवाने आके दो छदाम
४२ अर्थात् आधा पैसा उसमें डाला; यीशुने अपने शिष्योंको बुलाके कहा, मैं तुमसे सच कहता हूं, इस भंडारमें
४३ जिन्होंने डाला है उन सबोंसे इस दरिद्री बिधवाने अधिक
४४ डाला है। क्योंकि सबोंने अपनी अधिकाईसे कुछ डाला है परंतु इसने अपनी कंगालपनासे जो कुछ रखती थी अर्थात् अपनी सब जीविका डाली है।

१३ अध्याय।

महामंदिरका बिनाश औ शिष्योंके दुःखका भविष्यद्वाक्य।

१ जब यीशु महामंदिरसे बाहर जाता था तब उसके शिष्यों-मेंसे एकने उसे कहा, हे गुरु, देखिये, कैसे पत्थर औ कैसा
२ मंदिर हैं। यीशुने उसे उत्तर दिया, क्या तुम इस बड़े मंदिरको देखते हो? एक पाथर दूसरे पर नहीं छूटेगा, सब

गिराए जायेंगे। जब वह जैतूनके पर्वत पर महामंदिरके ३
सन्मुख बैठता था तब पितर औ याकुब् औ योहन् औ आंद्रिय
निरालेमें उससे पूछा, येही कब होंगे औ इन सब बातोंके ४
पूरे होनेका चिन्ह क्या होगा? सो हमको कहिये। यीशु
उत्तर देके उनसे कहने लगा, सावधान होओ कि तुमको कोई ५
धोखा न देवे। क्योंकि बज़तेरे मेरे नाम लेके यह कहके आवेंगे ६
कि मैं ख्रीष्ट हूं औ बज़तोंको भटकावेंगे। परंतु जब तुम संग्रामों ७
की औ संग्रामोंकी चर्चा सुनोगे तब घबराइयो मत क्योंकि यह
सब आवश्यक है परंतु अंत अभी नहीं होगा। देश पर देश ८
औ राज पर राज चढ़ाई करेंगे औ ठाव ठावमें भुकंप औ
अकाल औ महाक्लेश होवेंगे; येही सब दुःखोंका आरंभ
होंगे। सो अपने बिषयमें सावधान रहियो क्योंकि लोग तुमको ९
पकड़के राज सभाओंमें सोंपेंगे, औ तुम मंदिरोंमें मारे जाओगे
और मेरे लिये देशाध्यक्षोंके औ राजाओंके सन्मुख साक्षी
देनेके लिये खड़े किये जाओगे। परंतु अवश्य है कि पहिले १०
सब देशियोंको सुसमाचार प्रचार किया जायगा। जब ११
वे तुमको पकड़के सोंप देवे तब क्या क्या उत्तर दोगे आगेसे
इसकी चिन्ता न करियो, और सोच न करियो, परंतु जो
कुछ तुन्हें उस घड़ीमें दिया जाय सोई कहियो क्योंकि पवित्र
आत्मा तुम्हेंमें होके कहेगा। भाई भाईको औ पिता पुत्रको १२
मार डाले जानेको सोंपेंगे; सन्तान अपने माता पिताके शत्रु
होके उनको बध करावेंगे। औ मेरे नामके हेतसे तुम सब १३
लोगोंसे घिनित होगे, परंतु जो कोई अंत लग स्थिर रहेगा
सोइ बच जायगा।

यहूदियोंके दुःखका समाचार।

जिस समयमें तुम देखते हो कि वह बिनाशकारी बस्तु, १४
जिसके बिषयमें दानियेल भविष्यद्वक्ताने कहा है, उस स्थानमें
खड़ी होती है जिसमें उचित नहीं (जो पढ़े सो बूझे) तब जो १५
यहूदी देशमें हैं सो पर्वतों पर भागें; जो कोठे पर है सो
किसी बस्तु लेनेको घरमें न उतरके पैठे; औ जो खेतमें है १६

१७ सो अपने बस्त्र लेनेको पीछे न फिरे। उन दिनोंमें जो गर्भ-
१८ वती औ दूध पिलानेहारी हैं उनको बड़ा दुःख होगा।
प्रार्थना करो कि तुम्हारा भागना शीतकालमें न होवे।
१९ क्योंकि उन दिनोंमें ऐसा कष्ट होगा कि सृष्टिके आरंभसे
२० जो ईश्वरने उत्पन्न किया, अबतक न ऊआ औ न होगा। जो
२१ प्रभु उन दिनोंको थोड़े न करे तो एक प्राणी न रहेगा;
परंतु वह उन चुने ऊये लोगोंके लिये जिनको उसने चुना है
उन दिनोंको थोड़े करेगा।

मिथ्याभविष्यद्वक्ताओंका समाचार।

२२ उस समय जो कोइ तुम्हें कहे, देखो, खीष्ट यहां है वा वहां
२३ है तो बिश्वास न करियो। क्योंकि झुठे खीष्ट औ झुठे
भविष्यद्वक्ता निकलके चिन्ह औ अद्भुत कर्म दिखावेंगे कि
जो हो सके तो चुने ऊये लोगोंको भी भटकावेंगे। सावधान
होओ, देखो, मैंने तुम्हें आगेसे सब बात कह दिई है।

यहूदियोंके राज नाश होनेका समाचार।

२४ उन दिनोंमें उस क्लेशके पीछे सूर्य्य अंधियारा होगा, चन्द्रमा
२५ की चांदनी नहीं होगी। आकाशसे तारे गिरेंगे और
२६ आकाश मंडलके ग्रह हिल जायेंगे। तब लोग मेघोंपर
चढ़े ऊए मनुष्यके पुत्रको बड़े पराक्रमसे औ ऐश्वर्य्यसे आते
२७ देखेंगे। तब वह अपने दूतोंको भेजेगा औ आकाश औ पृथ्वीके
अंतसे अर्थात् जगतकी चारों ओरसे अपने चुने ऊये लोगोंको
एकट्ठे करेगा।

अंजीरके वृक्षका दृष्टान्त।

२८ अंजीरकी पेड़से दृष्टान्त सीखो; जब उसकी डाली कोमल
है औ पत्ते निकलते हैं तब तुम जानते हो कि धुपकाल निकट
२९ आया है। इसी रीतिसे जब तुम ये सब देखोगे, जानो
३० कि समय निकट है। मैं तुम्हें सच कहता हूं कि इस समय
का लोग नहीं जाता रहेगा जब लग ये सब बातें पुरीं नहीं
३१ किई जायेंगी। आकाश मंडल औ पृथ्वी जाते रहेंगे परंतु
मेरी ये सब बातें जाती न रहेंगी।

सावधान करनेकी आज्ञा।

पिता बिना न कोई मनुष्य, न कोई स्वर्गबासी दूत, न पुत्र ३२
उसी दिन औ उसी घड़ीकी बात जनाने सकता है। देखो ३३
सावधान होके प्रार्थना करते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते
कि समय कब होगा। जैसा एक मनुष्य अपने घरसे दूर ३४
देशकी यात्राके समय अपने दासोंको अपने अधिकार देके
एक एक दासको उसका कर्म ठहराता है औ द्वारपालको
सचेत रहनेकी आज्ञा देके जाता है जैसा मनुष्य पुत्र है।
इसलिये तुम भी सचेत रहो क्योंकि घरके स्वामी कब आवेगा, ३५
सांझ वा आधीरात वा कुक्कुट बोलनेके समय वा भोरको,
तुम नहीं जानते। क्या जाने वह अचांचक आके तुमको सोते ३६
पावे; जो कुछ मैं तुमसे कहता हूं सो सबसे कहता हूं।

१४ चौदहवां अध्याय।

खीष्टके बध करनेका विचार।

दो दिन पीछे निस्तारपर्ब और अखमीरि रोटिका पर्ब १
आया तब प्रधान पुरोहित औ अध्यापक लोग खोजने लगे कि
यीशुको किसी छलसे पकड़े और मार डालें। परंतु उन्होंने २
कहा, पर्बके दिनमें नहीं, न होवे कि लोगोंमें हल्लड़ होवे।

एक स्त्रीका खीष्टके सिरपर सुगंधि तेल ढालना।

जब वह बैथनिया नगरमें शिमोन कोढ़ीके घरमें भोजन ३
करनेको बैठता था तब एक स्त्रीने सिंहमरमरकी डिबियामें
बहुत मोलका सुगंधि तेल लाके डिबिया खोलके उसके सिर
पर ढाल दिया। किसी किसीने अपने मनमें क्रोध कर कहा ४
इस सुगंधि तेलका यह हानि क्यों हुई है? यह तेल बिक ५
जाता तो तीन सौ रुपैयोंसे अधिक प्राप्त होता और कंगालों
को दिया जाता; इसी रीतिसे वे उस स्त्री पर कुड़कुड़ाने ६
लगे। यीशुने कहा, उसको रहने दो, क्यों दुःख देते हो?
उसने मुझ पर भला कर्म किया है। कवोंकि कंगाल लोग सदा ७
तुम्हारे संग रहते हैं और जब तुम चाहो तब उनका उप-

कार कर सकते हो; परंतु मैं तुम्हारे संग सदा नहीं रहूंगा।
८ जो कुछ यह स्त्री कर सकी थी सो उसने किया है उसने मेरे
९ गाड़नेके लिये आगेसे आके मेरे देहपर सुगंधि तेल लगाया है।
मैं तुमसे सत्य कहता हूं, सारे संसारमें जहां २ यह सुसमा-
चार प्रचारा जायगा वहां उसके स्मरणके लिये यह कर्म जो
उसने किया है कहा जायगा।

यहूदा का बिश्वासघात से यीशुको बंधन में डालना।

१० बारह शिष्योंमेंसे इस्कारयोतीय यिहूदा नाम एक शिष्य
यीशुको उन्हें सोंपनेके लिये प्रधान पुरोहितोंके निकट गया।
११ उन्होंने यह बात सुनके अति प्रसन्नतासे उसे रुपैये देनेका
स्वीकार किया; तब वह खोजने लगा कि किस अवसरसे उसे
उनको सोंप देवे।

निस्तार पर्बके लिये भोजन बनानेको शिष्योंको भेजना।

१२ अखमीरि रोटी पर्बके प्रथम दिनमें जब लोग निस्तार पर्बके
लिये भेड़ी चढ़ाते तब शिष्योंने उससे पूछा, हम कहां जाके
निस्तार पर्बका भोजन बनावें कि आप खावें? आपकी इच्छा
१३ क्या है? तब उसने शिष्योंमेंसे दो को यह कहके भेजा, तुम
नगरमें जाके जिस मनुष्यको जलका घड़ा ढोये हुये जाते
१४ देखोगे उसीके पीछे २ जाओ; वह जिस घरमें जावे उसी घरके
स्वामीसे कहीये, गुरु कहता है, वह भोजनशाला कहां है
जहां मैं अपने शिष्योंके संग निस्तार पर्बका भोजन करूं?
१५ वह तुम्हें एक सजी सजाई बड़ी उपरौठी कोठरी देखा देगा,
१६ वहां हमारे लिये बनाओ। तब उसके शिष्य चल गए औ
नगरमें जाके यीशुने जिस रीति कहा था उसी रीति सब पाके
निस्तार पर्बकी सामा बनाई।

उनके संग भोजन करना।

१७ जब सांझ हुई यीशु बारह शिष्योंके संग गया। जिस
१८ समय वे भोजन करके बैठते थे यीशुने उनसे कहा मैं तुमसे
सत्य कहता हूं तुममेंसे एक जो मेरे संग भोजन करता है
१९ मुझे पकड़वावेगा। तब वे दुःखित होने लगे औ एक २ उसे

कहने लगा, क्या मैं वही हूं? और दूसरेने कहा क्या मैं वही हूं?
उसने उनसे कहा, बारहोंमेंसे जो जन मेरे संग भोजन २०
पात्रमें हाथ अब डुबाता है सोई है। मनुष्य पुत्रके विषयमें २१
जिस रीतिसे लिखा है उसी रीतिसे उसकी गति होवेगी;
परंतु हाय उस मनुष्य पर जिससे मनुष्यका पुत्र पकड़वाया
जायगा; जो उसका जन्म न होता तो भला होता।

यीशुका रैनका भोजन ठहरना।

भोजन कर्ते ऊए यीशुने रोटीको लिया और धन्यबाद २२
करके टुक टुक किया, और यह कहके उन्हें दियो लेओ, खाओ,
यह मेरा शरीर है। उसने कटोरा भी लेके धन्यबाद कर २३
उनको दिया; उन सबोंने उससे पीया। तब उसने उनसे २४
कहा, यह नये नियमरूपका मेरे रक्त है जो बऊतेरों के
लिये बहाया जाता है। मैं तुमसे सच कहता हूं, जिस दिन २५
ताईं ईश्वरके राजमें नया मद्य न पीऊंगा तब ताईं मैं दाखका
रस कभी न पीऊंगा। तब वे एक गीत गाके बाहिर निकल २६
जैतुनके पर्वत पै गए।

पितरके अस्वीकार कर्नेका भविष्यद्वाक्य।

यीशुने उनसे कहा, आजकी रातको मेरे हेतसे तुम सब बिघ्न २७
पाओगे क्योंकि लिखा है, मैं गड़रिये को मारूंगा, और भेड़े
तितर बितर हो जायेंगे। परंतु मैं गोरमेंसे जी उठनेके पीछे २८
तुमसे आगे गालीलको जाऊंगा। पितरने उसे कहा, जो सबको २९
बिघ्न होवे तो मुझको न होवेगा। यीशुने उससे कहा, मैं ३०
तुमसे सच कहता हूं, आजकी रात कुक्कुटके दो बार बोलनेके
आगे तू तीन बार मुझे अस्वीकार करेगा। उसने दृढ़ कर्के कहा ३१
जो आपके संग मेरा मरण होवे तोभी किसी रीति आपको
अस्वीकार नहीं करूंगा; सबोंने भी ऐसाही कहा।

उपवनमें ख्रीष्टका शोक कर्ना।

वे गेतशिमानी नाम एक स्थानमें पहुंचे, और उसने अपने ३२
शिष्योंसे कहा, जब लग मैं प्रार्थना करूं तब लग तुम यहां बैठो
तब वह अपने संग पितर और याकूब और योहनको लेकर ३३

३४ अत्यंत घबराने औ व्याकुल होने लगा और उनसे कहा, मृत्यु कालकी नाईं मेरा प्राण दुःखी है; तुम यहां जागते रहो।
३५ वह थोड़े आगे जाय भुमि पर गिर यह प्रार्थना किई, जो होनहार होय तो यह दुःसमय मुझसे टल जाय। और
३६ भी कहा, हे पिता पिता सब कुछ तेरे निकट होनहार है, इस कटोरेको मुझसे दूर कीजिये परंतु मेरी इच्छाके
३७ अनुसार न होवे, तेरी इच्छाके अनुसार होवे; उसने आके उन्हें सोते पायके पितरसे कहा, हे शिमोन् क्या तूही सोता
३८ है? क्या तूही एक घड़ी जाग नहीं सका? सचेत होके प्रार्थना कर कि परीक्षामें न पड़; मन तो लैस है परंतु
३९ शरीर अशक्त है। वह फिर जाके प्रार्थना करके वही
४० बचन बोला। फिर आके उनको फिर सोते पाये क्योंकि उनके नेत्र निद्रासे भरे थे और वे क्या उत्तर देवें सो न जानते
४१ थे। फिर उसने तीसरी बार आके उनसे कहा, क्या अबताईं सोते और बिश्राम कर्ते हो? बङत है, समय आ पड़ंचा है, देखो, मनुष्यका पुत्र पापियोंके हाथोंमें सोंपा जाता है।
४२ उठो, चलें, देखो, जो मुझको पकड़ावेगा सो निकट है।

खीष्टको परहाथमें पकड़ाना।

४३ जब वह यह कहताही था तब उन बारहोंमेंसे यिऊदा नाम एक शिष्य प्रधान पुरोहित औ अध्यापक औ प्राचीन लोगोंकी ओरस खड्ग औ लाठियां हाथोंमें लिये ऊये बऊ-
४४ तसे लोगोंको संग लेकर उसके समीप आया। जिसने उसे पकड़वाया उसने उन्हें यह कहके पता दिया, मैं जिसका चूमा लेऊं सो वही है, उसीको पकड़के सावधानीसे ले
४५ जाओ। यिऊदा आके तुरंत उसके निकट जाके कहा,
४६ हे गूरू हे गूरू और उसका चूमा लिया। तब उन्होंने
४७ यीशु पर हाथ धरके पकड़ लिया। उनमेंसे जो वहां खड़े थे एकने खड्ग निकाल महा पुरोहितके दासको मारकर
४८ उसका कान काट डाला। तब यीशुने उनसे कहा, खड्ग औ लाठीयां लेके क्या मुझे चोरके नाईं पकड़नेको आया

हो? मैं महामंदिरमें उपदेश देते ऊए दिन दिन तुम्हारे ४९
संग रहता था, तब तुमने मुझको नहीं पकड़ा; परंतु शास्त्रका
बचन पूरे होनेके लिये यह ऊआ है। तब सब शिष्य ५०
उसे छोड़के भाग गये। परंतु एक तरुण जिसकी नंगाई ५१
पर सूती बस्त्र ओढ़ा ऊआ उसके पीछे जाता था; तरुणोंने
उसे पकड़ लिया। परंतु वह सूती बस्त्रको छोड़के उनसे ५२
नंगा होके भागा।

खीष्टके बध कर्नेकी आज्ञा देनी।

तब वे यीशुको महापुरोहितके समीप ले गये जिसके ५३
संग सब प्रधान पुरोहित और प्राचीन लोग और अध्यापक
एकठे थे। पितर दूरसे उसके पीछे२ जायके महापुरो- ५४
हितके कोठेमें प्रवेश कर्के दासोंके संग आग तापने बैठा।
प्रधान पुरोहित औ सब मंत्री यीशुको मारडालनेके लिये ५५
उसपर साक्षी ढूंढ़ने लगे परंतु कुछ न पाई। हां बऊते- ५६
रोंने उसपर झुठी साक्षी दिई तौभी उनकी साक्षी एकहीसी ५७
नहीं ऊई। पीछे कै एक उठके यह कहके उसपर झूठी ५८
साक्षी दिई, हमोंने उसको यह कहते सुना है, मैं इस मंदी-
रको जो हाथोंसे बनाया गया है ढाऊंगा और तीन दिनोंमें
एक और को, जो हाथोंसे नहीं बनाया गया है, उठाऊंगा। ५९
तौभी उनकी साक्षी एकसां न मिली। तब महापुरोहि- ६०
तने बीचमें खड़ा होके यीशुसे यह पूछा, क्या तु कुछ उत्तर
नहीं देता, वे तुझपर क्या साक्षी देते हैं? परंतु वह कुछ ६१
उत्तर न देके चुप रहा; महापुरोहितने फिर उससे पूछा,
क्या तू सच्चिदानंदका पुत्र खीष्ट है। यीशुने कहा, मैं वही ६२
हूं; और तुम मनुष्यके पुत्रको सर्व्वशक्तिमानके दाहनी ओर
बैठे औ आकाशके मेघोंपर आते देखोगे। तब महापुरोहितने ६३
अपने बस्त्रको फाड़के कहा, अब हमको और साक्षीयोंका
क्या प्रयोजन है? ईश्वरकी यह निन्दा तुमने सुनी है। क्या ६४
बिचार कर्ते हो? उन सबोंने कहा, यह मारडाले जानेके ६५
योग्य है। तब किसी२ ने उसपर थूक दिया, औ उसका मुंह

ढांप उसको थपेड़े मारके कहने लगे, किसने तुझे मारा है, यह गिनके कहो; दासोंनेभी उसे थपेड़े मारे।

पितरका खीष्टको अस्वीकार करना।

६६ जब पितर नीचे कोठेमें था तब प्रधान पुरोहितकी एक दासी वहां आई और पितरको आग तापते देखके उसपर
६७ दृष्टि करके कहा, तू भी नासरतीय यीशुके संग था। उसने अस्वीकार करके कहा, जो तू कहती है सो मैं नहीं जानता
६८ औ नहीं बूझता हूं। तब वह बाहिर ओसारेमें गया और
६९ कुक्कुट बोला। उसी दासीने उसे फिर देखके उनसे जो
७० खड़े थे, कहा, यही उसका एक जन है। उसने दूसरी बार अस्वीकार किया। थोड़ी बेर पीछे फिर उन्होंने जो वहां खड़े थे पितरसे कहा, तू सत्य उन्होंमेंसे एक जन है क्योंकि
७१ तू गालीलीय मनुष्य है, तेरी बोलीसे जाना जाता है। तब वह धिक्कार औ सोंह कर बोला, जिसका चर्चा तुम करते हो उसको मैं नहीं चीन्हता हूं। तब कुक्कुट दूसरी बार बोला;
७२ तब पितरने इस बातका जो यीशुने उसे कहा था स्मरण किया कि 'कुक्कुटके दो बार बोलनेके आगे तू तीन बार मेरा अस्वीकार करेगा,' इस बातका सोच करके वह रोने लगा।

१५ पंद्रहवां अध्याय।

खीष्टको पिलातके निकट ले जाना।

१ जब भोर हुआ तब प्रधान पुरोहित औ प्राचीन औ अध्यापक औ सब सभाके मंत्रियोंने बिचार करके यीशुको बांध कर
२ उसे ले जाकर पिलातको सौंपा। पिलातने उससे पूछा क्या तू यहूदियोंका राजा है? उसने उससे कहा, आप सत्य
३ कहता है। तब प्रधान पुरोहित उसपर बहुतसे दोष देने
४ लगे, परंतु उसने कुछ उत्तर नहीं दिया। तब पिलातने फिर उससे पूछा, क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता? देख, वे तुझ पर
५ कितनी साक्षियां देते हैं। तौभी यीशुने कुछ उत्तर न दिया; इससे पिलातको अचंभा हुआ।

बध करनेके लिये पिलातके हाथ सोंपना।

एक बंधुवेको जिस किसीको लोग चाहते थे देशाधिपति ६ पर्बके समयमें छोड़ दिया करता। बरब्बा नामक एक जन था, ७ जो उनके संग बंधनमें था जिन्होंने ऊधम करके हत्या किई थी। तब लोगोंने चिल्लायके पिलातसे यह बिनती किई, जैसा ८ आपने सदा किया है तैसा अब हमोंके लिये कीजिये। पिला- ९ तने उनको उत्तर दिया, क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे १० लिये यहूदियोंके राजाको छोड़ देऊं? क्योंकि वह जानता था कि प्रधान पुरोहितोंने डाहसे उसको सोंपा है। परंतु ११ प्रधान पुरोहितोंने लोगोंको उसकाया कि वह बरब्बाको उन्होंके लिये छोड़ देवे। पिलातने फिर उनसे कहा, तुम क्या १२ चाहते हो कि मैं उससे जिसको तुम यहूदियोंका राजा कहते हो करूं? उन्होंने फिर चिल्लायके कहा, उसे क्रुश पर १३ चढ़ाईये। पिलातने कहा, क्यों, उसने क्यों बुराई किई है? उन्होंने १४ और अत्यंत चिल्लाके कहा, उसको क्रुश पर चढ़ाईये। तब पिला- १५ तने लोगोंको शान्त करनेके लिये बरब्बाको छोड़ा और यीशु को कोड़े मार कर क्रुश पर चढ़ानेके लिये सोंप दिया।

खीष्टको भांड़ बनाना।

तब योद्धाओंने यीशुको बाहिरी कोठरीमें अर्थात चौकी- १६ खानेमें ले जाके सारी जथाको बुलाया। उन्होंने उसे बैजनी १७ बस्त्र पहिराए और कांटोंका मुकुट सजके उसके सिरपर १८ रक्खा औ उसे कहने लगे, हे यहूदियोंके राजा प्रणाम। औ उन्होंने उसके सिरपर बेतसे मारा औ उसपर थूका १९ और उसके सन्मुख ठेवने टेकके प्रणाम किया। जब उन्होंने २० इस रीतिसे हंसी कर चुके तब उसपरसे बैजनी बस्त्र उतार उसके निज बस्त्र उसे पहिराके क्रुश पर चढ़ाने ले गए।

खीष्टको क्रुशपर चढ़ाना।

सिकन्दर औ रूफाका पिता शिमोन् नाम जो कुरनीय २१ देशका मनुष्य था सो उसी समय किसी ग्रामसे आयके वहां चला जाता था; उन्होंने उसे देखके यीशुके क्रुश ढोनेके

२२ लिये बेगार पकड़ा। वे यीशुको गुलगलता स्थानको लाया
२३ जो भाषामें खोपड़ीका स्थान कहावता है और उन्होंने मद्य
औ बोल मिलाके उसे पीनेको दिया परंतु उसने न लिया।
२४ एक पहर दिन चढ़ते उन्होंने उसको क्रुश पर चढ़ाया; और
२५ उन्होंने उसका कपड़ा बांट कर्नेके लिये पासा डाला कि एक
२६ एकको कौनसा मिलेगा। यह दोष पत्र उसके उपर लिखागया
२७ कि यह यहूदियोंका राजा है। और उन्होंने उसके संग दो
चोरोंको, एकको दाहनी ओर एकको बाईं ओर क्रुश पर
२८ चढ़ाया। तब यह जो लिखा था सो पूरा हुआ कि वह
कुकर्मियोंके संग गिना जायगा।

ख्रीष्टको तिरस्कार कर्ना।

२९ जो लोग उस बाटसे जाते थे उन्होंने सिर हिलाके निंदा
करके यह कहा तू जो बोला कि मैं महामंदिरको तोड़के
३० तीन दिनोंमें फिर बनाऊंगा, अब अपनेको बचा कर्के क्रुशसे
३१ उतर आ। इसी रीति भी प्रधान पुराहित औ अध्यापकोंने
आपसमें हंसी कर्के यह कहा, उसने औरोंको बचाया
३२ अपनेको बचा नहीं सक्ता। जो वह इस्रायलका राजा ख्रीष्ट
होय तो वह अबही क्रुशपरसे उतर आवे कि हम देखके
बिश्वास करें। उन्होंने भी जो उसके संग क्रुश पर चढ़ाए
गए थे वे उसे दुर्बचन कहा।

यीशुका ऊंचे स्वरसे चिचियाना।

३३ जब दो पहर पूरा हुआ सारे देशमें अंधेरा होके तीन
३४ पहर लग रहा। तीसरे पहरको यीशु ऊंचे शब्दसे चिल्लायके
बोला, एली २ लामा शिबक्तनी अर्थात् हे मेरे ईश्वर २, तूने क्यों
३५ मुझको त्यागा है? तब उनमेंसे जो वहां खड़े थे किसी
किसीने यह बात सुनके कहा, देखो वह एलियको बुलाता
३६ है। इसपर एक जन दौड़कर मराबादलको सिर्केसे भरकर नल
पर धरके उसको पीने दिया औ कहा, रहने दो, हम देखें
कि एलिय उसको क्रुश परसे उतारनेको आवेगा वा नहीं।

उसका प्राण त्याग करना।

तब यीशुने ऊंचे शब्दसे पुकारके प्राण त्याग किया। इस पर ३७ महामंदिरकी ओटका वस्त्र उंचेसे नीचे लग फटके दो भाग ३८ हो गया। औ वह शतपति जो उसका पहरा देता था उसे ३९ यों चिल्लायके प्राण त्यागते देखके कहा, सत्य यह ईश्वरका पुत्र था।

उसके मरनेके समय स्त्रियोंक दाख्य ा।

उसी समय मगदलिनी मरियम् औ छोटे याकूब औ ४० योशिकी माता मरियम् औ शलोमी, ये स्त्री जिन्होंने गालील् देशमें यीशुकी सेवा करके पीछे पीछे जाती थीं येही औ। ४१ और बहुतसी स्त्रियां जो गालील्से यीशुके संग यिरूशालममें आई थीं, वे सब दूरसे खड़े हो देखती थीं।

यूसफका यीशुको गोरमें गाड़ना।

जब बनानेके दिन अर्थात् सनीचरकी सांझ हुई थी, अरमा- ४२ थियाका यूसफ नाम प्रतिष्ठित मंत्री जो ईश्वरके राजकी बाट ४३ जोहता था, आया और साहससे पिलातके निकट जाके यीशुकी लोथ मांगी। जब पिलातने सुना कि वह मरा है तब ४४ उसने अचंभित होके शतपतिको बुलाके पूछा, वह कब मरा? तब शतपतिसे जान कर यीशुकी लोथ यूसफको दिई। ४५ यूसफने झीना वस्त्र मोलके औ लोथको उतारके उसे ४६ कपड़ेमें लपेटा और एक गोरमें जो पत्थरमें खोदी गई थी रक्खी और गोरके द्वारपर एक पत्थर ढुलका दिया। जिस ४७ स्थानमें वह रखा गया था सो मगदलिनी मरियम् औ योशिकी माता मरियम्ने देखा।

१६ सोलहवां अध्याय।

यीशुके मरनेके पीछे जी उठनेका समाचार दूतके मुखसे प्रकाश होना।

जब बिश्राम दिन बीत गया तब मगदलिनी मरियम् औ, १ याकूबकी माता मरियम् औ शालोमीने सुगंधि द्रव्य मोल् लिया २

३ कि आयके यीशुके लोथको मर्दन करें। अठवारेके पहिले दिनमें जब सूर्य उदय होता था वे गोर पर आयके आपसमें कहने लगी, हमारे लिये कौन गोरके द्वारपरसे पाथरको
४ सरकावेगा? क्योंकि वह बहुत बड़ा था। इतनेमें जब उन्होंने
५ दृष्टि किई तब पत्थरको सरका[illegible] हुए देखा। और गोरमें पैठके उन्होंने उजले कपड़े ओढ़े हुए एक युवा पुरुषको
६ दाहनी ओर बैठे हुए देखके अ[illegible]भित हुईं। उस युवाने उनसे कहा, तुम भय न करो, [illegible] क्रूश पर मारडाले हुए नासरतीय यीशुको खोज कर[illegible] हो। [illegible] यहां नहीं है, वह जी उठा है, उसी स्थानको जिसमें उन्होंने उसे रखा था
७ सो देखो। और जाके उसके शिष्योंसे औ पितरसे कहीयो कि वह तुम्हारे आगे गालील देशको जाता है वहां उसे देखोगे
८ जैसे उसने तुम्होंसे कहा था। वे कंपित औ विस्मित होके तुरत गोरमेंसे बाहिर जाके भाग गईं, औ भयसे किसी को कुछ न बोलीं।

मगदलिनी मरियमको दिखाई देनी।

९ अठवारेके पहिले दिनकी भोरमें यीशुने उठके मगदलिनी मरियमको पहिले दिखाई दिई जिसमेंसे उसने सात
१० भूत निकाले थे। उसने जाकर अपने संगियोंको जो उसके
११ लिये शोक औ रोदन कर्ते थे समाचार दिया; जब उन्होंने सुना कि वह जीता है और उसे दिखाई दिई है तो बिश्वास नहीं किया।

दो शिष्योंको देखाई देनी।

१२ इसके पीछे यीशुने दुसरे रूपमें होके उसमेंसे दो को
१३ दिखाई दिई जब वे किसी ग्रामको जाते थे। उन्होंने जाके और शिष्योंको समाचार दिई, परंतु उन्होंने उनकी बात पर भी बिश्वास नहीं किया।

ग्यारह शिष्योंको दिखाई देके आज्ञा देनी।

१४ अंतमें उसने ग्यारह शिष्योंको, जब वे भोजन पर बैठते थे, दिखाई दिई, और उन्होंको उनके अविश्वास औ मनकी

कठोरताके लिये धमकाया क्योंकि उन्होंने उनकी बातपर प्रतीति न किई जिन्होंने उसे जी उठनेके पीछे देखा था। औ उसने उनसे कहा, तुम सारे संसारमें जाके सब लोगोंको १५ सुसमाचार प्रचार करो। जो कोई बिश्वास करके डुबकी लेगा १६ सो त्राण पावेगा; जो कोई बिश्वास न करेगा उसको दण्ड होगा। और वे जो बिश्वास करेंगे उनके संग ये लक्षण १७ होवेंगे, वे मेरे नाम लेके भूतोंको छोड़ावेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, सांपोंको उठा लेंगे, और जो बिष पीवें तो उनको १८ कुछ हानि नहीं होगी; औ वे रोगियों पर हाथ रखके उन्हे चंगे करावेंगे।

फिर उसका स्वर्गमें जाना।

प्रभु उनको यह बात कहके सर्गमें उठाया गया। औ ईश्वर १९ की दाहनी ओर जा बैठा। तब शिष्य लोगोंने जाके स्थानस्थान में सुसमाचारका प्रचार किया; और प्रभुने उनका सहायक २० होके उनकी बातको लक्षणोंसे दृढ़ किई। इति।

लूकलिखित सुसमाचार।

---

१ पहिला अध्याय।

अभिप्राय।

१ हे महिमावान थियफिल, बहुतेरोंने हाथ लगाया है कि उनबातोंको जो हमोंसे निश्चय जान गई है सो लिखे, इससे
२ मैंने भी ठहराया है कि सब बातें जिनका बेओरा उन्होंने जो पहिलेसे साक्षी और सुसमाचारके प्रचारनेहारे थे,
३ हमसे किई हैं प्रथमसे खोज करके आपके लिये एक एक
४ लिखऊं जिसतें आप उनबातोंकी सच्चाई जानें जिनका उपदेश पाये हैं।

इलीशिबाके गर्भ होनेका बर्णन।

५ यहूदा देशके राजा हेरोदके समयमें अबिय पुरोहितके पारीमें सिखरिय नाम एक पुरोहित था; उसकी स्त्री
६ इलीशिबा नामक हारोणके बंशमेंसे थी। वे दोनों ईश्वर की दृष्टिमें धर्मी होके प्रभुकी समस्त आज्ञा औ व्यवस्थाका
७ निर्दोष पालन करनेहारे थे। उनका कोई सन्तान न था
८ क्योंकि इलीशिबा बांझ थी, औ वे दोनों बृद्ध थे। जब सिख-
९ रिय अपनी पारीकी रीतिपर ईश्वरके सन्मुख पुरोहितका कर्म कर्ता था, तो पुरोहितता की रीतिके अनुसार उसको
१० धूप जलाना पड़ा। इससे वह प्रभुके महामंदिरमें गया और सारी भीड़ धूप जलानेके समयमें प्रार्थना कर्ते २ बाहिर
११ खड़ी रही। जिस बेदी पर वह धूप जलाता था उसकी
१२ दहिनी ओर प्रभुके दूतने उसे दिखाई दिई। सिखरिय उसे
१३ देखकर ब्याकुल औ भयवान् हुआ। तब दूतने उससे कहा, हे सिखरिय, भय न कर, तेरी प्रार्थना सुनी गई है, तेरी स्त्री इलीशिबा तुझसे पुत्र जनेगी और तू उसका नाम योहन
१४ रक्खेगा। तुझे आनंद और हुलास होवेगा; और उसके

जन्मके लिये बहुतेरे लोग आनंदित होवेंगे। वह प्रभुकी दृष्टि १५ में बड़ा होवेगा; वह न मद्य न और कोई मादक वस्तु पीयगा; वह जन्म होनेके समयसे पवित्र आत्मासे भरा होके इस्रा- १६ येलके वंशमेंसे बहुतेरोंको उनके प्रभु ईश्वरके पथमे लावेगा। वह एलीयके सदृश आत्मा औ शक्तिमें उसके आगे जायगा १७ कि संतानोंकी ओर पितृगणके मनोंको और धर्मियोंकी मतमें आज्ञा न माननेहारोंको फिरावे कि प्रभुके लिये एक जातिको बनावे। तब सिखरियने दूतसे कहा, यह मैं १८ किस रीति जानऊं क्योंकि मैं बूढ़ा हूं, और मेरी स्त्री वृद्धी है। दूतने उत्तर दिया, मैं जिब्रायेल् नाम दूत हूं, जो ईश्वर १९ के समीप खड़ा रहता है और मैं तेरे निकट भेजा गया हूं कि तुझसे बात करके यह शुभ समाचार सुनाऊं और देख जिस दिनलग ये सब बातें पूरी किई न जाईं तु गूंगा रहके २० बोल न सकेगा क्योंकि मेरी बातोंपर जो अपने समयमें पूरी किई जायेंगी बिश्वास नहीं किया। लोग सिखरियके आनेकी २१ आशामें बाहिर खड़े होके अचंभा करते थे कि वह महा- मंदिरमें ऐसा बहुत बिलंब करता है; जब वह बाहिर आके २२ उससे कुछ बोलने न सकता था परंतु उन्हें सैन करके गूंगा रह गया; इससे वे जान गये कि उसने मंदिरमें किसीका दर्शन पाया है। जब उसके सेवाकी दिन पूरे हुए तब वह २३ अपने घर गया। कुछ दिन बीते उसकी स्त्री इलीशेबा गर्भवंती २४ हुई, और अपनेको पांच मास लग यह कहके छिपाया कि २५ इनदिनोंने प्रभुने मुझपर दृष्टि करके यों किया है कि मनु- ष्योंके आगे मेरे अपमान मिटाया जाय।

मरियमका गर्भ होनेका बखान।

छठवें मासमें जिबरायेल दूत ईश्वरकी ओरसे एक कुआंरी २६ के निकट जिसका नाम मरियम था भेजा गया था जो दायूदके वंशके एक पुरुष यूसफसे बाग्दत्त हुई थी और गालील् २७ देशके नासरत् नगरमें रहती थी; दूतने उसके समीप आयके २८ कहा, हे ईश्वरकी महा अनुग्रहीत कन्या, प्रणाम; प्रभु तेरे

२९ संग है, नारियोंमें तू धन्य है। वह उसे देखकर उसकी बात
३० से घबरायके सोचने लगी यह कैसा प्रणाम है? दूतने उसे
कहा, हे मरियम भय न कर क्योंकि तूने ईश्वरसे अनुग्रह
३१ पाया है। देख, तू गर्भिणी होके एक पुत्र जनेगी और
३२ उसका नाम यीशु (त्राणकर्त्ता) रखेगी। वह महान होगा
और सर्ब्ब प्रधानका पुत्र कहावेगा और प्रभु परमेश्वर उसके
पिता दायूद्का सिंहासन उसको देगा; वह याकूब्के घराने
३३ पर सदा राज करेगा; और उसके राजका अंत कभी न
३४ होगा। तब मरियम्ने दूतसे कहा, यह क्योंकर होगा? मैं
३५ पुरुषको नहीं जानती। दूतने उससे कहा, पवित्र आत्मा
तुझपर आवेगा और सर्ब्ब प्रधानकी शक्ति तेरे उपर छाया
करेगी। इसलिये जोपवित्र जन तुझसे उत्पन्न होवेगा वह
३६ ईश्वर का पुत्र कहावेगा। देख, तेरी कुटुम्बनी इलीशेबा अपने
बुढ़ापेमें पुत्रका गर्भवंती ऊई है, और वह जो बांझ कहलाती
३७ थी उसका छठवां मास यह है; कोई बात ईश्वरसे अनहोनी
३८ नहीं है। मरियम्ने कहा, देख, मैं प्रभुकी दासी हूं मुझपर
तेरी बातके अनुसार होवे। तब दूत उसके समीपसे
चला गया।

मरियम औ इलीशेबाकी भेट कर्नी।

३९ उन दिनोंमें मरियम उठके यहूदाके पर्वतके देशके एक
४० नगरको तुरंत गई। सिखरियके घरमें पऊंचकर इलीशे-
४१ बाको प्रणाम किया; जोंही इलीशेबाने मरियमका प्रणाम
४२ सुना तोंहीं बालक उसमें उछलने लगा। और इलीशेबा
पवित्र आत्मासे परिपूर्ण हो ऊंचे शब्दसे बोलने लगी, नारि-
४३ योंके बीच तू धन्य है, औ तेरा गर्भका फलभी धन्य है। मुझको
यह कहांसे ऊआ है कि मेरे प्रभुकी माता मेरे समीप आई है?
४४ देख, जोंही तेरा प्रणामकी बात मेरे कानमें पड़ी तोंही
४५ मुझमें बालक आनंदित होके उछलने लगा। जिस स्त्रीने
बिश्वास किया है सो धन्य क्योंकि वे बातें जो प्रभुसे उसे कही
गई है सो सिद्ध होगी।

मरियमका गीत गाना।

तब मरियमने कहा, मेरा मन प्रभुका महिमा कर्ता है औ ४६
मेरा आत्मा अपने त्राणकर्ता ईश्वरमें आनंदित होता है। ४७
क्योंकि उसने अपनी दासीकी दुर्गति पर दृष्टि किई है; देखो, ४८
इस समयसे समस्त लोग मुझको धन्य कहेंगे। क्योंकि जो सर्व- ४९
शक्तिमान है जिसका नाम पवित्र है, उसने मेरे लिये बड़ा
कर्म किया है। उसकी दया उनपर जो उसे डरते हैं पीढ़ीसे ५०
पीढ़ीलों है। उसने अपनी बांहके बलसे अहंकारियोंको, उनके ५१
मनकी कुमति सहित, छिन्न भिन्न किया है; उसने बलवानोंको
सिंहासनोंसे उतारके छोटोंको ऊंचे किये हैं। उसने भूखों ५२
को उत्तम बस्तुओंसे तृप्त करके धनवानोंको छूछे हाथोंसे भेजा ५३
है। उसने आपनी दयाको, जो इब्राहीम औ उसके बंशपर ५४
सदालों है, स्मरण करके अपने सेवक इस्रायेलका उपकार ५५
किया है जैसा उसने हमारे पित्तोंसे कहा है। और मरियम ५६
प्राय तीन मास इलीशिबाके संग रहके फिरकर अपने
घरको गई।

योहनके जन्म होनेका बिबरण।

जब इलीशिबाके जन्नेका दिन ऊआ तब वह पुत्र जनी। ५७
जब उसके परोसियों औ कुटम्बोंने सुना कि प्रभुने उसपर ५८
बड़ा अनुग्रह किया है तब उन्होंने उसके संग आनंद किया।
आठवें दिनमें वे बालकके खनतः करनेको आके उसके ५९
पिताके नाम सिखरिय उसको देनेपर थे। परंतु उसकी माताने ६०
कहा, सो नहीं होगा, उसका नाम योहन रक्खना होगा।
उन्होंने उसे कहा, तेरे घरानेमें यह नाम किसीका नहीं है। ६१
तब उन्होंने उसके पिताको ओर सैन करके पूछा, तू उस ६२
का क्या नाम रक्खा चाहता है; उसने एक पाटी मंगाके उस ६३
पर लिखा, उसका नाम योहन है; तब वे सभी अचंभित ऊए।
इसपर उसका मुंह औ जीभ तुरंत खुल गई, और उसने ६४
बात करके ईश्वरका गुणानुबाद किया। तब उनको जो चारों ६५
ओरके रहनेहारे थे भय ऊआ, और यहूदा के सब पर्बतोंमें

६६ इन सब बचनोंकी चर्चा फैल गई; सब जो सुननेहारे थे उन्होंने अपने २ मनमें बिचार करके कहा, यह बालक कैसा होगा? और प्रभुका हाथ उसपर था।

योहनका पिता सिखरियका उसपर भविष्यद्वाक्य।

६७ योहनका पिता सिखरिय, पबित्र आत्मासे भरा होके, यह
६८ भविष्यत बात कहने लगा, इस्रायेलका प्रभु परमेश्वरको धन्य,
६९ क्योंकि उसने दृष्टि करके अपने लोगोंको मुक्त किया है।
७० जैसा उसने अपने पबित्र भविष्यद्वक्ताओंके मुंहसे, जो आगेसे
७१ होते आये, कहा, तैसा उसने हमोंके लिये अपने दास दायूदके
७२ घरानेमें त्राणकी एक सींग (अर्थात त्राण करता) उत्पन्न
७३ किया है कि हम अपने शत्रुओंके औ घिन करनेहारोंके
७४ हाथसे उद्धार पावें। हां प्रभु परमेश्वरने त्राणकरता उत्पन्न
७५ किया है कि वह अपने पबित्र नियमको स्मरण करके उस दयाकी बात जो हमोंके पितरोंको दिई गई थी पूरी करे अर्थात उस सौंहकी बात जो उसने हमारे पिता इब्राहीमसे कही कि वह हमको यह देगा कि हम अपने शत्रुओंके हाथसे उद्धार पायके जीवनभर उसकी दृष्टिमें सुधाई औ पबित्र-
७६ ताईसे उसकी सेवा निर्भयसे करें। हे बालक, तू सर्ब्ब
७७ प्रधानका भविष्यद्वक्ता कहावेगा क्योंकि तू प्रभुके आगे
७८ जायके उसके पथोंको सुधारेगा, हां तू उसके लोगोंको पाप मोचनके उस मार्गको बतलावेगा जो हमारे ईश्वरकी बड़ी
७९ कृपासे होता है, जिसके हेतसे भोरका उजाला हमपर उपरसे पड़ा है कि उनको जो अंधकार औ मृत्युरूपि छायामें बैठते हैं उजाला देवे कि हम कुशलके मार्गपर सीधेसे चलने पावें।

योहन का बड़ा होना।

८० और वह बालक बढा और आत्मामें बलवन्त हुआ और जिस दिनलों उसने अपनेको इस्रायेली लोगोंको प्रगट न किया उजाड़ स्थानोंमें रहा।

२ दूसरा अध्याय।

यूसफका बैत्लेहम् नगरमें जाना औ खीष्टका जन्म लेना।

उन दिनोंमें अगस्त कैसर राजाने अपने सब राज्यके लोगोंके १ नाम लिखनेकी आज्ञा दिई। यही नाम लिखनेका आरंभ २ हुआ जब कुरीनीय नाम सुरिया देशके अधिपति था। तब सब ३ लोग अपने अपने नगरको गये कि उनके नाम लिखे जावें। यूसफ भी अपनी वाग्दत्त गर्भवंती स्त्रीको संग लेकर गालील् ४ देशके नासरत् नगरसे यहूदा देशमें बैत्लेहम नगरको, जो दायुदका नगर कहावता है, गया कि नाम लिखा जावे क्योंकि ५ वह दायूद राजाके बंश औ घरानेसे था। वे दोनों यहां ६ होतेही तो मरियमके जननेका समय आ पहुंचा और वह अपने पहिलौटा पुत्र जनी। और उसको बस्त्रमें लपेटके ७ गोशालामें रखा क्योंकि उनको सरामें स्थान न मिला।

स्वर्गके दूतोंका गड़ेरियोंके निकट खीष्टके जन्मका प्रकाश।

उसी समयमें कोई गड़ेरिये खेतमें रहके रातको अपने ८ झुंडकी रक्षा कर्ते थे, और देखो, प्रभुका एक दूत उनके ९ निकट आया और प्रभुका तेज उनकी चारोंओर चमका और वे अतिही डर गये। उस दूतने उनसे कहा, भय न करो, १० देखो, मैं तुमको ऐसा सुसमाचार देता हूं जो सब लोगोंको बड़ा आनंद होगा। आजके दिनमें दायूदके नगरमें तुम्हारे ११ लिये एक त्राण करता उत्पन्न हुआ है जो खीष्ट प्रभु है। तुम्हारे लिये यह चिन्ह है, तुम उस बालकको बस्त्रमें लपेटे १२ हुये औ गोशालामें लेते हुये पाओगे। इसपर अकस्मात उस १३ दूतके संग स्वर्गकी एक महा सेना ईश्वरकी स्तुति करके और यह कहके प्रगट हुई कि उंचे स्वर्गमें ईश्वरको गौरब, पृथ्वीपर १४ शांति, और मनुष्योंमें मिलाप होवे।

गड़ेरियोंसे और लोगोंके निकट खीष्टके जन्मका प्रकाश।

ज्यों दूत उनके निकटसे स्वर्गमें गये त्यों गड़ेरियोंने आपसमें १५ कहा, आओ, बैतलेहम नगर को चलें कि हम इसको जो

१६ ऊआ है औ जिसे प्रभुने हमको जनाया है देखें। इसपर उन्होंने शीघ्र जाके मरियम औ युसफ और गोशालामें लेते
१७ ऊए बालकको पाया; और देखके उन्होंने उसबातको जो
१८ बालकके बिषयमें उन्होंसे कही गई थी फैलाई। सब लोगोंने
१९ उनबातोंको जो गड़रियोंसे कही गई थी सुनके अचंभा किया। परंतु मरियम सब बातोंको अपने मनमें रखके सोचती
२० रही। पीछे जैसा उन्होंसे कहा गया था तैसा गड़रियोंने देखके सुनके इन सब बातोंके लिये ईश्वरकी बड़ाई औ स्तुति करते करते अपने स्थानमें गये।

खीष्टकी त्वचा छेदन कर्नी।

२१ जब आठवें दिन, अर्थात बालकके खतनः करनेके दिन आ पऊंचा तब जैसा दूतने उसके गर्भ होनेके आगे आज्ञा किई थी तैसा उसका माम यीशु रखा गया था।

मरियमके शुद्ध होनेका बर्णन।

२२ और जब मुसाकी व्यवस्थाके अनुसार मरियमके शुद्ध होने के दिन पूरे ऊये तब वे बालकको लेके यिरूशालमको गये कि
२३ उसे प्रभुके आगे धरें क्योंकि प्रभुकी व्यवस्थामें लिखा है कि जो नर पिहलौठा है सो ईश्वरके लिये पबित्र कहलावेगा।
२४ और कि वे प्रभुकी व्यवस्थाकी बातके अनुसार दो घूघू अथवा कपोतके दो बच्चेको चढ़ा देवे।

शिमियोनका बखान।

२५ देखो, यिरूशालममें एक जन था जिसका नाम शिमियोन था; वह धर्मी औ भक्त होके इस्रायेलकी शांतिका अपेक्षा करते रहता था और पबित्र आत्मा उसमें भी था।
२६ पबित्र आत्मासे उसको यह आकाशबाणी ऊई कि जबलों तू प्रभुके खीष्टको न देखेगा तबलों म्रत्युको न देखेगा। जब
२७ यीशुके माता पिता उसको महामंदिरमें लाया कि व्यवस्थाके
२८ व्यवहारके अनुसार उसके बिषयमें करें तब शिमियोनने आत्माकी शिक्षासे भीतर आयके उसको गोदीमें लेके ईश्वरका
२९ धन्यवाद करके यह कहा, हे प्रभु आप अपने बातके अनुसार

अपने दासको कुशलसे अब बिदा कीजिये क्योंकि मेरे नेत्रोंने ३० उस त्राणकर्त्ताको देखा है जिसे आपने सब लोगोंके सन्मुख ३१ उत्पन्न किया है। वह सब देशीयोंको प्रकाश देनेके लिये उंजि- ३२ याला और आपके इस्रायेली लोगका गौरव होगा। तब ३३ यूसफ औ उसकी माता इन बातोंसे जो उसके बिषयमें कही गई थी आश्चर्य किया। शिमियोनने उनको आशीर्बाद ३४ करके उसकी माता मरियमसे कहा, देखो, इस्रायेली बंशके बज़ुतेरोंको गिराने औ उठानेके लिये और एक चिह्न होनेके लिये जो निंदित किया जायगा औ बज़ुतेरोंके मनकी गुप्त बात प्रकाश करनेके लिये यही बालक ठहराया गया है; हां ३५ उसके हेतसे तेरा प्राण भी शूलीसे बेधा जायगा।

हन्नाका बिबरण।

वहां भी एक भविष्यद्वक्ती थी जो आशेरके घरानेके ३६ फिनुयेल नामकी पुत्री थी जिसका नाम हन्ना था। वह बज़ुत दिनकी थी औ अपने कुआंरपनसे सात बर्षलों एक पतिके संग रहकर अब बर्ष चौरासी एककी बिधवा थी; वह महा ३७ मंदिरको न छोड़के उपवास औ प्रार्थनासे रात दिन ईश्व- रकी सेवा करती थी। इस स्त्रीने उस समय मंदिरमें आयके ३८ प्रभुका धन्यबाद किई औ उनसबोंको जो यिरूशालम नगरमें मुक्तिकी आशा रखते थे यीशुके बिषयमें बात कही। जब उसकी माता औ युसफने प्रभुकी ब्यवस्थाके समान सब ३९ कर्म कर चुके तब वे बालकके संग गालील देशमें अपने नगर नासरतको फिर गये।

खीष्टका बढाना।

बालक बढ़ा औ ज्ञानसे भरा होके आत्मामें शक्तिमान ४० ज़ुआ; और ईश्वरका अनुग्रह उसपर था।

बाल कालमें पंडितोंके संग खीष्टका प्रश्न और उत्तर करना।

उसके माता पिता बर्ष बर्ष निस्तार पर्बके समय यिरूशा- ४१ लमको जाया करते। जब यीशु बारह बर्षका ज़ुआ तब वह ४२ उनके संग पर्बकी रीतिके अनुसार यिरूशालमको गया। पर्बके ४३

दिनोंके पूरा होनेपर वे फिरने लगे परंतु यीशु बालक यिरू-
४४ शालममें रह गया; यूसफ औ उसकी माता यह न जानते थे
परंतु समझते थे कि वह साथीयोंके संग है; इससे वे एक
४५ दिनकी बाटलों गये। पीछे उन्होंने अपने कुटुम्बों औ बंधोंके
बीचमें उसे खोज किया और न पायके खोजते खोजते यिरूशा-
४६ लमको फिर गये। तीन दिनके पीछे उन्होंने महामंदिरमें
पंडितोंके बीचमें बैठे ऊए उनकी सुनते औ उनसे बात पूछते
४७ उसे पाया। सब जो उसकी सुनते थे उसके बुद्धि औ उसके
४८ उत्तरोंसे अचंभित ऊये। उसके माता पिताने उसको देख-
कर आश्चर्य मानके उससे कहा, हे पुत्र, क्यों तूने हमसे
ऐसा किया है? देख, तेरे पिता औ मैं शोकित होके तुझे
४९ ढूंढते ढूंढते आये हैं। उसने उनसे कहा, क्यों मुझे ढूंढा है?
क्या तुम नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिताके घरमें रहना
५० अवश्य है? परंतु उन्होंने इसबातको जो उसने उससे कही
५१ थी न समझी। पीछे वह उनके संग चला और नासरतमें
आयके उनके बशमें रहा; उसकी माताने इन सब बातों
५२ को अपने मनमें रखीं। और यीशु बुद्धि औ शरीरमें औ
ईश्वर औ लोगोंके अनुग्रहमें बढ़ते रहा।

३ तीसरा अध्याय।

योहनका उपदेश औ डुबकी दिलानी।

१ तिबिरिय कैसरके राज्यके पंद्रहवें बर्ष जब पंतिय पीलात
यिहूदा देशका अधिपति था, औ गालील् देशका राजा हेरोद
था, औ उसका भाई फिलिप यितुरिया चाखोंनीतिया देशका
राजा था, औ लुसानिय नाम अबिलीनी देशका राजा था;
२ औ हान्नन् औ कियाफा पुरोहित थे; उसी समय सिखरियके
पुत्र योहनको दिहातमें ईश्वरका बचन प्रकाशित ऊआ। सो
३ वह यर्दनके समीप समस्त देशमें आके पाप क्षमा होनेके लिये
४ मन फिरानेकी डुबकी की बात प्रचार कर्ने लगा। जैसा यिशा-
यिय भविष्यद्वक्ताके बातोंके ग्रंथमें लिखा है, कि 'दिहातमें

कोई जन यह पुकारता है कि प्रभुका पथ बनाओ औ उसके राज पथ चौरस करो; नीची भूमि सब ऊंची किई जायगी, ५ पर्वत औ टीले सब नीचे किये जायेंगे, टेढ़ी भूमि सीधी औ ऊंचनीच भूमि चौरस किई जायेंगी, और सब मनुष्य ईश्वरके ६ त्राण कर्नेहारेको देखेंगे'। तब योहनने उस मंडलीको जो ७ उससे डुबकी लेनेको बाहिर आये थे कहा, हे सर्पोंके वंशो, आगामि कोपसे भागनेको किसने तुमको चेताया है? मन ८ फिरानेके योग फल लाओ, और अपने मनमें मत कहो कि इब्राहीम् हमारा पिता है; मैं तुमसे सच कहता हूं, ईश्वर इन्हीं पाथरोंसे इब्राहीमके लिये सन्तान उत्पन्न कर सक्ता है। वृक्षोंके जड़ोंपर कुल्हाड़ी लगी है; जिस वृक्ष पर उत्तम ९ फल नहीं लगते हैं, वह काटा जायके आगमें फेंका जायेगा। तब लोगोंने उससे पूछा, हमको क्या कर्ना उचित है? उसने १० उत्तर दिया, जिसके दो वस्त्र हैं सो वस्त्रहीनको एक देवे; ११ जिसके निकट खानेकी सामा है सो भी तैसाही करे। कर १२ उगाहनेहारोंने डुबकी लेनेको आयके पूछा, हे गुरू, हमको क्या कर्ना उचित है? उसने कहा, ठहराए हुए करसे अधिक १३ न लो। सिपाहीयोंने भी आयके पूछा, हम लोगोंको क्या १४ कर्ना उचित है? उसने कहा, किसी पर उत्पात न करो, कलंक न लगाओ, अपनी महिनवारीसे संतुष्ट होओ।

खीष्टके विषयमें साक्षी देनी।

जब लोग बाट जोहते थे, औ सब अपने मनमें योहनके १५ विषयमें यह चिंता कर्ते थे कि वह खीष्ट है वा नहीं? तब १६ योहनने सबसे कहा, मैं तुमको जलमें डुबकी दिलाता हूं सच परंतु कोई जन जो मुझसे बड़ा है औ जिसके जूताओंके बंधन खोलनेके योग्य मैं नहीं हूं आता है वह तुमको पवित्र आत्मा औ आगमें डुबकी दिलावेगा। उसके हाथमें सूप है १७ और वह अपने खलियानको झाड़ बुहार कर गेऊंको अपने खतमें एकठे करेगा परंतु भूसीको उस आगमें जो कभी ठंडी

१८ नहीं होगा, जलावेगा। उसने बहुत और उपदेश करके लोगोंको सुसमाचार प्रचार करता रहा।

योहनका कारागारमें बन्ध होना।

१९ हेरोद राजाने अपने सहोदर भाई फिलिपकी स्त्री हेरोदियाके हेतसे, और अपने सब कुकर्मोंके हेतसे, योहनसे धम-
२० काया हुआ होके इन सब कुकर्मोंपर यह अधिक किया कि उसने योहनको कैदखानेमें डाला।

ख्रीष्टकी डुबकी लेनी।

२१ इसके पहिले जब लोग योहनसे डुबकी लेते थे तब यीशुने
२२ भी आके डुबकी लिई। और प्रार्थना कर्ते हुये स्वर्गका द्वार खुल गया, और पवित्र आत्मा मूर्त्तिमान होके कपोतकी भांति उसके ऊपर उतरा, औ यह आकाशबाणी हुई, तू मेरा प्रिय पुत्त्र है, तुझसे मेरा परम संतोष है।

ख्रीष्टकी बंशावली।

२३ उस समयमें यीशु तीस एक बर्षका हुआ और जैसा समझा गया था तैसा यूसफका पुत्त्र होता रहा; औ यूसफ
२४ एलिका पुत्त्र। एलि मत्तत्‌का पुत्त्र, मत्तत्‌ लेविका पुत्त्र, लेवि
२५ मल्किका पुत्त्र, मल्कि यान्नका पुत्त्र, यान्न यूसफका पुत्त्र। यूसफ मत्तथियका पुत्त्र, मत्तथिय आमोसका पुत्त्र, आमोस्‌ नहूम्‌का
२६ पुत्त्र, नहूम्‌ इसलिका पुत्त्र, इसलि नगिका पुत्त्र। नगि माटका पुत्त्र, माट मत्तथियका पुत्त्र, मत्तथिय शिमियिका पुत्त्र, शिमियि
२७ यूसफका पुत्त्र, यूसफ यिहूदाका पुत्त्र। यिहूदा योहानाका पुत्त्र, योहाना रीशाका पुत्त्र, रीशा सिरुब्बाबिलका पुत्त्र, सिरुब्बाबिल्‌ शलतीयेलका पुत्त्र, शलतीयेल्‌ नेरिका पुत्त्र, नेरि
२८ मल्किका पुत्त्र, मल्कि अद्दीका पुत्त्र। अद्दी कोसमका पुत्त्र,
२९ कोसम इलमोदद्‌का पुत्त्र, इलमोदद्‌ एरका पुत्त्र। एर योशिका पुत्त्र, योशि ईलीयेषरका पुत्त्र, ईलीयेषर योरीमका
३० पुत्त्र, योरीम्‌ मत्तत्‌का पुत्त्र, मत्तत्‌ लेविका पुत्त्र। लेवि शिमियोनका पुत्त्र, शिमियोन्‌ यिहूदाका पुत्त्र, यिहूदा यूसफका पुत्त्र, यूसफ्‌ योननका पुत्त्र, योनन इलियाकीमका पुत्त्र, इलि-

याकीम मिलेयाका पुत्र, मिलेया मैननका पुत्र, मैनन् मत्तत्तका ३१ पुत्र, मत्तत्त नाथनका पुत्र, नाथन दायूदका पुत्र। दायूद यिश्- ३२ यका पुत्र, यिशय ओबेदका पुत्र, ओबेद बोयसका पुत्र, बोयस् सलमोनका पुत्र, सलमोन् नहशोनका पुत्र। नहशोन् अम्मी- ३३ नादबका पुत्र, अम्मीनादब् अरामका पुत्र, अराम् हिस्रोणका पुत्र, हिस्रोण् पेरसका पुत्र, पेरस् यिहूदाका पुत्र, यिहूदा याकूबका पुत्र, याकूब् इसहाकका पुत्र, इसहाक् इब्राहीमका ३४ पुत्र, इब्राहीम् तेरहका पुत्र, तेरह नाहोरका पुत्र। नाहोर ३५ सिरूगका पुत्र, सिरूग् रियूका पुत्र, रियू पेलगका पुत्र, पेलग् एबरका पुत्र, एबर् शेलहका पुत्र, शेलह कैननका पुत्र, कैनन ३६ अर्फकषदका पुत्र, अर्फकषद् शामका पुत्र, शाम नोहका पुत्र, नोह लेमकका पुत्र। लेमक् मिथुशेलहका पुत्र, मिथुशेलह ३७ हनोकका पुत्र, हनोक् येरदका पुत्र, येरद् महललेलका पुत्र, महललेल् कैननका पुत्र। कैनन् इनोशका पुत्र, इनोश् शेतका ३८ पुत्र, शेत आदमका पुत्र, आदम ईश्वरका पुत्र।

४ चौथा अध्याय।

शैतानसे ख्रीष्टकी परीक्षा।

यीशु पवित्र आत्मासे भरपूर होके यर्दन नदीसे फिरा १ तब वह आत्मासे बनमें ले गया। वहां चालीस दिन लग वह २ शैतानसे परीक्षित हुआ; उन चालीस दिनोंमें उसने कुछ न खाया; जब वे बीत गये तब उसे भूख लगी। इसपर शैतान- ३ ने आके उससे कहा, जो तू ईश्वरका पुत्र है तो इस पाथर को कह कि रोटी बन जावे। यीशुने उसको उत्तर दिया, यह ४ लिखा है, 'मनुष्य केवल रोटीसे नहीं परंतु ईश्वरकी एक एक बातसे जीता रहेगा'। तब शैतान् उसको किसी ऊंचे पर्वत ५ पर ले गया औ एक पलमें संसारका सब राज्य दिखाके कहा, मैं इन राज्योंका सब अधिकार औ ऐश्वर्य तुझको दूंगा ६ क्योंकि सब मुझे सौंपा गया है, और जिस किसीको मैं देने चाहता हूं उसीको मैं दे सक्ता हूं। तू जो मुझको प्रणाम करे ७

८ तो ये सब तेरेही होवेंगे। यीशुने उसको उत्तर दिया, हे शैतान मुझसे परे होओ, लिखा है, 'अपने प्रभु परमेश्वरको प्रणाम
९ कर, केवल उसीकी सेवा कर'। तब वह उसको यिरूशालम नगरमें ले गया औ महामंदिरके छत पर खड़ा करके बोला,
१० जो तू ईश्वरका पुत्र है, तो अपनेको यहांसे नीचे गिरा क्योंकि लिखा है, 'परमेश्वर तेरी लिये अपने दूतोंको आज्ञा करेगा
११ कि वे तेरी रक्षा करें और हाथोंमें तुझे उठायके रखें कि
१२ तेरा पांव पत्थरसे चोट न खावे'। तब यीशुने उत्तर दिया, यह भी कहा गया है, 'तू अपने प्रभु परमेश्वरकी परीक्षा
१३ न कर'। जब शैतान् सब परीक्षा कर चुका तब थोड़े समयलों उससे चला गया।

ख्रीष्टके उपदेश करनेका आरंभ।

१४ यीशु आत्माकी सामर्थ्यसे गालील् देशमें फिर गया और
१५ उसकी कीर्ति उस सब देशकी चारों ओर फैल गई। वह उनके मन्दिरोंमें उपदेश देके सबोंसे सन्मान किया गया।

नासरतमें जाना।

१६ वह नासरत् नगरमें आया जहां वह पालन किया गया था और बिस्रामवारको अपनी रीतिके अनुसार मंदिरमें जाके
१७ पढ़नेको खड़ा हुआ। यिशायिय भविष्यद्वक्ताकी पोथी उसके हाथमें दिई गई, उसने पुस्तक खोलके, जिस स्थानमें
१८ यही बात लिखी है वही पाया, 'प्रभुकी आत्मा मुझ पर है इसलिये उसने मुझे अभिषेक किया है कि मैं दरिद्रोंको सुसमाचार प्रचार करूं; उसने मुझे भेजा है कि मैं कुचल् डाले हुयोंके मन चंगा करूं, बंधुओंको छुड़ानेकी औ
१९ अंधोंको नेत्र देनेका प्रचार करूं, टूटे मनोंका निस्तार करूं,
२० और प्रभुके अनुग्रह किये हुए बर्षका प्रचार करूं'। तब पुस्तक बांधके सेवकके हाथमें देके आसन पर बैठा; मंदिरमें जितने लोग थे सभी उसपर दृष्टि कर रहे। तब
२१ वह उन्होंसे यह बात् कहने लगा कि आजके दिन यह लिखा
२२ हुआ बचन तुम्हारे कानोंमें पूरा हुआ है। इससे सबोंने

उसकी प्रशंसा किई औ उस अनुग्रहकी बातोंसे जो उसके मुखसे निकलीं अचंभा करके बोले, क्या यह यूसफका पुत्र नहीं है? तब उसने उन्होंसे कहा तुम निःसन्देह मुझे यह २३ बात कहोगे, हे बैद्य, अपनेको चंगा कर, जो कुछ हमोंने सुना है कि तूने कफर्नाहूममें किया है सो यहां अपने देशमें कर। उसने फिर कहा, मैं तुमसे सच कहता हूं कोई भविष्यद्वक्ता २४ अपने देशमें आदरप्राप्त नहीं होता है। और भी मैं २५ तुमसे सत्य कहता हूं, एलियके दिनोंमें जब साढ़े तीन बर्ष लों आकाशसे बर्षा न हुई यहां लग कि सारे देशमें बड़ा २६ काल पड़ा, तब इस्रायेली देशमें बहुतेरी बिधवा थीं, परंतु सीदोन देशके सारिफत् नगरकी रहनेहारी एक बिधवाके बिना और किसीके निकट एलिय भेजा न गया। औ इली- २७ शाय भविष्यद्वक्ताके समयमें इस्रायेली देशमें बहुतेरे कोढ़ी थे, परंतु सुरिया देशका नामन् कोढ़ीके बिना और कोई न चंगा हुआ। तब जो मंदिरमें थे ये बातें सुनके क्रोधसे भर गये और २८ उठकर उसको नगरसे बाहिर निकालके जिस पर्बत पर २९ उनका नगर बना था उसी पर्बतके ढिग तक उसको ले चले कि उसको औंधे मुंह गिरा देवे; परंतु वह उनके बीचमेंसे निक- ३० लके चला गया।

अशुद्ध भूतोंको छुड़ाना।

यीशु गालील् देशके कफर्नाहूम नगर में आयके बिश्राम ३१ के दिनोंमें लोगोंको उपदेश दिया करता। सबही उसके उप- ३२ देशसे अचंभित हुए क्योंकि उसकी बात प्रबल थी। मंदिरमें ३३ एक जन अशुद्ध भूतग्रस्त ने ऊंचे शब्दसे कहा, हे नासरतीय यीशु, हमसे तुझसे क्या काम है? क्या तू हमको नष्ट करने ३४ आया है? तू ईश्वरका पबित्र जन है, यह मैं जानता हूं। ३५ यीशुने उसको धमकायके कहा, चुप रह, इसमेंसे निकल आ; इसपर भूत उसमनुष्यको लोगोंके बीचमें गिराय कर कुछ चोट न करके निकल आया। इससे सब लोग अचंभित ३६ हो आपसमें बोलने लगे, यह कैसी बात है? वह प्रभाव औ

३७ पराक्रमसे अपवित्र भूतोंको आज्ञा कर्त्ते हो औ वे निकल जाते हैं; औ चारों ओरके सब स्थानोंमें उसकी कीर्त्ति फैल गई।

पितरकी सासको चंगा कर्ना।

३८ वह मंदिरमें बाहिर आ शिमोनके घरमें गया; शिमोन की सास बड़े ज्वरसे पीड़ित थी; शिष्योंने उसके लिये उससे
३९ बिनती किई। उसने उसके निकट खड़े हो ज्वरको डांटा और ज्वर छूट गया; तब शिमोनकी सास तुरंत उठकर उनकी सेवा कर्ने लगी।

अनेक प्रकारके रोगियोंको चंगा कर्ना।

४० सूर्य्यके अस्त होनेके समय लोग अपने परिवारके जो सब जन नाना प्रकारके रोग से पीड़ित थे, उनको उसके निकट लाये, औ उसने एक एक पर हाथ रखके उनको चंगा किया।
४१ भूतोंनेभी अनेक लोगोंमेंसे निकलके चिचियाके कहा, तू ईश्वर का पुत्र खीष्ट है; परंतु उसने डांटके उन्हें बात बोलने न
४२ दिई क्योंकि वे जानते थे कि वह खीष्ट है। जब भोर ऊआ तब वह उजाड़ स्थानमें गया औ लोग उसको ढूंढ़ते ऊए
४३ उसके समीप आये औ उसे रोका कि उनको न छोड़े। परंतु उसने कहा, ईश्वरके राज्यका सुसमाचार प्रचार कर्नेको दूसरे
४४ नगरोंमें भी मुझको जाना होगा; क्योंकि इसके लिये मैं भेजा गया हूं। और वह गालील् देशके मंदिरोंमें उपदेश देता रहा।

५ पांचवां अध्याय।

बऊत मछलीयोंको पकड़ना।

१ यीशु गिनेसरत झीलके तट पर एक दिन खड़ा था, उस समय में बऊतसे लोग ईश्वरकी बात सुनर्नेके लिये उसपर गिरे
२ पड़ते थे। उसने दो नावें झीलके तीर पर देखीं, मछुवे उन-
३ परसे उतरके जालोंको धोते थे। उन दोनों नावोंमेंसे एक पर जो शिमोनकी थी चढ़ कर तीरसे थोड़े दूर ले जानेको उससे
४ बिनती किई; औ वह नाव पर बैठके लोगोंको उपदेश किया

जब वह बात कह चुका तब शिमोनसे कहा, गहिरेमें ले जाके मछलियां पकड़नेके लिये अपने जाल डाल। शिमोनने कहा, ५ हे गुरू, हमने सारी रात परिश्रम कर्के कुछ नहीं पकड़ा तौ भी आपकी आज्ञासे जाल डालूंगा। उन्होंने यह करके ऐसे ६ बहुत मछलियां घेरीं कि उनका जाल फटने लगा। इसपर ७ उन्होंने अपने साझियोंको जो दूसरी नाव पर थे सहायता कर्नेके लिये सैन कर्के बुलाया। उन्होंने आके दोनों नावें ऐसी भरीं कि वे डूबने पर हुईं। तब शिमोन् पितरने यह देखके ८ यीशुके घुटनों पर गिरके कहा, हे प्रभु, मैं पापी मनुष्य हूं, मुझसे दूर परे रहिये। क्योंकि जाल में बझी हुई मछलियोंके ९ झुण्डसे शिमोन् और उसके सब संगी अचंभित हुए; सिबदीके पुत्र याकूब औ योहन जो शिमोनके साझी थे वे भी इसीरीति अचंभित हुए। यीशुने शिमोनसे कहा, भय न कर, १० आजसे तू मनुष्योंको पकड़ेगा। उन्होंने अपनी २ नावें तीर ११ पर लाके सब कुछ छोड़के उसके पीछे हो लिये।

कोढ़ीको चंगा कर्ना।

जब यीशु किसी नगरमें था, देखो, किसी मनुष्य जो १२ कोढ़से भरा हुआ था उसको देख औंधा मुंह गिर उसकी बिनती कर्के बोला, हे प्रभु, जो आपकी इच्छा हो तो मुझको पवित्र कर सक्ते हैं। उसने हाथ पसारके उसको छूके कहा, तू १३ पवित्र हो जा, ऐसाही मेरी इच्छा है; तुरंत उसका कोढ़ जाता रहा। फिर उसने उसे आज्ञा दिई, किसीको न कहके १४ पुरोहितके निकट जाके अपनेको दिखा, और लोगों को अपने पवित्र होनेके प्रमाण देनेके लिये मूसाकी आज्ञाके समान भेंट दे। तब यीशु की कीर्त्ति ऐसी बहुत फैल गई १५ कि उसकी बात सुननेको औ अपने २ रोगोंसे चंगे होनेको १६ बहुतसे लोग एकठे हुये। फिर उसने उजाड़ स्थानमें जाके प्रार्थना किई।

पक्षाघातीको चंगा कर्ना औ पापोंको क्षमा कर्नी।

एक दिन यीशु उपदेश देता था, तब गालील् औ यहूदा १७

देशके सब नगरोंसे औ यिरूशालम्से कोई कोई फिरूशी लोग औ व्यवस्थापक वहां बैठते थे; उस समय लोगोंको चंगा
१८ कर्नेको प्रभुकी सामर्थ्य प्रगट हुई। और देखो, लोगोंने एक जन पक्षाघातीको खाट पर ले आयके यीशुके सन्मुख रक्खनेकी
१९ इच्छा किई; जब भीड़के मारे वे उसको भीतर न पहुंचाने सकते थे तब वे घरके उपर जाय छातको खोलके उसको
२० खाट सहित बीचमें यीशुके सन्मुख उतारा। यीशुने उनका बिश्वास देखके पक्षाघातीसे कहा, हे मनुष्य, तेरे पाप क्षमा
२१ हुए हैं। अध्यापक औ फिरूशियोंने बिचार करके कहा, यह कौन है जो ईश्वर की निंदा कर्ता है, ईश्वरके बिन कौन्
२२ पापोंकी क्षमा कर सक्ता है? यीशुने उनकी चिंताको बूझके उनसे कहा, तुम सब अपने २ मनमें ऐसा क्यों बिचार कर्ते
२३ हो? तेरे पाप क्षमा हुए अथवा तू उठके चल, इन दोनोंसे कौन बात कहनी सहज है? परंतु जिसते तुम जानो कि
२४ पृथ्वीमें पापके क्षमा कर्नेकी सामर्थ्य मनुष्यके पुत्रकी है (उसने उस पक्षाघातीसे कहा) मैं तुझे कहता हूं, उठ, अपनी खाटको उठाके अपने घर जा। वह तुरंत उठके सबके सन्मुख
२५ अपने खाटको ले ईश्वरका धन्यबाद कर्ते २ अपने घर चला
२६ गया। इससे सब अचंभित होके मनमें भय किया, और ईश्वरका धन्यबाद करके यह कहा, हमने आज अनोखी बातें देखी हैं।

मथिको बुलाना और उसके घरमें भोजन कर्ना।

२७ बाहिर जाते २ यीशुने कर लेनेके स्थानमें लेवि नाम
२८ उगाहनेहारेको बैठते देख उससे कहा, मेरे पीछे आ; वह
२९ तुरंत सबको त्यागके उठकर उसके पीछे चला। लेविने अपने घरमें उसके लिये बड़ा भोज बनाया और उसके संग बहुत कर उगाहनेहारे और और बहुतेरे लोग भोजन कर्नेको बैठे।
३० तब अध्यापक औ फिरूशीयोंने उसके शिष्योंपर कुड़कुड़ाके कहा, कर उगानेहारे औ पापी लोगोंके संग तुम सब
३१ क्यों भोजन पान कर्ते हो? यीशुने उनको उत्तर दिया, निरोग

लोगोंको बैद्य प्रयोजन नहीं, परंतु रोगियोंको प्रयोजन है। मैं धर्मिष्ठ लोगोंको बुलानको नहीं आया हूं परंतु पापियोंको ३२ मन फिरानेके लिये बुलाने आया हूं।

उपवास कर्नेके हेतका निर्णय।

उन्होंने कहा, योहन औ फिरूशियोंके शिष्य बार२ ३३ उपवास औ प्रार्थना कर्ते हैं; परंतु तेरे शिष्य भोजन पान क्यों कर्ते हैं? उसने उससे कहा, बर रहतेही क्या बरातीयोंको ३४ उपवास कराने सक्ते हो? दिन आवेंगे जिन्होंमें बर उनके ३५ समीपसे अलग होगा; उन्हीं दिनोंमें वे उपवास करेंगे। उसने और भी एक दृष्टान्त कहा, पुराने बस्त्र पर कोई नये ३६ बस्त्रकी थेगली नहीं लगाता क्योंकि उस थेगलीसे पुराना कपड़ा फट जाता है, औ नया कपड़ा पुराने बस्त्रमें मिलता ३७ नहीं। और पुराने कुप्पेमें नये दाखका रस कोई नहीं भरता ३८ क्योंकि नये दाखके रसके तेजसे पुराने कुप्पे फट् जाते हैं, इससे दाखका रस बह जाता है, औ कुप्पे नष्ट हो जाते हैं। इसलिये नये कुप्पेमें नये दाखका रस रखना उचित है, इससे ३९ दोनोंकी रक्षा होती है। कोई पुराना दाखका रस पीके तुरंत नये पीने नहीं चाहता है क्योंकि वह कहता है पुराना नयेसे भला है।

६ छठवां अध्याय।

यीशुका बिश्रामवारके बिषयमें फिरूशियोंको निरुत्तर कर्ना।

पर्बके दूसरे दिन पीछे बिश्रामवारको वह अनाजके खेतोंमे १ जाता था और उसके शिष्य अनाज की बालें तोड़ २ हाथोंसे मल २ के खाते थे। कोई कोई फिरूशियोंने उनसे कहा, बिश्रा- २ मवारको जो उचित नहीं है सो क्यों कर्ते हो? यीशुने उत्तर ३ दिया, क्या तुम नहीं पढ़ा है कि दायूद् औ उसके संगियोंने ४ भूखे होके क्या किया? उसने क्योंकर ईश्वरके मंदिरमें जाके जो भेंटकी रोटी पुरोहितोंके बिना और किसीको खानेको योग्य

५ न थी सो उसने लेके आपही खाई औ संगियोंको भी दिई? फिर उसने उनसे कहा, मनुष्य पुत्र बिश्रामवारका भी प्रभु है।

सूखे ऊए हाथके मनुष्यको चंगा कर्ना।

६ वह दूसरे बिश्रामवारको मंदिरमें जाके उपदेश देता था, ७ वहां एक जन था जिसका दहिना हाथ सूख गया था। तब अध्यापक औ फिरूशि लोग उस पर कलंक लगानेके लिये देख ८ रहे थे कि वह बिश्रामवारको चंगा करेगा वा नहीं। यीशुने उनकी चिंता बूझके उस सूखे हाथवालेसे कहा, उठके ९ बीचमें खड़ा होओ। वह उठके खड़ा ऊआ। तब यीशुने उनसे कहा, मैं तुमसे एक बात पूछता हूं, बिश्रामवारको भला कर्ना वा बुरा कर्ना, प्राणकी रक्षा कर्नी वा नाश कर्ना, १० इनमेंसे कौन कर्म कर्ना उचित है? तब चारों ओर सबों पर दृष्टि करके उसी मनुष्यसे कहा, अपना हाथ पसार; उसने ११ ऐसाही किया तब उसका हाथ दूसरा सा चंगा ऊआ। वे सब यह देखके बड़े क्रोधसे भरे होके आपसमें कहने लगे कि यीशुसे हम क्या करेंगे।

बारह शिष्योंको निरूपण कर्ना।

१२ उस समय वह एक पर्बत पर चढ़कर रातभर ईश्वरके १३ प्रार्थना करते रहा। जब दिन ऊआ तब अपने शिष्योंको बुलाया और उनमेंसे बारहको चुनके उनपर प्रेरित नाम रखा अर्थात् शिमोन जिसका नाम उसने पितर भी रखा, औ उसका भाई आंद्रिया, औ याकूब्, औ योहन्, औ फिलिप, औ १४ बर्थलमय, औ मथि, औ थोमा, औ आल्फेयका पुत्र याकूब, औ १५ शिमोन जो ज्वाजल्यमान कहावता है, औ याकूब्का भाई १६ यहूदा, औ ईष्करायूतीय यहूदा जो पकड़वानेहारा ऊआ।

रोगियोंको चंगा कर्ना।

१७ वह उनके संग पर्बत परसे उतर कर चौगान पर खड़ा ऊआ; और उसके शिष्योंकी मंडली औ बऊतसे लोग जो उसकी बार्त्ता सुननेको और अपने रोगोंसे चंगे होनेको १८ समस्त यहूदा देश औ यिरूशालम् औ सोर औ सीदोन्के

समुद्रके तीरसे आया था उसके निकट खड़े ऊये; अपवित्र १८ भूत लगे ऊए भी उसके निकट आके चंगे ऊए। और सबोंने उसको छूनेका यत्न किया क्योंकि उससे शक्ती निकलके सबोंको चंगा करती थी।

शिष्योंको उपदेश कर्ना।

उसने अपने शिष्योंकी ओर दृष्टि करके कहा, हे दरिद्रो, २० तुम धन्य हो क्योंकि ईश्वरके राज्यमें तुम्हारा अधिकार है। हे २१ इस् समयके भूखे लोगो, तुम धन्य हो क्योंकि तुम तृप्त होगे; हे इस समयके रोनेहारो, तुम धन्य हो क्योंकि तुम हंसोगे। जब २२ लोग मनुष्यके पुत्रके हेतसे तुमसे शत्रुता करें औ तुम्हें अलग करें औ निंदा करें, औ तुमको अधर्मियोंकी ऐसे अपनेयोंके निकटसे दूर करें, तब तुम धन्य हो। उसीदिन हर्ष करो औ आनंदसे २३ उछलो; क्योंकि स्वर्गमें तुमको बऊत फल होगा, उनके पूर्व्व पुरुषोंने भी भविष्यद्वक्ताओंसे ऐसाही किया। परंतु हाय२ २४ धनी लोगो, तुम अपने सुख पा चुके हो। हाय२ भरे ऊये २५ लोगो, तुम भूखे होगे; हाय२ अबके हंसी कर्नेहारे लोगो, तुमको शोक औ रोदन कर्ना होगा। हाय२ तुमपर जब २६ सब लोग तुम्हारी बिषयमें भला कहैं; उनके पूर्वपुरुषोंने झुठे भविष्यद्वक्ताओंसे वैसाही किया।

शत्रुओंसे प्रेम कर्नेका उपदेश कर्ना।

हे सुननेहारो, मैं तुमसे कहता हूं, तुम शत्रूओंसे प्रेम करो; २७ जो तुमको घिनावते हैं उनपर भलाई करो। जो तुमको स्राप २८ देवें उनको आशीर्बाद करो; जो तुम्हारा अपमान करें उनके लिये मंगल प्रार्थना करो। जो कोई तेरे एक गाल पर थपेड़ा २९ मारे तो उसकी ओर दूसरा गाल फिरा दे; जो कोई तेरे अंगा छीन लेवे तो उसको ओढ़नेका बस्त्र लेनेको न बरजना। जो कोई तुझसे कुछ मांगे उसको दे, और जो कोई तेरा धन लेवे उससे मांगियो मत। जिस रीति तुम चाहते हो ३० कि लोग तुमसे करें तुम भी उसी रीतिसे उनसे करो। क्योंकि जो तुमसे प्रेम करें, केवल उनसे तुम प्रेम करते हो तो ३१

३२ तुम्हारी क्या बड़ाई है? पापी लोग भी अपने प्रेम कर्ने-
३३ हारोंसे प्रेम कर्ते हैं। और जो तुम उनसे जो तुमसे भलाइ करते हैं भलाई करो तो तुम्हारी क्या बड़ाई है? पापी
३४ लोग भी ऐसा कर्ते हैं। जो तुम उन्हें उधार देओ जिनसे फिर पाने की आशा रखते हो तो तुम्हारी क्या बड़ाई है? क्योंकि पापी लोग भी पापीयोंको उधार देते हैं कि उतना
३५ फिर पावे। तुम अपने बैरियोंसे भी प्रेम करो; पराईयोंसे हित करो; फिर पाने की आशा न कर्के उधार देओ; तो तुम्हारा फल बड़ा होगा, और तुम प्रधानके संतान होगे क्योंकि वह
३६ निकम्मे औ दुष्टोंपर करुणाशील हो रहता है। जैसा तुम्हारा पिता दयालु है वैसाही तुमभी दयालु हो।

दूसरा उपदेश कर्ना।

३७ कुबिचार मत करो और तुम्हारा कुबिचार न किया जायगा; दोषी मत ठहराओ और तुम दोषी न ठहराये जाओगे;
३८ क्षमा करो तो तुम्हारा क्षमा किया जायगा। देओ तो तुमको दिया जायगा; हां मनुष्य भले नापनेसे दबाय२ हिलाय२ मुहा मुह भर कर्के तुम्हारी गोदीमें देवेंगे क्योंकि जिस नापसे तुम नापते हो उसीसे तुम्हारे लिये फिर नापा जायगा।

औरोंको दोष देनेका निषेध कर्ना।

३९ उसने उनसे यह दृष्टान्त कहा, क्या अंधा मनुष्य अंधेको बाट दिखा सक्ता है? क्या वे दोनों गढ़े में नहीं गिरेंगे; शिष्य गुरुसे
४० बड़ा नहीं परंतु जो सिद्ध हुआ होता सो अपने गुरु सा होगा।
४१ तू उस तिनकेको जो तेरे भाईके नेत्रमें है क्यों देखता है, और
४२ उस कड़ीको जो तेरे नैनमें है क्यों नहीं देखता है? क्योंकर तू अपने भाईको कह सक्ता है, हे भाई, यह तिनका जो तेरे नेत्र में है आओ मैं निकाल देऊंगा परंतु तू उस कड़ीको जो तेरे नेत्रमें है नहीं देखता है। हे कपटी, पहिले अपने नेत्रमेंसे
४३ कड़ीको निकाल डाल, तो तू अपने भाईके नेत्रसे तिनकेको निकालना भली भांति देखेगा। भला वृक्ष बुरा फल नहीं
४४ फलता, और बुरा वृक्ष भला फल नहीं फलता, इसलिये

अपने फलोंसे एक एक वृक्ष पहिचाना जाता है। कोई कांटोंके वृक्षसे गुलरको नहीं तोड़ता, न भटकटैयाके वृक्षसे दाखको। वैसाही साधु लोग अपने अंतःकरणके सुभंडारसे उत्तम ४५ वस्तु निकालते हैं; दुष्ट लोग अपने अंतःकरणके कुभंडारसे बुरी वस्तु निकालते हैं; अंतःकरणके भरपुरीसे उसका मुख बोलता है।

गेह बनानेकी दृष्टांतकी बात।

मेरी आज्ञा पालन न कर्के मुझको क्यों प्रभु २ कहते हो? ४६ जो कोइ मेरे निकट आवे और मेरे बचन सुनके मानते हैं ४७ सो किसके तुल्य है यह मैं तुमको बताऊंगा। वह उस ४८ मनुष्यके समान है जो गहरा खोदके पाषाण पर भीत्ति उठाके अपना घर बनाता है; बाढ़के समयमें जब बड़ी धारा उसघर पर लगती है तो उसे नहीं हिला सकती है क्योंकि उसकी भीत्ति पाथर पर है। परंतु जो कोई मेरे बचन सुनके ४९ पालन नहीं कर्ता है, उस मनुष्यके समान है जिसने भूमिपर बिना नेवका घर उठाता है जिस पर बड़ी धारा लगती है और वह तुरंत गिर पड़ता है, औ उसका गिरना भयंकर होता है।

७ सातवां अध्याय।

सेनापतिके दासको बिना देखे चगां कर्ना।

जब यीशु लोगोंको अपने सब बचन सुना चुका तब कफर्ना- १ हूम नगरमें गया, उस समय किसी सैकड़ापतिका एक पियारा दास रोगसे मरनेपर था। सैकड़ापतिने यीशुकी चर्चा २ सुनके यहूदियोंके किसी प्राचीनोंको उसके निकट भेजकर ३ उसकी बिनती किई कि आप आयके उसके सेवकको बचा लीजिये। वे यीशुके निकट आके बक्षत बिनती कर्के बोले यह ४ सैकड़ापति आपके अनग्रहके योग्य है; क्योंकि वह हमोंके ५ देशके लोगोंसे प्रेम कर्ता है, और हमारे लिये एक मंदिर बनाया है। तब यीशु उनके संग गया; जब वह उसके घरके ६ निकट पहुंचा तब सैकड़ापतिने बंधुओंको उसके निकट भेजकर

कहा, हे प्रभु, आप अपने ताईं कष्ट न दीजिये; मैं इस योग्य
७ नहीं हूं कि आप मेरे घरमें आवें, न इस योग्य हूं कि मैं आपके
सन्मुख आऊं; आप केवल बचनही कहिये तब मेरा
८ सेवक चंगा हो जायगा। क्योंकि मैं पराधीन हूं तौभी
मेरी आज्ञामें सिपाही हैं और मैं एकको कहता हूं, तू
जा, तो वह जाता है; दूसरेको आ, तो वह आता है; औ
९ अपने सेवकको यह कर्म कर, तो वह कर्ता है। यीशुने
यह बात सुनके अचरज किया, औ फिरके उस मंडलीसे,
जो उसके पीछे आती थी, कहा, मैं तुमसे कहता हूं, मैंने
१० इस्रायेलके बंशमें ऐसा बिश्वास नहीं पाया है। उन भेजे
हुए लोगोंने घरमें फिर जाके उस दासको जो रोगी था
चंगा पाया।

बिधवाके मरे हुए पुत्रको प्राण देना।

११ दूसरे दिन वह बहुत शिष्यों औ बहुतेरे लोगोंके संग होके
१२ नायिन् नगरमें गया। जब वह नगरके फाटक पर पहुंचा,
तो देखो, लोग किसी मृतकको बाहिर ले जाते थे; मृतक
अपनी माताका एकलौटा पुत्र था, औ माता बिधवा थी,
१३ माताके संग नगरके अनेक लोग थे। प्रभुने माताको देख
१४ दया करके कहा, रोओ मत। और निकट जायके खाटको छूआ,
इससे ढोनेहारे खड़े हुए; उसने कहा, हे तरुण, मैं तुझको
१५ कहता हूं, उठ। मृतक तुरंत उठ बैठके बातें करने लगा;
१६ और यीशुने उसे उसकी माताको सौंप दिया। इससे सब
डर गये औ ईश्वर की स्तुति करके बोले, हमारे बीचमें कोई
बड़ा भविष्यदक्ता उठा है औ ईश्वरने अपने लोगों पर दृष्टि
१७ किई है। तिस पीछे उसके बिषयमें यही चर्चा समस्त यहूदा
औ चारों ओरके देशमें फैल गई।

योहनसे खीष्टका सम्बाद।

१८ योहनके शिष्योंने अपने गुरुको इन सब बातोंका समाचार
१९ जनाया; तब योहनने उन्होंमेंसे दोको बुलाके यीशुके निकट
यह पूछने भेजा, जिसके आनेकी आशामें हम रहते हैं क्या

आप वही हैं अथवा दूसरेकी आशामें हम रहेंगे? इसपर २० इन दोनोंने यीशुके निकट आके कहा, योहन डुबकी दिलाने हारेने हमको आपके निकट यह पूछने भेजा है, जिसके आनेकी आशामें हम रहते हैं क्या आप वही हैं अथवा दूसरेकी आशामें हम रहेंगे? उसी घड़ी यीशु रोगों औ २१ पीड़ाओं औ अपवित्र भूतोंसे बहुतेरोंको चंगा करता था औ बहुतसे अंधोंको नेत्र देता था। सो यीशुने योहनके दो शिष्योंसे २२ कहा, जो कुछ तुमने देखा औ सुना है सो योहनके निकट जाके सुनाओ कि अंधे देखते हैं, लंगड़े चलते हैं, कोढ़ी पवित्र होते हैं, बहिरे सुनते हैं, मृतक जी उठते हैं, औ दरिद्रोंको सुसमाचार सुनाया जाता है; धन्य वह है जो मुझसे ठोकर २३ न खावे।

योहनके विषयमें खीष्टकी साची।

जब योहनके शिष्य चले गये थे तब यीशु योहनके विषयमें २४ मंडलीसे कहने लगा, तुम दिहातमें क्या देखनेको गये? क्या पवनसे हिलते हुये नरकटको? फिर तुम क्या देख- २५ नेको बाहिर गये? क्या मिहीं बस्त्र पहिरे हुये किसी मनुष्यको? देखो, जो भड़कीला बस्त्र पहरते हैं औ उत्तम भोजन कर्ते हैं राज भवनोंमें रहते हैं। फिर तुम क्या २६ देखनेको बाहिर गये? क्या किसी भविष्यद्वक्ताको? हां मैं तुमसे कहता हूं किसीको जो भविष्यद्वक्तासे बड़ा है। योहन २७ वही है जिसके बिषयमें यह लिखा है, देखो, मैं अपने दूतको तेरे आगे भेजता हूं, वह तेरे आगे जाके तेरा पथ बनावेगा; मैं तुमसे कहता हूं, उन भविष्यद्वक्ताओंमेंसे जो स्त्रियोंसे जन्मा २८ है कोई योहन डुबकी दिलानेहारेसे बड़ा नहीं है; तौभी जो ईश्वरके राज्यमें सबसे छोटा है सो योहनसे बड़ा है। सब लोग औ कर उगाहने हारोंने यह बात सुनके योहनकी २९ डुबकी लेके परमेश्वरको निर्दोष माना परंतु फिरूशियों औ ३० व्यवस्थापकोंने उससे डुबकी न लेके परमेश्वरका उपदेश निष्फल किया। फिर प्रभुने कहा, मैं किससे इस समयके ३१

३२ लोगोंको उपमा दूंगा? वे किसके तुल्य हैं? वे उनबालकोंके समान हैं जो हाटमें बैठके अपने संगियोंको पुकारके कहते हैं, हमने तुम्हारे निकट बांसुरी बजाई है, तुमने नाच न किया; हमने तुम्हारे समीप विलाप किया है, तुमने रोदन
३३ न किया। क्योंकि योहन डुबकी दिलानेहारेने आके रोटी न खाई औ दाखका रस न पिया, और तुम कहते हो,
३४ उसके संग भूत है। पीछे मनुष्य पुत्रने आके भोजन पान किया करता है, और तुम कहते हो, देखो, यह मनुष्य खाने औ मद्य पीनेहारा है औ कर उगाहनेहारों औ पापियोंके बंधु
३५ है; परंतु ज्ञानी लोग ज्ञानके व्यवहारको निर्दोष जानते हैं।

मगद्लिनी मरियम् का पाप क्षमा करना।

३६ किसी फिरूशीने यीशुको भोजन करनेका नेवता किया; वह उसके घरमें जाके भोजन करने बैठा, और देखो, उस
३७ नगरकी किसी दुष्ट स्त्रीने सुना कि यीशु फिरूशीके घरमें
३८ जाके भोजन करने बैठा है, इसपर वह सिंहमरमर पाथरकी डिबियामें सुगंधि तेल ले उसके पीछेसे चरणोंके निकट खड़ी हुई औ रोते२ आंसुओंसे उसके चरण धो२ अपने बालसे
३९ पोंछा; औ उसके चरण चुमकर सुगंधि तेल लगाया। जब उस फिरूशीने जिसने यीशुको बुलाया था यह देखा तो अपने मनमें कहने लगा, जो यह भविष्यद्वक्ता होता तो वह जानता कि यह स्त्री जो उसको छूती है सो कौन् है औ किस प्रकार की
४० है क्योंकि वह पापिनी है। तब यिशुने उससे कहा, हे शिमोन्, मैं तुझसे कुछ कहा चाहता हूं; वह बोला, हे गुरू, कहीये। किसी महाजनके दो ऋणी थे; एक पांच सौ सूकोंका
४१ दूसरा पचास सूकोंका। चुकाई देनेका उनको कुछ न था, इस लिये महाजनने दोनोंको क्षमा किया; उन दोनोंमेंसे कौन
४२ उससे प्रेम अधिक करेगा, सो कह? शिमोनने उत्तर दिया, मुझे बोध है, वही जिसका अधिक ऋण महाजनने क्षमा किया
४३ था। यीशुने उससे कहा, तू ने ठीक बिचार किया है। तब उसने उसी स्त्रीकी ओर फिरके शिमोनसे कहा, क्या तू इस

स्त्रीको देखता है? मैं तेरे घरमें आया तूने मेरे पांवोंपर ४४
जल नहीं दिया, परंतु इस स्त्रीने अपने नेत्रोंके जलसे मेरे
चरण धो अपने सिरके बालोंसे पोंछ दिया है। तूने मेरा ४५
चुमा नहीं लिया, परंतु यह स्त्री अपने आनेके समयसे मेरे
चरणोंको चुम रही है। औ तूने मेरे सिरपर कुछ तेल न ४६
डाला, परंतु इसने सुगंधि तेल लेके मेरे चरणोंको मला किया
है। इसलिये मैं तुझसे कहता हूं, उसके पाप जो बड़त हैं ४७
क्षमा किये गये हैं इसीलिये वह बड़त प्रेम कर्ती है; परंतु
जिसके थोड़े क्षमा किये गये हैं सो थोड़ा प्रेम कर्ता है।
फिर उसने उस स्त्रीसे कहा, तेरे पाप क्षमा किये गये हैं। ४८
तब उसके संग जो लोग भोजन कर्ने बैठे थे अपने मनमें ४९
कहने लगे, यही जो पाप क्षमा कर्ता है सो कौन् है? परंतु ५०
उसने उस स्त्रीसे कहा, तेरे बिश्वासने तेरा परित्राण किया
है, कुशलसे जा।

८ आठवां अध्याय।

नगर नगरमें खीष्टका फिर्ना।

यीशु बारह शिष्योंके संग होके नगर २ औ गांव २ में १
फिर्ते २ ईश्वरके राज्यका सुसमाचार प्रचार करता था।
मरियम् जिसको मगद्लिनी कहते हैं जिसमेंसे सात भूत २
निकले थे, औ हेरोद राजाके घरके भंडारी होसिकी स्त्री
योहाना, औ शोशन्ना औ बड़तेरी और स्त्री जो दुष्ट भूतोंसे ३
औ रोगोंसे चंगी ऊई थीं, औ जो अपने धनसे उसकी सेवा
किया कर्ती थीं, वे सब भी उसके संग थीं।

बीज बोनेका दृष्टान्त।

जब अनेक नगरोंसे बड़तेरे लोग आके उसके निकट ४
एकट्ठे थे तब उसने उनसे यही दृष्टांत कहा। किसी किसान ५
बीज बोनेको बाहिर गया, बोनेके समय कुछ २ बाटकी
ओर पड़े जो लोगोंके पांवोंसे रौंदे गये औ आकाशके
पक्षियोंसे चुगे गये; कुछ २ पथरेली भूमि पर पड़े जो ६

७ उगे परंतु गीलाई न होनेसे सूख गये। कुछ२ कांटोंके बीचमें पड़े परंतु कांटोंके बढ़नेसे वे दबाये गये। औ कुछ२
८ उत्तम भूमिपर पड़े जो उगके सौ गुने फले; येही बातें कहके उसने ऊंचे शब्दसे कहा, जिसको सुननेके कान होंय सो सुने।

उसका अर्थ।

९ उसके शिष्योंने पूछा, इस दृष्टांतका अर्थ क्या है? उसने कहा,
१० ईश्वरके राजके भेद जानना तुम्हींको दिये गये हैं; परंतु और लोग देखते हुये न देखते हैं औ सुनते हुये न बुझते हैं, इसलिये
११ उनको दृष्टांतोंमें येही सब बातें कहीं जातीं हैं। इस दृष्टांतका
१२ अर्थ सुनो; बीज ईश्वरकी बात है; जो बाटकी ओर हैं वे हैं जो सुनते हैं, परंतु शैतान आयके उनके हृदयसे बात छीन
१३ लेता है, न होवे कि वे बिश्वास करके त्राण पावें। जो पथरैली भूमिपर हैं, वे हैं जो बात सुनके आनंदसे ग्रहण करते हैं परंतु जड़ न रखनेसे कुछ काल तक बिश्वास करके परीक्षाके समयमें
१४ हट जाते हैं। जो कांटोंके बीचमें हैं, वे हैं जो सुनके चले जाते हैं औ इस लोकके चिंताओंसे औ धनके लाभसे औ
१५ सुखोंसे दबाये होके पक्के फल नहीं लाते हैं। और जो उत्तम भूमिपर हैं, वे हैं जो बात सुनके सरल औ अच्छे मनमें रखते हैं औ स्थीर होके फल लाते हैं।

दीपकका दृष्टांत।

१६ कोई मनुष्य दीपक बालके पात्र वा खाटके नीचे नहीं रक्खता परंतु दीअट पर रक्खता है कि वे जो भीतर आते
१७ हैं उंजियालेको देखें। कुछ छिपा नहीं है जो प्रकाश न
१८ होगा, और न गुप्त है जो जाना नहीं जायगा। सावधान होओ कि किस रीतिसे तुम सुनते हो क्योंकि जिसका कुछ है उसको और दिया जायगा, परंतु जिसका कुछ नहीं है उससे जो कुछ उसका दिख पड़ता है लिया जायगा।

कुटुम्बके चीन्हनेका लक्षण।

यीशुकी माता और भाई आये परंतु भीड़के मारे उसके १९ निकट पहुंचने न सकते थे। तब किसीने उससे कहा, तेरी २० माता औ तेरे भाई बाहिर खड़े होके तुझे देखने चाहते हैं, उसने उत्तर दिया, जो लोग ईश्वर की बात सुनकर पालन २१ कर्ते हैं वेही मेरी माता औ मेरे भाई हैं।

आंधी थामनी।

एक दिन यीशुने अपने शिष्योंके संग नावपर चढ़के उनसे २२ कहा, आओ, झीलके उसपार हम चलें; उन्होंने खोल दिई। जाते जाते यीशु सो गया; इसमें झीलपर ऐसी बड़ी आंधी २३ उठी कि नाव जलसे भर गई औ वे सब बड़ी बिपतिमें पड़ गये। तब वे यीशुके समीप आये औ उसको जगायके २४ कहा, हे गुरू,२ हमारे प्राण जाते हैं। उसने उठकर बतास औ जलकी तरंगोंको डांटा; वे थम गये, औ चैन हुआ। तब उसने उनसे कहा, तुम्हारा बिश्वास कहां है? वे भय कर २५ अचंभित हो आपसमें बोले, यह कैसा मनुष्य है? बतास औ जलको आज्ञा देता है और वे उसकी आज्ञा मानते हैं।

भूतोंको निकालना।

तब वे गिदरियोंके देशमें जो गालील् देशके उस पार है २६ पहुंचे; तटपर उतर्नेके समय उस नगरका कोई पुरुष जिसमें २७ बहुत दिनोंसे भूत थे औ बस्त्र नहीं पहर्ता औ घरमें नहीं रहता परंतु गोरस्थानमें रहता था, उसे मिला। वह यीशुको देखतेही चिचियाके उसके सन्मुख गिरके २८ ऊंचे शब्दसे कहने लगा, हे अति महान ईश्वरके पुत्त्र यीशु, मुझको आपसे क्या काम है, मैं बिनती कर्ता हूं, आप मुझको दुःख न दीजिये। क्योंकि यीशुने उस अपबित्र भूतको मनुष्यसे २९ निकलनेकी आज्ञा दिई थी; बारंबार वही मनुष्य भूतसे पकड़ा गया था औ लोगोंसे सांकलों औ बेड़ियोंसे बांधा गया था परंतु वह सब बंधनोंको तोड़के भूतसे बनोंमें दौड़ाया गया था। यीशुने उससे पूछा, तेरा नाम क्या है? उसने ३०

३१ कहा, मेरा नाम कटक है क्योंकि बहुत भूत उसमें पैठ गये थे। फिर उन भूतोंने बिनती करके कहा, हमको गहिरायेमें जानेकी
३२ आज्ञा न दीजिये। उसी समय पर्वत पर सूअरोंका बड़ा झुंड चर्ता था, भूतोंने बिनती करके कहा, इन्हीं सूअरोंके झुंडमें
३३ जाने हमें दीजिये; उसने उनको जाने दिया। तब भूतोंने उस मनुष्यको तजके सूअरोंके झुंडमें प्रवेश किया औ सूअरोंने बड़े बेगसे दौड़कर कराड़े परसे कूदके झीलमें डूब गये।
३४ सूअरोंके चर्वाहोंने, यह देखके भागकर नगर औ ग्रामोंमें जा
३५ सब बात सुना दिई। जो हुआ यह देखनेके लिये लोग बाहिर निकलके यीशुके निकट आये, और उस मनुष्यको भूतोंसे छूटे, बस्त्र पहिरे, औ सज्ञान हुए, यीशुके चरणोंके
३६ समीप बैठे देख भयमान हुए। जिन्होंने देखा था उन्होंने औरोंको जताया किस रीतिसे भूत लगा हुए मनुष्य चंगा हो
३७ गया था। उसी गिदरी देशकी चारों ओरके रहने हारोंने अतिही भयसे यीशुसे बिनती करके कहा, आप हमारे यहांसे
३८ चले जाईये; वह नावपर चढ़ वहांसे फिर गया। तब भूतोंसे छूटे हुए मनुष्यने बिनती किई कि आप अपने संग मुझे रहने
३९ दीजिये परंतु यीशुने यह कहके उसको बिदा किई, अपने घर को फिर जाके जता कि ईश्वरने तेरे लिये क्या किया है; वह गया और जो कुछ यीशुने उसे किया था सो नगरमें सबोंको प्रचारा।

खीष्टको ग्रहण कर्ना।

४० जब यीशु फिर आया तब लोगोंने उसे ग्रहण किया क्योंकि वे सब उसकी बाट जोहते थे।

प्रदररोगिणी स्त्रीको चंगा कर्ना।

४१ देखो, यायीर नाम मंदिरके अध्यक्षने आ यीशुके चरणोंपर गिर कर अपने घरमें आनेको उससे बिनती किई क्योंकि
४२ उसकी बारह बर्षकी एकलौटी पुत्री मरनेपर हुई थी। उसके
४३ जातेमें लोग उसपर गिरे पड़ते थे। उन्होंमें कोई स्त्रीने, जिसका बारह बर्षसे लोहू जारी था औ जिसने अपना सब धन बैद्योंको देके चंगी न हुई थी, यीशुके पीछेसे आ उसके

झब्बेको छुआ; और तुरंत उसका लोहू जारी थम गया। यीशुने ४४ कहा, किसने मुझको छुआ है? सब अस्वीकार कर्तेही पितर ४५ औ उसके संगियोंने कहा, हे गुरू, लोग धक्कम धक्का कर्के आप पर गिरे पड़ते हैं, तौभी आप कहते हैं, किसने मुझे छुआ है? यीशुने कहा, मुझको किसीने छुआ है क्योंकि मैंने निश्चय ४६ किया है कि मुझमेंसे शक्ति निकली है। जब स्त्रीने देखा ४७ कि छिप नहीं सकती थी तो वह कांपती ऊई उसके सन्मुख आ पड़ी, और किस लिये उसको छुआ, औ छू कर्के क्योंकर चंगी ऊई थी, यह सब लोगोंके सन्मुख कहा। उसने उससे ४८ कहा, हे पुत्री, स्थिर हो, तेरे बिश्वासने तुझे चंगा किया है; कुशलसे जा।

अध्यक्षकी मृत कन्याको जिलाना।

जब यीशु यह कहताही था तब अध्यक्षके घरसे किसी ४९ मनुष्यने आ उससे कहा, तेरी पुत्री मर गई है, गुरूको कष्ट न दे। यीशुने यह सुनके उससे कहा, भय न कर, केवल बिश्वास ५० कर तो वह बचेगी। घरको पऊंचने पर उसने पितर औ ५१ याकुब् औ योहन् औ कन्याके माता पिताके बिना और किसीको भीतर आने नहीं दिया। और उनसबोंसे जो रोते औ ५२ बिलाप कर्ते थे कहा, मत रोओ, कन्या मरी नहीं है वह निद्रामें है। उसके मर्नेका निश्चय जानके वे ठट्ठा करके ५३ हंसने लगे। उसने उन सबोंको बाहिर करके कन्याका ५४ हाथ पकड़के पुकारकर कहा, हे कन्या, उठ। तब उसका ५५ प्राण फिर आया औ वह तुरंत उठ खड़ी ऊई। उसने उसको कुछ खानेकी आज्ञा दिई। उसके माता पिता ५६ अचंभित ऊए; यीशुने कहा, यह जो किया गया है सो किसीको न कहियो।

९ नववां अध्याय।

शिष्योंको भेजना।

उसने अपने बारह शिष्योंको बुलाके सारे भूतोंको निकालनेके १

२ पराक्रम औ रोगोंको चंगे कर्नेकी शक्ति उन्हें दिया। और ईश्वर के राज्यका सुसमाचार प्रचार कर्ने औ रोगियोंको चंगा कर्नेके
३ लिये उनको यह कहके भेजा; यात्राके लिये कुछ मत लेओ
४ न लाठीयां न झोली न रोटी न रुपैयां न दो अंगाओंको। जिस घरमें जाओ, नगरको त्यागनेलग उसी घरमें रहो।
५ जो कोई तुम्हारी पहुनई न करे तो उस नगर से निकलकर
६ उनके बिरुद्ध साक्षीके लिये अपने चरणोंकी धूल झाड़ दो। सो वे जाकर सर्वत्र सुसमाचार प्रचार कर्ते २ पीड़ितोंको चंगा कर्ते २ ग्राम २ में फिर्ने लगे।

खीष्टके देखनेको हेरोद्की इच्छा कर्ना।

७ उस समय हेरोद् राजा यीशुके सब कर्मोंका समाचार
८ पाय बड़ा व्याकुल हुआ। क्योंकि किसी २ ने कहा, योहन् मृतकोंमेंसे उठा है, औ किसी २ ने कहा एलियने दिखाई दिई है; औरोंने कहा, पूर्ब समयका कोई भविष्यद्वक्ता जी उठा
९ है। हेरोदने कहा, मैंने योहनका सिर कटवाया परंतु यह कौन है जिसके बिषयमें मैंने ऐसी बातें सुनता हूं? और वह उसे देखा चाहता था।

पांच रोटियों औ दो मछलियोंसे पांच सहस्र पुरुषोंको तृप्त कर्ना।

१० प्रेरितोंने फिर आके जो २ कर्म किये थे सो २ यीशुसे सुनाये तब वह बैतसैदा नगरके किसी उजाड़ स्थानमें उनको चुपकेसे
११ ले गया। लोग यह जानके उसके पीछे चले आये औ उसने उनको ग्रहण कर्के ईश्वरके राज्यके बिषयमें बात कही
१२ औ जिनको रोग था उनको चंगा किया। जब दिन ढलने लगा तब बारह शिष्योंने आके कहा, हम यहां उजाड़ स्थानमें हैं इसलिये नगर २ में औ ग्राम २ में रातको रहनेको और खाना मोल लेनेको इन लोगोंको बिदा कीजिये।
१३ उसने कहा, तुम्ही उन्हें खानेको दो; वे बोले, हमारे निकट पांच रोटियां औ दो मछलियोंसे अधिक कुछ नहीं है, परंतु ये पांच एक सहस्र पुरुष हैं, इसलिये और स्थानमें जानेके औ उन सबोंके लिये खाना मोल लेनेके बिना उनको

कुछ देना नहीं होगा। उसने अपने शिष्योंसे कहा, पचास२ १४ जनोंकी पांती करके उन सबोंको बैठाओ। उन्होंने वैसाही करके १५ सबोंको बैठाया; उसने उन पांच रोटियां औ दो मछलियोंको १६ लेके आकाशकी ओर दृष्टि करके ईश्वरका गुणानुबाद किया, औ टूक२ कर लोगोंको परोसनेके लिये शिष्योंको दिई। सब १७ भोजन कर तृप्त ऊए; औ उन चूरचारसे जो बच रहे थे बारह टोकरियां भरी उठाईं।

खीष्टके विषयमें कथाका निर्णय।

एक दिन उसने शिष्योंके संग एकान्तमें होके प्रार्थना करता १८ था तब उसने उनसे पूछा, लोग मुझको किसको कहते हैं? उन्होंने कहा, कि कोई कोई कहते हैं कि आप योहन डुबकी दिलाने- १९ हारा हैं, कोई कोई कहते हैं कि एलिय हैं, औ और कोई २० कहते हैं कि पूर्ब कालका कोई भविष्यद्वक्ता गोरमेंसे निकला है। उसने कहा, तुम आपही मुझे किसको कहते हो? पितर ने कहा, आप ईश्वरका खीष्ट हैं। तब उसने दृढ़ आज्ञा करके २१ उनसे कहा, यह बात किसूसे न कहियो। उसने और भी २२ कहा, मनुष्य पुत्रको बऊत कष्ट भोगना होगा, प्राचीन लोग औ प्रधान पुरोहितों औ अध्यापकोंके हाथोंसे अपमान होके मरना होगा, औ तीसरे दिन गोरमेंसे जी उठना होगा।

खीष्टका उपदेश।

उसने सबोंसे कहा, जो कोई मेरे पीछे आया चाहे तो २३ वह अपनेको दमन करे, औ प्रति दिन अपना क्रुश उठा मेरे पीछे आवे। क्योंकि जो कोई अपने प्राण बचाया चाहता है २४ सो उसे खोवेगा, जो कोई मेरे लिये अपने प्राणको खोवेगा सो उसे बचावेगा। जो कोई सारे संसार पाके अपने प्राण २५ खोवे औ बिनष्ट होवे तो उसे क्या लाभ है? जो कोई मुझसे २६ वा मेरे बातसे लज्जावेगा, तो मनुष्य पुत्र जब अपने पिताके औ पवित्र दूतोंके तेजके संग आवेगा उसी समय वह उससे लज्जावेगा। मैं तुमसे सच कहता हूं, कोई कोई यहां खड़े २७

होते २ जो मृत्युका स्वाद न चीखेंगे जबलों ईश्वरका राज्य न देखें

खीष्टका दूसरी मूर्त्ति धारण कर्ना।

२८ इन बातोंके पीछे दिन आठ एक, वह पितर औ योहन् औ याकूब्को संग ले प्रार्थना करनेके लिये किसी पर्वत पर चढ़ा।
२९ प्रार्थना कर्नेमें उसके मुखका डौल औरही हो गया औ
३० उसका वस्त्र स्वेत बर्ण होके चमकने लगा। और देखो,
३१ दो मनुष्य अर्थात् मुसा औ एलिय तेजमें दिखाई देके उसके मृत्युके बिषयमें जो यिरूशालम नगरमें होने पर था
३२ बात करते थे। तब पितर औ उसके संगी निद्रामें थे परंतु जागने पर उन्होंने उसका तेज औ उसके संग उन् दो
३३ मनुष्योंको खड़े होते देखा। दोनोंके जानेके समय पितरने यीशुसे कहा, हे गुरू, हमारा यहां रहना भला है; इसी लिये हम तीन रहनेके स्थान बनावें, एक आपके लिये, एक मूसाके लिये, एक एलियके लिये; उसने बिचार न कर्के यह
३४ बात कही। जब पितर यह कहताही था तो एक मेघने आ उनपर छाया किई, उसमें उनके प्रवेश कर्नेसे वे डरगए।
३५ उस मेघमेंसे यही आकाशबाणी ऊई, यही मेरा प्रिय पुत्र है
३६ उसका बचन सुनो। यह शब्द होनेके पीछे उन्होंने यीशुको एकला देखा और उन दिनोंमें इस दर्शनकी बात किसीको न बोलके अपने २ मनमें रक्खी।

भूत लगे बालकका चंगा कर्ना।

३७ दूसरे दिन उस पर्वतसे उतरके उससे भेंट कर्नेके लिये
३८ बऊतसे लोग आये। और देखो, उनके बीचमेंसे किसी जनने पुकारके कहा, हे गुरू, मैं बिनती कर्ता हूं, मेरे पुत्र पर छपा
३९ दृष्टि कीजिये, वह मेरा एकलौटा है। देख, एक भूत उसको पकड़ता है औ वह एकाएकी चिचियाता है, भूत भी उसे मरोड़के उसके मुहसे फेन बहाता है, इस रीतिसे उसे कुचलके नहीं
४० छोड़ता है। उसमेंसे भूतको निकालनेके लिये मैं आपके शिष्यों
४१ को बिनती किया, परंतु वे निकालने नहीं सकते थे। यीशुने

कहा, अरे अविश्वासी हठीले वंश, मैं कब लग तुम्हारे संग रहूंगा? औ तुम्हारा व्यवहार सहूंगा? अपने पुत्रको यहां ला। आनेके समय भूतने बालकको भूमिपर पटकके मरोड़ा; ४२ यीशुने उस अपवित्र भूतको डांटकर बालकको चंगा कर उसके पिताको उसे सौंप दिया। ईश्वरकी यह महा शक्ति देखके ४३ सबही अचम्भित हुए; परंतु जब सब लोग उन सब कर्मोंपर जो यीशुने किया था अचम्भित होते थे उसने शिष्योंसे कहा, ये बातें अपने कानोंमें पड़ने दो; मनुष्य पुत्र मनुष्योंके हाथोंमें ४४ सौंपा जायगा। उन्होंने यह बात नहीं बूझी, औ वह उनसे ४५ ऐसी गुप्त रही कि समझ न सकी; वे भी उसके विषयमें उसे पूछनेसे डरते थे।

नम्र होनेका उपदेश।

उनके बीचमें कौन बड़ा होगा, इसी बात पर उन्होंने आपस ४६ में बादानुबाद किया। यीशुने उनके मनकी बात बूझ किसी ४७ बालकको लेके अपने निकट रखके उनसे कहा, जो कोई मेरे ४८ नामके लिये इस बालकको ग्रहण करे, वह मुझे ग्रहण कर्ता है; जो कोई मुझे ग्रहण करे, उसको जिसने मुझे भेजा है ग्रहण कर्ता है; तुम्हारे बीचमें जो कोई सबसे छोटा है वही बड़ा होगा।

सबोंपर अनुग्रह कर्नेकी आवश्यकता।

तब योहनने कहा, हे गुरु, हमने किसी मनुष्यको आपके ४९ नाम लेके भूतोंको निकालते देखके उसे बरजा क्योंकि वह हमारे संग नहीं आता। यीशुने कहा, उसको बरजो मत ५० क्योंकि जो कोई हमारे बिरोध नहीं है सो हमारी ओरका है।

शोमिरोणियोंकी खोटकी पहुनई न कर्नी।

जब उसके उपर उठाये जानेका दिन निकट आया तब ५१ उसने यिरूशालमको जानेको मन स्थिर कर्के आगे अपने दूतोंको भेजा। उन्होंने जाके उसके प्रयोजनीय द्रव्य बनाने ५२ के लिये शोमिरोणियोंके किसी ग्राममें प्रवेश किया। परंतु लोगोंने उसोकी पहुनई न किई क्योंकि वह यिरूशालम

५३ नगरको जाता है। उसके शिष्य याकूब् औ योहन् यह देखके बोले, हे प्रभु, आपकी इच्छा होय तो जैसा एलियने किया तैसा हमको करने दीजिये कि आकाशसे आग उतार
५४ के उन्हें भस्म करें? परंतु उसने फिरके उनको डांटके कहा, तुम्हारे मनका भाव किस प्रकारका है सो तुम नहीं जानते
५५ हो। मनुष्यके पुत्र मनुष्योंके प्राण नष्ट कर्नें नहीं आया है, परंतु
५६ रक्षा कर्नें आया है। तब वे दूसरे ग्रामको चले गये।

चंचल लोगोंको छोड़का उपदेश कर्ना।

५७ तिस पीछे जब वे चले जाते थे बाटमें किसीने कहा, हे
५८ प्रभु, आप जहां कहीं जायं मैं आपके पीछे चलूंगा। यीशुने उससे कहा, लोमड़ियोंके लिये मांदें औ आकाशके पक्षियोंके लिये खोते हैं, परंतु मनुष्यके पुत्रको सिर रखनेका स्थान नहीं
५९ है। फिर उसने दूसरे जनसे कहा, तू मेरे पीछे आ, उसने कहा, हे प्रभु, मुझे अपने पिताको गोरमें गाड़नेको पहिले
६० जाने दीजिये। यीशुने कहा, मृतकोंको उन्होंके मृतकोंको गाड़ने दे, परंतु तू जाके ईश्वरके राजकी बात प्रचार कर।
६१ फिर एक और जनने कहा, हे प्रभु, मैं भी आपके पीछे चलूंगा परंतु पहिले मुझको जाने दीजिये कि मैं अपने घरके
६२ लोगोंसे बिदा होओं। यीशुने उससे कहा, जो कोई अपना हाथ हल पर रखके पीछे देखता है वह ईश्वरके राजका योग्य नहीं है।

१० दसवां अध्याय।

यीशुका सत्तर शिष्योंको ठहराके भेजना।

१ तिस पीछे प्रभुने और सत्तर शिष्योंको ठहराया औ उन्हें दो दो करके जिस २ नगर औ जिस २ स्थानमें वह आपही
२ जानेपर था अपने आगे उन्हें भेजा। औ उन्हें कहा, खेतका फल बहुत है, परंतु काटनेहारे थोड़े हैं; इस लिये तुम खेतके प्रभुसे प्रार्थना करो कि वह अपने खेतमें काटनेहारों
३ को लगावे। जाओ, देखो, मैं तुम्हें भेड़ोंके तुल्य भेड़ियोंके

बीचमें भेजता हूं; अपने संग न थैली न झोली न जूती ले जाओ औ पथमें किसीको प्रणाम न करियो। जिस२ घरमें ४ जाओगे पहिले उसी२ घरपर कल्याण कहो। जो उस ५ घरका कोई कल्याणका योग्य होवे तो तुम्हारा कल्याण उसपर ठहरेगा नहीं तो तुम्हींपर फिर आवेगा। जिस घरमें कोई ६ तुम्हें ग्रहण करके कुछ खाने पीने देवे उसी घरमें खा पीके रहियो क्योंकि बनिहार अपनी बनीके योग्य हैं; घर२ में ७ मत फिरो। जिस नगरके लोग तुम्हारी पऊनई करें तो जो ८ कुछ तुम्हारे आगे रखा जाय सो खाओ। औ उसके रोगियोंको ९ चंगा करके निवासियोंसे कहो, ईश्वरका राज तुम्हारे निकट आया है। परंतु जिस नगरके लोग तुम्हारी पऊनई न करें १० तो उसके मारगोंमें जाके कहो, तुम्हारे नगरकी धूल जो हम पर लगी है सो हम तुम्हारे सन्मुख झाड़ देते हैं; तौभी ११ ईश्वरका राज तुम्हारे निकट आया है यही निश्चय जानियो। मैं तुमसे कहता हूं, बिचारके दिनमें उस नगरके दंडसे १२ सिदोम् नगरका दंड सहज होगा।

कोरासीन आदि नगरोंके संतापका भविष्यद्वाक्य।

हाय२ कोरासीन नगर, हाय२ बैतसैदा नगर, जो सोर १३ औ सिदोन नगरोंमें वे आश्चर्य कर्म जो तुम्हींके बीचमें किये गये थे, किये जाते, तो वे बऊत दिनोंसे टाट पहरके औ राखमें बैठके पछिताते। इस लिये बिचारके दिनमें तुम्हारे १४ दंडसे सोर औ सिदोन्के बसनेहारोंका दंड सहज होगा। हे कफर्नाहूम् नगर, तू जो स्वर्ग तक ऊंचा किया गया है १५ नरक तक नीचा किया जायगा। जो कोई तुम्हारी बात १६ सुनता है सो मेरीही बात सुनता है, और जो कोई तुम्हारा अपमान करता सो मेराही अपमान कर्ता है, औ जो कोई मेरा अपमान कर्ता सो उसीका अपमान करता है जिसने मुझे भेजा है।

सत्तर शिष्योंके संग बातचीत कर्नी।

वे सत्तर शिष्य आनंदसे फिर आके कहने लगे, हे प्रभु, १७

१८ आपके नामसे भूत हमारे बशमें होते हैं। उसने उनसे कहा,
१९ मैंने आकाशसे बिजली की नाईं शैतान्को गिर्ते देखा। देखो,
मैंने तुमको सांपों औ बिच्छूओं पर, औ शत्रुके सब शक्ती पर,
रौंधनेका अधिकार देता हूं, औ किसी बस्तुसे तुम्हारी हानी
२० नहीं होगी। इसमें आनंद मत करो कि भूत तुम्हारे बशमें
ऊये हैं परंतु इसमें आनंद करो कि स्वर्गमें तुम्हारा नाम लिखे
२१ गये हैं। उस समय यीशुन आनंदित होके कहा, हे पिता,
स्वर्ग औ पृथ्वीके प्रभु, मैं तेरी स्तुति करता हूं क्योंकि तुने
ज्ञानवानों औ बुद्धिमानेंसे इन बातोंको छिपायके उन्हें बाल-
कोंको प्रकाश किई हैं, हां हे पिता, ऐसाही ऊआ है क्योंकि
२२ यही तेरी दृष्टिमें उत्तम है। सब कुछ मेरे पिताने मुझे सोंपा
है; पिताके बिना पुत्रको कोई नहीं जानता, औ पुत्रके बिना,
औ जिसको पुत्र उसे प्रकाश कर्ता है उसके बिना, पिताको
कोई नहीं जानता।

शिष्योंको आशीर्बाद कर्ना।

२३ तब उसने अपने शिष्योंकी ओर फिरके एकान्तमें कहा,
२४ धन्य वे नेत्र हैं जो इन बस्तुओंको देखते हैं जो तुम देखते हो। मैं
तुमसे कहता हूं, जो कुछ तुम देखते हो सो अनेक भविष्यद्वक्ता-
ओं औ राजाओंने देखनेकी इच्छा कर्के देखने नहीं पाये; औ
जो कुछ तुम सुनते हो, सुनने की इच्छा कर्के सुनने नहीं पाये।

व्यवस्थापकको खीष्टको उपदेश कर्ना।

२५ देखो, कोई व्यवस्थापकने उठकर उसकी परीक्षा करनेके
लिये उससे पूछा, हे उपदेशक, मैं क्या करऊं कि मैं अनंत
२६ जीवनका अधिकारी होओं? यीशुने उत्तर दिया, व्यवस्थामें
२७ क्या लिखा है? तूने क्या पढ़ा है? वह बोला, यह लिखा
है, तू अपने सारे अंतःकरणसे औ अपने सारे प्राणसे औ
अपनी सारी शक्तिसे औ अपने सारे मनसे अपने प्रभु
परमेश्वरको, औ अपने पड़ोसीको अपने समान, प्रेम कर।
२८ यीशुने कहा, तूने ठीक उत्तर दिया है, यह कर तो तू
२९ बचेगा। परंतु वह अपने ताईं निर्दोष जनानेकी इच्छा

करके यीशुसे पूछा, मेरा पड़ोसी कौन् है? यीशुने कहा, कोई ३०
जन यिरूशालम् नगरसे यिरीहो नगरको जाके बटपारोंके
हाथोंमें पड़ा; वे उसके बस्त्र लेके औ घायल कर्के उसे
अधमरा छोड़के चले गये। संयोगसे कोई याजक उसी ३१
बाटसे आके उसे देखके सहायता न करके चला गया। इसी ३२
रीति किसी लेवीय उसी स्थानमें पहुंचा, वह भी उसे देखके
सहायता न करके चला गया। परंतु किसी शोमिरोणीयने ३३
जाते२ उसी स्थानमें आके उसे देख दया किई। उसके ३४
निकट जाके उसके घावों पर तेल औ दाखका रस ढालके पट्टी
बांध अपने पशु पर उसको बैठा सरायमें लाके उसकी सेवा
किई। बिहानको अपने जानेके समय दो सूकाओंको निकालके ३५
भठियारेको देके कहा, इसकी सेवा करियो, इनसे जो
अधिक उठान होगा सो मैं फिर आके तुझको दूंगा। इन ३६
तीन जनोंमेंसे कौन उसीका पड़ोसी था जो बटपारोंके हाथोंमें
पड़ा? तुझे क्या बोध है? व्यवस्थापकने कहा, जिसने उस
पर दया किई, वही। तब यीशुने कहा, तू भी जाके ३७
ऐसाही कर।

मर्था औ मरियमके घरमें खीष्टकी पहुनई।

वे जाते२ किसी ग्राममें आये औ मर्था नाम किसी स्त्रीने अपने ३८
घरमें उसकी पहुनई किई। उसकी बहिन मरियम यीशुके ३९
चरणोंके समीप बैठ उसके उपदेश की बात सुनती थी। परंतु ४०
मर्थाने नाना प्रकार की सेवा करनेसे घबराके उसके समीप
आके कहा, हे प्रभु, मेरी बहिनने मुझे सेवा करनेमें अकेली
छोड़ दिई है, क्या आप इसकी चिंता नहीं करते हैं? मेरा
उपकार कर्नेको उसको आज्ञा दीजिये। यीशुने उत्तर दिया, ४१
हे मर्था२ तू बहुतसी बस्तुओं की चिंतामें घबराई है; एक
चाहिये। मरियमने उस उत्तम भाग की रीझ किई है ४२
जो उससे न ले लिया जायगा।

११ एग्यारहवां अध्याय।

प्रार्थना करनेके लिये खीष्टका उपदेश।

१ वह किसी स्थानमें प्रार्थना कर्त्ता था; जब कर चुका तब उसके किसी शिष्यने उससे कहा, हे प्रभु, जैसे योहनने अपने शिष्योंको प्रार्थना करना सिखाया तैसा आप हमको
२ सिखा दीजिये। वह बोला, प्रार्थना करनेमें तुम इसी रीति कहो, हे हमारे स्वर्ग निवासी पिता, तेरा नाम पूज्य होवे; तेरा राज होवे; स्वर्गमें जैसी, वैसी पृथ्वीमें तेरी इच्छा किई
३ जावे। दिन दिन हमारे प्रयोजनीय भोजन हमको दे। हम
४ जैसे अपने सब ऋणियोंको क्षमा कर्ते, उसी रीति हमारे पाप क्षमा कर; औ हमको परीक्षामें न डाल, परंतु दुष्टसे रक्षा
५ कर। उसने और भी कहा, तुम्होंके बीचमें कौन है जिसका
६ कोई मित्र है? जो तू आधी रातको उसके निकट जाके कहे, हे मित्र, मेरा कोई बंधु यात्रासे मेरे यहां आया है, उसको परोसनेके लिये मेरे निकट कुछ है नहीं, मुझको तीन रोटी
७ उधार दीजिये, तो क्या वह भीतरसे उत्तर देके नहीं कहेगा मुझको दुःख न दे, अब द्वार बंद है औ बालक मेरे संग सोते
८ हैं, तुझे रोटी देनेको मैं नहीं उठ सक्ता हूं; मैं तुमको कहता हूं, वह जो मित्रतासे उठके उसको कुछ न दे, तौ भी बार२
९ प्रार्थना कर्नेसे जितने उसको प्रयोजन है सोई देगा। सो मैं तुम्हें कहता हूं, मांगो तो तुमको दिया जायगा; ढूंढ़ो तो तुम पाओगे; खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जायगा।
१० जो जन मांगता है उसे मिलता है, जो ढूंढता है सोई पाता
११ है, जो खटखटाता है उसके लिये खोला जाता है। जो तुम्होंमें किसी पितासे पुत्र रोटी मांगे तो क्या वह उसको
१२ पत्थर देगा? अथवा मछली मांगे तो सर्प देगा? अथवा
१३ अंडा मांगे तो बिछू देगा? जो तुम जो बूरे हो अपने बालकोंको उत्तम वस्तु देने जानते हो तो कितना अधिक स्वर्गी पिता उन्होंको पवित्र आत्मा देगा जो उससे मांगते हैं।

गूंगे भूतका छुड़ाना।

यीशुने किसी मनुष्यको एक गूंगे भूतसे छुड़ाया, जब भूत १४ निकला तब गूंगा बोलने लगा; इससे लोग अचंभित ऊए। उनमेंसे कोई २ बोले, यह जन बालसिबूबसे अर्थात् भूता- १५ धिपति की सहायतासे भूतोंको निकालता है। उसकी परीक्षा १६ के लिये किसी २ ने उससे आकाशका कोई चिन्ह मांग लिया। यीशुने उनके मनकी बात जानके कहा, किसी राजाके लोग १७ जो आपसमें बिरोधी होवें तो वह राज्य उच्छिन्न होवेगा; और किसी घरके लोग जो अपनेयोंमें बिरोधी होवें तो वे भी नष्ट होवेंगे; तैसेही शैतान् जो अपनेमें बिरोधी होवें तो उसका राज्य किस रीति रहेगा? तुम लोग यह कहते हो १८ कि वह बालसिबूबकी सहायतासे भूतोंको निकालता है। मैं जो बालसिबूब की सहायतासे भूतोंको निकालता हूं तो १९ तुम्हारे संतान किसकी सहायतासे निकालते हैं? इसमें वे तुम्हारे न्यायी होंगे। परंतु मैं जो ईश्वरके पराक्रमसे भूतोंको २० निकालता हूं तो तुम्हारे निकट ईश्वरका राज्य अवश्य पऊंचा है। जब लग बलवान मनुष्य शस्त्र बांधके अपने घरकी २१ चोकसी कर्त्ता है तब लग उसकी सामग्री बची रहती है। परंतु २२ जो कोई जो उससे प्रबल है आके उसको जीते तो जिस शस्त्र पर उसका भरोसा था सो छीन कर उसका धन लुटता है। जो मेरे संग नहीं है सो मेरे बिरोधमें है औ जो मेरे संग २३ एकठा नहीं करता है सो बिथराता है।

अपबित्र भूतका दृष्टांत।

जब अपबित्र भूतने किसी मनुष्यसे निकला है तब वह २४ सूखे स्थानोंमें फिरते फिरते बिश्राम ढूढ़ता है; परंतु नहीं पाके वह कहता है, जिस घरसे मैंने निकला उसमें फिर जाऊंगा। आके उसे झाड़ा बुहारा देख तुरंत जा सात २५ और भूतोंका जो अपनेसे अधिक दुष्ट हैं संग ले आता है औ वे वहां पैठके बास कर्ते हैं; और उस मनुष्य की अगलीदशासे २६ अन्त की दशा और बुरी होती है।

धन्य लोगोंका बखान।

२७ जब वह यह बात कहताही था तब उन् लोगोंमेंसे किसी स्त्रीने ऊंचे शब्दसे उससे कहा, जिससे आप जन्मे और
२८ जिसका दूध आप पिये हैं सो धन्य है। परंतु उसने कहा, जो परमेश्वर की बात सुनके पालन कर्ते हैं वेही धन्य हैं।

खीष्टका लोगोंको उपदेश कर्ना।

२९ जब बहुत लोग एकट्ठे हुए, तब वह कहने लगा, इस समयके लोग दुष्ट हैं वे चिन्ह देखने चाहते हैं, परंतु यूनस् भविष्यद्वक्ताके चिन्ह बिना और कोई चिन्ह उनको दिखाया
३० नहीं जावेगा। जैसा यूनस् निनिवीय नगरके लोगोंके निकट चिन्ह था, वैसेही इस समयके लोगोंके निकट मनुष्यके पुत्र
३१ भी चिन्ह होगा। बिचारके दिनमें इस समयके लोगोंके बिरुद्ध दक्षिण देशकी राणी उठके उनको दोषी ठहरावेगी; क्योंकि वही सुलेमानके उपदेशकी बात सुननेको पृथ्वीकी सीमासे आई थी; परंतु देखो, सुलेमानसे बड़ा एक जन
३२ यहां है। और बिचारके दिनमें निनिवीय लोग भी इस समयके लोगोंके बिपरीत उठ कर उनको दोषी ठहरावेंगे क्योंकि उन्होंने यूनस् के उपदेश सुनके पछताया, परंतु देखो, यूनस्से बड़ा एक जन यहां है।

दीपकका दृष्टांत।

३३ दीपक बारके कोई जन गुप्त स्थानमें वा नांदके नीचे नहीं धर्ता परंतु घरमें आनेहारोंको उजियाला देनेको दीअट
३४ पर धर्ता है। शरीरका दीपक नेत्र हैं; जो तेरे नेत्र निर्मल होवें तो तेरा समस्त शरीर भी उजियालासा होगा; जो तेरे नेत्र मलिन होवें तो तेरा सारा शरीर भी अंधकारसा
३५ होगा। इस लिये सावधान हो कि तेरे अंतरकी ज्योति
३६ अंधकारमय न होवे। जो तेरा समस्त शरीर उजियालासा होय औ उसका कोई अंश अंधेरासा न होय तो वह समस्त प्रकाशमान होगा जैसा चमकता हुआ दीपक तुझको उजियाला देता है।

फिरूशियोंको उसका उपदेश।

जब वह यह बात कहताही था तब किसी फिरूशीने ३७ आके उसको भोजनका नेवता किया; वह जाके भोजन कर्ने बैठा। यीशुने भोजनके आगे डुबकी न लिई; फिरूशी यह ३८ देख अचंभित ऊआ। तब प्रभुने उससे कहा, तुम फिरूशी ३९ लोग भोजन पात्र औ पान पात्रको बाहिरसे मांजते हो, परंतु तुम्हारा अंतर अंधेर औ बुराईसे भरा है। हे निर्बोध ४० लोगो, जिसने बाहिरको बनाया क्या उसने अंतरभी नहीं बनाया? तुम उन बस्तुओंमेंसे जो तुम्हारी हैं दान करो, ४१ तो देखो तुम्हारे लिये सब कुछ शुद्ध होगा। परंतु हाय २ ४२ फिरूशियो, तुमने न्याय औ ईश्वरके प्रेमको त्यागके पोदीना औ जीरा औ सब भांतिके सागपातोंका दशवां भाग दान कर्ते हो, परंतु उन्हें पालन कर्ना औ इन्हें न छोड़ना उचित है। हाय २ फिरूशियो, तुम मंदिरोंमें प्रधान आसनों औ ४३ हाटोंमें प्रणामोंको चाहते हो। हाय २ कपटी अध्यापको औ ४४ फिरूशियो, तुम उन गोरोंके तुल्य हो जो देखाई नहीं देतीं, औ जिनपर मनुष्य अनजाने चलते हैं।

व्यवस्थापकों को ख्रीष्टका उपदेश कर्ना।

तब व्यवस्थापकोंमेंसे किसीने यीशुसे कहा, हे उपदेशक, ४५ आप ऐसी बात करके हमलोगको भी दोषी ठहराते हैं। उसने कहा, हाय २ व्यवस्थापको, उन बोझोंको जो उठाना ४६ कठिन है औ जिन्हें तुम अपनी एक उंगलीसे नहीं छूते हो सो तुम मनुष्योंपर लादते हो। हाय २ तुम्हारे पुरूषोंने भविष्य- ४७ द्वक्ताओंको मारडाला और तुम उनकी गोरें बनाते हो। सो तुम प्रमाण करते हो कि तुम अपने पुरूषोंके कर्मोंसे प्रसन्न ४८ हो क्योंकि उन्होंने उनको मारडाला, औ तुम उनकी गोरें बनाते हो। इसलिये ईश्वरके ज्ञानने कहा है, मैं उनके निकट ४९ भविष्यद्वक्ताओं औ प्रेरितोंको भेजूंगा, वे उनमेंसे किसी २ को मारडालेंगे औ किसी २ को सतावेंगे। सो सारे भविष्यद्वक्ता- ५० ओंका लोऊ जो जगतकी सृष्टिसे बहाया गया है अर्थात्

हाबिलके लोहूसे लेके सिखरियके लोहू लग जो मंदिर और यज्ञबेदीके बीचमें मारडाला गया था सो इस समयके लोगोंसे
५१ मांगा जावेगा; हां मैं तुमसे सत्य कहता हूं, सब इसी समयके
५२ लोगोंसे मांगा जायगा। हाय २ व्यवस्थायको, तुमने ज्ञानकी कुंजी लेलिई हैं तुम आपही नहीं पैठते हो औ जो पैठने
५३ चाहते हैं उनको पैठने नहीं देते हो। जब वह उन्होंसे ये बातें कहताही था तब अध्यापक औ फिरूशी लोगोंने उसको खिजलाके बहुतसी बातोंके बिषयमें कहना उसको उसकाया;
५४ और भी घात ताकके ढूंढने किया कि उसके मुखसे कुछ पकड़के उसपर दोष लगावें।

१२ बारहवां अध्याय।

शिष्योंको खीष्टका उपदेश कर्ना।

१ उस समय सहस्र२ लोग आके ऐसे एकट्ठे हुए कि एक
२ दूसरे पर गिरे पड़ते थे; तब वह अपने शिष्योंसे कहने लगा, तुम फिरूशियोंके खमीररूप कपटसे अति सावधान रहो क्योंकि कुछ छिपा नहीं है जो प्रकाशित नहीं होगा
३ और गुप्त नहीं है जो जाना न जायगा। जो कुछ तुमने अंधेरेमें कहा है सोई उजियालेमें सुना जायगा; औ जो कुछ तुमने कोठरियोंके भीतर कानोंमें कहा है सो कोठेके उपर प्रचारा जायगा; हे मित्रो, मैं तुमसे कहता हूं, उनसे भय न करियो
४ जो शरीरको नाश करके और कुछ नहीं कर सक्ते हैं। परंतु मैं तुम्हें बताऊंगा किससे भय कर्ना होगा, वही जो शरीरको मारडाल कर नरकमें फेंकने सक्ता है उसीसे भय करो; हां
५ मैं तुमसे कहता हूं, उसीसे भय करो। क्या पांच गौरैया दो
६ पैसोंमें नहीं बिकतीं हैं? तौ भी ईश्वर उनमेंसे एकको नहीं
७ भूलता है। तुम्हारे सिरके सब बाल भी गिने गये हैं; इसलिये भय न करो, अनेक गौरैयाओंसे तुम्हारा मोल अधिक है।
८ मैं तुमसे कहता हूं, जो कोई मनुष्योंके सन्मुख मुझको स्वीकार करेगा मनुष्यका पुत्र ईश्वरके दूतोंके सन्मुख उसको स्वीकार

करेगा। परंतु जो कोई मनुष्योंके सन्मुख मुझको अस्वीकार ९ करेगा उसको ईश्वरके दूतोंके सन्मुख मैं अस्वीकार करूंगा। सब कोई जो मनुष्यके पुत्रकी निंदा करके कुछ कहेगा उसको १० क्षमा किया जायगा परंतु जो कोई पवित्र आत्माकी निंदा करेगा उसको क्षमा नहीं किया जायगा। जब लोग तुमको ११ सभाओंमें वा बिचार करनेहारों वा नगर रक्षकोंके सन्मुख ले जावें, तब कैसे अथवा क्या उत्तर देगे अथवा क्या कहोगे इसकी चिंता न करो; क्योंकि उस समय जो २ कहना होगा १२ सो पवित्र आत्मा तुमको शिक्षा देवेगा।

निर्बोध धनवानोंके दृष्टांत की बात।

तब उन लोगमेंसे किसीने कहा, हे गुरू, मेरे भाईको १३ आज्ञा कीजिये कि वह पिताका धन बिभाग करके मुझको बांट देवे। उसने उससे कहा, हे मनुष्य, तुम्हारे उपर बिचार १४ औ बिभाग कर्नेहारा मुझको किसने ठहराया है? फिर १५ उसने लोगोंसे कहा, लोभसे सावधान होओ औ बराव करो क्योंकि बहुत धन पानेसे किसीकी जीवन नहीं बढ़ जाती है। फिर उसने उन्हें यह दृष्टांत कहा, किसी धनवान की १६ भूमिमें बहुत कुछ उपजा। उसने अपने मनमें सोचके कहा, १७ मुझको यह सब रखनेका स्थान नहीं है सो मैं क्या करूंगा? मैं यह करूंगा, मैं अपने खत्ताओंको तोड़के बड़ेर बनाऊंगा, १८ उन्होंमें अपने सब अन्न औ सामग्री धरूंगा। तब मैं अपने १९ मनसे कहूंगा, हे मन, बहुत बर्षोंके लिये बहुतसी संपत्ति रखी गई है, बिश्राम कर, भोजन पान कर्के आनन्दमें रह। परंतु ईश्वरने उससे कहा, अरे निर्बोध, आजकी २० रातमें तेरा प्राण निकल जायगा तो यही संपत्ति जो तुने संचित किई है किसकी होगी। सो जो कोई अपने लिये २१ धन बटोरता है औ ईश्वरके निकट धनी नहीं है, वह वैसाही है।

चिंता कर्नेका निषेध कर्ना।

फिर उसने अपने शिष्योंसे कहा, मैं तुमसे कहता हूं, तुम २२

अपने जीवनके बिषयमें यह कहके चिंता न करीयो कि हम क्या खायेंगे? और न शरीरके बिषयमें कि हम क्या पहिरेंगे।
२३ जीवन भोजनसे औ शरीर बस्त्रसे बड़ा है। कौवोंको देखो,
२४ वे न बोते हैं न लावते हैं उनके न भंडार है न खत्ता है तौभी ईश्वर उनको खिलाता है; क्या तुम पंक्षियोंसे बड़े नहीं हो?
२५ तुम्होंमें कौन है जो सोच करके अपनी आयुको क्षणमाच बढ़ा
२६ सकता है? जो ऐसा छोटा काम तुम नहीं कर सकते हो
२७ तो क्यों और बातोंका सोच करते हो? सोसनोंको देख लीजिये, कैसे वे बढ़ते हैं, वे न श्रम करते हैं न सूत कातते हैं परंतु मैं तुमसे कहता हूं, सुलेमान अपने सब ऐश्वर्यमें उनमेंसे
२८ एकके समान बिभूषित नहीं था। जो ईश्वर उस घासको जो आज खेतमें है औ कल चूल्हेमें झोंकी जायगी ऐसा बिभूषित करे तो हे अल्प बिश्वासियों कितना अधिक वह
२९ तुम्हें पहिरावेगा? इसलिये इसकी चिंता मत करीयो कि हम क्या खायेंगे, अथवा हम क्या पहिरेंगे औ न सन्देही
३० होओ। संसारके देवपूजक लोग इन सब बस्तुओंको खोज करते हैं; औ तुम्हारा पिता जानता है कि तुमको ये
३१ आवश्यक है। इसलिये ईश्वरका राज खोज करो औ ये सब
३२ बस्तु तुमको अधिक दिई जायेंगी। हे छोटे पाल, भय न करो.
३३ तुमको राज्य देना, यह तुम्हारे पिता की इच्छा है। इसलिये तुम्हारे जो २ पदार्थ हैं सो २ बेचके दान करो; थैलियां जो पुरानी नहीं होतीं औ धन जो नहीं घटता सो स्वर्गमें अपने लिये एकठे करो जहां न चोर आता है औ न कीड़ा
३४ खाता है क्योंकि जहां तुम्हारा धन है वहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।

फुर्तीले चाकरोंका बखान।

३५ तुम अपने कमरें बांधके औ दीपको बारके खड़े रहो, औ
३६ उन मनुष्योंके समान होओ जो अपने स्वामीकी बाट जोहते हैं; जिस समय वह बिवाहसे फिर आयके खटखटावे उसी
३७ समय वे उसके लिये तुरंत द्वार खोल देते। धन्य ये सेवक

हैं जिन्हें स्वामी आकर जागते पावेगा। मैं तुमसे सच कहता हूं, वह कमर बांधके उन्हें भोजनपर बैठावेगा औ आयके उनकी सेवा करेगा। जो वह दो पहर अथवा तीन पहर ३८ आयके उन्हें ऐसे पावे तो वे सेवक धन्य हैं। यह तुम जानते ३९ हो कि जो घरका स्वामी जानता, किस घड़ी चोर आवेगा तो वह जागता रहके अपने घरमें सेंध देने नहीं देता। इस ४० लिये तुमभी जागते रहो क्योंकि जिस घड़ीमें तुम अचेत हो उसी घड़ीमें मनुष्यका पुत्र आवेगा।

प्रभु और दासका दृष्टांत।

तब पितरने उसे कहा, हे प्रभु, क्या आप हमपर वा सबों- ४१ पर यही दृष्टांत कहते हैं? प्रभुने कहा, वह बिस्वासी औ ४२ बुद्धिमान भंडारी कौन है जिसको स्वामी अपने परिवारोंपर ठहरावेगा कि वह उन्हें ठीक समयमें भोजन दिलावे? वही ४३ सेवक धन्य है जिसको उसका स्वामी आयके ऐसा करते पावेगा। मैं तुमसे सच कहता हूं, स्वामी अपनी सब संपति ४४ पर उसको ठहरावेगा। परंतु जो यह सेवक अपने मनमें ४५ कहे, मेरा स्वामी आनेमें बिलंब करता है औ इससे वह अपने संगी दास औ दासियोंको मारने औ खाने पीने औ मतवाला होने लगे तो जिस दिनमें वह बाट न जोहता है ४६ औ जिस घड़ीमें वह न जानता है उसी समयमें उसका स्वामी आयके उसको बेतसे मारके उसका भाग अबिस्वासी लोगोंके संग ठहरावेगा। वह सेवक जो अपने स्वामी की ४७ इच्छा जानता है परंतु न लैस होता औ न उसकी इच्छाके समान करता सो बहुतसा मार खायगा, परंतु जिसने ४८ न जानके मार खानेके योग्य काम किया है वह थोड़ासा मार खायगा क्योंकि जिसको बहुत दिया गया है उसीसे बहुत मांगा जायगा और जिसको मनुष्योंने बहुत सौंपा है उसीसे वे अधिक मांगेंगे।

खीष्टके उपदेशका फल।

मैं पृथ्वीपर आग फेंकनेको आया हूं, और मैं क्या चाहूं ४९

५० इसीबिन कि वह अभी जलके उठती? मुझे एक डुबकी लेना होती है और जबलग वह संपूरण न होय मैं कैसी सकराई में होता हूं। ५१ क्या तुम यह समझते हो कि मैं पृथ्वीपर मिलाप करानेको आया हूं? मैं तुमसे कहता हूं, सो नहीं, ५२ परंतु बिरुद्धता करानेको आया हूं। इसलिये अबसे एक घरमें पांच जन भिन्न२ होंगे, तीन जन दोके बिरुद्धमें औ दो ५३ जन तीनके बिरुद्धमें। पिता पुत्रके बिरुद्धमें औ पुत्र पिताके बिरुद्धमें होंगे; माता पुत्रीके बिरुद्धमें औ पुत्री माताके बिरुद्धमें होंगीं; सास बहूके बिरुद्धमें औ बहू सासके बिरुद्धमें होंगीं।

कपटियोंको तिरस्कार कर्ना।

५४ उसने यहभी लोगोंसे कहा, जब तुम पश्चिमसे मेघको उठते देखते हो तब तुरंत कहते हो कि झड़ी होगी, ५५ और ऐसी होती है। और जब दक्षिणकी बतास चलती देखते हो तब कहते हो कि गरमी होगी, और वह भी होती ५६ है। हे कपटियो, तुम भूमि औ आकाशका लक्षणोंको बूझ सकते हो परंतु इससमयका लक्षणोंको क्यों बूझ नहीं सकते हो?

कपटियोंको खीष्टका उपदेश कर्ना।

५७ यह जो ठीक है सो क्यों तुम आपही बिचार नहीं करते हो? जब तू अपने बैरीके संग बिचारकर्ताके निकट चला जाता है तब बाटके बीचमें होके उससे छुटनेका यत्न कर, ५८ न हो कि वह तुझको बिचारकर्ताके सन्मुख ले जावे औ बिचारकर्ता तुझको पहरुएको सौंपे, औ पहरुए तुझको ५९ कैदखानेमें डालें; मैं तुझसे कहता हूं, जब तक कौड़ी२ न चुकाया है तब तक् वहांसे छुटने नहीं पावेगा।

१३ तेरहवां अध्याय।

मन फिराने की अवश्यकता।

१ उसी समयमें कोई कोई वहां थे जिन्होंने उन गालीलीयोंके

बिषयमें जिनके लोहू पिलातने उनके बलदानोंमें मिलाया था यीशुसे कहा। उसने उत्तर दिया क्या तुम समझते हो कि २ ये गालीली लोग सब गालीलीयोंसे अधिक पापी थे कि उनकी ऐसी दुर्गति हुई? मैं तुमसे कहता हूं, सो नहीं, परंतु ३ जो तुम मन न फिराओ इसी रीति तुम सबभी नष्ट होगे। अथवा क्या तुम यह समझते हो कि वे अठारह जन जिन्हों ४ पर शीलोह स्थानकी गुम्मट गिर पड़ा औ उन्हें नष्ट किया यिरूशालम नगरके सब निवासीओंसे अधिक अपराधी थे? मैं ५ तुमसे कहता हूं, सो नहीं, परंतु जो तुम मन न फिराओ तो इसी रीति तुम सब भी नष्ट होगे।

बिन फलके गूलर वृक्षका दृष्टान्त।

उसने यही दृष्टान्त कहा, किसीसे अपने दाखकी बारीमें ६ एक गूलरका पेड़ लगाया। उसने आके उसपर फल ढूंढके कुछ न पाया। तब उसने मालीसे कहा, देख, तीन बर्षसे ७ मैं आके इस गूलरके पेड़ पर फल ढूंढ़ता हूं परंतु कुछ नहीं पाता हूं; उसको काट डाल, वह भूमिको क्यों निकमी करता है। मालिने उत्तर दिया, हे प्रभु, एक बर्ष और रहने ८ दीजिये, मैं उसका थाला खोदके खाद दूंगा; तब फले तो ९ फले, नहीं तो काट डालवाइये।

एक कुबड़ी स्त्रीको चंगा कर्ना।

बिश्राम बारको किसी मंदिरमें यीशु उपदेश देता था; १० और देखो, वहां कोई कुबड़ी स्त्री थी जो अठारह बर्षसे ११ दुर्बलताके भूतसे लगी हुई अपनेको किसी रीतिसे सीधी नहीं कर सकती थी। यीशुने उसे देखके बुलाया औ कहा, १२ हे नारी, तू अपनी दुर्बलतासे छुट गई है। इसपर यीशुने १३ उसपर अपने हाथोंको धरा और तुरंत वह सीधी होयके ईश्वरकी स्तुति करने लगी। यीशुने बिश्रामबारमें उसे चंगी १४ किई थी इसलिये मंदिरका अध्यक्ष क्रोध कर लोगोंसे बोला, छः दिन हैं जिनमें कर्म कर्ना उचित है; इन दिनोंमें चंगे होनेको आओ, बिश्रामबारमें न आओ। तब प्रभुने १५

उत्तर दिया, अरे कपटि, क्या बिश्रामवारमें तुम्होंमेंसे एक एक अपने बैल वा गधेको नान्दसे खोलके जल पिलाने नहीं ले
१६ जाता? और यह जो इब्राहीमकी पुत्री है औ जिसको शैताननें अठारह बर्षसे बांध रक्खा है क्या बिश्रामबारको इस बंधनसे
१७ खोलना उचित नहीं है? जब उसने ये सब बातें कही तब उसके सब बैरी लज्जित ज़ए, परन्तु सब लोग उसके सब महत कर्मोंके लिये आनंदित ज़ए।

सर्षों औ खमीरका दृष्टांत।

१८ फिर उसने कहा, ईश्वरका राज किसके समान है? औ किससे मैं उसका उपमा दूंगा? वह उस सर्षोंके बीजके
१९ समान है जिसे किसीने अपनी बारीमें बोया। वह उगके ऐसा बड़ा पेड़ ज़आ कि आकाशके पक्षियोंने आके उसकी
२० डालियोंपर बसेरे किये। फिर उसने कहा, किससे मैं ईश्वरका
२१ राजको उपमा दूंगा? वह उस खमीरके समान है जिसे किसी स्त्रीने लेके तीन सेर आटेमें मिला दिया, जबतक सब खमीरी हो गया।

यीशुका उपदेश।

२२ वह नगर२ ग्राम२ में फिर्ते२ उपदेश देते ज़ए यिरू-
२३ शालम नगरको चला जाता था। तब किसीने उससे पूछा,
२४ हे प्रभु, क्या थोड़े लोगही त्राण पावेंगे? उसने उनसे कहा, सकेत फाटकसे प्रवेश कर्नेका यत्न करो क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं, जब घरका स्वामीने उठकर द्वार बंद किया है
२५ तब बज़तेरे प्रवेश कर्नेका यत्न करेंगे, परंतु नहीं सकेंगे। तुम भी बाहिर खड़े हो द्वारको खटखटाके कहोगे, हे प्रभु, हे प्रभु, हमारे लिये द्वार खोलिये परंतु वह उत्तर देगा,
२६ तुम कहांके हो सो मैं जानता नहीं। तब तुम कहोगे, हमने आपके सन्मुख भोजन पान किया है, और आपने हमारे
२७ नगरोंके पथोंमें उपदेश दिया है। परंतु वह बोलेगा, मैं तुमसे कहता हूं, तुम कहांके हो, सो मैं जानता नहीं, हे कुकर्मियो,
२८ मेरे समीपसे परे हो। जब तुम इब्राहीम् औ इस्हाव्

औ याकुब् औ सब भविष्यद्वक्ताओंको ईश्वरके राज्यमें पक्रंचे ऊए औ अपनेयोंको बाहिर निकाले ऊए देखोगे तब वहां रोना औ दांतोंका पीसना होंगे। लोग पूर्ब औ पश्चिम औ २९ दक्षिण औ उत्तरसे आके ईश्वरके राजमें बैठेंगे। देखो, ३० कोई पीछले हैं जो पहिले होंगे औ कोई पहिले हैं जो पीछले होंगे।

हेरोद औ यिरूशालमके रहनेहारे लोगोंको तिरस्कार कर्ना।

उसीदिन किसी फिरूशियोंने उससे कहा, यहांसे निक- ३१ लके चला जा क्योंकि हेरोद राजा तुझे मार डालने चाहता है। उसने उनसे उत्तर दिया, तुम जाके उस लोमड़ीसे कहो, ३२ कि यीशुने यह बात कही है, देखो, मैं आज औ कल भूतोंको निकालता औ रोगियोंको चंगा करता हूं और तीसरे दिन सिद्ध होंगा। हां आज औ कल औ परसों मुझे आना जाना ३३ अवश्य हैं क्योंकि नहीं होने सकता है कि कोई भविष्यद्वक्ता यिरूशालमके बाहिर नष्ट किया जायगा। हे यिरूशालमर ३४ तू जो भविष्यद्वक्ताओंको घात करता है औ उन्हें जो तेरे निकट भेजे गये हैं पत्थर मारता है तो जैसे कुक्कुटी अपनी चिंगियों-को अपने पंखोंके नीचे एकत्र कर रखती है वैसेही मैंने बार बार तेरे बालकोंको एकत्र करनेकी इच्छा किई है, परंतु तुमने न इच्छा किई। देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उच्छिन्न छोड़ा ३५ जाता है; मैं तुमसे सच कहता हूं, जब लग तुम यह न कहोगे, धन्य वह है जो ईश्वरके नामसे लेके आता है, तबलग मुझे न देखोगे।

१४ चौदहवां अध्याय।

एक जलोदररोगिणीको चंगा कर्ना।

बिश्रामबारको यीशु प्रधान फिरूशियोंमेंसे किसीके घरमें १ भोजन कर्नें गया तब वे उस पर ताकने लगे। देखो, वहां कोई २ जलंधरी मनुष्य उसके सन्मुख था; यीशुने व्यवस्थापकों औ ३ फिरूशियोंसे पूछा, बिश्रामबारको चंगा कर्ना उचित है वा

४ नहीं? वे चुप रहे; तब उसने उस मनुष्यको छूके चंगा करके ५ बिदा किया; औ उनसे कहा, तुम्होंमें कौन है जिसका गधा अथवा बैल बिश्रामवारको गढ़ेमें गिर पड़े क्या वह तुरंत ६ उसे न निकालेगा? परंतु वे इन बातोंका उत्तर दे नहीं सकते थे।

नम्र होने का उपदेश।

७ जब उसने देखा कि नेवते ऊये लोग प्रधान स्थानोंको ८ चाह लेते थे तब उसने उन्हें यह उपदेश देके कहा, जब कोई तुझे बिवाहके भोजनमें बुलावे तो प्रधान स्थानमें मत ९ बैठ। न होवे कि तुझसे किसी बड़े मनुष्यके आनेपर वह जिसने तुझे औ उसे बुलाया तेरे समीप आयके कहे, इस मनुष्यको यही स्थान दे; तब तू लज्जासे पीछेस्थानमें बैठने १० जायगा। परंतु जब तू बुलाया जावे तब पीछे स्थानमें जाके बैठ कि जब वह जिसने तुझे बुलाया, आयके कहे, हे मित्र, और उपर यहां आईयो, तब तू अपने संगी बैठनेहारोंके ११ सन्मुख आदर पावेगा। सब कोई जो अपनेको ऊंचा करता है सो नीचा किया जायगा, औ जो कोई अपनेको नीचा करता है सो ऊंचा किया जायगा।

निमंत्रण कर्नेका विधान।

१२ तब उसने अपने नेवता कर्नेहारेसे कहा, जब तू दो पहरका अथवा रातका भोजन बनावे तो अपने मित्रोंको अथवा अपने भाईओांको अथवा अपने कुटुम्बोंको अथवा अपने धनी परोसियोंको मत बुला, न होवे कि वे तुझको फिर १३ बुलावें और तेरा प्रतिफल होगा। परंतु जब तू बड़ा भोजन बनावे तब कंगालोंको औ लूले लंगड़ोंको औ अंधोंको बुला; १४ इससे तू धन्य होगा; वे तुझे प्रतिफल नहीं दे सकते हैं; तू धर्मियोंके जी फिर उठनेके समयमें प्रतिफल पावेगा।

बड़े भोजके निमंत्रणका दृष्टांत।

१५ भोजनपर बैठनेहारोंमेंसे किसीने ये बातें सुनके यीशुको १६ कहा, धन्य वही है जो ईश्वरके राजमें भोजन करेगा। उसने

उससे कहा, किसी मनुष्यने बड़ी बियारी पर बहुतसे लोगोंको बुलाया। भोजनके समयमें उसने नेवतहरियोंको १७ यह कहनेको अपने सेवकको भेजा, आइये, भोजन बनाया हुआ है। इसपर सबोंने एकही रीतिसे बनावट किई; १८ एकने सेवकसे कहा, मैंने कुछ भूमि मोल लिई है औ उसे देखनेको मुझे जाना होगा, इसलिये मैं बिनती करता हूं मुझे क्षमा कर। दूसरेने कहा, मैंने पांच जोड़े बैल मोल लिये १९ हैं, उन्हें परखनेको मैं जाता हूं, इसलिये मैं बिनती करता हूं, मुझे क्षमा कर। तीसरेने कहा, मैंने बिवाह किया है, इस २० लिये मैं नहीं आ सकता हूं। सेवकने फिर आके अपने प्रभुको २१ ये बातें सुना दिईं; तब घरके स्वामीने क्रोध कर अपने सेवकसे कहा, तुरंत नगरके पथों औ गलियोंमें जा, दरिद्रों औ लूले लंगड़ों औ अंधोंको यहां ले आ। सेवकने यह करके कहा, हे २२ प्रभु, आपकी आज्ञाके अनुसार किया गया है तौभी समाओ है। प्रभुने सेवकसे कहा, मार्गों औ बाड़ोंमें जा, जितने २३ लोग मिलें, उन सबोंको पहुंचा कि मेरा घर भर जावे। मैं २४ तुमसे कहता हूं, कोई उनलोगोंमेंसे जो बुलाये गये थे मेरी बियारी चखने न पावेगा।

नाना प्रकारके उपदेशकी बात।

बहुतसे लोग यीसुके संग चले जाते थे; उसने उन्होंकी २५ ओर फिरके कहा, जो कोई मेरे निकट आवे और अपने २६ पिता औ माता औ स्त्री औ सन्तान औ भाइयों औ बहिनोंको हां और अपने प्राणको भी घिन्न न करे तो वह मेरे शिष्य नहीं होने सकता है। और जो कोई अपने क्रुशको ढोके २७ मेरे पीछे नहीं आवेगा सो मेरा शिष्य नहीं होने सकेगा। तुम्होंमें कौन है जो गुम्मट बनाने ठान करके पहिले बैठके २८ लेखा न करता है कि हाथमें समाप्त करने की संपत्ति है वा नहीं। न होवे कि नेव डालनेके पीछे उसे समाप्त न कर २९ सके; और सब जो देखते हैं ठट्ठा करके कहें, इस मनुष्यने ३० बनानेका आरंभ करके समाप्त न कर सकता है। अथवा

३१ वह राजा कौन है जिसको दूसरे राजासे युद्ध करना जाना होगा; क्या वह पहिले बैठके यह बिचार न करता है कि मैं दश सहस्र सिपाहियोंको लेके उसका सामना कर सकता ३२ हूं जो बीस सहस्रके संग आता है। जो न कर सके तो वह, उसका शत्रु बहुत दूर रहते ही, दूतको भेजकर मिलाप ३३ करनेकी बिनती करता है। इसी रीतिसे तुम्होंमेंसे सब कोई जो अपना सब कुछ नहीं छोड़ देता है वह मेरा शिष्य नहीं ३४ हो सकता है। लोण उत्तम है; परंतु जो लोणका स्वाद ३५ जाता रहे तो किससे स्वादित हो जायगा? वह न खेत न खादके कामका है; लोग उसे बाहिर फेंकते हैं। जिसको सुननेके कान हैं सो सुने।

१५ पंदरहवां अध्याय।

खोई हुई भेड़ी औ खोई हुई सूकीका दृष्टान्त।

१ जब सब कर उगाहनेहारे औ पापी लोग यीशुके उपदेश २ सुननेको निकट आये। तब फिरूशियों औ अध्यापकोंने कुड़कुड़ाके कहा, यह मनुष्य पापियोंसे मित्रता कर उनके संग ३ भोजन करता है। उसने उनसे यह दृष्टान्त कहा; तुममेंसे कौन ४ मनुष्य है जिसकी सौ भेड़ी हैं? जो उनमेंसे एक खोई जावे तो क्या वह निन्नानवेको चौगानमें नहीं छोड़ता और जबलों उस खोई हुईको नहीं पाता तबलों उसका खोज करते रहता? ५ औ उसको पाके आनंदसे उसे कांधे पर रखके अपने घरमें लाके बंधुयों औ परोसियोंको एकठे बुलायके उन्होंसे कहता है ६ मैंने अपनी खोई हुई भेड़ी पाई है इसलिये मेरे संग आनंद ७ करो। मैं तुमसे कहता हूं, इसीरीति एक पापीके लिये जिसका मन फिराया हुआ है निन्नानवे धर्मियोंसे जिन्होंको मन फिरानेकी अवश्यकता नहीं है स्वर्गमें अधिक आनंद होगा। ८ अथवा कौन स्त्री है जिसकी दश सुकी हैं; जो उनमेंसे एक खोई जावे क्या वह दीपक बालके घरको नहीं झाड़ती औ ९ जबलों न पाती तबलों खोज करती रहती? औ पायके बंधुओं

औ पड़ोसियोंको बुलाके कहती है, मैंने अपनी खोई हुई सुकी पाई है इसलिये मेरे संग आनंद करो। मैं तुमसे कहता १० हूं, इसी रीति एक पापीके लिये जिसका मन फिरया हुआ है ईश्वरके दूतगण आनंद करते हैं।

अपव्यय कर्नेहारे पुत्रका दृष्टान्त।

उसने कहा, किसी मनुष्यके दो पुत्र थे; उनमेंसे छोटकेने ११ पितासे कहा, हे पिता, आपके धनका जो भाग मेरा होगा १२ सो मुझको दीजिये; तब उसने उनको अपनी सब संपत्ति बांट दिई। थोड़े दिनोंके पीछे छोटके पुत्रने अपने सब कुछ १३ एकठा करके दूरदेशमें जा कुकर्ममें सबको उड़ा दिया। सब १४ उड़ानेके पीछे उस देशमें बड़ा अकाल पड़ा, और वह घटनेमें हुआ। इसपर उसने जा उस देशके किसी गृहस्थका आसरा १५ लिया जिसने सूअरोंके झुंड चरानेको उसे अपने खेतोंमें भेजा; परंतु किसीने उसको कुछ खाना न दिया, इसलिये १६ वह उन छिलकोंसे जो सूअर खाते थे अपने पेटको भरने चाहता था। पीछे उसने अपने चेतमें आयके कहा, मेरे पिताके १७ घरमें बहुतसे सेवक हैं जो इतनी रोटी पाते हैं कि खा करके कुछ बच रखते हैं परंतु मैं भूखसे मरता हूं। मैं उठके १८ अपने पिताके निकट जा उससे यह बोलूंगा, हे पिता, मैंने ईश्वरके औ आपके बिरुद्ध पाप किया है, मैं आपके पुत्र १९ कहलानेके योग्य फिर नहीं हूं, मुझे अपने सेवकमेंसे एकके समान रख दीजिये। इसपर वह उठके अपने पिताके निकट २० चलने लगा; उसके पिताने उसको अति दूरसे आते देख दया किई औ दौड़के उसको गले लगा लेके चुमने लगा। पुत्रने उससे कहा, हे पिता, मैंने ईश्वरके औ आपके बिरुद्ध २१ पाप किया है, मैं आपके पुत्र कहलानेके योग्य फिर नहीं हूं। पिताने अपने सेवकोंसे कहा, सबसे उत्तम बस्त्र लाओ उसे २२ पहिराओ, औ उसके हाथमें अंगूठी औ उसके पांवोंमें जुती पहिनाओ। औ मोटा बछड़ा लाके मार डालो कि हम सब २३ खाके आनंद करें। क्योंकि यह मेरा पुत्र मरा था, फिर जीया २४

है; खोया गया था, फिर पाया गया है; तब वे आनंद करने
२५ लगे। उस समयमें उसका जेठा पुत्र खेतमें था। घरके समीप
२६ पहुंचने पर उसने बाजा औ नाचका शब्द सुन सेवकोंमेंसे
२७ एकसे पूछा, यह क्या है? उसने उसे कहा, आपका भाई आया
है औ आपके पिताने उसे जीते पायके मोटा बछड़ा मार
२८ डालवाया है। यह सुन वह क्रोध कर भीतर जाने न चाहा;
इसपर उसके पिताने बाहिर निकलके उसकी बिनती किई।
उसने पिताको उत्तर दिया, देखो, मैं बहुतसे बर्षोंसे आपकी
२९ सेवा किया करता हूं औ आपकी आज्ञा उल्लंघन कभी नहीं
किई है तौभी आपने मुझे एक मेम्ना कभी नहीं दिया है कि
३० मैं अपने मित्रोंके संग आनंद करता; परंतु जब यह आपका
पुत्र आया है जिसने बेश्याओंके बीचमें आपका धन उड़ा दिया
३१ है आपने उसके लिये मोटा बछड़ा मार डालवाया है। तब
उसने कहा, हे पुत्र, तू सदा मेरा संग है औ जो कुछ मेरा है
३२ सो तेरा है। हरष औ आनंद करना उचित है क्योंकि यह
तेरा भाई मरा था फिर जीया है, खोया गया था फिर
पाया गया है।

१६ सोलहवां अध्याय।

अपव्ययि गृहस्थके खामीका दृष्टांन्त।

१ यीशुने अपने शिष्योंसे कहा, किसी धनवान मनुष्यका
भंडारी था जो दोषी ठहराया गया था कि वह अपने प्रभु
२ की संपत्ति उड़ा देता है। प्रभुने उसे बुलाके कहा, यह क्या है
जो मैं तेरे बिषयमें सुनता हूं; अपने भंडारपनका लेखा दे,
३ तू भंडारी फिर नहीं होगा। इसपर भंडारीने अपने मनमें
कहा, मैं क्या करूंगा; मेरा प्रभु मुझे भंडारपनसे छुड़ाता
है, मैं खोदने नहीं सकता हूं औ भीख मांगनी मुझे लाज
४ आती है। अब मैं जानता हूं; मैं ऐसा करूंगा जिससे
लोग मुझे भंडारपनसे छुड़ाये होनेपर अपने घरोंमें रहने
५ देवें। इसपर उसने अपने प्रभुके ऋणिओंको बुलाके एकसे कहा,

तुझसे मेरे प्रभुका कितना पावना है? उसने कहा, एकसौ मन तेलके; भंडारीने कहा, अपनी बही ले तुरंत बैठके पचास मन लिख। दूसरेसे कहा, तुझसे प्रभुका कितना ६ पावना है? उसने कहा, एकसौ मन गेहूंके; वह बोला, अपनी बही ले अस्सी मन लिख। प्रभुने उस अन्यायी भंडा- ७ रीकी चतुराई जानके उसे सराहा। क्योंकि इससंसारके ८ संतान अपनी जातिके बीचमें प्रकाशके संतानोंसे अधिक बुद्धि- मान हैं। मैं तुम्हेंसे कहता हूं इससंसारके धनसे मित्र करो ९ कि जब तुम्हारि घटती होवे वे तुम्हें अचल स्थानोंमें ग्रहण करें

दासके बिश्वासी होनेकी आवश्यकता।

जो कोई थोड़ेमें सच्चा है सो बहुतमें भी सच्चा है परंतु जो १० थोड़ेमें अन्यायी है सो बहुतमें भी अन्यायी है। इसलिये जो ११ तुम इससंसारके धनमें सच्चे न हुये हो तो कौन तुमको स्वर्गी धन सौंपेगा? औ जो तुम परायके धनमें सच्चे न हुये हो तो १२ कौन उसको जो तुम्हारा है तुमको देगा? कोई सेवक दो प्रभु- १३ ओंकी सेवा नहीं कर सकता है क्योंकि वह एकको घिन्न करेगा औ दूसरेको प्यार करेगा अथवा एकको लगा रहेगा औ दूसरेको तुच्छ करेगा; तैसाही तुम ईश्वर औ धनकी सेवा नहीं कर सकते हो।

फिरूशियोंको धिक्कार कर्ना।

लोभी फिरूशियोंने ये सब बातें सुनके उसकी निंदा किई। १४ उसने उन्हें कहा, तुम मनुष्योंके सन्मुख अपनियोंको धर्मी १५ दिखाते हो परंतु ईश्वर तुम्हारे मनको जानता है; जो मनुष्योंके सन्मुख अति प्रशंसित है सो ईश्वरके सन्मुख घिनित है। योहनके आनेतक ब्यवस्था औ भविष्यद्वक्ते थे, तबसे ईश्व- १६ रके राज्यका सुसमाचार प्रचार किया जाता है औ सब कोई उसमें बलसे पैठता है। ब्यवस्थाके एक बिंदुके टल जानेसे १७ आकाश औ पृथ्वीके टल जाना बहुत सहज है। सब कोई १८ जो अपनी स्त्रीको त्यागके दूसरीसे बिवाह करता है सो

व्यभिचार करता है, औ सब कोई जो उससे जो अपनी पतिसे त्याग किई ऊई है बिवाह करता है सो व्यभिचार करता है।

धनवान औ दरिद्रका दृष्टान्त।

१९ कोई धनवान था जो लाल औ मिहीं बस्त्र पहर्ता औ
२० दिन दिन सुखसे खाता पीता था। और इलियासर नाम कोई कंगाल था जो घावोंसे भरा होके उसके फाटक पर
२१ रखा गया था औ उन चूरचारोंसे जो धनवानके भोजनसे बच रहते थे खाने चाहता था; कुत्तेभी आयके उसके घावोंको
२२ चाटते थे; कुछ दिन पीछे वही कंगाल मर गया औ स्वर्गी
२३ दूतोंसे इब्राहीम की गोदीमें पऊंचाया गया। धनवान भी मर गया औ गाड़ा गया; परंतु परलोकमें दुःखित हो वह उपरको दृष्टि कर अति दूरसे इब्राहीमको औ उसकी गोदीमें
२४ इलियासरको देख चिल्लाके बोला, हे पिता इब्राहीम, मुझपर दया करके इलियासरको भेज दीजिये कि वह अपना अंगुली के छोरको जलमें डुबोके मेरी जीभको ठंढी करे क्योंकि मैं
२५ इस आगकी ज्वालासे कलपता हूं। परंतु इब्राहीमने कहा, हे पुत्र, स्मरण कर कि तूने अपने जीते जीमें अपनी अच्छी बस्तु पाईं औ इलियासरने वैसाही बूरी बस्तु; सो अब वह
२६ शांति पावता है औ तू कलपता है। हमारे औ तुम्हारे बीचमें भी ऐसा बड़ा अंतर है कि इस स्थानके लोग उस स्थानमें वा उस स्थानके लोग इस स्थानमें आय जाय नहीं
२७ सकते हैं। तब उसने कहा, हे पिता, मैं तेरी बिनती करता
२८ हूं, मेरे पिताके घरमें मेरे पांच भाई हैं उनको साक्षी देनेको इलियासरको भेज दीजिये, न होवे कि वे भी इस पीड़ाके
२९ स्थानमें आवें। इब्राहीमने कहा, मुसा औ भविष्यद्वक्ताओंके
३० ग्रंथ उनके निकट हैं, चाहिये कि वे उनकी सुनें। उसने कहा, हे पिता इब्राहीम, सो नहीं, परंतु जो मृतकोंमेंसे
३१ कोई उनके निकट जावे तो वे मन फिरावेंगे। इब्राहीमने

कहा, जो वे मूसा औ भविष्यद्वक्ताओंकी बात न सुनें तो मृत-कोंमेंसे किसीके उठनेसे वे न मानेंगे।

१७ सतरहवां अध्याय।

बिघ्न नहीं उत्पन्न करानेका उपदेश।

यीशुने शिष्योंसे कहा, रोक अवश्यही होंगे, परंतु हाय १ हाय उसीपर जिसके हेतुसे वे होंगे। जो कोई इनछोटोंमेंसे २ एकको रोके तो इससे यह उसके लिये भला है कि उसके गलेमें चक्कीका पाट बांधा जाता औ वह समुद्रमें डाला जाता। सावधान होओ; जो तेरा भाई तेरे बिरुद्ध अपराध ३ करे तो उसको धमका; जो वह मन फिरावे तो उसे क्षमा कर। जो वह एक दिनमें तेरे बिरुद्ध सात बेर अपराध ४ करे औ सात बेर एक दिनमें तेरी ओर फिरके कहे, मैं पछ-ताता हूं तो उसको क्षमा कर। इसपर प्रेरितोंने प्रभुसे कहा, ५ हमारे बिश्वासको बढ़ा दीजिये। प्रभुने कहा, जो तुम्हारा ६ बिश्वास राईके एक बीजके समान होता तो तुम इस गुलरके गाछको कहते, जड़से उखड़ औ समुद्रमें लग जा तो वह तुम्हारी बात मानता।

प्रभु औ दासके आचरणकी बिधि।

तुम्होंके बीचमें कौन है जो अपने सेवकको जो हल जोत ७ करके अथवा ढोर चराकरके खेतसे आया है यह कहेगा, तु जाके भोजन पर बैठ? सो कोई नहीं कहता परंतु यह कहता, ८ मेरे लिये बिआरी बना औ जब लग मैं न खा पी चूकऊं तबलग तू कमर बांधके मेरी सेवा कर, पीछे तू खा पी। क्या ९ स्वामी उस सेवकको जिसने अपने ठहराया हुआ कर्म किया है धन्यबाद करता है? मुझे ऐसा बोध नहीं है। इसी रीति १० जब तुम उन सब कामोंको जो तुम्हें कहे गये हैं कर चुके हो तो कहो, हम निकमे सेवक हैं, केवल जो कुछ हमको करना उचित था सो हमने किया है।

दश कोढ़ियोंको चंगा करना।

११ वह यिरूशालम नगरको जाता था; और शोमिरोण औ
१२ गालील देशके बीचमेंसे निकलके किसी गांवमें पहुंचने पर
१३ दस कोढ़ियोंने उसको देख दूरसे खड़े हो ऊंचे शब्दसे
१४ कहा, हे यीशु उपदेशक, हमपर दया कीजिये। उसने उनको
देखके कहा, तुम याजकोंके निकट जाके अपनियोंको दिखाओ;
१५ वे जाते जाते पवित्र होगये। तब उनमेंसे एक अपनेको
पवित्र हुआ देख ऊंचे शब्दसे ईश्वरकी स्तुति करता हुआ फिर
१६ आया, औ यीशुका धन्यवाद करते करते उसके चरणोंपर
१७ ओंधेमुंह गिरा; वह शोमिरोणी था। तब यीशुने कहा,
१८ क्या दश मनुष्य पवित्र नहीं हुये? नौ और कहां हैं? इस
परदेशीके बिना और कोई नहीं मिला है जो फिरके ईश्वरकी
१९ स्तुति करे। तब उसने उसको कहा, उठके चला जा, तेरे
बिश्वासने तुझे चंगा किया है।

ईश्वरके राज का बखान।

२० फिरूशियोंने उससे पूछा, ईश्वरका राज कब आवेगा?
उसने उत्तर दिया, ईश्वरके राज बाट जोहनेसे नहीं आता।
२१ वे न कहेंगे, देखो यहां है. देखो वहां है क्योंकि देखो, ईश्वर
का राज तुम्हारेही अंतरमें है।

खीष्टके फिर आनेका बखान।

२२ उसने शिष्योंसे कहा, वे दिन आवेंगे जिन्होंमें तुम मनुष्यके
पुत्रके दिनोंमेंसे एकको देखनेकी इच्छा करोगे औ देखने न
२३ पाओगे। जब लोग तुम्हें कहेंगे, देखो यहां है अथवा देखो
२४ वहां है तो मत निकलो औ न पीछे हो लेओ। क्योंकि जैसा
बिजली आकाशमें एक ओरसे निकलके दूसरी ओर जायके
२५ चमकती है तैसा मनुष्यके पुत्र अपने दिनमें होगा। परंतु
पहिले उसको बड़ा दुख भोगना होगा और इससमयके
२६ लोगोंसे नकारा जाना होगा। जैसा नोहके दिनोंमें था वैसाही
२७ मनुष्यके पुत्रके दिनोंमें भी होगा। जबलग नोह जहाजपर
न चढ़ा था औ आंधीने आके सबोंको नष्ट न किया था तब

लग लोग भोजन पान औ बिवाह करनेमें औ बिवाह देनेमें लगे ऊये थे; और जबलग लोटने सीदोम नगरसे न निकला २८ था औ आकाशसे आग औ गंधकने गिरके सबोंको नष्ट न किया था तब लग लोग भोजन पान करने औ बेचने कीनने औ २९ बोने औ घर बनानेमें लगे ऊये थे; इसीरीति मनुष्यके पुत्रके ३० प्रकाश होनेके समयमें भी होगा। उस दिनमें वह जो ३१ कोठेके उपर होवे औ उसकी सामग्री भीतर होवे सो कुछ लेनेको उतरके न आवे; और वह जो खेतमें होवे सो ३२ भी फिरके न आवे। लोट की स्त्रीका स्मरण करो। जो कोई ३३ अपने प्राणकी रक्षा करनेकी इच्छा करे सो उसे खोवेगा, और जो कोई अपने प्राणको गवांवे सो उसकी रक्षा करेगा। मैं ३४ तुमसे कहता ऊं, उसीरातमें दो मनुष्य एकही बिछौनेपर होंगे एक पकड़ा जायगा औ दूसरा छूट जायगा। दो स्त्री ३५ एक संग चक्की पीसतियां होंगीं, एक पकड़ी जायगी औ दूसरी छूट जायगी। दो पुरुष खेतमें होंगे, एक पकड़ा जायगा ३६ औ दूसरा छूट जायगा। तब उन्होंने पूछा, हे प्रभु, यह कहां ३७ होगा? उसने कहा, जहां लोथ है वहां गिद्ध एकठे होंगे।

१८ अठारहवां अध्याय।

बिधवाकी प्रार्थना का दृष्टान्त।

उसने इसलिये यह दृष्टान्त उन्हें कहा कि वे नित्य प्रार्थना १ करें औ ढीले न होवें। किसी नगरमें कोई न्यायी था जिसने २ ईश्वरको न डरा औ मनुष्यको न माना। उसी नगरमें कोई ३ बिधवाभी थी जिसने उसके निकट आयके कहा, हे न्यायी, दोहाई। उसने पहिले न सुना, परंतु पीछे अपने मनमें ४ कहा, जो मैं न ईश्वरको डरता औ न मनुष्यको मानता हूं तौभी मैं इस बिधवाका काम करूंगा, न होवे कि वह बारबार ५ आयके मुझे धुनी देवे। प्रभुने कहा, यह जो अधर्मी न्यायी कहता ६ है सो सुनो। और ईश्वर जो है क्या वह कुछ बिलम्ब करके ७ अपने प्यारे लोगोंकी दोहाई की बात न सुनेगा जो रातदिन

८ उसके समीप पुकारते रहते हैं? मैं तुमसे कहता हूं, वह उनका न्याय शीघ्र करेगा; परंतु जब मनुष्यका पुत्र आवेगा क्या वह पृथ्वीपर ऐसा बिश्वास पावेगा।

फिरूशी औ कर उगाहनेहारेका दृष्टान्त।

९ फिर उसने किसी किसीको जो अपनियेंको धर्मी जानके १० औरोंको तुच्छ करते थे यह दृष्टान्त कहा। दो मनुष्य, एक फिरूशी औ एक कर उगाहनेहारा, महामंदिरमें प्रार्थना ११ करनेको गये। फिरूशीने अलग खड़ा हो यह प्रार्थना किया, हे ईश्वर, मैं आपका धन्यबाद करता हूं कि मैं और मनुष्योंके समान नहीं हूं, मैं न लुटरा, न अन्यायी, न ब्यभिचारी, १२ और न इस कर उगाहनेहारेके समान हूं; मैं अठवारेमें दो बार उपवास करता हूं, औ अपने सब धनका दसवां भाग १३ दान करता हूं। परंतु कर उगाहनेहारेने दूरसे खड़ा हो स्वर्गकी ओर अपने नेत्र न उठाने सकता था परंतु अपनी छाती पीटके यह कहा, हे ईश्वर, मैं पापी हूं, मुझपर दया १४ कीजिये। मैं तुमसे कहता हूं, इन दोनोंमेंसे केवल कर उगाहनेहारा धर्मी गणित हो अपने घरमें गया क्योंकि सब कोई जो अपनेको बड़ा जानता है छोटा किया जायगा, और सब कोई जो अपनेको छोटा करता है बड़ा किया जायगा।

बालकोंके ग्रहण कर्नेका दृष्टांत।

१५ कोई कोई छोटे बालकोंको उसके समीप लाये कि वह १६ उन्हें छूवे; शिष्योंने यह देखके लानेहारोंको डांटा। यीशुने बालकोंको बुलायके कहा, छोटे बालकोंको मेरे निकट आने दो औ उन्हें बरजो मत क्योंकि ईश्वरके राजके अधिकारी १७ ऐसोंहीके हैं। मैं तुमसे सच कहता हूं, जो कोई बालकके समान हो ईश्वरके राज्यको ग्रहण न करे सो उसमें पैठने न पावेगा।

एक धनवान युवा अध्यक्षका बखान।

१८ प्रधानोंमेंसे किसीने उससे पूछा, हे परम गूरू, मैं क्या १९ करऊं कि अनन्त जीवनका अधिकारी होओं? यीशुने उससे

कहा, मुझको क्यों परम कहता है? ईश्वरके बिना कोई परम नहीं है; येही जो जो आज्ञा हैं सो तू जानता है, व्यभिचार २० न कर, नरहत्या न कर, चोरी न कर, झूठी साक्षी न दे, माता पिताका सन्मान कर। उसने कहा, इन सबोंको मैंने २१ अपने बालकालसे माना है। यीशुने ये बातें सुनके उससे २२ कहा, तुझे एक काम अबलों रह गया है, जो कुछ तेरा है सो बेचकर कंगालोंको बांट दे औ स्वर्गमें तुझको धन मिलेगा; फिर आके मेरे पीछे हो ले। वह यह सुनके अति कातर २३ हुआ क्योंकि वह बड़ा धनी था। यीशुने उसे बड़ा शोकित २४ देख कहा, धनवानोंको ईश्वरके राज्यमें प्रवेश करना कैसी कठिन है। धनवानका ईश्वरके राज्यमें प्रवेश करनेसे सूईके २५ छेदसे ऊंटका आना जाना सहज है। जिन्होंने यह सुना, २६ पूछा, तो किसका त्राण होगा? उसने कहा, जो कुछ मनुष्योंसे २७ अनहोना है सो ईश्वरसे अनहोना नहीं। पितरने कहा, २८ देखो, हमने सब कुछ त्यागके आपके पीछे हो लिया है। उसने कहा, मैं तुमसे सच कहता हूं, ऐसा कोई नहीं है २९ जिसने ईश्वरके राज्यके लिये घर अथवा माता अथवा पिता अथवा भाई अथवा स्त्री अथवा सन्तानको त्यागा है जो इस ३० कालमें इनसे अधिक औ परलोकमें अनन्त जीवन प्राप्त न होगा।

ख्रीष्टका बिषयमें भविष्यद्वाक्य।

फिर उसने बारह शिष्योंको बुलाके कहा, देखो, हम यिरू- ३१ शालम नगरको जाते हैं; और सब कुछ जो मनुष्यके पुत्रके बिषयमें भविष्यद्वक्ताओंसे लिखा गया है सो संपूर्ण किया जायगा; क्योंकि वह अन्य देशियोंके हाथोंमें सोंपा जायगा, ३२ औ वे उसकी हांसी करेंगे, औ दुर्दशा करेंगे, औ उस पर थूकेंगे; औ कोड़े मारके उसको मारडालेंगे; परंतु तीसरे ३३ दिन वह फिर जी उठेगा। उन्होंने इन बातोंमेंसे कुछ न बूझा ३४ और यह बात उनसे छिपी थी और जो कहा गया था उन्होंने न जाना।

एक अंधे भिखारीको जोत देनी।

३५ जब वह यिरिहो नगरके निकट पहुंचा तब कोई अंधा
३६ मनुष्य बाटकी ओर भीख मांगने बैठा था; उसने लोगोंके
३७ चलनेका शब्द सुनके पूछा, यह क्या है? लोगोंने कहा, नासि-
३८ रतीय यीशु चला जाता है, तब उसने ऊंचे शब्दसे कहा, हे
३९ दायूदके सन्तान यीशु, मुझ पर दया कीजिये। उन्होंने जो
आगे चले जाते थे उसको डांटके कहा, चुप रह; परंतु
उसने और चिल्लायके कहा, हे दायूदके सन्तान, मुझपर दया
४० कीजिये। तब यीशुने खड़ा होके उसको अपने निकट लानेकी
४१ आज्ञा दिई। जब वह आया था यीशुने उससे पूछा, तू क्या
चाहता है? मैं तेरे लिये क्या करूं? उसने कहा, हे प्रभु,
४२ मुझको नेत्र दीजिये। यीशुने उससे कहा, अपने नेत्र पा,
४३ तेरे बिश्वासने तुझे बचाया है। उसने तुरंत अपने नेत्र पाये
औ ईश्वरकी स्तुति करता हुआ यीशुके पीछे हो लिया; यह
देख सब लोग ईश्वरकी बड़ाई किई।

१९ उन्नीसवां अध्याय।

सक्किय नामक कर उगाहनेहारेका बखान।

१ जिस समय यीशु यिरिहो नगरमें प्रवेश करके निकल
२ जाता था। देखो, वहां सक्किय नाम जो कर उगाहनेहारोंका
३ प्रधान था औ धनवान भी था। उसने यीशुको देखनेकी इच्छा
किई कि वह किस प्रकारका मनुष्य है परंतु भीड़के लिये उसको
४ देखने न सकता था क्योंकि वह आपही नाटा था। इससे
जिस पथमें यीशुका जाना हुआ वह उसमें आगे दौड़के
५ उसे देखनेको किसी गूलरके पेड़पर चढ़ा। यीशुने उस स्थानमें
पहुंचके उपर दृष्टि करके उसको देखके कहा, हे सक्किय,
६ शीघ्र उतर आ, आज तेरे घरमें मेरा रहना होगा। उसने
७ तुरंत उतरके आनंदसे उसको ग्रहण किया। यह देखके
सबोंने कुड़कुड़ाके कहा, वह किसी पापीके घरमें पाहुन होने
८ जाता है। सक्कियने खड़ा होके प्रभुसे कहा, देखो, हे प्रभु,

में अपने धनका आधा कंगालोंको दिया करता हूं और जो मैंने झूठ बनायके किसीसे कुछ ले लिया है तो उसको चौगुणा फिर दिया करता हूं। तब यीशुने उसको कहा, आज ९ इस घरमें त्राण पऊंचा है जिसहेतु वहभी इब्राहीमका पुत्र है क्योंकि मनुष्यका पुत्र खोये ऊयोंको ढूंढने औ बचाने १० आया है।

एक बडे धनवानके दश दासोंका दृष्टांत।

वह यिरूशालम नगरके निकट था औ लोग समझते थे ११ कि ईश्वरका राज अभी प्रकाश होगा, इसके लिये उसने सुननेहारोंसे यह दृष्टांत कहा, कोई बड़ा मनुष्य राज पद लेनेको १२ औ फिर आनेको दूर देशको चले जानेपर था। इससे उसने १३ अपने सेवकोंमेंसे दसको बुलायके उन्होंको दस मोहर देके कहा, जबलग मैं फिर न आऊं तबलग बैपार करो। परंतु १४ उसके प्रजाओंने उससे शत्रुता रखते थे इसलिये उन्होंने उसके पीछे यह संदेश भेजा कि हमपर राज करनेको ऐसे मनुष्यको नहीं चाहते हैं। वह राज पद पाकर फिर आया तब १५ उसने कहा, उन सेवकोंको बुलाओ जिन्होंको मैंने धन दिया कि मैं जानऊं कि एकएकने कितना कमाया है। तब पहिलेने १६ आके कहा, हे प्रभु, मैंने आपकी मोहरसे दस मोहर कमाये हैं। उसने कहा. धन्य, हे उत्तम सेवक, तू बऊत थोड़ेमें सच्चा ऊआ १७ है, दस नगरोंका प्रधान हो। दूसरेने आके कहा, हे प्रभु, १८ मैंने आपकी मोहरसे पांच मोहर कमाये हैं। उसने उसको १९ भी कहा, तू पांच नगरोंका प्रधान हो। और तीसरेने आके २० कहा, हे प्रभु, वही मोहर जो मैंने आपसे पाया सो देख, मैंने उसको अंगोछेमें बांध रखी है क्योंकि मैं आपसे डरता २१ रहा इसलिये कि आप कठोर मनुष्य हैं; जो आपने नहीं रखा है सो उठा लेते हैं औ जो आपने नहीं बोवाये हैं सो कटवाते हैं। तब उसने उसे कहा, अरे दुष्ट सेवक, मैं तेरी बातसे २२ तेरा न्याय करूंगा; तू जानता था कि मैं ऐसा कठोर मनुष्य था कि जो मैंने नहीं रखा है सो उठा लेता हूं, औ जो मैंने नहीं

२३ बोवाया है सो काटवाता हूं सो तूने क्यों मेरा धन महाजनकी कोठीमें नहीं सोंपा कि मैं आयके अपनी मोहर लाभ समेत
२४ पाता? तब उसने उन्होंको, जो निकट खड़े होते थे, कहा, इससे मोहरको लेलेके उसीको देओ जिसकी दस मोहर हैं।
२५ उन्होंने कहा, हे प्रभु, उसकी दस मोहर हैं। सो मैं तुमसे
२६ कहता हूं सबको जिसका कुछ है दिया जायगा, औ जिसका कुछ नहीं है उससे वहभी जो उसका है ले लिया जायगा।
२७ मेरे उन शत्रुओंको जो मेरे अधिकारमें रहने नहीं चाहते थे मेरे सन्मुख लाके उन्हें मार डालो।

ख्रीष्टका यिरूशालम नगरमें जाना।

२८ जब वह ये बातें कह चुका था तब वह यिरूशालम नगर
२९ को चलने लगा। बैथफगी औ बैथनियाके निकट पहुंच कर
३० जो जैतुन पर्बत पर है उसने अपने शिष्योंमेंसे दोको यह कहके भेजा, तुम उस गांवमें जो सन्मुख है जाओ और प्रवेश करते ही तुम किसी बंधे हुये बच्चेको देखोगे जिसपर कोई
३१ मनुष्य अबलों नहीं चढ़ा है, उसे खोलके ले आओ। जो कोई तुमसे पूछे, क्यों बच्चेको खोलते हो तो कहो कि प्रभुको उसका
३२ प्रयोजन है। इसपर उन्होंने जो भेजे गये थे जाके वैसा पाया
३३ जैसा उसने कहा था। जब वे बच्चेको खोलते थे उसके स्वामि-
३४ योंने उन्हें कहा, बच्चेको क्यों खोलते हो? उन्होंने कहा,
३५ प्रभुको उसका प्रयोजन है। तब वे उसे यीशुके समीप लाया और अपने बस्त्रोंको बच्चेपर डालके यीशुको उसपर बैठाया।
३६ उसके जातेहीमें उन्होंने अपने बस्त्रोंको पथमें बिछाया। जब
३७ वह जैतुनके पर्बतके उतारतक पहुंचा शिष्योंका सब मंडली उनसब आश्चर्य कर्मोंके लिये जो उन्होंने देखा था आनंदित
३८ होके ईश्वरकी स्तुति ऊंचे शब्दसे करके यह कहा, वह राजा धन्य है जो प्रभुके नामसे आता है, स्वर्गमें कुशल और
३९ ऊंचे स्थानोंमें गौरब होवे। तब भीड़मेंसे किसी किसी फिरू-शियोंने उसको कहा, हे उपदेशक, अपने शिष्योंको डांटो।

उसने उत्तर दिया, मैं तुमसे कहता हूं, जो ये चूप हो रहें ४०
तो पत्थर पुकारेंगे।

यिरूशालमके भविष्यत् दुःखके बिषयमें खीष्टका बिलाप कर्ना।

निकट पहुंचने पर उसने यिरूशालम नगरको देखके उस ४१
पर रोके कहा, हाय हाय, जो तू, हां जो तू अपने इसी तेरे ४२
दिनमें अपनी मंगलकी बातें जानता तो—परंतु अब वे तेरे
नत्रसे छिपी हैं; तुझपर दिन आवेंगे जिन्होंमें तेरे शत्रु तेरी ४३
चारों ओर खाई खोदके तुझको घेरके सबओरोंसे रोकेंगे। वे ४४
तुझे और तेरे बालकोंको जो तुझमें हैं भूमिसे बराबर करेंगे,
और वे तुझमें पत्थर पत्थरपर न छोड़ेंगे क्योंकि तूने अपनी
कृपाके समयको न जाना है। तब वह महामंदिरमें जाके ४५
उन्हें जो उसमें मोल लेते औ बेचते थे यह कहके निकालने
लगा, लिखा है, मेरा घर प्रार्थनाका घर है परंतु तुमने उसे ४६
चोरोंका खोह किया है। वह महामंदिरमें भी दिन दिन ४७
उपदेश करता था; इसपर याजकों औ अध्यापकों औ लोगोंके
प्रधानोंने उसको मार डालनेका बिचार किया; परंतु क्या ४८
करना होगा सो वे न जानते थे क्योंकि सब लोग उसकी सुनने
पर लग रहते थे।

२० बीसवां अध्याय।

प्रधान पुरोहित औ अध्यापकोंको निरुत्तर कर्ना।

उनदिनोंमें एक दिन यीशु महामंदिरमें सुसमाचार प्रचार १
कर लोगोंको उपदेश देता था; उस समय प्रधान पुरोहित औ
अध्यापक लोग प्राचीनोंके संग उसके निकट आयके कहा, २
तू किसकी आज्ञासे ये काम करता है अथवा किसने तुझे
यह आज्ञा दिई है? सो हमसे कह। उसने उत्तर दिया, मैंभी ३
तुमसे एक बात पूछूंगा, मुझे उसका उत्तर दो। योहनकी ४
डुबकी ईश्वरकी आज्ञासे अथवा मनुष्योंकी आज्ञासे हुई।
उन्होंने आपसमें बिचार कर कहा, जो हम कहें कि वह ईश्वर ५
की आज्ञासे थी तो वह कहेगा, तो तुम क्यों उसका बिश्वास

६ न किया? जो हम कहें कि वह मनुष्योंकी आज्ञासे थी तो सब लोग हमको पत्थरांसे मारेंगे क्योंकि वे निश्चय जानते हैं
७ कि योहन भविष्यद्वक्ता था। तब उन्होंने उत्तर दिया, हम
८ नहीं जानते हैं कि वह कहांसे थी। इसपर यीशुने कहा, मैंभी तुमसे नहीं कहूंगा कि किसकी आज्ञासे मैं ये काम करता हूं।

दाखके उपवनका दृष्टांत।

९ तब वह लोगोंसे यह दृष्टांत कहने लगा, कोई मनुष्य दाखकी बारी लगाकर मालियोंको सोंपकर बहुत दिनोंतक
१० परदेशको चला गया। फलके समयमें उसने दाखकी बारीके फल कुछ पानेको मालियोंके निकट एक सेवकको भेजा; परंतु
११ उन्होंने उसे मारके छूछे हाथोंसे फिरा दिया। फिर उसने दूसरे सेवकको भेजा; उन्होंने उसे भी मारके अपमान कर
१२ छूछे हाथोंसे फिरा दिया। फिर उसने तीसरे सेवकको भेजा,
१३ और उन्होंने उसे भी घायल करके निकाल डाला। तब दाखकी बारीके स्वामीने कहा, मैं क्या करूंगा? मैं अपने प्यारे पुत्रको भेजूंगा, क्या जाने वे उसे देखके आदर करेंगे।
१४ परंतु मालियोंने उसे देख आपसमें बिचार करके कहा, यह अधीकारी है, आओ, हम उसे मार डालें तब अधिकार
१५ हमोंका हो जावे। सो उन्होंने उसे दाखकी बारीमेंसे निकालके मार डाला। इससे दाखकी बारीका स्वामी उनसे क्या करेगा?
१६ उसने आयके मालियोंका संहार कर औरोंको दाखकी बारी सोंपेगा; यह बात सुनके किसी किसीने कहा, सो ऐसा न
१७ होवे। यीशुने उनकी ओर दृष्टि करके कहा, यह जो लिखा है उसका अर्थ क्या है, जिस पत्थरको थवइयोंने निकम्मा जानेंगे
१८ सोई कोनेका सिरा होगा। सब कोई जो इस पत्थर पर गिरेगा सो चकनाचूर होगा, परंतु जिसपर वह गिरेगा सो धूलकी नाईं चूर्ण होवेगा।

प्रधान याजक औ अध्यापकोंका कर देनेके बिषयमें निरुत्तर करना।

१९ तब प्रधान पुरोहितों औ अध्यापकोंने उसी घड़ीमें उसे

पकड़ने की इच्छा किई परंतु लोगोंसे डरे क्योंकि वे जानते थे कि उसने यही दृष्टांत उनके बिषयमें कहा था। इस लिये २० उन्होंने अगोरके किसी भेदियोंको भेजा जो अपनियोंको छलसे धर्मी बनायके उसके बचनको पकड़े और इसी रीतिसे उसे देशाधिपतिके हाथ औ बशमें सोंप देवे। उन्होंने उससे २१ पूछा, हे उपदेशक, हम जानते हैं कि आप सच कहके सिखलाते हैं और मनुष्योंकी मुहचाह नहीं करके सचाईसे ईश्वरके मार्गका उपदेश करते हैं। कैसरको कर देना हमको २२ उचित है अथवा नहीं? सो कहीये। उसने उनकी दुष्टता २३ जानके कहा, क्यों मुझे परखते हो? मुझको एक सुकी दिख- २४ लाओ; देखके उसने कहा, किसकी मूर्त्ति औ किसका सिक्का ये है? उन्होंने कहा, कैसरका। उसने कहा, जो कुछ कैसरका है २५ सो कैसरको देओ, और जो कुछ ईश्वरका है सो ईश्वरको देओ। वे लोगोंके सन्मुख उसकी बातपर दोष नहीं लगाने २६ सकते थे और उसके उत्तरसे अचंभित होके चुप हो रहे।

गोरमेंसे जी उठनेके बिषयमें सिदूकियोंको निरुत्तर कर्ना।

सीदुकी लोगोंमेंसे जो गोरमेंसे जी फिर उठनेकी बात २७ सच न जानते थे, किसी किसीने यीशुसे पूछा, हे उपदेशक, २८ मूसाने हमारे लिये यह लिखा है, जौ किसीका भाई निःसं- तान हो मरे तो उसका भाई उसकी स्त्रीसे बिवाह कर अपने भाईके लिये सतांन उत्पन्न करे। सात भाई थे; उनमें से बड़े २९ भाईने विवाह कर निःसंतान हो मर गया। फिर दूसरे भाई ३० उसकी स्त्रीसे बिवाह कर निःसंतान हो मर गया। पीछे ३१ तीसरे भाईने उसीसे बिवाह किया; इसी रीतिसे सातोंने उससे बिवाह करके निःसंतान होके मर गये। पीछे स्त्री भी ३२ मर गई। तो गोरमेंसे जी फिर उठनेके समय वह किसकी ३३ स्त्री होगी? क्योंकि वह सातोंकी स्त्री थी। तब यीशुने उत्तर ३४ दिया, इस जगतके लोग बिवाह कर्ते हैं औ बिवाहमें दिये जाते हैं; परंतु गोरमेंसे जी फिर उठनेके पीछे जो लोग उस ३५ जगतको पानेके योग्य गणित होंगे, वे न बिवाह करेंगे औ न

३६ बिवाहमें दिये जायेंगे क्योंकि ईश्वरके संतान गोरमेंसे जी फिर उठनेके पीछे स्वर्गके दूतोंके समान होके फिर मरने नहीं
३७ सकते हैं। मूसाने भी झाड़ीके निकट होके इनबातोंके कहनेसे दिखाया कि मृतक लोग फिर जीके उठेंगे, हे इब्राहीमका ईश्वर औ इसहाकका ईश्वर, औ याकूबका ईश्वर,।'
३८ ईश्वर मृतकोंका ईश्वर नहीं, परंतु जीवतोंका ईश्वर है
३९ क्योंकि उसके निकट सभी जीवते हैं। यह सुन अध्यापकोंमेंसे किसी किसीने कहा, हे उपदेशक, आपने भला उत्तर
४० दिया है। इस पीछे किसीको उससे प्रश्न करनेका साहस न हुआ।

अपने बिषयमें अध्यापकोंको निरुत्तर करना।

४१ उसने उनसे पूछा, लोग क्योंकर कहते हैं कि ख्रीष्ट दायू-
४२ दका संतान है? दायूद आपही भजनके पुस्तकमें यह कहता
४३ है, परमेश्वरने मेरे प्रभुसे कहा, जब लग मैं तेरे शत्रुओंको तेरे चरणोंकी चौकी न करूं तब लग मेरी दाहनी ओर बैठ रह;
४४ जो दायूद उसको प्रभु कहे तो वह उसका संतान क्योंकर है?
४५ जब सब लोग सुनते थे, उसने अपने शिष्योंसे कहा, अध्यापकोंसे सावधान होओ, वे लंबे बस्त्रमें चलना फिरना, हाटोंमें
४६ नमस्कारों, मंदिरोंमें ऊंचे आसनों और जेवनारोंमें प्रधान
४७ स्थानोंको चाहते हैं; वे भी बिधवाओंके सब धन निगलते और छलसे बड़ी बेरलग प्रार्थना करते हैं; वे अधिक दंड पावेंगे

२१ एक्कीसवां अध्याय।

एक बिधवाकी दो छदाम कोषमें देनेका बखान।

१ यीशुने नेत्र उठायके देखा कि धनवान लोग महामंदिरके
२ भंडारमें अपने दान डालते हैं। उन्होंके बीचमें कोई कंगाल
३ बिधवा भी आय उसमें दो छदाम डालती है। इसपर उसने कहा, मैं तुमसे सच कहता हूं, इस कंगाल बिधवाने सबोंसे
४ अधिक डाला है क्योंकि इनसबोंने अपने बहुत धनसे ईश्वरके

दानोंके बीचमें कुछ कुछ डाला है परंतु इसने अपने घटावसे अपनी सारी पूंजी डाली है।

महामंदिर औ नगर बिनाश का भविष्यद्वाक्य।

जब कोई कोई महामंदिरके विषयमें यह कहते थे, कैसे ५ सुन्दर पत्थर ये हैं औ कैसे दानोंसे वह सिंगार किया गया है, उसने कहा, क्या तुम इनसबोंको देखते हो? दिन आवेंगे, ६ जिन्होंमें एक पत्थर दूसरे पत्थर पर न छुटेगा, सब गिराया जायेगा। तब उन्होंने उससे पूछा, ये कब होंगे? औ इन्होंका ७ चिन्ह क्या होगा। उसने कहा, सावधान होओ कि भुलाये ८ नहीं जावो क्योंकि बहुतेरे मेरे नाम लेके यह कहके आवेंगे मैं वही हूं, समय निकट है; परंतु तुम उनके पीछे मत जाइयो। जब तुम जोधनों औ दंगाओंकी बातें सुनोगे घबरा- ९ इयो मत क्योंकि पहिले उन्होंका होना अवश्य है परंतु इनके होने पर अंत नहीं होगा।

शिष्योंके दुःखका बर्णन।

फिर उसने उन्हें कहा, उस समय देशके बिरुद्ध देश औ १० राजके बिरुद्ध राज चढ़ेंगे, औ नाना स्थानोंमें बड़े भूडोल औ ११ अकाल औ मरी होंगे, औ आकाशमंडलसे भयंकर दर्शन औ बड़े चिन्ह प्रकाशित होंगे। परंतु इनसबोंसे पहिले लोग १२ तुमको पकड़के सतावेंगे और मेरे नामके लिये राजाओं औ अध्यक्षोंके सन्मुख ले जाकर मंदिरों औ कैदखानोंमें डालेंगे। साक्षीके लिये यही सब तुमपर होंगे। उस समयमें कौनसा १३ उत्तर देना होगा, इसकी चिंता न करियो; यह अपने मनमें १४ ठानो। क्योंकि मैं तुमको ऐसा बचन औ ऐसा ज्ञान दूंगा कि १५ तुम्हारे सब बैरी न उत्तर दे सकेंगे न तुम्हारे साम्हना कर सकेंगे। माता पिता औ भाई औ कुटुम्ब औ बंधु तुमको १६ पकड़वायेंगे। औ तुममेंसे किसी किसीको मार डालवायेंगे। १७ और मेरे नामके लिये सबोंसे तुम घिन्नित हो जावोगे। परंतु १८ तुम्हारे सिरका एक बाल नष्ट न होगा; धीरज करनेसे अपने १९ प्राणोंकी रक्षा करोगे।

लोगोंके दुःखका भविष्यद्वाक्य।

२० जब तुम यिरूशालम नगरको सेनाओंसे घेरा हुआ देखो तो
२१ जानो कि उसका उजाड़ होनेका समय हुआ है। तब वे जो
यिहूदा देशमें होवें पर्वतोंको भागें; वे जो नगरमें होवें
उसमेंसे निकल जावें; और वे जो गांवओंमें होवें नगरमें
२२ प्रवेश न करें क्योंकि यही समय पलटा लेनेका समय होगा
२३ कि सब कुछ जो लिखा है पूरा होवे। हाय हाय उनपर
जो उनदिनोंमें गर्भवती औ दूधपिलानेहारी हों क्योंकि
२४ देशपर बड़ा संकट औ लोगोंपर बड़ा कोप होंगे। लोग
खड्गकी धारसे मारे पड़ेंगे, औ बंधुए हो सब देशोंमें ले
जायेंगे; और जब लग अन्यदेशियोंका समय पूरा न होवे तब
२५ लग यिरूशालम उन्होंसे लताड़ा जायगा। सूर्य औ चंद्र औ
तारोंमें लक्षण दिखाई देंगे, पृथ्वीके सब देशोंके लोगोंपर घब-
राहटके संग क्लेश होगा, समुद्रके तरंगोंकी तर्जन गर्जन होगी,
२६ मनुष्य उन बिपतोंकी, सो पृथ्वीपर आनेहारी हैं भयसे औ
बाट जोहनेसे मृतक समान हो जायेंगे क्योंकि आकाशमंडलके
२७ ग्रह डिग जायेंगे। और वे उस समयमें मनुष्यके पुत्रको
२८ पराक्रम औ महातेजके संग मेघपर आते देखेंगे। परंतु जिस
समयमें इनसबोंका आरंभ होगा उसी समयमें तुम सीधे बैठके
अपने सिर चढ़ाओ क्योंकि तुम्हारा उद्धार समीप है।

गुलरके पेड़का बखान।

२९ उसने उन्हें यह दृष्टांत कहा, गुलर औ सब गाछोंको देखो;
३० जब कोंपलें निकलती हैं तब तुम देखकर आपही जानते हो
३१ कि ग्रीष्मकाल निकट है। इसीरीति जब तुम देखते हो कि
ये सब बातें होती हैं तो जानो कि ईश्वरका राज निकट है।
३२ मैं तुमसे सच कहता हूं, जब लग ये सब पूरे न होवें तबलग
३३ इस समयके लोग बीत नहीं जायेंगे। आकाश औ पृथ्वी टल
३४ जायेंगे परंतु मेरी बातें न टलेंगीं। सावधान होओ कि तुम
अफराई औ मद्यपन औ इस संसारकी चिंताओंसे न भर
३५ जावो और वह दिन तुमपर अचांचक न आवे। क्योंकि वह

फंदेकी नाईं संसारके सब लोगोंपर आवेगा। इस लिये ३६ प्रार्थना करनेको नित्य जागते रहो कि तुम उन बिपतोंसे, जो आनेहारी हैं, बचके मनुष्यके पुत्रके सन्मुख खड़े होनेके योग्य गिने जाओगे।

महामंदिरमें खीष्टके आने जाने का बर्णन।

यीशु दिन दिनको महामंदिरमें उपदेश करके रात रातको ३७ उस पर्बतपर, जो जैतुन कहलाता है, जाय बास किया करता था। और भोरको सबलोग उसकी सुननेको महामंदिरमें ३८ उसके निकट आय रहते थे।

२२ बाईसवां अध्याय।

खीष्टके विरुद्ध बिचार कर्ना।

बिन खमीर रोटीका पर्ब, जो निस्तार पर्ब कहलाता है, १ निकट आया। उसी समयमें महा पुरोहितों औ अध्यापकोंने २ बिचार किया कि उसको किसरीतिसे मार डालें परंतु वे लोगोंसे डरते थे। तब शैतान यऊदामें, जो इस्कारयोतीय ३ कहलाता है, औ उनबारह शिष्योंमेंसे एक था, पैठ गया। वह जाके प्रधान याजकों औ दारोगोंसे बात किई कि वह ४ उसे किस रीतिसे उनके हाथोंमें सोंप देवे। वे तुष्ट हो ५ उसको रूपैये देने कहा। तब उसने अंगीकार करके अवसर ६ ढूंढा कि उसे बिन भीड़भार उन्होंके हाथोंमें सोंप देवे।

निस्तार पर्बका भोज बनाना।

बिन खमीर रोटीके दिनमें अर्थात जिस दिनमें निस्तार ७ पर्बकी भेड़ीका बच्चा मार डालना होता था, उसीदिनमें यीशुने ८ पितर औ योहनको यह कहिके भेजा, तुम जाके हमारे लिये निस्तार पर्बकी सामा बना दो। उन्होंने उससे पूछा, आप ९ कहां चाहते हैं कि हम जाके बना देवें। उसने उनसे कहा, १० देखो, नगरमें जातेही कोई जन जलका घड़ा ढोके तुमको मिलेगा; उसके पीछे पीछे चलो और जिसघरमें वह जावे उसीमें तुम भी जाके घरके स्वामीसे यह कहो, गूरूजी आप ११

को यह कहता है, अतिथि शाला कहां है जिसमें मैं अपने
१२ शिष्योंके संग निस्तार पर्ब्बका भोजन करूं? इसपर वह तुम्हें
दो तलेकी किसो सजी सजाई ऊई बड़ी कोठरी दिखाई देगा
१३ वहां बनाओ। उन्होंने जाके उसकी बातके अनुसार मिलके
वहां ही निस्तार पर्ब्बकी सामा बना दिई।

प्रभुको रातके भोजका वर्णन।

१४ जब समय पऊंचा तब यीशुने बारह प्रेरितोंके संग भोजन
१५ पर बैठके कहा, मैंने दुःख भोगनेके पहिले तुम्हारे संग इसी
१६ निस्तार पर्ब्बका भोजन करनेकी बड़ी इच्छा किई है। मैं तुमसे
कहता हूं, जबलग ईश्वरके राजमें यह पूरा न होवे तब लग
१७ मैं भोजन फिर नहीं करूंगा। तब उसने कटोरा पाके ईश्वर
का धन्यबाद कर उनको दे कहा, इसे लेके आपसमें बांटो।
१८ मैं तुमसे कहता हूं जबलग ईश्वरका राज स्थापित न होवे
१९ तबलग मैं दाखका रस फिर नहीं पीऊंगा। फिर उसने
रोटी ले ईश्वरका धन्यबाद कर तोड़के उनको दे कहा, यह
मेरा शरीर है जो तुम्हारे लिये दिया गया है, मेरे स्मरण
२० करनेको यह भोजन किया करो। इसीरीति उसने खानेके
पीछे कटोरा भी देके कहा, यही कटोरा जो है सो नया
नियमका लोऊ है जो तुम्हारे लिये बहाया गया है।

यहूदासे खीष्टके पराए हाथमें पड़नेका समाचार।

२१ देखो, जो जन मुझको पकड़वावेगा उसीका हाथ मेरे संग
२२ मेजपर है। जिस रीति ठहराया गया है उस रीति मनुष्यके
पुत्रकी गति होवेगी, सो सत्य है, परंतु हाय हाय उस मनुष्य
२३ पर जिससे वह पकड़वाया जायगा। वे यह सुनके आपसमें
पूछने लगे, हमोंमें वह कौन है जो ऐसा कर्म करेगा।

नम्र होनेका उपदेश।

२४ शिष्योंके बीचमें यही बिबाद ऊआ था कि हमोंमें कौन
२५ सबसे बड़ा दिखलाई देता है। इसलिये उसने उनसे कहा,
अन्यदेशियोंके राजा उनपर राज करते हैं औ वे जो अधिकार
२६ रखते हैं दाता कहलाते हैं। परंतु तुम्होंके बीचमें ऐसा न

हो; जो तुम्होंके बीचमें बड़ा होगा सो छोटेकी नाईं होवे औ जो उपदेशक होगा सो सेवकके समान होवे। २७ वही जो भोजन पर बैठता है अथवा वही जो सेवकाई करता है इन दोनोंमें कौन बड़ा है? क्या वही बड़ा नहीं है जो भोजनपर बैठता है? परंतु मैं तुम्हारे बीचमें सेवककी नाईं हूं। २८ तुम वेही हो जो मेरे परीक्षाओंमें मेरे संग रहे हो; २९ इसलिये जैसा मेरे पिताने मुझको राज दिया है तैसा मैं भी तुमको राज दूंगा; ३० तुम मेरे राजमें मेरे मेजपरसे खा पीओगे औ सिंहासनोंपर बैठ इसराईलके बारह बंशोंका न्याय करोगे।

पितरके अस्वीकार कर्नेका समाचार।

३१ प्रभुने कहा, हे शिमोन, देखो, जैसा लोग सूपमें गेहूं फटकते हैं तैसाही शैतान तुझको फटकने चाहता है ३२ परंतु मैंने तेरे बिषयमें प्रार्थना किई है कि तेरा बिश्वास न घटे; जब तू फिराया हुआ है अपने भाईयोंके मन स्थिर कर। ३३ उसने कहा, हे प्रभु, मैं आपके संग कैदखानेमें जानेको औ मृत्युका दुःख भोगनेको लैस हूं। ३४ उसने कहा, हे पितर, मैं तुझको कहता हूं, इसी रातमें कुक्कुटके बोलनेके पहिले तू तीन बार मुकरेगा कि तू मुझको जानता है।

शिष्योंसे प्रश्न कर्नी।

३५ उसने उनसे पूछा, जिस समय मैंने तुम्हें बिन थैली, बिन झोली, औ बिन जूती भेजा क्या उस समय तुमको कुछ घाटा हुआ? वे बोले, कुछ नहीं। ३६ उसने कहा, अब जिसकी थैली वा झोली है सो उसे ले ले औ जिसका खड्ग नहीं है सो अपने बस्त्र बेचके एकको मोल लेवे। ३७ मैं तुमसे कहता हूं यह जो लिखा गया है कि वह अपराधियोंके संग गिना जायगा सो मेरे बिषयमें पूरा होना पड़ता है क्योंकि जो कुछ मेरे बिषयमें है उसका अंत होगा। ३८ तब वे बोले, हे प्रभु, देखो, यहां दो खड्ग हैं; उसने कहा, बहुत हैं।

उपवनमें दुःख पाना।

३९ वह बाहिर निकलके अपने व्यवहारके अनुसार जैतून पर्बत पर गया औ उसके शिष्य उसके पीछे हो लिये।
४० उस स्थानमें पहुंचकर उसने उनसे कहा, प्रार्थना करो कि
४१ परीक्षामें न पड़ो। तब वह उनसे एक ढेला फेंकनेके दूरपर
४२ गया औ घुटने टेकके यही प्रार्थना किई, हे पिता, जो आपकी इच्छा होवे तो इसी कटोरेको मुझसे दूर कीजिये तौ भी मेरी इच्छाके अनुसार नहीं परंतु आपकी इच्छाके
४३ अनुसार होवे। इसपर किसी दूतने उसको सामर्थ देनेको
४४ स्वर्गसे दिखाई दिई। उसने अत्यंत क्लेशसे व्याकुल हो ऊंचे शब्दसे प्रार्थना किई; औ उसके पसीना लोहूके बड़े
४५ बूंदोंके तुल्य भूमिपर गिरा। वह प्रार्थना करके उठकर अपने शिष्योंके निकट आया औ उन्हें उदासीसे सोते देख
४६ कहा, क्यों सोते हो? उठके प्रार्थना करते रहो कि परीक्षामें न पड़ो।

यहूदाक बिश्वासघात करना।

४७ जब वह यह कहता ही था, देखो, बड़ी भीड़ आई जिसके आगे यहूदा नाम, जो बारह शिष्योंमेंसे एक था,
४८ चलता था; वही यीशुके चुमा लेनेको निकट आया। यीशुने कहा, हे यहूदा, क्या तू मनुष्यके पुत्रको चुमा लेके पकड़वाता
४९ है? जब उन्होंने जो यीशुके संग थे देखा कि क्या होनेपर है
५० तो उसे कहा, हे प्रभु, क्या हम खड्गसे मारें। इसपर उनमेंसे किसीने प्रधान पुरोहितके सेवकको मारके उसके दहिना कान
५१ उड़ा दिया। यीशुने कहा, रहने दो; और यह कहके उसने
५२ सेवकके कान छूके चंगा किया। तब उसने प्रधान याजकों औ महामंदिरके दारोगों औ प्राचीनोंको जो उसके समीप थे, कहा, क्या तुम मुझे चोरके ऐसे पकड़नेको खड्ग औ लाठियां
५३ लेके निकले हो? जिस समय मैं दिन दिन महामंदिरमें तुम्हारे संग था उसी समय तुम्होंने मुझपर हाथ न डाला;

परंतु यही घड़ी तुम्हारी ही है औ यही अधिकार अंधकार ही का है।

पितरका खीष्टको अस्वीकार कर्ना।

तब वे उसे पकड़के महापरोहितके घरमें ले गया। पितर ५४ दूरसे उसके पीछे हो लिया। वे अंगनाके बीचमें आग ५५ सुलगायके एकठे बैठते थे; पितर आयके उन्होंके साथ बैठ गया। किसी लौंडीने उसे आगके समीप बैठते देख उसपर ५६ दृष्टि कर कहा, यह भी यीशुके संग था। उसने मुकरके ५७ कहा, हे नारि, मैं उसको नहीं जानता। थोड़ी बेर पीछे ५८ दूसरेने उसको देख कहा, तू भी उनमेंसे है। पितरने कहा, हे मनुष्य, सो नहीं। घड़ी एक बीते एक औरने निश्चय करके ५९ कहा, सत्य है यह भी उसके संग था, यह गालीली है। पितरने कहा, हे मनुष्य, जो तू कहता है सो मैं नहीं जानता। ६० उसके यह कहते ही कुक्कुट बोला। तब प्रभुने फिरके पितर ६१ पर दृष्टि किई। इसपर पितरको चेत आया कि प्रभुने कहा था, कुक्कुट बोलनेके पहिले तू तीन बार मुझे मुकरेगा। ६२ तब पितर बाहिर जाके बहुत रोया।

खीष्ट पर हंसना औ उसको मारना।

जिन्होंने यीशुको पकड़ा था वे उसे मारके ठट्ठा करने ६३ लगे। उन्होंने उसके नेत्रोंपर पट्टी बांध थपेड़े मार कहा, ६४ गिनके बोल, किसने तुझे मारा है? और बहुतसी और ६५ बातें करके उसकी निंदा किई।

विचारकर्ताके समीप अपनी साक्षी देनी।

भोर होतेही लोगोंके प्राचीनों औ प्रधान याजकों औ ६६ अध्यापकोंने एकठे होके उसे अपनी सभामें लाके पूछा, क्या तू खीष्ट है वा नहीं? सो हमसे कह। उसने कहा, जो मैं ६७ कहूं तो तुम बिश्वास न करोगे। और जो मैं कुछ पूछूं तो ६८ तुम न उत्तर देओगे न मुझे छुड़ा देओगे। इसके पीछे मनु- ६९ ष्यका पुत्र सर्वशक्तिमान ईश्वरकी ओर बैठेगा। सबोंने पूछा, ७० क्या तू ईश्वरका पुत्र है? उसने कहा, तुम सच कहते हो,

७१ मैं वही हूं। तब उन्होंने कहा, तो अब हमको और साक्षी क्या प्रयोजन है? हम आपही ने उसके मुखसे साक्षी पाई है।

२३ तेईसवां अध्याय।

पिलात् औ हेरोदके समीप खीष्टको ले जाना।

१ सभोंने उठके पिलात अध्यक्षके सन्मुख यीशुको ले जाके उस
२ पर दोष लगायके यह कहा, हमने इसको लोगोंको बहकाते, औ अपनेको खीष्ट राजा ठहरायके कैसर राजाको कर
३ दे देना बरजते, पाया है। पिलातने उससे पूछा, क्या तू यहूदियोंका राजा है? उसने उत्तर दिया, आप सत्य कहते हैं।
४ पिलातने प्रधान याजकों औ लोगोंसे कहा, मैं इस मनुष्यमें कुछ
५ दोष नहीं पाता। उन्होंने साहस करके कहा, यह गालील देशसे लेके यहांलों सारे यहूदा देशमें उपदेश देके लोगोंको
६ उस्काता है। पिलातने गालील देशका नाम सुनके पूछा, क्या
७ यह मनुष्य गालीली है। जब उसने जाना कि वह हेरोद राजाके अधिकारमेंसे है उसने उसे हेरोदके निकट जो उस
८ समयमें यिरूशालममें था भेज दिया। हेरोदने यीशुको देख बड़ा आनंदित हुआ क्योंकि वह उसके बिषयमें बहुत बात सुनके बहुत दिनोंसे उसको देखा चाहता था औ भरोसा
९ रखता था कि उसके किसी आश्चर्य्य कर्मको देखे। हेरोदने
१० उससे बहुत बातें पूछा परंतु उसने उत्तर नहीं दिया। फिर प्रधान याजकों औ अध्यापकोंने खड़े हो साहस कर उसपर
११ दोष लगा दिया। और हेरोदने अपने सिपाहियोंके संग उसको तुच्छ जानके हंसीकी रीतिसे उसको राजाके बस्त्र पहिराके
१२ पिलातके निकट फिर भेजा। उसी दिनमें पिलात औ हेरोदने, जिन्होंके बीचमें शत्रुता हुई थी, आपसमें मित्रता किई।

यीशु पर पिलातके बिचार से दंडकी व्यवस्था देनी।

१३ पिलातने प्रधान याजकों औ प्रधानों औ लोगोंको एकठे
१४ बुलायके उन्होंसे कहा, तुम लोगोंने इस मनुष्यको मेरे निकट लायके कहा कि हमने इसको लोगोंको बहकाते पाया है;

देखो, मैंने तुम्हारे सन्मुख बिचार किया है औ उन दोषोंके बिषयमें जो तुमने उसपर लगा दिये हैं कुछ ही नहीं पाया है; न हेरोदने; क्योंकि मैंने तुमको उसीके निकट भेजा और १५ देखो, उसने भी उसमें कुछ पाया नहीं जो मृत्युके दंडके योग्य है। सो मैं उसे मार खिलवायके छुड़ा दूंगा। उसी समयमें १६ निस्तार पर्बके दिनोंमें यही रीति थी कि पिलात लोगोंके कह- १७ नेसे किसी बंदूआको छुड़ा दिया करता। इस हेतुसे उन्होंने १८ एकही बेर पुकारकर कहा, इसको लेजाके बरब्बाको छुड़ा दो। यही बरब्बा नाम कोई जन था जो किसी दंगे औ १९ हत्याके हेतुसे जो नगरमें ऊये थे कैदखानेमें डाला गया था। पिलातने यीशुको छुड़ा देनेकी इच्छा रखके लोगोंसे उसको २० छुड़ा देनेकी बात फिर कही। परंतु उन्होंने फिर पुकार कर २१ कहा, उसको क्रुशपर चढ़ाओ२। उसने तीसरी बार उनसे २२ कहा, यह क्यों है? उसने कौनसा कुकर्म किया है? मैंने उसमें मृत्युके दंडके योग्य कुछ न पाया है; मार खिलवायके मैं उसे छुड़ा दूंगा। परंतु वे ऊंचे शब्दसे चिल्लायके मांग रहे २३ कि वह क्रुशपर चढ़ाये जाय। सो पिलातने उनकी औ प्रधान २४ याजकोंकी बातोंसे लाचार होके मान लिया कि उनकी इच्छा के समान होवे। इससे उसने उसको जो दंगे औ हत्याके २५ हेतुसे कैदखानेमें डाला गया था अर्थात् वही जो उन्होंने मांग लिया था छुड़ाया और यीशुको उनकी इच्छापर सौंप दिया।

बिलाप करनेहारिणी स्त्रियोंके संग खीष्टकी कथा।

जब वे उसको ले जाते थे उन्होंने शिमोन कुरनीयको, जो २६ दिहातसे आता था, बेगारी लेके उसपर क्रुश धरा कि उसे यीशुके पीछे ले चले। बऊतसे लोग औ स्त्री भी, जो उसके २७ लिये छातियां पीटके रोती थीं, उसके पीछे हो लते थे। यीशुने स्त्रीओंकी ओर फिरके कहा, हे यिरूशालमकी २८ पुत्रिओ, मेरे लिये मत रोओ परंतु अपनियों औ अपने बाल- कोंके लिये रोओ; देखो, दिन चले आते हैं जिन्होंमें लोग २९ कहेंगे, धन्य वे हैं जो बांझ हैं, औ जो दूध नहीं पिलातियां

३० हैं। उसी समयमें भी वे कहेंगे, हे पर्बतो, हमोंपर गिरो, हे
३१ टीलो, हमोंको छिपाओ। जो वे हरे गाछपर ऐसे करें तो
३२ सूखेपर क्या होगा। उसके संग भी दो कुकर्मी क्रुशपर चढ़ाये
जानेको लिये जाते थे।

ख्रीष्टको क्रुश पर चढ़ाना औ उससे हंसी कर्ना।

३३ उस स्थानमें पऊंचकर जो खोपड़ी कहलाती है उन्होंने
उसको, औ उसके संग उन दो कुकर्मियोंको, एकको उसकी
दहिनी ओर औ दूसरेको उसकी बाईं ओर, क्रुशपर चढ़ाये।
३४ तब यीसुने कहा, हे पिता, उनको क्षमा कीजिये क्योंकि जो
वे करते हैं सो नहीं जानते हैं। उन्होंने चिट्ठी डालके उसके
३५ बस्त्रोंको बांट लिया। लोग खड़े होके देख रहते थे; प्रधा-
नोंने भी उनके संग हंसी करके कहा, उसने औरोंको बचाया
३६ जो वह ईश्वरका पयारा ख्रीष्ट है तो अपनेको बचावे। सिपा-
हीओंने भी निकट आके उसे सिरका दे हंसी करके कहा, जो
३७ तू यऊदियोंका राजा है तो अपनेको बचा। और यह पत्र जो
३८ युनानीय औ रोमीय औ इब्रानी बातमें था, उसके क्रुशके
सिरपर लगाया गया था कि यह यऊदियोंका राजा है।

क्रुश पर उसके संग दो चोरोंको चढाना।

३९ उन दो कुकर्मियोंमेंसे जो क्रुशपर चढ़ाये गये थे एकने उस
की निंदा कर कहा, जो तू ख्रीष्ट है तो अपनेको औ हमोंको
४० बचा। परंतु दूसरेने उत्तर देके उसको धमकायके कहा, क्या
४१ तू भी इसी दंडमें होके ईश्वरसे नहीं डरता है? हम तो
न्यायसे भोगते हैं क्योंकि हम अपने कुकर्मोंका फल पाते हैं,
४२ परंतु इसने कुछ अपराध नहीं किया है। तब उसने यीसुको
कहा, हे प्रभु, जब आप अपने राज्यमें आवेंगे तो मुझको
४३ स्मरण कीजिये। यीसुने उसको कहा, मैं तुझको सच कहता
हूं, आजही तू मेरे संग स्वर्ग लोकमें होगा।

ख्रीष्टका मरना।

४४ दो पहरसे लेके तीन पहरतक उस समस्त देशपर अंध-
४५ कार ऊआ; सूर्य्य अंधेरा हो गया औ महामंदिरकी ओटका

बस्त्र बीचसे फट गया। तब यीशुने ऊंचे शब्दसे चिल्लायके ४६ कहा, हे पिता, मैं अपने आत्माको आपके हाथोंमें सोंपता हूं, औ यही बात कहकर उसने अपने आत्मा छुड़ाया। इसपर ४७ उसी सुबेदारने जो वहां पहरा देता था यह सब देखकर ईश्वरकी स्तुति कर कहा, सत्य है, यही मनुष्य धर्मी था। सब ४८ लोग भी जो देखनेको निकले थे देखके छातियां पीटते हुये फिर गये। और उसके चिन्हार और वे स्त्रियां जो गालीलसे ४९ उसके पीछे आई थीं दूर खड़े होके देख रही थीं।

उसको गोरमें देना।

और देखो, युसफ नाम मंत्री जो यहूदा देशके अरिमा- ५० थिया नगरका था, औ ईश्वरके राजको बाट जोहता था; वह सज्जन औ धर्मी होके उन्होंके जुगत औ काममें न मिला ५१ था; उसने पिलातके निकट जाय यीशुकी लोथ मांगी। उसने ५२ उसे क्रुशपरसे उतारके बस्त्रमें लपेटके किसी गोरमें जो पत्थ- ५३ रमें खोदी गई थी औ जिसमें कोई नहीं रखी गई थी, धरी। वही दिन बनाउरीका दिन था औ बिश्रामवार ५४ समीप था। वे स्त्रियां जो उसके पीछे गालीलसे आई थीं ५५ पीछे पीछे जाय गोरको औ किस रीतिसे उसकी लोथ रखी गई थी देख लिई, औ फिरके सुगंध द्रव्य औ सुगंध तेल बनाय ५६ के आज्ञाके अनुसार बिश्रामके दिनमें आराम किया।

२४ चौबीसवां अध्याय।

स्वर्गके दूतसे खीष्टके गोरमें जी उठनेका समाचार प्रकाश होना।

अठवारके पहिले दिन अति भोरही येही स्त्रियां उन १ सुगंध द्रव्य जो उन्होंने बनाये थे लाके गोरको आईं और उनके संग कोई और स्त्रियां थीं। पहुंचतीही उन्होंने देखा २ कि गोरके द्वारसे पत्थर हट गया है; वे भीतर जाके प्रभु ३ यीशुकी लोथ न पाके बहुत घबराई हुईं; इसमें देखो, दो ४ मनुष्य चमकते बस्त्र पहिने हुये उनके निकट खड़े हुये; वे डर ५ गईं औ अपने मुंह धरतीपर झुका दिये; इसपर उन दो मनु-

न्हांने उनको कहा, तुम मृतकोंके बीचमें जीवतको क्यों ढूंढतियां
६ हो? वह यहां नहीं है, वह जी उठा है, चेत करो कि उसने
७ गालीलमें होके तुमसे यह कहा कि अवश्य है कि मनुष्यका पुत्र
पापियोंके हाथोंमें सोंपा जावे औ क्रुशपर चढ़ाया जावे औ
८ तीसरे दिन फिर जी उठे। तब उन्होंने उसकी बातोंका
चेत किया।

स्त्रियोंसे शिष्योंको खीष्टके जी उठनेका समाचार देना।

९ उन्होंने गोरसे फिर आके ग्यारह शिष्यों औ और सबोंको
१० ये सब बातें सुना दिईं। जिन्होंने प्रेरितोंको ये सब बातें सुना
दिईं वे येही हैं अर्थात मगदलिनी मरियम औ याकूबकी माता
११ मरियम औ और स्त्रियां जो उनके संग थीं। परंतु उनकी बातें
१२ कहानीसी शिष्योंको समझ पड़ीं औ उन्हें बिश्वास न किये। तब
पितर उठके गोरको दौड़ गया औ झुकके एक ओरमें बस्त्र
अकेला पड़ा हुआ देखा। इससे अचंभित होके चला गया।

इम्माऊ नगरमें दो शिष्योंका जाना औ खीष्टके संग भेंट होनी।

१३ देखो, उसी दिनमें उनमेंसे दो जन इम्मायु नाम गांवको
१४ जो यिरूशालमसे दो कोसपर है जाते थे औ उन सब बातों-
१५ पर जो हुईं थीं आपसमें बातचीत करते थे। जब वे इसी
रीतिसे आपसमें बातचीत और बिचार करते करते जाते थे
१६ यीशु आपही निकट आके उनके संग हो लिया। परंतु उनकी
दृष्टि ऐसी रोकी गई थी कि उन्होंने उसको नहीं पहिचाना।
१७ उसने उनसे कहा, ये बातें क्या हैं जो तुम उदास होके आपसमें
१८ करते करते चलते हो? तब क्लियपाने जो उनदोमेंसे एक था
उत्तर देके कहा, क्या तू यिरूशालममें ऐसा बिदेशी है कि उन
१९ बातोंको जो उसमें इनदिनोंमें हुई हैं जानता नहीं? उसने
उनसे पूछा, कौनसी बातें? उन्होंने कहा, यीशु नासरतीय की
बातें; जो भविष्यदक्ता था और ईश्वर औ सबलोगके सन्मुख
२० काममें औ बातमें सामर्थी था; क्योंकर प्रधान याजकों औ
हमारे प्रधानोंने उसे सोंप दिया कि उसपर मार डाले
जानेकी आज्ञा दिई जावे और क्योंकर उन्होंने उसे क्रुशपर

चढ़ाया है; हम भरोसा करते थे कि यह वही है जो इस्रायेली २१ लोगोंका उद्धार करेगा; इससे अधिक, जबसे ये सब हुए हैं आज तीसरा दिन है। और भी हमोंमेंसे किसी किसी २२ स्त्रियोंने हमको घबरा किये हैं; वे भोरको उसकी गोरको जाके उसकी लोथ न पाईं, और फिरके हमोंसे कहा कि २३ हमने स्वर्गके दूतोंका दर्शन पाया है जिन्होंने कहा कि वह जीता है। इसपर हममेंसे कोई कोई गोरको गये और जैसा २४ स्त्रियोंने कहा था तैसा पाया परंतु उसको न देखा। तब २५ यीशुने उनसे कहा, हे निर्बोध, तुम क्यों भविष्यद्वक्ताओंकी सब बातोंपर बिश्वास करनेमें ऐसे ढीले हो? क्या अवश्य २६ नहीं था कि ख्रीष्ट दुःख भोगकर अपने ऐश्वर्य्यमें प्रवेश करे? तब उसने मूसासे लेके सब भविष्यद्वक्ताओंलों उनबातोंका २७ अर्थ जो अपने बिषयमें लिखी गई थीं उन्होंको समझा दिया। इतनेमें वे उस गांवको पहुंचे जिसको वे जाते थे; २८ परंतु वह आगे जानेको हो लेता था। इसपर उन्होंने उसकी २९ बिनती कर कहा, हमारे संग रहीये, सांझ निकट है, दिन थोड़ा है; तब वह उनके संग रहनेको भीतर गया। उनके ३० संग भोजन पर बैठनेमें उसने रोटी ले ईश्वरका गुणानुवाद किया औ तोड़के उनको दिई। इससे उनके नेत्र खुलगये और ३१ उन्होंने उसको पहिचाना; परंतु वह उनकी दृष्टिसे अदृश्य हुआ। पीछे उन्होंने आपसमें कहा, जब वह हमसे मार्गमें ३२ बात करता औ ग्रंथोंका अर्थ समझा देता था, तो हमारे मन कैसा तपता था।

फिर उन दो शिष्योंका यिरूशालममें जाना।

वे उसी घड़ीमें उठके यिरूशालमको फिर गये; और ३३ ग्यारह शिष्योंको औ उन्हें जो उनके संग थे एकठे हो औ यह कहते हुये पाया, सत्य है, प्रभु उठा है औ शिमोनको ३४ दिखाई दिया है। तब उन दोनोंने भी मार्गकी बातें औ वह ३५ किस रीतिसे रोटीके तोड़नेमें पहिचाना गया बर्णन किई।

फिर उन दोनों शिष्योंको यिरूशालममें जा शिष्योंको समाचार देना।

३६ जब वे ये बातें कहते ही थे तो यीशु आपहीने उनके
३७ बीचमें आ खड़ा हो उनसे कहा, तुम्हें शांति होवे; वे उसे भूत
३८ जानकर भयमान हो थरथराने लगे। उसने उनसे कहा,
क्यों घबराये ऊए हो? और किस हेतुसे अपने मनमें संदेह
३९ रखते हो? मेरे हाथों औ मेरे पांवोंको देख लो कि मैं आपही
हूं; मुझको छूके देख लो; जैसा तुम मुझे होते देखते हो
४० तैसा भूतको मांस औ हड्डी नहीं होते हैं। उसने यह कहिके
४१ अपने हाथ पावोंको उन्हें दिखलाया। वे आनंदित औ अचं-
भित हो बिश्वास न करते थे तब उसने उनसे कहा क्या
४२ तुम्हारे यहां कुछ भोजन है? इसपर उन्होंने उसको थोड़ीसी
४३ भूनी मछली औ मधुका छत्ता दिया; उसने लेके उनके
४४ सन्मुख खाया। तब उसने उन्हें कहा, जो बातें मैंने तुम्हारे
संग रहते ऊए तुमसे कहीं सो येही हैं कि उचित है कि वेही
सब बात जो मेरे बिषयमें मूसाकी ब्यवस्था औ भविष्यद्वक्ताओं
४५ औ भजनोंके ग्रंथोंमें लिखी गई हैं पूरी होवीं। तब उसने
ग्रंथोंकी बातें समझनेकी बुद्धि उनको दिई और उन्हें कहा
४६ कि यों लिखा है औ इसी रीतिसे उचित था कि खीष्ट दुःख
भोगके तीसरे दिनमें गोरमेंसे जी उठे, और यिरूशालमसे
४७ लेके सब देशोंमें मन फिरानेकी औ पापोंके मोचनकी बात
४८ उसके नामसे प्रचार किई जावे। तुम भी इन बातोंके साक्षी
४९ हो। देखो, मैं अपने पिताकी बाचाको अर्थात पबित्र आत्माको
तुमपर भेजूंगा; इसलिये जबलग तुमको उपरसे सामर्थ न
मिले तबलग यिरूशालम नगरमें रहो।

शिष्योंके संग खीष्टकी भेट औ भोजन औ उन्हें उपदेश कर्ना खीष्टका स्वर्गमें जाना।

५० वह शिष्योंको बैथनिया नगरको बाहिर ले जाकर अपने
५१ हाथोंको उठाय आशीष करने लगा; आशीष करते करते

उनमेंसे अलग हो स्वर्गमें फिर चला गया। तब वे उसका ५२ भजन कर बड़े आनंदसे यिरूशालमको फिर आये; और ५३ नित्य नित्य महामंदिरमें जाके ईश्वरकी स्तुति औ धन्यबाद किया करते रहे। इति॥

योहन लिखित सुसमाचार।

१ पहिला अध्याय।

ख्रीष्टके ईश्वरत्वकी वार्त्ता।

१ आदिमें बचन था, और बचन ईश्वरके समीप था, और
२ बचन ईश्वर था। वही आदिमें ईश्वरके समीप था। सब कुछ
३ उससे ऊआ; एक वस्तु नहीं ऊई जो उससे नहीं ऊई।
४ उसमें जीवन था, और जीवन मनुष्योंका उजियाला था।
५ उजियाला अंधकारमें चमकता है, और अंधकारने उसीको
ग्रहण नहीं लिया है।

ईश्वरकी ओरसे योहन का प्रेरित होना।

६ ईश्वरकी ओरसे योहन नाम एक मनुष्य भेजा गया। वही
७ साक्षी देनेको आया कि उजियाला पर साक्षी देवे कि सब
८ मनुष्य उसके द्वारा बिश्वास करें। वह आपही उजियाला न
९ था परंतु उजियालेपर साक्षी देनेको आया। सत्य उजियाला
१० वही है जो जगतमें आ सब मनुष्योंको उजियाला देता है। वह
जगतमें था औ जगत् उसके द्वारा ऊआ परंतु जगतने उसको
११ नहीं चीन्हा। वह अपने अधिकारमें आया परंतु अपने प्रजाओं
१२ ने उसको नहीं माना। तौभी जितनोंने उसको माना अर्थात्
उसके नामपर बिश्वास किया, उसने उनको ईश्वरके संतान
१३ होनेका अधिकार दिया। उन्होंका जन्म न लोहूसे, न शरीरकी
इच्छासे, न मनुष्यकी इच्छासे ऊआ परंतु ईश्वरहीसे ऊआ।

ख्रीष्टके अवतार होनेकी वार्त्ता।

१४ बचन मनुष्य ऊआ औ हमोंके बीचमें बासा किया; और
हमने उसकी महिमा देखी अर्थात वही महिमा जो पिताके
१५ एकलौटेकी है; वह अनुग्रह औ सत्यतासे भरा था। योहनने
उसके बिषयमें प्रचार करके यही साक्षी दिई, यह वही है

जिसके बिषयमें मैंने यह कहा, जो मेरे पीछे आनेहारा है सो मुझसे आगे ऊआ है क्योंकि वह मुझसे पहिला था। और १६ उसकी भरपूरीसे हम सबोंने अनुग्रहपर अनुग्रह पाया है। मूसाके दारा व्यवस्था दिई गई; अनुग्रह औ सच्चाई यीशु खीष्ट १७ के दारा ऊये। किसीने ईश्वरको कभी नहीं देखा है; एकलौटे १८ पुत्रने जो पिताकी गोदीमें था उसने उसे प्रकाश किया है।

खीष्टके बिषयमें योहनका साची देनी।

जब यहूदियोंने यिरूशालमसे याजकों औ लेवियोंको योहन १९ के निकट यह पूछनेको भेजा, तू कौन है? उसने मान लेके, २० नाह न करके, मान लेके यही साची दिई, मैं तो खीष्ट नहीं हूं। फिर उन्होंने पूछा, तो तू कौन है? क्या तू एलिय है? उसने कहा, २१ सो तो नहीं। फिर उन्होंने पूछा, क्या तू वही भविष्यद्वक्ता है? उसने कहा, सो भी नहीं। तब उन्होंने कहा, जो तू है २२ सो बतला कि हम उनको जिन्होंने हमें भेजे हैं उत्तर पऊंचावें, तू अपने बिषयमें क्या कहता है? उसने कहा, मैं वही हूं २३ जिसके बिषयमें इशायिय भविष्यद्वक्ताने यह कहा है, दिहातमें किसीका शब्द यह पुकारता है, प्रभुके मार्गको बरोबर करो। वे जो भेजे गये थे सो फिरूशियोंमेंसे थे। फिर उन्होंने २४ पूछके कहा, जो तू खीष्ट नहीं, औ एलिय नहीं, औ वही २५ भविष्यद्वक्ता नहीं, तो क्यों डुबकी दिलाता है? योहनने उत्तर २६ देके कहा, मैं जलमें डुबकी दिलाता हूं, सत्य, परंतु जिसको तुम नहीं जानते हो सो तुम्हारे बीचमें खड़ा है अर्थात् वही जो २७ मेरे पीछे आके मुझसे आगे ऊआ है; उसकी जूतीका बंधन खोलनेके योग्य मैं नहीं हूं। यर्दन नदी पार बैथाबरामें जहां २८ योहन डुबकी दिलाता था ये सब बातें ऊईं।

योहनसे खीष्टके श्रेष्ठ होनेकी वाता।

दूसरे दिन योहन्ने यीशुको अपनी ओर आते देख कहा, २९ देखो, ईश्वरकी भेड़ीका बच्चा जो जगतके पापको ले जाता है सो यही है। यह वही है जिसके बिषयमें मैंने कहा, कोई ३० मनुष्य मेरे पीछे आता है जो मुझसे आगे ऊआ है क्योंकि वह

३१ मुझसे पहिला था। औ मैंने उसको नहीं चीन्हा परंतु इस्रायेली लोगोंको उसे प्रगट करानेको मैं जलमें डुबकी दिलाने
३२ आया हूं। योहनने साक्षी दे कहा, मैंने आत्माको कपोतकी
३३ भांति स्वर्गसे उतरते औ उस पर ठहरते देखा। औ मैं उसको नहीं चीन्हा परंतु जिसने मुझको जलमें डुबकी दिलानेको भेजा, उसने मुझे कहा, जिसपर तू आत्माको उतर्ते औ ठहरते देखे सो वही है जो पवित्र आत्मामें डुबकी दिलावेगा।
३४ सो मैंने देखके साक्षी दिई है कि यही ईश्वरका पुत्र है।

शिमोन् और आंद्रियके विषयका वर्णन।

३५ फिर दूसरे दिन योहनने दो शिष्योंके संग खड़े हो यिशुको
३६ फिरते देखके कहा, देखो, वही जो ईश्वरकी भेड़ीका बच्चा है
३७ सो यही है। वेही दो शिष्य उसकी बात सुनकर यीशुके पीछे
३८ चले। यीशुने फिरके उनको पीछे आते देखके कहा, तुम किसको ढूंढ़ते हो? उन्होंने कहा, हे रब्बि अर्थात् हे गुरू, आप
३९ कहां रहते हैं? उसने कहा, आकर देखो। तब उन्होंने जाके उसके रहनेका स्थान देखा औ उस दिन उसके संग रहे
४० क्योंकि दिनकी केवल दो घड़ी रह गईं। एक जो उन दोनोंमेंसे योहनकी बात सुनकर यीशुके पीछे चले सो शिमोन पितरका
४१ भाई आंद्रिय था। उसने पहिले अपने भाई शिमोनको पायके कहा, हमने ख्रीष्टको पाया है, जिसका अर्थ अभिषिक्त है।
४२ पीछे उसको यीशुके निकट लाया। यीशुने उसको देखके कहा, तू युनसका पुत्र शिमोन् है, तू कैफा कहलावेगा, जिसका अर्थ पत्थर है।

निथनेलका बखान।

४३ दूसरे दिन यीशुने गालीलको जाने ठहराया, और फिलिप
४४ को पाके उससे कहा, मेरे पीछे आ। फिलिप बैतसैदा नगरका रहनेहारा था जहां आंद्रिया औ पितर रहते थे।
४५ फिलिपने निथनेलको पायके कहा, हमने उसीको पाया है जिसके विषयमें मूसाने व्यवस्थामें औ भविष्यद्वक्ताओंने अपने ग्रंथोंमें लिखा है अर्थात यूसफका पुत्र नासरतीय यीशुको।

निथनेलने कहा, नासरत् नगरसे क्या कोई उत्तम जन उत्पन्न ४६ हो सक्ता है? फिलिपने उससे कहा, आके देखो। यीशुने ४७ अपनी ओर निथनेलको आते देखके कहा, देखो, एक सत्य इस्रायेली मनुष्य, जिसमें कुछ कपट नहीं है। निथनेल उससे ४८ बोला, आप मुझको कहांसे जानते हैं? यीशुने उत्तर दिया, फिलिपके तुझको बुलानेके पहिले, जिस समय तू गूलरके गाछ तले था, तब मैंने तुझको देखा। निथनेलने कहा, हे ४९ गुरु, आप ईश्वरके पुत्र हैं, आप इस्रायेली बंशका राजा हैं। यीशुने उत्तर दिया, क्या तूने इसलिये बिश्वास किया है कि मैंने ५० तुझसे कहा कि मैंने तुझे गूलरके गाछ तले देखा; तू इससे कुछ बड़ा देखेगा। फिर यीशुने उसे कहा, मैं तुमसे सचसच ५१ कहता हूं, इसके पीछे तुम स्वर्गका द्वार खुला हुआ औ ईश्वरके दूतोंको मनुष्यके पुत्र पर चढ़ते औ उतर्ते देखोगे।

२ दूसरा अध्याय।

खीष्टकी पहिली आश्चर्य क्रिया।

तीसरे दिन गालील् देशके कान्ना नगरमें किसीका बिवाह १ था औ यीशुकी माता वहां थी। उसी बिवाहमें यीशु औ २ उसके शिष्य भी बुलाये गये थे। जब दाखका रस थोड़ा हुआ ३ यीशुकी माताने उसे कहा, उनके समीप दाखका रस नहीं है। यीशुने कहा, हे नारि, तुझसे मुझे क्या काम है? मेरा ४ समय अबलग नहीं आया है। उसकी माताने सेवकोंसे ५ कहा, जो कुछ वह तुमसे कहे सो करो। वहां यहूदियोंके ६ शुद्ध कर्नेकी व्यवस्थाके अनुसार पत्थरके छः मटके थे जिस जिसमें एक मनकी ऐसी समाई थी। यीशुने इन्हीं सब ७ मटकोंको जलसे भर देनेकी आज्ञा दिई; सो उन्होंने उन्हें मुहामुह भरा। फिर उसने उनसे कहा, अब उंडेलकर ८ भोजाध्यक्षके निकट ले जाओ; वे ले गये। जब भोजाध्यक्षने ९ उस दाखके रसको, जो जलसे बन गया था, चीखा औ न जाना कि वह कहांसे आया, परंतु वे सेवक जिन्होंने जल

भर दिया था सो जानते थे; तब उसने दुलहेको बुलाके कहा,
१० सब कोई पहिलेमें अच्छे दाखका रस देता है, और जब
लोग पीके छकते हैं तब कुछ बुरा देता है परंतु तूने अच्छे
११ दाखका रस अबलों रख छोड़ा है। इसी रीति यीशुने गालील
देशके कान्ना नगरमें आश्चर्य कर्मोंका आरंभ कर अपनी
महिमा प्रकाश किई; औ उसके शिष्योंने उसपर बिश्वास
किया।

कफर्नाहूममें खीष्टका जाना।

१२ इस पीछे यीशु अपनी माता औ भाई औ शिष्योंके संग
कफर्नाहूममें गया परंतु वहां बहुत दिन नहीं रहा।

खीष्टका यिरूशालममें जाना औ महामंदिरको शुद्ध कर्ना।

१३ यिहूदियोंका निस्तार पर्ब निकट आया औ यीशु यिरूशा-
१४ लम नगरको गया। औ महामंदिरमें गोरूयों औ भेड़ों औ
१५ कपोतोंके बेचनेहारोंको औ खुरदियोंको बैठे हुये देखा। तब
उसने रस्सीका चाबुक बनायके सब गोरूयों औ भेड़ोंको निकाल
दिया। खुरदियोंके रूपैये पैसे बिथराके मंचोंको उलट दिया;
१६ और कपोतोंके बेचनहारोंको कहा, इन सबोंको यहांसे ले
१७ जाओ, मेरे पिताके घरको बैपारकी कोठी मत करो। इससे
उसके शिष्योंने चेत किया कि यह लिखा है कि तेरे घरका प्रेम
आगके ऐसा मुझे जला डाला है।

अपने मरनेका औ जी उठनेका खीष्टका भविष्यद्वाक्य।

१८ तब यिहूदियोंने उससे पूछा, कौनसा चिन्ह दिखाता है कि
१९ तूने ऐसे करना अधिकार पाया है? यीशुने उनको उत्तर
दिया, इस मंदिरको ढा दो, मैं तीन दिनमें उसे बना दूंगा।
२० यिहूदियोंने कहा, इस मंदिरके बनानेमें छयालीस बर्ष
२१ लगे हैं; क्या तू तीन दिनमें उसको बनावेगा? परंतु उसने
२२ अपने देह रूप मंदिरके बिषयमें यह बात कही। मृतकोंमेंसे उसके जी उठनेके पीछे उसके शिष्योंने चेत किया कि
उसने यह बात कही थी; औ उन्होंने धर्मपुस्तककी औ यीशुकी
कही हुई बातपर बिश्वास किया।

खीष्टका आश्चर्य कर्म कर्नेसे अनेक लोगोंका बिश्वास कर्ना।

जब वह निस्तार पर्बके समय यिरूशालम नगरमें था तब २३ बज्जत लोगोंने उसके आश्चर्य कर्मोंको देखके उसके नाम पर बिश्वास किया। परंतु यीशुने उनपर भरोसा न किया क्योंकि २४ उसने सबोंको जाना। औ मनुष्योंके बिषयमें किसीकी साक्षी २५ का, प्रयोजन उसको न था; क्योंकि उसने जाना कि मनुष्य कैसे हैं।

३ तीसरा अध्याय।

निकदीमके खीष्टका उपदेश कर्ना।

यिहूदियोंका कोई प्रधान निकदीमः नाम जो फिरूशी १ था; उसने रातको यीशुके निकट आके कहा, हे गूरू, हम २ लोग जानते हैं कि आप ईश्वरकी ओरसे उपदेशक आये हैं क्योंकि जो२ आश्चर्य कर्म आप कर्ते हैं सो कोई मनुष्य, परमेश्वरकी सहायताके बिन, नहीं कर सक्ता। यीशुने उत्तर ३ दिया, मैं तुझको सचसच कहता हूं, जो कोई फिर जन्मा नहीं जावे तो वह ईश्वरके राज्यका दर्शन नहीं पावेगा। निकदीम ४ ने उत्तर किया, मनुष्य जब बूढा ज्ञआ तो क्योंकर जन्मा हो सकता है? क्या वह अपनी माताके कोखमें फिर पैठके जन्मा हो सकता है? यीशुने कहा, मैं तुझसे सच सच कहता ५ हूं, जो कोई आत्मा औ जलसे जन्मा नहीं जावे तो वह ईश्वरके राज्यमें जा नहीं सकता। जो शरीरसे जन्मा है सो शरीरही ६ है और जो आत्मासे जन्मा है सो आत्माही है। आश्चर्य मत ७ मान कि मैं ने तुझे कहा, कि तुम्हें फिर जन्मना अवश्य है। पवन जहां चाहता है वहां बहता है और तू उसका शब्द ८ सुनता है परंतु वह कहांसे आता है औ किधरको जाता है सो नहीं जानता; इसी रीति सब कोई है जो आत्मासे जन्मा है। तब निकदीमने पूछा, यह किसरीति हो सक्ता है? ९ यीशुने उत्तर दिया, क्या तू इस्रायेलका उपदेशक है और ये १० बातें नहीं जानता? मैं तुझको सच सच कहता हूं, जो हम ११

जानते हैं, सो कहते हैं औ जो हमने देखा है उसपर साक्षी
१२ देते हैं, परंतु तुम हमारी साक्षी नहीं मानते हो। जो तुम
इस संसारकी उन बातोंपर, जो मैंने तुमसे कहा है, बिश्वास
नहीं करते हो तो क्योंकर बिश्वास करोगे जो मैं तुमसे स्वर्गी
१३ बातें कहूं। कोई तो स्वर्गमें नहीं गया है उसीको छोड़ जो
१४ स्वर्गसे उतरा है अर्थात् मनुष्यका पुत्र जो स्वर्गमें है। जिस
रीति मूसाने बनमें सर्पको उंचाया उस रीति अवश्य है कि
१५ मनुष्यका पुत्र उंचाया जाय कि सब कोई जो उसपर बिश्वास
१६ करें नष्ट न होवे परंतु अनन्त जीवन पावे। ईश्वरने जगत पर
ऐसी दया किई है कि उसने अपने एकलौटा पुत्रको दिया है
कि सब कोई जो उसपर बिश्वास करें नष्ट न होवे परंतु
१७ अनंत जीवन पावे। ईश्वरने अपने पुत्रको जगतमें नहीं भेजा
कि वह जगतको दोषी ठहरावे परंतु इसलिये उसको भेजा
१८ कि जगत उसके द्वारा बच जावे। जो कोई उसपर बिश्वास
करता है सो दोषी न ठहराया जायगा परंतु जो कोई बिश्वास
न करता है सो दोषी ठहर चुका है क्योंकि उसने ईश्वरके
१९ एकलौटे पुत्रके नामपर बिश्वास नहीं किया है। दोष ठहरने
के कारण यही है कि उजियाला जगतमें आया है और
मनुष्योंने अंधकारको उजियालेसे अधिक प्यार किया है इसी
२० लिये कि उनके कर्म बुरे थे। सब कोई जो दुष्ट कर्म करता है
उजियाले पर घिन करता है और उसके निकट नहीं आता
२१ है, न होवे कि उसके कर्म प्रगट होवे। परंतु जो कोई सत
कर्म करता है वह उजियालेके निकट आता है कि यह प्रगट
होवे कि उसके कर्म ईश्वरकी आज्ञाके अनुसार किये गये हैं।

योहनको डुबकी दिलाना।

२२　इसके पीछे यीशु अपने शिष्योंके संग यिहूदिय देशमें आया
२३ और उनके संग ठहरके लोगोंको डुबकी दिलाया। योहनभी
शालम नगरके निकट एनन गांवमें डुबकी दिलाता था क्योंकि
२४ वहां बहुत जल था; और लोगोंने आयके डुबकी लिई। उस
समय योहन कैदखानेमें नहीं डाला गया था।

ख्रीष्टके विषयमें योहन की साक्षी देनी।

योहनके शिष्यों औ यिहूदियोंने पवित्र करनेके विषयमें २५ आपसमें पूछ पाछ करके योहनके निकट आयके कहा, हे गूरू, वही जो यर्द्दन् नदीके पार आपके संग था, जिसपर २६ आपने साक्षी दिई, देखो, वह भी डुबकी दिलाता है, औ सब लोग उसके निकट जाते हैं। योहनने उत्तर दिया, जो २७ ईश्वर न दे तो कोई मनुष्य कुछ नहीं पा सक्ता है। तुम आपही २८ मेरी साक्षी हो कि मैंने यह कहा कि मैं ख्रीष्ट नहीं हूं परंतु उसके आगे भेजा गया हूं। जिसकी दूल्हिन है सो दूल्हा है २९ परंतु दूल्हाका बंधु जो खड़ा होके उसकी सुनता है दूल्हाके शब्दसे बड़ा आनंदित होता है; इसी रीति भी मेरा आनंद पूरा है। उसको बढ़ाना होगा परंतु मुझको घटना होगा। ३० जो उपरसे आया है वह सबका प्रधान है, जो संसारसे है सो ३१ संसारिक है, औ संसारकी बात कहता है; जो स्वर्गसे आया है वह सबका प्रधान है। औ जो कुछ उसने देखा औ सुना ३२ है वह उसीपर साक्षी देता है, तौ भी कोई उसकी साक्षी ग्रहण नहीं कर्ता; परंतु जो ग्रहण कर्ता है उसने मुहर किई ३३ है कि ईश्वर सत्य है। जिसे ईश्वरने भेजा है सोई ईश्वरकी ३४ बातें कहता है क्योंकि ईश्वरने बिन नापसे उसको आत्मा दिया है। पिताने पुत्रको प्यार करके उसके हाथमें सब कुछ ३५ सोंपा है। जो कोई पुत्र पर बिश्वास करे उसका अनंत ३६ जीवन है; परंतु जो कोई पुत्र पर बिश्वास न करे सो जीवन को नहीं देखेगा परंतु ईश्वरका कोप उसपर रहता है।

४ चौथा अध्याय।

शोमिरोणीकी स्त्रीसे ख्रीष्टके उपदेशकी बार्ता।

जब प्रभुने जाना कि फिरूशियोंने सुना था कि यीशु योहन १ से अधिक शिष्यकर डुबकी दिलाता है; तौभी यीशु आपही २ नहीं डुबकी दिलाता था परंतु उसके शिष्य डुबकी दिलाते थे तब वह यहूदीय देशको छोड़कर गालीलको फिर गया। ३

४ इसमें अवश्य था कि वह शोमिरोणके देशमें होके जाय।
५ वह जाते जाते शोमिरोणके देशके किसी नगरको पहुंचा जिसका नाम शिखिम था; यह नगर उस भूमिके निकट
६ था जो याकूबने अपने पुत्र यूसफको दिई थी; वहां याकूब का कूआं भी था। यीशु यात्रासे थकित होके उस कूएपर
७ जा बैठा क्योंकि दो पहरके ऐसा था। इतनेमें कोई शोमिरोणी स्त्री जल भरनेको आई। यीशुने उसीसे कहा, मुझको
८ पीनेको दीजिये। उस समय उसके शिष्य खाने मोल लेनेको
९ नगरमें गये थे। शोमिरोणी स्त्रीने उसे कहा, आप जो यिहूदी हैं क्यों मुझसे, जो शोमिरोणी स्त्री है, पीनेको मांगता है क्योंकि यहूदी लोग शोमिरोणी लोगोंसे मेल नहीं
१० रखते हैं? यीशुने उत्तर दिया, जो तू ईश्वरके दानको जानती औ वह कौन है जो तुझे कहता है मुझे पीनेको दीजिये तो तू
११ उससे मांगती और वह तुझे अमृत जल देता? स्त्रीने कहा, हे प्रभु, कूआं तो गहिरा है, औ आपके निकट जल खींचने का पात्र नहीं है, तो आप अमृत जल कहांसे पावेंगे? क्या
१२ आप हमारे पिता याकूबसे बड़े हैं जिसने हमको यह कूआं दिया, और जिसमेंसे उसीने औ उसके बालकोंने औ
१३ उसके ढोरने पीया? यीशुने उसको उत्तर दिया, सब कोई
१४ जो यह जल पीता है सो पियासा फिर होगा परंतु जो कोई वही जल पीवे जो मैं दूंगा सो कभी पियासा नहीं होगा; वह जल जो मैं उसे दूंगा सो उसमें जलका एक सोता हो जायगा
१५ जो सदाकाल के जीवन लग बहता रहेगा। स्त्रीने कहा, हे प्रभु, यह जल मुझको दीजिये कि मैं पियासी न हों, औ यहां
१६ भरनेको न आओं। यीशुने उससे कहा, जाके अपने स्वामीको
१७ यहां बुला ला। स्त्रीने कहा, कोई स्वामी मेरा नहीं है; यीशुने कहा, तूने ठीक कहा है कि कोई स्वामी मेरा नहीं है
१८ क्योंकि तेरे पांच स्वामी हुए हैं, औ वही जो तेरे संग अब
१९ रहता है सो तेरा स्वामी नहीं है, इसमें तूने सत्य कहा है। स्त्रीने कहा, हे प्रभु, मुझे सूझ पड़ता है कि आप भविष्यद्वक्ता हैं।

हमारे पितरोंने इस पर्बत पर भजन किया; परंतु आप २० लोग कहते हो, यिरूशालम् नगरमें वही स्थान है जिसमें भजन करना उचित है। यीशुने कहा, हे नारि, मेरी बातको २१ सच जान, समय आता है जिसमें तुम लोग न इस पर्बत पर न यिरूशालम् नगरमें पिताका भजन करोगे। जिसका भजन २२ तुम लोग कर्ते हो सो तुम जानते नहीं; परंतु जिसका भजन हम लोग कर्ते हैं सो हम जानते क्योंकि यिहूदी लोगोंके बीचमें से परित्राण है। परंतु समय आता है और अब है जिसमें सच्चे २३ भजन करनेहारे पिताका भजन आत्मासे औ सच्चाईसे करेंगे क्योंकि पिता ऐसे भजन करनेहारोंको चाहता है। ईश्वर २४ आत्मा है; इससे उचित है कि उसके भजन करनेहारे उसका भजन आत्मासे औ सच्चाईसे करें। स्त्रीने कहा, मैं २५ जानती हूं कि मसीह अर्थात् ख्रीष्ट आता है; जब वह आवेगा तो हमको सब बात जनावेगा। यीशुने कहा, मैं जो अब तेरे २६ संग बातचीत करता हूं वही हूं।

नगरमें उस स्त्रीको ख्रीष्टके बिषयमें समाचार देना।

इतनेमें उसके शिष्योंने आके आश्चर्य ज्ञान किया कि वह स्त्रीके २७ संग बातचीत करता है तौभी किसीने न कहा कि आप क्या चाहते हैं अथवा किस लिये उसके संग बात कर्ते हैं? पीछे स्त्रीने अपने घड़ा छोड़के नगरमें जाके लोगोंसे कहा, २८ आके किसी मनुष्यको देखो, जिसने सब कुछ जो मैंने किया है २९ मुझको कहा है; क्या यह ख्रीष्ट नहीं है? तब वे नगरसे ३० बाहिर जाके उसके निकट आये।

शिष्योंसे ख्रीष्टकी वार्त्ता कर्नी।

इतनेमें उसके शिष्योंने उसकी बिनती करके कहा, हे गुरु, ३१ आप कुछ भोजन कीजिये। उसने कहा, मेरे निकट खानेको ३२ ऐसा भोजन है कि तुम जानते नहीं। तब शिष्योंने आपसमें ३३ कहा, क्या किसीने उसको कुछ खाना ला दिया है? यीशुने ३४ कहा, जिसने मुझे भेजा है उसीकी इच्छाके अनुसार करना औ उसीका काम पूरा करना, यही मेरा भोजन है। क्या तुम ३५

नहीं कहते हो कि चार मासके पीछे कटनी होगी? देखो, मैं तुम्हें कहता हूं अपने नेत्र खोलके खेतोंको देख लो; वे सब
३६ पक गये हैं। जो कोई काटता है सो बनी पाता है और अनंत जीवनके लिये फल संग्रह करता है; सो जो बोता है औ
३७ जो काटता है दोनों मिलके आनंद करेंगे। इसमें यही कहना-
३८ वत पूरी होती है कि एक बोता है औ दूसरा काटता है। मैंने तुम्हें उसेही काटनेको भेजा है जिसमें तुमने परिश्रम नहीं किया है; औरोंने परिश्रम किया है और तुमने उन्होंके परिश्रमका फल पाया है।

नगरके लोगोंका ख्रीष्टपर बिश्वास करना।

३९ उसी नगरके बहुतसे शोमिरोणीय लोगोंने उस स्त्रीके कहने से उसपर बिश्वास किया जिसने साक्षी दिई कि सब कुछ जो
४० मैंने किया है सो उसने मुझको कहा है। उन शोमिरोणीय लोगोंने उसके निकट आयके उसकी बिनती करके कहा कि आप हमारे संग रहीये; सो उसने दो दिन वहां बासा किया।
४१ फिर बहुत औरोंने उसीके मुख बचन सुनके औ बिश्वास करके
४२ स्त्रीसे कहा, हम तो केवल तेरे कहेसे बिश्वास नहीं करते हैं, हमने आपही सुनके निश्चय किया है कि ख्रीष्ट यह है जो जगतका त्राण करता है।

गालीलके प्रदेशमें ख्रीष्टका जाना।

४३ दो दिनके पीछे यीशु वहांसे निकलके गालील् देशको गया
४४ क्योंकि उसने आपही साक्षी दिई थी कि कोई भविष्यद्वक्ता
४५ अपनेही देशमें आदर नहीं पाता है। जब वह गालीलमें पहुंचा, तो उन गालीली लोगोंने उसे ग्रहण किया जिन्होंने सब कुछ देखा था जो उसने पर्बके समयमें यिरूशालममें किया था क्योंकि वे भी पर्बको गये थे।

कफर्नाहूम् नगरमें राजमंत्रिके पुत्रको चंगा करना।

४६ जब यीशु गालीलके कान्ना नगरमें आया जहां उसने जलको दाखके रस बनाया था वहां कोई राजमंत्री था जिसका पुत्र
४७ कफर्नाहूम नगरमें रोगी था। जब राजमंत्रीने सुना कि यीशु

यहूदीय देशसे गालील देशमें आया था, वह उसके निकट आके बिनती कर बोला, आप आइये, मेरे पुत्रको चंगा कीजिये क्योंकि वह मरनेपर ज़श्रा है। यीशुने उसे कहा, जो तुम चिन्ह ४८ औ आश्चर्य कर्म न देखो तो बिश्वास न करोगे। राजमंत्रीने ४९ कहा, हे प्रभु, मेरे पुत्र न मरतेही आप आइये। यीशुने उससे ५० कहा, जाइये, तेरा पुत्र बचा है। राजमंत्रीने यीशुकी बात पर बिश्वास कर चला गया। वह जाते जातेही उसके सेवकों ५१ ने उसके निकट घरसे आयके कहा, आपका पुत्र बचा है। उसने उनसे पूछा, किस घड़ीसे उसको आराम होने लगा? ५२ उन्होंने कहा, कि कल दो पहर एक घंटेसे ज्वर छूट गया। पिता जान गया कि उसीही घड़ीमें यीशुने कहा था कि तेरा ५३ पुत्र बचा है। इससे उसने और उसके घरके सब लोगोंने बिश्वास किया। यही चिन्ह जो यीशुने यहूदीय देशसे ५४ गालील देशमें आकर दिखलाया सो दूसरा है।

५ पांचवां अध्याय।

बिश्रामके दिन अठतीस बर्षके रोगी मनुष्यको चंगा करना।

इसके पीछे यहूदीयोंका कोई पर्ब था; इससे यीशु यिरूशा- १ लमको गया। यिरूशालममें भेड़ फाटकके निकट एक कुंड था २ जो इब्रीय भाषामें बैतहिसदा कहलाता है; उसके पांच घाट ३ थे जिन्होंमें बज़तसे रोगी औ अंधे औ लंगड़े औ सूखे अंगहारे बासा करते थे जो जलके हिलनेकी बाट जोहते थे। क्योंकि ४ किसी किसी समयमें कोई स्वर्गी दूत उस कुंडमें उतरके जलको हिलाया करता; जलके हिलने पर जो कोई पहिले उसमें उतरा सो अपने रोगसे चंगा हो गया। वहां कोई ५ मनुष्य था जो अठतीस बरससे रोगी था। यीशुने उसे पड़े ६ ज़ए देख औ जानके कि वह बज़त दिनसे ऐसा ज़श्रा है उससे कहा, क्या तू चंगा होने चाहता है? रोगीने कहा, हे ७ प्रभु, मेरे निकट कोई नहीं है जो मुझे जलके हिलनेपर कुंडमें उतार देवे और जिस समय मैं आपही आता हूं तो दूसरा

८ मुझसे आगे उतता है। यीशुने उसे कहा, उठ अपना
९ बिछौना उठाके ले जाइये। वह तुरंत चंगा हो अपना
१० बिछौना उठाके ले गया; वही दिन बिश्रामवार था। इस-
लिये यहूदियोंने उस चंगे ऊये मनुष्यसे कहा, आज बिश्राम-
११ बार है, बिछौना ले जाना तुझे उचित नहीं। उसने उत्तर
दिया, जिसने मुझको चंगा किया उसने मुझे कहा कि अपना
१२ बिछौना उठाके ले जाइये। उन्होंने पूछा, वह मनुष्य कौन है
१३ जिसने तुझे कहा कि अपना बिछौना उठाके ले जा? परंतु
चंगा ऊए मनुष्य नहीं जानता था कि वह कौन है क्योंकि
उसस्थानमें बड़ी भीड़ होनेसे यीशु छिपके चला गया था।

यहूदीयों पर खीष्टका धिक्कार कर्ना औ शिक्षा देनी।

१४ पीछे यीशुने महामंदिरमें उस मनुष्यको पायके कहा, देख,
तू चंगा ऊआ है, फेर पाप न कर, न होवे कि तुझ पर और
१५ भारी बिपत्ति आवे। इसपर उस मनुष्यने जाके यहूदियोंसे
१६ कहा, जिसने मुझे चंगा किया सो यिशु है। तब यहूदियोंने
यीशुको सतायके मार डालने चाहा क्योंकि वह बिश्रामवारमें
१७ इसप्रकारके कर्म किया करता था। यीशुने उनसे कहा, मेरा
पिता अबलग कर्म किया कर्ता है और मैंभी किया कर्ता हूं। इस
१८ पर यहूदियोंने उसे मार डालने अधिक चाहा क्योंकि उसने
केवल बिश्रामवारको नहीं माना परंतु उसने ईश्वरको अपना
१९ निज पिता कहके अपनेको ईश्वरके समान ठहराया। तब यीशु
ने उत्तर दिया, मैं तुमसे सच सच कहता हूं, जो कुछ पुत्त्र पिता
२० को करते देखता है उसे छोड़ वह आपसे आप कुछ नहीं कर
सक्ता है। जो कुछ पिता करता है वैसाही पुत्रभी कर्ता है;
पिता पुत्रको प्यार कर्ता है, इस लिये सब कुछ जो वह आप
२१ कर्ता है सो पुत्रको दिखाता है। और वह इनसे भी बड़े कर्म
उसको दिखावेगा जिनसे तुम आश्चर्य मानोगे अर्थात् जैसा पिता
मतकोंको उठाय जिलाता है वैसाही पुत्रभी जिनको चाहता है
२२ जिलाता है। पिता किसीका बिचार नहीं करता है परंतु उसने
सब बिचारकरणा पुत्रको सौंप दिया है कि सब लोग जैसा पिता

का सन्मान करते हैं वैसा पुत्रका सन्मान करें। जो कोई पुत्रका २३
सन्मान नहीं कर्ता है सो पिताका, जिसने उसे भेजा है, सन्मान
नहीं करता है। मैं तुमसे सच सच कहता हूं, जो कोई मेरी २४
बात सुनके उसपर, जिसने मुझे भेजा है, बिश्वास करता
है सो अनंत जीवन पाता है और दंडसे बचके मृत्युसे
जीवनको पार हो गया है। मैं तुमसे सच कहता हूं, घड़ी २५
आती है और अब हैं जिसमें मृतक ईश्वरके पुत्रका शब्द
सुनेंगे, औ सुनके जीयेंगे। जैसा पिता अपनेमें जीवन रखता २६
है तैसा उसने पुत्रको भी दिया है कि अपनेमें जीवन रखे।
औ उसको भी बिचारकरणका अधिकार दिया है क्योंकि २७
वह मनुष्यका पुत्र है। इससे आश्चर्य मत मानो क्योंकि घड़ी २८
आती है जिसमें सब जो गोरोंमें हैं उसका शब्द सुनके
बाहिर आवेंगे। जिन्होंने सत्कर्म किया है वे उठ कर जीवन २९
पावेंगे; औ जिन्होंने दुष्कर्म किया है वे उठकर दंड पावेंगे।
मैं आपसे आप कुछ नहीं कर सक्ता हूं; जैसा मैं सुनता वैसाही ३०
बिचार कर्ता हूं; औ मेरा बिचार ठीक है क्योंकि मैं अपनी
इच्छापर नहीं चलता परंतु उसीकी इच्छापर जिसने मुझे
भेजा है।

खीष्टके बिषयमें योहन औ ईश्वर पिताका धर्मशास्त्रकी साची देनी।

जो मैं अपने पर साक्षी देऊं तो मेरी साक्षी ठीक नहीं; ३१
परंतु एक और है जो मुझपर साक्षी देता है और मैं ३२
जानता हूं कि वही साक्षी जो वह मुझपर देता है सो
ठीक है। तुमने योहनके निकट भेजा और उसने ठीक साक्षी ३३
दिई। मैं मनुष्योंकी साक्षी नहीं चाहता हूं तौभी मैं तुमसे ये ३४
बातें कहता हूं कि तुम बच जावो। योहन जलता औ चमक- ३५
ता हुआ दीपकसा था और तुम उसके उजियालेमें थोड़े
दिनोंलों मनहीसे आनंद करते रहे। परंतु वह साक्षी जो ३६
मुझपर है सो योहनकी से बड़ी है। जो कर्म पिताने पूरे करने ३७
को मुझे ठहराया है सोई कर्म जो मैं करता हूं मुझपर
यही साक्षी देते हैं कि पिताने मुझे भेजा है। पिता जिसने ३८

३९ मुझे भेजा है उसने आपही मुझपर साक्षी दिई है। क्या तुमने उसका शब्द कभी नहीं सुना है औ उसका रूप कभी
४० नहीं देखा है? तुम उसकी बात अपनेमें नहीं रखते हो क्योंकि तुम उसीपर बिश्वास नहीं करते हो जिसको उसने भेजा है। तुम धर्म पुस्तकोंमें पढ़ते रहते हो क्योंकि तुमको सूझ पड़ता है कि उनमें अनंत जीवनकी बात है और वे ये हैं जो मुझ
४१ पर साक्षी देते हैं तौभी तुम अनंत जीवन पानेको मेरे निकट आने नहीं चाहते हो। मैं मनुष्योंसे सन्मान ग्रहण नहीं करता
४२ क्योंकि मैं तुमको जानता हूं कि तुममें ईश्वरका प्रेम नहीं है। मैं अपने पिताके नामसे आया हूं, तौभी तुम मुझको ग्रहण नहीं करते हो; जो दूसरा अपने नामसे आवेगा तो तुम उसे
४३ ग्रहण करोगे। तुम जो आपसमें एक एकसे सन्मान लेते
४४ हो, और वही सन्मान जो ईश्वरसे आता है सो नहीं ढूंढ़ते हो क्योंकर बिश्वास कर सकते हो? मत समझो कि मैं पिता
४५ के सन्मुख तुमपर दोष लगा दूंगा। एक और है जो तुमपर दोष लगा देता है अर्थात मूसा जिस पर तुम भरोसा रखते
४६ हो। जो तुम मूसा पर बिश्वास करते तो मुझपर भी बिश्वास
४७ करते क्योंकि उसने मेरे बिषयमें लिखा है। परंतु जो तुम उसकी लिखी हुई बातोंपर बिश्वास नहीं करते तो मेरे बातों पर क्योंकर बिश्वास करोगे।

६ छठवां अध्याय।

ख्रीष्टका समुद्रके पार जाना।

१ इसके पीछे यीशु गालील् देशके तिबिरिया नाम समुद्रके उस
२ पार गया। और बहुतसे लोग उसके पीछे हो लिये क्योंकि उन्होंने उन आश्चर्य कर्मोंको देखा जो उसने रोगियों पर
३ किये थे। यीशु किसी पर्बत पर चढ़के अपने शिष्योंके संग बैठा।

पांच रोटियों औ दो मछलियोंसे पांच सहस्र पुरुषको भोजन करना।

४ उस समय यहूदियोंका निस्तार पर्ब समीप था; यीशुने अपने नेत्र उठाके बहुतेरे लोगोंको अपने निकट आते

देख फिलिप्से पूछा, हम कहांसे रोटी मोल लेगें कि ये ५
सब खावें? उसने उसे परखनेको यह बात कही क्योंकि जो ६
करनेको था सो आपही जानते थे। फिलिपने उत्तर दिया ७
कि पचास रूपैयोंकी रोटी बस न होगी कि एक एकको थोड़े
मिले। उसके शिष्योंमेंसे एकने, जो शिमोन पितरका भाई ८
आंद्रिय था, कहा, यहां एक छोकड़ा है जिसके निकट जवकी ९
पांच रोटियां और दो छोटी मछलियां हैं, परंतु वे इतने लोगोंमें
क्या हैं? यीशुने कहा, लोगोंको बैठा दो। वहां बहुत घास १०
थी जिसपर सब लोग, जो गिनतीमें पांच एक सहस्र थे, बैठ
गये। यीशुने रोटियां ले कर ईश्वरका गुणानुबाद कर शिष्योंको ११
परोसीं और शिष्योंने बैठनेहारोंको; इसी भांति भी उसने
मछलियोंमेंसे दिया, जितना वे चाहते थे। जब वे सब तृप्त १२
हुए उसने अपने शिष्योंसे कहा, चूरचार जो बच गये हैं
सो बटोरके रखो कि कुछ बिगड़ न जावे। सो उन्होंने जवकी १३
उन पांच रोटियोंके चूरचारोंको जो खानेहारोंसे बच गये
थे बटोरके बारह टोकरियां भर दिईं। लोगोंने यीशुका यह १४
आश्चर्य कर्म देखके कहा, सच है, यही वह भविष्यद्वक्ता है
जो जगतमें आनेहारा था। पीछे लोगोंने यह ठाना कि हम १५
उसको पकड़के राजा बनावेंगे; यीशु यह जानके अकेला
पर्वतको फिर गया।

समुद्रके जल पर खीष्टका पावोंसे चलना।

जब सांझ हुआ उसके शिष्य समुद्रके तीर जाय नावपर १६
चढ़के कर्फनाहूम नगरकी ओर चलने लगे; उस समय १७
अंधियारा हो गया था और यीशु उनके निकट नहीं आया १८
था; समुद्र भी बड़ी आंधीके मारे उछलने लगा। जब वे १९
दो एक कोस गये थे तो उन्होंने यीशुको समुद्रपर चलते नावके
निकट आते देखा; इससे वे डर गये। परंतु उसने उनसे २०
कहा, डरो मत्, मैंही हूं। इसपर उन्होंने आनन्दसे उसको २१
नावपर चढ़ाया; और तुरंत नाव उस स्थानपर पहुंची जहां
वे जाते थे।

बहुतसे लोगोंका उसके निकट आना औ उन्हें उपदेश कर्ना।

२२ दूसरे दिन लोगोंने जो समुद्रके उसपार खड़े थे यह जाना कि उस नावको छोड़ जिसपर उसके शिष्य चढ़ बैठे और कोई नाव वहां नहीं थी, औ यह कि यीशु अपने शिष्योंके संग उस नावपर नहीं गया था परंतु उसके शिष्य अकेले चले
२३ गये थे। तौभी और नावें तिबिरिया नगरसे उस स्थानके निकट आईं जहां उन्होंने रोटी खाई थीं पीछे उसके कि
२४ प्रभुने ईश्वरका गुणानुबाद किया था। जब लोगोंने देखा कि न यीशु वहां था न उसके शिष्य तो वे भी नावोंपर चढ़के यीशुके खोज करते करते कफर्नाहूम नगरमें आये।
२५ उन्होंने समुद्रके पार उसे पायके कहा, हे गुरु, आप यहां कब आये? यीशुने उत्तर दिया, मैं तुमसे सच सच कहता हूं, तुम मुझे ढूंढते हो न इसलिये कि तुमने आश्चर्य कर्म देखा परंतु इसलिये कि तुम रोटियोंको खायके तृप्त हुये।
२६ नाशमान भोजनके लिये नहीं परंतु उस भोजनके लिये परिश्रम करो जो सदाकालका है, जिसे भी मनुष्यका पुत्र
२७ तुमको देगा; पिता ईश्वरने उसीपर मुहर कर दिई है।
२८ इससे उन्होंने पूछा, ईश्वरके कर्म कर्नेको हमें क्या कर्ना उचित
२९ है? यीशुने उत्तर दिया, ईश्वरका कर्म यही है कि तुम उसी
३० पर बिश्वास करो जिसे ईश्वरने भेजा है। उन्होंने कहा, तू कौनसा लक्षण दिखाता है कि हम उसे देख तुझपर बिश्वास
३१ करें? तू कौनसा कर्म कर्ता है? हमारे पितृ लोगोंने बयाबानमें मान्ना खाया, जैसा लिखा है कि उसने उनको स्वर्गमेंसे
३२ भोजन खानेको दिया। यीशुने कहा, मैं तुमसे सच सच कहता हूं, मूसाने तुम्हें स्वर्गमेंसे भोजन नहीं दिया परंतु
३३ मेरा पिता तुमको स्वर्गमेंसे सत्य भोजन देता है। जो भोजन ईश्वरसे होता है सो वही है जो स्वर्गमेंसे उतरके जगतको
३४ जीवन देता है। तब उन्होंने कहा, हे प्रभु, यही भोजन
३५ हमको नित्य २ दीजिये। यीशुने कहा, मैं ही जीवन दायक भोजन हूं। जो मेरे निकट आता है सो भूखा नहीं होगा

बिश्वास नहीं करते हैं क्योंकि यीशुने आदिसे जाना कि वे कौन हैं जो बिश्वास नहीं करेंगे और वह कौन है जो उसे पकड़ावेगा। फिर उसने कहा, मैंने इस लिये तुमसे यह ६५ कहा, जो मेरे पिता किसीको आनेकी सामर्थ नहीं देवे तो कोई मेरे निकट आने नहीं सकता।

उनके संग शिष्योंका रहना।

इसी समयसे उसके बज़ुतेरे शिष्य उसको छोड़के उसके संग ६६ फिर चलते नहीं रहे। इससे यीशुने बारह शिष्योंसे कहा, ६७ क्या तुम भी चले जानेको चाहते हो? शिमोन पितरने उत्तर ६८ दिया, हे प्रभु, हम किसके निकट जायेंगे? अनंत जीवनकी बातें आपहीकी हैं; हम बिश्वास करके निश्चय किया है कि ६९ आप जीवन दायक ईश्वरका पुत्र ख्रीष्ट हैं। यीशुने उत्तर ७० दिया, क्या मैं तुमही बारहको बुलायके नहीं ठहराया है? तौभी तुममेंसे एक बैरी है। उसने यही बात शिमोनके पुत्र ७१ इष्कारियोतीय यिहूदाके बिषयमें कही क्योंकि बारह शिष्योंमें से वही था जो यीशुके पकड़वानेहारा होता।

७ सातवां अध्याय।

यिरूशालम् नगरमें ख्रीष्टका जाना।

इसके पीछे यहूदीय लोगोंने यीशुको मार डालने ढूंढते रहे; १ इस लिये वह यहूदा देशमें और फिरने न चाहके गालील् देशमें फिरने गये। उस समय यहूदियोंका तंबुबास नाम २ पर्ब निकट था। इससे उसके भाईयोंने कहा, यहांसे निकलके ३ यहूदा देशमें फिर जा कि तेरे शिष्य उन कर्मोंको देखें जो तू करता है। जो कोई अपनेको प्रगट करने चाहता है सो गुप्तमें ४ कुछ नहीं करते रहता है; जो तू ये कर्म करने चाहे तो अपनेको जगतमें प्रगट कर। क्योंकि उसके भाई भी उस पर ५ बिश्वास नहीं कर्ते थे। तब यीशुने उनसे कहा, मेरा समय ६ अबलों नहीं आया है परंतु तुम्हारा समय नित्य नित्य है। जगतके लोग तुमको घिन्न नहीं कर सकते हैं, परंतु वे मुझको ७

८ घिन्न करते हैं क्योंकि मैं उनपर साक्षी देता हूं कि उनके कर्म
९ बुरे हैं। इसी पर्बको तुम जाओ मैं अभी इसी पर्बको नहीं
१० जाऊंगा क्योंकि मेरा समय अबलों पूरा नहीं ऊआ है। वह
ये बात उनसे कहके गालीलमें रहा। उसके भाई पर्बको गये;
११ पीछे वह आपही प्रगटसे नहीं परंतु गुप्तसे गया। यहूदियोंने
१२ पर्बके समयमें उसका खोज कर पूछा, वह कहां है? लोगोंके
बीचमें उसके बिषयमें बड़ा झगड़ा उठा; किसी२ ने कहा,
वह उत्तम मनुष्य है; और किसी२ ने कहा, सो नहीं, वह
१३ लोगोंको भुलाता है; परंतु यहूदियोंके डरके मारे कोई मनुष्य
उसके बिषयमें साहससे कुछ न बोला।

महामंदिरके लोगोंको उपदेश कर्ना।

१४ पर्बके समयके बीचमें यीशु महामंदिरमें जाके उपदेश देता
१५ था। यहूदियोंने आश्चर्यसे कहा, यह मनुष्य बिन सीखे क्योंकर
१६ बिद्या जानता है?. यीशुने उत्तर दिया, जो उपदेश मैं देता
हूं सो मेरा नहीं है, परंतु उसीका है जिसने मुझे भेजा है।
१७ जो कोई उसकी इच्छाके अनुसार चलने चाहे तो वह मेरे
उपदेशके बिषयमें जानेगा कि वह ईश्वरकी ओरसे है अथवा
१८ मैं अपनी ओरसे कहता हूं। जो कोई अपनी ओरसे कहता है
सो अपनी आदरकी चिंतामें है; परंतु जो कोई उसीके आदर
की चिंतामें है जिसने उसको भेजा है, सो सत्य है औ उसमें
१९ अन्याय नहीं है। क्या मूसाने तुमको ब्यवस्था नहीं दिई?
परंतु तुममेंसे कोई ब्यवस्थाका पालन नहीं कर्ता; क्यों मुझको
२० मार डालने ढूंढते रहते हो? लोगोंने कहा, तुझमें भूत है, कौन
२१ तुझे मार डालने ढूंढते रहता है? यीशुने उनको उत्तर दिया,
मैंने वही एक कर्म किया, और तुम उसके लिये अचंभा कर्ते
२२ हो। मूसाने तुमको खतनःकी आज्ञा दिई (तौभी यही मूसाके
समयके आगे ठहरायी गई थी अर्थात् पित्र लोगोंके समयसे)
२३ और तुम बिश्रामवारको पुरुषका खतनः करते हो। सो जो
बिश्रामवारको पुरुष खतनः किया जाय कि मूसाकी आज्ञा
लंघन न होवे तो क्यों तुम मुझपर क्रोध करते हो कि मैंने

बिश्रामवारको किसी मनुष्यको पूरा चंगा किया है? मुखपर २४ देखके बिचार मत करो परंतु न्यायसे बिचार करो।

बिबादियोंको उत्तर देना।

तब यिरूशालम् नगरके किसी किसीने कहा, क्या यह वह २५ नहीं है जिसको वे मार डालने ढूंढते हैं? परंतु देखो, वह २६ प्रगटमें बात करता है, तौ भी वे उससे कुछ नहीं कहते हैं; क्या प्रधान लोगोंने निश्चय किया है कि यह सचमुच खीष्ट है? यह मनुष्य कहांसे आया है सो हम जानते हैं, परंतु खीष्ट २७ कहांसे आवे सो कोई नहीं जानता है। यीशुने महामंदिरमें २८ उपदेश देते२ ऊंचे शब्दसे कहा, क्या तुम मुझको जानते हो? औ मैं कहांसे आया हूं क्या तुम यह भी जानते हो? मैं आपसे नहीं आया हूं, परंतु जो सत्य है उसने ही मुझे भेजा है; उसीको तुम नहीं जानते हो परंतु मैं उसे जानता हूं क्योंकि २९ मैं उसकी ओरसे आया हूं और उसने मुझको भेजा है। इससे ३० उन्होंने उसको पकड़ने चाहा तौ भी किसीने उस पर हाथ न डाला क्योंकि उसका समय अबतक नहीं आया था। परंतु ३१ बहुत लोगोंने उस पर बिश्वास कर कहा, जब खीष्ट आवेगा क्या वह इसीके आश्चर्य कर्मोंसे अधिक करेगा?

यीशुका उपदेश।

फिरूशियोंने सुना कि लोगोंने उसके बिषयमें इसी रीति ३२ बात करते थे; इससे फिरूशियों औ प्रधानोंने प्यादोंको भेजा कि उसको पकड़ लावे। यीशुने उनसे कहा, मैं थोड़े दिनोंलों ३३ तुम्हारे बीचमें रहूंगा, पीछे उसके निकट जाऊंगा जिसने मुझे भेजा है। तुम मुझे ढूंढोगे, परंतु नहीं पाओगे; और ३४ जहां मैं जाऊंगा वहां तुम नहीं आ सकोगे। इससे यहूदियों ३५ ने आपसमें कहा, वह कहां जायगा कि हम उसे नहीं पावेंगे? क्या वह उन यहूदियोंको जायगा जो यूनानियोंके बीचमें छिन्न भिन्न हुये हैं और उन्हें सिखावेगा? यह क्या ३६ बात है जो उसने कहा है कि तुम मुझे ढूंढोगे, और जहां मैं जाऊंगा वहां तुम नहीं आ सकोगे।

उसके बिषयमें लोगोंका बिचार कर्ना।

३७ पर्बके पीछले दिनमें अर्थात् बड़े दिनमें यीशुने खड़ा हो यह पुकारके कहा, जो कोई पियासा होवे तो मेरे निकट आ ३८ पीवे। जो कोई मुझपर बिश्वास करे उसके अंतरसे, जैसा ३९ धर्म पुस्तकमें लिखा है, अमृत जलकी नदियां बहेंगीं। उसने यही बात उसी आत्माके बिषयमें कही जिसे वे पावेंगे जो उस ४० पर बिश्वास करते हैं (अबलों धर्म आत्मा नहीं भेजा गया था ४१ क्योंकि यीशु ऐश्वर्यमान न ऊआ था)। बऊत लोगोंने यह बात सुनके कहा कि निश्चय यह वही भविष्यद्वक्ता है; औरोंने ४२ कहा, यह ख्रीष्ट है; परंतु किसी औरने कहा, क्या ख्रीष्ट ४३ गालील देशमेंसे आवेगा? क्या धर्म पुस्तकमें यह नहीं लिखा है कि ख्रीष्ट दायूदके बंशमेंसे, और बैतलिहिम नगरमेंसे, जहां दायूद रहता था, आवेगा? इस रीति उसके बिषयमें ४४ लोगोंके बीचमें बिभाग ऊआ। उनमेंसे कोई कोई उसको पकड़ने चाहते थे परंतु किसीने उसपर हाथ न डाला।

महायाजककी औ फिरूशियोंकी ख्रीष्टसे शत्रुता कर्नी।

४५ तब प्यादे लोग प्रधान याजकों औ फिरूशियोंके निकट फिर ४६ आये; उन्होंने उनसे कहा, उसको क्यों नहीं लाये हो? प्यादोंने उत्तर दिया कि उस मनुष्यके समान और किसी मनुष्यने कभी ४७ बात न किई। फिरूशियोंने कहा, क्या तुम भी भुलाये गये ४८ हो? क्या प्रधानों अथवा फिरूशियोंमेंसे कोई उसपर बिश्वास ४९ किया है? यही लोग जो ब्यबस्थाको नहीं जानते हैं सो ५० स्रापित हैं। इतनेमें निकदीमः, जो रातको यीशुके निकट आया ५१ था औ प्रधानोंमेंसे एक था, उन्हें कहा, क्या हमारी ब्यबस्था किसी मनुष्यको, उसकी बात न सुनके औ उसके कर्म न जानके, ५२ दोषी ठहराती है? उन्होंने उत्तर दिया, क्या तू भी गालीली है? बिचार करके देखो कि गालीलमेंसे कोई भविष्य- ५३ द्वक्ता नहीं निकला है। इसपर एक एक अपने घरको गये परंतु यीशु जतून पर्बत पर गया।

८ आठवां अध्याय।

एक व्यभिचारिणी स्त्रीको छोड़ा देना।

भोरको यीशु महामंदिरमें फिर आया; जब सब लोग १ उसके निकट आये तब उसने बैठके उन्होंको उपदेश दिया। २ इतनेमें अध्यापकों औ फिरूशियोंने किसी स्त्रीको, जो व्यभि- ३ चारमें पकड़ी गई थी, उसके निकट लाके सबके बीचमें खड़ा करके कहा, हे गुरू, यह स्त्री व्यभिचार करतेही पकड़ी गई; ४ मूसाने व्यवस्थामें हमको आज्ञा किई कि ऐसी स्त्रीयोंको पत्थ- ५ रोंसे मार डालो परंतु आप क्या कहते हैं? उन्होंने उसे ६ परीक्षा करके यह बात कही कि वे उसे दोषी ठहरावें परंतु यीशु नीचे झुकके अंगुलीसे भूमिपर लिखने लगा। जब वे ७ उससे पूछते पूछते रहे तब उसने सिर उठाके कहा, तुम्हारे बीचमें जो कोई निष्पापी है-सो पहिले उसे पाथरसे मारे। फिर झुकके भूमिपर लिखने लगा। वे यह बात सुनके अपने ८ मनमें अपनेको पापी जानके बड़े से छोटे लग एक २ बाहिर ९ निकल गये; यीशु अकेला रह गया औ बीचमें वही स्त्री खड़ी रही। यीशुने सिर उठायके स्त्रीके बिना और किसीको न १० देख कर उससे पूछा, हे नारि, जो तुझपर दोष लगाते थे वे कहां हैं? क्या किसीने तुझको दोषी नहीं ठहराया है? उसने कहा, हे प्रभु, किसीने नहीं। यीशुने कहा, न मैं भी तुझे दोषी ११ ठहराता; जाके फिर पाप न कर।

भंडारमें उपदेश देना।

यीशु फिर लोगोंसे कहने लगा, मैं जगतका उजियाला १२ हूं; जो कोई मेरे पीछे आता है सो अंधकारमें नहीं चलेगा परंतु जीवनका उजियाला पावेगा। फिरूशियोंने उससे १३ कहा, तू अपने बिषयमें साक्षी देता है, तेरी साक्षी ठीक नहीं। यीशुने उत्तर दिया, जो मैं अपने बिषयमें साक्षी १४ देऊं तो भी मेरी साक्षी ठीक है क्योंकि मैं जानता हूं कि मैं कहांसे आया हूं औ कहां जाता हूं परंतु तुम नहीं

जानते हो कि मैं कहांसे आया हूं औ कहां जाता हूं।
१५ तुम मुख देखके बिचार कर्ते हो; मैं किसीका बिचार नहीं
१६ कर्ता। परंतु जो मैं बिचार करूं तो मेरा बिचार ठीक है
क्योंकि मैं अकेला नहीं हूं परंतु पिता जिसने मुझे भेजा है
१७ वह मेरे संग है। तुम्हारी व्यवस्थामें यह लिखा है कि दो
१८ मनुष्योंकी साक्षी ठीक है। एक मैं हूं जो अपने बिषयमें साक्षी
देता हूं, औ दुसरा मेरा पिता है, जिसने मुझे भेजा है, वह
१९ मेरे बिषयमें साक्षी देता है। तब उन्होंने पूछा, तेरा पिता
कहां है? यीशुने उत्तर दिया, न मुझको न मेरे पिताको तुम
जानते हो; जो तुम मुझको जानते तो मेरे पिताको भी जानते।
२० यीशुने महामंदिरमें उपदेश दे भंडार घरमें ये बातें कहीं;
तो भी किसीने उसपर हाथ न डाला क्योंकि उसका समय
अबलों न हुआ था।

यहूदियोंके संग बादानुबाद कर्ना।

२१ यीशुने फिर कहा, मैं चले जाता हूं और तुम मुझको ढूंढ़ोगे,
परंतु अपने पापोंमें मरोगे; जहां मैं जाऊंगा वहां तुम
२२ नहीं आ सकोगे। तब यहूदियोंने कहा, क्या वह अपनेको
मार डालेगा कि वह यह कहता है कि जहां मैं जाऊंगा
२३ वहां तुम नहीं आ सकोगे? उसने उनसे कहा, तुम नीचेसे
हो मैं उपरसे हूं, तुम इस जगतके हो मैं इस जगतका नहीं
२४ हूं; इसी लिये मैंने तुमसे कहा, तुम अपने पापोंमें मरोगे;
जो तुम यह बिश्वास न करो कि मैं वही हूं तो तुम अपने
२५ पापोंमें मरोगे। उन्होंने पूछा, तू कौन् है? यीशुने उनसे कहा,
२६ मैं वही हूं जो मैंने पहिलसे तुम्हें कहा। तुम्हारे बिषयमें मुझको
बहुतसी और बात कहनी औ बिचार कर्ना है परंतु जिसने
मुझे भेजा है वह सत्य है; उससे जो कुछ मैंने सुना है सो मैं
२७ जगतके लोगोंसे कहता हूं। परंतु उन्होंने नहीं समझा कि
२८ उसने उन्हें पिताके बिषयमें यह बात कही। यीशुने उन्हें
फिर कहा, जब तुम मनुष्यके पुत्रको चढ़ाओ तब जानोगे
कि मैं वही हूं, औ मैं अपनी ओरसे कुछ नहीं कर्ता, परंतु

जैसा मेरा पिताने मुझे सिखलाया है तैसा मैं कहता हूं। औ जिसने मुझे भेजा है वह मेरे संग है; पिताने मुझे २९ अकेला नहीं छोड़ा है क्योंकि मैं सदा वे कर्म करता हूं जिन्होंसे वह प्रसन्न करता है।

इब्राहीमके विषयमें खीष्टका बखान कर्ना।

जब वह ये बातें कहता ही था तब बहुत लोगोंने उसपर ३० बिश्वास किया; इसपर यीशुने उन यहूदियोंको, जिन्होंने उस ३१ पर बिश्वास किया, कहा, जो तुम मेरी बातको मानते रहो तो तुम मेरे सच्चे शिष्य होओगे और सचाईको जानोगे और ३२ सचाईसे तुम्हारा उधार होवेगा। उन्होंने उत्तर दिया, हम तो ३३ इब्राहीमके बंश हैं और किसीके दास कधी हुये नहीं तो क्यों-कर कहता है कि तुम्हारा उधार होवेगा। यीशुने उत्तर दिया, ३४ मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि सब कोई जो पाप करता है सो पापका दास है। दास घरमें निरंतर नहीं रहता ३५ परंतु पुत्र निरंतर रहता है। जो पुत्र तुमको उधार करे ३६ तो निश्चय तुम्हारा उधार होगा। मैं जानता हूं कि तुम इब्रा- ३७ हीमके बंश हो परंतु तुम मुझे मार डालने चाहते हो क्योंकि मेरी बात तुममें नहीं है। जो कुछ मैंने अपने पिताके ३८ निकट देखा है सो मैं कहता हूं; और जो कुछ तुमने अपने पिताके निकट देखा है सो तुम करते हो। उन्होंने उत्तर ३९ दिया, इब्राहीम हमारा पिता है; यीशुने कहा, जो तुम इब्राहीमके संतान होते तो तुम इब्राहीमके समान कर्म करते। मैं ऐसा मनुष्य हूं जिसने तुम्हें वही सत्य बात जो मैंने ईश्वर ४० से सुना है कही है तो भी तुम मुझे मार डालने चाहते हो; यह इब्राहीमने नहीं किया। तुम अपने पिताके समान कर्म ४१ करते हो; उन्होंने उसे कहा, हम ब्यभिचारसे उत्पन्न नहीं हुये हैं; हमारा पिता एक है अर्थात् ईश्वर। यीशुने कहा, ४२ जो ईश्वर तुम्हारा पिता होता तो तुम मुझे प्यार करते क्योंकि मैं ईश्वरसे निकलके आया हूं; मैं आपसे नहीं आया परंतु उसने मुझे भेजा है। मेरी यह बात क्यों नहीं बूझते हो? ४३

यह इस लिये है कि तुम मेरी बात नहीं सह सकते हो।
४४ तुम अपने पिता शैतानसे हो और अपने पिताकी इच्छाओंके अनुसार करने चाहते हो; वह पहिलेसे नरहत्या करने हारा था और सच्चाईके अनुसार न किया करते रहा क्योंकि उसमें सच्चाई नहीं है। जब वह झूठ बोलता है वह अपने स्वभावके अनुसार बोलता है क्योंकि वह झूठा है और झूठ
४५ का पिता है। मैं सत्य कहता हूं; इसलिये तुम मुझपर
४६ विश्वास नहीं करते हो। कौन तुममेंसे मुझे दोषी ठहराने सकता है? जो मैं सच बोलता हूं तो तुम मुझपर क्यों विश्वास
४७ नहीं करते हो? जो कोई ईश्वरसे है सो ईश्वरकी बातें सुनता है; तुम ईश्वरसे नहीं हो इसलिये तुम नहीं सुनते हो।

अपने ताईं निर्दोषी ठहराना, औ महामंदिरमेंसे जाना।

४८ तब यहूदियोंने उत्तर दिया, क्या हमने ठीक नहीं कहा कि
४९ तू शोमिरोणी है औ तुझमें भूत है? यीशुने उत्तर दिया, मुझमें भूत नहीं है परंतु मैं अपने पिताका सन्मान करता हूं और तुम
५० मेरा अपमान करते हो। मैं अपना यश नहीं ढूंढता; एक
५१ है जो ढूंढता औ बिचार करता है। मैं तुमसे सच सच कहता हूं, जो कोई मेरी बात माने तो वह मृत्युको कभी न देखेगा।
५२ यहूदियोंने कहा, अब हम जानते हैं कि तुझमें भूत है; इब्राहीम औ भविष्यद्वक्ता लोग मर गये हैं परंतु तू कहता है,
५३ जो कोई मेरी बात माने तो वह कभी नहीं मरेगा। क्या तू हमारे पिता इब्राहीमसे, जो मर गये हैं, बड़ा है, और सब भवि-
५४ ष्यद्वक्ता भी मर गये हैं, तू अपनेको कौन बनाता है? यीशुने उत्तर दिया, जो मैं अपनेको बड़ा बनाऊं तो मेरी बड़ाई कुछ नहीं है; मेरा पिता है जिसे तुम कहते हो कि वह तुम्हारा
५५ ईश्वर है वही मेरी बड़ाई करता है। तुम उसे नहीं जानते हो परंतु मैं उसे जानता हूं; जो मैं कहूं कि मैं उसे नहीं जानता तो मैं तुम्हारे नाईं झूठा हूंगा; परंतु मैं उसे जानता
५६ औ उसकी बात मानता हूं। तुम्हारा पिता इब्राहीम मेरे दिन देखनेको बहुत चाहता था औ देख आनंदित हुआ।

यहूदियोंने उसे कहा, तू पचास बर्षका नहीं है और क्या ५७
तूने इब्राहीमको देखा है? यीशुने उनसे कहा, मैं तुमसे ५८
सच सच कहता हूं, इब्राहीमके जन्मके होनेके आगेसे मैंही ५९
हूं। इसपर उन्होंने उसे मार डालनेको पत्थर उठाया परंतु
यीशु छिपके महामंदिरसे निकल उनके बीचमेंसे चला गया।

९ नवां अध्याय।

एक अंधेको चंगा कर्ना।

जाते ही यीशुने किसी मनुष्यको देखा, जो जन्मके दिनसे १
अंधा था। उसके शिष्योंने उससे पूछा, हे गूरू, किसने पाप २
किया है कि यह मनुष्य अंधा जन्मा था? क्या उसीने क्या उसके ३
माता पिताने? यीशुने उत्तर दिया, वह न अपने पापसे न
उसके माता पिताके पापसे अंधा जन्मा था परंतु यह इसलिये
हुआ है कि ईश्वरकी शक्ति उसमें प्रगट किई जाय। दिन ४
रहते ही मुझको उचित है कि मैं उसीके कर्म करूं जिसने
मुझे भेजा है; रात आती है जिसमें कोई कर्म नहीं कर
सकता है। जब लग मैं जगतमें हूं, तब लग मैं जगत्का ५
उजियाला हूं। इन बातोंके कहनेपर उसने भूमिपर थूकके ६
कुछ मिट्टी गूंधी, और उस अंधेके नेत्रोंपर मलके कहा कि
जाके शिलोह, अर्थात प्रेरित नाम कुंडमें धो; सो वह जाके ७
धोया औ देखते हुये आया।

लोगोंको चंगा कर्ना।

तब पड़ोसियोंने औ जिन्होंने उसे आगे अंधा देखा था, ८
कहा, क्या यह वही नहीं है जो बैठा भीख मांगता था? किसी
किसीने कहा कि यह तो वही है; औ औरोंने कहा, सो तो ९
नहीं परंतु यह उसके ऐसा है; इसपर उसीने आपही कहा,
सच है, मैं तो वही हूं। तब उन्होंने उससे पूछा, तेरे नेत्र १०
किस भांतिसे खुल गये हैं? उसने उत्तर दिया, कोई मनुष्यने ११
जो यीशु कहवाता है, मिट्टी गूंधी और मेरे नेत्रोंपर मलके
कहा, कि जाके शिलोह अर्थात प्रेरित नाम कुंडमें धो; और

१२ मैं जाके धोया औ फिर देखते ऊये आया। उन्होंने कहा, वह कहां है? उसने कहा, सो मैं नहीं जानता हूं।

फिरूशियोंके निकट अंधेको लेजाना।

१३ जो आगे अंधा था उसको लोग फिरूशियोंके निकट १४ लाये। जब यीशुने मिट्टी गूंधके उसके नेत्र खोल दिया तो १५ बिश्रामवार था। फिरूशियोंने उस मनुष्यसे फिर पूछा कि तूने किस भांतिसे अपने नेत्र पाये? उसने उनसे कहा, उसने मेरे नेत्रोंपर गीली मिट्टी लगाई और मैंने उन्हें धोके दृष्टि १६ पाई। फिरूशियोंमेंसे किसी किसीने कहा, यह मनुष्य ईश्वर की ओरसे नहीं है क्योंकि वह बिश्रामवारको नहीं मानता; औरोंने कहा. जो पापी है वह इस प्रकारके कर्म क्योंकर १७ कर सकता है? सो उनके बीचमें बिभाग ऊआ। उन्होंने उसे जो अंधा था फिर कहा, उसके बिषयमें जिसने तेरे नेत्र खोल दिये हैं तू क्या कहता है? उसने कहा कि वह भविष्यद्वक्ता है।

अंधाकी माता पिताकी बार्ता कर्नी।

१८ परंतु जबलग यहूदियोंने उसीके माता पिताको, जिसने नेत्र पाये, नहीं बुलाया था तबलग प्रतीति न किई कि वह अंधा १९ था औ दृष्टि पाई। तब उन्होंने उनसे पूछा, क्या यह तुम्हारे पुत्र है जिसके बिषयमें तुम कहते हो कि वह अंधा जन्मा था? २० तो वह क्योंकर अब देखता है? उसके माता पिताने उत्तर दिया, हम जानते हैं कि यह हमारे पुत्र है और कि वह २१ अंधा जन्मा था परंतु वह क्योंकर देखता है सो हम नहीं जानते हैं अथवा किसने उसके नेत्र खोल दिया है सो भी हम नहीं जानते हैं; वह सयाना है, उससे पूछ लीजिये, २२ वह आपही आप कहेगा। यही बात उसके माता पिताने यहूदियोंके डरके मारे कही क्योंकि यहूदियोंने ठहराया था कि जो कोई मनुष्य यीशुको खीष्ट कहे तो वह मंडलीसे बाहिर २३ किया जायगा। इसलिये उसके माता पिताने कहा कि वह सयाना है उसीसे पूछ लीजिये।

फिरूशियोंकी बात।

तब उन्होंने उस मनुष्यको जो अंधा था फेर बुलाके कहा, २४ तू ईश्वरका गुणानुबाद कर, हम जानते हैं कि यह मनुष्य पापी है। उसने उत्तर दिया, कि वह पापी है अथवा पापी २५ नहीं है सो मैं नहीं जानता हूं; परंतु यह बात मैं जानता हूं. मैं अंधा था और अब देखता हूं। उन्होंने उससे फिर २६ पूछा, उसने तुझसे क्या किया? उसने किस रीतिसे तेरे नेत्र खोल दिये? उसने उत्तर दिया, सो तो मैंने तुम्हें कह २७ दिया है परंतु तुमने नहीं सुना है तो किस लिये फिर सुनने चाहते हो? क्या तुम भी उसके शिष्य होने की इच्छा कर्ते २८ हो? इसपर उन्होंने उसको दुर्बचन कर्के कहा, तू उसका शिष्य है, हम मूसाके शिष्य हैं। हम जानते हैं कि ईश्वरने २९ मूसासे बातें किईं परंतु हम नहीं जानते हैं कि यह कहांसे है। उस मनुष्यने उत्तर दिया कि उसने मेरे नेत्र खोल दिये ३० हैं, तो भी तुम लोग नहीं जानते हो कि वह कहांसे है, यह बड़ी आश्चर्यकी बात है। हम जानते हैं कि ईश्वर ३१ पापियोंकी नहीं सुनता है परंतु जो कोई उसका भजन करके उसकी इच्छापर चले तो वह उसीकी बात सुनता है। जगतके आरंभसे यह सुननेमें नहीं आया है कि किसीने उसीके नेत्र ३२ खोल दिये हैं जो अंधा जन्मा था। जो यह मनुष्य ईश्वरकी ३३ ओरसे नहीं होता तो ऐसा कर्म नहीं कर सक्ता। उन्होंने उत्तर दिया, क्या तू जो सिरसे पांवतक पापोंमें जन्मा था ३४ हमको सिखलाता है? तब उन्होंने उसे निकाल दिया।

उस चंगे हुए अंधेको निकाल देना, औ उसी अंधेके संग यीशुको भेट कर्नी।

यीशुने सुना कि उन्होंने उसे निकाल दिया; पीछे उसे ३५ पायके कहा क्या तू ईश्वरके पुत्र पर बिश्वास कर्ता है? उसने ३६ उत्तर दिया, हे प्रभु, वह कौन है कि मैं उस पर बिश्वास करूं। यीशुने कहा, तुहीने उसको देखा है, और वह जो ३७ तुझसे अब बात कर्ता है सोई है। तब उसने कहा, हे प्रभु, मैं ३८

बिश्वास करता हूं; और यह कहकर उसने उसे प्रणाम
३९ किया। तब यीशुने कहा, मैं बिचार करनेको संसारमें आया
हूं कि वे जो नहीं देखते हैं सो देखने पावें और वे जो देखते
४० हैं सो अंधे हो जावें। इसपर किसी किसी फिरूशियोंने जो
उसके निकट थे, कहा, क्या हमभी अंधे हैं? यीशुने कहा, जो
४१ तुम अंधे होते तो दोषी न होते; परंतु तुम कहते हो कि
हम देखते हैं; सो तुम दोषी हो।

१० दशवां अध्याय।

ख्रीष्टका अपने ताईं भेड़ोंके घरका द्वार दिखाना।

१ मैं तुमसे सच सच कहता हूं, जो कोई द्वारसे भेड़शालामें
नहीं पैठता परंतु दूसरी ओरसे चढ़ जाता है सो चोर ओ
२ डांकू है। जो द्वारसे पैठता है सो भेड़ोंका चरवाहा है।
३ द्वारपाल उसके लिये खोल देता है; और भेड़ें उसके शब्द
सुनती हैं; वह अपने भेड़ोंको नाम नाम पुकारके उन्हें बाहिर
४ ले जाता है। और अपनी भेड़ोंको निकालके वह आपही
उनके आगे आगे चलता है; भेड़ें भी उसके पीछे पीछे जाती
५ हैं क्योंकि वे उसका शब्द पहिचानती हैं। वे अनजानके
पीछे नहीं जायेंगीं परंतु उससे भागेंगीं क्योंकि वे अनजा-
नोंका शब्द नहीं पहिचानती हैं।

इस दृष्टांतका तात्पर्य्य।

६ यीशुने उनसे यह दृष्टांत कहा, परंतु उन्होंने उसकी बात
७ न बूझा। इसीलिये यीशुने उनसे फिर कहा, मैं तुमसे सच
सच कहता हूं, भेड़ोंके घरका द्वार मैं ही हूं; मुझे छोड़
८ जितने आया है वे सब चोर औ डांकू हैं, परंतु भेड़ोंने
९ उनकी नहीं सुनी। द्वार मैंही हूं; जो कोई मेरे द्वारा
प्रवेश करे तो बच जायगा औ भीतर बाहिर आया जाया
१० करके चराई पावेगा। चोर केवल चोरी औ घाट औ बिनाश
कर्नेको आता है परंतु मैं आया हूं कि वे जीवन पावें हां
बहुतसा जीवन पावे।

अपने ताईं गड़ेरियेके सदृश दृष्टांत देना।

अच्छा चरवाहा मैंही हूं; जो अच्छा चरवाहा है सो ११ भेड़ोंके लिये अपना प्राण देता है; परंतु जो भाड़ावाला है १२ और चरवाहा नहीं अर्थात् वही जो भेड़ोंका स्वामी नहीं है सो भेड़ियेको आते देख भेड़ोंको छोड़ भाग जाता है, औ भेड़िया भेड़ोंको पकड़के छिन्नभिन्न कर्ता है। भाड़ावाला १३ भागता है इसलिये कि वह भाड़ावाला है और भेड़ोंके लिये चिंता नहीं करता है। अच्छा चरवाहा मैंही हूं; जैसा मैं १४ पिताको जानता हूं, और पिता मुझको जानता है, वैसाही मैं अपनी भेड़ोंको जानता हूं, औ भेड़ें मुझको जानती हैं। १५ मैं भेड़ोंके लिये अपना प्राण देता हूं। मेरे और भेड़ें हैं जो १६ इस झुंडकी नहीं हैं; उनको भी लाना मुझे अवश्य है, और वे मेरा शब्द सुनेंगी; सो भेड़का झुंड एक और चरवाहा एक होंगे। पिता मुझे प्यार करता है क्योंकि मैं अपने प्राण देता १७ हूं; तो भी मैं उसे फिर लऊंगा; कोई उसे मुझसे नहीं १८ लेता है, परंतु मैं आपसे उसे देता हूं; उसे देना और उसे फिर लेना मेरे हाथमें है; यह आज्ञा मैंने अपने पितासे पाई है।

ख्रीष्टके संग यहूदियोंका बिबाद कर्ना।

तब यहूदियोंके बीचमें इन बातोंके हेतुसे फिर बिभाग १९ हुआ। उनमें से बहुतेरे बोले, उसमें भूत है वह बौरा हो २० गया है; उसकी बातको क्यों सुनते हो? औरोंने कहा, ये २१ बातें उसीकी नहीं हैं जिसमें भूत है; भूत जो है क्या वह अंधोंके नेत्र खोल सकता है?

लोगोंको उपदेश देना।

जाड़ेके समयमें यिरूशालम् नगरके महामंदिरके उत्सर्ग पर्ब २२ था और यीशु महामंदिरके उस स्थानमें फिरता था जो सुले- २३ मानके ओसारा कहलाता है। इतनेमें यहूदियोंने उसे घेरके २४ कहा, कब लग तू हमारे मनको अधरमें रखेगा? जो तू ख्रीष्ट है तो खुलासा कह। यीशुने उत्तर दिया, मैंने तो तुमसे कह २५

२६ चूका है परंतु तुम बिश्वास नहीं करते। जो कर्म मैं अपने पिताके नामसे कर्ता हूं सो मेरी साक्षी है; तुम बिश्वास
२७ नहीं करते हो क्योंकि तुम मेरी भेड़ोंमेंसे नहीं हो; जैसा मैंने तुमसे कहा, मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं और मैं
२८ उनको जानता हूं; वे मेरे पीछे आती हैं और मैं उन्हें अनंत जीवन देता हूं; वे कभी नष्ट नहीं होंगीं, औ मेरे हाथसे
२९ कोई उनको छीन नहीं सकेगा। मेरा पिता, जिसने उन्हें मुझको दिया है, सबसे बड़ा है; कोई मेरे पिताके हाथसे
३० उन्हें छीन नहीं सक्ता। मैं औ पिता एक हैं। तब यहूदियोंने
३१ उसे मारनेको पाथर उठाया। यीशुने कहा, मैंने अपने
३२ पिताकी ओरसे बहुतसे उत्तम कर्म तुम्हें दिखलाये हैं उनमेंसे किस कर्मके लिये तुम मुझे पाथरोंसे मारने चाहते हो?
३३ यहूदियोंने उत्तर दिया, भले कर्मके लिये हम तुझको पाथरोंसे मारने नहीं चाहते हैं परंतु ईश्वरकी निंदा करनेके लिये
३४ क्योंकि तू मनुष्य होके अपनेको ईश्वर ठहराता है; यीशुने उत्तर दिया, क्या तुम्हारी व्यवस्थामें यह नहीं लिखा है कि
३५ मैंने कहा है कि तुम ईश्वरगण हो? जो उसने उनहीको ईश्वरगण कहे जिनके निकट ईश्वरकी बात हुई (जो लिखा हुआ
३६ सो अनर्थ नहीं हो सकता) तो क्यों तुम उसीसे, जिसे ईश्वरने ठहरायके जगतमें भेजा है, कहते हो कि तू अप-
३७ नेको ईश्वरके पुत्र कहनेमें ईश्वरकी निंदा करता है? जो मैं
३८ अपने पिताके कर्म न करूं तो मुझपर बिश्वास न करियो; परंतु जो मैं करूं तो मुझपर बिश्वास न करो मेरे कर्मोंपर बिश्वास करो कि तुम यह जानकर बिश्वास करो कि पिता मुझमें है औ मैं पितामें हूं।

यर्दन नदीके पार जाना।

३९ तब उन्होंने फिर उसको पकड़ने चाहा, परंतु वह उनके
४० हाथसे छुट गया। और उसने यर्दन नदीके पार, उसी स्थानमें जहां योहनने पहिले डुबकी दिलाई थी, फिर जाके
४१ बासा किया। तब बहुतेरोंने उसके निकट आके कहा, योहनने

कोई आश्चर्य कर्म नहीं किया, परंतु जितनी बातें जो योहनने इसके बिषयमें कही थी सो सत्य थी; वहां बज्ञतेरोंने उस ४२ पर बिश्वास किया।

११ एग्यारहवां अध्याय।

इलियासरका रोगी होना।

बैथनिया गांवमें, जहां मरियम् औ उस की बहिन मर्था १ रहती थी, इलियासर नाम रोगी था। यही मरियम वही २ थी जिसने प्रभुपर सुगंध तेल लगायके अपने बालोंसे उसके पांवोंको पोंछा; और यही इलियासर जो रोगी था उसीका भाई था। दोनों बहिनोंने यीशुको कहला भेजा, हे प्रभु, ३ देखियो, जिसे आप प्यार करते हैं सो रोगी है। यीशुने यह ४ सुनके कहा कि यह रोग मृत्युका नहीं है परंतु ईश्वरकी महिमा प्रकाश करनेके लिये है कि ईश्वरके पुत्रकी महिमा उसके द्वारा ५ प्रकाश किई जाय। यीशुने मर्था औ उसकी बहिन औ इलि- ६ यासरको प्यार किया तौभी उसने इलियासरकी रोग की बात सुनकर उसीस्थानमें जहां था दो दिन रहा।

उसके निकट खीष्टका जाना।

तिस पीछे उसने अपने शिष्योंसे कहा, आओ, हम यहू- ७ दियोंके देशको फिर चलें। शिष्योंने उत्तर दिया, हे गुरु, ८ थोड़े दिन ज़ये कि यज़दी लोग आपको पत्थरोंसे मारने चाहते थे; और आप क्या वहां फिर जायेंगे? यीशुने उत्तर ९ दिया, क्या दिनके बारह घंटे नहीं हैं? जो कोई मनुष्य दिनमें चले तो ठोकर नहीं खाता? क्योंकि वह इस संसारका उजि- १० याला पाता है परंतु जो कोई रातमें चले तो ठोकर खाता है क्योंकि उजियाला नहीं है। उसने ये बातें कहके फिर ११ उनसे कहा, हमारे मित्र इलियासर सो गया है और मैं उसे जागानेको जाता ह्रं। शिष्योंने कहा, हे प्रभु, जो वह सोता १२ है तो वह बच जायगा। यीशुने उसकी मृत्युके बिषयमें कहा १३ था परंतु उन्होंने समझा कि उसने सोनेके आरामके बिषयमें

१४ कहा था। तब यीशुने उनसे खोलके कहा, इलियासर मर
१५ गया है; मैं तुम्हारे लिये आनंद करता हूं कि मैं वहां नहीं
था जिसतें तुम बिश्वास करो; तौभी आओ, उसके निकट
१६ चलें। तब *थोमाने जिसको दिदिमः कहते हैं अपने संगी
शिष्योंसे कहा, चलो, हम भी उसके संग मरें।

उसकी बहिनके संग बात करनी औ इलियासरको जिलाना।

१७ यीशुने पहुंचके इलियासरको चार दिन गोरमें रखा हुआ
१८ पाया। बैथनिया यिरूशालमसे केवल एक कोशका दूर था।
१९ इसीलिये बहुतसे यहूदीयोंने मर्था औ मरियमके निकट
२० आये कि उनके भाईके विषयमें उनको शांति देवें। जब मर्थाने
सुना कि यीशु चले आता है तो उसे मिलनेको गई परंतु
२१ मरियम् घरमें बैठी रही। तब मर्थाने यीशुसे कहा, हे प्रभु,
२२ जो आप यहां होते तो मेरा भाई नहीं मर्ता; परंतु मैं
जानती हूं कि जो कुछ आप ईश्वरसे अब मांगें सो ईश्वर
२३ आपको देगा। यीशुने कहा, तेरा भाई फिर उठेगा। मर्थाने
२४ कहा, मैं जानती हूं कि वह पीछले दिनमें अर्थात् मृतकोंके
२५ फिर उठनेके समयमें फिर उठेगा। यीशुने उससे कहा, मैं
२६ मृतकोंका फिर उठाने औ जिलानेहारा हूं; जो कोई जो
मुझपर बिश्वास करता है मर जाय तोभी वह जीयेगा; और
सब बिश्वास करनेहारे जो नहीं मर जांय सो सदातक जीते
२७ रहेंगे; क्या तू इसबातपर बिश्वास करती है? मर्थाने कहा,
हां प्रभु, मेरे बिश्वास यही है कि आप खीष्ट हैं अर्थात्
२८ ईश्वरका पुत्र हैं जो जगतमें आनेहारा थे। यही बात कहके
वह चली गई और अपनी बहिन मरियमको चुपकेसे बुलाके
२९ कहा, गुरु आये हैं, औ तुझे बुलाते हैं; यह सुन मरियम
३० तुरंत उठ यीशुके निकट आई। यीशु अबलों नगरमें नहीं
पहुंचा था परंतु उसी स्थानमें था जहां मर्था उसे मिली थी।
३१ जब उन यहूदियोंने जो उसके संग घरमें उसको शांति देते थे
देखा कि मरियम् झपसे उठके बाहिर गई है तब वे यह
कहिके उसके पीछे चले गये कि वह गोरको जाती है कि

वहां रोवे। जब मरियम उसस्थानको पहुंची जहां यीशु था ३२ और उसे देखा तो उसके चरणों पर गिरके कहा, हे प्रभु, जो आप यहां होते तो मेरा भाई नहीं मर्ता। जब ३३ यीशुने उसे औ उन यहूदियोंको जो उसके संग आये थे रोते देखा तो लंबी सांस भरके व्याकुल ऊआ और कहा, तुमने ३४ उसे कहां रखा है? उन्होंने कहा, हे प्रभु, आप आयके देखिये। यीशु रोया। तब यहूदियोंने कहा, देखो, उसने उसे ३५ कैसा प्यार किया। औ उनमेंसे किसी किसीने कहा, क्या यही ३६ जिसने अंधोंके नेत्र खोल दिये इस मनुष्यको मृत्युसे बचा नहीं ३७ सक्ता था? यीशु लंबी सांस फिर भरके गोरके निकट आया; ३८ वह एक गुहा थी और उस पर एक पत्थर धरा था। यीशुने ३९ कहा, पाथरको सरकाओ; इसपर उस मरे ऊए की बहिन मर्थाने कहा, हे प्रभु, वह तो अब बसाता है क्योंकि आज चौथा दिन भया है। यीशुने उससे कहा, क्या मैंने तुझसे यह नहीं ४० कहा कि जो तू बिश्वास करे तो ईश्वरकी महिमाको देखेगी? तब ४१ उन्होंने मृतककी गोरसे पाथरको सरकाया औ यीशुने उपर दृष्टि कर कहा, हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद कर्ता हूं कि तूने मेरी सुनी है। मैं जानता हूं कि तू मेरी नित्य सुनता है; परंतु ४२ मैंने इसलिये कहा कि वे लोग जो आसपास खड़े होते हैं बिश्वास करें कि तूने मुझे भेजा है। यही बात कहके वह ऊंचे ४३ शब्दसे पुकारके बोला, हे इलियासर बाहिर आ। इसपर ४४ वह जो मर गया था वस्त्रसे हाथ पांव बांधे ऊए बाहिर आया औ उसका मुख अंगोछेसे लपेटा ऊआ था। यीशुने उन्हें कहा, उसे खोलके जाने दो। तब उन यहूदियोंमेंसे जो मरियमके ४५ निकट आये थे, बऊतोंने यीशुका यह कर्म देखके उस पर बिश्वास किया। परंतु और किसी किसीने फिरूशियोंके निकट ४६ जाके यीशुके इस कर्मकी बात सुनाया।

महायाजक औ फिरूशियोंकी बिरुद्धता कर्नी।

तिस पीछे प्रधान याजकों औ फिरूशियोंने महासभा ४७ करके कहा, हम तो क्या कर्ते हैं? यह मनुष्य बऊतसे आश्चर्य

४८ कर्म कर्ता है। जो हम उसको यों कर्म करने देवें तो सब लोग उस पर बिश्वास करेंगे; औ रूमी लोग आके हमारे स्थान
४९ औ राज उलटा देंगे। तब उनमेंसे कियफा नाम, जो उस बर्ष प्रधान याजक था, उनसे बोला, तुम कुछ नहीं जानते हो
५० और यह न सोचते हो कि हमारे लिये यह भला है कि एक
५१ मनुष्य मरे कि देशके सब लोग नाश न होवें। उसने यह अपनी ओरसे नहीं कहा परंतु उस बर्षमें प्रधान याजक
५२ होके उसने यही भविष्यद्वाक्य कहा कि यीशु उन देशियोंके लिये मरेगा और केवल उन देशियोंके लिये नहीं परंतु इसलिये भी कि वह ईश्वरके संतानोंको, जो छिन्न भिन्न थे, एकत्र करे।
५३ सो उसी दिनसे वे आपसमें बिचार करते रहे कि उसे मार
५४ डालें। इसलिये यीशु यहूदियोंके बीचमें प्रगटमें फिरता न रहा परंतु वहांसे निकलके किसी स्थानको गया जो दिहातमें था अर्थात इफरयिम नगरको गया और अपने शिष्योंके संग वहां रहा।

निस्तार पर्वमें ख्रीष्टके पकड़नेकी चेष्टा करनी।

५५ तिस पीछे यहूदियोंका निस्तार पर्ब निकट हुआ; बहुत लोग पर्बके आगे दिहातसे यिरूशालमको गये कि अपनेयोंको शुद्ध
५६ करें। उन्होंने यीशुको ढूंढकर महामंदिरमें खड़े हो आपसमें कहा, तुमको क्या सूझ पड़ता है? क्या वह पर्बको आवेगा
५७ अथवा नहीं आवेगा। प्रधान याजकों औ फिरूशियोंने आज्ञा किई थी कि जो कोई जाने कि वह कहां है तो बतावे कि वे उसे पकड़ें।

१२ बारहवां अध्याय।

यीशुके चरणोंमें मरियमका तेल मलना।

१ निस्तार पर्बके छः दिन आगे यीशुने बैथनिया गांवमें आया जहां इलियासर था, जो मर गया था, और जिसे उसने
२ मृतकोंमेंसे उठाया था। उन्होंने वहां उसके लिये बिआरी बनाई और मर्थाने परोसा; उनमेंसे जो उसके संग बैठे थे

इलियासर एक था। तब मरियमने आधा सेर बड़ा मोलका ३
सुगंध तेल लाके यीशुके चरणोंपर लगाया और उन्हें अपने
बालोंसे पोंछा; तेलकी सुगंधसे घर भर गया। इसपर ४
शिमोनका पुत्र इष्कारियोतीय यहूदाने जो उसके शिष्योंमेंसे ५
एक था, और जो उसका पकड़वानेहारा था, कहा, यह
तेल क्यों असूसी रूपैयोंको बेचा नहीं गया और कंगालोंको
नहीं दिया गया? उसने यह कहा न इसलिये कि वह कंगा- ६
लोंकी चिंता करता था परंतु इसलिये कि वह आपही चोर
था और रूपैयोंकी थैली रखनेहारा होके कुछ कुछ चुरा
किया करता। यीशुने कहा कि स्त्रीको रहने दो; उसने मेरे ७
गाड़नेके दिनके लिये यही तेल रखा था। कंगाल लोग ८
तुम्हारे संग नित्य रहते हैं परंतु मैं तुम्हारे संग सदा नहीं
रहूंगा।

इलियासरके देखनेको बहुत लोगोंका आना।

बहुतसे यहूदियोंने सुनने पाया कि यीशु वहां है; इससे ९
वे केवल यीशुको नहीं परंतु इलियासरके देखनेको जिसे उसने
मृतकोंमेंसे उठाया था एकठे आये; तब प्रधान याजकोंने इलि- १०
यासरको भी मार डालनेका परामर्श किया क्योंकि उसके ११
द्वारा बहुत यहूदियोंने जाके बिश्वास किया।

यिरूशालममें खीष्टका जाना।

दूसरे दिन बहुतसे लोगोंने, जो पर्बको आये थे, सुनने १२
पाया कि यीशु यिरूशालम नगरको आता है; इससे वे खजूर १३
की डालियोंको लेके उससे मिलनेको गये; उससे मिलके वे
ऊंचे शब्दसे यही बात कहने लगे, हे इस्रायलका राजा, जो
प्रभुके नामसे आता है, धन्य हो। यीशुने किसी गधेके १४
बच्चेको पायके उसपर चढ़ बैठा, जैसा कि यह लिखा है, हे १५
सियोनकी पुत्री, मत डर, देखो, तेरा राजा गधेके बच्चेपर चढ़
बैठा आता है। उसके शिष्योंने पहिलेमें ये बातें न बूझीं परंतु १६
जब यीशु ऐश्वर्यमान हुआ तब उन्होंको चेत आया कि ये बातें

उसके विषयमें लिखी गई थीं और कि उन्होंने आपही उससे
१७ ऐसा किया था। उसी भीड़ने जो उस समय उसके संग थी,
साक्षी दिई कि उसने इलियासरको गोरमेंसे बुलायके मृतकों-
१८ मेंसे उठाया। इसीलिये बहुतसे लोग उससे मिलनेको निकले
कि उन्होंने सुना था कि उसने ऐसा अद्भुत कर्म किया था।
१९ तब फिरूशियोंने आपसमें कहा, देख लो, हमसे कुछ नहीं
बन पड़ता है, देखो, संसार उसके पीछे गया है।

खीष्टके निकट दूसरे देशोंके लोगोंका आना।

२० उन्होंके बीचमें जो भजन करनेको पर्वको आये थे कोई
२१ यूनानी लोग थे। वे फिलिपके निकट आये, जो गालीलके
बैतसैदाका रहनेहारा था, और बिनती करके उसे कहा,
२२ हे प्रभु, हम यीशुको देखने चाहते हैं। इसपर फिलिपने
आंद्रियके निकट आके उन्होंकी बात सुनाया; तब वे दोनों
अर्थात आंद्रिया औ फिलिपने यीशुके निकट आके उन्होंकी
२३ बात कह दिया। यीशुने सुनके उत्तर दिया, घड़ी आई है
२४ जिसमें मनुष्यका पुत्र ऐश्वर्यमान हुआ है। मैं तुमसे सच सच
कहता हूं। जो गेहूंका दाना भूमिपर गिरके न मर जाय तो
वह एकही रहता है परंतु जो मर जाय तो बहुत फल लाता
२५ है। जो कोई अपने प्राणको प्यार करता है सो उसे खोवेगा;
और जो कोई इस जगतमें अपने प्राणको घिन्न करता सो
२६ अनंत जीवन पाय उसकी रक्षा करेगा। जो कोई मेरी सेवा
चाहे तो मेरे पीछे हो लेवे, और जहां मैं रहूंगा वहां मेरा
सेवक रहेगा; जो कोई मेरी सेवा करे तो मेरा पिता उसका
आदर करेगा।

खीष्टका अपनी मृत्यु भोग कर्नेका भविष्यद्वाक्य।

२७ अब मेरा प्राण व्याकुल होता है, और मैं क्या कहों? क्या
मैं यह कहूंगा, हे पिता, मुझे इसी घड़ीसे बचा? (सो नहीं)
२८ मैं तो इसी घड़ीके लिये आया हूं। हे पिता, अपने नामकी
महिमा प्रकाश कर; इसपर यही आकाशबाणी हुई, "मैंने
अपने नामकी महिमा प्रकाश किई है, और उसकी महिमा

फिर प्रकाश करूंगा"। उस भीड़ने, जो वहां खड़ी थी, यह सुनके २९ कहा, कि मेघ गर्जता है; औरोंने कहा, स्वर्गका दूत उससे बात करता है। यीशुने उत्तर दिया, यह शब्द मेरे लिये नहीं है ३० परंतु तुम्हारे ही लिये है। अब इस जगतका बिचार होगा, ३१ अब इस जगतका राजा निकाला जायगा। जब मैं पृथिवी ३२ परसे उपर उठाया जाऊं तब मैं अपनी ओर सबको खींचूंगा। उसने यह कहिके बुझाया कि आप किस रीतिको ३३ मृत्युसे मरेगा। तब लोगोंने कहा, हमने व्यवस्थाके ग्रंथोंमेंसे ३४ सुना है, कि ख्रीष्ट सदा रहेगा, तो क्यों तू कहता है कि उचित है कि मनुष्यके पुत्र उठाया जायगा? यह मनुष्यके पुत्र किस प्रकारका है? यीशुने कहा, तुम्हारे संग और थोड़े ३५ दिन उजियाला है; सो उजियालेके रहते ऊये चलो कि अंधकार तुमपर न आवे; जो कोई अंधकारमें चलता है सो नहीं जानता कि कहां जाता है। तुम्हारे निकट उजियालेके ३६ रहते ऊये उजियालेपर बिश्वास करो कि तुम उजियालेके संतान होओ। यही बात कह यीशु वहांसे जाके अपनेको उनसे छिपाया।

थोड़े लोगोंका बिश्वास कर्ना।

उसने उनके सन्मुख इतने आश्चर्य कर्म किये तो भी उन्होंने ३७ उस पर बिश्वास न किया। सो यही बात, जो यिशयिय ३८ भविष्यद्वक्ताने कही थी, पूरी ऊई, हे प्रभु, हमारे समाचार पर किसने बिश्वास किया है और प्रभुका हाथ किसके निकट प्रकाश ऊआ है? (हां वे यीशुकी बात न मानके) बिश्वास न ३९ कर सके; इसलिये यिशयिय भविष्यद्वक्ताने फिर कहा, उसने उन्होंके नेत्र बंद रहने और उन्होंके मन कठिन रहने ४० दिया है, सो वे न नेत्रोंसे देखते हैं और न मनसे समझते हैं और न फिराय जाते हैं और न मैं उनको चंगा करता हूं; ये ४१ बातें यिशयिय कहा जब यीशुकी महिमा देखके उसके बिषय-में समाचार दिया। तदभी प्रधानोंमेंसे बऊतेरोंने बिश्वास ४२ किया परंतु फिरूशियोंके डरके मारे उन्होंने न माना, न हो

४३ कि वे मंडलीमेंसे निकाले जायें क्योंकि वे ईश्वरकी प्रशंसासे मनुष्योंकी प्रशंसा अधिक चाहते थे।

खीष्टका उपदेश।

४४ तब यीशुने पुकारके कहा, जो कोई मुझपर बिश्वास करता है सो केवल मुझपर नहीं परंतु उसीपर बिश्वास करता ४५ जिसने मुझे भेजा है; जो कोई मुझे देखता है सो उसीको ४६ देखता है जिसने मुझे भेजा है। मैं जगतमें उजियाला रूप हो आया हूं कि सब कोई जो मुझपर बिश्वास करता है ४७ अंधकारमें न रहे। जो कोई मेरी बातें सुनके बिश्वास न करे तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता हूं क्योंकि मैं जगतको दोषी ४८ ठहरानेको नहीं परंतु जगतको बचानेको आया हूं। जो कोई मुझे तुच्छ करके मेरी बातोंको नहीं मानता है सो दूसरेसे दोषी ठहराया जायगा अर्थात उसी बचनसे जो मैंने कहा ४९ है; यही बचन पीछले दिनमें उसे दोषी ठहरावेगा। मैंने अपनी ओरसे कुछ नहीं कहा है परंतु जैसा पिताने जिसने मुझे भेजा है, मुझे आज्ञा किई है तैसा मैं उपदेश देता औ ५० आज्ञा करता; और मैं जानता हूं कि उसकी आज्ञा अनंत जीवन है; सो जैसा पिताने मुझे कहा है तैसा मैं कहता हूं।

१३ तेरहवां अध्याय।

खीष्टका अपने शिष्योंके चरण को धोना।

१ निस्तार पर्बका समय निकट हुआ और यीशुको जान गया कि वही घड़ी आई है जिसमें उसको इस जगतसे पिताके २ निकट जाना होगा; और जैसा उसने अपनेयोंको, जो जगतमें रहते थे, प्यार किया था तैसा उनको अंततक ३ प्यार किया करते रहे। उसको भी जान गया कि पिताने उसके हाथमें सब कुछ सोंपा है और कि वह आपही ईश्वर-की ओरसे आया है और ईश्वरके निकट फिर जाता है तौभी ४ वह उस बियारीसे, (जिसके समयमें शैतानने शिमोनके पुत्र ईस्करियोतीय यहूदाको उसकाया कि यीशुको पकड़वाय,)

उठके अंगा उतार रखे और अंगोछा लेके अपनी कमर पर बांधा। पीछे वह पात्रमें जल ढालकर शिष्योंके पांव धोने औ ५ अपनी कमरके अंगोछेसे पोंछने लगा। जब वह शिमोन ६ पितरके निकट आया, पितरने कहा, हे प्रभु, क्या आप मेरे पांव धोते हैं? यीशुने कहा, जो मैं करता हूं सो तू अब नहीं ७ जानता, परंतु पीछे जानेगा। पितरने कहा, आप मेरे पांव ८ कभी न धोना। यीशुने उत्तर दिया, जो मैं तुझे नहीं धोऊं तो मेरे संग तेरा भाग न होगा। शिमोन पितरने कहा, हे प्रभु, ९ केवल मेरे पांव नहीं परंतु मेरा हाथों औ सिर भी धोइये। यीशुने कहा, जो धोया गया है उसके पांव बिन और कुछ १० धोना प्रयोजन नहीं है, वह सिरसे पांवतक् सुच है। तुम लोग सुच हो परंतु सब नहीं; वह जानता था कि वह कौन ११ है जो उसे पकड़वावेगा, इस लिये उसने कहा कि तुम सब सुच नहीं हो।

उसके तात्पर्यका बखान।

जब यीशुने शिष्योंके पांव धो चूका औ अपने अंगा पहिन १२ लिया तब उसने फिर बैठके कहा, क्या तुम लोग जानते हो कि मैंने तुमसे क्या किया है? तुम मुझको प्रभु औ गूरु कहते १३ हो; सो सत्य है, क्योंकि मैं सोई हूं। जो मैंने जो गूरु औ १४ प्रभु है तुम्हारे चरण धोया है, तो तुमको चाहिये कि एक दूसरेके चरण धोय। मैंने तुमको नमुना दिया है कि जैसा १५ मैंने तुमसे किया है तैसा तुम भी करो। मैं तुमसे सच सच १६ कहता हूं कि न दास अपने स्वामीसे बड़ा है, न वही जो भेजा गया है उससे जिसने भेजा है। जो तुम ये बातें जानके १७ पालन करो तो धन्य हो। मैं तुम सबोंके बिषयमें ये बातें नहीं १८ कहता हूं; जिन्हें मैंने ठहराया है सो मैं जानता हूं; परंतु इसमें यह जो लिखा है सो पूरा हुआ है कि वह जो मेरे संग भोजन करता है उसने मुझे लात मारा है। मैं इस- १९ बातके होनेसे आगे तुम्हें सुना देता हूं कि जब वह पूरा हो जावे तुम बिश्वास करो कि मैं वही हूं। मैं तुमसे सच सच २०

कहता हूं जो कोई उसीको, जिसे मैं भेजऊं, ग्रहण करता है सो मुझे ग्रहण करता है, और जो कोई मुझे ग्रहण करता सो उसीको, जिसने मुझे भेजा है, ग्रहण करता है।

इस्करियोतीय यहूदा उसको पकड़ा देगा उसका समाचार देना।

२१ यही बात कहके यीशुने मनमें दुःखित हो साक्षी दे कहा, मैं तुमसे सच सच कहता हूं, तुममें से एक है जो मुझे पकड़-
२२ वायेगा। उसने किसके बिषयमें यह बात कही थी सो शिष्य
२३ लोग न जानके एक दुसरी की ओर देखने लगा। शिष्योंमेंसे वही, जिसे यीशुने बड़ा प्यार किया, उसी समयमें यीशुके
२४ समीप बैठा था। शिमोन पितरने उसी शिष्यको सैन करके कहा कि यीशुसे पूछो कि जिसके बिषयमें आपने यही बात
२५ कही है सो कौन है? तब उसने जो यीशुके समीप बैठा था
२६ उसे कहा, हे प्रभु, वह कौन है? यीशुने उत्तर दिया, जिसको मैं रोटीके इस टुकड़ेको डुबाकर दूंगा सो वही है; पीछे उसने रोटीका टुकड़ा डुबाके शिमोनके पुत्र इस्करियोतीय
२७ यहूदाको दिया। देनेके पीछे शैतान उसमें पैठगया। तब
२८ यीशुने उससे कहा, जो तू करता है सो शीघ्र कर। बैठनेहारों-मेंसे कोई नहीं जानता था कि यीशुने किस हेतुसे यही बात उसे कही थी परंतु किसी किसीने समझा कि यीशुने उसे
२९ कहा कि पर्बके लिये जो कुछ हमको आवश्यक है सो मोल
३० ले अथवा कंगालोंको कुछ दे क्योंकि यहूदाके हाथमें रुपैयोंकी थैली थी; सो यहूदा रोटीके टुकड़ा लेनेके पीछे तुरंत बाहिर गया; समय रातका था।

शिष्योंको खीष्टका उपदेश कर्ना।

३१ उसके बाहिर जानेके पीछे यीशुने कहा, अब मनुष्यका पुत्रकी महिमा प्रकाश हुई है, औ उसके हेतुसे ईश्वरकी
३२ महिमा भी प्रकाश हुई है; जो उससे ईश्वरकी महिमा प्रकाश हुई है तो ईश्वरभी अपने संग उसकी महिमा प्रकाश
३३ करेगा औ शीघ्र ही प्रकाश करेगा। हे पियारो मैं थोड़ी देर तुम्हारे संग हूं; तुम मुझको ढूढ़ोगे; और जैसा मैंने यहूदि-

योंसे कहा तैसा मैं अब तुमसे कहता हूं कि जहां मैं जाऊंगा वहां तुम नहीं आ सकोगे। मैं तुम्हें यह नयी आज्ञा देता हूं, ३४ तुम आपसमें प्रेम करो ; जैसा मैंने तुम्हें प्रेम किया है तैसा तुम भी आपसमें प्रेम करो। जो तुम आपसमें प्रेम करो तो सब लोग ३५ इससे जानेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो।

पितरका ख्रीष्टको अस्वीकार करना।

शिमोन् पितरने पूछा, हे प्रभु, आप कहां जाते हैं? यीशुने ३६ उसे कहा, जहां मैं जाता हूं तू अब मेरे पीछे नहीं आ सकता है परंतु पीछे आवेगा। पितरने उत्तर दिया, हे प्रभु, क्यों मैं ३७ अब आपके पीछे नहीं जा सकता हूं? मैं आपके लिये अपने प्राण दूंगा। यीशुने उत्तर दिया, क्या तू मेरे लिये अपने प्राण ३८ देगा? मैं तुमसे सच सच कहता हूं, कुक्कुट न बोलेगा जबतक तू तीन बार मुझे न मुकरेगा।

१४ चौदहवां अध्याय।

शिष्योंको ज्ञान देना।

तुम्हारे मन दुःखित न हो, ईश्वरपर बिश्वास करो, मुझपर १ भी बिश्वास करो। मेरे पिताके घरमें बहुतसी कोठरी हैं, २ नहीं तो मैं तुम्हें कहता; मैं तुम्हारे लिये स्थान संवारनेको जाता हूं। और जो मैं तुम्हारे लिये स्थान संवारनेको जाऊं तो ३ तुम्हें अपने यहां लानेको मैं निश्चय फिर आऊंगा कि जहां मैं हूं तुम भी होओ। जहां मैं जाता हूं तुम जानते हो, और ४ मार्ग भी जानते हो। थोमाने कहा, हे प्रभु, आप कहां जाते ५ हैं सो हम नहीं जानते तो मार्गको क्योंकर जान सकें? यीशुने ६ कहा, मैं सत्य औ जीवन स्वरूप मार्ग हूं; जो कोई मेरे द्वारा नहीं जाय सो पिताके निकट नहीं जा सक्ता। जो तुम मुझे ७ जानते तो मेरे पिताको भी जानते परंतु अबसे तुम उसको जानते हो औ देखते हो।

अपना औ अपने पिताका बखान करना।

तब फिलिपने कहा, हे प्रभु, हमको पिताका दर्शन कराइये ८

९ तो हमें बहुत होगा। यीशुने उत्तर दिया, हे फिलिप, क्या मैं इतने दिनसे तुम्हारे संग हों और अब लों तू मुझे नहीं जानता? जिसने मुझे देखा है उसने पिताको देखा है, सो तू क्यों
१० कहता है कि पिताको हमें दिखलाइये? क्या तू बिश्वास नहीं करता है कि मैं पितामें हूं औ पिता मुझमें है? जो बातें मैं तुम्हें कहता हूं सो अपनी ओरसे नहीं कहता परंतु पिता
११ जो मुझमें रहता है वही सब कर्म कर्ता है। मेरी यह बात सच जानो कि मैं पितामें हूं औ पिता मुझमें है; नहीं
१२ तो इन कर्मोंके लिये मेरी बात सच जानो। मैं तुमसे सच सच कहता हूं, जो कोइ मुझपर बिश्वास करे सो मेरी रीतिके कर्म करेगा हां उनसे भी बड़ा कर्म करेगा क्योंकि मैं पिताके
१३ निकट जाता हूं; जो कुछ तुम मेरे नाम लेके मांगोगे सो मैं
१४ दूंगा कि पिता पुत्रके द्वारा ऐश्वर्यमान होवे; जो तुम मेरे नाम लेके कुछ मांगोगे तो मैं वही दूंगा।

ज्ञान देने हारेको उनके निकट भेजनेकी प्रतिज्ञा करनी।

१५ जो तुम मुझे प्यार करते हो तो मेरी आज्ञाओंको पालन
१६ करो। मैं पितासे प्रार्थना करूंगा औ वह तुम्हारे संग सदा रहनेको एक सहायकको अर्थात् सत्यमय आत्माको देगा
१७ संसारके लोग उसको ग्रहण नहीं कर सकते हैं क्योंकि वे उसे नहीं देखते हैं न उसे जानते हैं; परंतु तुम उसे जानते हो क्योंकि वह तुम्हारे संग रहता है औ तुम्हारे बीचमें रहेगा।
१८ मैं तुमको अनाथ कर नहीं जाऊंगा; मैं तुम्हारे निकट फिर
१९ आऊंगा। कुछ दिन पीछे इसी जगतके लोग मुझे फिर देखने नहीं पावेंगे, परंतु तुम मुझे देखने पाओगे; मैं जीऊंगा, इस-
२० लिये तुम भी जीओगे। उसी दिनमें तुम जानोगे कि मैं पिता
२१ में हूं, और तुम मुझमें हो और मैं तुममें हूं। जो कोई मेरी आज्ञाओंको रखके पालन करता है सोई मुझे प्यार कर्ता है; और जो कोई मुझे प्यार करता है सोई मेरे पिताका पियारा होगा; औ मैं भी उसे प्यार कर उसके निकट
२२ अपने ताईं प्रकाश करूंगा। तब यहूदाने (इस्करियोतीय यहूदा

सो नहीं परंतु दूसरा यऊदाने) उससे कहा, हे प्रभु, आप किस हेतुसे अपने ताईं हमलोगोंके निकट प्रकाश करेंगे और जगत के लोगोंके निकट नहीं? यीशुने उसे उत्तर दिया, जो कोई मुझे २३ प्यार करे तो वह मेरी बात मानेगा, और मेरा पिता उसे प्यार करेगा, औ हम उसके निकट आ उसके संग बासा करेंगे। जो कोई मुझे प्यार नहीं करता है सो मेरी बातोंको २४ नहीं मानता है; यही बात जो तुम सुनते हो सो मेरी ही नहीं है परंतु मेरी पिता की है जिसने मुझे भेजा है।

अपने जानेका बर्णन कर्ना।

मैंने तुम्हारे संग होते ऊये ये बातें तुमसे कही है परंतु २५ इसके पीछे वही सहायक अर्थात पबित्र आत्मा जिसे पिताने २६ मेरे नामसे भेजेगा सो तुम्हें सब बातें सिखलावेगा, और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, तुम्हें स्मरण करावेगा। मैं तुमको शांति २७ दे जाता हूं; अपनी शांति मैं तुमको देता हूं; जिसरीति जगत के लोग देते हैं उस रीति मैं नहीं देता हूं; अपने मन व्याकुल होने औ भय खाने न देओ। तुमने मेरी यही कही ऊई बात २८ सुनी है कि मैं जाके तुम्हारे निकट फिर आऊंगा; जो तुम मुझे प्यार कर्ते तो तुम यह मेरी कही ऊई बात सुननेमें आनंद करते कि मैं पिताके निकट जाऊंगा क्योंकि मेरा पिता मुझसे बड़ा है। अब उसके होनेके आगेसे मैंने तुम्हें कहा है कि जब २९ हो जावे, तुम बिश्वास करो। इसके पीछे मैं तुमसे बऊत बातें ३० न कहूंगा क्योंकि इस जगतका राजा आता है परंतु उससे मुझसे कुछ नहीं है। तौभी मैं वैसाही करता हूं जैसा पिताने ३१ मुझको आज्ञा किई है कि जगतके लोग जानें कि मैं पिताको प्यार करता हूं; उठो यहांसे चलें।

१५ पन्द्रहवां अध्याय।

अपने ताईं दाखकी लता औ शिष्योंको शाखा स्वरूप दृष्टान्त देना।

मैं दाखकी सच्ची लता हूं औ मेरा पिता बाड़ीका स्वामी १ है। जितनी डालें जो मुझमें नहीं फलतीं वह उन्हें काट २

डालता है और जितनी जो फलतीं वह उन्हें छांटता है कि
३ वे अधिक फल लावें। तुम उसी बातके द्वारा जो मैंने तुमसे
४ कही है पवित्र हो गये हो; इसलिये मुझमें रहो और मैं तुममें
रहूंगा; जिस भांति वही डाल जो लतामें नहीं लगती आपसे
आप फल नहीं ला सकती इस भांति तुम भी, जो मुझमें नहीं
५ रहो, फल नहीं ला सकोगे। मैं दाखकी लता हूं और तुम सब
डालें हो; जो मुझमें रहता है औ मैं उसमें रहता हूं सो बहुत
फल लाता है; परंतु मुझसे अलग हो तुम कुछ नहीं कर
६ सक्ते। जो कोई मुझमें न रहे वह उन सुखी हुई डालों की
नाईं, जिन्हें लोग बटोरके आगमें जलाते हैं, काटा जायगा।
७ जो तुम मुझमें रहो और मेरी बातें तुममें रहें तो जो कुछ
तुम मांगोगे सो तुमको दिया जायगा।

उनके अनेक फल फलनेकी आवश्यकता।

८ मेरे पिताकी महिमा इससे प्रकाश होगी कि तुम मेरे शिष्य
९ हो बहुत फल लाओ। जैसा पिताने मुझे प्यार किया है
१० तैसा मैंने तुम्हें प्यार किया है; मेरे प्रेममें रहियो। और जैसा
मैं अपने पिताके आज्ञाओंको पालन करके उसके प्रेममें रहता
हूं तैसा तुम मेरी आज्ञाओंको पालन करनेसे मेरे प्रेममें रहोगे।
११ मैंने ये बातें तुमसे कही है कि मैं तुम्हारे लिये आनंद करते
१२ रहूं और कि तुम्हारी आनंद भर जाय। यही मेरी आज्ञा
है कि जैसा मैंने तुम्हें प्यार किया है तैसा तुमभी आपसमें प्रेम
१३ करते रहो। कोई मनुष्य इससे अधिक प्रेम नहीं दिखला
१४ सकता कि अपने मित्रोंके लिये अपने प्राण देवे। जो तुम मेरी
१५ आज्ञाओंको पालन करो तो तुम मेरे मित्र हो। अबसे मैं
तुम्हें सेवक नहीं कहूंगा क्योंकि जो प्रभु करता है सो सेवक
नहीं जानता है परंतु मैं तुम्हें मित्र कहता क्योंकि जो कुछ मैंने
१६ अपने पितासे सुना है सो मैंने तुम्हें बतलाया है। तुमने मुझे
प्यार करके पहिले नहीं बुलाया परंतु मैंने तुम्हें प्यार करके
पहिले बुलाया, और तुम्हें ठहराया है कि तुम फल लाने
को जाओ और कि तुम्हारा फल रहते रहते रहेगा; सो

जो कुछ तुम मेरे नाम लेके पितासे मांगो सो वह तुमको देगा।

उनके दुःख पाने औ प्रबोध पानेका बखान।

मैं तुमको यह आज्ञा करता हूं कि तुम आपसमें प्रेम १७ करो। जो जगतके लोग तुमको घिन करें तो चेत करो कि १८ उन्होंने पहिले मुझको घिन किया है। जो तम संसारके १९ लोगोंके होते तो, संसारके लोग तुम्हें अपनेयोंको जानके प्यार करते; तुम संसारके लोगोंके नहीं हो, मैंने तुम्हें संसारके लोगोंमेंसे बुला लिये हैं, इसीलिये संसारके लोग तुमको घिन करते हैं। यह बात जो मैंने तुमसे कही सो चेत करो कि २० दास अपने प्रभुसे बड़ा नहीं; जो उन्होंने मुझे सताया है तो वे तुम्हें भी सतावेंगे, और जो उन्होंने मेरी बात मानी है तो वे तुम्हारी भी मानेंगे। परंतु वे मेरे नामके लिये तुमसे ये सब २१ करेंगे क्योंकि वे उसीको नहीं जानते जिसने मुझे भेजा है। जो मैं न आता औ उनसे न कहता तो उनका पाप न होता २२ परंतु अब वे अपने पापके लिये निरुत्तर हैं। जो कोई मुझे २३ घिन करता है सो मेरे पिताको भी घिन करता है। जो मैं २४ उन्होंके बीचमें ऐसे कर्म न करता जैसा और किसीने न किये तो उनको पाप न होता; परंतु उन्होंने देखा है तौभी उन्होंने मुझे औ मेरे पिताको घिन किई है। इसमें यही बात जो २५ उन्होंकी व्यवस्थामें लिखी है पूरी हुई है कि उन्होंने अकारण मुझे घिन किई है। परंतु जब वही सहायक आवेगा, २६ अर्थात वही सत्यमय आत्मा जिसे मैं तुम्हारे निकट पिताकी ओरसे भेजूंगा और जो पितासे निकलता है, सोई मेरे बिषय में साक्षी देगा। और तुमभी साक्षी देओगे क्योंकि तुम २७ पहिलेसे मेरे संग रहे हो।

१६ सोलहवां अध्याय।

खीष्टका ईश्वरके निकट जाना, औ सहायकका आना, औ जगत्‌के लोगोंसे सहायकके कर्मका बखान।

१ मैंने ये बातें तुमसे कही है कि तुम ठोकर न खाओ। वे तुमको
२ मंडलियोंमेंसे निकालेंगे; सत्य है, समय आता है जिसमें सब कोई जो तुम्हें मार डालता है यही समझेगा कि ऐसा
३ करनेसे ईश्वरकी सेवा किई जाती है। वे न पिताको, न मुझे
४ जाननेसे तुमसे ऐसे करेंगे। मैंने ये बातें तुमसे कही हैं कि जब समय आवे तब तुम चेत करो कि मैंने यह कहा; मैंने पहिलेसे तुम्हें ये बातें नहीं कहीं क्योंकि मैं तुम्हारे संग था।
५ अब मैं उसके निकट जाता हूं जिसने मुझे भेजा है तौभी तुममेंसे कोई मुझसे नहीं पूछता है कि तू कहां जाता है?
६ तुम्हारे मन इन बातोंसे जो मैंने तुमसे कही है दुःखसे भर
७ गये हैं। मैं तुमसे सच कहता हूं कि मेरा चले जाना तुम्हारे लिये बऊत भला होगा; औ मैं नहीं जाऊं तो सहायक तुम्हारे निकट नहीं आवेगा परंतु जाऊं तो मैं उसे तुम्हारे
८ निकट भेजूंगा। वह आके संसारके लोगोंको पाप औ पुण्य
९ औ बिचारके बिषयमें समझा देगा; पापके बिषयमें समझा देगा इस लिये कि उन्होंने मुझपर बिश्वास नहीं किया है,
१० पुण्यके बिषयमें इस लिये कि मैं तुमसे अदृश्य हो पिताके
११ निकट जाता, और बिचारके बिषयमें इस लिये कि इस जगत के राजाका बिचार किया गया है।

शिष्योंसे उसके कर्मका बखान।

१२ तुमसे कहनेको मेरी बऊतसी और बातें हैं परंतु अब तुम
१३ उन्हें सहने नहीं सकते हो। जब सत्यमय आत्मा आवेगा वह तुम्हें सारी सचाई सिखलावेगा; वह अपनी ओरसे नहीं कहेगा परंतु जो कुछ वह सुनेगा सो कहेगा और जो बातें
१४ होंगीं सो तुम्हें बतावेगा। वह मेरी महिमा प्रकाश करेगा
१५ क्योंकि वह मेरीही बातोंसे लेके तुम्हें जनावेगा। जो कुछ

पिताका है सो मेराही है; इसलिये मैंने कहा कि वह मेरी ही बातोंसे लेके तुम्हें जनावेगा।

खीष्टके जानेकी बात शिष्योंको न बूझना।

थोड़े देर तुम मुझे देखने नहीं पाओगे; फिर थोड़े देर १६ तुम मुझे देखने पाओगे; क्योंकि मैं पिताके निकट जाता हूं। इसपर उसके शिष्योंमेंसे किसी किसीने आपसमें कहा कि १७ यह कौनसी बात है जो वह कहता है थोड़े देर तुम मुझे देखने नहीं पाओगे, फिर थोड़े देर तुम मुझे देखने पाओगे, क्योंकि मैं पिताके निकट जाता हूं? फिर उन्होंने कहा, यह १८ थोड़े देरकी बात जो वह कहता है सो क्या है? हम नहीं समझते हैं कि यह कौनसी बात है जो वह कहता है। यीशुको जान गया कि वे उससे पूछने चाहते थे; इसलिये १९ उसने उनसे कहा, क्या तुम आपसमें मेरी इस कही हुई बात-पर पूछपाछ करते हो कि थोड़े देर तुम मुझे देखने नहीं पाओगे और फिर थोड़े देर तुम मुझे देखने पाओगे? मैं तुम्हें २० सचसच कहता हूं कि तुम रोओगे औ बिलाप करोगे परंतु जगत के लोग आनंद करेंगे; हां तुम दुःखी होओगे परंतु तुम्हारा दुःखके पीछे सुख हो जायगा। स्त्री जनतीहोमें दुःखित होती है २१ क्योंकि उसके समय आ पहुंचा है परंतु जब वह बालक जनी तब वह अपने दुःखका चेत नहीं करती, हां वह आनंद करती है कि एक जन जगतमें उत्पन्न हुआ है। वैसाही तुम २२ भी अभी दुःखित हो परंतु मैं तुम्हें फिर देखूंगा तब तुम्हारे मन आनंदित होवेंगे, और जो आनंद तुम्हारे ही होगा सो कोई तुमसे छीन नहीं ले सकेगा। उसी दिन भी तुमको कुछ २३ मुझसे पूछने नहीं होगा। मैं तुमसे सचसच कहता हूं कि जो कुछ तुम मेरे नाम लेके पितासे मांगोगे सो वह तुमको देगा। अबलों तुमने मेरे नाम लेके कुछ नहीं मांगा है; मांगो तो पा- २४ ओगे; इससे तुम्हारा आनंद पूरा होगा; मैंने उपमाओं करके २५ ये बातें तुम्हें कहीं है परंतु समय आता है जिसमें मैं उपमाओं करके तुमसे फिर नहीं कहूंगा, हां मैं खोल खोलके पिताके

२६ बिषयमें बतलाऊंगा। उसी दिनमें तुम मेरे नाम लेके मांगोगे; और मैं तुमसे नहीं कहता हूं कि मैं तुम्हारे लिये पितासे
२७ प्रार्थना करूंगा; पिता आपही तुम्हें प्यार करता है क्योंकि तुमने मुझे प्यार किया है औ बिश्वास किया है कि मैं ईश्वर
२८ की ओरसे आया हूं। मैं ईश्वरकी ओरसे निकलके जगतमें आया हूं; फिर जगतको छोड़के पिताके निकट जाता हूं।
२९ तब उसके शिष्योंने कहा, देखो, अब आप उपमा न करके खोलके कहते हैं; अब हम जानते हैं कि आप सब कुछ जानते हैं और प्रयोजन नहीं है कि कोई आपसे पूछे; हम
३० बिश्वास करते हैं कि आप ईश्वरकी ओरसे निकल आये
३१ हैं। यीशुने उत्तर किया, क्या तुम अब बिश्वास करते हो?
३२ देखो, समय आता है, हां आ पहुंचा है जिसमें तुम छिन्न भिन्न हो अपने अपने घरको जा मुझे अकेला छोड़ोगे तौभी
३३ मैं अकेला नहीं हूं क्योंकि पिता मेरे संग है। मैंने ये बातें तुम्हें कही है कि मुझसे तुम्हारी शान्ति होवे; इस संसार में तुम दुःख पाओगे ताभी ढाड़स बांधो; मैंने संसारको जीता है।

१७ सतरहवां अध्याय।

ख्रीष्टको अपने लिये पिताके निकट प्रार्थना करनी।

१ यीशुने ये बातें कही; तब उसने स्वर्गकी ओर दृष्टि करके कहा, हे पिता, समय आ पहुंचा है; अपने पुत्रकी महिमा
२ प्रकाश कर कि तेरे पुत्र तेरी महिमा प्रकाश करे क्योंकि तूने उसके हाथमें सब प्राणि सौंप दिया है कि वह उन सबोंको,
३ जो तूने उसको दिया है, अनंत जीवन देवे। अनंत जीवन इससे है कि वे तुझे, जो अद्वैत औ सत्य ईश्वर है, और यीशु
४ ख्रीष्टको जिसे तूने भेजा है, जानें। मैंने इस संसारमें तेरी महिमा प्रकाश किई है; जो कर्म तूने मुझे करनेको दिया सोई
५ मैं कर चूका हूं। सो, हे पिता, अपने निकट मेरी वही महिमा प्रकाश कर जो जगतके होनेके आगे तेरे संग मेरी थी।

बारह शिष्योंके लिये प्रार्थना करनी।

मैंने उन मनुष्योंको, जिन्हें तूने इस संसारमेंसे मुझको ६ सोंप दिया है, तेरे नामकी बात प्रगट किई है; वे लोग तेरे ही थे और तूने उन्हें मुझको सोंप दिया है और उन्होंने तेरी बात मानी है। अब वे जानते हैं कि सब कुछ जो तूने मुझको ७ सोंप दिया है सो तुझसे है क्योंकि जो बातें तुने मुझको दिई ८ सो मैं उन्होंको दिई है और उन्होंने उन्हें ग्रहण किया है और निश्चय माना है कि मैं तेरी ओरसे निकलके आया हूं और भी बिश्वास किया है कि तूने मुझे भेजा है। मैं उन्होंके बिषयमें ९ प्रार्थना करता हूं; न इस संसारके लोगोंके बिषयमें प्रार्थना करता हूं परंतु उन्होंके बिषयमें जिन्हें तूने मुझको सोंप दिये हैं क्योंकि वे तेरे ही हैं। सब कुछ जो मेरे ही है सो तेरेही है और जो १० तेरेही है सो मेरेही है और उनसे मेरी महिमा प्रकाश होती है। मैं जगतमेंसे चले जाता हूं परंतु ये जगतमें रहेंगे; मैं ११ तेरे निकट आता हूं; सो, हे पबित्र पिता, जिन्हें तूने मुझको दिये हैं उन्हें अपने नाममें रख कि जैसे हम दोनों एक हैं तैसे वे भी एक होवें। जबलों मैं इससंसारमें उनके संग था १२ मैंने उन्हें तेरे नाममें रखा; जो तूने मुझको सोंपा है सो मैंने रक्षा किई है; उनमेंसे कोई खो गया नहीं है उसीको छोड़ जो खो जानेके जोग है, इससे धर्मपुस्तककी बात पूरी हुई है। अब मैं तेरे निकट आता हूं, परंतु मैं संसारमें रहते हुये ये १३ बातें कहता हूं कि उन्होंका वही आनंद जो मुझसे होता है पूरा हो जावे। मैंने तेरी बात उन्होंको दिई है और संसारके १४ लोगोंने उन्हें घिन किया है क्योंकि वे संसारके नहीं हैं जैसा मैं संसारके नहीं हूं। मैं यह प्रार्थना नहीं करता हूं कि तू उन्हें १५ संसारमेंसे ले लेवे परंतु यह कि तू उन्हें दुष्टसे बचा लेवे। जैसा १६ मैं संसारका नहीं हूं तैसे वे भी संसारके नहीं हैं। अपनी १७ सचाईसे उन्हें पबित्र कर; तेरी बातही सची है। जैसा तूने १८ मुझको संसारमें भेज दिया है तैसा मैंने उन्होंको संसारमें

१९ भेज दिया है। मैं उनके लिये अपनेको पवित्र करता हूं कि वे भी सच्चाईसे पवित्र हो जावें।

संपूर्ण शिष्योंके निमित्त अनंत सुखके कारण प्रार्थना करणी।

२० मैं केवल उनके लिये प्रार्थना नहीं करता हूं परंतु उनके लिये भी, जो उनके उपदेशसे मुझपर बिस्वास करेंगे; मैं
२१ प्रार्थना करता हूं कि वे सब एक होवें हां, हे पिता, जैसा तू मुझमें है औ मैं तुझमें हूं वैसेही वे भी हममें एक होवें; इससे
२२ संसारके लोग बिस्वास करें कि तूने मुझे भेजा है। मैंने उनको वही महिमा दिई है जो तूने मुझको दिई है कि जैसे हम
२३ एक होवें तैसे वे भी एक होवें हां मैं उनमें हूं औ तू मुझमें है कि वे ठीक एक होवें; इससे संसारके लोग ये बातें जानें कि तूने मुझे भेजा है और उन्हें ऐसा प्यार किया है जैसा तूने
२४ मुझे प्यार किया है। हे पिता, मैं यह चाहता हूं कि जिन्हें तूने मुझको दिया है वे उसी स्थानमें रहें जहां मैं रहूंगा कि वे मेरी ही उस महिमाको देखें जो तूने मुझको दिई है क्योंकि तूने
२५ जगतकी उत्पत्तिसे आगे मुझे प्यार किया है। हे धार्मिक पिता, संसारके लोग तुझे नहीं जानते हैं परंतु मैं तुझे जानता हूं
२६ और ये भी जानते हैं कि तूने मुझे भेजा है। और मैंने तेरे नामकी बात उनहोंको जताई है औ जता दूंगा कि जिस प्यारसे तूने मुझे प्यार किया है वह उनमें रहे औ मैं भी उनमें रहूं।

१८ अठारहां अध्याय।

योशूका पराए हाथमें।

१ यीशुने ये बातें कहिके अपने शिष्योंके संग किद्रोण नाम नालेके पार गया जहां कोई बारी थी जिसमें वह औ उसके
२ शिष्य गये। उसी बारीको यहूदा, जिसने यीशुको पकड़वाया, जानता था क्योंकि यीशु अपने शिष्योंके संग वहां कभी कभी
३ आता जाता था। तब यहूदा सिपाहियों और महा-याजकों औ फिरूशियोंके प्यादोंको, मशालों औ दीपकों औ

शस्त्रों सहित, ले वहां आया। यीशु, सब कुछ जो अपने पर ४ आता था, जानके निकला औ उनसे कहा, तुम लोग किसको ढूंढते हो? उन्होंने कहा, नासरतीय यीशुको; यीशुने उनसे ५ कहा, सोई मैं हूं; उसी समयमें उसका पकड़वाने हारा यहूदाभी उनके संग खड़ा था। ज्योंहीं उसने उनसे कहा कि ६ सोई मैं हूं वे सब तुरंत पीछे हटके भूमिपर गिरपड़े। फिर उसने उनसे पूछा, तुम लोग किसको ढूंढते हो? उन्होंने कहा, ७ नासरतीय यीशुको; यीशुने उत्तर दिया, मैंने तो तुम्हें कह ८ दिया है कि सोई मैं हूं; जो तुम मुझे ले जाने चाहते हो तो मेरे शिष्योंको जाने देओ। इसमें यही बात, जो उसने ९ कही थी, पूरी हो गई कि जिन्हें तूने मुझको दिया है उन-मेंसे मैंने एकको नहीं खोया है। तब शिमोन पितरने, उस १० खड्गको जो अपनेका था, खींचकर महायाजकके किसी सेवक का दहिना कान उड़ा दिया; उस सेवकका नाम मल्क था। इसपर यीशुने पितरसे कहा, अपना खड्ग काठीमें कर, जो ११ कटोरा मेरे पिताने मुझको दिया है क्या मैं वही नहीं पीऊं?

महापुरोहितके निकट उसको ले जाना।

तब सिपाहियों और उनका सरदार औ यहूदियोंके प्यादोंने १२ यीशुको पकड़के बांधा और उसे पहिले हनानके निकट ले गये १३ क्योंकि वह कियफाका श्वशुर था जो उस बर्षमें महायाजक था। यह वही कियफा था जिसने यहूदियोंको यह परामर्श १४ दिया कि लोगोंके लिये एक मनुष्यका मरणा भला है।

उसके पीछे पितर औ योहनका जाना।

तब शिमोन् पितर औ एक और शिष्य यीशुके पीछे हो १५ लिये; यह दूसरा शिष्य महायाजकका जान पहिचान हो यीशुके संग महायाजकके घरमें गया परंतु पितर बाहिर १६ द्वार पर खड़ा रहा; तब उसी शिष्यने जो महायाजकका जान पहिचान था बाहिर जा द्वार पालसे कह पितरको भीतर ले आया। तब द्वारपाली दासीने पितरसे कहा, क्या १७ तू भी इस मनुष्यके शिष्योंमेंसे एक नहीं है? उसने कहा, सो

१८ नहीं। उसी समय दास औ प्यादे लोग जाड़के मारे वहां कोइलोंकी आग सुलगाके खड़े ऊये तापते थे; और पितर भी उनके बीचमें खड़ा हो ताप रहा था।

उसका बिचार कर्ना।

१९ तब महायाजकने यीशुसे उसके शिष्योंकी औ उसके उप-
२० देशकी बातें पूछीं; यीशुने उत्तर दिया, मैंने संसारके लोगोंको प्रगटमें कहा है; मैंने नित्य नित्य मंडलियोंके स्थानोंमें औ महामंदिरमें सिखलाया है जहां यहूदि लोग एकठे आते
२१ हैं; मैंने छिपाके कुछ नहीं कहा है; क्यों मुझसे पूछते हो? जिन्होंने मेरा उपदेश सुना है उन्होंसे पूछो; देखो, मैंने क्या
२२ क्या कहा है सो वे जानते हैं। जब उसने यों कहा तब प्यादोंमेंसे एकने जो वहां खड़ा था, यीशुको थपेड़ा मारके
२३ कहा, क्या तू महायाजकको ऐसा उत्तर देता है? यीशुने उत्तर दिया, जो मैंने बुरी बात कही है तो उस बुराईका प्रमाण दे; परंतु जो मैंने भली बात कही है तो क्यों मुझे
२४ मारता है? इसके पीछे हनानने यीशुको बांधे ऊये महाया-जकके निकट भेज दिया।

उसको पितरका अस्वीकार कर्ना।

२५ शिमोन् पितर् खड़ा हो तापता था; उसी समयमें किसी किसीने उससे पूछा, क्या तू भी उसके शिष्योंमेंसे एक नहीं है?
२६ उसने मुकरके कहा सो नहीं। महायाजकके सेवकोंमेंसे एकने जो उसीका कुटुम्ब था जिसका कान पितरने उड़ा दिया,
२७ कहा, क्या मैंने तुझे उसके संग बारीमें नहीं देखा? पितरने फिर मुकरा और तुरंत कुक्कुट बोल उठा।

उसको पिलातको निकट ले जाना।

२८ भोर होते ही वे यीशुको कियफाके निकटसे अधिपतिकी कचहरीमें ले गये परंतु वे आपही कचहरी में न गये न होवे कि वे अशुचि हो जावें और निस्तार पर्बका भोजन न
२९ खा सकें; इसलिये पिलातने बाहिर आ उनसे पूछा, इस
३० मनुष्यका क्या दोष है? उन्होंने उत्तर दिया, जो वह दुष्कर्म न

कर्त्ता तो हम उसको तेरे हाथमें न सोंपते। पिलातने कहा, ३१ उसको ले जाके अपनी ब्यवस्थाकी रीतिके अनुसार बिचार करो; यहूदियोंने कहा, किसी मनुष्यको घाट करना हमोंके हाथमें नहीं है। इसमें वही बात जो यीशुने अपनी मृत्युके ३२ बिषयमें कही थी पूरी ऊई।

पिलातसे उसका बिचारित होना।

तब पिलातने फिर कचहरीमें गया औ यीशुको बुलाके ३३ पूछा, क्या तू यहूदियोंका राजा है? यीशुने कहा, क्या आप ३४ यही बात अपनी ओरसे कहते हैं अथवा किसी औरोंने आपसे कही है? पिलातने कहा, क्या मैं यहूदी हूं? तेरेही ३५ लोगों औ प्रधान याजकोंने तुझे मेरे हाथमें सोंपा है; तूने क्या किया है? यीशुने उत्तर दिया, मेरा राज इस संसारका ३६ नहीं है, जो मेरा राज इस संसारका होता तो मेरे सेवक लड़ते कि मैं यहूदियोंके हाथमें न सोंपा जाता; परंतु मेरा राज्य इस संसारका नहीं है; तब पिलातने कहा, क्या तू ३७ राजा है? यीशुने उत्तर दिया, आप सत्य कहते हैं, मैं राजा हूं; इसहेतु मैं उत्पन्न ऊआ औ इसहेतु मैं इस जगतमें आया कि सच्चाई पर साक्षी देऊं; सब कोई जो सच्चाइसे है सो मेरी बात सुनता है। पिलातने उसे कहा, सच्चाई क्या है? और यह ३८ कहके फिर यहूदियोंके निकट बाहिर गया और उनसे कहा मैं उसका कुछ दोष नहीं पाया है। तुम्हारी यह रीति है ३९ कि निस्तार पर्बके समयमें मैं तुम्हारे कहनेसे किसीको छुड़ाऊं सो तुम क्या चाहते हो? क्या तुम यह चाहते हो कि मैं यहूदियोंके राजाको छुड़ाऊं। इसपर सबोंने फिर चिल्लायके ४० कहा, कि यीशुको नहीं परंतु बरब्बाको छुड़ाओ। बरब्बा डाकु था।

१९ ऊनीसवां अध्याय।

खीष्टका कोड़े खाना औ शिर पर कांटकोंका टोप धर्नेके पीछे पिलातका उसको निर्दोष ठहराना।

१ पिलातने यीशुको ले कोड़ा मारा। तिस पीछे सिपाहियोंने २ कांटोंका मुकुट बनाके उसके सिरपर रखा और उसे बैजनीय ३ रंगके बस्त्र पहिनाके कहा, हे यहूदियोंके राजा, प्रणाम; यह ४ कह उसको थपेड़े मारे। तब पिलातने फिर बाहिर आके लोगोंसे कहा, देखो, मैं उसे तुम्हारे निकट लाता हूं कि ५ तुम जानो कि मैंने उसका कुछ दोष नहीं पाया है। पीछे यीशु उन्हीं कांटोंका मुकुट औ बैजनीय रंगके बस्त्र पहिरे हुये बाहिर आया; तब पिलातने कहा, इस मनुष्यको देखो। ६ प्रधान याजकों औ सिपाहियोंने उसे देखके चिल्लाया कि उसे क्रुशपर चढाओ, क्रुशपर चढाओ; पिलातने उनसे कहा, तुम आपही उसे क्रुशपर चढाओ, मैंने उसका कुछ दोष नहीं ७ पाया है। यहूदियोंने उत्तर दिया, वह हम लोगोंकी व्यवस्थाके अनुसार मार डाले जानेके योग्य है क्योंकि उसने अपनेको ईश्वर का पुत्र कहा है।

यीशुके छोड़नेमें पिलातकी चेष्टा कर्नी।

८ पिलातने यह बात सुन बहुत डर गया और कचहरीमें ९ फिर जाके यीशुसे पूछा, तू कहांका है? यीशुने उसको कुछ १० उत्तर न दिया। पिलातने कहा, क्या तू मुझको कुछ उत्तर नहीं देता? क्या तू नहीं जानता कि तुझे क्रुशपर चढ़ाना अथवा ११ छुड़ा देना मेरे हाथमें है? यीशुने उत्तर दिया, जो उपरसे यह आपको न दिया जाता तो मुझपर कुछ नहीं कर सकते; तो भी जिसने मुझको आपके हाथमें सौंपा है उसका अधिक पाप १२ हुआ। यह सुन पिलातने उसे छुड़ाने चाहा परंतु यहूदियोंने चिल्लायके कहा, जो आप उसको छोड़ देओ तो आप कैसरका मित्र नहीं; सब कोई जो अपनेको राजा कहता है वह कैसरके बिरुद्ध कहता है।

यहूदियोंको तुष्टिके निमित्त उसको क्रुश पर चढ़ानेकी आज्ञा देनी।

यह बात सुन पिलातने यिशुको बाहिर ला उस चौकीपर १३ बैठाया जो उस चबूतरे पर था जिसका नाम इब्रीय भाषामें गब्बथा है। यह निस्तार पर्बकी बनाउरीका दिन था औ १४ छठवीं घड़ीसी थी। तब पिलातने यहूदियोंसे कहा, देखो, वह तुम्हारे राजा है; परंतु उन्होंने चिल्लायके कहा, ले जाओ ले १५ जाओ, उसे क्रुश पर चढ़ाओ; पिलातने कहा, क्या मैं तुम्हारे राजाको क्रुश पर चढ़ा दूंगा? प्रधान याजकोंने उत्तर दिया, कैसरको छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं है। तब पिलात १६ ने यीशुको क्रुश पर चढ़ानेको उनके हाथ सौंपा; इसपर वे उसे पकड़ कर ले गये।

यीशुको क्रुश पर बेधना।

यीशु अपना क्रुश ढोये ऊये उसस्थानको पऊंचा जो इब्रीय १७ भाषामें गुलगलता कहलाता है अर्थात् खोपरीका स्थान। वहां उन्होंने बीचमें उसको और उसकी दोनों ओरोंपर १८ और दो मनुष्योंको क्रुशोंपर चढ़ाया। औ पिलातने एक नाम पत्र १९ लिखके यीशुके क्रुश पर लगा दिया; वह लिखा ऊआ यही था, 'यह नासरतीय यीशु यहूदियोंका राजा है। इस नाम २० पत्रको बऊतसे यहूदियोंने पढ़ा क्योंकि वह इब्रीय औ यूनानीय औ रोमीय बोलीमें लिखा था; जिस स्थानमें यीशु क्रुश पर चढ़ाया गया था सो नगरके निकट था। यहूदियोंके २१ प्रधान याजकोंने पिलातसे कहा, मत लिखीये कि यह यहूदियोंका राजा है परंतु यह लिखीये कि उसने कहा कि मैं यहूदियोंका राजा हूं। पिलातने उत्तर दिया, जो कुछ मैंने २२ लिखा है सो लिखा है।

यीशुके बस्त्रोंका बिभाग करना।

सिपाहियोंने यीशुको क्रुश पर चढ़ाकर उसके बस्त्रको लेके २३ चार भाग किये, एक एक सिपाहिने एक एक भाग लिया; उन्होंने उसके कुर्ताको भी लिया; कुर्ता बिन सीया उपरसे नीचेलों बिना ऊआ था, इसलिये उन्होंने आपसमें कहा कि

२४ हम कुर्तेको न फाड़ें परंतु उसपर चिट्ठी डालें कि वह किसका होगा। इसमें यही जो लिखा हुआ सो पूरा हो गया कि उन्होंने आपसमें मेरे बस्त्रको बांटा और मेरे कुर्तेपर चिट्ठी डाली; सो सिपाहियोंने येही कर्म किये।

अपनी मातासे उसकी बात कर्नी।

२५ उस समय यीशुकी माता, औ उसकी माताकी बहिन मरियम, जो क्लियपाकी स्त्री थी, औ मगदलिनी मरियम, उसके क्रुशके २६ निकट खड़ीं थीं। यीशुने अपनी माताको औ उसी शिष्यको, जिसे वह प्यार कर्ता था, निकट खड़े हुये देखके अपनी मातासे २७ कहा, हे नारि, इसीको अपने पुत्र सा जानिये; फिर उसने उस शिष्यसे कहा, इसीको अपनी मातासी जानिये। इसके पीछे वही शिष्य यीशुकी माताको अपने घर ले गया।

२८ तिस पीछे यीशुको जाना गया कि अब सब कुछ हो चूका है; तब उसने धर्म पुस्तकका बचन पूरा करके कहा, मुझे पियास २९ लगी है। उसी समयमें एक घड़ा सिरकेसे भरा हुआ वहां था; सो उन्होंने मरेबादलको सिरकेमें भिगाकर एसोबके नलपर ३० लगा उसके मुखमें दिया। यीशुने सिरकेको लेके कहा, अब सब पूरा हुआ; और यही बात कह सिर झुकाके प्राण सोंप दिया।

यीशुके पंजरमें बर्छा मारना।

३१ वही दिन पर्बकी बनाउरीका दिन था; इसलिये यहूदियोंने पिलातके निकट जाके बिंती किई कि उनकी टांगें तोड़ीं जायें औ उनकी लोथें लिईं जावें कि वे बिश्रामके दिनमें क्रुशपर न ३२ रहें क्योंकि वह बिश्रामवार बड़ा दिन था। सिपाहीयोंने आके उन दोनोंमेंसे, जो उसकी ओरोंपर क्रुशपर चढ़ाये गये थे, एककी ३३ टांगें तोड़ीं; फिर दूसरेकी टांगें तोड़ीं। परंतु जब उन्होंने यीशुके निकट आके देखा कि वह मर गया है तो उसकी टांगें न ३४ तोड़ीं, परंतु एकने बर्छेसे उसका पंजर छेदा और तुरंत उसमेंसे ३५ लोहू औ जल निकले। जिसने यह देखा वही साक्षी देता, औ उसीकी साक्षी सत्य है; और वह जानता है कि उसकी बात ३६ तुम्हारे बिश्वासके योग्य है। इनबातोंके होनेमें यही जो लिखा

गया था पूरा ज़ुआ कि उसकी कोई हड्डी न तोड़ी जायगी। और यहभी जो लिखा गया था सो पूरा ज़ुआ कि वे उस- ३७ पर, जिसे उन्होंने छेदा, दृष्टि करेंगे।

योशुको गोरमें देना।

इसके पीछे अरिमथिया नगरका यूसफ, जो यीशुका शिष्य ३८ था परंतु यहूदियोंके डरके मारे प्रकाशित नहीं ज़ुआ, पिलातके निकट आके बिंती किई कि आप आज्ञा दीजिये कि मैं यीशुकी लोथ उतार ले जाऊं; पिलातने आज्ञा दी; इसपर वह आके यीशुकी लोथ ले गया। निकदीमः नाम भी, जो आगे रातको यीशुके ३९ निकट आया था, पचास एक सेरके मिलाये ज़ुये बोल और एलवा ले आया। इन दोनोंने यहूदियोंके गाड़नेकी रीतिके अनुसार यीशु ४० को लोथ लेके सूती बस्त्रमें सुगंधके संग लपेटी। उसी स्थानके ४१ निकट जहां यीशु क्रुशपर चढ़ाया गया था कोई बारी थी और उसी बारीमें कोई नयी गोर थी जिसमें कोई मृतक कभी नहीं धरा गया था। सो उन्होंने उसी गोरमें जो निकट थी यीशुको ४२ रखा क्योंकि यहूदियोंके पर्बकी बनाउरीके दिन आ पहुंचा था।

२० बीसवां अध्याय।

योशुके जी उठनेका प्रकाश होना।

अठवारेके पहिले दिनमें, बड़ी भोर, अंधियारा रहतेही, १ मगदलिनी मरियम् यीशुकी गोरके निकट आई और पत्थर को गोरसे ढलकाया ज़ुआ देखा। इसपर वह शिमोन २ पितर औ यीशुके पियारे शिष्यके निकट दौड़ी आई औ उन्हें कही, कोई गोरमेंसे प्रभुको ले गये हैं और हम नहीं जानते हैं कि उन्होंने उसे कहां रखा है। तब पितर उस दूसरे ३ शिष्यके संग हो निकलके गोरकी ओर जाने लगा। सो वे ४ दोनों एक संग दौड़े, परंतु दूसरा शिष्य पितरके आगे बढ़के गोर पर पहिले आ पज़ुंचा। उसने झुकके सूती बस्त्र पड़े ज़ुये ५ देखे, परंतु भीतर नहीं गया। शिमोन् पितर उसके पीछे ६ पज़ुंचा औ गोरके भीतर जा सूती बस्त्र पड़े ज़ुए देखे; औ ७

वही अंगोछा जिससे उसका सिर बांधा गया था, उन सूती
८ बस्त्रोंके संग नहीं, परंतु लपेटा हुआ अलग पड़ा देखा। तब
दूसरा शिष्यभी, जो गोर पर पहिले आया था, भीतर पैठा
९ औ देखके बिश्वास किया क्योंकि वे अबलों धर्म पुस्तककी यही
बात न समझते थे कि मृतकोंमेंसे उसको जी उठना होगा।
१० पीछे येही दोनों शिष्य अपनेयोंके निकट फिर गये।

मग्दलिनी मरियम्को उसका दर्शन होना।

११ तिस पीछे मरियम् गोरके निकट रोती हुई खड़ी थी; उसने
१२ रोते२ गोरमें झुकके देखा कि दो स्वर्गी दूत स्वेत बस्त्र पहिरे
हुये बैठे हैं एक सिरहाने औ दूसरा पैताने पर जहां यीशुकी
१३ लोथ रखी गई थी। उन्होंने कहा, हे नारि, तू किस लिये रोती
है? उसने कहा, कोई मेरे प्रभुको ले गये हैं और मैं नहीं जानती
१४ हूं कि उन्होंने उसे कहां रखा है। यह कह मुख फिराके यीशुको
१५ खड़े देखा; परंतु न जानती थी कि यह यीशु है। यीशुने उससे
पूछा, हे नारि, क्यों रोती है? किसे ढूंढ़ती है? उसने उसे उस
बारीके माली जानके कहा, हे महाराज, जो आप यहांसे उसे
ले गये हैं तो मुझे कहिये कि आपने उसे कहां रखा है और
१६ मैं जाके उसे ले जाऊंगी। यीशुने कहा, हे मरियम; उसने
१७ फिरके उत्तर दिया, हे रब्बूनी, अर्थात् हे गुरू। यीशुने कहा,
मुझे छुयियो मत, मैं इस समय अपने पिताके निकट नहीं
जाता हूं, परंतु मेरे भाईयोंके निकट जाके कहियो कि गुरू
अपने औ तुम्हारे पिताके औ अपने और तुम्हारे ईश्वरके निकट
१८ जायगा। मग्दलिनी मरियम् तुरंत जाके शिष्योंसे कहा, मैंने
प्रभुको देखा और उसने मुझसे ये बातें कहीं।

उसका शिष्योंको दर्शन होना।

१९ अठवारेके उस पहिले दिनकी सांझके समय, सब शिष्योंने
एकठे हो यहूदियोंके डरके मारे द्वार बंद किया था; उसी
समय यीशु आया औ उनके बीच खड़े हो यह कहा, कल्याण
२० हो। यह कह अपने हाथों औ पंजर दिखाया; शिष्य
प्रभुको देख आनंद हुए। यीशुने फिर कहा, कल्याण हो,

जैसा पिताने मुझे भेजा है तैसाही मैं तुम्हें भेजता हूं। उसने २१ यह कहके उन् पर फूंकके कहा, पवित्र आत्माको लो; २२ जिन्होंके पाप तुम क्षमा करो वे उन्हें क्षमा किये गये हैं और २३ जिन्होंके तुम क्षमा न करो वे क्षमा न किये गये हैं।

थोमाको दर्शन देना।

यीशुके आते समय उन बारहोंमेंसे दिदिमः थोमा नाम २४ शिष्य उनके संग नहीं था। शिष्योंने उससे कहा, हमने २५ प्रभुको देखा है; उसने उत्तर दिया, जब लग मैं उसके हाथोंमें कीलोंके चिन्ह न देखूं, औ कीलोंके चिन्होंमें अपनी अंगुली न रखूं, औ उसके पंजरमें अपने हाथ न डालूं तब लग मैं बिश्वास नहीं करूंगा। आठ दिनके पीछे शिष्य उसी २६ थोमाके संग फिर एकत्र हो द्वार बन्द कर भीतर थे, उस समय यीशु आया औ बीचमें खड़े हो कहा, कल्याण हो। तब उसने थोमासे कहा, यहां अपनी अंगुली लगा मेरे हाथोंको २७ देख, औ अपने हाथ बढ़ा मेरी पंजरमें डाल, औ अबिश्वासी न हो बिश्वासी हो। तब थोमाने कहा, हे मेरे प्रभु, हे मेरे २८ ईश्वर। यीशुने कहा, हे थोमा, क्या तू मुझको देख बिश्वास २९ करता है? जो जन बिन देखे बिश्वास करें वेही धन्य हैं।

सुसमाचार लिखनेका अभिप्राय।

यीशुने अपने शिष्योंके सन्मुख बहुतेरे और आश्चर्य कर्म किये ३० जिनका वर्णन इस पोथीमें नहीं किया गया है परंतु ये लिखे ३१ गये हैं कि तुम बिश्वास करो कि यीशु जो है वह ख्रीष्ट औ ईश्वरका पुत्र है; और बिश्वास कर उसके नामसे जीवन पाओ।

२१ ईक्कीसवां अध्याय।

तिबिरीया झील वा गालीलके समुद्र पर शिष्योंको दर्शन देना।

इसके पीछे यीशुने अपने ताईं तिबिरिया समुद्रके तीर पर १ शिष्योंको दिखलाया; दर्शनकी बात यही है। शिमोन पितर और दिदिमः थोमा, औ गालीलीय कान्ना नगरका रहनेहारा २ नियनेल, औ सिबदीके दोनों पुत्र, औ और दो शिष्य किसी

३ स्थानमें एकठे थे; उसी समय शिमोन् पितरने कहा, मैं मछली पकड़नेको जाता हूं। वे बोले, तो हमभी तेरे संग जायेंगे; तब वे निकलके तुरंत नाव पर चढ़े, परंतु उस रातको कुछ नहीं
४ पकड़ा। भोर होते ही यीसु तीर पर खड़ा था, परंतु शिष्योंने
५ न जाना कि यह यीसु है। यीसुने कहा, हे बच्चो, क्या तुम्हारे
६ निकट कुछ खानेको है? वे बोले, कुछ नहीं। उसने कहा, नाव की दहिनी ओर जाल डालके पाओगे; सो उन्होंने डालके
७ ऐसी बहुत मछलियां पकड़ीं कि वे उसे खींच न सके। यीसुके पियारे शिष्यने पितरसे कहा, यह प्रभु है; सो जब शिमोन् पितरने सुना कि यह प्रभु है उसने अपने वस्त्र पहिरा (क्योंकि
८ वह नंगा था) और समुद्रमें कूद पड़ा। इतनेमें और शिष्य जालके मछलीयों सहित खैंचतेर नावको खेवतेर तीर पर लाए; वे तीरसे बहुत दूर नहीं थे, केवल दो एक सौ हाथके; तीर
९ पर आके उन्होंने देखा कि यहां कोईलोंकी आग औ उसपर
१० मछलियां रखी हुई औ रोटी हैं। यीसुने कहा, उन मछलीयों-
११ मेंसे जो तुमने अभी पकड़ीं हैं कुछ ले आओ। शिमोन् पितरने फिर जा जाल खींचा; उसमें एक सौ तिरपन बड़े मछलियां
१२ थीं; तौभी इतनी मछलियोंसे जाल नहीं फटा। यीसुने उनसे कहा कि आके भोजन करो; इतनेमें शिष्योंमेंसे किसीको साहस न हुआ कि उसे पूछे कि तू कौन है? क्योंकि वे जानते थे कि
१३ यह प्रभु है। तब यीसुने आके रोटी औ मछलियां ले उन सबों-
१४ को परोस दीं। यह तीसरी बार है कि यीसुने गोरमेंसे उठनेके पीछे अपने शिष्योंको अपने ताईं दिखाया।

पितरके संग यीसुकी बात चीत कर्नी।

१५ भोजन कर्नेके पीछे यीसुने शिमोन पितरसे पूछा, हे यूनसके पुत्र शिमोन, क्या तू इन सबसे मुझे अधिक प्यार कर्ता है? उसने कहा, हां प्रभु, आप जानते हैं कि मैं आपको प्यार कर्ता हूं; यीसुने उसे कहा, तो मेरे भेड़ोंके बच्चोंको चरा।
१६ उसने उसे दूसरी बार पूछा, हे यूनसके पुत्र शिमोन्, क्या तू मुझे प्यार कर्ता है? उसने कहा, हां प्रभु, आप जानते

हैं कि मैं आपको प्यार कर्ता हूं; यीशुने उसे कहा, तो मेरे भेड़ोंको चरा। उसने उसे तीसरी बार पूछा, हे यूनसके पुत्र १७ शिमोन्, क्या तू मुझे प्यार कर्ता है? इस पर पितर दुःखित हुआ क्योंकि यीशुने उससे तीसरी बार पूछा कि तू मुझे प्यार करता है; सो उत्तर देके कहा, हे प्रभु, आप सब कुछ जानते हैं, आप जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूं; यीशुने कहा, तो मेरी भेड़ोंको चरा। मैं तुझसे सच सच कहता हूं, जबलों १८ तू तरुण था तू अपनी कटि बांधके जहां कहां चाहे वहां जाया करता; परंतु जब तू बूढ़ा होगा तू अपने हाथोंको फैलावेगा, औ दूसरा तुझको बांधके जहां कहां तू न चाहे वहां तुझे ले जावेगा। यीशुने यह कहिके बता दिया कि पितरने १९ किस रीतिके मर्नेसे ईश्वरकी महिमा प्रकाश करेगा। यीशु यह कहके फिर उसे बोला, मेरे पीछे हो ले।

योहनके विषयमें उसकी बात कर्नी।

तब पितरने मुह फिराके उस शिष्योंको पीछे आते देखा २० जिसे यीशु प्यार कर्ता था, औ जिसने बियारीके समय यीशुके समीप बैठके यह पूछा, हे प्रभु, वह कौन है जो आपको पकड़-वायगा? पितरने उसीको पीछे आते देखके यीशुसे पूछा, हे प्रभु, २१ इस मनुष्यका क्या होगा? यीशुने कहा, जो मैं चाहूं कि जब लग २२ मैं फिर न आऊं तब लग वह यहां रहे तो यह तुझे क्या है? तू मेरे पीछे चला आ। सो भाईयोंमें यह बात फैल गई कि २३ यह शिष्य नहीं मरेगा, परंतु यीशुने उससे यह नहीं कहा कि तू नहीं मरेगा परंतु यह कहा, जो मैं चाहूं कि जब लग मैं फिर न आऊं तब लग वह यहां रहे तो यह तुझे क्या है?

समाप्त होनेकी वार्ता कर्नी।

यह वही शिष्य है जो ये बातें लिखके साक्षी देता है, २४ और हमने निश्चय किया है कि उसकी साक्षी सत्य है। यीशुने २५ बहुतसे और ऐसे कर्म किये; जो वे सब एक एक कर लिखे जाते तो मुझे सूझ पड़ता है कि संसारके लोग लिखी हुई पुस्तकोंको स्थान न देते।

प्रेरितोंकी क्रियाका वर्णन।

१ पहिला अध्याय।

यीशुका शिष्योंको दर्शन औ आज्ञा देनी औ स्वर्गमें जाना।

१ हे थियफिला, मैं उनसबोंकी बातें लिख चूका जो यीशुने
२ पहिलेसे किया औ सिखलाया उसी दिन लों जिसमें वह
अपने ठहराये ऊये प्रेरितोंको पवित्र आत्माके बिषयमें आज्ञा
३ देकर स्वर्गको उठाया गया। वह अपनी मृत्युका दुःख भोग-
नेके पीछे, बऊतसे प्रमाणोंसे अपने ताईं जीवता दिखाके,
चालीस दिन लग उन्हीं प्रेरितोंको दर्शन दे ईश्वरके राज्यकी
४ बातें समझाता रहा। और उनको एकठे कर यही आज्ञा
दी कि तुम सब यिरूशालमसे बाहिर न जाके पिताकी उस
५ बाचा पानेकी आशामें रहो जो मुझसे सुन चूके हो। योहन-
ने जलमें डुबकी दिलाई, परंतु थोड़े दिनोंके पीछे तुम
६ पवित्र आत्मामें डुबकी पाओगे; और उन्होंने एकठे हो
उससे बिंती करके कहा, हे प्रभु, क्या आप इसी समय इस्रा-
७ येली लोगोंको राज्य फिर देंगे? उसने कहा, जिस काल
औ ऋतुको पिताने अपने बशमें रक्खा है, उनही जाननेको
८ तुम्हारेही है नहीं। परंतु जब पवित्र आत्मा तुम पर आवेगा
तब सामर्थ्य पायके तुम यिरूशालममें, औ सारे यहूदा
और शोमिरोण देशमें, हां पृथ्वीके सीमें लग, मेरे लिये साक्षी
९ होगे। सो वह ये बातें कह उनके सन्मुखसे स्वर्गकी ओर
१० उठाया गया और मेघ उसे उनकी दृष्टिसे छिपा लिया। जब
शिष्य लोग स्वर्गकी ओर उसको जाते जाते देखतेही रहते थे,
देखो, दो मनुष्य उजला बस्त्र पहिरे ऊये उनके निकट खड़े हो
११ कहने लगे, हे गालीलीय लोगो, क्यों तुम स्वर्गकी ओर
देखते देखते खड़े रहते हो? यही यीशु जो तुम्हारे निकटसे

स्वर्गको उठाया गया है उसी रीतिमें फिर आवेगा जिस रीतिमें तुमने उसे स्वर्गकी ओर जाते देखा है।

शिष्योंका यिरूशालम् नगरमें जाना ओ प्रार्थना करनेमें प्रवृत्त होना।

वे जैतून नाम पर्बतसे यिरूशालम् नगरमें फिर आये; १२ वह यिरूशालमसे बिश्रामबारकी यात्राके (अर्थात् एक आध कोशके) दूर थी। पऊंचने पर पितर ओ याकूब् ओ योहन् १३ ओ आंद्रिय ओ फिलिप ओ थोमा ओ बर्थलमी ओ मथि ओ आल्फेयका पुत्र याकूब् ओ उद्योगी शिमोन ओ याकूबका भाई यहूदा किसी उपरौटी कोठरीमें गये। ये सब कितनी १४ किसी स्त्रियोंके ओ यीशुकी माता मरियमके ओ उसके भाई-योंके संग एक मन हो बिंती ओ प्रार्थना करते रहे।

यहूदाके पलटेमें मथिको करनेमें लगाना।

उन्हीं दिनोंमें पितर शिष्योंके बीचमें, जो गिनतीमें एक सा १५ बीस एक थे, खड़ा हो बोला, हे भाईयो, यह उचित था १६ कि वही लिखी ऊई बात, जो पवित्र आत्माने दायूद राजाके मुखसे यहूदाके बिषयमें जो यीशुके पकड़नेहारोंका अगुआ था, पूरी हो जाय। उसने हमारे बीचमें हो इस सेवाका १७ भाग पाया। उसीने दुष्कर्मके फलसे कोई खेत मोल लिवाया १८ ओ औंधे मुख गिरनेसे उसका पेट फट् गया ओ उसकी सारी अंतड़ियां निकल पड़ीं। यही बात सब यिरूशालमके १९ रहनेहारे जानते हैं; सो उनकी भाषामें उस खेतका नाम हकल्दामा अर्थात् लोहूका खेत कहावता है। यहूदाके २० विषयमें यही बात भजनके पुस्तकमें लिखी है कि उसका घर उजाड़ होगा, उसमें कोई नहीं बसेगा, परंतु दूसरे मनुष्यको उसका पद मिलेगा। सो उचित यही है कि उन २१ मनुष्योंमेंसे जो हमारे संग नित्य रहते थे, अर्थात् जिस समयसे प्रभु यीशु योहनके हाथसे डुबकी लेकर उसी समय लों जिसमें वह हमारे निकटसे स्वर्गको उठाया गया, एक मनुष्यही ठहराये जाय, जोई हमारे संग यीशुकी जी २२ उठनेकी बात पर साक्षी देवे। तब उन्होंने दोको खड़ा किया २३

अर्थात् युसफको जो बर्णबा कहावता है औ जिसकी पदवी
२४ युस्त थी, और मथिको, और ईश्वरसे बिंती करके कहा कि
हे अन्तरजामी, बता दीजिये कि इन दोनोंमेंसे कौन वही
२५ है जो उस सेवकाई औ प्रेरिताईका भाग लेवे जिससे
यहूदा हटके अपनेही स्थानको गया है; पीछे उन्होंने
२६ चिट्ठी डाली; औ चिट्ठी डालनेसे मथिका नाम निकला;
तब वह ग्यारह प्रेरितोंमें गिना गया।

२ दूसरा अध्याय।

पवित्र आत्माका प्रगट होना।

१ जब पचासवां दिनका पर्व आ पहुंचा तब वे सब एक मन हो
२ किसी ठौरमें एकठे थे। उसी समयमें अचांचक स्वर्गसे एक
शब्द आया जैसाकि बड़ी बतासका शब्द, और उस सारे
३ घरमें, जहां वे बैठे थे, व्याप गया। और उन्होंकि देखनेमें
आगकीसी जीभें, अलग अलग होके, आईं और एक एक
४ जीभ एक एक मनुष्यपर बैठ रही। इसपर वे सब पवित्र
आत्मासे भरे होके आन आन भाषासे बोलने लगे जैसाकि
आत्माने उनको बात करनेकी सामर्थ्य दिई।

उसकी सहायतासे प्रेरितोंको नाना प्रकारकी भाषासे बोलना
और उनसे लोगोंका अचंभा कर्ना।

५ उसी समयमें बहुतसे भक्त यहूदी लोग यिरूशालममें थे,
६ जो उन सारे देशोंमेंसे आये थे जो स्वर्गके नीचे हैं। जब
यह बात उठी बहुतसे लोग एकठे हो घबराये क्योंकि एक
७ एकने अपनी भाषामें उन्हें बोलते सुना। हां सबही बिस्मित औ
अचंभित हो आपसमें कहने लगे, देखो, ये सब जो बोलते
८ हो क्या वे गालीली लोग नहीं हैं? तो यह क्यों कर है
९ कि हम अपनी अपनी जन्म देशीय भाषा सुनते हैं? हम जो
पर्थी औ मादी औ पारसी औ अराम्-नहरायीम् देशके
रहनेहारे; औ यहूदिया औ कापदकिया औ पन्त औ
आशिया औ फ्रूगिया औ पम्फुलिया औ मिसरके रहनेहारे;

औ कूरीणीके आसपास लूबिया देशके स्थानोंके रहनेहारे; १० औ रूम नगरके रहनेहारे, क्या यहूदी क्या वे जो यहूदी हुये; औ क्रीतीय औ अराबी—हम सब अपनी अपनी ११ भाषामें ईश्वरके अद्‌भुत कर्मकी बात सुनते हैं। सो सबही १२ अचंभित हुये औार संदेहमें हो आपसमें कहने लगे कि यह क्या है? परंतु किसी किसीने ठट्ठा मारके कहा कि ये मनुष्य १३ नयी मदिरा पीके मत्तवाले हैं।

पितरके उपदेशकी बात।

तब पितरने उन ग्यारह शिष्योंके संग खड़ा हो इन १४ लोगोंको ऊंचे शब्दसे कहा, हे यहूदियो, हे यिरूशालमके रहनेहारो, मेरी बात सुनके बूझो। एक पहर दिनसे अधिक १५ नहीं चढ़ा है; इस लिये यह जो तुम समझते हो कि ये मनुष्य मत्तवाले हैं, सो नहीं; परंतु यह वही बात है जो १६ योयेल भविष्यद्वक्तासे कही गई है अर्थात ईश्वर कहता है कि पीछले दिनोंमें ऐसा होगा कि मैं सब प्राणियोंपर अपने आत्माको ढालूंगा; इससे तुम्हारे पुत्र औ पुत्रीयां भवि- १७ ष्यद्वाक्य कहेंगे; तुम्हारे तरूण दर्शन पावेंगे, औ तुम्हारे बृद्ध स्वप्न देखेंगे। उस समयमें भी मैं अपने दासों औ अपनी दासीयों १८ पर अपने आत्माको ढालूंगा; इससे वे भविष्यद्वाक्य कहेंगे; मैं उपर आकाशमें अचरज औ नीचे पृथ्वीमें चिन्ह १९ दिखाऊंगा अर्थात लोहू औ आग औ धूंयेके उठान; प्रभुके यही बड़ा औ भयंकार दिन आनेसे पहिले सूर्य अंधि- २० यारा औ चंद्रमा लोहू हो जायगा; परंतु सब कोई जो २१ प्रभुका नाम लेकर प्रार्थना करेगा सोई मुक्ति पावेगा। इस लिये, हे इस्रायेली लोगो, ये बातें सुनो; तुम जानते हो कि २२ ईश्वरने तुम्हारे बीचमें नासरतीय यीशुके हाथसे अचंभित औ अद्भुत कर्म्म औ लक्षण दिखलाये; ये तुम्हारे लिये प्रमाण हैं कि वह ईश्वरकी ओरसे निकल आया; उसीको, जो ईश्व- २३ रके अचल मत औ पूर्व ज्ञानसे सोंपा गया, तुमने पकड़के दुष्ट लोगोंके हाथोंसे क्रुशपर लगायके मार डालवाया; परंतु

२४ ईश्वरने मृत्युके बंधन खोलके उसको जिलाके उठाया क्योंकि
२५ उसको मृत्युके बशमें रहना अनहोना था। दायूदने उसके विषयमें यह कहा है कि मैं सर्बदा प्रभुको अपने सन्मुख रखता हूं; मेरी दहिनी ओर उसके रहनेसे मैं कभी न
२६ टल जाऊंगा; इस लिये मेरा मन आनंदित होवेगा, औ मेरी जीभ आनंदके गीत गावेगी; मेरा शरीर भी आशामें
२७ सोवेगा क्योंकि तू परलोकमें मेरी आत्माको न रहने देगा औ
२८ अपने धर्म्मीको सड़ने न देगा; तू मुझको जीवनका पथ बता-
२९ वेगा; और अपने अनुग्रहसे मुझे आनंदसे भर देगा। हे भाईयो, तुम मुझको पूर्व्वपुरुष दायूदके बिषयमें निश्चयसे
३० कहने दीजियो; वह मरके गाड़ा गया और आजलों उसकी गोर हम लोगोंके यहां देख पड़ती है; वह भविष्यद्वक्ता होके यह जानता था कि ईश्वरने मुझसे किरिया खाके कहा कि मैं खीष्टको, जो शरीरके बिषयमें तेरे बंशमें होगा, उठा-
३१ ऊंगा कि वह तेरे सिंहासन पर बैठे; सो दायूदने यह जानकर खीष्टके जी उठनेके बिषयमें यह बात भी कहा कि उसकी आत्मा परलोकमें न छोड़ी जायगी, न उसका शरीर
३२ सड़ने पावेगा; इसी यीशुको ईश्वरने गोरमेंसे उठाया है,
३३ जिसकी बातके हम सब साक्षी हैं। सो उसने ईश्वरकी दहिनी ओर बड़ाई औ उस पवित्र आत्माको, जिसकी परतिज्ञा पिताने किई थी, पायके, यह, जो तुम अब देखते औ सुनते हो,
३४ ढाल दिया है। दायूद शरीर सहित स्वर्गमें नहीं गया,
३५ परंतु उसने यही कहा, प्रभुने मेरे प्रभुको कहा, जब लग मैं तेरे बैरियोंको तेरे चरणोंकी पीढ़ा न बनाऊं तब लग तू
३६ मेरे दहिनी ओर बैठ। सो इस्रायेलका सारा घराना निश्चय जाने कि जिस यीशुको तुमने क्रुश पर मारा ईश्वरने उसको प्रभु औ खीष्ट ठहराया है।

उसकी कथासे बहुतेरे लोगोंका मन फिराना।

३७ जब उन्होंने ये बातें सुनीं तो उनके मन छिद गये औ उन्होंने पितर औ और प्रेरितोंसे कहा, हे भाईयो, हम क्या

करेंगे? पितरने उत्तर दिया, तुममेंसे एक एक अपना मन ३८ फिराओ औ उस डुबकीको, जो पापोंकी क्षमाके लिये है, लेओ; सो तुम दान रूप पबित्र आत्माको पाओगे। क्योंकि यह ३९ परतिज्ञा तुम्हांके औ तुम्हारे संतानोंके औ उन सबोंके जो दूरके लोग हैं हां तितनोंके लिये है जितनोंको प्रभु हमारा ईश्वर अपने निकट बुलावेगा। और उसने बक्रतसी और बातों करके ४० साक्षी औ उपदेश देके कहा कि तुम अपनियोंको इस हठीली पीढ़ीसे रक्षा करो।

उनको डुबकी दिलाना, औ भले कर्मोंका उसका बर्णन।

जिन्होंने आनंदसे यह बात ग्रहण किई, उन्होंने डुबकी ४१ लिई और उसी दिन तीन एक सहस्र लोग उनमें मिल गये; वे सब प्रेरितोंके उपदेशमें औ संगतमें औ रोटी तोड़नेमें औ ४२ प्रार्थना कर्नेमें मनसे रहे। और प्रेरितोंके नाना प्रकारके लक्षण ४३ औ अचंभे की क्रिया देखते ही सब लोग भय खाया। और सब ४४ बिश्वास कर्नेहारोंने एक संग रहके अपनी सब संपत्तिका साझा करके रखा। उन्होंने घर औ भूमि औ और बस्तु बेचके ४५ एक एक जनको, उन्होंके आवश्यकके समान, बांट दिया। सबोंने एक मन हो दिन दिन महा मंदिरमें आया जाया ४६ किया, औ घर घरमें रोटी तोड़ ईश्वरका धन्यबाद करते औ सब लोगोंसे आदर पाते आनंद औ मनकी सूधाईसे खाना खाते रहे। और प्रभु दिन दिन परित्राण पानेहारोंको मंडली- ४७ में मिलाते रहा।

३ तीसरा अध्याय।

पितरसे एक लंगड़ेका चंगा होना।

तीसरा पहर होते ही, प्रार्थना कर्नेके समय, पितर औ १ योहन एक संग महामंदिरमें जाते थे। उसी समयमें कोई २ कोई किसी मनुष्यको, जो जन्मका लंगड़ा था, ले जाते थे, जिस को वे दिन दिन महामंदिरके उस द्वार पर, जिसका नाम सुन्दर है, बैठाया किया करते कि वह उनसे, जो महामंदिरमें

३ आते थे, भीख मांगे। इस मनुष्यने पितर औ योहनको महा-
४ मंदिरमें आते देख उनसे भीख मांगी। पितरने योहनके
५ संग उसपर दृष्टि कर कहा कि हमको देख लो। इसपर वह
६ कुछ पानेकी आशा करके उनकी ओर देखने लगा। तब
पितरने कहा कि मेरे हाथमें न रूपा न सोना है परंतु जो
है सो मैं तुझको देता हूं; नासरतीय यीशु खीष्टके नामसे
७ उठके आया जाया कर। तब उसने उसका दहिना हाथ पकड़
८ उसे उठाया। तुरंत उसके पांव औ टखने चंगे ऊये, और वह
कूदके खड़ा होके फिरने लगा, और जाते जाते कूदतेर ईश्वर-
९ का धन्यबाद कर्तेर उनके संग महामंदिरमें गया। सब लोग
उसे चलते फिरते औ ईश्वरका धन्यबाद कर्ते देखके जानते
१० थे कि यह वही है जो महामंदिरके सुन्दर नाम द्वार पर
भीख मांगने बैठता था; और वे उससे जो उसपर ऊआ
११ था आश्चर्यित औ अचंभित ऊये। जब वह जो चंगा ऊआ
था पितर औ योहनके हाथ पकड़ताही था सब लोग आश्च-
र्यित हो उस ओसारेमें जो सुलेमान राजाका कहावता है
उनके निकट दौड़े चल आये।

यीशुके बिषयमें औ मन फिरानेमें पितरका उपदेश कर्ना।

१२ पितरने यह देख लोगोंसे कहा, हे इस्रायेली लोगो क्यों
इससे अचंभा कर्ते हो? क्यों हमपर दृष्टि करके सोचते हो
कि हमने अपनी सामर्थ्यसे अथवा अपनी भक्तिसे इस
१३ मनुष्यको चलनेकी शक्ति दिई? इब्राहीम् औ इस्हाक् औ
याकुब्का ईश्वर अर्थात् हमारे पित्रोंके ईश्वरने अपने पुत्र
यीशुकी महिमा इस आश्चर्यसे प्रकाश किई; उसीको तुमने
१४ पकड़वायके सौंप दिया; और जब पिलातने उसे छुड़ा देने
१५ चाहता था तब तुमने उसे तुच्छ किया; हां तुमने उस पवित्र औ
धार्मिकको तुच्छ करके चाहा कि एक खूनी छुड़ाया जाय। सत्य
है, तुमने जीवन दायक प्रभुको मार डालवाया परंतु ईश्वरने
१६ मृतकोंमेंसे उसे उठाया, जिसके साक्षी हम हीं हैं। इस मनुष्यने,
जिसको तुम देखते औ चीन्हते हो, यीशुके नामके बिश्वास कर्नेसे

चलनेकी शक्ति पाई; हां उसी बिश्वासने जो उसके द्वारा है इस मनुष्यको जो तुम सबोंके सन्मुख है ठीक चंगा किया है। १७ हे भाईयो, मैं जानता हूं कि तुमने औ तुम्हारे प्रधानोंने न बूझके ऐसा किया परंतु जो कुछ ईश्वरने खीष्टके दुःख भोगनेके १८ बिषयमें अपने सब भविष्यद्वक्ताओंके मुखसे आगे कहा था सो उसने इसी रीति पूरा किया है। सो मन फिराके फिरो १९ कि तुम्हारे पाप मिटाये जायें और ईश्वरसे शान्ति पानेका समय आ पहुंचे; और वह यीशु खीष्टको, जो आगेसे २० ठहराया गया था, तुम्हारे निकट भेजेगा। परंतु जबलग २१ वही बात पूरी न होवे जो ईश्वरने आदिसे, उन सब समयोंपर जिन्होंमें सब नये किये जायेंगे, अपने सब पवित्र भविष्यद्वक्ता-ओंके मुखसे कही, तबलग उचित है कि यीशु स्वर्गमें रहे। मूसाने पितरोंसे यह कहा कि तुम्हारे प्रभु ईश्वर तुम्हारे २२ भाईयोंमेंसे तुम्हारे लिये मेरे समान एक भविष्यद्वक्ताको उठावेगा; जो कुछ वह तुमसे कहेगा सो मानो; परंतु जो प्राणी उस भविष्यद्वक्ताके बचनको न सुनेगा सो अपने २३ लोगोंके बीचमेंसे नष्ट किया जायगा। और सब भविष्य- २४ द्वक्ताओंने शिमूयेलसे लेके पीछलोंतक, जितनोंने बात किई है, इन दिनोंका संदेश दिया है। तुम भविष्यद्वक्ताओंके २५ सन्तान और उस नियमके अधिकारी हो जो ईश्वरने इब्रा-हीमसे यह कहके हमारे पितरोंसे किया कि तेरे बंशसे पृथिवीके सारे घराने आशीष पावेंगे। सो ईश्वरने अपने पुत्र २६ यीशुको उठाके पहिले तुम्हारे निकट भेजा कि वह तुममेंसे एक एकको बुराईयोंसे फिराके आशीष देवे।

४ चौथा अध्याय।

पितरके उपदेश देनेसे महायाजकोंका क्रोधी होके पितर औ योहनको कारागारमें मूंदना।

जिस समय पितर औ योहन लोगोंसे कहते थे, उसी १ समयमें महायाजक औ महामंदिरका दारोगा औ कोई कोई

२ सादूकी उनपर चढ़ आये क्योंकि वे रिसाये गये कि ये दोनों लोगोंको उपदेश देते औ यीसुकी बात करके मृतकोंका जी ३ उठनेका प्रचार करते थे। सो उनको पकड़के दूसरे दिनलग ४ कैदखानेमें रखे क्योंकि समय सांझका ऊआ। तौभी बचनके सुननेहारोंमेंसे बऊतेरोंने बिश्वास किया; वे गिनतीमें पांच एक सहस्र मनुष्य ऊये।

पितर औ योहनके बिषयमें राज बिचार होना औ पितरका उत्तर देना।

५ दूसरे दिन लोगोंके प्रधान, औ प्राचीन लोग, औ अध्या-६ पक लोग, औ हन्ना नाम महायाजक, औ कियफा, औ योहन, औ सिकंदर, औ महायाजककी जाति, यिरूशालम ७ नगरमें एकठे ऊए। उन्होंने पितर औ योहनको बीचमें खड़ा करके पूछा, तुमने किस सामर्थ्यसे वा किस नामसे यह कर्म ८ किया है? तब पितरने पबित्र आत्मासे भरपूर होके उत्तर दिया, हे लोगोंके प्रधानो, हे इस्रायेली प्राचीनो, जो हम ९ से आज इसी भले कर्मके बिषयमें पूछा जाता कि किस रीतिसे यही मनुष्य जो लंगड़ा था, चंगा ऊआ है तो आप लोग १० जानिये औ सब इस्रायेली लोग भी जानें कि वह उस ना-सरतीय यीसु ख्रीष्टके नामसे, जिसे आप लोगोंने क्रुशपर मार डालवाया औ जिसे ईश्वरने मृतकोंमेंसे उठाया, चंगा होके ११ आप लोगोंके सन्मुख खड़ा है। यह वही पत्थर है जिसे आप थवइयोंने निकम्मा ठहराया; वह कोनेका सिरा ऊआ है। १२ और किसीसे परित्राण नहीं है क्योंकि सब मनुष्योंके बीचमें जो स्वर्गके तले हैं और कोई नाम प्रकाशित नहीं ऊआ है जिससे हम लोग परित्राण पा सकें।

पितर औ योहनको ख्रीष्टका नाम प्रचार न करनेकी आज्ञा देनी।

१३ जब उन्होंने पितर औ योहनका ऐसा साहस देख उन्हें मूर्ख औ नीच लोग जान कर अचंभा किया; वे जानते भी थे कि १४ ये यीसुके संगी हैं। परंतु उस चंगे ऊए मनुष्यको, उनके संग खड़े देखके वे और कुछ कहने नहीं सके। पीछे वे उनको

सभासे बाहिर जानेकी आज्ञा देके आपसमें इसी रीति बिचार १५ कर्ने लगे कि हम इन मनुष्योंसे क्या करेंगे? उन्होंने एक बड़ा १६ आश्चर्य कर्म किया है; यह बात यिरूशालमके सब रहने-हारोंको जानी गई है और हम उसे नाह नहीं कर सकते हैं; तो आयके हम उन्हें बहुत धमकावें कि वे इसी नाम लेके १७ किसीसे कुछ फिर न कहें; सो यही बात लोगोंमें अधिक फैल न जावे। तब उन्होंने उन्हें बुलाके आज्ञा दिई कि तुम १८ यीशुके नाम लेके फिर न कहो औ फिर न सिखलाओ। पितर औ योहनने उत्तर दिया, ईश्वरकी आज्ञा पालन कर्ना १९ अथवा तुम्हारी आज्ञा पालन कर्ना, इन दोनोंमेंसे ईश्वरके सन्मुख कौन उचित है? इसका बिचार कीजिये; क्या हमने जो २० कुछ देखा औ सुना है सो प्रचार न करें? सो कभी नहीं हो सक्ता। सो उन्होंने लोगोंके डरके मारे उन्हें दंड देनेका उपाय २१ न पायके उन्हें फिर धमकायके जाने दिया क्योंकि सब लोग उस बड़े आश्चर्य कर्मके लिये ईश्वरकी स्तुति करते थे। जिस २२ मनुष्यपर उन्होंने यही चंगा कर्नेका आश्चर्य कर्म किया था वह चालीस बरससे ऊपर का था।

मंडलीमें उनदोनोंका जाना औ प्रार्थना कर्नी।

पीछे उन्होंने छुट्टी पाके अपने संगिओंके निकट गये और २३ जो कुछ महायाजक औ प्राचीन लोगोंने कहा था सो सुना दिया। उन्होंने सुनकर एक मन हो ईश्वरसे यही प्रार्थना २४ करके कहा, हे प्रभु, आप वही ईश्वर हैं जिसने स्वर्ग औ पृथ्वी औ समुद्र औ सब कुछ जो उनमें है बनाया। आपने २५ अपने सेवक दायूदके द्वारासे कहा कि अन्यदेशी लोग क्यों धूम मचाते हैं और लोग क्यों व्रथा सोचते हैं? पृथिवीके राजा २६ लोग क्यों उठे हैं और प्रधान लोग क्यों प्रभुके औ उसके ख्रीष्टके बिरोधमें एकठे ऊये हैं? सच है हेरोद राजा औ २७ पंतिय पिलात अन्यदेशियों औ इस्रायेली लोगोंके संग, आपके पवित्र पुत्र यीशुके बिरोधमें, जिसको आपने ख्रीष्ट ठहराया है, एकठे ऊये कि वे, जो कुछ आपके हाथ औ आपके मन २८

२९ आदिसे ठहराया, पूरा करें; सो, हे प्रभु, उनकी धमकियों-को बूझिये, और अपने पुत्र यीशुके नामसे चंगा करनेके
३० आश्चर्य औ अद्भुत कर्म करनेमें, अपने हाथ बढ़ा करके अपने सेवकोंको यह दीजिये कि वे निर्भयसे ईश्वरकी बात प्रचार
३१ करें। जब वे प्रार्थना कर चूकें, वही स्थान, जिसमें वे एकठे ऊये थे, हिल गया और वे सब पबित्र आत्मासे भर गये और ईश्वरकी बात निर्भयसे प्रचार करने लगे।

प्रार्थना कर्नेसे पबित्र आत्माको पाना, शिष्योंका एक मत होके धनका भाग कर्ना।

३२ बिश्वासिओंकी मंडली एक चित्त औ एक मन हो रहे। उनमेंसे किसीने अपनी संपत्तिको अपनी न जाना परंतु
३३ उनकी सब संपत्ति सबहीकी थी। औ प्रेरितोंने बड़ी सामर्थ्यसे प्रभु यीशुके जी उठने पर साक्षी दिई; औ उन सबों पर बड़ा
३४ अनुग्रह ऊआ। उनके बीच कोई दरिद्री न था क्योंकि सब कोई जो भूमि अथवा घर रखते थे उन्हें बेचकर रूपैये ला
३५ प्रेरितोंके चरणों पर धरे और एक एकको जो २ आवश्यक
३६ होता उसीके अनुसार दिया जाता था। इसी भांति योसि नाम, एक लेवि, जो कुप्रदीपमें उत्पन्न ऊआ, जिसको भी
३७ प्रेरितोंसे बर्णबा कहलाया गया था अर्थात शान्तिका पुत्र; इसी मनुष्यने कुछ भूमिका अधिकारी होके उसे बेचा और रूपैये ला प्रेरितोंके चरणों पर धरे।

५ पांचवां अध्याय।

धनके बांटमें कपटता कर्नेसे अननिय औ सफीराके मरनेका बर्णन।

१ तब अननिय नाम किसी मनुष्यने अपनी स्त्री सफीराके
२ संग मिलके अपना अधिकार बेचा; उसकी स्त्रीके जानते ऊये उसके रूपैयोंमेंसे कुछ अपने हाथमें रख छोड़ा और कुछ
३ लाके प्रेरितोंके चरणों पर धर दिया। तब पितरने कहा, हे अननिय, क्यों अपने मनमें शैतानको ऐसा समाने दिया है कि तू पबित्र आत्मासे झूट बात कहके अपने हाथमें भूमिके

रूपैयोंमेंसे कुछ रख छोड़ा है? जबलों नहीं बिकी क्या तेरी ही ४ न थी? और जब बिक गई क्या उसके रूपैये तेरेही न थे? क्यों अपने मनमें ठानके ऐसा किया है? तूने केवल मनुष्योंके सन्मुख नहीं परंतु ईश्वरके सन्मुख झूठा ठहरा। अननिय ये ५ बातें सुनतेही गिर पड़के मर गया; इससे सब सुननेहा-रोंको बड़ी डर लगी। पीछे किसी जवानोंने उठके लोथको ६ बस्त्रमें लपेटके बाहिर ले जा गाड़ दिई। एक पहरके पीछे ७ उसकी स्त्री इस बातको अनजाने ऊये वहां हीं आई। पितर- ८ ने उससे पूछा, तुमने इतने रूपैयोंको भूमि बेची है वा नहीं, सो कह; उसने उत्तर दिया, हां, इतने रूपैयोंको। पितरने कहा कि तुम प्रभुकी आत्माकी परीक्षा कर्नेमें क्यों ९ एकही ऊए? देखो, जिन्होंने तेरे स्वामीको गाड़ा द्वारपर हैं, औ तुझको भी बाहिर ले जावेंगे। इसपर वह भी १० उसके चरणोंपर तुरंत गिर कर मर गई। तब जवानोंने भीतर आ उसको मरी ऊई देख बाहिर ले जाके उसके स्वामीके निकट गाड़ी। तब सारी मंडलीके औ सब सुनने- ११ हारोंको बड़ी डर लगी।

प्रेरितोंकी अनेक आश्चर्य क्रिया कर्नी।

प्रेरितोंके हाथोंसे लोगोंके बीचमें बऊतसे अचंभित औ १२ अद्भुत कर्म किये गये; इतनेमें वे सब एक मन हो सुलेमानके ओसारेमें एकठे ऊए थे परंतु किसी औरको उनके निकट १३ जानेका साहस न ऊआ तौभी लोगोंने उनकी इतनी बड़ाई १४ किई कि उन्होंने रोगियोंको मार्गोंमें ला लाके बिछौनों औ खाटों- १५ पर रखे कि पितरके आने जानेपर उसकी परछाईं उनमेंसे किसीपर पड़े; और बऊतसे पुरुष औ स्त्री प्रभु पर बिस्वास करके उनसे मिल गये। बऊतसे और लोग भी चारों १६ ओरके नगरोंमेंसे रोगियों औ उनको, जो अपवित्र भूतोंसे दुःखित ऊये, यिरूशालममें ला लाके एकठे आये, और वे सब चंगे किये गये।

उनको कारागारमें धर्ना औ स्वर्ग दूतोंके हेतसे उनका छूटना औ
महापुरोहितके निकट पितरका उत्तर कर्ना।

१७ पीछे महायाजक औ उसके सब संगी जो सिदूकियोंके
१८ मतके थे बड़े क्रोधी हो उठे और प्रेरितोंको पकड़के कैदखानेमें
१९ रक्खा। परंतु रातको प्रभुके दूतने कैदखानेका द्वार खोल
२० उनको बाहिर लाके कहा कि जाओ, महामंदिरमें खड़े हो
२१ लोगोंको यही सारी जीवनदायक बात सुना दो। यह सुन
कर वे भोरे महामंदिरमें जा उपदेश देने लगे। तब महाया-
जक अपने संगियोंके सहित आके मंत्रियों औ इस्रायेली बंशके
सारे प्रधान लोगोंको एकठे कर कैदखानेमेंसे उन्हें लानेको भेज
२२ दिया। प्यादोंने जाके, कैदखानेमें उनको न पाया; और फिर
२३ आके यही कहा कि हमने कैदखानेको बड़ी चौकसी बन्द औ
पहरूओंको द्वारके बाहिर खड़े पाया परंतु खोलके किसीको
२४ भीतर नहीं पाया। यह बात सुन महायाजक औ महामंदिर-
के दारोघा औ प्रधान याजकोंने घबरायके कहा, तो यह क्या
२५ ऊआ है? इतनेमें एक जनने आके उनसे कहा, देखो, जिन
मनुष्योंको आप लोगोंने कैदखानेमें रखा था, सो महामंदिरमें
२६ खड़े हो लोगोंको उपदेश देते हैं। तब दारोघा प्यादोंको लेके
गया औ बिन उपाधसे उन्हें लाया क्योंकि वे लोगोंसे डरते
२७ थे कि हम आपही पथराये जावें। और उन्हें लाके सभाके
२८ बीचमें खड़ा किया; तब महायाजकने उनसे कहा, क्या हमने
तुमको आज्ञा देके नहीं कहा कि इसी नाम लेके उपदेश फिर
न देना? तो भी देखो, तुमने अपने उपदेशसे यिरूशालम
नगरको भर दिया है और इस मनुष्यके लोहूके बहानेका
२९ दोष हमपर लगाने चाहते हो। तब पितर औ और प्रेरि-
तोंने उत्तर दिया, मनुष्यकी आज्ञा पालन कर्नेसे ईश्वरकी
३० आज्ञा पालन कर्ना हमें उचित है। जिस् यीशुको आप
लोगोंने क्रुशपर मार डालवाया उसीको हमारे पित्रोंके ईश्वर
३१ ने उठाया। और भी ईश्वरने उसे प्रधान औ परित्राण-
कर्ता ठहरायके अपनी दहिनी ओर ऊंचा किया कि वह

इस्रायेली लोगोंको मन फिरावे औ पापोंके क्षमा करे। इन बातोंपर हम उसके साक्षी हैं; और पवित्र आत्मा भी ३२ साक्षी है जिसे ईश्वरने अपने आज्ञा पालनेहारोंको दिया है।

उसो उत्तर कर्नेसे सभाके लोगोंका क्रोधी होना गमिलीयेलके परामर्श देनेसे प्रेरितोंको कोड़े मारके बिदा कर्ना।

वे यह बचन सुनके दांत किचकिचाके उन्हें मार डालनेके ३३ परामर्श करने लगे। इतनेमें गमिलीयेल् नाम एक फिरूशीने, ३४ जो व्यवस्थापक औ सब लोगोंके बीचमें नामी था, सभामें उठके आज्ञा दिई कि प्रेरितोंको थोड़ी देर बाहिर करें। इस ३५ पीछे उसने कहा, हे इस्रायेली लोगो, सावधान हो कि तुम इन मनुष्योंसे क्या क्या करते हो; इन दिनोंसे आगे थुदाने ३६ उठके कहा कि मैं महा पुरुष हूं; और उसके पीछे चार एक सौ मनुष्य हो लिये; वह आपही मार डाला गया, और वे जो उसके पीछे हो लिये छिन्न भिन्न हो तुच्छ हो गये; उसके पीछे कर देनेके लिये नाम लिखनेके समयमें गालीलीय ३७ यहूदाने उठके बहुतसे लोगोंको अपने पीछे हो लेना फुसलाया; वह भी मार डाला गया, और वे जो उसकी ओर थे तितर बितर हो गये; सो अब मैं तुम्हें कहता हूं, इन ३८ मनुष्योंपर कुछ न करके जाने दो; जो यह मत अथवा यह कर्म मनुष्योंसे है तो नष्ट हो जायगा; परंतु जो ईश्वरसे है ३९ तो तुम उसको नाश नहीं कर सकोगे; सावधान हो कि तुम ईश्वरसे लड़ाई न करो। तब उन्होंने उसकी बात मानी ४० और प्रेरितोंको बुलाके कोड़े मारके आज्ञा दिई कि यीशुके नाम लेके फिर मत कहो; इसके पीछे उन्होंने उन्हें जाने दिया। सो वे सभामेंसे निकल आनंद करते चले गये कि हम ४१ आपही यीशुके नामके लिये तुच्छ किये जानेके योग्य गिने गये हैं। और वे दिन दिन महामंदिरमें औ घर घरमें उपदेश ४२ देते औ यीशु खीष्टके सुसमाचार प्रचार करते रहे।

६ छठवां अध्याय।

कंगालोंके लिये सात महायाजक जनोंका नियोग कर्ना।

१ उन दिनोंमें शिष्यलोग बऊत होगये; उनमें जो यूनानी थे इब्रानियोंके बिरुद्ध कुड़कुड़ाके कहा कि तुम लोग दिन दिनके
२ दान देनेमें हमारे बिधवाओंकी चिंता नहीं करते हो। तब बारह प्रेरितोंने सब शिष्योंको बुलाके कहा, यह उचित नहीं है कि हम आपही ईश्वरके बचनका प्रचार करना
३ छोड़के खाने पीनेका काममें रहें; सो, हे भाईयो, अपनेमेंसे सात सच्चे मनुष्योंको, जो पवित्र आत्मा औ बुद्धिसे भरे ऊये
४ हों, चुनो, जिनको हम इसी कामपर ठहरावें; परंतु हम आपही प्रार्थना करनेमें औ बचन सुनानेमें रहेंगे।

उन्हीं सात जनोंके बीच स्तिफान नामक एक जनका बखान।

५ इस बातसे सारी मंडली संतुष्ट हो अपनेयोंमेंसे स्तिफानको, जो बिश्वास औ पवित्र आत्मासे भरा ऊआ था, औ फिलिप औ प्रखर औ निकानोर् औ तीमोन् औ परमिना औ नीकलायको, जो आंतियखिया नगरका रहनेहारा औ यऊदी
६ लोगोंकी मतका ऊआ था, ठहराया; और उन्हें प्रेरितोंके सन्मुख
७ खड़ा किया जिन्होंने प्रार्थना कर उन पर हाथ धरा। और ईश्वरकी बात फैल गई, और यिरूशालम् नगरमें शिष्योंकी मंडली बऊत बढ़ गई; और याजकोंमेंसे बऊतेरोंने बिश्वास किया।

अबिश्वासी लोगोंके संग् स्तिफानका बिबाद् कर्ना औ उस पर उनका अपबाद् लगाना।

८ स्तिफानने बिश्वास औ सामर्थ्यसे भरा ऊआ लोगोंके बीचमें
९ बऊतसे अद्भुत औ अचंभित कर्म किये। तब लिबर्त्तिनी औ कूरीणीय औ सिकंदरीय औ किलकीय औ आशिया लोगोंकी मंडलियोंमेंसे कोई कोई उठके स्तिफानसे बिबाद करने लगे;
१० परंतु उसने ऐसी आत्मीक बुद्धिसे कही कि वे उसके साम्ना नहीं
११ कर सकें। पीछे उन्होंने किसी किसी मनुष्योंको घुस देके बुलाया जिन्होंने कहा कि हमने उसे मूसा की औ ईश्वरकी निंदा

करते सुना है। तब उन्होंने लोगों औ प्राचीनोंऔ अध्याप- १२ कोंको उसकाया और स्तिफानको पकड़के महासभामें लाये; पीछे उन्होंने झूठे साक्षी खड़े किये जिन्होंने कहा कि यह १३ मनुष्य इस पवित्र स्थानकी औ व्यवस्थाकी निंदा नित्य नित्य करता है; हम आपहीने उसे यह कहते सुना है कि ना- १४ सरतीय यीशु इस स्थानको ढायेगा औ उन बिधिओंको, जो मूसाने हमको सोंपीं, बदल डालेगा। तब सबोंने, जो महा १५ सभामें बैठे थे, उसपर दृष्टि करके देखा कि उसका मुख स्वर्गी दूतका मुखसा ऊआ।

७ सातवां अध्याय।

महापुरोहितको स्तिफानका उत्तर देना।

तब महायाजकने कहा, क्या ये बातें सत्य हैं? स्तिफानने १ उत्तर दिया, हे पिट औ भाई लोगो, सुनो, हमारे पित्र २ इब्राहीम्के हारण नगरमें रहनेसे पहिले, जिस समय वह अरम-नहरायीम् देशमें था, उसी समय तेजोमय ईश्वरने दर्शन दे उससे यह कहा, तूने अपना देश औ अपने कुटुम्बों ३ मेंसे निकलकर जिस देशको मैं तुझको देखाऊंगा उसी देशमें जा; इसपर वह कसदीय देशको छोड़के हारण नगरमें ४ आयके पहिले बासा किया; तब अपने पिताके मरनेके पीछे वह इसी देशमें आया जिसमें तुम लोग अब रहते हो; परंतु ईश्वर- ५ ने उसमें एक पैर भर की भूमिका अधिकार उसको न दिया; उसीसमयमें उसका कोई पुत्र न था तौभी ईश्वरने उसको यह बचन दिया कि मैं तुझको औ तेरे बंशको इसी देशका अधिकार दूंगा; ईश्वरने उसको यहभी कहा, तेरे संतान दूसरे देशमें जा ६ रहेंगे, औ उस देशके लोग चार सौ बर्ष लग उनको बंधुये करके दुर्दशा करेंगे परंतु मैं उन लोगोंको, जिन्होंके बंधुये वे होंगे, ७ दंड दूंगा; इस पीछे वे बाहिर आवेंगे और इसी स्थानमें आयके मेरी सेवा करेंगे। पीछे ईश्वरने उससे खतनेके नियम ८ किया; सो उससे इसहाक उत्पन्न ऊआ, और उसके जन्मके

पीछे आठवें दिनमें उसने उसका खतना किया; और इस-हाकसे याकुब औ याकुबसे बारह पित्र उत्पन्न हुये।

पूर्व्व पूरुषोंका वृत्तांत कहना।

९ इनपित्रोंने डाहके मारे युसफको बेच डाला; सो वह मिसर
१० देशमें ले गया था परंतु ईश्वरने उसके संग हो सारे दुःखसे छुड़ाया और उसको बुद्धि देके मिसर देशका राजा फिरौण-का प्रिया किया यहां तक कि राजाने उसे मिसर देशके औ
११ अपने सारे घरका प्रधान ठहराया। उसी समयमें मिसर औ किनानके देशोंमें अकाल पड़नेसे बड़ा दुःख हुआ, औ हमारे
१२ पित्रोंको खाना नहीं मिला। जब याकुबने सुना कि मिसर देशमें अन्न है उसने हमारे पित्रोंको वहां कुछ मोल लेनेको
१३ भेजा; फिर उन्हें भेजा; तब यूसफने अपने भाईयोंपर अपने को प्रगट किया; इससे यूसफका घराना फिरौण राजाको
१४ जाना गया। तब यूसफने अपने पिता याकुब् औ उसके सारे
१५ घरानेको, जो पचहत्तर जन थे, बुलवा भेजा; सो याकुबने मिसर देशमें उतरकर आप औ हमारे पित्र वहां मरे। और
१६ लोगोंने उसको शिखिममें ले जा उस गोरस्थानमें रखदिया जिसे इब्राहीमने कुछ रूपैये देके शिखिमके पिता हमोरके पुत्रोंसे मोल लिया था।

मूसाका बिबरण कर्ना।

१७ जब उस परतिज्ञाका समय निकट आया था, जिसपर ईश्वरने इब्राहीमसे सौंह किई थी, तो इस्रायली लोग मिसर
१८ देशमें बहुत बढ़ गये। तबभी किसी राजाने, जो यूसफको न
१९ जानता था, उठा; उसने हमारी जातिसे छल बल करके हमारे पित्रोंसे ऐसे कुव्यवहार किया कि उन्होंने अपने बाल-
२० कोंको बाहिर फेंका कि वे जीते न रहें। उसी समयमें मूसा, जिसने ईश्वरसे बड़ा अनुग्रह पाया, उत्पन्न हुआ, और अपने
२१ पिताके घरमें तीन मास तक पाला गया; पीछे बाहिर फेंका गया परंतु फिरौणकी पुत्रीने उसे देखके निकालवाया और
२२ अपनाही पुत्र करके पालन किया। मूसा मिसर देशियोंकी

सारी बिद्यामें पढ़ाया गया और बात बोलनेमें औ काम करनेमें बड़ा निपुण था। जब चालीस बरसका हुआ तब उसके मनमें २३ यही आया कि मैं अपने भाईबंद इस्रायेलके सन्तानोंको देखने जाऊंगा; उसने जाके देखा कि कोई मिसरी किसी इस्रायेलीको २४ सताता था; इसपर उसने उस इस्रायेलीको सहायता करके उस मिसरीको मार डाला। मूसाको सूझ पड़ा कि मेरे २५ भाई जानते कि ईश्वर मेरे द्वारा उन्हें छुड़ावेगा परंतु उन्होंने न समझा। फिर उसने दूसरे दिन बाहिर जाके देखा २६ कि दो इस्रायेली मनुष्य लड़ाई करते हैं; उन्हें मिला देनेको कहा कि हे मनुष्यो, तुम तो भाई हो, एक दूसरेको क्यों सताते हो? परंतु उसने, जो अपने भाईको सताते थे, मूसाको २७ हटाके कहा, किसने तुझको हमपर प्रधान औ न्याय करने हारा ठहराया है? क्या तू मुझको भी मार डालने चाहता २८ है जैसाकि तूने कल मिसरीको मार डाला। मूसाने यह बात २९ सुनके भागा और मिदियन देशमें जा रहा जहां उसके दो पुत्र उत्पन्न हुये। चालीस बरसके पीछे प्रभुके दूतने सीनी ३० नाम पर्वतके बयाबानमें, किसी जलती हुई झाड़ी की लवरमें, मूसाको दर्शन दिया; उसने यह देख आश्चर्य माना; और ३१ जब वह उसे अच्छी रीति देखनेको निकट गया तो प्रभु की यही आकाशबाणी हुई कि मैं तेरे पित्रोंका ईश्वर अर्थात इब्रा- ३२ हीमका ईश्वर औ इसहाक्का ईश्वर औ याकुबके ईश्वर हूं, मूसा ये बातें सुनके कांपने लगा औ और देखनेका साहस उसको नहीं हुआ। तब प्रभुने उससे कहा कि तू अपने ३३ पांवोंसे जूती उतार, जहां तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है। मैं ३४ अपने लोगोंकी दुर्दशाको, जो वे मिसर देशमें सहते हैं देखके उनकी बिलाप सुन सुनके उन्हें छुड़ानेको उतर आया हूं; अब आ मैं तुझे मिसर देशमें भेजूंगा। यह वही मूसा ३५ है जिसे उन्होंने हटाके कहा कि किसने तुझे प्रधान औ न्याय करणेहारा ठहराया है? हां यही वही है जिसे ईश्वर-ने प्रधान औ छुड़ानेहारेको ठहरायके उस दूतके हाथसे

३६ भेजा जिसने झाड़ीमें उसको दर्शन दिया। वही मिसर देशमें और सूफ नाम समुद्रमें औ चालीस बर्ष लग बयाबानमें नाना प्रकारके अद्भुत कर्म औ लक्षण दिखाके उन्हें बाहिर लाया।

सुलेमानके समय तक लोगोंका बखान करना।

३७ यह वही मूसा है जिसने इस्रायेलके सन्तानोंको यह कहा कि तुम्हारा प्रभु ईश्वर तुम्हारे भाईयोंमेंसे मेरे समान किसी
३८ भविष्यद्वक्ताको तुम्हारे लिये भेजेगा, उसकी बातें सुनो; हां यह वही है जो बयाबानमें मंडलीके औ हमारे पित्रोंके बीचमें हो उस दूतके संग था जिसने सीनो पर्बत पर उससे बात कही; उसीने भी हमें देनेको जीवन दायक
३९ बचन पाया; परंतु हमारे पित्रोंने उसे न मानने चाहा; हां उन्होंने उसे हटाके मिसर देशको फिर जाने चाहके हारोंग
४० नामसे कहा कि हमारे लिये देवताओंको बनाईये जो हमारे अगुवे होवें क्योंकि हम नहीं जानते हैं कि वही मूसा,
४१ जो हमें मिसर देशमेंसे ले आया है, कहां गया है। उन दिनोंमें उन्होंने बछरेकी मूरत् बनाई और उसके सन्मुख बलि
४२ चढ़ाके अपने हाथोंके कामोंसे आनंदित हुये। तब ईश्वरने उनसे मुख फिराके उन्हें यहांतक छोड़दिया कि उन्होंने आकाशके तारोंकी पूजा किई जैसाकि भविष्यद्वक्ताओंके ग्रंथमें यह लिखा है कि हे इस्रायेलके घराने, तुमने चालीस बर्ष लग बयाबानमें रहके मुझको बलि औ होम चढ़ाये तौभी
४३ तुम मोलक्‌ नाम देवताके तंबूको, औ तुम्हारे रिंफन् नाम देवताकी तारेको, अर्थात उन मूरतोंको जो तुम पूजा करनेको बनाई, उठा ले गये हो; सो मैं तुमको बाबिल देशके उस
४४ पार उठा ले जाऊंगा। साक्षी स्वरूप तंबू भी बयाबानमें हमारे पित्रोंके संग था, जैसा उसने ठहराया जिसने मूसासे यह कहा, कि उस डौलके अनुसार जो तूने देखा है, उसे
४५ बना; इसी तंबूको हमारे पित्रलोग औ यिहोशूय पाके उन लोगोंके देशमें लाये जिन्हें ईश्वरने हमारे पित्रोंके सन्मुखसे

दूर किया; यह तंबू दायूदके दिनोंतक वहां था। इसी ४६ दायूदने ईश्वरसे अनुग्रह पाके याकूबके ईश्वरके लिये एक तंबू बनानेकी इच्छा किई परंतु सुलेमानने उसके लिये एक मंदिर ४७ बनाया। तौ भी वही जो सबोंसे बड़ा है हाथोंके बनाये ऊये ४८ मंदिरोंमें नहीं रहता है जैसा कि भविष्यद्वक्ता कहता है कि प्रभु यह कहता है कि स्वर्ग मेरा सिंहासन है, औ पृथ्वी मेरी ४९ पांवोंकी चौकी है सो तुम लोग मेरे लिये कौनसा मंदिर बना दोगे? अथवा मेरे बिश्रामका स्थान कौनसा है? क्या मेरे ५० हाथने ये सब नहीं बनाया?

यहूदियोंको स्तिफानका अनुयोग करना।

हे हठीले लोगो, जो न मानते औ न सुनते हो; तुम ५१ नित्य नित्य पबित्र आत्माका बिरोध करते हो; जैसाकि तुम्हारे पितरोंने किया तैसा तुम भी करते हो; भविष्यद्वक्ता- ५२ ओंमेंसे किसको तुम्हारे पितरोंने नहीं सताया? हां उन्होंने उनहींको मार डाला जिन्होंने उस धर्मीके आनेकी बात आगेसे कह सुनाया जिसे तुमने इन दिनोंमें पकड़कर मार डाला। सत्य है, तुम वेही हो जिन्होंने स्वर्गके दूतोंकी हाथोंसे व्यवस्था ५३ पायके न माना।

उनका स्तिफानको पाथरोंसे मारना।

ये बातें सुनके वे क्रोध करके स्तिफान पर दांत पीसने लगे। ५४ परंतु उसने पबित्र आत्मासे भरा हो आकाश की ओर दृष्टि ५५ कर ईश्वरके तेजको औ ईश्वरकी दहिनी ओर खड़े ऊए यीशुको देख यह कहा कि देखो, मैं स्वर्गको खुले, औ मनुष्यके पुत्रको ५६ ईश्वरकी दाहनी ओर खड़े देखता हूं। तब उन्होंने बड़े ५७ शब्दसे चिल्लायके अपने कानोंको बंद कर एक मनसे उसपर लपका और उसे पत्थर मारनेको नगरमेंसे बाहिर ले गये; जो साक्षी थे सो शौल नाम किसी जवानके चरणोंके निकट ५८ अपने बस्त्र रखकर स्तिफानको पत्थरवाह करने लगे; इतनेमें ५९ उसने प्रार्थना करके यह कहा कि हे प्रभु यीशु, मेरे आत्माको ग्रहण कीजिये; इस पीछे उसने घुटने टेकके बड़े शब्दसे

६० चिल्लायके कहा कि हे प्रभु, उनको इस पाप का दंड न दीजिये ; यह कहके सो गया। शौल भी उसके मार डालनेसे प्रसन्न था।

८ आठवां अध्याय।

ताड़ना पानेसे मंडलीके लोगोंका तितर बितर होना औ शोमिरोण नगरमें फिलिपका जाना वहां अनेक आश्चर्य कर्म दिखाना।

१ उसी समयमें यिरूशालम् नगरकी मंडलीके लोग बहुतसे सताये गये थे; इसलिये प्रेरितोंको छोड़ सब भाई लोग यहूदा २ औ शोमिरोण देशोंमें छिन्न भिन्न हो गये। भक्त लोगोंने ३ स्तिफानको गोरमें दे बहुत बिलाप किया ; परंतु शौल घर२ में घुसके स्त्रियां औ पुरुषोंको पकड़ कैदखानेमें डालके मंडलीको ४ नाश करते रहा ; परंतु जो छिन्न भिन्न हुए वे ठौर ५ ठौरमें जा सुसमाचार प्रचार करने लगे। फिलिपने भी किसी शोमिरोणीय नगरमें जा खीष्टकी बात प्रचार किई ; और ६ लोगोंने उसकी सुनके और उन लक्षणोंको, जो उसने दिख- ७ लाये, देखके उसकी बात सत्य जानी क्योंकि बहुतसी अपबित्र आत्मा उन्होंसे, जो उनसे पकड़े गये थे, बड़े शब्दसे चिल्लायके ८ निकल आईं ; बहुतसे अर्धांगी औ लंगड़े भी चंगे हो गये; इससे उस नगरमें बड़ा आनन्द हुआ।

माया कर्नेहारे शिमानका बिश्वास कर्ना।

९ उस समयसे पहिले उस नगरमें कोई मनुष्य, जिसका नाम शिमोन था, जादू करके शोमिरोणियोंको भुलायके कहा कि १० मैं महापुरुष हूं ; सो छोटेसे बड़े तक सबही उसकी ओर हो कहते थे कि यह मनुष्य ईश्वरके समान कर्म कर सकता ११ है। बहुत दिनसे वे उसके जादूसे भुलके उसकी ओर १२ हो रहे। परंतु जब उन्होंने फिलिपकी बात पर, जो ईश्वरके राज औ यीशु खीष्टके नामके सुसमाचारके बिषयमें थी, बिश्वास किया तब सबहोंने, क्या पुरुष क्या स्त्री, डुबकी लिई। १३ पीछे शिमोनने आप भी बिश्वास करके डुबकी लिई और

फिलिपके संग हो आश्चर्य कर्मों औ बड़े बड़े लक्षणोंको देख बिस्मित ज़आ।

पवित्र आत्माको रुपैयेसे मोल लेनेकी चेष्टा कर्नेसे शिमोनका दोष होना।

जब प्रेरितोंने यिरूशालममें सुना कि शोमिरोणी लोगोंने १४ ईश्वरकी बात ग्रहण किई है, तो उन्होंने पितर औ योहनको उनके निकट भेजा। इनदोनोंने जाके उनके लिये प्रार्थना किई १५ कि वे पवित्र आत्माको पावें क्योंकि उन्होंने प्रभु यीशुके नामसे १६ केवल डुबकी पाई थी परंतु उनमें किसी पर पवित्र आत्मा अबतक नहीं पड़ा था। तब प्रेरितोंने उनपर हाथ रखा १७ और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया। जब शिमोनने देखा कि १८ प्रेरितोंके हाथके द्वारा पवित्र आत्मा दिया जाता है तो उसने उनके निकट रुपैये लाके कहा कि मुझको यही सामर्थ्य दीजिये १९ कि जिसपर मैं अपने हाथ धरूं वह भी पवित्र आत्माको पावे। परंतु पितरने उसको उत्तर दिया, तेरे संग तेरे रुपैये २० नष्ट होवें, इसलिये कि तूने यह बूझा कि ईश्वरका दान रुपैयोंसे मोल लिया जाता है; इस बातमें न तेरा भाग न २१ अधिकार है क्योंकि तेरा मन ईश्वरकी दृष्टिमें सीधा नहीं है; इसी बुड़ाईसे अपने मन फिराके प्रार्थना कर कि किसीरीति २२ तेरे मनकी बासना क्षमा किई जावे; मैं देखता हूं कि २३ तू कड़वे पित्तसे भरा औ पापके बन्धनमें है। तब शिमोनने २४ कहा कि आप मेरे लिये प्रार्थना कीजिये कि उनबातोंमेंसे, जो आपने कही हैं, कुछ मुझपर न आवे। इसरीति वे २५ साक्षी देके प्रभुकी बात प्रचार करते करते रहे और शोमिरोणियोंके बज़त ग्रामोंमें सुसमाचार प्रचार करते करते यिरूशालम् नगरमें फिर आये।

फिलिप औ कूश देशीय नपुंसकका बखान।

इस पीछे प्रभुके दूतने फिलिपसे कहा कि उठके दक्षिण २६ की ओर अर्थात उसी मार्गको चल जो बयाबानमें होके यिरूशालमसे असा नगरको जाता है। वह उठके चला २७

और देखो, कि कूश देशका कोई मनुष्य, जो खोजा और कूश
२८ देशकी राणी कान्दाकी नामका बड़ा अमीर औ खजानची
था, यिरूशालमसे चले आता है क्योंकि वह ईश्वरके भजन
२९ करनेको वहां गया था; वह अपने रथपर बैठा ऊआ
यिशयिय नाम भविष्यद्वक्ताका ग्रंथ पढ़ता था; तब पवित्र
आत्माने फिलिपसे कहा, कि इसी रथके निकट जा। तब
३० उसने दौड़के उसके निकट जाके उसे यिशयिय भविष्यद्वक्ता-
की पोथी पढ़ते सुनके पूछा, क्या जो आप पढ़ते हैं सो
३१ बूझते हैं? उसने कहा, जो कोई मुझको न बुझा देवे तो मैं
क्यों बूझ सकूं? तब उसने फिलिप को रथ पर चढ़ने औ
३२ अपने संग बैठनेको बिंती किई। ग्रंथकी बातें जो वह पढ़ता
था येही हैं कि जैसा भेड़ बलि होनेको लिया जाता है, औ
जैसा भेड़का बच्चा लोम काटनेहारेके निकट चुपका रहता
३३ है, वैसाही वह भी चुपका हो रहा; वह अपनी दीनताई
में अन्याय बिचारसे मार डाला गया; उसकी बर्णन कौन
३४ कर सक्ता? क्योंकि वह पृथ्वीसे प्राण सहित उठाया गया।
पीछे खोजाने फिलिपसे कहा, मैं आपसे यह बिन्ती करता हूं,
कि भविष्यद्वक्ताने किसके बिषयमें यही बात कही है? क्या
३५ अपने बिषयमें, अथवा दूसरेके बिषयमें? तब फिलिपने उस
३६ बचनसे लेके यीशुका सुसमाचार उसको सुना दिया। जाते
जाते वे किसी जलके निकट पऊंचे; तब खोजाने कहा, देखो,
३७ यहां जल है, क्या इसमें मैं डुबकी नहीं पा सकूं? फिलिपने
उत्तर दिया, जो आप अपने सारे मनसे बिश्वास करते तो होने
सकता; उसने कहा, मेरा बिश्वास यही है कि यीशु खीष्ट
३८ ईश्वरका पुत्र है। तब उसने रथ खड़ा कर्नेको आज्ञा दिई
फिलिप औ खोजा दोनों जलमें उतरे; और फिलिपने उसको
३९ डुबकी दिलाई। जब जलमेंसें निकल आये तब प्रभुका आत्मा
फिलिपको उठा ले गया; सो खोजाने उसे फिर न देखा;
४० तौभी वह आनंद करते अपने मार्ग चला गया। परंतु
फिलिप असदोद नगरमें पाया गया; और वह वहांसे

कैसरिया नगर तक सब नगरोंमें जाते जाते सुसमाचार सुनाते रहा।

९ नवां अध्याय।

दमेसक नगरमें ख्रीष्टीयान् लोगोंको ताड़ना करनेके लिये शौलका जाना, औ पथमें ख्रीष्टको देखना।

इसी समय तक शौलने प्रभुके शिष्योंके बिरुद्ध धमकाने १ औ मार डालनेकी बात गरजते महायाजकके निकट गया २ और उससे कहा कि चिट्ठी लिखके दमेसक नगरके मंदिरोंके लोगोंको मेरे हाथसे भेज दीजिये कि जो मैं यीशुके मतके किसीको, क्या स्त्री क्या पुरुषको, वहां पाऊं तो उन्हें बांधकर यिरूशालममें ले आऊं। सो वह चला गया और दमेसक ३ नगरके निकट पहुंचने पर तो अचांचक स्वर्गमेंसे बड़ा तेज निकलके उसकी चारों ओर चमका; उसने भूमिपर गिरके ४ यही बात सुनी कि हे शौल, हे शौल, मुझे क्यों सताता है? यह सुनके उसने कहा, हे प्रभु, आप कौन् हैं? प्रभुने ५ कहा, जिस यीशुको तू सताता है सोइ मैं हूं; कांटों पर लात मारनी तेरे लिये कठिन है। इसपर शौलने कंपित औ ६ अचंभित हो कहा, हे प्रभु, मुझे क्या कर्ना होगा? आपकी इच्छा क्या है? प्रभुने कहा कि उठके नगरमें जा, और जो कुछ तुझे करना होगा सो वहां तुझको कहा जायगा। उसके ७ संगी लोग ये बातें सुनके औ किसीको न देखके अचंभित हो रहे। तब शौलने भूमिसे उठा परंतु अपने नेत्र खोल कर ८ कुछ न देखा; तब उसके संगियोंने उसका हाथ पकड़ दमेसक नगरमें ले गये। और उसने तीन दिन लग अंधा हो ९ कुछ न खाया न पिया।

अननियके हाथसे उसके नेत्रोंमें जोति होनी औ डुबकी खानी।

दमेसक नगरमें कोई शिष्य था जिसका नाम अननिय था; १० प्रभुने दर्शन देके उससे कहा कि हे अननिय; अननियने कहा कि हे प्रभु, मैं यहां हूं। तब प्रभुने उसे आज्ञा दिई कि ११ उठके सीधा नाम पथमें जा यहूदाके घरमें तार्स नगरके

१२ पौलका खोज कर; देखो, वह प्रार्थना कर्ता है? उसने यही
दर्शन पाया कि अननियने उसके समीप आ उस पर हाथ रखा
१३ कि वह अपने नेत्र पावे। अननियने उत्तर दिया, हे प्रभु,
मैंने बज्ञतोंसे सुना है कि यिरूशालममें इसी मनुष्यने
१४ आपके पवित्र लोगोंपर बड़ी उपाध् किई है और वह प्रधान
याजकोंकी ओरसे यहां अब आया है कि उन सबोंको,
जो आपका नाम लेके प्रार्थना करते हैं बांधके ले जावे।
१५ परंतु प्रभुने कहा कि चला जा, मैंने उसे ठहराया है कि वह
अन्यदेशियों औ राजाओं औ इस्रायली लोगोंको मेरे नाम
१६ सुनावे। मैंने उसे दिखाऊंगा कि उसको मेरे नामके लिये
१७ कैसा बड़ा दुःख उठाना होगा। इसपर अननिय गया औ
उस घरमें पैठ उसपर हाथ धर कहा, हे भाई पौल, प्रभुने
मुझे भेजा है, अर्थात यीसुने, जिसने तुझको उस मार्गमें
जिससे तू आया है दर्शन दिया, कि तू अपनी दृष्टि पाके
१८ पवित्र आत्मासे भर जावे। इसपर उसके नेत्रोंसे कुछ छिलके
से तुरंत गिर पड़े और वहीं उसने अपनी दृष्टि पाई; इस
पीछे उसने उठके डुबकी लिई और कुछ खायके चंगा ज्ञआ।

पौलका महामंदिरमें खीष्टका सुसमाचार प्रचार कर्ना।

१९ पौल शिष्योंके संग कई एक दिन दमेसक नगरमें रहा;
२० इस पीछे वह मंदिरोंमें जा यह प्रचारने लगा कि यीसु
२१ जो है सो ईश्वरका पुत्र है। उसकी सब सुननेहारोंने बिस्मित
हो कहा, क्या यही वह नहीं है जिसने यिरूशालममें उन-
पर उपाध किया जो वही नाम लेके प्रार्थना करते थे;
और यहां भी आया है कि ऐसोंको बांध करके प्रधान
२२ याजकोंके निकट ले जावे? परंतु पौलने और साहसी हो
प्रमाण ला लाके दिखा दिया कि यीसु जो है सो खीष्ट है यहां
२३ तक कि दमेसक नगरके यहूदी लोग घबराये गये। इसी
प्रकारसे बज्ञत दिन बीतनेके पीछे यहूदियोंने उसे मार
२४ डालनेको बिचार किया परंतु उनका बिचार पौलको जाना
गया। वे उसे मार डालनेको रात दिन नगरके फाटकोंकी

चौकी करते रहे। तब शिष्योंने रातको उसे ले टोकरेमें २५ बैठायके भीत परसे उतार दिया।

यहूदियोंकी उसकी बिरुद्धता कर्नी।

शौल यिरूशालममें जाके शिष्योंके संग होने चाहता २६ था, परंतु सब उससे डर गये और प्रतीति न किई कि वह शिष्य हुआ है; इसपर बर्णबा उसे लेके प्रेरितोंके निकट २७ लाया और उनसे बर्णन किया कि जिस रीतिसे उसने मार्गमें प्रभुको देखा था और क्या क्या प्रभुने उससे कहा था और जिस रीतिसे उसने साहससे दमेसक नगरमें यीशुका नाम प्रचार किया था। इस पीछे शौल उनके संग यिरूशालममें २८ आया जाया करके साहससे प्रभु यीशुका नाम प्रचार करते रहा। उसने यूनानि लोगोंसे बात करके बिबाद किया; २९ इसलिये उन्होंने उसे मार डालने चाहा परंतु भाईयोंने यह ३० जान कर उसे कैसरिया नगरमें ले जाके तार्स नगरकी ओर बिदा किया।

मंडलीकी शांति।

तब यिहूदियाके औ गालीलके औ शोमिरोणके देशकी सब ३१ मंडलियोंने बिश्राम पाया; और परिश्रम कर करके और प्रभुके डरमें औ पबित्र आत्माकी शान्तिमें चल चलके बढ़ गईं।

पितरका ऐनियाको चंगा कर्ना।

पितर स्थान स्थानमें फिरते फिरते उन पबित्र लोगोंके ३२ निकट भी आया जो लोद नगरमें रहते थे; वहां ऐनेय ३३ नाम किसी मनुष्यको पाया जो आठ बरससे अर्द्धांगी होके बिछौनेपर पड़ रहा था; पितरने उससे कहा, हे ऐनेय, ३४ यीशु ख्रीष्ट तुझको चंगा करता है उठके अपनेको सुधार; इसपर वह तुरंत उठा। और लोद औ शारोण नगरोंके ३५ बसने हारे उसको देखके प्रभुकी ओर फिरे।

पितरका दर्काको जीव दान देना।

याफो नगरमें कोई नारी शिष्य थी जिसका नाम टाबी- ३६ था अर्थात दर्का था (जिसका अर्थ हरिणी है); यह स्त्री

३७ भले कर्म करनेमें औ दान देनेमें नित्य नित्य रही। उन दिनोंमें ऐसा हुआ कि वह रोगी होके मर गई और लोगोंने
३८ उसे ढो करके किसी उपरौटी कोठरीमें रख दिया। उसी समय पितर लोद नगरमें था जो निकट है; शिष्य लोगोंने यह सुनके दो मनुष्योंको उसके निकट कहला भेजा
३९ कि जलदी करके हमारे निकट आइये। पितर उठके उनके संग गया; जब वह पहुंचा वे उसे उस उपरौटी कोठरीमें लाये; वहां बहुतसी बिधवा खड़े होके रोतीं थीं और उन कूरतीयों औ ओढ़नाओंको दिखातीं थीं
४० जो दर्क्कानें जीते जी बनाये थे; पितरने उन सबोंको बाहिर करके घुटने टेकके प्रार्थना किई; तब लोथकी ओर फिरके कहा, हे टाबीथा, उठ; इस पर वह अपने नेत्र
४१ खोल पितरको देख उठ बैठो। पितरने उसका हाथ पकड़ उठाया और पबित्र लोग औ बिधवाओंको बुला उनके निकट
४२ उसे जीवती सौंप दिया। पीछे याफोके सारे नगरमें यह बात फैल गई और बहुतसे लोगोंने प्रभु पर बिश्वास किया।
४३ पीछे पितरने शिमोन नाम चमारके घरमें बहुत दिन लग याफोमें बासा किया।

१० दशवां अध्याय।

स्वर्ग दूतोंके हेतसे आज्ञापित कर्णीलियेका पितरको बुलानेके लोगोंको भेजना।

१ कैसरिया नगरमें कर्णीलिय नाम था जो उस पलटनका,
२ जो इतलियकी कहलाती है, एक सूबादार था; वह अपने सारे घराने सहित ईश्वरसे डरता था और लोगोंको बहुत दान भी देते औ ईश्वरकी प्रार्थना नित्य करते रहता था।
३ एक दिन तीसरे पहरके समय उसने यही दर्शन पाया कि ईश्वरके किसी दूतने उसके निकट आके कहा, हे कर्णी-
४ लिय; उसने उसे देख डर गया और कहा, हे प्रभु क्या है? उसने कहा, तेरी प्रार्थना औ तेरे दान साक्षी रूप ईश्वरके

सन्मुख आये हैं; अब याफो नगरमें लोगोंको भेज और ५
शिमोनको, जो पितर कहलाता है, बुला; वह शिमोन ६
नाम चमारके संग रहता है जिसका घर समुद्रके तीर पर
है; जो कुछ तुझको करना होगा सो वह तुझको कहेगा।
दूत कर्णीलियको इस रीति उपदेश देके चला गया; तब ७
उसने अपने सेवकोंमेंसे दोको और उनमेंसे, जो अपने निकट
नित्य रहते थे, किसी भक्त सिपाहीको बुलाया और उन्होंको ८
सब कुछ समझायके याफो नगरमें भेज दिया।

पितरका स्वप्नमें दर्शन होना।

दूसरे दिन जाते जाते ज्यों वे नगरके निकट पहुंचे तो ९
पितर दो पहरके समय प्रार्थना करनेको छत पर चढ़ा। उस १०
समय बड़ा भूखा हो उसने कुछ खानेको चाहा; जब वे
बनाते थे उसने यही दर्शन पाया कि स्वर्ग खुला और ११
चारों कोनोंसे लटकाई हुई बड़ी चद्दरकी नाईं उसके निकट
भूमिलों कुछ उतर आया; उसीमें पृथिवीके सारे प्रकारके १२
घरेले औ बनैले पशु औ कीड़े मकोड़े औ आकाशके पंछी थे;
और यह आकाशबाणी हुई कि हे पितर, उठ, मारके खा; १३
पितरने उत्तर दिया, हे प्रभु, ऐसा न होवे, मैंने कधी कोई १४
अशुद्ध बस्तु नहीं खाई; उसपर आकाशबाणी फिर हुई कि १५
जो कुछ ईश्वरने शुद्ध ठहराया है सो अशुद्ध न जान। यह १६
तीन बार हुआ; तब चद्दर स्वर्गको खैंचा गया।

पितरके निकट प्रेरितोंका उपस्थित होना।

जिस समय पितर अपनेमें पूछपाछ करता था कि यह १७
दर्शन जो मैंने देखा है उसका अर्थ क्या है? तो देखो, वे
मनुष्य जिन्हें कर्णीलियने भेजा था द्वार पर खड़े हो पूछते हैं
कि शिमोन का घर कहां है? उन्होंने जानकर फिर पुका- १८
रके पूछा, क्या शिमोन जो पितर कहलाता है यहां रहता
है? इसी समय पितर उस दर्शनका सोच करता था; इतनेमें १९
आत्माने उससे कहा कि देखो, तीन मनुष्य तुझे ढूंढते हैं,
उठके उतर और निःसंदेह उनके संग जा, मैंने उन्हें भेजा २०

२१ है। तब पितरने उन मनुष्योंके निकट, जो कर्णीलियसे भेजे गये थे, उतर आके कहा, जिसको तुम ढूंढते हो सो मैंही हूं,
२२ किस लिये आये हो? उन्होंने कहा कि कोई स्वर्गी दूतने कर्णीलिय सूबादारको, जो भले मनुष्य औ ईश्वरसे डरनेहारा औ यहूदी लोगोंके बीचमें नामी है, आयके यह कहा कि
२३ अपने घरमें पितरको बुलाके उससे कुछ सुनोगे। तब पितरने उन्हें भीतर बुलायके पऊंनई किई; दूसरे दिन वह याफो नगरके किसी किसी भाईयोंको लके उनके संग गया।

उनके संग पितरका जाना उसके संग कर्णीलियका बात चीत कर्ना।

२४ दूसरे दिन वे कैसरिया नगरमें पऊंचे; इतनेमें कर्णीलियने अपने कुटुम्बों औ बंधुओंको एकठे बुलायके उनकी बाट
२५ जोहता था। पितरके भीतर आनेपर कर्णीलियने उसके
२६ निकट आयके उसके चरणोंपर गिर दंडवत किया। पितरने
२७ उसको उठाके कहा, खड़ा हो, मैं भी मनुष्य हूं। इस पीछे वह कर्णीलियसे बात कर्ते२ घरमें पैठा, औ बऊतसे
२८ लोगोंको एकठे देख उनसे ये बातें कहा, तुम लोग जानते हो कि यहूदी मनुष्यको अनुचित है कि अन्यदेशीसे मिल जावे अथवा उसके यहां जावे परंतु ईश्वरने मुझसे कहा
२९ कि किसी मनुष्यको अशुद्ध न जान; इसलिये ज्यों मैं बुलाया गया, तुरंत आया; सो अब कह दीजियो कि किस लिये तुमने
३० मुझको बुलाया है? इसपर कर्णीलियने कहा कि चार दिन ऊये मैं इसी घड़ी तक ब्रत करता था, और तीसरे प्रहरके समयमें मैं अपने घरमें प्रार्थना करता था, तो देखो, कोई मनुष्य, चमकते कपड़े पहिरे ऊये, मेरे सन्मुख खड़ा हो कहा
३१ कि हे कर्णीलिय, तेरी प्रार्थना सुनी गई औ तेरे दान साक्षी
३२ रूप ईश्वरके सन्मुख आये हैं; याफो नगरमें लोगोंको भेज और शिमोनको जो पितर कहलाता है, बुला; वह शिमोन नाम चमारके संग रहता है जिसका घर समुद्रके तीर पर है; वह आयके तुझको कुछ कहेगा। इसलिये मैंने तुरंत
३३ आपके निकट भेजा; और आपने अच्छा किया है कि यहां

आये हैं; सो हम सब ईश्वरके सन्मुख अब एकठे ऊये हैं कि सब कुछ जो ईश्वरने आपसे कहा है, सुनें।

पितरका उत्तर औ सुसमाचार प्रचार कर्ना।

इसपर पितरने येही बातें कहीं कि मैंने यह निश्चय किया है ३४ कि ईश्वर मनुष्योंका पक्षपात नहीं करता है परंतु सब देशमें ३५ जो कोई उससे डरता है औ सत्कर्म करता है सो उससे ग्रहण किया जाता है। उसी बातको, जो उसने यीशु खीष्टके द्वारा ३६ से (जो सबोंका प्रभु है) मिलापका सुसमाचार प्रचार करके इस्रायेली लोगोंको भेज दिई, सोई बात तुम जानते हो अर्थात यीशुके वृत्तांतकी बातको, जो योहनकी डुबकी प्रचारनेके पीछे ३७ गालील देशसे लेके सारे यहूदी देशमें ऊई थी कि जिसरीति ३८ ईश्वरने नासरतीय यीशुको पवित्र आत्मा औ सामर्थ्य देके खीष्ट ठहराया और जिसरीति वह सुक्रिया करते औ उन सबको, जो शैतानसे दबे ऊये थे, चंगा करते फिरते रहा क्योंकि ईश्वर उसके संग था; और हम आपही उन सब ३९ कर्मोंके, जो उसने यहूदी देशमें औ यिरूशालम नगरमें किये थे, साक्षी हैं; लोगोंने उसको लकड़ी पर भी लगाके मार डाला परंतु ईश्वरने तीसर दिन उसको उठायके दिखलाया, ४० सब लोगोंको नहीं, परंतु उन साक्षियोंको, जो आगे ईश्वरसे ४१ ठहराये गये थे, अर्थात हमसबोंको जिन्होंने उसके जी उठनेके पीछे उसके संग खाया पीया। उसने हमको यही आज्ञा ४२ दिई कि लोगोंको साक्षी देके यह सुना दो कि ईश्वरने यीशुको जीवतों औ मृतकोंका न्याय करने हारा ठहराया है। सारे ४३ भविष्यद्वक्ता उसके बिषयमें यही साक्षी देते हैं कि सब कोई जो उसपर बिश्वास करता है उसके नामके द्वारा पापोंका मोचन पावेगा।

कर्णीलिय औ उसके लोगों पर पवित्र आत्माका उतरना औ उसको डुबका दिलाना।

जब पितर ये बातें सुनाताही था पवित्र आत्मा सब ४४ सुननेहारोंपर पड़ा। और यहूदी बिश्वासी जो पितरके ४५

संग आये थे, बिस्मित ऊये कि अन्यदेशियोंपर भी पबित्र आत्मा
४६ का दान दिया गया क्योंकि उन्होंने उन्हें नाना जातिकी बोलीयां
बोलते औ ईश्वरकी स्तुति करते सुना। तब पितरने कहा,
४७ कि कौन है जो कहेगा कि ये, जिन्होंने हमारी नाईं पबित्र
४८ आत्मा पाया है, डुबकी नहीं पावें? सो उसने आज्ञा दिई
कि वे प्रभुके नाम पर डुबकी पावें। पीछे उन्होंने बिंती करके
कहा कि आप हमारे संग कई एक दिन बास कीजिये।

११ एगारहवां अध्याय।

बिना लकछेदनेहारों पर सुसमाचार प्रचार कर्नेके लिये पितरका
अपबाद औ उत्तर देना।

१ प्रेरितों औ भाईयोंने, जो यहूदी देशमें थे, सुना कि अन्य-
२ देशियोंने भी ईश्वरकी बात ग्रहण किया है। जब पितर
यिरूशालम नगरमें आया तो खतनः किये गये लोगोंने
३ उससे बिबाद करके कहा, तूने क्यों अखतनी लोगोंके यहां
४ जाके उनके संग खाना खाया? इसपर पितरने आदिसे
५ अंततक वृत्तांत करके यह सुनाया कि मैं याफो नगरमें
किसी समयमें प्रार्थना करता था; इतनेमें मैंने यह दर्शन
पाया कि स्वर्गमेंसे चारों कोनों से लटकाई ऊई बड़ी चद्दरकी
६ नाईं मुझ तक कुछ उतर आया; मैंने उसपर दृष्टि करके
देखा कि इसमें पृथिवीके घरैले औ बनैले पसु और कीड़े
७ मकोड़े और आकाशके पंछी हैं; यह आकाशबाणी भी ऊई
८ कि हे पितर, उठ, मारके खा; मैंने उत्तर दिया, हे प्रभु,
सो नहीं, मैंने कधी कोई असुद्ध बस्तु नहीं खाई। इस-
९ पर यही आकाशबाणी ऊई कि जो कुछ ईश्वरने सुद्ध ठह-
१० राया है सो असुद्ध न जान; यही तीन बार ऊआ; पीछे
११ स्वर्गको सब फिर खैंचा गया। इतनेमें देखो, तीन मनुष्य, जो
कैसरिय नगरसे मेरे निकट भेजे गये थे, उसी घरके द्वारपर
१२ जिसमें मैं था, पऊंचे; तब आत्माने मुझको कहा कि निःसं-
देह उनके संग चला जा; ये छः भाई भी मेरे संग हो हम

सब उस मनुष्यके घरमें पैठ गये; इसपर उसने हमसे यह १३
कहा कि मैंने इस रीति अपने घरमें कोई दूत देखा जिसने
खड़ा होके मुझे कहा कि याफो नगरमें मनुष्योंको भेजके
शिमोनको, जो पितर कहलाता है, बुलाओ; वह तुझको उन १४
बातें कहेगा जिनसे तू और तेरे सारे घरके लोग परित्राण
पावेंगे। जब मैं उनसे बात करने लगा तो पवित्र आत्मा १५
उनपर पड़ा जैसाकि हम सब पर आरम्भमें पड़ा। तब मैंने १६
प्रभुकी बात चेत किया कि उसने कहा था कि योहनने
जलमें डुबकी दिलाई, सत्य, परंतु तुम पवित्र आत्मामें डुबकी
पाओगे। सो जो ईश्वरने उन्होंको ऐसा दान दिया जैसा १७
उसने हमको दिया, जब हम प्रभु यीशु खीष्टपर बिश्वास
किया, तो मैं कौन था कि मैं ईश्वरका साम्हना करूं? उन्होंने १८
ये बातें सुनके और कुछ न कहा परंतु ईश्वरकी स्तुति करके
बोले कि सत्य है ईश्वरने अन्यदेशियोंको भी पश्चात्ताप कर-
वाया कि वे अनंत जीवन पावें।

आंन्तियखिया नगरमें बर्णबाको भेजना।

वे जो स्तिफानकी बिपत्तिके हेतसे छिन्न भिन्न हो गये थे, १९
फैनकिया औ कुप्रदीप औ आंतियखिया तक चले गये परंतु
यहूदी लोगोंको छोड़ और किसीको ईश्वरकी बात न कही;
परंतु उनमेंसे कोई कोई कूप्रीय औ कूरीनीय देशके मनुष्य थे २०
जिन्होंने आंतियखिया नगरमें आके यूनानियोंसे बात करके प्रभु
यीशुका सुसमाचार प्रचार किया; और प्रभुका हाथ उनके संग २१
होनेसे बहुतसे लोग बिश्वास करके प्रभुकी ओर फिरे। यही २२
समाचार यिरूशालम् की मंडलीके लोगोंको पहुंचनेके पीछे
उन्होंने आंतियखिया नगरको बर्णबाको भेजा। बर्णबा २३
वहां पहुंचके ईश्वरके अनुग्रहका फल देख प्रसन्न हुआ;
और उन सबको उपदेश दिया कि वे मनसे प्रभुसे मिले
रहें; क्योंकि वह भला मनुष्य था औ बिश्वास औ पवित्र २४
आत्मासे भरा हुआ और बहुतसे लोग प्रभुकी ओर हुये।

शौलके ढूंढनेको बर्णबाका तार्स नगरमें जाना।

२५ तब बर्णबा शौलको खोज करके तार्स नगरमें गया; उसको
२६ पाके आंतियखिया नगरमें लाया। वे दोनों मंडलीके संग
बरस भर रहते बहुत लोगोंको उपदेश दिया; और शिष्य
लोग पहिले आंतियखिया नगरमें ख्रीष्टियान् कहलाये।

काल पड़नेके हेतसे बर्णबा औ शौलके संग यिरूशालम में
रूपैये भेज देना।

२७ उस समय किसी किसी भविष्यद्वक्ताओंने यिरूशालमसे
२८ आंतियखिया नगरमें आये और उनमेंसे आगाब नाम एकने
उठके आत्माकी शिक्षासे बतलाया कि सब देशोंमें बड़ा
अकाल पड़ेगा; सो यह बात क्लौदिय कैसर राजाके दिनोंमें
२९ पूरी हुई। तब शिष्योंने ठहराया कि हम अपनी२
३० सामर्थ्यके अनुसार यहूदी देशके भाईयोंको कुछ भेजेंगे; सो
उन्होंने कुछ बटोरके बर्णबा औ शौलके हाथसे मंडलीके
प्राचीनोंके निकट भेज दिया।

१२ बारहवां अध्याय।

हेरोद राजाका पितरको कारागारमें मूंद रखना औ दूतका
उसको छोड़ना।

१ उस समय हेरोद् राजाने मंडलीके किसी किसीको दुःख
२ देनेको हाथ लगाया; इतनेमें उसने योहनके सहोदर
३ भाई याकूबको खड्गसे मार डाला। इससे यहूदी लोग
संतुष्ट हुए; उसने यह देख पितरको भी पकड़नेको ठह-
४ राया। सो उसने अखमीरी रोटीके दिनोंमें उसको पकड़-
के कैदखानेमें डाला और पहर पहरमें चार चार
सिपाही उसपर लगाया। उसने यही ठहराया था कि मैं
५ निस्तार पर्वके पीछे उसे लोगोंके सन्मुख निकालूंगा। सो
पितर कैदखानेमें रखा गया था परंतु मंडलीके लोगोंने
६ उसके लिये ईश्वरकी बहुतसी प्रार्थना करते रहे। जब
हेरोद मार डालनेको उसे बाहिर निकालने पर था उसी

रातमें पितर दो सिपाहियोंके बीच दो जंजीरोंसे बंधा हुआ सोता था, और पहरुए कैदखानेके द्वारपर चौकसी करते थे; और देखो, ईश्वरके कोई दूत आया और कैदखानेमें उजियाला ७ चमका; तब वह पितरके पंजरपर हाथ मारा और उसे जगाके कहा, तुरंत उठ; इसपर उसकी जंजीरें उसके हाथोंसे खुल पड़ीं। तब दूतने उससे कहा, कटि बांधके अपनी जुती ८ पहिन; उसने वैसा किया; फिर दूतने उसे कहा, अपना ओढ़ना ओढ़के मेरे पीछे चला आ। पितर उसके पीछे जाके ९ बाहिर निकला; परंतु वह न जानता था कि यह जो दूतने किया सो सत्य है अथवा स्वप्न है; सो वे पहिले औ दूसरे पहरेमेंसे निकलके लोहेके बने हुये उस द्वारपर पहुंचे जो नगरकी ओर था; द्वार आपसे आप उनके लिये खुल गया १० वहांसे बाहिर निकल वे किसी गलीमें चले गये और वहां दूत तुरंत अदृष्टि हुआ। तब पितरने चेतमें आयके कहा कि ११ अब मैंने निश्चय किया है कि प्रभुने अपने दूतको भेजके हेरोदके हाथसे औ यहूदी लोगोंकी सारी आशासे मुझे छुड़ाया है।

मरियमके घरमें पितरका जाना औ पहरुओंको मार डालनेके लिये हेरोदकी आज्ञा।

पितर बिचार कर योहन अर्थात मार्ककी माता मरिय- १२ मके घरको आया; वहां बहुतसे लोग एकठे हो प्रार्थना करते थे। जब वह द्वार को खटखटाता था तो किसी कन्याने, १३ जिसका नाम रोदा था, बूझनेको आयके कहा कि कौन है; पितरका शब्द पहिचानके उसने आनंदके मारे द्वार न खोला १४ परंतु भीतर दौड़के उन्हें कहा कि पितर द्वारपर खड़ा है। तब उन्होंने उससे कहा, तू बौड़ही है, परंतु उसने बार २ १५ कही, वही तो है; तब उन्होंने कहा, तो उसका दूत होगा। पितर द्वार खटखटाताही था; इतनेमें वे द्वार खोलके पितर- १६ को देख अचंभित हुए। तब उसने अपने हाथसे सैन किया १७ कि वे चुप रहें; पीछे उसने वर्णन किया कि जिसरीतिसे

१८ ईश्वरने उसको कैदखानेमेंसे छुड़ा दिया; तब उसने कहा कि जाके ये बातें याकूब औ भाईयोंको सुना दीजियो; पीछे वह वहांसे निकलके किसी और स्थानमें चला गया। दिन होनेपर सिपाहियोंने आपसमें बड़ा धूम मचाके कहा कि
१९ पितर कहां गया है? हेरोदने उसको खोजके न पाया तो बिचार करके पहरूओंको मार डालने ठहराया। पीछे वह यहूदीयसे कैसरियै नगरमें जा रहा।

अहंकारके हेतसे हेरोदका बिनाश, औ ईश्वरका बचन सफल होना।

२० उस समय हेरोद राजा सोर औ सीदोन देशोंके लोगोंसे लड़ाई करने पर था परंतु वे एक मन होके उसके निकट आये और उसके दीवान ब्लास्त नाम को अपनी ओर करके
२१ मिलाप चाहा क्योंकि वे राजाके देशसे पाले जाते थे। सो किसी दिनमें हेरोदने अपने राज बस्त्र पहिनकर सिंहासन
२२ पर बैठ उन्होंसे बात किई; वे सुनके पुकारने लगे कि यह
२३ शब्द तो मनुष्यका नहीं, वह ईश्वरका है; इसपर प्रभुके दूतने उसको तुरंत मारा जिससे वह कीड़ोंसे खाया जाके
२४ मर गया क्योंकि उसने ईश्वरकी स्तुति नहीं किई। परंतु ईश्वर
२५ की बात फैलती रही। और बर्णबा औ शौल अपने काम पूरा करके और योहन अर्थात मार्कको अपने संग लेके यिरूशालम नगरमें फिरे।

१३ तेरहवां अध्याय।

दूसरे देशीयोंके निकट बर्णबा और पौलको भेजना।

१ आंतियखिया नगरकी मंडलीमें कोई कोई भविष्यद्वक्ता औ उपदेशक थे अर्थात बर्णबा औ शिमोन जो निग्र कहलाता है औ कूरीनीय लूकिय औ मिनहेम, जो हेरोद राजाके संग
२ पाला गया था, औ शौल। जिस समय वे उपवास करके ईश्वर पर लौ लगाते थे उसी समय पवित्र आत्माने कहा कि जिस कर्मके लिये मैंने बर्णबा औ शौलको ठहराया है

वही कर्म करनेको उन्हें जाने देओ। तब उन्होंने उपवास ३ औ प्रार्थना कर्के उनपर हाथ धर उन्हें बिदा किया।

सर्ज्जिय पौल औ माया करनेहारे बारयीशुका बखान।

सो वे पवित्र आत्मासे भेजे हुये सिलुकिया नगरमें गये, ४ और नावपर चढ़के वहांसे कूप्र उपद्वीपमें चले। शालामी ५ नगरमें पहुंचके यहूदियोंके मंदिरमें जा ईश्वरकी बात प्रचार कर्ने लगे; औ योहन् उनका सहायक हुआ। इसी रीति ६ वे उसी उपद्वीपके सब ठौर फिरकर पाफ् नगर लग पहुंचे, जहां उन्होंने बारयीशु नाम एक यहूदी जादूगर औ झूठे भविष्यद्वक्ताको पाया जो सर्जिय पौल नाम उस उपद्वीपके प्रधानके संग था। प्रधानने, जो बिद्यावान था, पौल औ बर्णबा को ७ बुलाया कि उनसे ईश्वरकी बात सुने परंतु उस जादूगरने, जो ८ इलुमा भी कहलाता था, उनका साम्हना किया कि प्रधान बिश्वाससे फिराया जावे। तब शौल अर्थात पौलने पवित्र ९ आत्मासे भरा होके उस जादूगर पर दृष्टि करके कहा कि १० हे शैतान के पुत्र, तू सारी कपट औ दुष्कर्म से भरा हुआ और धर्मका बैरी है, क्यों तू प्रभुके सीधे मार्गोंको टेढ़ा करनेसे नहीं छोड़ देता है? देखो, प्रभुका हाथ तुझपर पड़ा है ११ और तू अंधा होके सूर्यको कुछ दिन तक देखने नहीं सकेगा। इसपर उसके नेत्रोंपर कुहरा औ अंधकार तुरंत छा गया; सो वह ढूंढनेको इधर उधर फिरा कि कोई उसका हाथ पकड़के ले जावे। यह देख प्रधानने प्रभुके उपदेशसे १२ अचंभित हो बिश्वास किया।

आंतियखिया नगरमें पौलका खीष्टकी कथा प्रचार कर्ना औ उपदेश कर्ना।

तिस पीछे पौल औ जो उसके संग थे पाफ नगरको छोड़के १३ पम्फुलिया देशके पर्गा नगरमें आये; परंतु योहन् उनसे बिदा होके यिरूशालम् नगरको फिर गया। वे पर्गा नगरमें होके १४ पिसिदिया देशके आंतियखिया नगरमें आये और बिश्रामवारमें मन्दिरमें जा बैठे। व्यवस्था औ भविष्यद्वाक्यके पढ़े जानेके १५

पीछे, मन्दिरके प्रधानोंने उन्हें कहला भेजा कि हे भाईयो, जो
१६ लोगोंसे कुछ कहने चाहो तो कहियो। इसपर पैालने खड़े हो
हाथसे सैन कर कहा, हे इस्रायेली लोगो औ सब जो ईश्वरसे
१७ डरते हो, मेरी बात सुनो; इस्रायेली लोगोंके ईश्वरने हमारे
पित्रोंको बुलायके ग्रहण किया और जब उनके सन्तान मिसर
देशमें परदेशी थे तब उसने उन्हें बढ़ा करके सामर्थ्यसे निकाल
१८ लाया; तिस पीछे उसने ब्याबानमें चालीस बर्ष लग उनको
१९ पाला और किनान देशमें सात राज्य नष्ट करके देश उनको
२० बांट दिया; चार सौ पचास बरसके पीछे उसने शिमूयेल
भविष्यद्वक्ताके दिनोंतक उनके उपर राजकरनेको न्याइयोंको
२१ ठहराया; इसपीछे उन्होंने एक राजा चाहा, इससे ईश्वरने,
उनके उपर चालीस बरसतक कीशके पुत्र शैालको, जो बिन-
२२ यमीनके बंशका उत्पन्न हुआ, राजा ठहराया; पीछे शैालको
राज्यसे उतारके ईश्वरने राजा होनेको दायूदको उठायके यह
कहा, मैंने यिशयके पुत्र दायूदको, जो मेरा प्यारा होके मेरी
२३ इच्छापर चलेगा, पाया है; ईश्वरने, अपनी बाचाके।समान,
दायूदके बंशमेंसे, इस्रायेली लोगोंके त्राणकर्त्ता यीशुको
२४ ठहराया; यीशुके आनेसे आगे योहनने सारे इस्रायली
लोगोंको मन फिरानेके स्वरूप डुबकी का प्रचार किया;
२५ जब योहन अपनी दौड़ पूरी करनेपर था तब उसने यह
कहा, तुम मुझे किसको जानते हो? मैं वही नहीं हूं; देखो
वह मेरे पीछे आता है जिसके पांवओं की जुती खोलनेके
योग्य मैं नहीं हूं।

परित्राणकी कथा ग्रहण करनेको उनको बिनती करनी।

२६ हे भाईयो, तुम जो इब्राहीमके सन्तान हो और तुम भी
जो ईश्वरसे डरते हो, तुमही को इसी परित्राणकी बात
२७ भेजी गई है; यिरूशालमके बासियोंने औ उनके प्रधानोंने
यीशुको न जानके उसको दोषी ठहराया; इससे उन्होंने
भविष्यद्वक्ताओंकी उन बातोंको, जो बिश्रामवारोंमें पढ़ीं जातीं
२८ हैं, न समझके अनजाने पूरी किईं; हां उन्होंने जाना कि

वह मृत्युके योग्य नहीं है तौभी उन्होंने पिलात प्रधानसे कहा कि उसे क्रुशपर चढ़ाइये; जब उन्होंने उन सब बातोंको, २९ जो उसके बिषयमें लिखी थीं, पूरी किईं तब उन्होंने उसे लकड़ी परसे उतारके गोरमें रख दिया परंतु ईश्वरने उसे ३० मृतकोंमेंसे जिला उठाया; पीछे उसने बहुत दिन तक अपने ३१ ताईं उनहीको दिखाया जो उसके संग गालील देश से यिरू-शालम नगरमें आये थे; वे लोगोंके आगे उसके साक्षी हैं; हम तुम्हें यही सुसमाचार प्रचार करते हैं कि ईश्वरने, ३२ यीशुको जिला देनेमें उस बाचाको, जो उसने हमारे पितरोंसे ३३ किया था, उनके संतानोंके दिनोंमें, जो हम हैं, पूरा किया है अर्थात यही बाचा जो भजनकी पोथीके दूसरे गीतमें लिखा है कि तू मेरा पुत्र है, आज मैंने तुझको उठाया है; मृतकों ३४ मेंसे उसके उठानेके बिषयमें और उसके शरीरके न सड़नेके बिषयमें ईश्वरने यह कहा कि मैं उस बाचाकी पक्की बात जो दायूदसे कही गई थी तुमको दूंगा; दायूदने एक और गीतमें ३५ यह कहा है कि तू अपने धार्मिकको सड़ने नहीं देगा; दायूद ३६ अपने दिनोंमें ईश्वरकी इच्छापर चलकर सो गया और अपने पितरोंके संग गोरमें रखा जाके सड़गया परंतु जिसको ३७ ईश्वरने गोरमेंसे उठाया सो नहीं सड़ गया; सो, हे भाईयो, ३८ जानियो कि यीशुके द्वारासे पाप मोचन है, यह तुमको प्रचारित है; जो कोई बिश्वास करता है सो उसके द्वारासे ३९ उन सब दोषोंसे छुट्टी पाता है जिन्होंसे तुम मूसाकी व्यवस्थाके द्वारासे छुट्टी नहीं पा सकते थे। सो सावधान होओ ४० कि यह जो भविष्यद्वक्ताओंके ग्रंथोंमें लिखा है तुम पर न आवे कि हे निन्दको, अपने नेत्र खोलके देखो और बूझके ४१ लज्जित होओ, मैं तुम्हारे दिनोंमें ऐसा कर्म करूंगा कि जो कोई तुमसे बर्णन करे तो उसकी प्रतीति नहीं करोगे।

अनेक लोगोंकी कथा ग्रहण कर्नी।

जब यहूदी लोग मंदिरमेंसे बाहिर निकल जाते थे तब ४२ अन्यदेशियोंने प्रेरितोंसे यह बिंती किई कि ये बातें दूसरे

४३ बिश्रामवारमें हमसे कहियो; मंडलीके उठनेपर बऊतसे यहूदी औ भक्त लोग, जो यहूदी लोगोंकी मतके ऊये थे, पैाल औ बर्णबाके पीछे हो लिये; तब उन्होंने उनसे उपदेश देके कहा कि ईश्वरके अनुग्रहमें स्थीर रहियो।

यहूदी लोगोंका बिपरीत होना।

४४ दूसरे बिश्रामवारमें उस नगरके बऊतसे लोग ईश्वरकी ४५ बात सुननेको एकठे आये परंतु यहूदी लोगोंने ऐसी भीड़को देख डाहसे भरे हो पैालकी बातके बिरोध कहके औ ईश्वर- ४६ की निंन्दा करके साम्हना किया। इससे पैाल औ बर्णबाने साहससे कहा, पहिले तुम्हारे बीचमें ईश्वरकी बातका प्रचार कर्ना उचित था, परंतु उसके ग्रहण न कर्नेसे तुम अपने ताईं अनंत जीवनके अयोग्य दिखाते हो, इसी लिये देखो, हम अन्य- ४७ देशियोंकी ओर जाते हैं क्योंकि परमेश्वरने हमको आज्ञा देके यह कहा है कि मैंने तुभको (अर्थात खीष्टको) अन्य- देशियोंके ताईं उजियाला देनेको ठहराया है कि वे जगतके ४८ सीमा तक परित्राण पावें। अन्यदेशियोंने ये बातें सुनके प्रसन्न हो ईश्वरकी बातकी स्तुति किई; और जितने लोग जो अनन्त जीवन पानेको ठहराये गये थे, उन्होंने बिश्वास ४९ किया। इसी रीति उस सारे देशमें प्रभुकी बात फैल गई। ५० परंतु यहूदियोंने भक्तिन औ आदरमान स्त्रियोंको औ नगर- के बड़े लोगोंको उसकायके पैाल औ बर्णबाको सतायकर ५१ अपने सिवानोंमेंसे उन्हें निकाल दिया। इसपर उन्होंने अपने पांवओंकी धूल उन्होंके साम्हने भाड़के इकनिय नगरको ५२ गये। औ शिष्य लोग आनन्दसे औ पबित्र आत्मासे भर गये।

१४ चैाथवां अध्याय।

इकनिय नगरमें बर्णबा औ पैालको ताड़ना कर्नी।

१ पैाल औ बर्णबा इकनिय नगरमें पऊंचके यहूदियोंके मंदिरमें एक संग गये और ऐसी बात कहा कि बऊतसे यहूदी औ

युनानि लोगोंने बिश्वास किया परंतु अबिश्वासी यहूदियोंने २ अन्यदेशियोंको उसकाया औ उनके मनको भाईयोंके बिरुद्ध किया; तौभी वे साहससे बात करते करते बहुत दिनतक ३ वहां रहे और प्रभुने उन्होंके हाथोंके द्वारासे लक्षण औ अद्भुत कर्म करके अपने अनुग्रहकी बातोंपर साक्षी दिई। परंतु ४ उस नगरके लोग बिभाग हुये; कोई कोई यिहूदियोंकी ओर रहे और कोई कोई प्रेरितोंकी ओर; और जब अन्यदेशियों ५ औ यिहूदियोंने अपने प्रधानोंके संगी होके हल्ला करके प्रेरितोंको सताने औ पथरवाने पर हुये थे तब प्रेरित लोग यह ६ जानकर लुकायनिया देशके नगरोंमें अर्थात लुस्त्रा औ दर्ब्बी नगरोंमें और उनकी चारों ओरके स्थानोंमें भागके वहां ७ सुसमाचार प्रचार करते रहे।

लुस्त्रा नगरमें एक लंगड़ेको चंगा कर्ना बर्णबा औ पौलको पूजा कर्नेको लोगोंका उद्योगी होना।

लुस्त्रा नगरमें कोई मनुष्य था जो जन्मका लंगड़ा होके ८ पांवओंपर कभी न चल सकता था। वही पौलकी बात सुनने ९ बैठा था। इतनेमें पौलने उसपर दृष्टि करके देखा कि चंगा होनेके बिश्वास उसका है; तब उसने बड़े शब्दसे उसको १० कहा कि अपने पांवओंपर सीधा खड़ा हो; इसपर वह तुरंत उठके चलने लगा। यह जो पौलने किया था सो ११ लोगोंने देखके लुकायनीय भाषामें चिल्लायके कहा कि देवते जो हैं सो मनुष्योंके भेषमें हमारे निकट उतर आये हैं। सो १२ उन्होंने बर्णबाको युपितर देवता नाम औ पौलको मर्कूरिय देवता नाम करके रखा क्योंकि पौल बात बोलनेमें प्रधान था। उसी नगरके सन्मुख युपितर देवता का मंदिर था; सो १३ उसके याजक बहुतसे लोगोंके संग होके बलि चढ़ानेको बैलों औ फूलोंके हारोंको फाटक पर लाया; जब पौल औ बर्णबा १४ प्रेरितोंने यह सुना तो अपने ओढ़ने फाड़ औ लोगोंके बीचमें दौड़ चिल्लाने लगा कि हे भाईयो, ऐसे क्यों करते हो? हम १५ तो तुम्हारे समान सुख दुःख भोगी मनुष्य हैं और तुमको

सुसमाचार सुनाते हैं कि तुम इन व्यर्थ बस्तुओंसे उस जीवते ईश्वरकी ओर फिरो जिसने स्वर्ग औ पृथ्वी औ समुद्र औ १६ सब कुछ जो उनमें हैं बनाया; उसने बीते ऊये समयोंमें १७ अन्यदेशियोंको उनके मार्गोंमें चलने दिया तौभी उसने अपनेको बिना साक्षी नहीं छोड़ा है क्योंकि वह साक्षी सा भलाई करके आकाशसे बर्षा औ फलवन्त रितुनको हमें देके हमोंको १८ भोजन औ आनन्दसे भर देता रहा। परंतु उन्होंने ये बातें कहके बड़े कठिनसे लोगोंको रोक रखा कि वे उनके निकट बलि न करें।

पौलको यहूदियोंके पाथरोंसे मारनेसे रक्षा होनी, बर्णबाका नाना देशमें फिरना औ मंडलीके लोगोंको स्थिर कर्ना आंतियखियाके मंडलीको अपने कर्मोंका समाचार देना।

१९ पीछे आंतियखिया औ इकनिय नगरोंसे किसी किसी यहूदियोंने आके लोगोंको उसकायके पौलको पाथरोंसे ऐसा मारा कि उन्होंने समझा कि वह मर गया है; इससे उन्होंने उसे २० नगरके बाहिर घसीट लिया। परंतु जब शिष्य लोग उसको चारों ओर खड़े थे वह आपसे आप उठा; पीछे नगरमें फिर आया और दूसरे दिन बर्णबाके संग दर्ब्बी नगरको २१ चला गया। उस नगरमें सुसमाचार प्रचार कर्नेसे बऊतसे लोगोंको शिष्य कर्के वे लुस्त्रा औ इकनिय औ आंतियखिया २२ नगरोंमें फिर आये। और शिष्य लोगोंके मनको दृढ़ करके उन्होंने उन्हें यह उपदेश दिया कि बिश्वास करके स्थिर रहो क्योंकि ईश्वरके राजमें बड़े दुःखसे हमसबोंको जाना होगा। २३ और उन्होंने मंडली मंडली पर उन प्राचीनोंको ठहराया जो मंडलियोंसे बताये गये थे और प्रार्थना औ उपवास करके उन्हें प्रभुके हाथमें सोंप दिया जिसपर उन्होंने बिश्वास किया २४ था। पीछे वे पिसिदिया देशमें होके पम्फुलीया देशमें आये। २५ और पर्गा नगरमें बात सुनाके आंत्तालिया नगरमें चले गये। २६ यहांसे जहाजपर आंतियखिया नगरमें फिर आये जहां वे वह काम करनेको जो उन्होंने अब पूरा कर दिया था,

दयावन्त ईश्वरके हाथमें सोंपे गये थे। वहां होके औ मंड- २७
लीको एकठा करके उन्होंने जो कुछ कि ईश्वरने उन्होंके द्वारासे
किया था और जिस रीतिसे उसने अन्यदेशियोंके लिये
बिश्वासका द्वार खोल दिया था, सोई बर्णन किया। इस पीछे २८
उन्होंने बहुत दिनतक शिष्योंके संग वहां बास किया।

१५ पन्द्रहवां अध्याय।

लकछेदनके लिये बिवाद होना।

यिहूदिया देशसे किसी किसीने आके भाईयोंको यह १
शिक्षा दिई कि जो तुम मूसाकी व्यवस्थाके अनुसार खतनः
नहीं किये जावो तो परित्राण न पा सकोगे। उनके संग २
पौल औ बर्णबाके बहुत बिचार औ बिवाद कर्नेके पीछे मंड-
लीके लोगोंने यह ठहराया कि हम इस बातके पुछनेको
अपनेमेंसे किसी किसीको पौल औ बर्णबाके संग उन प्रेरितों
औ प्राचीनोंके निकट जो यिरूशालममें हैं भेजेंगे। सो उन्होंने ३
मंडलीके लोगोंसे कुछ दूर पहुंचाये जाके फैणीकिया औ
शोमिरोण देशमें होके अन्यदेशियोंके मन फिरानेके समाचार
देते देते सब भाईयोंको बड़े आनन्दित किया। जब वे यिरू- ४
शालममें पहुंचे तो मंडलीके लोगों औ प्रेरितों औ प्राचीनोंने
उन्हें ग्रहण किया और उन्होंने जो कुछ कि ईश्वरने उन्होंके
द्वारासे किया था सो सुनाया। परंतु कोई कोई, जो फिरूशियोंके ५
मतके हुये थे, बोल उठे कि उनका खतनः करवाना और उन्हें
मूसाकी व्यवस्था पर चलनेकी आज्ञा करना उचित है।

प्रेरितोंका इस बातमें बिचार कर्ना।

प्रेरित औ प्राचीन लोग इस बातको बिचार कर्नेको एकठे ६
हुए। बहुत बिबादके पीछे पितर उठके कहने लगा कि हे ७
भाईयो, तुम जानते हो कि बहुत दिन बीते ईश्वरने हममेंसे
मुझे ठहराया कि अन्यदेशी लोग मेरे मुखसे सुसमाचार
सुनके बिश्वास करें। सो अन्तरजामी ईश्वरने जैसा हमको ८
पवित्र आत्मा दिया तैसा उनको भी पवित्र आत्मा देके उनको

९ अपने अनुग्रह का प्रमाण दिया; और उसने उनके मनको बिश्वाससे पबित्र करके हममें औ उनमें कुछ भेद न रखा।
१० सो तुम लोग क्यों ईश्वरके साम्हना करते हो? क्यों शिष्य लोगोंके कांधे पर उस जुआको रखते हो जो न हम न हमारे
११ पित्र लोग सहने सकते थे? परंतु हमारे बिश्वास यही है कि जैसा हम आपही प्रभु यीशु ख्रीष्टके अनुग्रहसे परित्राण पावेंगे तैसा वे भी पावेंगे।

अलकछेदनेहारे लोगोंके लिये याकूबका बिचार।

१२ इसपर सब लोग जो सभामें थे चुप हो रहे तब बर्णबा औ पौलने उन आश्चर्य औ अद्भुत कर्म, जो ईश्वरने उनके
१३ द्वारासे अन्यदेशियोंके बीचमें किया था, सुना दिया। जब वे बर्णन कर चुके तब याकूबने कहा कि हे भाईयो, मेरी
१४ बात सुनइयो; शिमोनने सुना दिया है कि जिस रीतिसे ईश्वरने पहिले अपने नामके लिये कृपा करके अन्यदेशियोंमें-
१५ से एक मंडली ठहराया है; सोई भविष्यद्वक्ताओंकी इस बातके अनुसार है अर्थात ईश्वर जो इन सब कर्म करता है
१६ यह कहता है कि इसके पीछे में फिर आके दायूदका गिरा हुआ तंबू खड़ा करूंगा और उसका टुटा फुटा फिर बना-
१७ यके सुधारूंगा; इससे जो लोग रह गये हैं अर्थात अन्यदेशी लोग, जिन्होंपर मेरे नाम कहा गया है, प्रभुको ढूंढेगा।
१८ पहिलेसे ईश्वर अपने सब कर्मोंको जानता है। सो मेरा
१९ बिचार यह है कि उन्होंको, जो अन्यदेशियोंमेंसे ईश्वरकी
२० ओर फिरे हैं दुःख न देना परंतु यह लिखना कि मूर्तोंके अपबित्र प्रसादसे औ ब्यभिचारसे औ गला घोंटे हुओंसे औ
२१ लोहूसे परे रहे क्योंकि बहुत बरससे मूसाकी ब्यवस्थाके प्रचार करनेहारे नगर नगरमें हैं और उसकी बात एक एक बिश्रामवारको मंदिरोंमें पढ़ी जातीं हैं।

बर्णबा औ पौलके हाथसे पत्र भेजना।

२२ तब प्रेरितों औ प्राचीनों औ सारी मंडलीको अच्छा लगा कि अपनेमेंसे किसी किसी को जो भाईयोंके बीचमें नामी थे अर्थात

यहूदाको जिसका नाम बर्शबा भी है औ सीलाको ठहरावे कि वे यह चिट्ठी हाथमें लेके पौल औ बर्णबाके संग आंतियखिया नगरको जायें। चिट्ठीकी बातें येही हैं, आंतियखिया २३ औ सुरिया औ किलिकियाके अन्यदेशीय भाईयोंको प्रेरितों औ प्राचीनों औ भाईयोंका नमस्कार; हमने सुना है कि हम- २४ मेंसे किसी किसीने, जिन्होंने हमसे आज्ञा नहीं पाई है, निकलके तुम्होंको सिक्षा देके ब्याकुल किया है, और यह कहके तुम्हारे मनको अस्थिर किया है कि खतनः करवानेको औ मूसाकी ब्यवस्था पर चलनेको उचित है; सो हम सबोंने एक २५ मन होके यही ठहराया है कि हम अपने प्यारे बर्णबा औ पौलके संग, जो ऐसे मनुष्य हैं कि अपने प्राणको हमारे २६ प्रभु यीसु खीष्टके नामके लिये सोंप दिया है, किसी किसीको तुम्हारे निकट भेजेंगे; सो हमने यहूदा औ सीलाको भेजा २७ है जिनसे तुम ये बातें जानोगे अर्थात पबित्र आत्माकी २८ सिक्षासे हमको यह अच्छा लगा है कि इन बातोंसे जो अवश्य है तुम्होंपर और भारे बोझको न रखे अर्थात कि तुम लोग २९ देवताओंके प्रसादसे औ लोहूसे औ गला घोंटे जन्तुओंसे औ ब्यभिचारसे परे रहो; जो तुम इनसे अपनेको दूर रखो तो भला करोगे। तुम्हारा मंगल होवे।

आंतियखियामें पौल औ बर्णबाका बिबाद।

सो उन्होंने बिदा होके आंतियखिया नगरमें पहुंचके ३० लोगोंको एकट्ठे करके पत्र दिया। वे इस शांति देनेहारी पत्रको ३१ पढ़के आनंदित हुए। यहूदा औ सीलाने, जो आप भी भवि- ३२ ष्यद्वक्ता थे, भाईयोंको बहुतसे उपदेश दे उनको सुस्थिर किया। सो वे दोनों वहां कुछ दिन रह कर प्रेरितोंके निकट ३३ फिर जानेको भाईयोंसे बिदा हो कुशलसे चले गये; परंतु ३४ सीलाने वहां रहनेकी इच्छा की। पौल औ बर्णबा, बहुत ३५ औरोंके संग, लोगोंको उपदेश दे प्रभुका सुसमाचार प्रचार कर आंतियखिया नगरमें रहि गये।

बिवादसे उनका बिच्छेद होना।

३६ कै एक दिनोंके पीछे पौलने बर्णबासे कहा कि आओ हमने जिन् नगरोंमें ईश्वरका सुसमाचार प्रचार किया है, उन्हीं सब नगरोंमें दूसरी बार जाय भाईयोंसे भेंट करके ३७ देखे कि वे कैसे हैं। बर्णबाने योहन अर्थात मार्कको अपने ३८ संग लेने चाहा परंतु पौलने बिचार किया कि उसीको लेना, जो पंफुलिया देशमें हमें छोड़कर काम करनेको ३९ हमारे संग न गया, सो अच्छा नहीं है; सो उनमें ऐसा बिबाद हुआ कि एकने दूसरेको छोड़ दिया; बर्णबा मार्कको संग ले जहाज पर चढ़के कुप्र उपद्दीपको चला गया परंतु ४० पौलने सीला लिया और भाईयोंसे दयावन्त ईश्वरके हाथमें ४१ सौंपा जाके सुरिया औ किलिकिया देशमें होके मंडलियोंको स्थिर किया।

१६ सोलहवां अध्याय।

तीमथियका त्वकच्छेदन कर्ना।

१ पौल दर्ब्बी औ लुस्त्रा नगरोंमें पहुंचा, और देखो, वहां तीमथिय नाम एक शिष्य, जो किसी बिश्वासिनी यहूदियाका २ पुत्र था परंतु उसका पिता युनानी था; उसके बिषयमें ३ लुस्त्रा औ इकनिय नगरोंके भाई लोगोंने अच्छी बात कही। सो पौलने उसको अपने संग ले जाने ठहरायकर उसका खतनः करवाया क्योंकि सब यहूदी लोग, जो उन स्थानोंमें रहते थे, ४ जानते थे कि उसका पिता युनानी है। पीछे उन्होंने नगर नगरमें जाते हुये भाई लोगोंको उस पत्रको पहुंचाया जो यिरूशालममें प्रेरितों औ प्राचीनोंसे लिखवाया गया था ५ कि उसे मानें। इससे मंडलीयां बिश्वासमें सुस्थिर हो दिन दिन बढ़ने लगीं।

फिलिपी नगरमें पौलका जाना।

६ जब वे फ्रुगिया औ गलातिया देशमेंसे निकल आये थे तो पबित्र आत्माने उन्हें कहा कि आशिया देशमें बात

सुनानेको मत जाओ; सो वे मुसिया देशमें आके बिथुनिया ७ नगरको जाते थे परंतु आत्माने उन्हें रोक दिया; तब वे ८ मुसिया देशको छोड़के त्रोया नगरमें आये; यहां रातको ९ पौलने यह स्वप्न देखा कि कोई माकिदनीय मनुष्य खड़ा हो मेरी बिन्ती करके यह कहता है कि माकिदनिया देशमें आके हमारे उपकार कीजियो; इस स्वप्नसे हमने निश्चय किया कि १० प्रभुने उन्हें सुसमाचार प्रचार करनेको हमें बुलाया है; सो हम माकिदनिया देशको जाने तुरंत उठे।

लुदियाका मन फिराना औ डुबकी खानी।

हम त्रोया नगरसे खोलकर सामथ्राकी उपद्वीपको सीधे ११ आये और दूसरे दिन नियापलि नगरको पहुंचे; वहांसे १२ चलके फिलिपी नगरमें आये जो माकिदनियाके देशके एक बड़ा नगर था और जिसमें कोई रोमी लोग रहते थे; उसी नगरमें कुछ दिन रहे। बिश्रामवारको हम नगर- १३ मेंसे निकलके नदीके तीरपर गये, जहां लोग प्रार्थना किया करते, और बैठके उन स्त्रीयोंसे बात करने लगे जो वहां एकठे आईं थीं। उनके बीचमें कोई भक्तिवन्त स्त्री थी जो लुदिया १४ कहलाती थी; वह थुयातीरा नगरसे बैंजनी बस्त्र बेचनेको आई थी; जब वह बात सुनती थी तो प्रभुने उसके मनका द्वार खोल दिया कि उसने पौलकी बात ग्रहण किया। सो १५ जब उसने अपने परिवार सहित डुबकी पाई तो बिन्ती करके कहा कि जो आपलोग मुझे बिश्वासिनी जानते हैं तो मेरे घरमें आके रहीये। इसीरीति उसने बस करके हमें ले गई।

पौलसे एक उन्मत्त भूत लगी ऊई कन्याको चंगा कर्ना और उसके हेतसे उसके भर्ताका क्रोध कर्ना।

जब हम प्रार्थना करनेको जाते थे तो कोई कन्या हमको १६ मिली जो भूतके द्वारासे भविष्य बचनकी कहनेहारी थी औ जो ऐसा करनेसे अपने स्वामियोंको बऊत कुछ कमवाती थी। वह पौल औ हमारे पीछे यह चिल्लाती हो लेती रही १७

कि ये मनुष्य अतिमहान ईश्वरके सेवक हैं और हमको
१८ परित्राणका मार्ग बताते हैं। और वह बऊत दिनोंतक यह
करती रही; इतनेमें पौल दुःखित हो मुह फिराके उस भूतसे
कहा, मैं यीशु ख्रीष्टका नाम लेके तुझको आज्ञा देता हूं,
इसमेंसे निकल आ; इसपर भूत तुरंत उसमेंसे निकल आया।
१९ जब उसके स्वामियोंने देखा कि कमाईकी आशा जाती रही
तब उन्होंने पौल औ सीलाको पकड़के बिचार स्थानमें प्रधा-
२० नोंके निकट खैंच लिया और उन्हें बिचारकरताओंके सन्मुख
पऊंचाके कहा कि ये मनुष्य जो यऊदी हैं हमारे नगरके
२१ लोगोंको घबराते हैं; वे ऐसे व्यवहार सिखाते हैं जिन्हें
ग्रहण करना औ मानना हम रोमी लोगोंको उचित नहीं
२२ है। यह कह सब लोग उनके बिरुद्ध उठे; औ बिचार-
करताओंने उनके बस्त्र फाड़ बेतसे मारनेकी आज्ञा दिई।
२३ उन्हें बऊत मारके कैदखानेमें डाला और चौकसीसे रखना
२४ दारोघेको आज्ञा दिई। दारोघेने ऐसी आज्ञा पायके बीचों
बीचकी कोठरीमें उन्हें ले जाके उनके पांव काठमें दिये।

उसके निमित्त पौल औ सीलाको कारागारमें मूंदना,
कारागारकी रक्षा कर्नेहारेका मन फिराना।

२५ रातको दो पहरके समय पौल औ सीला प्रार्थना करके
ईश्वरका भजन गाने लगे और बंधुओंने उनका शब्द सुना।
२६ इतनेमें अचांचक ऐसा बड़ा भुईंडोल ऊआ कि कैदखाने की
नेवें हिलने लगीं औ सब द्वार तुरंत खुल गये और सबोंकी
२७ जंजीरें छूट गईं। इसपर कैदखानेके दारोघेने निद्रासे उठ-
कर औ सब द्वार खुले देखकर यह बूझा कि बंधुये लोग भाग
गये हैं; इससे वह खड्ग लेके अपने ताईं मार डालने पर ऊआ
२८ परंतु पौलने बड़े शब्दसे पुकारके कहा कि अपने को मत मार,
२९ हम सब यहां हैं। तब वह दीपक लानेको कह भीतर लपकते
३० कांपते पौल औ सीलाके सन्मुख गिर पड़ा। और उनको
बाहिर लाके कहा कि हे महाराजो, परित्राण पानेको मुझको
३१ क्या कर्ना होगा? उन्होंने कहा, प्रभु यीशु ख्रीष्ट पर बिश्वास

कर; इसीसे तू औ तेरे घरके लोग परित्राण पावेंगे। तब वे ३२ उससे औ उसके घरके सब लोगोंसे प्रभु की बात कहने लगे। और उसने रातको उसी समय उनको लेके उनके घावोंको ३३ धोया। इस पीछे उसने औ उसके सब लोगोंने डुबकी पाई। और उन्हें अपने घर में लाके भोजन दिया; सो वह ३४ अपने घरके सब लोग ईश्वर पर बिश्वास कर आनंदित हुआ।

उनको कारागारसे छोड़ाना।

दिन होतेही बिचारकरताओंने प्यादोंसे कहला भेजा कि ३५ इन मनुष्योंको जाने दो। कैदखानेके दारोगेने पौलको यह ३६ कहा कि बिचारकरताओंने आप लोगोंको छोड़ देनेको कहला भेजा है, सो अब निकलके कुशलसे चले जाइये। परंतु पौलने ३७ उनसे कहा कि उन्होंने हमें, जो रोमी हैं, बिन दोषी ठहराय सबोंके सन्मुख मारके कैदखानेमें डाल दिया और अब क्या वे चुपकेसे हमें छोड़ देते हैं? सो कधी न होगा; वे आपही आके हमको बाहिर ले जावें। तब प्यादोंने जाके ये बातें ३८ बिचारकरताओंको सुनाईं। जब उन्होंने सुना कि ये रोमी हैं तो डर गये; पीछे उन्होंने आके उन्हें मनाया और बाहिर ३९ लाके उनसे यह बिन्ती किई कि नगरसे चले जाईये। सो वे ४० कैदखानेमेंसे निकलके लुदियाके घरमें गये; और भाईयोंको देखके उन्हें शान्ति दिई; इसपीछे वे वहांसे चले गये।

१७ सत्रहवां अध्याय।

थिसलनीकी नगरमें पौलसे खीष्टकी कथाका प्रचार होना।
कैएक लोगोंका बिश्वास कर्ना औ दूसरोंका बिरोध कर्ना।

पौल औ सीला आम्फिपलि औ अपल्लोनिया नगरोंमें होके १ थिसलनीकी नगरमें आये जहां यहूदियोंका एक मंदिर है; और पौलने अपनी रीतिके अनुसार उनके निकट जा तीन २ बिश्रामवारोंमें धर्म पुस्तकोंमेंसे बातें निकाल निकालके सुनाईं। उसने समझा समझाके और प्रमाण प्रमाण लाके दिखाया ३ कि खीष्टको दुःख भोगना और मृतकोंमेंसे जी उठना उचित

था और कि यह यीशु, जिसका समाचार मैं देता हूं, सोई
४ ख्रीष्ट है। तब उनमेंसे कोई कोई बिश्वास करके पौल औ
सीलासे मिल गये और ऐसे भी युनानियोंमेंसे बहुतसे
५ भक्तिवंत और बहुतेरी आदरमान स्त्री लोग। परंतु अबि-
श्वासी यिहूदियोंने डाहसे भरे हो चौकके किसी किसी
लम्पट लोगोंको संग ले भीड़ करके नगरमें हुल्लड़ किया
और यासोनके घरको घेरके प्रेरितोंको लोगोंके निकट
६ निकालने चाहा। परंतु उन्हें न पाके यासोन औ और किसी
भाईयोंको नगरके प्रधानोंके निकट खैंच ले गये और उंचे
शब्दसे कहा कि वे लोग, जिन्होंने जगतको उलट पुलट
७ किया है, यहां भी आये हैं और इस यासोनने उनको
पहुनई कर उन्हें रखा है; वे सब भी कैसर राजा की
आज्ञा बिरुद्ध करके कहते हैं कि एक और राजा है अर्थात
८ यीशु। सो उन्होंने लोगोंको और नगरके प्रधानोंको ये बातें
९ सुनाके व्याकुल किया। पीछे उन्होंने यासोन औ और भाई-
योंसे जामिनी लेके उन्हें जाने दिया।

पौल औ सीलाका बिरया नगरमें जाना औ ख्रीष्टकी बातके
प्रचारमे ताड़ना पानी।

१० भाईयोंने रातको पौल औ सीलाको बिरया नगरको शीघ्र
चलने दिया औ वे वहां पहुंचके यहूदियोंके मंदिरमें गये।
११ इस नगरके लोग थिसलनीकीके लोगोंसे योग्य थे क्योंकि
उन्होंने धर्म ग्रंथोंमें दिन दिन ढूंढते ढूंढते देख लिया कि ये बातें
१२ सच हैं वा झूठ; और बड़े आनंदसे मान लिया। और
उनमेंसे और यूनानी आदरमान स्त्रियोंमेंसे और पुरुषोंमेंसे
१३ बहुतेरोंने बिश्वास किया। परंतु जब थिसलनीकीके यहू-
दियोंने जाना कि पौल बिरया नगरमें बात प्रचार करता है
१४ तो उन्होंने वहां आके लोगोंको उसकाया। इसपर भाईयोंने
पौलको तुरंत बिदा किया कि वह समुद्रपर चला जावे
१५ परंतु सीला औ तीमथिय वहां रहे। और वे जो पौलको
पहुचाने गये सो उसे आथीनी नगरमें लाये; और वहां

पऊंचके पौलने उनसे कहा कि फिर जाके सीला औ तीम-थियको कहइयो कि जलदी करके पौलके निकट आइयो; इसपर वे चले गये।

अथीनी नगरमें पौलका जाना औ लोगोंके संग बिचार कर्ना।

जब पौल आथीनी नगरमें उनकी बाट जोह रहता था तो १६ देखा कि नगर मूरतोंसे भरा ऊआ है; इससे वह बड़ा दुःखी ऊआ। सो वह उन यिऊदियों औ भक्त लोगोंसे जो १७ मंदिरमें थे और उनलोगोंसे जो दिन दिन चौकमें उसे मिलते थे चर्चा करता रहा। इतनेमें इपिकूरेय औ स्तोयिकीय १८ पंथोंके पंड़ितोंमेंसे कैएक उसे मिले और किसी २ ने कहा, यह बड़बड़िया क्या कहने चाहता है? औ औरोंने कहा कि यह उपरी देवताओंका प्रचारक दिखाई देता है क्योंकि वह उन्हें यीसु औ जी उठनेकी बात प्रचार करता था। तब उन्होंने उसको ले जा आरेयपाग नाम १९ बिचार स्थानमें लाके कहा, जो नयी बात तू सिखाता है सो किस प्रकारका है यही हमको सुना; जो अचरज बात तू २० हमारे कानोंमें सुनाता है उसका अर्थ क्या है सो हम जानने चाहते हैं। आथीनी नगरके सारे निवासी और जो उसमें २१ परदेशी थे केवल नयी बात सुनानेमें औ सुननेमें और कुछ न करते रहें।

आरेयपाग स्थानमें ख्रीष्टकी बात प्रचार कर्नी औ कैएक लोगोंका हंसना औ कितेकोंका बिश्वास कर्ना।

पौलने आरेयपाग स्थानके बीचमें खड़े हो यही बात कही, २२ हे आथीनीय लोगो, मैं देखता हूं कि आप लोग बड़े पूजेरी हैं। मैं ने फिरते ऊए औ आप लोगोंके देवताओंको देखते ऊये २३ एक बेदी पाई जिसपर यह लिखा है, अनजाने ऊये ईश्वर-का; सो जिसे आप लोग अनजाने ऊये पूजते हैं उसीका संदेश मैं आपलोगोंको देता हूं अर्थात वह ईश्वर जिसने २४ संसार औ सब कुछ जो उसमें है सिरजा; वह स्वर्ग औ पृथ्वीका प्रभु हो हाथोंके बनाये ऊये मंदिरोंमें बास नहीं २५

करता; वह सबोंको जीवन औ स्वास औ सब कुछ देता है, इस लिये वह मनुष्योंके हाथों की दिई ऊई बस्तुओंका प्रयोजन
२६ नहीं रखता है; उसने एकही लोहूसे मनुष्योंके सारी जातियोंको बनाया है कि वे सारी पृथ्वीपर बास करें; और उसने उनके किसी किसी समयों औ निवासके सिवानोंको
२७ ठहराया है कि वे उसीको (अर्थात परमेश्वरको) ढूंढ पावें क्योंकि उसका खोजना आवश्यक है। परंतु वह हमसे
२८ दूर नहीं है क्योंकि हम उसके द्वारासे जीते औ चलते फिरते औ होते हैं; तुम्हारेही किसी कबिने यह कहा कि हम तो
२९ उसीके बंश हैं। सो हमको जो उसीका बंश हैं, उचित नहीं कि यह बूझें कि ईश्वर सोने अथवा रूपे अथवा पाथरके मूरतोंके समान है जो मनुष्यके हाथ औ बिद्यासे खोदे ऊये हैं।
३० ईश्वरने अज्ञानतेके समयोंसे आंख छिपाया परंतु अब एक
३१ एक स्थानके लोगोंको मन फिराने की आज्ञा देता है क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है जिसमें वह धर्म करके उस मनुष्यके द्वारासे, जिसे उसने ठहराया है, सब लोगोंका न्याय करेगा; उसने यीशुको मृतकोंमेंसे जिला उठानेमें ऐसे दिनका
३२ प्रमाण सबोंको दिया है। जब उन्होंने मृतकोंकी जी उठनेकी बात सुनी, किसी किसीने हंसी किई और किसी किसीने कहा कि हम इसके बिषयमें तेरी बात फिर सुनेंगे।
३३ इसपर पौल उनके बीचमेंसे चला गया, तौभी किसी किसीने
३४ उससे मिलकर बिश्वास किया जिन्होंमें आरेयपागीय दियनूसिय औ दामरि नाम एक स्त्री औ उनके संग के एक और थे।

१८ अठारहवां अध्याय।

पौलका करिंथ नाम नगरमें जाना श्रम करके ईश्वर की कथाका प्रचार कर्ना।

१ तिस पीछे पौल आथीनी नगरमेंसे जाके करिंथ नगरमें आया।
२ वहां आकिला नाम एक यिहूदीको पाया जो पन्त देशमें उत्पन्न ऊआ औ जो उन दिनोंमें अपनी स्त्रीके प्रिस्किल्लाकेसंग

इतलिया देशसे आया था इसलिये कि क्लोदिय राजाने सारे
यहूदियोंको रोमा नगरमेंसे निकल जानेकी आज्ञा दिई थी;
सो पौल उनके यहां गया। वे तंबू बनानेहारे थे; और पौल ३
यही कर्म करने जानके उनके संग तंबू बनाता रहा।
उसने एक एक बिश्रामवारको मंदिरमें जाय यिहूदियों औ ४
युनानियोंसे बात करके मनाया। जब सीला औ तीमथिय ५
माकिदनिया देशसे आये तो पौल परिश्रम करके यिहूदियोंके
बीचमें प्रमाण देता था कि यीशु जो है वह ख्रीष्ट है, परंतु ६
उन्होंने अतिही बिरोध कर निन्दा किई; तब पौलने अपना
कपड़ा झाड़के उन्हें कहा कि तुम्हारे लोहूका दोष तुम्हारा
ही है, मैं निर्दोष हूं, अब मैं अन्यदेशियोंकी ओर जाऊंगा।
सो पौल वहांसे जाके यूष्ठ नाम ईश्वरके एक भक्तके घरमें ७
गया जो मंदिरके निकट था। तब मंदिरके प्रधान क्रिस्पने ८
अपने सारे घराने समेत प्रभुपर बिश्वास किया और करिंथ
नगरके बहुतेरोंने भी सुनकर बिश्वास किया औ डुबकी पाई।
रातको प्रभुने पौलको दर्शन देके कहा कि मत डर, चुपका ९
न रहके प्रचार कर; मैं तेरे संग हूं, कोई तुझे सताने नहीं १०
पावेगा; इस नगरमें मेरे बहुत लोग हैं। सो पौल डेढ़ ११
बरस वहां ईश्वरकी बात सिखलाता रहा।

गाल्लियोके निकट अपबादित होना औ छूट जाना।

गाल्लियो नाम आखाया देशका बिचारकर्त्ता था; यिहूदि- १२
योंने एक मनसे पौलपर चढ़ाई करके बिचार स्थानमें उसे
ले गये और बोले कि यह मनुष्य लोगोंको यह उपदेश देता १३
है कि मूसाकी व्यवस्थाको दूर करके ईश्वरका भजन करो।
जब पौल उत्तर देनेपर हुआ गाल्लियोने यिहूदियोंसे कहा १४
कि हे यिहूदियो, जो यह अन्याय अथवा कुकर्मकी बात होती
तो तुम्हारी सुनना मुझको उचित होता; परंतु जो यह १५
केवल उपदेश औ नामों औ तुम्हारी व्यवस्थाका बिबाद होता
तो तुम उसका बिचार करो, मैं उसका बिचार नहीं करूंगा।
इसपर उसने बिचार स्थानसे उनको दूर किया। तब १६

१७ सारे युनानियोंने मंदिरके प्रधान सोस्थिनिको पकड़के उसे बिचार स्थानके आगे मारा; तौभी गालियोने इन सब कर्मोंकी चिंता न किई।

बहुतेरे नगरोंमें जाके स्थिर कर्ना।

१८ पौलने वहां बहुत दिन तक बास करके भाईयोंसे बिदा होके जहाजपर सुरिया देशमें चला गया। उसके संग प्रिस्किल्ला औ आकिला थे। उसने किंक्रिया नगरमें अपना सिर मुड़वाया क्योंकि वह ब्रत करता था। उसने इफिस
१९ नगरमें आके उन्हें बिदा किया; तब उसने मंदिरमें जाके यिहूदियोंसे चर्चा किया। इस पीछे उन्होंने उससे बिनती
२० किई कि हमारे यहां कुछ दिन बास कीजियो परंतु उसने न मानके कहा कि अवश्य है कि मैं यिरूशालम नगरमें
२१ आनेहारे पर्बको मानऊं तौभी जो ईश्वरकी इच्छा होवे तो मैं तुम्हारे यहां फिर आऊंगा। तब उनसे बिदा हो जहाजपर
२२ इफिससे चला गया। कैसरिया नगरको पहुंच मंडलीको नम-
२३ स्कार कर वहांसे आंतियखियां नगरको गया। वहां कुछ दिन रहके चला गया और गलातिया औ फ्रूगिया देशमें जा सब शिष्योंके मनको स्थिर करके आगे हो लिया।

आपल्लोका बखान कर्ना।

२४ आपल्लो नाम एक यिहूदी जो सिकंदरिया नगरमें उत्पन्न हुआ और जो सुबक्ता औ बड़ा धर्मशास्त्री था सो उसी समय
२५ इफिस नगरमें आया; वह प्रभुको मतकी बात कुछ कुछ सीखके बड़े परिश्रमसे औ भली रीतिसे प्रभुके बिषयमें सुनाता औ सिखलाता था परंतु वह केवल योहनकी डुबकी
२६ जानता था। वह साहससे मंदिरमें कहने लगा; और आकिला औ प्रिस्किल्ला उसकी सुनके उसे अपने यहां लाया
२७ और भली रीतिसे उसको ईश्वरकी बात बूझा दिई। जब उसने आखाया देशमें जानेकी इच्छा किई तो भाईयोंने उसको ग्रहण करनेको वहांके शिष्योंके निकट चिट्ठी लिख भेजी। सो वहां पहुंचकर उसने ईश्वरके अनुग्रहके द्वारासे उनकी,

जिन्होंने बिश्वास किया था, बड़ी सहाई किई क्योंकि उसने प्रगटमें धर्म पुस्तकोंमेंसे प्रमाण ला लाके दिखा दिया कि यीशु जो है सो ख्रीष्ट है; और ऐसा करनेसे उसने यिहूदियोंको २८ निरुत्तर किया।

१९ उनीसवां अध्याय।

बारह जनोंको पवित्र आत्मा देना।

जिस समय आपल्लो करिंथ नगरमें था पौल उत्तर ओरसे १ आके इफिस् नगरमें पहुंचा। और किसी शिष्योंसे भेट कर उनसे पूछा, तुमने बिश्वास करके पवित्र आत्मा पाया है वा २ नहीं? उन्होंने उत्तर दिया कि हमने नहीं सुना है कि पवित्र आत्मा दिया जाता है। तब उसने पूछा कि तुमने किसकी ३ डुबकी पाई? उन्होंने कहा कि हमने योहनकी डुबकी पाई। पौलने कहा कि योहनने लोगोंको मन फिराने की डुबकी ४ दिलाते हुये यह कहा कि उसपर जो मेरे पीछे आता है, अर्थात ख्रीष्ट यीशुपर, बिश्वास करो। सो उन्होंने यह बात ५ सुनकर प्रभु यीशुके नामसे डुबकी लिई। इसपीछे पौलने ६ अपने हाथ उनपर रखा और तुरंत उनपर पवित्र आत्मा ७ आया; इसपर वे भांति भांतिकी बोलियां और भविष्य कहने लगे। ये सब मनुष्य बारह एक थे।

पौलका बहुत लोगोंके संग बिवाद करना औ अनेक लोगोंको चंगा करना।

पौल मंदिरमें जाके साहससे बात करने लगा और तीन ८ मास तक ईश्वरके राज्यके विषयमें चर्चा कर मनाता रहा। परंतु जब कोई कोई कठोर औ अबिश्वासी मनुष्य सबोंके ९ सन्मुख इस पथको बुरा कहने लगा तब पौल शिष्योंके संग उन्हें छोड़के किसी मनुष्यके पाठशालामें गया, जिसका नाम तुरान्न था, और वहां दिन दिन चर्चा करता रहा। इस रीति १० दो बरस बीत गया; सो आशिया देशके सब रहनेहारोंने, क्या यहूदी क्या युनानी, प्रभु यीशुकी बात सुनने पाई। और ईश्वरने ११

१२ पौलके हाथके द्वारासे बड़े अद्भुत कर्म किया यहांतक कि लोग उसके देहको अंगोछे औ बस्त्र कुआके रोगियों पर डालते थे और उनका रोग जाता रहा; कुआत्मा भी उनमेंसे निकल गये।

अपबित्र भूतसे स्कीवाके पुत्र घायल होना, मायाकी बिद्याके पुस्तकोंका जला देना।

१३ उस समय उन यिहूदियोंमेंसे, जो इधर उधर फिरके मंत्र पढ़ते थे, किसी किसीने प्रभु यीशुका नाम लेके उनपर, जिन्हें कुआत्मा लगे, पढ़के यह कहा कि हम यीशुका नाम लेके, १४ जिसका पौल प्रचार करता है, तुमको आज्ञा देते हैं। इन्होंमें सात मनुष्य थे जो स्कीवा नाम एक यहूदी प्रधान याजकके पुत्र १५ थे; जब वे ऐसा कर्म करते थे तो एक कुआत्माने उत्तर दिया कि यीशुको मैं जानता हूं औ पौलको मैं जानता हूं परंतु तुमही १६ कौन हो? यह कहके कुआत्मा लगे ऊये मनुष्य उनपर लपकके ऐसे दबा मारा कि वे नंगे औ घायल हो उस घरमेंसे निकल १७ भागे। सो इफिस नगरके सब निवासी, क्या यहूदी क्या यूनानी, यह बात जानके डरगये और प्रभु यीशुके नामकी १८ महिमा ऊई। बिश्वासियोंके बऊतेरोंने भी आके मान १९ लिया औ अपने अपने कर्मोंको बताया; और जादू करनेहारोंमेंसे बऊतोंने अपने अपने ग्रंथोंको एकठे लाके सबोंके सन्मुख जला दिया; गिननेसे देखा गया कि पचास सहस्र २० रूपैयोंके ग्रंथ जल गये थे; इसी प्रकार प्रभुकी बात फैलके प्रबल ऊई।

दीमीत्रिय सुनारका औ मायावी लोगोंका पौलके संग कलह कर्ना, औ नगरके अध्यक्षोंमें उसका निबारण कर्ना।

२१ इस पीछे पौलने अपने मनमें ठानके कहा कि मैं माकिदनिया औ आखाया देशमें होके यिरूशालम नगरको जाऊंगा; २२ पीछे मुझे रोमा नगरको देखना होगा। सो वह अपने हमसेवकोंमेंसे दोको अर्थात तीमथिय औ इरास्तको माकिदनिय देशको भेजकर आपही आशिया देशमें कुछ दिन

रहा। उस समय वहां यीसुकी मतके बिषयमें बड़ा हुल्लड़ २३
हुआ क्योंकि दीमीत्रिय नाम एक सुनार, जो आरतिमी २४
देबीके चांदी मंदिरोंको बनवाके काम काजियोंको बहुत काम-
वाता था। उसने इन काम काजियों औ औरोंको, जो ऐसे कर्म २५
करते थे, बुलायके कहा कि हे भाईयो, तुम जानते हो कि इस
कर्मसे हमारी जीविका है; तुम भी देखते औ सुनते हो २६
कि केवल इफिस नगरमें नहीं परंतु आशियाके सारे देशमें
इसी पौलने बहुत से लोगोंको फुसलायके भटकाया है और
उन्हें कहा है कि जो हाथोंसे बनाया हुआ है सो ईश्वर नहीं
है। और केवल हमारा काम काज नहीं उठ जायगा परंतु २७
महादेबी आरतिमी का मंदिर भी तुच्छ किया जायगा; और
जिसे सारे आशिया देशके औ जगतके लोग पूजते हैं उसके
ऐश्वर्य जाता रहेगा। ऐसी बात सुन उन्होंने बड़ा क्रोध कर २८
ऊंचे शब्दसे कहा कि इफीसियोंकी आरतिमी महादेबी है।
इसपर सारे नगरमें बड़ा हुल्लड़ हुआ; पीछे वे एक मनसे २९
पौलके संगी गाय औ आरिस्तार्खको, जो माकिदनीय नगरके
लोग थे, पकड़के क्रीड़ाशालाको दौड़ गये। इतनेमें पौलने ३०
लोगोंके बीचमें जाने चाहा परंतु शिष्योंने उसको जाने नहीं
दिया। आशिया देशके प्रधानोंमेंसे कोई कोई उसके हितकार ३१
होके उसे कहला भेजा कि क्रीड़ाशालामें न जाइयो। तब ३२
बहुतसे लोगोंके नाना प्रकारकी बात कहनेसे सभा व्याकुल
हुई और बहुतेरे न जानते थे कि इतने लोग किस लिये
एकठे हुये हैं। इतनेमें भीड़मेंसे किसी किसीने, यहूदियोंकी ३३
सहायतासे, सिकंदरको सन्मुख किया; इसपर सिकंदरने
हाथसे सैन करके लोगोंसे कहने चाहा परंतु जब उन्होंने ३४
जाना कि वह यहूदी है तो सबही एक संग दो घड़ीतक
चिल्लाते रहे कि इफीसियोंकी आरतिमी महादेबी है। तब ३५
नगरके प्रधानने लोगोंको स्थिर करके कहा, हे इफीसिय
लोगो, सुनइयो, कौन मनुष्य है जो नहीं जानता है कि
इफिस नगरके लोग आरतिमी महादेबीके अर्थात उस मूरतके

३६ जो युपितरसे गिरी, पुजेरी हैं? यह बात सच हो तो
३७ उचित है कि तुम ठंढे हो अबिचारसे कुछ न करो। तुम
इन मनुष्योंको यहां लाये हो जो न मंदिरके चोर, न तुम्हारी
३८ देबीके निंदक हैं। जो दीमीत्रिय सुनार औ उसके संगी
काज कामी लोग किसीपर अपबाद रखते हैं तो कचहरी खुली
है और उसमें बिचारकरते हैं; वहां जाके एक दूसरेसे
३९ बिबाद करे; जो अपबाद तुम औरोंपर रखते हो सो बिचार
४० सभामें ठहराया जायगा; क्या जाने हमसे आजके ऊधम
का लेखा लिया जायगा; तब क्या कहेंगे? ऐसी भीड़ होनेका
४१ कुछ उत्तर नहीं है। यह कह उसने सभाको बिदा किया।

२० बीसवां अध्याय।

माकिदनिया देशमें पौलका जाना।

१ ऊधम हो चुकनेपर पौलने शिष्योंको बुला बिदा हो
२ माकिदनिया देशको गया। उन स्थानोंमें होके औ शिष्योंको
३ बहुतसे उपदेश देके यूनानीय देशको चला। वहां तीन मास
लग रहकर सुरिया देशको जाने पर था परंतु जाननेसे
कि यिहूदी लोग उसकी घात ताकते हैं उसने माकिदनिया
४ देशको जाने ठहराया। बिरया नगरका सोपात्र, औ थिस-
लनीकीय नगरका आरिस्तर्ख औ सिकंद, औ दर्ब्बी नगरका
गाय, औ तीमथिय, औ आशिया देशका तूखिक औ त्रोफिम
५ उसके संग आशिया देश लग गये। ये सब आगे जाके त्रोया
६ नगरमें हम लोगोंकी बाट देखते रहें। अखमीरी रोटीके
पर्बके दिनोंके पीछे हम फिलिप्पी नगरसे जहाजपर चढ़के
पांच दिन त्रोया नगरमें उनके निकट पहुंचे और वहां सात
दिन रहे।

बात प्रचार कर्नेके समयमें उपरके झरोखेसे गिरे हुए उतुखको चंगा करना।

७ अठवारे पहिले दिन शिष्य लोग रोटी तोड़नेको एकठे
हुए औ पौल, जो बिहानको चले जानेपर था, दो पहर
८ रात तक उन्हें बात सुनाता रहा। उपरकी कोठरीमें जिसमें

वे एकठे थे बड़तसे दीपक थे; और खुली ऊई खिड़की पर ९ कोई जवान, जो उतुख कहलाता था, बैठे ऊये बड़ी भारी नींदमें पड़ा; जब पौल बड़ी बेर तक बात करता करता रहा तो उतुख नींदके मारे तीसरी तलेसे गिर पड़ा और मृतक उठाया गया। इसपर पौल उतरके उसके निकट गया और १० उठायके कहा कि तुम लोग व्याकुल मत हो, उसका प्राण उसमें है। फिर वह उपर गया और रोटी तोड़के औ खाके भोर ११ तक बात् करता करता रहा; पीके वह चला गया। वे उस १२ जवान को जीता ले जाके बड़त शान्त ऊये।

पौलका मिलित नगरमें पऊंचना।

हमने वहांसे जहाज पर जाके आसू नगरके सन्मुख १३ लगान किया जहां पौलको चढ़ा लेना था क्योंकि यहांतक उसने पांवसे चलना ठहराया था। मिलने पर हम उसे १४ चढ़ाके मितुलीनी उपद्दीपको गये; और वहांसे खोलकर १५ दूसरे दिन खीय उपद्दीपके सन्मुख आये; और एक दिन बहांसे साम उपद्दीपको पऊंचा; और वहांसे जाके त्रोगु- लियमें रहा और दूसरे दिन मिलीत नगरमें आये। पौलने १६ आशिया देशमें बड़त दिन न रहना ठहरायके इफिस नगरको न गया क्योंकि वह जलदी करता था कि जो हो सके तो निस्तार पर्बके पचासवें दिन यिरूशालमको पऊंचे।

इफिसका प्राचीन लोगोंको उपदेश कर्ना, औ अपने बिषयमें उनको भविष्यद्वाक्यका प्रचार कर्ना।

तोभी पौलने मिलीत नगरसे इफिस नगरको लोग भेजा १७ कि मंडलीके प्राचीनोंको बुलावे। जब वे उसके निकट आये १८ तो उसने उन्हें कहा कि तुम जानते हो कि जिस दिनसे मैं आशिया देशमें आया किस रीतिसे मैं तुम्हारे बीचमें चलता रहा; मैंने अत्यन्त अधीनता करके और उन १९ परीक्षाओंसे, जो यहूदियोंकी घात ताकनेसे मुझपर पड़ी ऊई, आंसू बहा बहाके प्रभुकी सेवा करता रहा; मैंने उन बातोंसे जो भली है, कुछ न छिपाया परंतु मंडलीके २०

२१ घरमें और घर घरमें तुम्हें सुनायके सिखलाता रहा; और
मैंने यहूदियों औ यूनानियोंको साक्षी देके कहा कि ईश्वर-
की ओर मन फिराओ हमारे प्रभु यीशु खीष्टपर बिश्वास
२२ करो। देखो, मैं अब आत्माके बंधनसे यिरूशलीम नगरको
जाता हूं और नहीं जानता कि वहां मेरी दशा कौनसी
२३ होगी; केवल इतना मैं जानता कि पवित्र आत्मा नगर
नगरमें साक्षी देके कहता है कि तुझे बंधन औ क्लेश
२४ भोगना होगा; परंतु मैं इसकी चिंता न करता हूं न अपने
प्राणको प्रिय जानता हूं; मैं केवल यह चाहता हूं कि मैं
आनन्दसे अपने दौड़को औ उस सेवाको जो प्रभु यीशुसे मुझपर
ठहराया गया है पूरा करूं अर्थात् कि मैं ईश्वरके अनुग्रहका
२५ सुसमाचार सुनाऊं। अब देखो, मैं यह जानता हूं कि तुम
सब जिन्होंके बीचमें मैं ईश्वरके राजका सुसमाचार प्रचार
२६ करता फिरा हूं, मेरे मुखको फिर नहीं देखोगे। मैं आजके
दिन तुम्हें साक्षी रखता हूं कि मैं सभोंके लोहूसे निर्दोष हूं
२७ क्योंकि मैंने कुछ नहीं छिपाके तुम्हें ईश्वरकी सारी बात सुना
२८ दिई है। सो तुम अपने लिये औ उस सारे झुंडके लिये, जिस-
पर पवित्र आत्माने तुम्हें प्रधान ठहराया है, सावधान होके
ईश्वरकी उस मंडलीको, जिसे उसने अपने लोहूसे मोल लिया
२९ है, चराओ; क्योंकि मेरे जानेके पीछे फाड़नेहारे भेड़िये
३० तुम्हारे बीचमें घुसके झुंडको न छोड़ेंगे; हां मैं जानता हूं कि
तुम आपहीमेंसे कोई कोई उठेंगे जो शिष्योंको अपने पीछे
३१ खेंचनेको टेढ़ी बातें कहेंगे; इस लिये जागते रहके स्मरण
करो कि मैं तीन बरस तक रात दिन आंसू बहा बहाके
३२ एक एकको चिताता रहा। और अब, हे भाइयो, मैं तुम्हें
ईश्वरको औ उसके अनुग्रहकी बातको सौंपता हूं जो तुम्हें
सुधार सकता है और पवित्र किये हुये लोगोंके बीचमें अधि-
३३ कार दे सकता है। मैंने किसीके सोने अथवा रूपे अथवा
३४ बस्त्र का लोभ न किया है। हां तुम आपही जानते हो कि मैं
अपने हाथोंसे अपने औ अपने संगियोंके लिये काम काज

किया है। मैंने नमना करके तुमको बतलाया है कि इसीरीति ३५ परिश्रम करके दुर्बलांका प्रतिपालन करना उचित है; और भी उचित है कि प्रभु यीशुकी बातोंका स्मरण करो अर्थात् कि लेनेसे देना बड़त भला है।

बहांसे बिदा होना।

ये बातें कहकर पौलने घुठनों टेक उन सबोंके संग प्रार्थना ३६ किई। तब वे बड़त रोये और गले लगा लगाके चुमा लिया। ३७ वे इसी बात पर बड़ दुःखी ऊये कि उसने कहा था कि तुम ३८ सब मेरे मुखको फिर नहीं देखोगे। पीछे उन्होंने उसे जहाज को पऊंचाया।

२१ इकीसवां अध्याय।

यिरूशालमको पौलका जाना।

हम उनसे बिदा होके जहाजपर चढ़के चलने लगे; १ सीधी बाटपर जाते जाते कोस उपद्वीपको आये; और दूसरे दिन रोदिया उपद्वीपको और वहांसे पातारा उपद्वीपको पऊंचा; यहां फैनीकिया देशको एक जहाज जाते ऊये पाके २ हम उसपर चढ़के चले गये; और कूप्र उपद्वीपको देख उसे ३ बांये हाथ छोड़ सुरिया देशको चले और सोर नगरमें लगाया क्योंकि वहां जहाजकी बोझाई उतारनी थी; और ४ वहां शिष्य लोगोंको पाके हम सात दिन रहे; उन्होंने पवित्र आत्माकी शिक्षासे पौलको कहा कि यिरूशालमको मत जाइयो। सात दिनके पीछे हम वहांसे चलने लगे और ५ सब शिष्य लोग, स्त्रियों और बालकों समेत, नगरके बाहिर-तक हमारे संग आये; वहां पऊंचके हमने समुद्रके तीर पर घुठने टेक प्रार्थना किई; पीछे हम बिदा हो जहाज- ६ पर चढ़के चले गये और वे सब अपने अपने घरको फिरे।

पथके बीच सुसमाचार प्रचार कर्नेहारे फिलिपके घरमें जाना।

हम सोर नगरसे जाके तलिमायि नगरमें पऊंचे जहां समु- ७ द्रको छोड़ दिया; भाईयोंके निकट जा नमस्कार कर उनके

८ संग एक दिन रहे। बिहानको पौल औ उसके संगी बिदा होके कैसरिया नगरमें आये; और फिलिप सुसमाचार
९ प्रचार करनेहारेके घरमें जाके रहे; यह फिलिप उन सातोंमें से एक था और उसकी चार कुआंरी पुत्रियां थी जो भविष्य-
१० दक्ती थी। जब हम वहां बज्ञत दिन लग रहे तब यहूदिया
११ देशसे आगाब नाम एक भविष्यदक्ता हमारे निकट आया और पौलका कमरबंद ले अपने हाथ पांव बांधके यह कहा कि पवित्र आत्मा यही बात कहता है कि जिसका यह कमरबंद है उसको यहूदी लोग यिरूशालम् नगरमें इसी रीति बांधकर अन्य देशियोंके हाथमें सोंपेंगे।

आगाबसे पौलके दुःखका भविष्यद्वाक्य।

१२ ये बातें सुन कर हमने औ उस स्थानके रहनेहारे लोगोंने
१३ पौलको यिरूशालमको न जानेकी बिनती की परंतु उसने उत्तर दिया, तुम क्या कहते हो? क्या तुम रोके मुझे दुःख करते हो? मैं प्रभु यीशुके नामके लिये यिरूशालममें बांधे जानेको तैयार हूं; केवल यही नहीं, मैं प्राण देनेको भी
१४ तैयार हूं। जब उसने हमारी बात न मानी तो हमने यह कहके चुप ऊये कि ईश्वरकी इच्छा जैसी है वैसीही होवे।
१५ पीछे हम अपनी सामग्री लेके यिरूशालमको चले। कैसरिया
१६ नगरके शिष्योंमेंसे कोई कोई हमारे संग जा किसी मनुष्यके घरमें रहनको पऊंचा दिया; इसी मनुष्यका नाम म्नासोन था औ वह बुढा शिष्य औ कुप्र उपद्वीपमें उत्पन्न ऊआ था।

यिरूशालममें उसका जाना।

१७ जब हम यिरूशालममें पऊंचे भाईयोंने आनंदसे हमको
१८ ग्रहण किया। दूसरे दिन पौल हमारे संग याकूबके निकट
१९ गया जहां सब प्राचीन लोग एकठे ऊये थे। पौल उनको नमस्कार कर, सब कुछ, जो ईश्वरने उसके द्वारासे अन्यदेशि-
२० योंके बीचमें किया था, बर्णन किया। यह सुन उन्होंने प्रभुका धन्यवाद कर यही बात कही, हे भाई, तू देखता है कि यहू-दियोंमेंसे सहस्र २ लोग बिश्वास कर्नेहारे हैं, परंतु वे सबी

व्यवस्था पर मन लगाते हैं; उन्होंने सुना है कि तू उन यहूदि- २१ योंको, जो अन्यदेशियोंके बीचमें रहते हैं, सिखाता कहता है कि मूसाको छोड़के अपने बालकोंका खतनः न करो औ व्यवहारों पर न चलो। सो क्या करना उचित है? जब मंड- २२ लीके लोग सुने कि तू यहां आया है तो निःसन्देह वे सब एकठे हो जाएंगे। यह जो हम तुझे कहते हैं सो कीजियो ;२३ हमारे यहां चार मनुष्य हैं जो ब्रत करते हैं, उन्हें ले उनके २४ संग अपनेको पवित्र कर, औ उनके सिर मूडनेमें जो धन लगे सो तू दे; तब सब जानेंगे कि जो कुछ हम लोगोंने उसके बिषयमें सुना है सो कुछ नहीं है परन्तु वह भी व्यवस्थाको पालन करके उसकी रीतिपर चलता है। अन्य- २५ देशी बिश्वासी लोगोंके निकट हमने इसी रीतिका पत्र लिखके भेजा है कि तुम लोग केवल इतना करो अर्थात देवतोंके प्रसादसे औ लोहूसे औ गला घोटे जन्तुओंसे औ ब्यभिचारसे परे रहो। तब पौलने इन्हीं मनुष्योंको लेके दूसरेके दिन उनके २६ संग पवित्र हो महामंदिरमें जा कह दिया कि पवित्र करने के दिन पूरे हो गये हैं; सो एक एक मनुष्यके लिये नैवेद्यादि चढ़ानेके दिन ठहराया गया था।

औ भाईयोंके संग भेंट करना।

जब चढ़ानेके सात दिन पूरे होनेपर थे आशिया देशके २७ रहनेहारे यहूदियोंने उसको महामंदिरमें देख सब लोगोंको उसकाया और उसको पकड़के चिल्लाये कि हे इस्रायेली २८ लोगो, सहायता करो; यही वह मनुष्य है जो सब स्थानमें इन लोगोंके औ मूसाकी व्यवस्थाके औ इसी ठौरके बिरोधमें सबोंको शिक्षा देता है; उसने यूनानियोंको भी महा- मंदिरमें लाय इस पवित्र स्थानको अपवित्र किया है। पहिले २९ उन्होंने नगरके बीचमें इफिस् नगरके त्रोफिमको पौलके संग देखा था; सो उन्होंने समझा कि पौल उसको महामंदिरमें लाया था। इससे नगरके लोग घबराये गये और सब ३० एक संग दौड़के औ पौलको पकड़के महामंदिरमेंसे बाहिर

३१ घसीटा और तुरंत द्वार बंद किये गये। जब वे उसे मार डालनेपर ऊए, तो सिपाहियोंके प्रधानको कहा गया कि
३२ सारे यिरूशालम् नगरमें बड़ा ऊल्लड़ ऊआ है; इसपर वह तुरंत सिपाहियों औ जमादारोंको लेके दौड़े चला आया; जब लोगोंने प्रधान औ सिपाहियोंको आते देखा तो उन्होंने
३३ पौलको मारने छोड़ दिया। तब प्रधानने निकट आके पौलको पकड़ा और उसे दो जंजीरोंसे बांधनेकी आज्ञा देके उनसे
३४ पूछा कि यह कौन है? और उसने क्या किया है? इसपर लोगोंमेंसे किसी किसीने एक प्रकारकी बात और किसी किसीने दूसरे प्रकारकी बात कही; और जब वह कोलाहलके मारे ठीक न कर सका तो उसने गढ़में उसको ले जानेकी आज्ञा
३५ दिई। जब वह सीढ़ी पर पऊंचा तो सिपाही लोगोंने भीड़से
३६ बचानेको उसे उठा लिया क्योंकि बऊतसे लोग पीछे आते ऊये चिल्लाते थे कि उसे दूर करो।

औ यहूदीयोंसे पकड़ा जाता।

३७ जब वे पौलको गढ़में ले जाने लगे तो उसने प्रधानसे कहा कि मैं आपसे कुछ बोलने चाहता हूं; उसने कहा क्या तू यूनानी
३८ भाषा जानता है? क्या तू वही नहीं है जो इन दिनोंमें मिसर देशसे आया और दंगा मचाके चार सहस्र हत्यारोंको अपने
३९ संग बियाबानमें ले गये? पौलने कहा, मैं किलिकिया देशके तार्स नगरका यहूदी हूं; मैं छोटे नगरका नहीं; सो मैं आपसे बिन्ती करता हूं कि आप मुझे लोगोंसे बोलने की आज्ञा
४० दीजिये। जब प्रधानने उसे बोलने दिया तो पौलने सीढ़ीपर खड़ा हो लोगोंको हाथसे सैन किया; जब वे चुप ऊये तो वह इब्रीय भाषामें ये बातें बोला।

२२ बाईसवां अध्याय।

१ लोगोंसे पौलका निवेदन।

१ हे पित्रो, हे भाईयो, अब मेरी बात सुन लीजिय। जब
२ उन्होंने सुना कि वह उनसे इब्रीय भाषामें बात करता है तो

वे अधिक चुप हो रहे। तब उसने कहा, मैं तो यहूदी हूं, ३
किलिकिया देशके तार्स नगरमें मेरा जन्म स्थान है; इस
नगरमें गमलीयेल् नाम अध्यापकके शिष्य हो मैं पूर्ब्बपुरुषोंकी
बिधि ब्यवस्थाके अनुसार संपूर्ण रीतिसे पढ़ाया गया, और
तुम सब आज जैसे हो ऐसेही मैं भी ईश्वरकी सेवा करनेपर
मन लगाया। मैंने इस पथके स्त्री औ पुरुषोंको कैदखानेमें ४
डालके उन्हें मृत्युलों सताया किया। महायाजक औ सभाके ५
सब प्राचीन लोग इस बातकी साक्षी दे सकते हैं; क्योंकि मैं
उनसे भाईयोंके लिये चिट्ठी पाकर दमेसक नगरको जाने लगा
कि मैं उन्हें, जो वहां बांधे ऊये होय, यिरूशालमको लाऊं
कि वे दंड पावें। परंतु जाते २ दमेसक नगरके निकट पऊंच- ६
तेही दो पहरके समय अचांचक आकाशसे बड़ी ज्योति
मेरी चारोंओर चमकी। मैं भूमि पर गिर पड़ा और एक ७
शब्द सुना जो मुझे कहा कि हे शौल, हे शौल, तू मुझे क्यों
सताता है। तब मैंने उत्तर दिया, हे प्रभु, आप कौन् हैं? ८
उसने कहा, मैं नासरतीय यीशु हूं जिसे तू सताता है।
उन्होंने जो मेरे संग थे, उस ज्योतिको देखके डर गये परंतु ९
जिसने मुझे कहा उसकी बात न बूझी। फिर मैंने उससे पूछा, १०
हे प्रभु, मैं क्या करूं? प्रभुने कहा, तू उठके दमेसक नगरमें
जा, और सब कुछ, जो करनेको ठहराया गया है, तुझे
जनाया जायगा। उस महाज्योतिके हेतसे कुछ न देखने पाके ११
मैं अपने संगियोंके हाथ पकड़के दमेसक नगरमें आया। वहां १२
हनानिय नाम, जो ब्यवस्थाके अनुसार भक्तवन्त और यहू-
दीयोंके बीचमें नामी था, मेरे निकट आया और खड़ा होके १३
मुझे कहा, हे भाई शौल, मुझपर दृष्टि कर; तुरंत मैंने उसको
देखा; फिर उसने मुझे कहा कि हमारे पितरोंके ईश्वरने ठह- १४
राया है कि तू उसकी इच्छाको जाने औ उस धर्मीको देखे
औ उसके मुखके शब्द सुने क्योंकि जो २ बातें तूने देखीं औ १५
सुनीं हैं सब मनुष्योंके निकट तू उनका साक्षी होगा। सो क्यों १६
बिलंब करता है? उठ, प्रभुके नामसे प्रार्थना करते डुबकी लो

१७ औ अपने पापोंको धो डाल। तिस पीछे यिरूशालम नगरमें फिर जाके एक दिन मैं महा मंदिरमें प्रार्थना करता था; उस
१८ समय बेसुध हो मैंने अपने सन्मुख प्रभुको देखा; उसने मुझसे कहा कि तू तुरंत यिरूशालमसे जा क्योंकि यहांके लोग मेरे
१९ बिषयमें तेरी बात ग्रहण नहीं करेंगे। तब मैंने उत्तर दिया, हे प्रभु, वे तो जानते हैं कि मैंने मंदिर मंदिरमें तेरे नाम पर बिश्वास करनेहारोंको बांधके कोड़े मारा; और जब तेरी साची
२० स्तिफानका लोहू बहाया गया मैं निकट खड़ा हो उसके मरणपर प्रसन्न हो औ उसके हत्या करनेहारोंके बस्त्रकी रखवाली
२१ करता था। तब उसने कहा कि चला जा, मैं तुझे अन्यदेशीय लोगोंके निकट भेजूंगा।

पौलके बिरुद्ध लोगोंकी बात औ पौलको कोड़े मारनेकी सेनापतिकी आज्ञा।

२२ लोगोंने इस बात लग पौलके बचन सुनकर ऊंचे शब्दसे कहा, इस मनुष्यको पृथ्वीपरसे दूर कर; ऐसे जनको जीता
२३ रखना उचित नहीं है। जब वे चिल्लाये औ अपने बस्त्र फेंकके
२४ आकाशपर धूल उड़ाने लगे तो प्रधानने पौलको कैदखानेमें ले जानेकी आज्ञा करके कहा कि उसे कोड़े मारके परीक्षा करो कि मैं जानूं कि लोग क्यों उसके बिरोधमें ऐसा चिल्लाते
२५ हैं। जब सिपाही लोग उसे डोरियोंसे बांधते थे, पौलने उस सूबादारसे, जो निकट खड़ा था, कहा, क्या उचित है कि आप किसी रोमी मनुष्यको, जिसका कुछ दोष न ठहराया गया है,
२६ कोड़े मारें? सूबादारने यह बात सुनकर प्रधानके निकट जाके कहा कि सावधान हो कि आप क्या करते हैं; यह
२७ मनुष्य तो रोमी है। प्रधानने पौलके निकट जाके कहा, क्या तू रोमी है? मुझसे कह। उसने कहा कि सच, मैं रोमी हूं।
२८ प्रधानने कहा कि मैंने बहुतसे रूपैये देके यह अधिकार
२९ पाया; पौलने कहा, मैं तो ऐसाही उत्पन्न हुआ। सो उन्होंने जो उसे मारके परीक्षा करनेपर थे, तुरंत उससे साथ

उठाये; और प्रधान भी, जिसने उसे बंधवाया था, उसे रोमी जानके डर गया।

पौलको कोड़े मारनेसे चमा करनी, औ यहूदियोंसे पौलके बिचार करनेके आज्ञा देनी।

प्रधान जानने चाहता था कि किस बातके लिये यहूदी लोग ३० पौलपर दोष लगाते हैं; सो दूसरे दिन उसने प्रधानयाजकों औ बड़ी सभाके लोगोंको एकठे होनेकी आज्ञा दिई; और पौलके बंधन खोलवाके उसको उनके सन्मुख खड़ा कर दिया।

२३ तेईसवां अध्याय।

१ बिचार स्थानमें पौलका बिचार होना, औ महापुरोहितको उसे मारनेकी आज्ञा देनी, औ अपवादका बखान।

पौलने सभाके लोगोंको ध्यानसे देखके कहा, हे भाईयो, मैं १ अपनी ज्ञानके अनुसार ईश्वरके मार्गपर आजके दिनतक मनसे चलता रहा हूं। जब पौलने ये बातें कही थीं तब हना- २ निय महायाजकने उनको, जो निकट खड़े थे, आज्ञा देके कहा कि उसके मुखपर थपेड़ा मारो। इसपर पौलने उससे कहा, ३ हे कपटी, ईश्वर तुझे मारेगा, क्या तू व्यवस्थाके अनुसार बिचार करनेको बैठके व्यवस्थाका लंघन करके मुझे मारनेकी आज्ञा देता है? तब उन्होंने, जो निकट खड़े थे, कहा, क्या तू ईश्वरके ४ महायाजककी निंदा कर्ता है? उनको पौलने उत्तर दिया, हे ५ भाईयो, कि यह महायाजक है सो मैं नहीं जानता था; जो मैं जानता तो ऐसा न कहता क्योंकि यह लिखा है कि तू अपने लोगोंके प्रधानको बुरा न कह। जब पौलने जाना कि ६ सभाके कोई कोई सिदूकी है और कोई कोई फिरूशी है तब उसने उनके बीचमें पुकारा कि हे भाईयो, मैं फिरूशियोंकी मतका औ फिरूशीका संतान हूं. मृतकोंके जी उठनेकी आशाके लिये मैं इस बिचार स्थानके आगे खड़ा किया गया हूं। उसके यह बात कहतेही फिरूशियों औ सिदूकियोंमें ७ झगड़ा हुआ और सभाके दो भाग हो गया। क्योंकि सिदूकी ८

लोग कहते हैं कि न मृतकोंका जी उठना है औ न दूत और
९ न आत्मा है परंतु फिरूशी लोग इन सबोंको मानते हैं। तब
वहां बड़ा हुल्लड़ हुआ; अध्यापक लोग, जो फिरूशियोंकी ओर
थे, उठे और लड़ते हुये बोले कि हमलोग इस मनुष्यमें कुछ
बुराई नहीं पाते हैं; जो किसी आत्मा वा किसी स्वर्गी दूतने
उससे कुछ कहा होय तो हमको चाहिये कि ईश्वरके बिरुद्धमें
१० कुछ न करें। इससे और बड़ा झगड़ा हुआ; तब प्रधान डरने
लगा कि वे पौलको टुकड़ा टुकड़ा करें; सो उसने सिपा-
हीयोंको आज्ञा देके कहा कि उनके बीचमें जाके पौलको
११ निकाल लाओ औ गढ़में पहुंचा देओ। उस रातको प्रभुने
उसके निकट खड़े हो कहा कि हे पौल, ढाड़स बांध, जैसे
यिरूशालम् नगरमें मेरे बिषयमें तूने साक्षी दिई है इसी
रीति रोम नगरमें भी साक्षी देनी होगी।

चालीस जनोंका उसके मार डालते प्रतिज्ञा करनी।

१२ जब दिन हुआ तब यिहूदियोंमेंसे किसी किसीने अपने-
को इस सोंहसे बांधके कहा कि जबलों हम पौलको न मार
१३ डालें तबलों न कुछ खायेंगे न कुछ पीयेंगे। जिन्होंने आपसमें
१४ यही सोंह किई वे चालीस एक मनुष्य थे। उन्होंने प्रधान
याजकों औ प्राचीनोंके निकट जाके कहा कि हमने सोंह किई
है कि हम जबतक पौलको न मार डालें तब तक कुछ न
१५ चीखेंगे। सो आपलोग सभा समेत बनावट करके प्रधानके
निकट कहला भेजइये कि कलके दिन पौलको हमारे निकट
पहुंचा दीजियो क्योंकि हम उसके बिषयमें ठीक पूछने चाहते
हैं। सो हमलोग उसके पहुंचनेके आगे उसे मार डालनेको
तैयार रहेंगे।

उसके भांजेसे सहस्र सेनापतिके निकट उस बातके प्रकाश होनेसे
पौलका छूटना।

१६ पौलके भांजेने सुना कि वे घातमें लगे हैं; इसपर उसने
१७ गढ़में जाके पौलको सुनाया। तब पौलने सूबादारोंमेंसे एकको
बुलाके कहा कि इस जवानको प्रधानके निकट पहुंचा

दीजियो क्योंकि वह उससे कुछ बोलने चाहता है। तब १८ सूबादारने जवानको प्रधानके निकट ले जाके कहा कि पौल बंधुआने मुझे बुलाके कहा कि इस जवानको प्रधानके निकट पऊंचा दीजियो क्योंकि वह उससे कुछ कहने चाहता है। इसपर प्रधानने उसका हाथ पकड़के औ उसे एकांतमें ले १९ जाके पूछा कि तू मुझसे क्या कहने चाहता है? उसने उत्तर २० दिया कि यहूदियोंने बनावट करके आपके निकट यही बिन्ती करनेको आवेंगे कि आप कलके दिन पौलको सभामें पऊंचा दीजिये क्योंकि वे उसके बिषयमें कुछ पूछने चाहते हैं। परंतु आप उनकी बात न मानइयेगा क्योंकि उनमेंसे चालीस २१ एक मनुष्य उसकी घातमें लगे हैं जिन्होंने आपसमें यही सोंह किई है कि जब तक हम पौलको न मार डालें तब तक हम न कुछ खायेंगे न कुछ पीयेंगे; और वे आपकी आज्ञा पानेको अब खड़े होते हैं। इसपर प्रधानने उस २२ जवानको बिदा करके चिताया कि सावधान हो कि ये बातें जो तूने मुझे कहीं हैं सो किसीसे न कह। पीछे प्रधानने दो २३ सूबादारोंको बुलाके कहा कि दो सौ सिपाहियों और सत्तर सवारों औ दो सौ बर्छी बरदारोंको तैयार करके रखो और पौलके लिये भी एक घोड़ेको तैयार रखो कि वे एक २४ पहर रातको उसपर उसे चढ़ाके फीलिक्स प्रधानके निकट, जो कैसरिया नगरमें हैं, पऊंचावें। प्रधानने भी येही बातें २५ लिख भेजी कि महिमावान फीलिक्स प्रधानको क्लौदिया लुसी- २६ यको नमस्कार; यिहूदी लोग इस मनुष्यको पकड़के उसे मार २७ डालने पर थे; इतनेमें मैंने सिपाहियोंको लेके उसे छुड़ाया क्योंकि मैंने सुना कि वह रोमी है; इस पीछे मैं जानने २८ चाहता था कि किस लिये यहूदी लोग उसपर अपवाद करते हैं; इसपर उसे उनकी सभामें ले जाके मैंने पाया कि वे अपनी व्यवस्थाकी किसी किसी बातोंके बिषयमें उसपर २९ कुछ दोष लगाया। परंतु कुछ दोष नहीं पाया जिसके लिये वह मरणके अथवा बंधनके योग्य है, तौ भी मैंने सुना कि वे

३० उसकी घातमें लगते हैं इस लिये मैंने जलदी करके उसे आपके निकट भेजा है और उसके दोष दायकोंको आज्ञा दिई है कि वे आपके सन्मुख उसपर अपवाद करें; आपका मंगल होवे।

फीलिकसके निकट पौलको भेजना।

३१ सिपाही लोग आज्ञाके अनुसार पौलको संग ले राते
३२ रात आंतिपात्रि नगरमें लाये। दूसरे दिन वे उसके संग
३३ जानेको सवारोंको छोड़के गढ़को फिर गये। सवारोंने कैसरिया नगरमें पऊंचके प्रधानके हाथमें चिट्ठी दे उसके सन्मुख
३४ पौलको खड़ा किया। तब प्रधानने पत्र पढ़के पूछा, यह मनुष्य किस देशका है? जब उसने जाना कि वह किलकिया देशका
३५ है तब उसने उसे कहा कि जब तेरे अपवाद कर्नेहारे यहां आवेंगे तब मैं तेरी बात सुनूंगा। इस पीछे उसने हेरोद राजाके राजभवनमें उसको रखनेकी आज्ञा दिई।

२४ चावीसवां अध्याय।

फीलिकसके सन्मुख पौलका बिचार होना, औ उसके अपवादकी बात कर्नी।

१ पांच दिनके पीछे अननिय नाम महायाजक, प्राचीनों औ तर्तूल्ल नाम एक वकीलके संग, आये, और फीलिकस प्रधानके
२ सन्मुख पौलपर अपवाद करनेको जा खड़े ऊये। जब पौल बुलाया गया था तब तर्तूल्लने अपवाद करके यह कहा कि हे महिमावान् फीलिकस, आपकी कृपासे हमलोगोंको बड़ा चैन
३ मिलता है और आपकी प्रबीणतासे इस देशके लोगोंको बड़ा सुख होता है इसलिये हम सब आपकी गुणानुवाद सर्वत्र
४ औ सदा करते हैं; परंतु मैं नहीं चाहता हूं कि बऊत बात कहनेसे आपको दुःख देऊं इसलिये मैं संक्षेप करके कहूंगा; सो आप अनुग्रह कर, हमारी दो एक बात सुन लीजिये।
५ हमने इस मनुष्यको महा मारि सो पाया है; वह सब यहूदियोंको, जो जगतमें हैं, दंगैत करवाता है और नासरतीय
६ मतका प्रधान है; वह महा मंदिरकोभी अपवित्र करनेपर

था परंतु हम उसे पकड़के अपनी व्यवस्थाके अनुसार उसका
बिचार करने चाहते थे, परंतु लूसिय प्रधानने आके साहस ७
करके उसे हमारे हाथोंसे छीन लिया, और उसके दोष ८
दायकोंको आपके निकट आनेकी आज्ञा दिई; सो आप
बिचार करके उन सब बातोंको, जिनके लिये हम उसपर
अपवाद करते हैं, बूझ सकेंगे। यहूदियोंने भी मान लेके कहा ९
कि ये बातें सच हैं।

पौलका उत्तर कर्ना।

जब फीलिकस प्रधानने पौलको उत्तर देनेका सैन किया १०
तब वह कहने लगा कि हे फीलिकस, मैं जानता हूं कि आप
बज्जत बर्षसे इस देशका बिचारकरत्ता ऊये हैं, इसीसे मैं
ढाड़ससे अपने उत्तर देता हूं। आप जानते होंगे कि अब ११
बारह दिन ऊए, मैं ईश्वरकी सेवा कर्नेको यिरूशालम् नगर-
में गया था; उन्होंने मुझे महामंदिरमें किसी के संग न १२
झगड़ा कर्ते, न मंदिरमें न नगरमें लोगोंको भड़काते पाया;
और वे उनबातोंका, जिनके लिये वे मुझपर अब अपवाद १३
करते हैं, प्रमाण नहीं दे सकते हैं। यह तो मैं आपके सन्मुख
मान लेता हूं कि उस मतके समान, जिसे वे कुपथ कहते १४
हैं, मैं व्यवस्था औ भविष्यदक्ताओंकी बातपर बिस्वास करके
अपने पित्रोंके ईश्वरकी सेवा करता हूं; और मैं ईश्वरसे १५
यह आशा रखता हूं कि मृतकोंका जी उठना होगा क्या
धर्मी क्या अधर्मी लोगोंका; उनका भी यही बिस्वास है।
इसमें मैं अपनेको साधना करता हूं कि मेरे मन ईश्वरकी १६
ओर औ मनुष्योंकी ओर निरंतर निरदोष हो रहे। मैं बज्जत १७
बरसोंके पीछे यिरूशालममें फिर आया कि अपने देशके
लोगोंको दान औ भेंट पऊंचाऊं; इतनेमें आशिया देशके किसी १८
किसी यहूदियोंने महामंदिरमें मुझे सुध किये ऊये पाया, न
भीड़भारके, न दंगा करने हारोंके संग; जो उनका मुझपर
कुछ अपवाद होता तो उचित है कि वे आपके सन्मुख आके १९
मुझपर दोष लगाते; जो यही नहीं हो सके तो वे जो २०

अब निकट खड़े होते हैं, कहैं कि जिस समय मैं सभाके सन्मुख खड़ा होता था मुझमें कुछ बुराई पाई कि नहीं; क्या
२१ जाने वे यह बात बुरी जानते हैं जो मैंने उनके बीचमें खड़ा हो चिल्लाई अर्थात् कि मृतकोंके जी उठनेके [बिश्वासके लिये मैं इस बिचार स्थानके सन्मुख खड़ा किया गया हूं।

उसके बिचारमें बिलंब कर्ना।

२२ जब फीलिक्सने, जो इस मतकी बात अच्छी रीतिसे जानता था, ये बातें सुना तो उसने उन्हें यह कहके टाल दिया कि जब लुसिय प्रधान आवेगा तब मैं तुम्हारे बिचार समाप्त
२३ करूंगा। इस पीछे उसने सूबादारको यह आज्ञा दिई कि पौलको चौकसी कर तौभी उसकी सेवा करनेको अथवा उससे भेंट करनेको उसके मित्रोंके आनेसे मना न कर।

फीलिक्स औ उसकी पत्नीके संग पौल की धर्म कथाकी बात कर्नी।

२४ थोड़े दिनोंके पीछे फीलिक्स प्रधानने अपनी स्त्रीके संग, जो यहूदी थी, आया और पौलको बुलवाके उससे ख्रीष्टके
२५ धर्मकी बात सुनी। जब पौल न्याय औ बराव औ आनेहारे बिचारके दिनकी बात कहता था फीलिक्सने कांपते हुए कहा, अब तो जा, मैं अवकाश पाके फिर तुझको बुला भेजूं-
२६ गा। उसे यह आशाभी थी कि पौल उसको कुछ रूपैये दे कि छुट्टी पावे; इस लिये उसने पौलको बार बार बुलवाके
२७ उससे बात चीत किई। परंतु दो बर्षके पीछे पर्किय फीष्टने फीलिक्सका पद पाया और फीलिक्स यिहूदियोंको संतुष्ट कर्नेकी इच्छा कर पौलको कैदखानेमें छोड़ गया।

२५ पचीसवां अध्याय।

फीलिक्सके पदमें पर्किय फीष्ट नियुक्त होना और पौलका दूसरीबार बिचार होना।

१ फीष्ट प्रधान अपने राज्यमें आके तीन दिनके पीछे कैस-
२ रिया नगरसे यिरूशालम नगरको गया। इसपर महायाजक

औ यिहूदियोंके प्रधान लोगोंने पौलके घाटमें लगाके फीष्टके निकट आया और पौलका अपवाद करके यह बिन्ती किई कि ३ आप अनुग्रह करके पौलको यिरूशालममें बुलवा भेजईये। परंतु फीष्टने उत्तर दिया कि पौल कैसरियामें रखा जावे; ४ मैं आपही वहां जलदी करके जाऊंगा। और तुममेंसे, जो ५ सामर्थ्यी है, सो मेरे संग चलें और जो उसमें कुछ बुराई हाय तो उसपर दोष लगावें। सो फीष्ट उनके बीचमें दस ६ एक दिन रहकर कैसरिया नगरको गया और दूसरे दिन बिचार आसनपर बैठके पौलको लानेकी आज्ञा दिई। जब पौल ७ सन्मुख ऊआ तो यहूदी लोग जो यिरूशालमसे आये थे, खड़े होके उसपर बऊतसे भारी दोष लगाया परंतु वे उन्हें ठहराने न सके। तब पौलने उत्तर देके कहा कि मैंने न यिहूदियोंकी ८ व्यवस्थाके, न महामंदिरके, न कैसर राजाके बिरूधमें कुछ किया है। इसपर फीष्टने यिहूदियोंको संतुष्ट कर्नेकी इच्छा ९ कर्के पौलसे कहा, क्या तू यिरूशालममें जाके वहां मेरे सन्मुख इन बातोंके बिषयमें बिचारा जायगा? पौलने उत्तर दिया १० कि मैं अब कैसर राजाके बिचार आसनके सन्मुख खड़ा होता हूं; चाहिये कि यहां मेरे बिचार किया जाय; मैं ने ११ यहूदियोंके बिरुद्धमें कुछ न किया है; यह आप आपही अच्छी रीतिसे जानते हैं; जो मैंने मरणके योग्य कुछ दोष किया है तो मैं मरनेको तैयार हूं; परंतु जो उन बातोंमेंसे, जिनके लिये उन्होंने मुझपर अपवाद करते हैं, कोई सच नहीं है तो कोई मुझे उन्होंके हाथमें सोंप नहीं दे सकता है; मैं कैसर राजा की दोहाई देता हूं। इसपर फीष्टने १२ सभासे बातचीत करके पौलसे कहा क्या तू कैसर राजाकी दोहाई देता है? तो कैसर राजाके निकट जाना होगा।

आग्रिप्प राजाके निकट फीष्टसे पौलकी कथाका प्रकाश होना।

कै एक दिनोंके पीछे आग्रिप्प राजा औ बिर्निकी स्त्री कैस- १३ रिया नगरमें आये कि वे फीष्टको नमस्कार करें। जब वे १४ बऊत दिन वहां रहे तब फीष्टने आग्रिप्प राजाको पौलकी

बात जताके कहा कि यहां एक मनुष्य है, जिसे फीलिकस
१५ कैदखानेमें छोड़ गया; जब मैं यिरूशालममें था तब महा
याजक औ यहूदियोंके प्राचीनोंने उसपर अपवाद करके
१६ मुझसे उसे मार डाले जानेकी बिन्ती किई; परंतु मैंने
उनको उत्तर दिया कि जबतक बादी औ अपवादी आम्ने साम्ने
न हुये हैं औ अपवादीको उत्तर देनेका अवकाश न दिया
गया है तब तक किसीको मार डाले जानेको सौंपना
१७ सो रूमीयोंकी रीति नहीं है; सो जब वे यहां आये मैंने
जलदी करके बिहानको बिचारआसन पर बैठके पौलको
१८ लानेकी आज्ञा दिई। उसके अपवादीयोंने खड़े होके उन
१९ बातोंमेंसे, जो मैं समझता था, कुछ न कहा परंतु उन्होंने
अपने मतकी बिषयमें औ किसी मरे हुये जनके बिषयमें,
जो यिशु कहलाता है, औ जिसे पौल कहता है कि वह
२० जीता है, कुछ कुछ कहके उसपर दोष लगा दिया; सो मैंने
ऐसी बातकी दुबधामें होके पौलसे कहा, क्या तू यिरूशालममें
२१ जाके वहां इनबातोंके बिषयमें बिचार किया जायगा? उसने
उत्तर दिया कि मैं कैसर राजाकी दोहाई देता हूं; इसपर
मैंने आज्ञा दिई कि जब तक मैं उसे कैसर राजाके निकट न
२२ भेजऊं तब तक कैदखानेमें उसको रखो। तब आग्रिप्पने
फीष्टसे कहा, मैं भी उस मनुष्यकी बात सुननेकी इच्छा करत
हूं। फीष्टने कहा, आप कलको उसकी बात सुनेंगे।

आग्रिप्पा औ फीष्टसे दूसरीबार उसका बिचार होना और उसके
लिये फीष्टकी कथा होनी।

२३ दूसरे दिन आग्रिप्प औ बिर्निकी बड़ी भीड़ करके बड़े सेना-
पति औ नगरके प्रधान लोगोंके संग राज गृहमें आये
२४ जहां फीष्टकी आज्ञासे पौल लाया गया। तब फीष्टने कहा,
हे राजा आग्रिप्प और सब लोगो जो यहां हो, आप लोग
उसीको देखते हैं जिसके बिषयमें सारे यहूदी लोग यिरूशा
लमसे लेके यहां तक मेरे निकट आके चिल्लाते रहते हैं कि
२५ यह जीनेके जोग्य नहीं है; परंतु मैंने उसमें मारडालनेके

जोग्य कुछ न पाया है तो भी मैंने ठहराया है कि मैं उसको कैसर राजाके निकट भेजूंगा जिसकी दोहाई उसने आपही दिई है; परंतु मैं नहीं जानता हूं कि उसके बिषयमें मैं २६ अपने महाराजको क्या क्या लिखूं; इस लिये मैं उसे आप लोगोंके सन्मुख लाया हूं, हां, हे राजा आग्रिप्प, मैं आपके सन्मुख उसे लाया हूं कि उसके बिचार होनेके पीछे मैं लिखनेका कुछ ठिकाना पाऊं क्योंकि बंधुएको भेजना औ उसका २७ दोष न बतलाना सो मुझको अनुचित समझ पड़ता है।

२६ छबिसवां अध्याय।

आग्रिप्पसे पौलका उत्तर कर्ना।

तब आग्रिप्पने पौलसे कहा कि अपने बिषयमें जो उत्तर १ तेरा है सो कह। इसपर पौलने हाथ बढ़ाके अपने उत्तरमें यह कहा कि हे राजा आग्रिप्प, मैं अपने भागको बड़ा २ जानता हूं कि मैंने आजके दिन आपके सन्मुख उन अपवादोंके बिषयमें जो यहूदियोंने मुझपर किया है उत्तर देने पाया हूं क्योंकि आप यहूदियोंके सब व्यवहारों औ झगड़ाओंकी ३ बातोंको जानते हैं इसलिये मैं प्रार्थना कर्ता हूं कि आप धीरज कर्के मेरी बात सुन लीजिये। मैं अपनी जवानीसे ४ यिरूशालम नगरमें अपने लोगोंके बीचमें रहता था; उस समयकी मेरी चलन, आदिसे अंततक, कैसी थी, सो सब यहूदी लोग जानते हैं; वे जो मेरे जान पहचान थे सो (जो ५ उनका जी चाहे) कह सकते हैं कि मैं फिरूशी की पंथके होके (जो हम लोगोंकी सब पंथोंसे कठीन है,) उसके व्यवहारोंपर अपने दिन काटता रहा; परंतु, हे राजा आग्रिप्प, मैं उस बाचाकी आशाके लिये, जो ईश्वरने हमारे पित्रोंसे किई ६ थी, इसी बिचार स्थानके सन्मुख खड़ा किया गया हूं, हां उस ७ बाचाके लिये जिसके फल पानेकी आशा हमारे बारह घराने रात दिन ईश्वरकी सेवा करके रखते हैं; सच है, इसी आशाके लिये मैं यहूदियोंसे दोषी किया गया हूं। क्या आपके ८

समझमें यह अविश्वासके जोग्य है कि ईश्वर मृतकोंको जिला
९ देवे ? (सुन लीजिये) नासरतीय यीशुके नामके बिरुद्धमें
१० बहुत कुछ करना उचित है सो मैंने निश्चय समझके यिरू-
शालम् नगरमें जाके यही कर्म किये अर्थात् प्रधान याजकोंसे
पराक्रम पाके बहुतसे पवित्र लोगोंको कैदखानेमें बंद किया;
औ जब वे मार डाले जाते थे तब मैं प्रसन्न था; औ
११ बारंबार सब मंदिरमें उन्होंको दंड किया, औ बल कर्के
यीशुकी निंदा करवाई, औ उनसे बड़ा क्रोध करके उन्हें उपरी
१२ नगरों तक सताया। इस रीति जब मैं प्रधान याजकोंसे परा-
क्रम औ आज्ञापत्र पाके दमेसक नगरको चला जाता था, तब
१३ हे राजा, मैंने दो पहरके समय मार्गमें होके स्वर्गमेंसे निकल-
ती हुई जोति देखी जो सूर्यसे तेजोमय थी और जो मेरे
१४ औ मेरे संगीयोंकी चारों ओर चमकी। जब हम सब भूमि-
पर गिर पड़े तब मैंने सुना कि कोई इब्रीय भाषा करके यह
बात मुझे कहता है कि हे शौल, हे शौल, मुझको क्यों सताता
१५ है? कांटों पर लात मारना तुझे कठिन है। तब मैंने पूछा,
हे प्रभु, आप कौन् हैं? उसने कहा, मैं यीशु हूं, जिसे तू
१६ सताता है परंतु उठके खड़ा हो; जो तूने देखा है औ जो
कुछ मैं तुझे दिखाऊंगा, उन सबोंके प्रचारक औ साक्षी ठह-
१७ रानेको मैं तुझे देखाई दिया हूं; और मैं उन लोगोंसे औ
उन अन्यदेशीयोंसे तुझे बचाऊंगा जिनके निकट मैं तुझे
१८ भेजता हूं कि तू उनके नेत्रोंको खोलवाय कि वे अंधियारेसे उ-
जियालेकी ओर औ शैतानसे ईश्वरकी ओर फिरें कि वे मुझ-
पर बिश्वास करके पाप मोचन औ पवित्र किये हुए लोगोंके
१९ बीचमें अधिकार पावें। सो, हे राजा आग्रिप्प, मैंने उस स्वर्गी
२० दर्शनका बिरुद्ध न किया परंतु पहिले दमेसक नगरमें, पीछे
यिरूशालममें औ सब यिहूदा देशकी चारोंओरमें और अन्य-
देशोंमें प्रचार करके यह कहा कि मन फिराके ईश्वरकी ओर
२१ फिरो और फिराये हुये मनके जोग्य कर्म करो; इन बातोंके
लिये यहूदी लोग महामंदिरमें मुझको पकड़के मार डालनेपर

ऊये; परंतु ईश्वरसे सहायता पाके मैं आजके दिन तक २२ छोटे औ बड़ेके सन्मुख साक्षी देता रहता हूं; और उन बातोंको छोड़ जो भविष्यदक्ताओं और मुसाने कहीं मैं और कुछ न कहता रहता हूं अर्थात् कि खीष्ट दुःख भोगके २३ मृतकोंमेंसे पहिले जी उठेगा और अपने लोगोंको औ अन्य-देशीयोंको जोतिका सन्देश पऊंचावेगा।

फीष्टका उसका उन्मत्त कहना उस पर पौलका उत्तर औ फीष्टका उसे निर्दोषी कहना औ पौलको कैसर राजाके निकट जानेकी आज्ञा देनी।

जब पौल ये बातें कहता था फीष्टने ऊंचे शब्दसे कहा, हे २४ पौल, तू बौड़हा है, बऊत बिद्याने तुझको बौड़हा किया है। पौलने कहा, हे महिमावान् फीष्ट, मैं बौड़हा नहीं हूं, मैं सचाई २५ औ सज्ञानकी बातें कहता हूं; आप भी, जिसके सन्मुख मैं अब अभयसे बात करता हूं, य बातें जानते हैं; हां मुझे निश्चय २६ है कि इन बातोंमेंसे कोई आपसे छिपी नहीं क्योंकि यह बात कोनेमें नहीं ऊई है। हे आग्रिप्प राजा, क्या आप भविष्य- २७ दक्ताओंकी बात पर बिश्वास करते हैं कि नहीं? मैं जानता हूं कि आप बिश्वास करते हैं। तब आग्रिप्पने पौलसे कहा २८ कि तू मुझे थोड़ेमें खीष्टीयान होने मनाता है। पौलने कहा, २९ मैं ईश्वरसे चाहता हूं कि इन जंजीरोंको छोड़, केवल आप नहीं परंतु सबही जो आजके दिन मेरी सुनते हैं मुझसा, थोड़ेमें औ बऊतमें होवे। जब उसने यह बात कही तब राजा ३० औ प्रधान औ बिर्निकी औ उनके संगी उठे और निरालेमें ३१ जाके आपसमें यह कहा कि इस मनुष्यने बांधे जानेके अथवा मार डाले जानेके योग्य कुछ नहीं किया है; तब आग्रिप्पने ३२ फीष्टसे कहा, जो यह मनुष्य कैसर राजाकी दोहाई न देता तो छुड़ाया जा सकता।

२७ सताईसवां अध्याय।

रोमा नगरमें पौलका जाना

हमको जहाजपर इतालिया देशमें जाना है जब यह ठह- १

राया गया तब यूलिय नाम सूबादारको, जो कैसर राजाकी
२ पलटनका था, पौल औ कैएक और बंधुवे सोंपे गये। पीछे हम
आद्रामुतीय नगरके एक जहाजपर जो आशिया देशके
तीर तीरके स्थानोंको जानेपर था, चढ़के चले गये; और माकि-
दनिया देशके थिसलनीकी नगरका आरिस्तार्ख नाम हमारे
३ संग था। दूसरे दिन हम सीदोन नगरमें पक्षंचे और युलिय
सूबादारने पौलपर अनुग्रह करके उसे अपने मित्रोंके निकट
४ आराम करनेको जाने दिया। वहांसे जहाज खोलके हम,
५ सन्मुखकी बयारके कारणसे, कुप्र उपद्वीपको छोड़ गये। किल-
किया औ पाम्फुलियाके समुद्रमें होके लुकिया देशके मुरा नगरमें
६ पक्षंचे; सूबादारने वहां सिकंदरिया नगरका एक जहाजको,
जो इतालिया देशको जाता था, पाके हमको उसपर चढ़ाया।

समुद्रकी बाटसे बड़ी आंधीका आना।

७ सन्मुखकी बयारके कारणसे हम धीरे धीरे करके बक्षत
दिनोंके पीछे कठीनतासे कनद नगरके सन्मुख आये; तब
८ क्रीती उपद्वीपके सालमोनी नगरके सन्मुख पक्षंचे; और
इसको कठीनतासे छोड़के हम उस कोलमें आये जो सुन्दर
९ कहलाता है और जो लासाया नगरके निकट है। यहां बक्षत
दिन रहके समुद्र पर चलनेके समय हो गया क्योंकि उपवास
१० पर्बके समय बीत गया था; इससे पौलने उन्हें चिताके कहा,
हे भाईयो, मैं निश्चय जानता हूं कि इस यात्रामें दुःख औ
बक्षत टोटा होंगे केवल भोभाई औ जहाजका नहीं परंतु
११ हमारे प्राणोंका भी है। परंतु सूबादारने पौलकी बातपर
बिश्वास न कर मांभी औ जहाजके स्वामीकी बातपर बिश्वास
१२ किया। बक्षतोंने कहा कि जाड़ेके दिन काटनेको यही कोल
अच्छा नहीं है इसलिये यहांसे चल निकलें कि जो हो सके
तो हम जाड़ेके दिन काटनेको फैनिकी नगरको पक्षंचें क्योंकि
वहां एक अच्छा कोल है जो क्रीती उपद्वीपका है और दक्षिण
१३ पश्चिम औ उत्तर पश्चिमकी ओरको खोलता है; सो जब
दक्षिणकी बयार मंद मंद बहने लगी तब उन्होंने अपने अभि-

लायकी पूरा ऊआ समझके जहाजको खोल दिया और
क्रीती उपद्वीपके तीर पर चलते चलते रहे। परंतु थोड़ी १४
बेरके पीछे बड़ी बयार उठी जो उरक्लिदोन कहलाती है।
जब जहाज उड़ते ऊये बयारके सन्मुख ठहर न सकता तब १५
हमने हाथ उठायके उसको चलने दिया; और क्लौदा नाम १६
किसी छोटे उपद्वीपके निकट जाते जाते हमने बड़ी कठीन-
तासे छोटी नावको बशमें किया। परंतु जतन करके उसे १७
उठायके जहाजपर डोरीयोंसे बांधी; तब चोर बालुमें फंस-
नेकी डरके मारे हम पाल गिराके जहाजको चलने दिया;
दूसरे दिन आंधीसे बड़े दुःखी होके हमने जहाजको हलुक १८
किया और तीसरे दिन अपने हाथोंसे जहाजकी सामग्री फेंक १९
दिया; जब बऊत दिनोंतक न सूर्य,न तारे दिखाई दिये और न २०
आंधी थम गई तब बचनेकी सारी आशा हमसे जाती रही।

पौलके उपदेशकी कथा, औ जहाजी लोगोंके समाचारका बखान।

लोगोंने बऊत देरसे खाना न खाया था; इससे पौलने २१
उनके बीचमें जाके कहा कि हे भाईयो, जौ मेरी बात सुनके
क्रीती उपद्वीपको न छोड़ते तो यह दुःख औ टोटा न होते;
तोभी मैं तुमसे अब कहता हूं कि ढाड़स बांधो, तुम्होंमेंसे किसी- २२
का प्राणका नाश न होगा, केवल जहाजका क्योंकि जिस ईश्वर- २३
का मैं हूं, औ जिसकी सेवा मैं कर्ता हूं उसके दूतने रातको
मेरे निकट खड़े हो कहा कि हे पौल, मत डरो, कैसर राजाके २४
सन्मुख तुझको खड़ा होना होगा; देखो, ईश्वरने सबको, जो
तेरे संग जहाजपर हैं, तुझको दिया है; इसलिये, हे भाईयो, २५
ढाड़स बांधो, मैं ईश्वरपर भरोसा रखता हूं कि जैसा उसने
मुझे कहा है तैसा ही होगा; तौभी किसी उपद्वीप पर २६
हमारा जहाज मारा जायगा। इसीरीति आद्रिया समुद्रमें २७
जहाज मारे फिरे; चौदवीं रातके दो पहरके समय जहाजी
लोग जानते थे कि किसी देशके निकट आ पऊंचे हैं; तब २८
उन्होंने थाह लेके बीस हाथ पाया; और थोड़ा आगे जाकर
फिर थाह लेके पंद्रह हाथ पाया; इसपर हमको डर लगी २९

कि पथरोंपर मारे जायें इसलिये उन्होंने जहाजकी पीछा-
३० ड़ीसे चार लंगर डालके भोरको निहार रहे। इस पीछे
जहाजी लोगोंने जहाजमेंसे भागने चाहके छोटी नाव उतार
दिई; उन्होंने इसी छलसे ऐसा किया कि हम गलही से लंगर
३१ डालें। पौलने यह देखके सूबादार औ सिपाहियोंसे कहा
कि जो ये लोग जहाजपर न रहें तो तुम लोग बच नहीं
३२ सकोगे; इसपर सिपाहियोंने छोटी नावकी डोरियोंको काटके
३३ उसे बहने दिई। जब भोर होने लगा पौलने भोजन करनेको
सबोंकी बिन्ती करके कहा कि चौदह दिनसे तुम लोग बिलम्ब
३४ करके भोजन नहीं किया है, अब मैं बिन्ती करता हूं कि खा
लीजिये, इससे मंगल होगा; तुम्होंमेंसे किसीके सिरका
३५ एक बाल नहीं गिरेगा। सो पौल यह बात कह रोटी
लेकर सबोंके सन्मुख ईश्वरको धन्यबाद कर उसे तोड़ खाने
३६ लगा; तब उन्होंनेभी ढाड़स बांधके कुछ खाया। हम
३७ सब, जो जहाजपर थे, दो सौ छहत्तर मनुष्य थे। भोजनसे
३८ टप्त होके उन्होंने अन्नको समुद्रमें फेंकके जहाजको हलुक
किया।

जहाजका टूटना, औ लोगोंका उपद्वीपके तीर उतरना।

३९ दिन होनेपर वे नहीं जानते थे कि यह देश कौन है जिसके
निकट आ पहुंचे हैं परंतु किसी खालको देखा जिसकी तीर पर
उतरने सकें; सो वे चाहते थे कि जो हो सके तो इसी खालमें
४० जहाजको पहुंचावें। इसपर उन्होंने लंगरोंकी डोरियोंको
काटके उन्हें समुद्रमें छोड़ दिया; इस पीछे वे पतवारका बंधन
४१ खोलके औ पाल चढ़ायके तीरकी ओर चलने लगे। परंतु किसी
स्थानमें पहुंचकर, जहां दो धारे मिल गये, जहाज मारा
हुआ, गलही फंस गई, और लहरोंके मारनेसे पीछाड़ी टूट
४२ गई। इसपर सिपाहियोंने ठहराया कि बंधुवे लोगोंको मार
४३ डाले, न होवे कि उनमेंसे कोई पैरकर भाग जाय; परंतु
सूबादारने पौलको बचाने चाहके उन्हें रोका और यह आज्ञा
दिई कि जो पैर सकते हैं सो कूदके तीरपर चलो और जो

पैर नहीं कर सकते हैं सो झिलियोंपर और जहाजके टुकड़ों- ४४
पर चलो। इस भांतिसे वे सब भूमिको पऊंचके बच गये।

२८ अठाईसवां अध्याय।

मिलीत उपद्वीपमें अशिष्ट लोगोंका अनुग्रह पाना, पौलके हाथसे विष धर सर्पका फेंकना।

उनके बचनेके पीछे वे जान गये कि जिस उपद्वीपमें हम १
आ पऊंचे हैं उसका नाम मिलीत है। वहांके लोग, जो बड़े २
गंवार थे, हमपर बड़ा अनुग्रह किया; उन्होंने झड़ी औ जाड़े-
के लिये आग सुलगाके हम सबोंकी पऊनई किई। इतनेमें ३
पौलने कुछ कुछ लकड़ीको बटोरके आगपर फेंक दिया; इस-
पर आगके तेजसे एक सांप उसमेंसे निकल पौलके हाथको
पकड़ लिया। गंवारोंने सांपको उसके हाथपर लटकते देख- ४
कर आपसमें कहा कि निःसन्देह यह मनुष्य नरहत्या
करनेहारा है; वह समुद्रसे बच गया है, सच, तौ भी दंड
दायक उसे जीते रहने नहीं देता है। इतनेमें पौलने सांपको ५
आगमें झटकके कुछ बुराई न पाई। लोग देख रहते थे कि ६
वह सूज जायगा अथवा अचांचक गिरके मर जायगा परंतु
बड़ी बेरतक देखते देखते रहे और उसपर कुछ बुराई न होती
देखा उन्होंने कुछ और ही समझके कहा कि यह देवता है।

पौल पबलिय नाम अध्यक्ष औ दूसरोंका चंगा होना।

उस उपद्वीपका प्रधान पबलिय नाम था; उसने उसस्थानमें ७
जमीनदारी रखके हमको अपने घरमें ले गया और बड़ा
अनुग्रह करके तीन दिन तक हमारी पऊनई किई। उस ८
समय पबलियका पिता तपसे औ आंवलोहूसे रोगी पड़ा
था; पौलने उसके निकट जाके प्रार्थना किई और उसपर
हाथ रखके उसे चंगा किया। जब यह ऊआ तब उस उप- ९
द्वीपके और रोगी लोग आयके चंगे हो गये। इस पीछे १०
उन्होंने हमको बड़ा आदर किया; और जानेके समय जो
कुछ हमको आवश्यक था सो उन्होंने हमको बऊत दिया।

दूसरे जहाज पर रोम नगरमें जाना, बाटमें भाईयोंके संग भेंट कर्नी।

११ तीन मासके पीछे हम लोग सिकंदरिया नगरके एक जहाज पर चल् निकले जो उस उपद्वीपमें जाड़के सब दिन रहा था और जिसका चिन्ह दियस्कुरे था अर्थात दो देवता-
१२ ओंकी मूरतें। पहिले सराकुसी नगरमें पऊंचे जहां तीन्
१३ दिन रहे। फिर वहांसे खोलके रीगिय नगरके सन्मुख आये और दक्षिण की बयारके चलनेसे दूसरे दिन पुतियली
१४ नगरमें पऊंचे। वहां हम भाईयोंको पाके उनकी बिन्तीसे उनके संग सात् दिन रहे। इसी रीति हम रोमा नगरकी
१५ ओर चलते रहे। रोमा नगरके भाई लोग हमारे आनेकी बात सुनके आप्पियफर औ चीटबर्णी नगरोंतक हमारे मिलनेको आये। पौलने उन्हें देखकर ईश्वरका धन्यबाद किया औ शान्त ऊआ।

रोमा नगरमें पऊंचना, यिहूदी लोगोंके निकट पौलका निवेदन, औ सुसमाचार प्रचार कर्ना।

१६ जब हम रोमा नगरमें आ पऊंचे सूबादारने बंधुवे लोगोंको महासेनापतिके हाथमें सोंपदिया परंतु पौलने उस सिपाही-
१७ के संग जिसने उसकी चौकी किई, अकेला रहने पाया। तीन दिनके पीछे पौलने वहांके बड़े बड़े यिहूदियोंको एकठे बुलवा भेजा। जब वे एकठे आये उसने उन्हें कहा कि हे भाईयो, मैंने अपनी जातिके औ अपने पित्रोंके ब्यवहारोंके बिरोधमें कुछ नहीं किया है तौभी यिरूशालमके रहनेहारोंने मुझे रोमी
१८ लोगोंके हाथमें सोंपके बंधुआ किया है। रोमी लोगोंने बिचार कर मुझे छुड़ा देने चाहा; इसलिये कि उन्होंने
१९ मुझे मार डालनेको कुछ दोष न पाया परंतु जब यिहूदी लोगोंने बिरोध किया तो मैंने बिन उपाय होके कैसर राजा की दोहाई दिई; तौभी अपने देशके लोगोंपर मेरा कोई अपवाद नहीं है। सो मैंने आप लोगोंको बुलाया है कि
२० मैं आप लोगोंको देखके बात चीत करूं। मैं इस्रायेली बंशकी

आशाके लिये इसी जंजीरसे बंधा ऊआ हूं। तब उन्होंने २१
उससे कहा कि हम सबोंने तेरे बिषयमें यिहूदिया देशसे न
चिट्ठी पाई, न वहांके भाईयोंमेंसे किसीने आके कुछ सन्देश
दिया अथवा तेरे बिषयमें कुछ बुराई कही। परंतु तेरा मत २२
क्या है सो हम तेरे मुखसे सुनने चाहते हैं क्योंकि हम जानते
हैं कि स्थान स्थानमें इस नयी मतके बिषयमें कुछ बुरा कहा
जाता है। सो उन्होंने एक दिन ठहराया। इसी दिनमें बऊत २३
से लोग पौलके रहनेके स्थानमें एकठे आये; इसपर पौल ईश्वर-
के राज्यके बिषयमें बात करता करता और यीशुके बिषयमें
मूसाकी व्यवस्थाके ग्रंथ औ भविष्यद्वक्ताओंके ग्रंथोंमेंसे प्रमाण
प्रमाण लाता लाता उन्हें भोरसे सांझ तक मनाता रहा।
तब किसी किसीने उसकी बातपर बिश्वास किया और किसी २४
किसीने बिश्वास नहीं किया। सो वे आपसमें एक मता नहीं २५
ऊये। परंतु उनके चले जानेसे पहिले पौलने उनसे यही
बात कही कि पबित्र आत्माने हमारे पित्रोंसे, यिशायिय
भविष्यद्वक्ताके द्वारासे, ठीक यही बात कही कि इन लोगोंके २६
निकट जाके कह कि तुम लोग सुनोगे परंतु न बूझोगे, और
देखोगे परंतु न सूझोगे क्योंकि इन लोगोंके मन कठोर ऊये २७
हैं; वे अपने कानोंको बंद करते हैं और अपने नेत्रोंको मूंद
लेते हैं न होवे कि वे किसी समयमें अपने नेत्रोंसे देखें और
अपने कानोंसे सुनें और अपने मनसे समझें और फिर जावें
और मैं उन्हें चंगे करऊं। सो तुम जानो कि ईश्वरका जो २८
परित्राण है सो अन्यदेशियोंको भेजा गया है और वे उसे
सुन लेंगे। जब पौल ये बातें कह चूका तो यिऊदी लोग आपस- २९
में बड़ा बाद करते ऊये चले गये। इसी रीति पौलने दो ३०
बरस भरके अपने भाड़ेके घरमें रहा और सबोंको, जो
उसके निकट आये, ग्रहण करके ईश्वरके राजकी बात प्रचार ३१
करता और प्रभु यीशु ख्रीष्टके बिषयमें साहस करके बिना-
रोकसे उपदेश देता रहा। इति॥

रोमनिवासियोंकी मण्डली पर पत्र।

१ पहिला अध्याय।

प्रेरित पदमें पौलका नियुक्त होना।

१ यीशु ख्रीष्टका दास पौल, जो प्रेरित होनेको बुलाया गया, और उस सुसमाचारके प्रचार करनेको अलग किया गया है,
२ जिसकी चर्चा ईश्वरने आगेसे भविष्यद्वक्ताओंकी धर्म ग्रंथों में
३ किई है (यह पत्र लिखता है)। यही सुसमाचार, ईश्वरके पुत्र यीशु ख्रीष्टके विषयमें है, जो हमारा प्रभु है। वह, अपने शरीरके बिषयमें, दायूद राजाके बंशसे उत्पन्न ज्ञआ,
४ परंतु, अपने पबित्र आत्माके बिषयमें, वह ईश्वरका पुत्र है; यह बात, मृतकोंमेंसे उसके जी उठनेके आश्चर्य्य कर्मसे, ठीक
५ किई गई है। इसी यीशुसे हमने अनुग्रह और प्रेरित पद पाये हैं कि सब देशोंके लोग, उसपर बिश्वास करके, उसके
६ नामकी बड़ाई करें। इन लोगोंमेंसे, तुम भी यीशु ख्रीष्टके
७ बुलाये ज्ञये हो। तुम सबोंपर, जो रोम नगरमें, ईश्वरके पियारे औ बुलाये ज्ञये पबित्र लोग हैं, हमारे पिता ईश्वरसे, और प्रभु यीशु ख्रीष्टसे, शांति औ अनुग्रह होवें।

रोम नगरमें सुसमाचार प्रचार कर्नेको जो इच्छा उसको जनाना।

८ पहिले, मैं, यीशु ख्रीष्टके नाम लेके, अपने ईश्वरका धन्यबाद करता हूं कि तुम्हारे बिश्वास करनेकी चर्चा, सब संसार
९ में, फैल गई है। ईश्वर, जिसकी सेवा मैं अपने मनसे, उसके पुत्रके सुसमाचार प्रचार करनेमें, करता हूं, मेरा साक्षी है
१० कि मैं, प्रार्थना करनेमें, तुम्हारे नाम सदा लेता हूं; मेरी प्रार्थना यही है कि ईश्वर, जलदी करके, मुझे तुम्हारे निकट, अच्छी
११ भांतिसे, पज्ञंचा देवे; मैं तुम्हें बज्ञत देखने चाहता हूं कि मैं तुम

को कुछ परमार्थी दान दिलवाऊं, जिसके द्वारासे तुम स्थिर हो जावो; अर्थात् कि हम दोनों, एक संग होके, अपने बिश्वास १२ से शान्ति हो जावें। हे भाईयो, मैं चाहता हूं कि तुम १३ इससे अनजान न रहो कि मैंने बार बार तुम्हारे निकट आनेको ठहराया था कि तुम्होंसे, जैसा कि और देशोंके लोगोंसे, फल पाऊं; परंतु अबतक रोका गया हूं।

सुसमाचारमें पुण्य औ तत्वज्ञान होना।

मैं युनानियों औ बारबारों, और ज्ञानियों औ अज्ञानि- १४ योंका, ऋणी हूं; सो मैं, अपनी सामर्थ्य भरसे, तुम लोगोंको १५ भी, जो रोम नगरमें रहते हो, सुसमाचार प्रचार करनेको तैयार हूं। मैं खीष्टके सुसमाचारसे लज्जित नहीं हूं; वह ईश्व- १६ रके आश्चर्य कर्म है, जिसके द्वारासे सब, जो बिश्वास करते हैं, त्राण पाते हैं, पहिले यिहूदी तब युनानी; क्योंकि वही पुण्य १७ जो ईश्वरसे ठहराया गया है, अर्थात, वही पुण्य, जो बिश्वासके द्वारासे होता है, सोई इस सुसमाचारसे प्रकाश किया जाता है कि मनुष्य उसे सच्चे जानें, जैसाकि यह लिखा है कि पुण्यवान लोग, बिश्वासके द्वारासे, बच जायेंगे।

जिन लोगोंको सुसमाचार नहीं मिला उनके सब प्रकारके पाप होनेका बखान।

स्वर्गसे यही प्रकाश किया गया है, अर्थात् कि ईश्वर, क्रोध १८ करके, उन अभगत औ कुकर्मी मनुष्योंको दंड देगा, जो, कुकर्म करके, सचाईको चलने नहीं देते हैं। जो कुछ कि ईश्वरके १९ बिषयमें जाना जाय, सो ईश्वरने उन्होंपर प्रगट किया है; उसकी अनंत सामर्थ्य औ ईश्वरत्व, जो अदृश्य है, सो जगतके २० सिरजे होनेके दिनसे, सिरजी हुई बस्तुओंके द्वारासे, अच्छे प्रकारसे, जाने गये हैं; इसलिये वे निरउत्तर हैं। वे ईश्वरको २१ जानते थे तौभी उन्होंने उसको, ईश्वरसा न मानके, आदर न किया औ धन्य न माना, परंतु, बाद करके, भूलमें पड़े; और उनका असमझ मन अंधकारसे भर गया। वे अपनेयोंको २२ ज्ञानी कहके अज्ञानी हुये; और उन्होंने, ऐश्वर्य्यवंत औ २३

अविनाशी ईश्वरको छोड़के, बिनाशमान मनुष्यों औ पशुओं औ पक्षिओं औ कीड़े मकोड़ेंकी मूरतें बनाईं।

२४ इस लिये ईश्वरने उन्हें यहांतक छोड़ दिया कि उन्होंने, अपने मनकी कामनासे, ऐसा कुकर्म किया कि वे आपसमें अपने शरीरों

२५ का निरादर किया; हां ईश्वरने उन्ही छोड़ दिया जिन्होंने, सत्य ईश्वरको छोड़के, असत्यको खड़ा कर दिया और सिरजी ऊई बस्तुओंकी पूजा औ सेवा करके सिरजनेहारेकी नहीं

२६ किई जो सच्चिदानंद है, आमीन। सत्य है, ईश्वरने उन्हें यहांतक छोड़ दिया कि उन्होंने बड़ा कुकर्म किया; उन्होंकी स्त्रियोंने, अपने स्वाभाविक चालको छोड़के, वही कर्म, जो स्वभावसे बाहिर है,

२७ सोई किया; ऐसा भी पुरुषोंने स्त्रीयोंको छोड़के, आपसमें कामना की जलनसे, कुकर्म किया और अपनेयोंमें अपने

२८ कुकर्मका फल पाया। वे ईश्वरका ज्ञान रखने न चाहते थे; इस लिये ईश्वरने उन्हें यहांतक छोड़ दिया कि वे अपनी बुरी मतके अनुसार अयोग्य कर्म करें। सो उन्होंने सब प्रकारके कुकर्म

२९ किया, अर्थात, व्यभिचार औ बैर औ लोभ औ बिगाड़ औ ईर्षा औ बध औ झगड़ा औ कपट औ कुमति; औरभी वे फुसफुसा-

३० नेहारे औ चवाव करनेहारे औ ईश्वरकी निंदा करनेहारे औ उपद्रव करनेहारे औ गलफटाकी करनेहारे औ बुरी बस्तुओंके

३१ बनानेहारे औ माता पिताके नामान्नेहारे औ निर्बुद्धि औ झूठे

३२ औ निसप्रेमी औ माया रहित औ निर्दय ऊये। वे ईश्वरकी इस आज्ञाको जानते हैं कि जो ऐसे कर्म करते हैं सो मृत्युके योग्य हैं तौभी वे केवल आपही यही कर्म नहीं करते परंतु उन्होंसे भी प्रसन्न होते हैं जो ऐसे कर्म करते हैं।

२ दूसरा अध्याय।

पापोंसे सबोंके दंड होनेका बिबरण।

१ सो, हे मनुष्य, तू जो दोष लगाता है, सो निरउत्तर है; क्योंकि जिन कर्मोंके लिये तू दूसरे पर दोष लगाता है सोई

कर्म तू आपही करता है; इससे होता है कि तू, दूसरे पर दोष लगानेमें, अपनेको दोषी बताता है। हम जानते हैं कि २ ईश्वरका बिचार ऐसे करनेहारोंपर बड़ा ठीक होगा। हे ३ मनुष्य, तू जो ऐसे करनेहारोंपर दोष लगाता है और आपही वेही कर्म करता है, क्या तू यही समझता है कि तू आपही ईश्वरके बिचारसे भाग सकेगा? क्या तू ऐसा अज्ञानी ४ है कि यही नहीं जानता है कि तेरे मन फिरानेको ईश्वरका अनुग्रह दिया जाता है? सो क्यों तू उसके अमित अनुग्रह औ धीर्ज औ बहुकाल सहनेको तुच्छ करता है, और कठोन ५ होके, औ मन न फिरायके, अपनेको उस बड़े दंडके योग्य ठहराता है जो ईश्वरके क्रोधके दिनमें, अर्थात, सच्चे बिचारके दिनमें, दिलाया जायगा? ईश्वर एक एक मनुष्यको, उनके ६ कर्मोंके अनुसार, फल देगा, अर्थात, उन्हीको, जो भले कर्म ७ करके ऐश्वर्य्य औ सन्मान औ अमरत्वको धीर्जसे ढूंढते हैं, अनन्त जीवन देगा; परंतु उन्हीपर, जो बिबाद करके, सत्यको ८ न मानके कुकर्म करते हैं, क्रोध औ कोप होंगे; हां एक एक ९ मनुष्यको, जो बुराई करते हैं, दुःख औ संकट होंगे, पहिले यिहूदीको तब यूनानीको; परंतु उन्होंको, जो भलाई करते १० हैं, ऐश्वर्य्य औ सन्मान औ शान्ती होंगे, पहिले यिहूदीको तब यूनानीको।

और उसीसे यिहूदियों औ दूसरे देशियोंमें कुछ बिशेष न होना।

ईश्वर, बिचार करनेमें, पक्षपात नहीं करेगा। जिस दिनमें ११ ईश्वर, मेरे सुसमाचारके अनुसार, यीशु ख्रीष्टके द्वारासे, मनुष्योंके मनकी गुप्त बातोंका बिचार करेगा, उसी दिनमें, जिन्होंने, व्यवस्थाको न पाके, पाप किया है, वे, बिन व्यवस्थासे, बिनाश १२ किये जायेंगे; परंतु जिन्होंने, व्यवस्थाको पाके, पाप किया है, वे, व्यवस्थाके अनुसार, बिचार किये जायेंगे। व्यवस्था सुननेसे १३ मनुष्य लोग ईश्वरके सन्मुख निष्पापी होंगे, सो नहीं, परंतु जो व्यवस्थाके अनुसार कर्म करते हैं सोई पुण्यवान गिने जायेंगे। वे अन्यदेशी लोग, जो व्यवस्थाको न पाके, अपनी बुद्धिसे १४

व्यवस्थाके अनुसार कर्म करते हैं, सो, व्यवस्थाको न पाके, वे
१५ आपही अपनेयोंको व्यवस्था सा हैं। उनके मन जो हैं सो
भले बुरेको बतानेहारे हैं; और वे आपही बिचार करके
कभी अपनेयोंको दोषी, औ कभी अपनेयोंको निर्दोषी, ठहराते
१६ हैं। इससे वे यह दिखलाते हैं कि व्यवस्थाकी बात जो है सो
उन्होंके मनपर लिखी गई है।

दोषीयोंके औरोंको शिक्षा देनेसे भी कुछ फल न होना।

१७ देख, तू यिहूदी मनुष्य कहलाता है, औ व्यवस्थाको पानेसे
भरोसा रखता है, औ ईश्वरको जाननेसे बड़ाई करता है;
१८ और व्यवस्थाको पायके ईश्वरकी इच्छा क्या है, और भली औ
१९ बुरी बात कौन है, सो जानता है; और अपनेको ऐसा बड़ा
जानता कि तू अपने विषयमें यह कहता है कि मैं अंधोंको
मार्ग दिखानेहारा औ अंधेरेमें रहनेहारोंको उज्याला देने-
२० हारा औ अज्ञानियोंको ज्ञान देनेहारा औ बालकोंको सि-
खावनेहारा हूं, और वही व्यवस्था, जो ज्ञान औ सचाईका
२१ सार है, सो मेरे निकट है। सो तू, जो दूसरेको सिखाता है,
क्यों अपनेको नहीं सिखाता है? तू, जो दूसरेको न चोरी
२२ करनेका उपदेश देता है, क्यों आपही चोरी करता है? तू,
जो दूसरेको व्यभिचार न करना कहता है, क्यों आपही
व्यभिचार करता है? तू, जो मूरतोंको घिनाता है, क्यों आपही
२३ मंदिरोंमें जाके लूट लेता है? तू, जो व्यवस्थाको पानेसे बड़ाई
करता है, क्यों व्यवस्थाको न मानके ईश्वरका नाम बुरा करवाता
२४ है? इसमें यही बात पूरी किई गई है, अर्थात् कि तुम्हारे
द्वारासे, अन्यदेशियोंके बीचमें ईश्वरका नाम बुरा कहा
जाता है।

व्यवस्था पालनेके बिना लक् काटनसे त्राण न होना।

२५ जो तू व्यवस्थाको पालन करे तो खतनेसे कुछ लाभ होता
है परंतु जो व्यवस्थाको पालन न करे तो तेरा खतना अखत-
२६ नासा हुआ है। जो अखतनेके लोग व्यवस्थाको पालन करें
२७ तो क्या उनका अखतना, खतनासा नहीं गिना जायगा? और

जो अन्यदेशी होके खतना नहीं किये गये हैं परंतु व्यवस्थाको पालन करते हैं क्या वे तुझको, जो शास्त्रको पा करके औ खतना हुआ हो करके, व्यवस्थाको न मानता है, दोषी नहीं ठहरावेंगे। जो बाहिरसे यिहूदी है सो यिहूदी नहीं है, २८ और वही खतना, जो शरीरका है, सो खतना नहीं है; परंतु २९ जो भीतरसे यिहूदी है सोई यिहूदी है; और वही खतना जो मनका है (शरीरका नहीं) सोई खतना है। ऐसा मनुष्यका नाम लोगोंके बीचमें बड़ा नहीं परंतु ईश्वरका सन्मुख बड़ा होगा।

३ तीसरा अध्याय।

यिहूदियोंका नाना प्रकारके धर्मोंका अनुष्ठान।

सो तो यिहूदी होनेसे कौनसी भलाई है? औ खतनासे १ क्या फल है? सब प्रकारसे बहुत है, पहिलेमें यह कि यिहूदी २ लोगोंको ईश्वरका शास्त्र सौंपा गया था। जो उन्होंमेंसे किसी ३ किसीने शास्त्रको नहीं माने है तो क्या उन्होंके नामाननेसे ईश्वरकी बात पूरी किई नहीं जायगी? सो तो नहीं, जो ४ सब मनुष्य झूठे होवें तौभी ईश्वर सच्चा रहेगा, जैसा कि यह लिखा है, अर्थात् कि हे परमेश्वर, आप बोलनेमें निर्दोषी, और बिचार करनेमें, जयवंत होंगे। जो हमारे कुकर्मके ५ द्वारासे ईश्वरका सुकर्म प्रकाश होवे तो हम क्या कहें? क्या ईश्वर, दंड देनेमें, (मैं मनुष्योंकी रीतिके अनुसार बोलता हूं) अन्यायी नहीं है? सो तो नहीं, नहीं तो ईश्वर किस रीतिसे ६ जगतका बिचार करेगा?। जो मेरी असत्यताके द्वारासे ७ ईश्वरकी सत्यता प्रकाश हुई और उसकी महिमा अधिक हुई, तो मैं किस लिये अपराधी गिना जाता हूं? इससे क्यों तू ८ नहीं कहता है कि आओ, हम बुराई करें कि उसमेंसे भलाई निकले? कोई कोई हैं जो झूठ करके बोलते हैं कि हम लोग यों कहते हैं; उन्होंका दंड ठीक होगा।

जो व्यवस्था [illegible] न करें उससे उनका त्राण न होगा।

सो तो क्या है। [illegible], जो यिहूदी हैं, और लोगोंसे ९

अच्छे नहीं हैं? तुम तो औरोंसे अच्छे नहीं हो; हमने पहिलेमें कहा है कि यिहूदी औ यूनानी लोग दोनों सबही
१० पापके करनेहारे हैं, जैसा कि यह लिखा है कि कोई
११ निर्दोषी नहीं, एक भी नहीं, कोई समझनेहारा नहीं, कोई
१२ ईश्वरका ढूंढनेहारा नहीं, सबोंने मार्गको छोड़ दिया है, सब ही निकम्मे हैं, और कोई सत् कर्म नहीं करते हैं, एक भी
१३ नहीं; उनका गला खुली ऊई गोर सा है, वे अपनी जीभोंसे झूठ कहते हैं, और उनकी होंठोंके भीतर संपोलियोंका
१४ बिष सा रहता है; उनके मुख स्राप औ कड़वाहटसे भरा
१५ ऊआ है, और उनके पांव लोहू बहानेको चलते हैं; उनके
१६ मार्गोंमें नाश औ क्लेश हैं, वे शान्तिके मार्गको नहीं जानते
१७ हैं, और उनके नैनोंके आगे परमेश्वरका डर नहीं है। सो
१८ हम जानते हैं कि जो कुछ कि व्यवस्था कहती है सो उन
१९ लोगोंसे कहती है जिन्होंने व्यवस्था पाई है कि हर एकका मुख बंद हो जावे, और सब संसारके लोग ईश्वरके सन्मुख दोषी
२० ठहरें। सो व्यवस्थाके पालनेसे कोई प्राणी ईश्वरके सन्मुख पुण्यवान नहीं ठहर सकेगा। जो कुछ कि पाप है सो व्यवस्था के द्वारासे जाना जाता है।

औ व्यवस्थाको एकबार लंघन करें तो उससे त्राण न होगा, परंतु बिश्वास करनेसे त्राण होगा।

२१ वही पुण्य जो व्यवस्थासे बाहिर है, औ ईश्वरसे ठहराया
२२ गया है, सोई अब सबोंको प्रकाश ऊआ है; उसका समाचार भी व्यवस्था औ भविष्यद्वक्ताओंसे दिया गया है; अर्थात्, ईश्वरका वही ठहराया ऊआ पुण्य प्रकाश ऊआ है, जो, यीशु खीष्ट पर बिश्वास करनेके द्वारासे, उन सबोंको मिलता है जो
२३ बिश्वास करते हैं। सब मनुष्य एक सा हैं क्योंकि सबोंने पाप
२४ किया है और ईश्वरके सन्मुख अयोग्य ऊये हैं। सब जो पुण्यवान ठहराये गये हैं सोई उस मुक्तिके द्वारासे, जो यीशु खीष्टके द्वारासे होती है, पुण्यवान सेंतसे ठहराये गये हैं।
२५ ईश्वरने यीशु खीष्टको बलिदान ठहराया है कि वे जो बिश्वास

करते हैं उसके लोहूके द्वारासे मुक्ति पावें। सो इसी प्रकारसे ईश्वर, उन पापोंको क्षमा करनेमें, जो बिना दंडसे आगे किये गये थे, अपने न्यायको दिखाता है; हां, ईश्वर, इसी २६ समयमें, इसी प्रकारसे यह दिखाता है कि वह आपही न्यायी रह सकता है और भी उन्होंको, जो यीशुपर बिश्वास करते हैं, पुण्यवान ठहराने सकता है। सो तो बड़ाई करनेका पंथ २७ कहां है? वह तो बंद किया गया है; किस मार्गसे? क्या कर्मोंके मार्गसे? सो तो नहीं; परंतु बिश्वासके मार्गसे। सो २८ हमने यह निश्चय किया है कि मनुष्य बिश्वासके द्वारासे पुण्य-वान ठहरते हैं, न व्यवस्थाके कर्मोंके द्वारासे। क्या ईश्वर केवल २९ यिहूदियोंका ईश्वर है और अन्यदेशियोंका नहीं? सो तो ३० नहीं, वह अन्यदेशियोंका भी है; क्योंकि वही ईश्वर एकही है जो खतनेके लोगोंको बिश्वाससे, और अखतनेके लोगोंको बिश्वासके द्वारासे, पुण्यवान ठहराता है। इससे क्या हम ३१ बिश्वासके द्वारासे व्यवस्थाको दूर करते हैं? सो तो नहीं, हम तो व्यवस्थाको खड़ा कर देते हैं।

४ चौथा अध्याय।

बिश्वाससे इब्राहीमका पुण्यवान होना।

सो तो हम अपने पिता इब्राहीमके बिषयमें क्या कहेंगे? १ क्या उसने शरीरके कर्मोंसे कुछ पाया कि नहीं? जो इब्राहीम २ कर्मोंके द्वारासे पुण्यवान ठहराया गया था तो उसके निकट बड़ाई करनेका स्थान था परंतु ईश्वरके निकट नहीं। इसके ३ बिषयमें धर्मग्रंथ क्या कहता है? वह यह कहता है कि इब्राहीमने ईश्वर पर बिश्वास किया, और उसका बिश्वास उसको पुण्यसा गिना गया। कर्म करनेहारोंको मजूरी देना जो ४ है सो अनुग्रहसे नहीं होता है, वह न्यायसे होता है; परंतु ५ वही मनुष्य, जो काम न करके, उसीपर, जो पापीको पुण्यवान ठहराता है, बिश्वास करता है, उस मनुष्यका बिश्वास पुण्यसा उसको गिना जाता है। जिस मनुष्यको ईश्वर, बिन कर्मोंसे, ६

पुण्यवान ठहराता है, उस मनुष्यके सुखके बिषयमें दायूद
७ राजा यह कहता है कि धन्य वे हैं जिनके पाप क्षमा किये
८ गये हैं और जिनके अपराध ढांपे गये हैं, हां, धन्य वह
मनुष्य है जिसके पापका लेखा ईश्वर नहीं लेगा।

उसी इब्राहीमका पुण्य खतनेसे नहीं बिश्वाससे होना।

९ यह सुख जो है क्या वह केवल खतनेके लोगोंका है अथवा
अखतनके लोगोंका भी है? हम तो कहते हैं कि इब्राहीमका
१० बिश्वास उसको पुण्यसा गिना गया; कब गिना गया? क्या
खतनेके समयमें अथवा अखतनेके समयमें? खतनेके समयमें
११ नहीं, परंतु अखतनेके समयमें; और उसने खतनेके चिन्ह
पाया कि वह (अर्थात् खतनेका चिन्ह) इसकी छाप सो (अर्थात्
स्मरण सा) हो रहे कि इब्राहीम अखतनेमें होके, बिश्वासके
द्वारासे, पुण्यवान ठहराया गया। इससे इब्राहीम उन सबोंका
पिता सा हुआ जो अखतनेमें बिश्वास करते हैं कि वे भी
१२ उसके समान पुण्यवान गिने जांये; और खतनेके लोगोंके भी
पिता सा हुआ, न केवल उनका जो खतनेके हैं, परंतु उनका
जो बिश्वासके उस मार्गपर चलते हैं जिसपर हमारे पिता
१३ इब्राहीम, अपने अखतनेके समयमें, चलता रहा। इब्राहीमको
औ उसके बंशको यह बाचा, व्यवस्थाके द्वारासे, नहीं हुई कि
तू जगतका अधिकारी होगा; परंतु उस पुण्यके द्वारासे जो
१४ बिश्वास करनेसे होता है। जो व्यवस्थाके द्वारासे लोग अ-
धिकारी हो जावें तो बिश्वास व्यर्थ, औ बाचा निष्फल होता
१५ है। व्यवस्था जो है सो क्रोध जन्माता है; परंतु जहां व्यवस्था
१६ नहीं है वहां आज्ञाका लंघन भी नहीं है। पुण्य जो है सो
बिश्वासके द्वारासे इस लिये हुआ है कि वह अनुग्रहसे होवे;
इसी प्रकारसे सब बिश्वासियोंके ताईं बाचाकी बात पूरी
किई जायगी, न केवल उनके ताईं जो व्यवस्थाके आधीन हैं
परंतु उनके ताईं भी जो इब्राहीमके समान बिश्वास करते हैं,
१७ अर्थात्, वही इब्राहीम जो हम सबोंका पिता है जैसा कि
यह लिखा है कि मैंने तुझे बहुतसे देशोंके लोगोंका पिता

सा ठहराया है। हां इब्राहीम उस ईश्वरके सन्मुख, जिसपर उसने बिश्वास किया, हम सभोंका पिता है, अर्थात्, वही ईश्वर जो मृतकोंको जिलाता है और अवर्त्तमानको बर्त्तमान सा करता है।

बिश्वाससे वही पुण्य हमको भी मिलता।

इब्राहीमने, निराशाकी दशामें होके, आशा करके यह १८ बिश्वास किया कि मैं बहुत देशियोंका पिता हूंगा जैसा कि ईश्वरने मुझसे यह कहा है कि तेरा बंश ऐसा बहुत होगा। १९ वह उसी समयमें सौ बरसका मनुष्य था तौभी उसने, बि-श्वासमें दूर्बल न होके, अपने शरीरको, औ अपनी स्त्री सारा के शरीरको, मृतक सा न जाना; न अबिश्वासके द्वारासे ईश्वर २० की बाचापर संदेह किया परंतु बिश्वासमें बलवान होके उसने २१ ईश्वरकी बड़ाई किई, हां उसने यह पक्का बिश्वास किया कि जो कुछ कि ईश्वरने कहा है सोई पूरा किया जायगा। इसी २२ प्रकारसे उसके बिश्वास उसको पुण्यसा गिना गया। और २३ यही बात, अर्थात् कि उसका बिश्वास उसको पुण्यसा गिना गया, सोई बात, केवल उसके लिये नहीं लिखी गई, परंतु २४ हमोंके लिये भी जिनको बिश्वास पुण्यसा गिना जायगा, हां हमोंके लिये भी जो उसी पर बिश्वास करते हैं जिसने हमारे प्रभु यीशुको मृतकोंमेंसे जिलाया; जो हमारे पापोंके २५ लिये पकड़वाया गया और हमें पुण्यवान ठहरानेको उठाया गया।

५ पांचवां अध्याय।

बिश्वाससे पुण्यवान होके बहुत लाभ होना।

सो तो हम बिश्वासके द्वारासे पुण्यवान ठहराये गये हैं; १ इससे हममें औ ईश्वरमें, अपने प्रभु यीशु खीष्टके द्वारासे, मिलाप हुआ है। यीशुके द्वारासे भी हमने बिश्वास करके २ इस अनुग्रहकी दशामें पहुंचाये गये हैं जिसमें हम अभी हैं; और भी, हम, ईश्वरसे महिमा पानेकी आशा करके, आनन्द

३ करते हैं। और केवल इतना नहीं; परंतु हम दुःखोंके भोगनेमें भी आनन्द करते हैं, यह जानके कि दुःख भोगनेसे धीर्जवंत
४ हो जायेंगे, औ धीर्जवंत होनेसे सच्चे दिखाये जायेंगे, औ सच्चे
५ दिखाये जानेसे आशा कर सकेंगे, और आशा करके लज्जित नहीं होंगे क्योंकि ईश्वरका प्रेम, उस पवित्र आत्माके द्वारासे जो हमको दिया गया है, हमारे मनमें जन्माया गया है।
६ जब हम पापी लोग निरुपाय थे तब खीष्टने, ठहराये हुये समयमें, पापियोंकी सन्ती अपने प्राण (बलिदान सा) चढ़ाया।
७ होने सके कि कोई लोग हैं जो दाता की सन्ती अपने प्राण देवें, हां होने सके कि कोई लोग हैं जो धर्मीकी सन्ती अपने प्राण देवें; परंतु खीष्टने हम पापियोंकी सन्ती अपने प्राण चढ़ाया; इसमें ईश्वरने अपने बड़े प्रेम हमोंके ताईं दिखलाया
८ है। सो तो जो हम यीशुके लोहूके द्वारासे पुण्यवान ठहराये गये हैं तो निश्चय करके, हम, उसके द्वारासे, दंडसे बचेंगे।
९ और जो, हमारी शत्रुताके समयमें, हममें औ ईश्वरमें, उसके
१० पुत्रके मृत्युके द्वारासे, मिलाप हुआ तो निश्चय करके, हम, मित्रताके समयमें, उसके जीवनके द्वारासे त्राण पावेंगे।
११ और केवल इतना नहीं, परंतु हम, अपने प्रभु यीशु खीष्टके द्वारासे, जिसकी करणीसे अब मिलाये गये हैं, ईश्वरमें आनन्द करते हैं।

जैसे आदमसे पाप औ मृत्यु उसी रीतिसे खीष्टसे पुण्य औ परमायु हैं।

१२ एक मनुष्यके द्वारासे पाप, और पापके द्वारासे मृत्यु, संसारमें आई; सो सब मनुष्य, पापी होके, मृत्युके बशमें हुये।
१३ (लिखी हुई) व्यवस्था देनेके समयके आगे पाप जगतमें था; परंतु (आरंभसे अनलिखी हुई व्यवस्था जगतमें थी, क्योंकि) जहां (कोई) व्यवस्था नहीं है वहांही पाप नहीं गिना जाता
१४ है। सो मृत्युने, आदम नामके समयसे, मूसा नामके समयतक, लोगोंको अपने बशमें किया, हां उन्होंको भी बशमें किया जिन्होंने आदमके पापके समान पाप न किया;—आदम जो
१५ है सो आनेहारेका (अर्थात् खीष्टका) नमूना था। फिर, जिस

भावसे पाप है उस भावसे अनुग्रहका दान नहीं है क्योंकि एक मनुष्यके पापके द्वारासे, बहुतेरे मनुष्य मर गये हैं; परंतु ईश्वरके अनुग्रह, अर्थात्, वही बड़ा दान, जो एक मनुष्यके द्वारासे, अर्थात्, यीशु खीष्टके द्वारासे होता है, सो बहुतेरे मनुष्योंको दिया गया है। फिर, जिस भावसे एक मनुष्यके १६ द्वारासे (दंडकी आज्ञा) हुई, उस भावसे अनुग्रहका दान नहीं है; क्योंकि एक पापके द्वारासे दंडकी आज्ञा हुई, परंतु जिन्होंने बहुतसे पाप किये हैं सो (विश्वास करके) अनुग्रहके दानके द्वारासे पुण्यवान ठहराये गये हैं। फिर, जैसा कि एक १७ मनुष्यके पापके द्वारासे, अर्थात्, एक मनुष्यके दोषके द्वारासे, मृत्युने राज किया है तैसा वे, जो उस बड़े अनुग्रहके, अर्थात्, उस बड़े दानके, पानेहारे हैं, जिसके द्वारासे (विश्वासी लोग) पुण्यवान ठहराये जाते हैं, एकके द्वारासे, अर्थात्, यीशु खीष्टके द्वारासे, अमर होके निश्चय राज करेंगे। सो जैसा कि एक १८ मनुष्यके पापके द्वारासे, बहुतेरे मनुष्य दंड भोगनेके योग्य हुये हैं, तैसा एकके पुण्यके द्वारासे, बहुतेरे पुण्यवान ठहराये जाके अमरता पावेंगे क्योंकि जैसा कि एकके नामाननेके १९ द्वारासे, बहुतेरे पापी हो गये, तैसा एकके माननेके द्वारासे, बहुतेरे पुण्यवान ठहराये जायेंगे। (लिखी हुई) व्यवस्थाके २० आनेसे पाप बढ़ गया; परंतु जहां पाप बढ़ गया, वहां अनुग्रह भी बहुत बढ़ गया। सो जैसा कि पापने, मृत्यु कराके, राज २१ किया, तैसा वह अनुग्रह, जो हमारे प्रभु यीशु खीष्टके पुण्यके द्वारासे है, अनन्त जीवन दिलायके राज करेगा।

६ छठवां अध्याय।

यीशु खीष्टसे पुण्य पानेहारोंको पाप कर्ना अनुचित है।

सो तो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते करते रहेंगे कि १ बहुत अनुग्रह दिया जाय? सो तो नहीं; हम जो पापकी २ ओर मर गये हैं, किस रीतिसे उसे करते करते जीते रहेंगे? ३ क्या तुम नहीं जानते हो कि हम जितने लोगोंने यीशु खीष्टमें

डुबकी पाई है सो उसके मरणकी बात बिश्वास करके डुबकी
४ पाई है। हम तो उसके मरणकी बात बिश्वास करके, डुबकीके
द्वारासे, उसके संग गाड़े गये हैं कि जैसाकि ख्रीष्ट, पिताकी
सामर्थ्यके द्वारासे, उठाया गया, तैसे हम भी जीते होते हुये
५ नई भांतिमें चलें। जो हम उसकी मृत्युकी समानतामें किये
गये हैं, तो, निश्चय करके, उसके जी उठने की समानतामें
६ होंगे। यह हम जानते हैं कि हमारा पुराना स्वभाव जो है
७ सो उसके संग क्रुश पर मार डाला गया कि पाप रूप शरीर-
के बिनाश होनेमें हम पापकी सेवा फिर न करें क्योंकि जो
८ मरा है सो पापसे छूटा है। जो हम ख्रीष्टके संग मरें, तो,
९ निश्चय करके, हम उसके संग भी जीयेंगे। हम जानते हैं कि
ख्रीष्ट मृतकोंमेंसे उठके फिर नहीं मरेगा; मृत्यु उसपर फिर
१० राज नहीं करेगा; मरता हुआ, वह पापके हेतुसे एक बार
११ मरा; परंतु जीता होता हुआ, वह ईश्वरके हेतुसे जीता
रहेगा; इसी प्रकारसे तुम भी अपनेयोंके बिषयमें यह समझो
कि हम, पापके हेतुसे, मृतक थे परंतु ईश्वरके हेतुसे, अपने
प्रभु यीशु ख्रीष्टके द्वारासे, जीते हुये हैं।

उससे पुण्यवान लोगोंको पापका दमन, और धर्मका पालन उचित
होना, उसीसे अमर पद पाना।

१२ सो तो पापिष्ठ कामनाओंके कर्म करके तुम, अपने मरे हुये
१३ शरीरमें पापको राज करने न देओ; और अपने अंगोंको अ-
धर्मीरूप अस्त्र करके अपनेयोंको पापकी सेवा करनेको न सोंपो;
परंतु अपनेयोंको, जैसाकि मृतकोंमेंसे जीते होते हुये, ईश्वरको
देओ; अपने अंगोंको धर्मीरूप अस्त्र करके अपनेयोंको ईश्वर
१४ को देओ। पाप तुमपर राज करने नहीं पावेगा क्योंकि तुम
१५ व्यवस्थाके अधीन नहीं, परंतु अनुग्रहके अधीन हो। सो हम
क्या कहें? क्या हम इस लिये पाप करते करते रहेंगे कि हम
व्यवस्थाके अधीन नहीं, परंतु अनुग्रहके अधीन हैं? सो तो
१६ नहीं; क्या तुम नहीं जानते हो कि जिसको तुम अपनेयोंको
देते हो कि सेवा करो, तो उसीके सेवक हो, क्या पापके,

जिससे मृत्यु होता है, क्या (बिश्वासके) माननेके, जिससे पुण्य होता है। ईश्वरको धन्य हो कि तुम, जो आगे पापके दास १७ थे, मनसे उस उपदेशको माना है, जिसके सांचेमें तुम ढाले गये हो, और पापसे छूटके धर्मके दास ऊये हो। मैं तुम्हारे १८ मनकी दुर्बलताके हेतुसे, ये बातें कहता हूं, जो मनुष्योंकी रीतों १९ से निकाली गई हैं। जैसेकि तुमने अपने अंगोंको दास करके दे दिया है कि वे असुच और कुकर्म करें, तैसे अब अपने अंगोंको दास करके दे देओ, कि वे धर्म करके पबित्रताका फल लावें। जब तुम पापके दास थे, तुम धर्मसे छूटे थे; परंतु २० उस समय उन कर्मोंसे, जिनके लिये तुम अभी लज्जित हो, २१ कौनसा फल पाया? क्योंकि उन सब कर्मोंका फल जो है सो मृत्यु है; परंतु पापसे छूटके, ईश्वरके दास होनेसे, अब पबित्र- २२ ताका फल लाते हो; और पीछलेमें अनन्त जीवन पाओगे; क्योंकि पापका फल मृत्यु है, परंतु ईश्वरका दान, हमारे प्रभु २३ यीशु ख्रीष्टके द्वारासे, अनन्त जीवन है।

७ सातवां अध्याय।

बिश्वासी लोगोंकी व्यवस्थासे मुक्त होना ख्रीष्टके संग बिवाह होना।

हे भाईयो, मैं तुमसे, जो व्यवस्था की बात जानते हैं, अब १ कहता हूं; क्या तुम नहीं जानते हो कि जिस समयतक मनुष्य जीतेजी रहते हैं, उस समय तक व्यवस्था उसपर राज करता है? जब लग स्वामी जीते जी रहता है तबलग बिवा- २ ही स्त्री उससे बंधी रहती है; परंतु जो स्वामी मर जाय तो स्त्री स्वामीसे छूट जाती है। जो स्त्री, स्वामी जीते जी रहते, ३ दूसरे पुरुषकी होवे तो वह व्यभिचारिणी गिनी जायगी; परंतु जो उसका स्वामी मर जाय तो वह उससे छूटी है; जो दूसरे पुरुषसे बिवाह करे तो व्यभिचारिणी नहीं होती है। सो, हे मेरे भाईयो, तुम भी, यीशु ख्रीष्टके शरीरके ४ द्वारासे, व्यवस्थाकी ओर मृतक ऊये हो कि तुम दूसरेके होवो अर्थात उसीके जो मृतकोंमेंसे जी उठा है कि हम ईश्वरके

५ नामपर फल लावें। जब हम संसारिक थे तब पापोंकी कामना हमारे अंगोंमें ऐसा कराती रहे कि हम मृत्युका फल लायें
६ परंतु अब मृतक होते हुये उस व्यवस्थासे, जिसमें हम बंधे थे, ऐसे छूट गये हैं, कि हम पुरानी आज्ञाके अनुसार नहीं परंतु नये मनके अनुसार ईश्वरकी सेवा करते रहते हैं।

व्यवस्थाकी मंद न होना किंतु पवित्र औ न्याय औ हितदायक होना।

७ सो हम क्या कहें? क्या व्यवस्था पाप कराती है? सो तो नहीं; जो व्यवस्था न होती तो मैं नहीं जानता कि पाप क्या है; जो व्यवस्था न कहती कि लोभ न कर, तो मैं नहीं जानता
८ कि लोभ क्या है; परंतु पापने अवसर पाके मुझमें, आज्ञाके द्वारासे, सब प्रकारकी कामना उत्पन्न किई क्योंकि बिना
९ व्यवस्था तो पाप मरा है। जब मैं व्यवस्थाको न समझता था तब मैं जीता था, परंतु आज्ञाके आनेसे पाप फिर जी उठा
१० और मैं मर गया। सो वही आज्ञा जो जीवन दिलवानेको
११ दिई गई थी मैंने मृत्यु जन्मानेहारी पाई। क्योंकि पापने अवसर पाके, आज्ञाके द्वारासे, मुझे भुलाया और उसके
१२ द्वारासे मुझे मार डाला। सो तो व्यवस्था पवित्र है, और आज्ञा पवित्र औ सच्ची औ हितदायक है।

व्यवस्थाके लंघन करनेसे पाप हुआ औ जो कोई उसीपापको घिन करे तो बह व्यवस्था जो उत्तम है, उसे स्वीकार करे उसका बिवरण।

१३ जो हितदायक है क्या वही मुझको मृत्यु जन्मानेहारा है? सो तो नहीं; परंतु पाप जो है सो हितदायक आज्ञाके द्वारासे, मुझमें (कामना) कराके, मुझको मृत्यु जन्माया कि वह (अर्थात् पाप) अपने बुरे स्वभाव दिखावे, हां कि पाप, आज्ञाके
१४ द्वारासे, बड़ा पापिष्ठ दिखाया जावे। हम जानते हैं कि व्यवस्था जो है सो परमार्थिक है, परंतु मैं संसारिक हूं और
१५ पापके हाथमें बेचा गया हूं, क्योंकि जो कर्म मैं करता हूं सो मुझे नहीं भावता है; और वही कर्म जो मैं करने नहीं चाहता हूं सो मैं करता हूं, हां वही कर्म जो मैं घिनाता हूं सो मैं

करता हूं। सो जो मैं वही कर्म करऊं जो मैं करने न चाहता हूं १६
तो मैं यह मान लेता हूं कि व्यवस्था उत्तम है। सो तो मैं आपही १७
वही कर्म नहीं करता हूं, परंतु पाप, जो मुझमें रहता है,
सोई करता है। मैं जानता हूं कि मुझमें अर्थात मेरे शरीर- १८
में कुछ परमार्थिक नहीं रहता है क्योंकि करनेकी इच्छा
तो मेरी है परंतु करनेकी सामर्थ्य तो मेरी नहीं है। जो १९
परमार्थिक कर्म मैं करने चाहता हूं, सो मैं नहीं करता हूं, हां
वही बुरा कर्म जो मैं करने नहीं चाहता हूं, सोई मैं करता
हूं। सो तो जो मैं वही कर्म करऊं जो मैं करने नहीं चाहता हूं, २०
तो मैं करनेहारा नहीं, परंतु पाप जो मुझमें रहता है सोई
करनेहारा है। सो मेरी दशा यही है कि जब मैं भला २१
कर्म करने चाहता हूं तब बुराई मेरे निकट है। मैं नये २२
स्वभावसे ईश्वरकी व्यवस्थासे प्रसन्न हूं, परंतु मैं अपने शरीरमें २३
एक और स्वभावको देखता हूं जो मेरे भले स्वभावसे लड़ता
है; वह मुझे उस बुरे स्वभावके वशमें करता है जो मेरे
अंगोंमें है। हाय हाय, मैं अभागा मनुष्य हूं; कौन मुझे इस २४
मरे हुये शरीरसे छुड़ावेगा? मैं यीशु ख्रीष्टके द्वारासे, जो २५
हमारे प्रभु है, ईश्वरका धन्यवाद करता हूं। सो तो मैं अपने
सुस्वभावसे ईश्वरकी व्यवस्थाको मानता हूं, परंतु अपने कु-
स्वभावसे पापकी व्यवस्थाको मानता हूं।

८ आठवां अध्याय।

ख्रीष्टके विश्वासियोंका दंडसे छुटना औ धर्मका आचरण कर्ना।

सो तो उनपर अब दंडकी आज्ञा नहीं है जो ख्रीष्ट यीशुमें १
होके कुस्वभावके अनुसार नहीं, परंतु आत्माके अनुसार चलते
हैं। क्योंकि वही व्यवस्था जो जीवनदायक औ परमार्थिक है २
उसने, यीशु ख्रीष्टके द्वारासे, मुझे पाप औ मृत्युदायक व्यवस्थासे
छुड़ाया है क्योंकि वही कर्म जो, स्वभावकी दुर्बलताके कारण- ३
से, व्यवस्थासे नहीं हो सकता था, सोई ईश्वरने अपने पुत्रको,
पापियोंकी समानतामें भेजके, समाप्त किया; उसने (अर्थात ४

पुत्रने) बलिदान होके स्वभावका पाप नष्ट किया, इससे व्यवस्थाकी पूर्णता जो है सो हममें, जो कुस्वभावके अनुसार नहीं, परंतु पवित्र आत्माके अनुसार चलते हैं, उत्पन्न हुआ
५ है। जो संसारीक हैं उनके मन संसारके वस्तुओंपर लगते हैं, परंतु जो परमार्थिक हैं उनके मन परमार्थिके वस्तुओंपर
६ लगते हैं। संसारिक वस्तुओंपर मन लगाना सो मृत्यु है, परंतु परमार्थिके वस्तुओंपर मन लगाना सो जीवन औ शांतिदायक है। संसारके वस्तुओंपर मन लगाना सो ईश्वरकी
७ ओर बैर करना है. क्योंकि ऐसा मन, न ईश्वरकी व्यवस्थाका
८ अधीन है, और न हो सकता है। इसलिये जो कोई संसारिक
९ हैं सो ईश्वरको प्रसन्न नहीं कर सकते हैं। जो ईश्वरका आत्मा तुममें बास करे तो तुम संसारिक नहीं परंतु परमार्थिक हो; परंतु जिस किसीको खीष्टका आत्मा न मिले
१० वह खीष्टका नहीं है। जो खीष्ट तुममें होय तो शरीर जो
११ है सो पापके कारणसे मरेगा, सच, परंतु आत्मा जो है सो पुण्यके कारणसे जीवेगा। जो उसीका आत्मा, जिसने यीसुको मृतकोंमेंसे उठाया, तुममें बास करे तो वह, जिसने खीष्टको मृतकोंमेंसे उठाया, अपने उस आत्माके करनीसे, जो तुममें बास करता है, तुम्हारे मरे हुये शरीरोंको जीते करेगा।

औ ईश्वरके पुत्र होनेकी औ स्वर्गीय सुख पानेकी अपेक्षा करनी,
औ इसके लिये उससे नियुक्त होना।

१२ सो, हे भाईयो, हम शरीरके अधीन ऐसे नहीं हैं कि शरीर
१३ के कामनाओंके अनुसार चलें; जो तुम शरीरकी कामनाओंके अनुसार चलो तो मरोगे, परंतु जो पवित्र आत्माकी करनीसे
१४ शरीरकी कामनाओंको बिनाश करो तो जीओगे, क्योंकि जितने लोग ईश्वरके आत्माकी करनीसे चलाये जाते हैं वे ईश्वरके
१५ सन्तान हैं। तुमने दास सा भय खानेहारा स्वभाव फिर नहीं पाया है, परंतु लेपालकका स्वभाव पाया है, जिसकी करनी
१६ से हम यह पुकारते हैं कि हे अब्बा, अर्थात, हे पिता। पवित्र आत्मा आपही भी हमारे आत्माके संग यह साक्षी देता है कि

हम आपही ईश्वरके सन्तान हैं; सो जो हम ईश्वरके सन्तान १७
हैं तो अधिकारी भी हैं, अर्थात, ईश्वरकी बस्तुओंकी अधिकारी
औ खीष्टके संगी अधिकारी हैं; और जो हम उसके संग दुःखके
भागी हैं तो उसके स्वर्गीय सुखके भी भागी होवेंगे। मैं निश्चय १८
जानता हूं कि इसी समयके दुःख जो है सो उस ऐश्वर्यके
इतना बड़ा नहीं है जो हमपर प्रकाश किया जायगा। सब १९
प्राणी, भरोसा करके, ईश्वरके सन्तानोंका ऐश्वर्यकी प्रगटताकी
बाट जोहते हैं। सब प्राणी बुराईके अधीन किये गये हैं, २०
अपनी इच्छासे नहीं, परंतु उसके द्वारासे जिसने उन्हें अधीन
किया है। सो सब प्राणी इसकी बाट जोहते हैं कि हम आपही २१
भी बुराईके बंधनसे छुट्टी पायके ईश्वरके सन्तानोंकी ऐश्वर्य-
वंत मुक्ति सी मुक्ति पावेंगे। हम जानते हैं कि अबतक सब २२
प्राणी आह मारते हैं औ दुःखमें होते हैं; और केवल वेही २३
नहीं, परंतु हमभी जिन्होंने पवित्र आत्माके पहिले फल पाये
हैं, हां, हमभी लेपालक पदकी, अर्थात, अपने शरीरोंकी
मुक्तिकी, बाट जोहते ऊये, अपनेयोंमें आह मारते हैं। हम २४
बाट जोहके बच जाते हैं; परंतु जो कुछ कि हम देखते हैं
सो बाट जोही ऊई बस्तु नहीं है क्योंकि जो कुछ कि कोई
देखता है तो क्योंकर वह उसकी बाट जोहता है? परंतु जो २५
हम उस बस्तुकी बाट जोहें जिसको नहीं देखते हैं तो हम
धीरज करके उसकी बाट जोहते हैं। इसरीति पवित्र आत्मा २६
भी हमारी दुर्बलतामें हमारी सहायता करता है क्योंकि जो
कुछ कि प्रार्थना करनेमें मांगने चाहिये सो हम नहीं जानते
हैं परंतु पवित्र आत्मा आपही अनबोल आहें करायके हमों-
के लिये प्रार्थना करता है। और वही जो अंतरजामी है २७
सोई जानता है कि पवित्र आत्मा क्या मांगता है क्योंकि पवित्र
आत्मा ईश्वरकी इच्छाके अनुसार पवित्र लोगोंके लिये प्रार्थना २८
करता है। औ हम जानते हैं कि ये लोग जो ईश्वरको प्यार
करते हैं औ उसकी इच्छाके अनुसार बुलाये गये हैं, उन्होंके
लिये सब कुछ मिलके भलाई उत्पन्न करता है क्योंकि जिनको २९

ईश्वरने आगेसे जाना उन्हें भी उसने ठहराया कि वे उसके पुत्रकी समानतामें किये जावें, जिसतें पुत्र बहुत भाईयोंके
३० बीचमें पहिलौटा होवे। औ जिनको उसने ठहराया उसने उन्हें भी बुलाया; औ जिन्हें उसने बुलाया उसने उन्हें भी पुण्यवान गिना; औ जिनको उसने पुण्यवान गिना उन्हें भी उसने बिभवके अधिकारी किया।

औ खीष्टसे लाभ औ जय होनी।

३१ सो तो इन बातोंके बिषयमें हम क्या कहें? जो ईश्वर
३२ हमारा मित्र हो तो हमारा बैरी कौन हो सकेगा? जिसने अपने पुत्रको न बचके हम सबोंकी सन्ती उसको दे दिया, क्या
३३ उसने अनुग्रह करके हमको उसके संग सब कुछ नहीं देगा? कौन वही है जो ईश्वरके प्यारे लोगोंपर दोष लगा सकेगा?
३४ क्या ईश्वर ऐसा करेगा जो उनको पुण्यवान गिनता है? कौन वही है जो उनको दंड देनेकी आज्ञा देगा? क्या खीष्ट ऐसा करेगा जो मर गया, हां, जो जी उठा, और ईश्वरकी दहिनी
३५ ओर रहके हमारे लिये प्रार्थना करता है? कौन वही है जो हमको खीष्टके प्रेमसे अलग करेगा? क्या क्लेश क्या शोक क्या उपद्रव क्या काल क्या नंगापन क्या बिपत क्या खड्ग ऐसा
३६ कर सकेगा? (सो नहीं; हमारी दशा जो है सो) ऐसा जैसाकि लिखा है अर्थात कि हम ईश्वरके लिये दिन भर मार डाले जाते हैं, हां, हम उन भेड़ोंकी नाईं, जो मार डाले
३७ जानेपर हैं, गिने जाते हैं; तौभी हम इन सबोंसे, उसके
३८ द्वारासे जिसने हमको प्यार किया है, जैवंत हुये हैं; क्योंकि मैं ठीक जानता हूं कि न मरना न जीना, न दूत न प्रधान
३९ न अधिकारी, न बर्तमान न भविष्यत, न उंचा पद न नीचा पद, न और कोई सिरजी हुई बस्तु, हमको ईश्वरके उस प्रेमसे, जो हमारे प्रभु यीसु खीष्टमें है, अलग कर सकेगा।

९ नवां अध्याय।

यिहूदियोंके लिये पौलके मनको ताप।

मैं खीष्टका नाम लेके यह कहता हूं, झूठ नहीं बोलता, मेरा १
मन भी पवित्र आत्माकी करणीसे साक्षी देता है अर्थात कि २
मैं बड़ा दुःखी हूं और मेरा मन सदा शोकित है, हां मैं ३
चाह सकता हूं कि मैं अपने जाति भाइयोंकी सन्ती खीष्टसे
नाश किया जानेको ठहराया जाता। वे इस्रायेली औ ईश्वर- ४
के लेपालक हैं, उनके अधिकारमें महिमा औ नियम औ
व्यवस्था औ महामंदिर औ प्रतिज्ञा हैं, पित्रलोग भी उनके ५
हैं, और उनमेंसे, शरीरके अनुसार, खीष्ट निकला, जो सर्वदा
सबोंके ऊपर सच्चिदानंद ईश्वर है, आमीन।

इब्राहीमके सन्तानोंके अनुग्रहीत न होना।

यह ऐसा नहीं है कि ईश्वरकी बात निष्फल ऊई है क्योंकि ६
सबही जो इस्रायेलके वंशमेंसे हैं सोई इस्रायेली नहीं हैं।
सब जो इब्राहीमके सन्तान थे सो सन्तान नहीं गिने गये थे ७
क्योंकि यह लिखा गया कि जो इसहाक नामसे उत्पन्न होते हैं
सोई तेरे वंश कहलावेंगे; सो, सब जो इब्राहीमसे उत्पन्न ८
ऊये थे, वे सब ईश्वरके सन्तान नहीं गिने गये थे; परंतु वे जो
प्रतिज्ञाके अनुसार उत्पन्न ऊये थे, सोई सन्तान गिने गये थे;
क्योंकि प्रतिज्ञाकी बात यही थी कि मैं ठहराये ऊये समयमें ९
आऊंगा और साराको पुत्र होगा। और केवल इतना नहीं १०
परंतु रिबिका नाम स्त्री जो थी सो एकसे, अर्थात हमारे
पित्र इसहाकसे, गर्भवंती ऊई; जब उसके दोनों बालक जन्मे ११
न थे, और न भला न बुरा किया था, तब यह कहा १२
गया था कि बड़ा जो है सो छोटेकी सेवा करेगा; यह
इसलिये ऊआ कि ईश्वरकी यही इच्छा ठहराई जाये कि १३
अनुग्रह जो है सो कर्मोंके द्वारासे नहीं परंतु बुलानेहारेके
द्वारासे होता है; सो यह लिखा है कि मैंने याकूब नामको
प्रिय औ एसौ नामको अप्रिय जाना है।

कर्मसे अनुग्रह न होना किन्तु ईश्वरको इच्छानुसारसे होना उसका कथन।

१४ सो तो हम क्या कहें? क्या ईश्वर अन्यायी है? सो तो
१५ नहीं; क्योंकि उसने आपही मूसासे यह कहा कि जिसपर मैं अनुग्रह करने चाहता हूं उसीपर अनुग्रह करूंगा, और जिसपर मैं दया करने चाहता हूं उसीपर दया करूंगा।
१६ सो तो अनुग्रह जो है वह न मनुष्यकी इच्छासे है, न मनुष्यके
१७ दौड़नेसे है, परंतु ईश्वरकी दया से होता है। फिरौण राजाके बिषयमें धर्म पुस्तकमें यही बात लिखी है कि मैंने इसकारण से तुझे स्थापन किया है कि मैं तेरे द्वारासे अपने प्राक्रम दिखाऊं और कि मेरा नाम समस्त जगतमें प्रसिद्ध हो जावे।
१८ सो तो जिसपर ईश्वर अनुग्रह करने चाहता है उसीपर वह अनुग्रह करता है, और जिसको कठोर करने चाहता है उसीको वह कठोर करता है।

कुम्हारके दृष्टान्तसे विवाद कर्नेहारोंका उत्तर देना और ईश्वरका न्याय प्रकाश कर्ना।

१९ सो तो तू मुझसे यह कहेगा कि ईश्वर क्यों अबतक दोष
२० लगाता है? किसने उसकी इच्छाका सामना किया है? हे मनुष्य, तू कौन है जो ईश्वरसे बिबाद करता है? क्या बनाई हुई वस्तु जो है अपने बनावनेहारेसे कहेगा कि तू क्यों मुझे
२१ ऐसा बनाया है? क्या कुम्हार मिट्टीका इतना अधिकार नहीं रखता है कि एकही पिंडसे एक पात्र उत्तम औ दूसरा पात्र
२२ अधम बनावे? जो ईश्वरने अपने क्रोध प्रकाश करनेको औ अपने प्राक्रम प्रगट करनेको क्रोधके पात्रोंको, जो बिनाश किये जानेको तैयार हैं, बहुत कालतक धीरज करके सहा है;
२३ और जो उसने अपनी बड़ी महिमा प्रगट करनेको, उन दया पावनेहारे पात्रोंपर, जो महिमा पानेको उसने तैयार
२४ किया है, अनुग्रह किया है अर्थात हमपर जिन्हें उसने केवल यिहूदियोंमेंसे नहीं परंतु अन्यदेशियोंसे भी बुलाया
२५ है, (तो क्या कहेंगे?) होशेय भविष्यदक्ताके ग्रंथमें यही बात

लिखी है कि मैं उनको, जो मेरे लोग नहीं थे, अपने लोग, और उनको, जो मेरी पियारी नहीं थी, मेरी पियारी कहूंगा; और जिस स्थानमें यह कहा गया था कि तुम मेरे लोग नहीं २६ हो उस स्थानमें अमर ईश्वरके सन्तान तुम कहलाओगे। यिशायिय भविष्यद्वक्ताभी इस्रायली लोगोंके बिषयमें यह २७ प्रचार करता है कि जौ इस्रायली लोगोंकी गिनती जो है सो समुद्रकी बालूकी नाईं होय तौभी केवल थोड़ा बच जायगा; क्योंकि प्रभु उसी बातको, जो उसने न्याय करके ठहराई है, २८ सो पूरी करेगा, हां प्रभु उसी बातको, जो उसने देशके बिषयमें ठहराई है सो पूरी करेगा। और जैसा यिशायियने २९ आगम करके यह कहा कि जौ सेनाओंका प्रभु हममेंसे किसी किसीको न रख छोड़ता तो सिदोम औ आमोरा नगरोंकी दशाकी नाईं हमारी दशा भी होती। सो तो हम क्या कहें? ३० अन्यदेशी लोगोंने पुण्यका खोज न करके पुण्य पाया है अर्थात वही पुण्य जो बिश्वासके द्वारासे होता है परंतु ३१ इस्रायली लोगोंने उस पुण्यका खोज करके, जो व्यवस्था पालन करनेके द्वारासे होता है, व्यवस्था पालन करनेका पुण्य नहीं पाया है। इसका क्या कारण है? उन्होंने बिश्वासके ३२ द्वारासे नहीं परंतु व्यवस्थाके कर्मोंके द्वारासे पुण्यका खोज किया क्योंकि उन्होंने ठोकरके पाथरसे ठोकर खाई जैसाकि ३३ लिखा है कि देखो, मैं सियोन नगरमें ठोकरका पाथर अर्थात धक्काकी चटान रखता हूं; परंतु जो कोई उसपर बिश्वास करता है सो लज्जित न होगा।

१० दशवां अध्याय।

व्यवस्था यिहूदीय लोगोंको त्राणका नहीं मिलना केवल बिश्वाससे त्राण पाना।

हे भाईयो, इस्रायली लोगोंके बिषयमें मेरे मनको चाह १ और ईश्वरके निकट मेरी प्रार्थनाकी बातें येही हैं कि वे त्राण पावें। उनके बिषयमें मैं यही साक्षी देता हूं कि वे मनसे २

३ ईश्वरके पीछे जाते हैं परंतु ज्ञानसे नहीं; क्योंकि वे उस पुण्यको, जो ईश्वरसे ठहराया गया है, न जानके, और अपने पुण्यको स्थापन करने चाहके, ईश्वरके ठहराये हुये पुण्यके ४ अधीन नहीं हुये हैं। खीष्ट जो है सोई उन सभोंके ताईं, जो बिश्वास करते हैं, पुण्य देनेको, व्यवस्थाको पूरी करनेहारा है। ५ मूसा उस पुण्यके बिषयमें, जो व्यवस्थाके पालन करनेके द्वारासे होता है, यों कहता है कि वही मनुष्य जो आज्ञाओंको ६ मानता है सोई आज्ञाओंके द्वारासे बच जायगा। परंतु वही पुण्य जो बिश्वासके द्वारासे होता है यों कहता है कि अपने मनमें मत कह कि कौन स्वर्गपर चढ़ेगा अर्थात कौन खीष्टको ७ उतारेगा? अथवा कौन गहिरापेमें उतरेगा अर्थात कौन ८ खीष्टको मृतकोंमेंसे उठावेगा? परंतु वह क्या कहता? वह यह कहता है कि बात तुम्हारे निकट है हां तुम्हारे मुंहमें और तुम्हारे मनमें है, अर्थात बिश्वासकी वही बात जो ९ हम प्रचार करते हैं। जो तू अपने मुंहसे मान लेवे कि यीशु जो है सो प्रभु है, और अपने मनसे बिश्वास करे कि ईश्वर-१० ने उसको मृतकोंमेंसे उठाया है तो बच जायगा। क्योंकि जो मनसे बिश्वास करता है और मुंहसे मान लेता है सो त्राण ११ पाता है; इसके बिषयमें धर्म पुस्तकमें यही बात लिखी है कि जो कोई उसपर बिश्वास करता है सो लज्जित नहीं होगा। १२ यिहूदी और यूनानी लोग दोनों एकसा है, और प्रभु सभोंके ऊपर होके उन सभोंको, जो उससे मांगते हैं, धन देता है। १३ इस लिये जो कोई प्रभुका नाम लेके प्रार्थना करेगा सो त्राण पावेगा।

बिश्वास करनेसे दूसरे लोगोंका त्राण पाना औ अबिश्वाससे यिहूदीयोंको त्राणका न पाना।

१४ जिसपर उन्होंने बिश्वास न किया है तो उसके नाम लेके क्योंकर प्रार्थना करेंगे? और जिसकी बात उन्होंने नहीं सुनी है तो उसपर वे क्योंकर बिश्वास करेंगे? और जो कोई १५ प्रचार न करे तो वे क्योंकर सुनेंगे? और जो कोई प्रचार

करनेहारे न भेजे जावें तो क्योंकर प्रचार करेंगे? जैसाकि यह लिखा है कि जो मिलापका सुसमाचार सुनाते हैं और जो भली बस्तुओंकी बात प्रचार करते हैं, उनके पांव कैसे धन हैं। परंतु बड़तेरोंने सुसमाचारकी बात न मानी है १६ क्योंकि यिशायिय कहता है कि हे प्रभु, किसने हमारी बात पर बिश्वास किया है? सो तो सुननेसे बिश्वास होता है १७ हां ईश्वरकी बात सुननेसे। मैं तो कहता हूं कि क्या उन्होंने १८ नहीं सुना है? हां उन्होंने सुना है क्योंकि यह लिखा है कि उनका उपदेश सब देशोंमें और उनकी बातें जगतको अन्त-तक निकल गई हैं। फिर मैं कहता हूं कि क्या इस्रायली लोगों १९ ने न समझा है? हां उन्होंने समझा है क्योंकि पहिलेमें मूसाने यही बात कही कि ईश्वर उन्होंके द्वारासे, जो छोटी जाति है, तुम्हें ईर्षा उत्पन्न कराऊंगा, और मूर्ख लोगोंके द्वारासे तुम्हें क्रोधी करेगा। यिशायिय भी अति साहससे यह कहता है कि २० जिन्होंने ईश्वरका खोज न किया उन्होंसे वह पाया गया है, और उन्होंपर ईश्वरने अपनेको प्रकाश किया जिन्होंने उसे न चाहा। परंतु वह इस्रायली लोगोंके बिषयमें यह कहता है २१ ईश्वरने दिन भर अपने हाथ आज्ञा न माननेहारे औ बिबाद करनेहारे लोगोंकी ओर बढ़ाये हैं।

११ एग्यारहवां अध्याय।

सब इस्रायेल् लोगोंका अग्राह्य होना।

सो तो मैं यह कहता हूं कि क्या ईश्वरने अपने लोगोंको १ दूर किया है? सो तो नहीं; क्योंकि मैं जो हूं सो इस्रायली, औ इब्राहीमके वंशमेंसे, और बिन्यामीनके घरानेमेंसे हूं। ईश्वरने अपने लोगोंको, जिन्हें उसने आगेसे पहचाना, दूर नहीं किया है। क्या तुम नहीं जानते हो कि एलिय भवि- २ ष्यद्वक्ताके बिषयमें, धर्मपुस्तकमें, क्या लिखा है? यह लिखा है कि उसने इस्रायली लोगोंपर बिबाद करके ये बातें कहीं कि हे प्रभु, उन्होंने आपके भविष्यद्वक्ताओंको मार डाला है, और ३

आपकी यज्ञबेदियोंको ढा दिया है, और मैं अकेला बच रहता
४ हूं, और वे मुझे मार डालने चाहते हैं; परंतु ईश्वरने उत्तर
देके उसको यह कहा कि मैंने अपने लिये सात सहस्र मनु-
ष्योंको रख छोड़ा है, जिन्होंने बाल नाम देवताके सन्मुख घुटने
५ नहीं टेका है। ऐसाही भी इसी समयमें कोई कोई हैं जो
६ अनुग्रहके पानेहारे ठहराये गये हैं। जो यह अनुग्रहसे होता
है तो कर्मोंसे नहीं होने सकता है, नहीं तो, अनुग्रहं जो
है सो अनुग्रह नहीं है; परंतु जो यह कर्मोंसे होता
है तो अनुग्रहसे नहीं होने सकता है, नहीं तो, कर्म जो
है सो कर्म नहीं है।

अमनोनीत लोगोंका अग्राह्य होना।

७ सो तो क्या है? जो कुछ कि इस्रायली लोगोंने ढूंढा है सो
नहीं मिला है, तौभी पियारे लोगोंको मिला है, और और
८ इस्रायली लोग कठोर ऊये हैं, जैसा कि यह लिखा है कि
ईश्वरने उन्हें यहांतक छोड़ दिया है कि आजके दिनतक
उनके मन अचेत, और उनके नेत्र बंद, और उनके कान फुटे
९ रहते हैं। दाऊद राजा भी यह कहता है कि सब कुछ
कि उनके है सो उनको जाल सा औ फंदा सा औ ठोकर सा
१० औ दंड सा हो जायगा और उनके नेत्र ऐसे बंद हो जायंगे
कि वे न देखेंगे, और अपनी पीठको सदा झुकाय रखेंगे।

उनके गिरनेसे दूसरे लोगोंका परित्राण होना।

११ सो तो मैं यह पूछता हूं कि क्या इस्रायली लोग ठोकर खाय
के ऐसे गिरे हैं कि फिर न उठें? सो तो नहीं; परंतु उनके
बड़े पापके द्वारासे अन्यदेशीय लोगोंको त्राण मिला है जिससे
१२ वे उनको ईर्षा उत्पन्न करावें। सो तो जो उनके बड़े पापके
द्वारासे संसारको धन मिलता है और उनके दूर किये
जानेके द्वारासे अन्यदेशी लोग संपत्त पाते हैं तो उनके ग्रहण
१३ किये जानेके द्वारासे कितने और पावेंगे? हे अन्यदेशी लोगो,
मैं तुमसे ये बातें कहता हूं क्योंकि मैं तुम्हारे निकट भेजा गया
१४ हूं; मैं अपने प्रेरित पदकी बड़ाई इस लिये करता हूं कि मैं

किसी भांतिसे अपने देशके लोगोंको ईर्खा उत्पन्न कराऊं, और उनमेंसे किसी किसीको बचवाऊं। जो उनके दूर किये १५ जानेके द्वारासे संसारको ईश्वरके संग मिलाप हुआ है तो उनके ग्रहण किये जाने के द्वारासे क्या होगा? जैसाकि मृतकोंमेंसे जी उठनेके द्वारासे होता है तैसाही होगा। जो पहिले फल पवित्र थे तो सब फल भी पवित्र होंगे; १६ और जो जड़ पवित्र थी तो डालियां भी पवित्र होंगीं। जो १७ कोई कोई डालियां काट डालीं गईं हैं और तू जो जंगली जैतूनकी डाली थी, उनके स्थानोंमें लगाया गया है और जैतून की जड़ औ रससे कुछ पाता है तो काट डाली हुई डालियोंपर अभिमान मत कर; जो तू अभिमान करे तो चेत कर १८ कि तू जड़ का संभालनेहारा नहीं है परंतु जड़ तेरी संभालनेहारी है। क्या तू यह कहता है कि डालियां जो हैं सो काट १९ डालीं गईं है कि मैं उनके स्थानोंमें लगाया जाऊं? सच, वे २० अविश्वासके द्वारासे काट डालीं गईं हैं और तू विश्वासके द्वारासे रहता है; अभिमान न कर, भयमान हो; जो ईश्वरने २१ पहिली डालियोंको न बचाया, तो, क्या जाने, तुझे भी न बचावेगा। देखो, ईश्वरकी दया औ कठोरता कैसी हैं; उन्होंपर २२ जो गिरे हैं कठोरता, और तुझपर दया; जो तू उसकी दयामें रहे तो भला होगा, नहीं तो, तू भी काट डाला जायगा।

दूसरे देशीयोंका अहंकार करना उचित न होना औ न्याय औ दयाके लिये ईश्वरका धन्यबाद करना उचित होना।

जो वे भी अविश्वासी न रहें तो फिर लगाये जायेंगे; २३ क्योंकि ईश्वर उन्हें फिर लगाने सकता है। जो तू जंगली २४ जैतूनसे काटा गया है और सच्चे जैतूनपर लगाया गया है तो कितने अधिक वे, जो सच्चे जैतूनके हैं, अपने जैतूनपर फिर लगाये जायेंगे। हे भाईयो, मैं नहीं चाहता हूं कि तुम इस २५ भेदसे अनजान रहो, न होवे कि तुम अभिमान करो, अर्थात कि जबतक बहुतेरे अन्यदेशी लोग (ईश्वरके राजमें) न पैठें तबतक बहुतेरे इस्रायली लोग कठोर रहेंगे; पीछे २६

वे सबही बच जायेंगे, जैसाकि यह लिखा है कि सिह्योन नगरमेंसे त्राणकरता आके याकूबके वंशसे अधर्म दूर करेगा;
२७ और जिस समय मैं उनका पाप दूर करूंगा उस समय मेरा
२८ नियम उनके संग होगा। सुसमाचारके बिषयमें वे अप्रिय ऊये हैं, इससे तुम्हारी भलाई ऊई; परंतु उस ठहराई ऊई
२९ बातके अनुसार, जो पित्रोंसे कही गई, वे प्रिय होंगे क्योंकि जो कुछ कि ईश्वरने कहा है कि देगा औ करेगा सो दिया
३० जायगा औ किया जायगा। सो जैसाकि तुमने आगेके दिनोंमें ईश्वर पर बिश्वास न किया परंतु अब इस्रायेली लोगोंके अ-
३१ बिश्वासके द्वारासे दया पाई है तैसाही वे भी अब बिश्वास नहीं करते हैं परंतु उस दयाके द्वारासे जो तुमने पाई है
३२ दया पावेंगे। ईश्वरने सबोंको यहांतक छोड़ दिया है कि वे
३३ अबिश्वासी हो जावें कि उसने सबोंपर दया करे। देखो, ईश्वर की भलाई औ ज्ञान औ बुद्धि कैसीही बड़ी हैं; उसका बिचार कैसाही खोजसे बाहिर है; और उसका मार्ग कैसाही अन-
३४ देखा है। प्रभुके मनकी बात किसने जाना है? उसको किसने
३५ सिखाया है? और उसको किसने पहिले दिया है कि पीछे
३६ फिर पावे? क्योंकि उसीमेंसे और उसीके द्वारासे और उसी के लिये सब कुछ ऊआ है। उसकी महिमा सदा प्रकाशित होवे; आमीन।

१२ बारहवां अध्याय।

ईश्वरकी दयाके लिये यथा शक्ति उसकी सेवा करनी उचित होनी।

१ हे भाईयो, मैं, ईश्वरकी दयाके कारणसे, तुमसे यही बिनती करता हूं कि अपने अपने शरीरको जीवता औ पवित्र औ मन भावना बलि सा ईश्वरको दे देओ; यही तुम्हारी
२ परमार्थी सेवा है। संसारिक लोगोंके समान मत होओ परंतु अपने अपने मन नये करके औरही होओ; इससे तुम जानोगे कि ईश्वरकी इच्छा जो है सो कैसी उत्तम औ मन
३ भावनी औ संपूर्ण है। मैं उस अनुग्रहके प्राक्रमसे जो मुझको

दिया गया है तुम्होंमेंसे एक एकको कहता हूं कि अपने बिषय-
में ठीक बिचार करके अपनेको और बड़ा मत समझ; परंतु
जैसाकि ईश्वरने परिमाण करके एक एकको बिश्वास दिया
है तैसाही दीनता करके अपने ताईं जान। जैसे कि हमारे एक ४
शरीरके बहुतसे अंग हैं परंतु सब अंगोंसे एकही कर्म नहीं
होते हैं तैसेही हम, जो बहुतसे हैं, खीष्टमें एक शरीर सा ५
हैं, और आपसमें अंग अंग सा हैं। सो हम उस अनुग्रहके ६
अनुसार, जो हमको दिया गया है, अलग अलग दान पायके
कर्म करें; जो कोई भविष्यद्वक्ता ठहराये जाय तो जैसी उसने ७
बिश्वासकी बात पाई है तैसी कहे; जो कोई सेवक ठहराये
जाय तो सेवा करनेमें रहे; जो कोई शिक्षक ठहराय जाय
तो सिखानेमें रहे; जो कोई उपदेशक ठहराये जाय तो ८
उपदेश देनेमें रहे; जो कोई दान दिलानेहारा ठहराये
जाय तो सच्चाईसे दान दिलावे; जो कोई प्रधान ठहराये
जाये तो सावधानीसे प्रधानता करे; और जो कोई दुःखी
लोगोंका सहायक ठहराये जाय तो प्रसन्नतासे सहायता करे।

प्रेम इत्यादि कर्ना औ हिंसा कर्नेमें उपदेश कर्ना।

निष्कपटीसे प्रेम करो; बुराईको दूर करके भलाई करते ९
रहो; भाईकी सी आपसमें प्रेम करो; एक दूसरेको बड़ा १०
जानके आदर करो; आलसी मत होओ परंतु मनमें ११
चालाक हो प्रभुकी सेवा करो; भरोसा करके आनंद करो; १२
दुःखमें धीरजवंत होओ; प्रार्थना करनेमें सदा रहो; कंगाल १३
पवित्र लोगोंकी सहायता करो; अतिथिकी सेवा करो; जो १४
तुम्हें सतावे उनको आशीर्वाद करो; स्राप न देके आशीर्वाद १५
करो; जो जो आनंदित होवें उनके संग आनंदित होओ;
जो जो रोनेहारे होवें उनके संग रोओ; आपसमें एकसा १६
होओ; अपनेयोंको बड़े न जानके दीनोंके संग दीनकी सी
होओ; अपनेयोंको ज्ञानवान मत जानो; बुराईकी सन्ती १७
किसीसे बुराई मत करो; सबोंके देखनेमें जो कर्म उत्तम है
सोई करो; जो हो सके तो अपनी सामर्थ्य भर सब मनुष्योंसे १८

१९ मिलनसार हो रहो; हे पियारो, क्रोधित न होके पलटा मत लेओ। क्योंकि यह लिखा है कि प्रभु कहता है कि पलटा
२० लेना मेरा है, मैंही बदला लूंगा; सो तो जो तेरा बैरी भूखा हो तो उसे खिला; जो पियासा हो तो उसे पिला; ऐसा करके तू उसके सिरपर जलते हुये कोएलोंका ढेर करेगा।
२१ कुक्रियासे पराजय मत हो परंतु सुक्रिया करके कुक्रियाको पराजय कर।

१३ तेरहवां अध्याय।

राजा प्रभृति लोगोंके बशमें होना उचित है।

१ एक एक मनुष्य जो हैं सो राज लोगोंको माने क्योंकि कोई राज नहीं है जो ईश्वरसे स्थापित नहीं हुआ है; सब राज जो
२ हैं सो ईश्वरसे ठहराया गया है। सो, जो कोई राजका साम्ना करता है सोई ईश्वरकी आज्ञाका साम्ना करता है; और वे
३ जो साम्ना करते हैं सो दंडही पावेंगे। राज लोग जो हैं सो भलाई करनेहारोंको नहीं परंतु बुराई करनेहारोंको डर देनेहारे हैं। क्या तू चाहता है कि राज लोगोंसे न डरे? तो
४ भला कर्म कर, तब तू उनसे भलाई पावेगा क्योंकि वे तुझपर भला करनेको ईश्वरके सेवक हैं। परंतु जो तू बुराई करे तो भयमान हो क्योंकि वे खड्ग व्यर्थ नहीं रखते हैं; वे ईश्वरके
५ सेवक हैं कि बुराई करनेहारोंको दंड देके पलटा लेवें। सो तो चाहिये कि दंडके भयसे नहीं परंतु ईश्वरकी आज्ञासे,
६ उनको माने। इसलिये उन्होंको कर भी देओ क्योंकि वे, इसी
७ काम करनेमें रहते हुये, ईश्वरके सेवक हैं। जो कुछ कि उचित है सो सबोंको देओ; जिनको घरदारी देने होगा उनको घरदारी देओ; जिनको कर देने होगा उनको कर देओ; जिनसे डरने होगा उनसे भयमान होओ; जिनको आदर करने होगा आदर करो।

व्यवस्थाका सार प्रेम है।

८ आपसमें प्रेम करनेकी ऋणको छोड़, किसीको धारो मत

क्योंकि जो कोई दूसरेको प्यार करता है सोई समस्त व्यवस्था-को मानता है। व्यवस्था की बात येही हैं कि परस्त्री गमन ९ न करना, हत्या न करना, चोरी न करना, झूठी साक्षी न देना, लोभ न करना; जो कोई और आज्ञा होय तो सबही इसी बातमें है, अर्थात्, जैसा कि अपनेको प्यार करता है, तैसा अपने भाईको प्यार कर। जो कोई प्यार करता है सोई १० अपने भाईपर बुराई नहीं करता है। सो तो जो कोई प्यार करता है सोई समस्त व्यवस्थाको मानता है।

अन्धकारके कर्मको त्यागके दीप्तिरूप कर्म कर्नेकी आवश्यकता।

सो तो समयको बूझके ये सब करो; तुम जानते हो कि ११ वही घड़ी आ चूकी है जिसमें नींदमेंसे जाग उठना हमें १२ उचित है क्योंकि हम बिश्वास करके हमारे परित्राणका समय निकट चले आता है; रात बहुत बीत गई है और दिन निकट हुआ है; सो, हम अंधेरेके कर्मोंको न करके उजाले के शस्त्रको बांधें; और जैसाकि दिनमें तैसे चलें, न क्रीड़ामें, १३ न मतवालपनमें, न लुचपनमें, न झगड़ामें न डाहमें; परंतु १४ प्रभु यीशु खीष्ट रूपी बस्त्र पहिनके शरीरकी कामनाओंके पालन करनेकी चिंता न करो।

१४ चौदहवां अध्याय।

खानेकी सामग्रीके निमित्त भाईयोंको तुच्छ कर्ना अनुचित होना।

छोटी बातोंके बिषयमें जिस मनुष्यका बिश्वास दुर्बल है १ उसीसे बिबाद न करके अपना संगी करो। एक मनुष्य हैं २ जो यह बिश्वास करता है कि सब बस्तु मेरे खानेके योग्य हैं; परंतु दूसरा मनुष्य है जो बिश्वासमें दुर्बल हो यह बिश्वास करता कि केवल साग पात मेरे खानेके योग्य है। चाहिये ३ कि वही जो सब खाता है सो उसको, जो नहीं खाता हैं, हलका न जाने; और वही, जो नहीं खाता है, उसपर, जो खाता है, दोष नहीं लगावे क्योंकि ईश्वरने उसको ग्रहण किया है। तू कौन है जो दूसरेके दासपर दोष लगात है? वह ४

अपने स्वामीसे खड़ा किया जाता अथवा गिराया जाता है; हां, वह खड़ा किया जायगा क्योंकि ईश्वर उसको खड़ा करने
५ सकता है। एक मनुष्य है जो एक दिनको दूसरे दिनसे पवित्र जानता, और दूसरा मनुष्य है जो सब दिनोंको एकसा जानता है; चाहिये कि एक एक अपने अपने मनमें निश्चय किया
६ जाय। जो कोई दिनको मानता है सोई प्रभुके नामपर मानता है, और जो कोई दिनको नहीं मानता है सोई प्रभुके नाम पर नहीं मानता है; और जो कोई सब बस्तु खाता है सोई प्रभुके नामपर खायके ईश्वरका धन्यबाद करता है, और जो कोई नहीं खाता है सोई प्रभुके नामपर नहीं खायके ईश्वरका
७ धन्यबाद करता है। हममेंसे कोई जीनेमें अपनेका नहीं है,
८ और कोई मरनेमें अपनेका नहीं है क्योंकि जो हम जीते रहें तो प्रभुके हैं अथवा मरे रहें तो प्रभुके हैं। सो क्या हम जीते
९ रहें क्या मरे रहें तो हम प्रभुके हैं। ख्रीष्ट मरा, और गोरमें से उठा, और फिर जीआ, इसलिये कि वह आपही जीवतों
१० और मरे ऊयोंका प्रभु हो जावे। सो तू क्यों अपने भाईपर दोष लगाता है अथवा अपने भाईको तुच्छ जानता है? हम सब जो हैं सो ख्रीष्टके बिचार आसनके सन्मुख खड़े किये जायेंगे
११ क्योंकि यह लिखा है कि प्रभु अपने नामसे सोंह करके यह कहता है कि एक एक घुटने जो हैं सो मेरे सन्मुख टेकेगा,
१२ और एक एक जीभ जो है सो ईश्वरकी स्तुति करेगी। सो तो हममेंसे एक एकसे लेखा लेना होगा।

खानेकी सामग्रीसे नहीं किंतु अबिश्वाससे मनुष्योंका अशुचि होना।

१३ सो तो चाहिये कि हममेंसे एक दूसरेपर दोष नहीं लगावे; परंतु यह करे कि अपने भाईके मार्गमें न ठोकर, न
१४ और कोई अटकाव रखें। मैंने प्रभु यीशुसे सिखाये होके निश्चय किया है कि कोई बस्तु आपसे अशुचि नहीं है; परंतु जो कोई किसी बस्तुको अशुचि जानता है वही बस्तु उसीके
१५ समीप अशुचि है। सो तो, जो तेरा भाई तेरे खानेके द्वारासे दुःखी होवे तो तू प्रेमकी रीतिपर नहीं चलता है। तू अपने

खानेके द्वारासे अपने उस भाईको नाश मत कर जिसकी सन्ती खीष्ट मरा। ऐसा मत कर कि तुम्हारा सुक्रिया जो है १६ सो कुक्रिया कहा जावे। ईश्वरके राजका सार जो है सो १७ खाना पीना नहीं है; परंतु उसका सार येही है, अर्थात्, पुण्य औ शान्ति और वही आनंद जो पवित्र आत्मासे होता है; जो कोई इनहीके द्वारासे खीष्टको सेवा करता है सोई १८ ईश्वरका प्यारा है औ मनुष्योंसे भला कहलाता है। सो तो १९ चाहिये कि हम उन कर्मोंको करें जिनके द्वारासे मिलाप होता है और जिनके द्वारासे भी एक दूसरेको भलाईमें बढ़ावे। खानेके कारणसे ईश्वरके कर्मको मत बिगाड़। सब २० वस्तु जो है सो आपसे शुचि है; परंतु जो कोई उनको अशुचि २१ बूझके खाता है उसीको यह बुरा है। न मांस खाना, न मदिरा पीना, न और कुछ करना, जिससे तेरा भाई ठोकर खावे अथवा चोट खावे अथवा दुर्बल होवे, यह भला है। जो तू निश्चित हो तो ईश्वरके सन्मुख अपने बिश्वासके अनु- २२ सार कर; वही मनुष्य, जो उसकर्म करनेमें, जो उसके समझमें ठीक है, अपनेको दोषी नहीं ठहराता है सोई धन्य है। परंतु जो कोई दुबधा करके खाता है, सोई दोषी ठह- २३ राया जाता है, इसलिये कि वह निश्चित न हो खाता है; क्योंकि जो कुछ कि बिश्वाससे नहीं होता है सो पाप है।

१५ पन्दरहवां अध्याय।

दुर्बल लोगोंके उपकार कर्नेकी आवश्यकता।

चाहिये कि हम जो बलवंत हैं अपने स्वार्थ न करके १ दुर्बलोंको संभालें; हममेंसे एक एक अपने अपने भाईकी इच्छा २ के अनुसार ऐसी करे कि वह भलाईमें बढ़ जावे; खीष्ट जो ३ है सो अपने स्वार्थ न किई परंतु उसने तैसा किया जैसाकि यह लिखा है कि तेरे निंदकोंकी निंदा मुझपर पड़ीं हैं। जो ४ कुछ कि आगे लिखा गया सो हमारे लिये लिखा गया कि हम धर्म ग्रंथोंके द्वारासे धीर्जवंत औ शान्त हो भरोसा करें।

५ सहनेहारा और शांतिदेनेहारा ईश्वर जो है सो ऐसा करे कि तुम, खीष्ट योशुके अनुसार, आपसमें एकसा हो जावो, ६ इस लिये कि तुम एक मनसे औ एक मुखसे ईश्वर की, ७ अर्थात, हमारे प्रभु योशु खीष्टके पिताकी बड़ाई करो। सो जैसाकि खीष्टने तुम्हें ग्रहण किया है तैसे तुम, एक दूसरेको ग्रहण करो कि ईश्वरकी बड़ाई किई जावे।

सब बिश्वासी भाईयोंको उपदेश।

८ मैं यह कहता हूं कि योशु खीष्ट जो है सो खतने ऊये लोगोंका सेवक ऊआ कि वह उन बाचाओंको, जो पित्रोंसे ९ किई गई, पूरी करे, इसलिये कि ईश्वरकी सच्चाई प्रकाश किई जावे, और कि अन्यदेशीलोग ईश्वरकी दयाकी प्रशंसा करें जैसाकि यह लिखा है कि मैं इसलिये अन्यदेशियोंके बीचमें १० तेरी बड़ाई करूंगा और तेरे नामकी स्तुति गाऊंगा। फिर यह भी लिखा है कि हे अन्यदेशियो, उसके लोगोंके संग ११ आनंद करो। और फिर, कि हे सब अन्यदेशियो, प्रभुका १२ धन्यबाद करो; हे सब लोगो, उसकी प्रशंसा करो। यिशयियने भी यह कहा है कि यिशयियके बंशमेंसे एक जन उत्पन्न होगा जो अन्यदेशियोंपर राज करेगा; उसीपर अन्यदेशी १३ लोग भरोसा करेंगे। सो तो ईश्वर, जो भरोसा करावनेहारा है, तुम्हें बिश्वासी करायके बड़ा आनंद और शान्तीसे ऐसा भर देवे कि पबित्र आत्माकी करनीसे भरोसा करनेमें बढ़ो।

रोमनिवासियोंके निकट जानेमें पौलकी प्रतिज्ञा।

१४ हे मेरे भाईयो, मैंने निश्चय किया है कि तुम सत्यता और ज्ञानसे ऐसे भरे ऊये हो कि एक दूसरेको उपदेश देने १५ सकते हो; तौभी, हे भाईयो, मैं, साहस करके, तुम्हें चेता-१६ वनेको, कुछ कुछ बात लिखता हूं क्योंकि मैंने ईश्वरसे यह अनुग्रह पाया है कि मैं योशु खीष्टका दास होके अन्यदेशियों को ईश्वरका सुसमाचार प्रचार करूं, इसलिये कि वे पबित्र आत्मा की करनीसे, पबित्र होके, दान सा, ग्रहण किये जावें।

सो तो मैं, उन बस्तुओंके बिषयमें जो ईश्वरकी है, यीशु खीष्टके १७ द्वारासे, बड़ाई करता हूं। जो कुछ कि खीष्टने, बात औ कर्मसे १८ और उन आश्चर्य लक्षणों औ चिन्होंसे, जो पबित्र आत्मा दिखाता है, अन्यदेशियोंको माननेहारे करनेमें, मेरे द्वारासे, १९ नहीं किया है सो मैं नहीं कहूंगा; परंतु मैं यही कहूंगा कि मैंने यिरूशालमसे घूमके इल्लुरिया तक खीष्टका समस्त सुसमाचार प्रचार किया है। और मैं बहुत चाहता था कि जहां कहीं २० खीष्टका नाम नहीं कहा गया था वहां सुसमाचार प्रचार करूं, हां मैं उस नीवपर नहीं बनाने चाहता था जो दूसरे मनुष्यसे खोदी गई थी; परंतु जैसाकि यह लिखा गया सोई २१ मैं चाहता था, अर्थात, कि वे, जिनको उसका समाचार प्रचारित नहीं हुआ, देखेंगे, और जिन्होंने नहीं सुना है वे समझेंगे। इसलिये मैं तुम्हारे निकट आनेसे बारबार रुक गया २२ हूं, परंतु अब इन देशोंमें और स्थान न पाके, और बहुत २३ बरससे तुम्हारे पास आने चाहके मैं तुम्हारे पास आऊंगा २४ क्योंकि मैंने स्पानिये देशको जाने ठहराया हूं। और मेरा भरोसा यही है कि तुमको देख करके और तुमसे बात करनेसे शान्त हो करके मैं तुमसे स्पानिये देशकी ओर कुछ कुछ दूर पहुंचाया जाऊं। परंतु अब मैं पबित्र लोगोंको २५ सेवा करनेको यिरूशालम नगरको जाता हूं क्योंकि माकि- २६ दनिया औ आखाया देशके लोगोंने यिरूशालमके कंगाल पबित्र लोगोंके लिये प्रेम करके कुछ बटोरा है; हां उन्होंने प्रेम २७ करके कुछ बटोरा है; सत है, वे उनके ऋणी हैं क्योंकि जो अन्यदेशी लोग यिरूशालम लोगोंसे परमार्थिक धन पाया है तो उचित है कि अन्यदेशी लोग अपने संसारिक धन देके यिरूशालमें लोगोंकी सहायता करें। सो मैं इसी काम करने २८ के पीछे अर्थात इसी फल उनको देनेके पीछे स्पानिये देशके मार्गको पकड़के तुम्हारे निकट आऊंगा। और मैं जानता हूं २९ कि मेरे आनेके द्वारासे खीष्टके सुसमाचारके बहुतसे दान दिये जायेंगे।

अपने लिये प्रार्थना कर्नेको उनसे निवेदन कर्ना।

३० हे भाईयो, मैं अपने प्रभु यीसु खीष्टके कारणसे औ पवित्र आत्माके प्रेमके कारणसे तुमसे यह बिन्ती करता हूं कि तुम आपही मेरे संग, ईश्वरके सन्मुख, मेरे लिये, यत्न करके यह
३१ प्रार्थना करो कि मैं उन्होंके हाथोंसे, जो यिहूदा देशमें बिश्वास नहीं करते हैं, बच जाऊं और कि वही सेवा जो यिरूशालममें मुझसे किई जाय सोई पवित्र लोगोंको मन
३२ भावनी होवे; इससे मैं आनंद करके, ईश्वरकी इच्छाके द्वारासे, तुम्हारे निकट आऊं, और तुमसे मिलके शान्त हो
३३ जाऊं। शान्तिदायक ईश्वर तुम सबोंके संग रहे; आमीन।

१६ सोलहवां अध्याय।

पौलका फैबीके लिये प्रशंसा पत्र लिखना, औ बहुतेरे रोमनिवासियों को नमस्कार भेजना।

१ मैं फैबी नामीके बिषयमें, जो केंक्रीया नगरकी मंडलीकी
२ सेवक और मेरी बहीन है, तुमसे यह बिन्ती करता हूं कि तुम, पवित्र लोगोंकी रीतिके अनुसार उसे, प्रभुके नामपर, ग्रहण करो और जिस जिस काममें वह तुम्हारी सहायताका प्रयोजन रखती है उसी काममें उसकी सहायता कीजियो; क्योंकि उसने बहुतोंकी, हां मेरी भी, उपकार किई है।
३ प्रिस्किल्ला औ आकिलाको, जो खीष्ट यीसुकी सेवा करनेमें
४ मेरे उपकारी है, नमस्कार कहियो; वे, मेरे प्राणके बचाने को, अपने प्राण देनेपर थे; उनहीका, केवल मैं नहीं, परंतु अन्यदेशियोंकी सब मंडलीयोंके लोग भी, धन्य मानते हैं;
५ और उस मंडलीको भी, जो उनके घरमें है, नमस्कार कहियो। मेरे प्यारे इपेनितको, जिसने आशिया देशमें खीष्टपर पहिले
६ बिश्वास किया, नमस्कार कहियो। मरियमको, जिसने हमारे
७ लिये बहुत परिश्रम किया, नमस्कार कहियो। आन्द्रनिक और युनियको, जो मेरे कुटुंब हैं, कैदखानेमें मेरे संगी थे, प्रेरितोंके बीच प्रसिद्ध हैं, और मुझसे पहिले खीष्ट पर

बिश्वास किया, नमस्कार कहियो। अमप्लियको, जो खीष्टपर ८
बिश्वासी और मेरा प्यारा है, नमस्कार कहियो। उर्बानको, ९
जो खीष्टका मेरा संगी सेवक है, और स्ताखूको, जो मेरा
प्यारा है, नमस्कार कहियो। आपिल्लिको, जो खीष्टके नामके १०
लिये परीक्षा किया गया है, नमस्कार कहियो। अरिस्तबूलके
घरके लोगोंको नमस्कार कहियो। हेरोदियाको, जो मेरा ११
कुटुंब है, नमस्कार कहियो। नर्किसके घरके लोगोंको, जो
प्रभुपर बिश्वास करनेहारे हैं, नमस्कार कहियो। त्रुफेना १२
और त्रूफोसाको, जो प्रभुकी सेवा करनेमें परिश्रम करती
हैं, नमस्कार कहियो। प्यारी पर्सिको जो प्रभुकी सेवा करने
में बहुत परिश्रम करती है, नमस्कार कहियो। रूफको, जो १३
प्रभुका प्यारा है, और उसकी माताको, जो मेरी माता भी है,
नमस्कार कहियो। असूंक्रित और फलिगोन और हर्मा १४
और पात्रोबा और हर्मीको और उन भाईयोंको, जो उन्होंके
संग हैं नमस्कार कहियो। फिललग और युलिया और १५
नीरिया और उसकी बहिन और उलंम्पाको और सब पवित्र
लोगोंको, जो उन्होंके संग हैं, नमस्कार कहियो। तुम आपसमें १६
पवित्र चुमा करके नमस्कार कहियो। खीष्टकी मंडलीयोंके
लोग जो हैं सो तुमको नमस्कार कहते हैं।

इनपर पौलका उपदेश।

हे भाईयो, मैं तुमसे बिनती करके कहता हूं कि उन लोगों १७
से सावधान हो परे रहो, जो, उस उपदेशके अनुसार, जो
तुमने पाया है, न चलते हुए, झगड़ाओं और ठोकरोंको
करवाते हैं; ऐसे मनुष्य जो हैं सो हमारे प्रभु यीशु खीष्टकी १८
सेवा नहीं परंतु अपने पेटकी सेवा करते हैं. और मीठी औ
चिकनी बातोंसे सीधे लोगोंको भुलाते हैं। सब लोगोंने सुना १९
है कि तुमने बिश्वास किया है; इसमें मैं आनंद करता हूं;
और मैं चाहता हूं कि तुम सत कर्मके बिषयमें बुद्धिमान और
कुकर्मके बिषयमें निर्बुद्धि होओ। शांति देनेहारा ईश्वर २०

तुम्हारे पांवोंके नीचे शैतानको शीघ्र लताड़ेगा। हमारे प्रभु यीशु खीष्टने तुमको अनुग्रह देवे।

पौलके साथियोंका नमस्कार भेजना।

२१ मेरा संगी सेवक तीमथीय और लुकिय और यासोन और मेरा कुटुंब सोसिपतर जो हैं सो तुमको नमस्कार कहते हैं।
२२ मैं ततिय, जो यह पत्र लिखता हूं, तुमको, जो प्रभुपर बिश्वास
२३ करते हैं, नमस्कार कहता हूं। गाय, जो मेरा और सब मंडलीका आतिथ्यकारी जो है सो तुमको नमस्कार कहता है। और इरास्त, जो इस नगरका भंडारी है, और क्वार्त,
२४ जो तुम्हारा भाई है, तुमको नमस्कार कहते हैं। हमारे प्रभु यीशु खीष्टने तुम सबोंको अनुग्रह देवे; आमीन।

मंगलके लिये ईश्वरका धन्यबाद करना।

२५ सुसमाचार की वही बात, जो मैं प्रचार करता हूं, सो यीशु खीष्टके बिषयमें है; यही बात आगेके समयके लोगोंसे छिप
२६ गई, परंतु अबके लोगोंको, भविष्यद्वक्ताओंके ग्रंथोंके द्वारासे, प्रगट किई गई है, और अनंत ईश्वरकी आज्ञासे, सब अन्यदेशियोंको जनाई गई है कि वे उसपर बिश्वास करके मानें;
२७ उसी ईश्वरकी, जो तुमको इसी बातके द्वारासे स्थिर करे, बड़ाई किई जावे; हां, उसी ईश्वरकी, जो अद्वैत बुद्धिमान है, यीशु खीष्टके द्वारासे, सदा बड़ाई किई जावे। आमीन॥

करिन्थियोंकी मण्डली पर प्रथम पत्र।

१ पहिला अध्याय।

मंगलाचरण।

१ पौल, जो ईश्वरकी इच्छासे प्रेरित होनको बुलाया गया है,
२ और सोस्थिनी भाई, उस मंडलीको, जो करिन्थ नगरमें, खीष्ट यीशुके द्वारासे पवित्र किये होके साधु लोग कहलाते हैं;

और उन सबोंको भी, जो हर एक स्थानमें अपने औ हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके नाम लेके प्रार्थना करते हैं, यह पत्र लिखते हैं। हमारा पिता ईश्वर और प्रभु यीशु ख्रीष्ट जो हैं सो तुम ३ को अनुग्रह और शांति देवें।

करिन्थियों पर अनुग्रह होनेसे पौलका धन्यबाद कर्ना।

मैं, तुम्हारे बिषयमें, अपने ईश्वरको सदा धन्य मानता हूं, ४ इसलिये कि तुमको, ख्रीष्ट यीशुके द्वारासे, ईश्वरसे इतना अनुग्रह दिया गया है, कि तुम, उसके द्वारासे, सब बस्तुसे, ५ अर्थात, सब बातसे औ सब ज्ञानसे ऐसे धन्यवान किये गये ६ हो कि ख्रीष्टके सुसमाचारकी बात तुम्हारे बीचमें, सच ठहराई गई है; (हां तुम ऐसे धन्यवान किये गये हो) कि तुम, हमारे ७ प्रभु यीशु ख्रीष्टके आनेकी बाट जोहते ऊये, कुछ दान हीन नहीं रहते हो। वह (अर्थात ईश्वर) तुमको, पिछले दिन ८ तक, ऐसा सुस्थिर रखेगा कि हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके दिनमें निर्दोष पाये जाओगे क्योंकि वही ईश्वर जो है, जिसके ९ द्वारासे तुम उसके पुत्रके, अर्थात, हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके अधिकारके भागी हो, सोई सच्चा है

उनके एक बचन न होनेके लिये अनुरोध कर्ना।

हे भाईयो, मैं, अपने प्रभु यीशु ख्रीष्टके नाम लेके, तुमसे १० यह बिन्ती करता हूं कि एक सा हो रहो और कि तुम्होंके बीचमें कुछ झगड़े न होवें, हां, कि तुम एक मनसे औ एक बातसे हो रहो। हे मेरे भाईयो, खलोयी नामके घरके ११ लोगोंने मुझको जनाया है कि तुम आपसमें झगड़ा करते रहते हो, अर्थात, कि तुममेंसे एक कहता है कि मैं पौलका १२ शिष्य हूं, और एक कहता है कि मैं आपल्लोका, और एक कहता है कि मैं कैफाका (अर्थात पितरका), और एक कहता है कि मैं ख्रीष्टका। क्या ख्रीष्ट भाग भाग हो गया है? क्या पौल १३ तुम्हारे लिये क्रुशपर मार डाला गया? क्या तुमने पौलके नाम से डुबकी खाई है? मैं ईश्वरको धन्य मानता हूं कि मैंने, १४ क्रस्प और गायको छोड़, तुममेंसे और किसीको डुबकी नहीं

१५ दिलाई: न होवे कि कोई कहे कि पौलने अपने नाम लेके
१६ डुबकी दिलाई। और मैंने स्तिफानके घरके लोगोंको डुबकी दिलाई। इनको छोड़, मैं नहीं जानता हूं कि मैं और किसी को डुबकी दिलाई कि नहीं।

सुसमाचारके गुणकी प्रशंसा करनी।

१७ ख्रीष्टने मुझे डुबकी दिलानेको नहीं परंतु सुसमाचारके प्रचार करनेको भेजा; बिद्याकी बातसे नहीं, न होवे कि ख्रीष्टके
१८ क्रुश की बात निष्फल हो जावे। क्रुशकी बात जो है, सो उनके समझमें, जो त्राण हीन हैं निर्बुद्धियोंकी बात है, परंतु हमारे समझमें, जो त्राण पानेहारे हैं, वह ईश्वरकी सामर्थ्यकी बात
१९ ही है। यह लिखा है कि मैं ज्ञानियोंका ज्ञान नाश करूंगा,
२० और बुद्धिमानोंकी बुद्धि मिटा डालूंगा। कहां ज्ञानी है? कहां बिद्वान? और कहां इस संसारके बिबादी? क्या
२१ ईश्वरने इस संसारके ज्ञानको मूर्खता सा नहीं किई है? जब ईश्वरने अपने ज्ञानसे यह कराया कि संसारके लोग अपने ज्ञानसे ईश्वरको न पहिचानें, तब ईश्वरने, अपनी इच्छासे, उन्होंको बचाया जिन्होंने उस बातको सुनके बिश्वास किया जो
२२ निर्बुद्धियोंकी बात समझी गई। यिहूदी लोग लक्षणको देखने चाहते हैं और यूनानी लोग बिद्याकी इच्छा करते हैं परंतु
२३ हम क्रुश पर मार डाले हुये ख्रीष्टकी उस बातका प्रचार करते हैं जो यिहूदियोंके मार्गमें ठोकर सी है और यूनानियोंके
२४ समझमें निर्बुद्धियोंकी सी है; परंतु उन्होंको, जो बुलाये गये हैं, क्या यिहूदियोंको क्या यूनानियोंको, यही बात जो ख्रीष्टके बिषयमें है सो ईश्वरकी सामर्थ्य सी और ज्ञान सी है।
२५ ईश्वरकी मूर्खता जो है सो मनुष्योंके ज्ञानसे अच्छी है, और ईश्वरकी दुर्बलता जो है सो मनुष्योंकी सामर्थ्य सी बलवंत है।

उससे अज्ञान और छोटे लोगोंका परित्राण और ईश्वरकी महिमा प्रकाश होनी।

२६ हे भाईयो, जिन्होंको तुम्हें बुलाया है, वे कैसे हैं, सो तुम देखते हो; वे न इस संसारके बिद्यवान बहुतसे हैं न सामर्थ्य-

वान बहुतसे हैं, न कुलीन बहुतसे हैं परंतु ईश्वरने उनहीको २७ ठहराया है जो संसारके लोगोंसे मूर्ख गिने गये कि वे बिद्यवानोंको लज्जित करें; और उनहीको, जो संसारके लोगोंसे दुर्बल गिने गये, ईश्वरने ठहराया है कि वे बलवंतोंको लज्जित करें; और उनहीको, जो संसारके लोगोंसे छोटे और नीच २८ औ तुच्छ गिने गये, ईश्वरने ठहराया है कि वे उनहीको, जो बड़े गिने जाते हैं, कुछ कामका नहीं दिखावे; यह इसलिये किया गया है कि कोई प्राणी ईश्वरके सन्मुख अपनी बड़ाई न २९ करे। सो तो तुम, उसकी अनुग्रहसे, खीष्ट यीशुपर बिश्वास ३० करनेहारे हुये हो। वही (अर्थात खीष्ट) ईश्वरकी ओरसे हमको ज्ञान औ पुण्य औ पबित्रता औ मुक्ति हुआ है; इस ३१ लिये यह लिखा है कि जो कोई बड़ाई करे सो प्रभुकी बड़ाई करे।

२ दूसरा अध्याय।

पौलसे सुसमाचार प्रकाश कर्ना बाक्यकी चतुराईसे, औ बिद्याकी निपुणतासे न होना।

हे भाईयो, जिस समय मैं तुमको ईश्वरके सुसमाचार १ प्रचार करनेको आया मैं बातोंकी चतुराईसे अथवा बिद्यासे नहीं आया क्योंकि मैंने यह ठहराया कि मैं, तुम्हारे बीचमें, २ यीशु खीष्टकी, और क्रुशपर उसके मार डाले होनेकी बातको छोड़, और कुछ न जनाऊं। तुम्हारे बीचमें भी मैं दुर्बल औ ३ भयमान औ बड़ा कंपाहा था। और मैंने, संसारकी बिद्याकी ४ फुसलाईं हुईं बातोंसे नहीं, परंतु पबित्र आत्माके प्रमाणसे अर्थात आश्चर्य कर्मोंसे, बात सुनाई, इसलिये कि तुम्हारा बि- ५ श्वास जो है सो मनुष्योंकी बिद्याके दारासे नहीं परंतु ईश्वर की शक्तिके दारासे हो जावे।

किंतु संसारके ज्ञानसे ईश्वरका जो श्रेष्ठ ज्ञान है उससे सुससमाचार प्रचार कर्ना।

तौभी हम उन्होंके बीचमें, जो सिद्ध हैं, बिद्याकी बात सुनाते ६

हैं परंतु इस संसारकी बिद्याकी बात नहीं, न इससंसारके
७ मरते ऊये बिद्यामानोंकी बिद्याकी बात। जो बात हम कहत
हैं सो ईश्वरकी बिद्याकी बात है, अर्थात सुसमाचारकी बात
है। यही बात जो है सो छिप गई परंतु ईश्वरने, जगतकी
स्टृष्टिसे पहिले, ठहराई कि हम इस बातके द्वारासे बड़ाई
८ पावे। इस संसारके प्रधान लोग जो हैं सो इस बातको
न जानते थे; जो वे जानते तो बिभवके प्रभुको क्रुशपर न
९ मार डालवाते। जैसा कि यह लिखा है कि जो कुछ कि नेत्रने
न देखा है और कानने न सुना है और मनुष्यके मनमें न
आया है सोई ईश्वरने उनके लिये, जो उससे प्यार करते हैं,
१० तैयार किया है। ये सब, ईश्वरने, अपने पबित्र आत्माके द्वारा
से हमपर प्रगट किई हैं क्योंकि पबित्र आत्मा जो है सो सब
११ बातोंको, हां, ईश्वरकी गहरी बातोंको जानता है। मनुष्यके
उस आत्माको छोड़ जो उसमें है कौन वही है जो मनुष्योंके
मनकी बात जानता है? इस रीति पबित्र आत्माको छोड़,
१२ ईश्वरकी बातको कोई नहीं जानता हैं। हम जो हैं सो उस
आत्माको, जो संसारिक है, सो नहीं परंतु उस आत्माको, जो
ईश्वरसे है, पाया है, इसलिये कि जो कुछ कि ईश्वरने अनुग्रह
१३ करके हमको दिया है सो हम जानें। उनका बेओरा भी हम
करते हैं, संसार की बिद्याकी सिखलाई ऊई बातोंमें नहीं,
परंतु उसी बातोंमें, जो पबित्र आत्मासे सिखलाई ऊई हैं;
१४ हम परमार्थी बातोंसे परमार्थी उपदेश देते हैं। परंतु
संसारके मनुष्य जो है सो ईश्वरके आत्माके उपदेशको मूर्खता
सा जानके ग्रहण नहीं करता है और न समझ सकता है
क्योंकि वह (अर्थात ईश्वरका उपदेश) परमार्थी मनसे समझा
१५ जाता है। वही मनुष्य जो परमार्थी है सो सब कुछ समझता
१६ है परंतु वह आपही जो है सो किसीसे नहीं समझा जाता
है। कौन ईश्वरके मनकी बात जानके उसे उपदेश दे सकता?
परंतु हम खीष्टके मनकी बात जानते हैं।

३ तीसरा अध्याय।

संसारी होनेमें अनुयोग।

हे भाईयो, तुम संसारिक, और ख्रीष्टके धर्मके विषयमें १ बालकोंकी नाईं थे; इस लिये जैसे कि कोई परमार्थियोंसे बात् २ बोलता है तैसेकि मैं तुमसे बोल नहीं सकता था। मैंने दूधको छोड़, और कुछ तुम्हें न खिलाया क्योंकि तुम और कुछ न खा सकते थे, हां अब भी और कुछ न खा सकते हो क्योंकि तुम ३ अब तक संसारिकोंकी नाईं हो। तुम्हारे बीचमें डाह और झगड़ा और बिभाग हैं; सो क्या तुम संसारिक नहीं हो? क्या तुम मनुष्योंकी रीतिपर नहीं चलते हो? तुम्हारे बीचमें ४ कोई कोई हैं जो कहते हैं कि हम पौलके शिष्य हैं और कोई कोई हैं जो कहते हैं कि हम अपल्लोके शिष्य हैं ; सो क्या तुम संसारिक नहीं हो?।

प्रभुके बिना सेवकका कर्म वृथा होनेकी बात।

पौल तो कौन है? और अपल्लो तो कौन है? वे तो केवल ५ सेवक हैं, जिनके द्वारासे तुमने बिश्वास किया है, जैसाकि प्रभु ने एक एकको दिया है। मैंने रोपा, और अपल्लोने सींचा, परंतु ६ ईश्वरने बढ़ाया। सो तो रोपनेहारा जो है और सींचने- ७ हारा जो है सो दोनोंही कुछ नहीं हैं; ईश्वर जो बढ़ानेहारा है सोई सार है। रोपनेहारा और सींचनेहारा दोनोंही ८ एक सा हैं; और एक एक, अपने कर्मके अनुसार, अपने फल पावेगा। हम ईश्वरके कर्मकरनेहारे हैं; तुम ईश्वरका खेत ९ और ईश्वरकी बनावट हो। मैंने, उस अनुग्रहके अनुसार, जो १० ईश्वरसे मुझको दिया गया है, बुद्धिमान थवईके समान नेव डाली है और दूसरा उसपर बनाता है। चाहिये कि एक एक सावधान हो कि किस भांतिसे उसपर बनाता है क्योंकि ११ उस नेवको छोड़ जो डाली गई है अर्थात यीसु ख्रीष्टको, दूसरी नेवको कोई नहीं डाल सकता है। सो तो जो कोई १२ उस नेवपर सोने अथवा रूपे अथवा रतन अथवा काठ

१३ अथवा घास अथवा बिचालीको लगावे तो एक एकका कर्म प्रकाश होगा; हां बिचारके दिनमें प्रकाश किया जायगा क्योंकि उसी दिनमें आग होगी और वही आग जो होगी सोई एक एकका कर्म ऐसा परखेगी कि वह कैसा कर्म है सो
१४ दिखलाया जायगा। जो किसीका बनाया हुआ कर्म ठहरेगा
१५ तो फल पावेगा; परंतु जो किसीका कर्म जल जायगा तो हानि उठावेगा; तौभी वह आपही बच जायगा; परंतु ऐसा जैसा कोई आगसे बच निकलता है।

प्रभुके लोग ईश्वरके मंदिरस्वरूप औ उनके शुचि होने और कृतज्ञ होनेकी आवश्यकता।

१६ क्या तुम नहीं जानते हो कि तुम ईश्वरका मंदिर हो और
१७ कि ईश्वरका आत्मा तुममें रहता है? जो कोई ईश्वरके मंदिरको बिगाड़े तो ईश्वर उसको बिगाड़ेगा क्योंकि ईश्वरका
१८ मंदिर जो है सो पवित्र है और वही तुमही हो। सावधान होओ कि कोई अपनेको न भुलावे। जो तुम्होंमेंसे कोई, इस संसारके विषयमें, अपनेको ज्ञानवान जाने तो अपनेको मूर्ख
१९ गिने कि ज्ञानवान हो जावे क्योंकि इस संसारका ज्ञान जो है सो ईश्वरके निकट मूर्खता है; यह लिखा है कि वह ज्ञान-
२० वानोंको, उनकी चतुराईयोंमें, बझाता है; यह भी लिखा है कि प्रभु ज्ञानवानोंकी चिंताओंको जानता है कि वे निष्फल
२१ हैं। सो चाहिये कि कोई मनुष्योंकी बड़ाई न करे क्योंकि सब
२२ कुछ तुम्हारा है; क्या पौल क्या अपल्लो क्या कैफा क्या जगत क्या जीवन क्या मरण क्या आजकी बस्तु क्या कालकी बस्तु—सब
२३ तुम्हारा है, और तुम खीष्टके हो और खीष्ट ईश्वरका है।

४ चौथा अध्याय।

खीष्टके सेवकका भंडारी स्वरूप होना।

१ चाहिये कि एकएक हमको खीष्टके सेवक और ईश्वरके
२ सुसमाचारके भंडारीयोंके से जाने। यह उचित है कि भंडारी
३ सच्चा होवे। मेरे समझमें यही बड़ी छोटी बात है कि मैं तुम

से अथवा और किसी मनुष्यसे बिचारा जाऊं, हां मैं अपनेको बिचार नहीं करता हूं। मैं अपने ताईं दोषी नहीं जानता हूं ४ तौभी मैं इससे निर्दोषी नहीं ठहरता हूं; वही जो मेरा बिचार करता है सोई प्रभु है। सो, जबतक प्रभु, अंधकारकी ५ छिपी ऊई बातोंको प्रकाश करनेको और मनकी चिंताओंको दिखा देनेको आवेगा तब तक बिचार मत करो; उसी समयमें एक एक मनुष्य जो है सो ईश्वरसे बड़ाई पावेगा।

उनके दुःख औ ताड़ना पानी।

हे भाईयो, मैंने तुम्हारे लिये दृष्टांत सा करके अपनेको ६ और अपल्लोका नाम लेके ये बातें लिखी हैं इसलिये कि तुम हमारे द्वारासे, यह सीखो कि लिखी ऊई बातोंसे बाहिर, किसीको और बड़ा न जानो, न होवे कि अहंकार करके तुम्होंमेंसे एक मनुष्य, एक शिक्षककी ओर, और दूसरा मनुष्य, दूसरे शिक्षककी ओर, हो जावे। वही कौन है जो तुझे ७ दूसरेसे बड़ा ठहराता है? और तेरे हाथमें क्या है जो तूने नहीं पायाहै? सो तो जो तूने दूसरेसे कुछ पाया है तो क्यों ऐसी बड़ाई करता है जैसा कि दूसरेसे नहीं पाया? अब तुम ८ तृप्त ऊये, अब तुम धनवान ऊये, तुम हमारे पीछे राज करते रहे; हां मैं बऊत चाहता हूं कि तुम राज करते रहते, इस लिये कि हम भी तुम्हारे संग राज करते रहते। मेरा बिचार ९ यही है कि ईश्वरने हम प्रेरितोंको, उनकी नाईं जो मार डाले जानेपर हैं, निरादरवान ठहराया है क्योंकि हम संसार को और दूतोंको औ मनुष्योंको लीला सा ऊये हैं। हम खीष्ट १० के लिये मूर्ख हैं परंतु तुम खीष्टमें ज्ञान हो; हम दुर्बल हैं परंतु तुम बलवंत हो; हम निरादरवंत हैं परंतु तुम आदरवंत हो। हम, आजके दिनतक, भूखे औ पियासे औ बस्त्रहीन ११ और मार खानेहारे औ आश्रय रहित हो अपने हाथोंसे १२ परिश्रम करके कमाते हैं। हम गाली खाके आशीर्बाद करते १३ हैं; सताय जाके सहते हैं और निंदित होके बिन्ती करते

हैं। जैसेकि संसारके कूड़े श्री समस्त बस्तुओंकी मैलके समान, हम आजके दिनतक गिने जाते हैं।

उनके अनुगामि होनेकी आवश्यकता।

१४ मैं तुमको लज्जा देनेको नहीं परंतु तुमको पुत्रसा जानके
१५ चेतावनेको ये बातें लिखता हूं; जो खीष्टके धर्ममें तुम्हारे दश सहस्र उपदेशक होवें तौभी तुम्हारे बहुतेरे पिता नहीं होने सकते हैं; मैंही खीष्ट यीशुमें, सुसमाचारके द्वारासे, तुम्हारा
१६ पिता हुआ। सो मैं तुमसे यह बिन्ती करता हूं कि बोल
१७ चालमें मुझ सा होओ। मैंने तीमथियको, जो प्रभुका बिश्वासी श्रीर मेरा पियारा पुत्र है, तुम्हारे निकट भेजा है इसलिये कि वह तुमको स्मरण करावे कि खीष्टमें मेरा चाल क्या है जैसाकि मैं एक एक स्थानकी मंडलीमें उपदेश देता हूं।

करिन्थियोंपर पोलके शासनका बाक्य कहना।

१८ कोई कोई यह समझते हुये फूलते हैं कि मैं तुम्हारे निकट
१९ नहीं आऊंगा; परंतु जो प्रभुकी इच्छा होय तो मैं जलदी करके तुम्हारे निकट आऊंगा; श्रीर उन फूलनेहारोंकी बात
२० नहीं परंतु उनकी सामर्थ्य जताऊंगा क्योंकि ईश्वरका राज
२१ जो है सो बातसे नहीं परंतु सामर्थ्यसे है। सो तुम क्या चाहते हो? क्या मैं छड़ी लेके तुम्हारे निकट आऊं? अथवा प्रेमसे श्री नम्रतासे आऊं?

५ पांचवां अध्याय।

एक जनका महापाप।

१ यह चर्चा बहुत फैल गई है कि तुम्हारे बीचमें ऐसा व्यभिचार है जैसा कि देवपूजकोंके बीचमें नहीं, अर्थात, कि
२ तुममेंसे एक है जो अपने पिताकी स्त्रीको रखता है। तौ भी तुम फूल गये हो श्रीर खेदित नहीं; तुमने अपनेयोंमेंसे ऐसे
३ दुष्कर्म करनेहारेको दूर नहीं किया है। मेरा शरीर तो तुम्होंसे दूर है परंतु मेरा आत्मा तुम्हारे बीचमें है; सो जैसाकि तुम्हारे बीचमें होता तैसाकि मैं उसके बिषयमें, जिसने ऐसा

दुष्कर्म किया है, यही बिचार करता हूं कि जब कि तुम और ४
मेरा आत्मा. हमारे प्रभु यीशु खीष्टके नाममें, एकठे होवें,
तब तुम, हमारे प्रभु यीशु खीष्टके पराक्रमसे इसी मनुष्यको ५
शैतानके हाथमें सोंप देओ कि उसके शरीरका दुःख होय, इस
लिये कि उसका आत्मा, प्रभु यीशुके दिनमें, बच जावे।

पुरानी ताड़ीके स्वरूप दुष्टता त्यागनेका उपदेश।

तुम्हारा गर्व जो है सो भला नहीं। क्या तुम नहीं जानते ६
हो कि थोड़ासा खमीर सारे पिंडेको खमीर करता है; सो ७
तुम पुराने खमीरको दूर करो कि तुम नया पिंडा हो जाओ
अर्थात बेखमीर सा हो जाओ। खीष्ट जो है सो हमारी सन्ती
निस्तार पर्बका भेड़ा सा, चढ़ाया गया। सो चाहिये कि ८
हम पर्बका पालन करें, न पुराने खमीरसे, और न बुराई औ
कुकर्मसे, परंतु सरलता औ सत्यताके बेखमीर रोटीसे।

महापापी भ्राताते पृथक होनेकी कथा।

मैंने तुमको पत्रमें यह बात लिखी है कि व्यभिचारियोंकी ९
संगति मत करो; परंतु मैंने यह नहीं लिखा कि तुम इस संसार १०
के व्यभिचारियोंकी अथवा लोभियोंकी अथवा निचोड़ियोंकी
अथवा देवपूजकोंकी संगति मत करो; नहीं तो, तुमको संसार
मेंसे बाहिर जाना होगा। परंतु मैं तुमको अब यह लिखता ११
हूं कि जो कोई, जो भाई कहलाता है, व्यभिचारी अथवा
लोभी अथवा देवपूजक अथवा निंदक अथवा मद्यप अथवा
निचोड़ होय तो उसकी संगति मत करो, हां ऐसेके संग
खाना मत खाओ। जो सब मंडलीसे बाहिर हैं उनका बिचार १२
करनेको मुझे क्या अधिकार है? ईश्वर बाहिर लोगोंका
बिचार करेगा; परंतु तुम क्यों मंडलीके लोगोंका बिचार १३
नहीं करोगे? सो तुम उस बुरे मनुष्यको, अपने बीचमेंसे
निकालके दूर करो।

६ छठवां अध्याय।

बिबाद कर्नेके लिये करिंथियोंपर पौलका अनुयोग।

१ क्या तुममेंसे कोई ऐसा साहसी है कि दूसरेसे अपवाद रखते हुये अबिश्वासियोंके सन्मुख नालिश करनेको जाता है,
२ और बिश्वासियोंके सन्मुख नहीं जाता? क्या तुम नहीं जानते हो कि बिश्वासी लोग जो हैं सो संसारके लोगोंका बिचार करेंगे? सो तो जो संसारके लोग तुमसे बिचारे जायेंगे, क्या
३ तुम छोटी बातोंके बिचार करनेके योग्य नहीं हो? क्या तुम जानते नहीं हो कि हम भूतोंका भी बिचार करेंगे? जो ऐसा होय तो क्या हम इस संसारकी बातोंके बिचार करनेके योग्य
४ नहीं हैं? सो तो जो तुम इस संसारकी बातोंके बिषयमें किसी से अपवाद रखो तो क्या उन्होंको, जो मंडलीसे तुच्छ गिन
५ जाते हैं बिचार करनेको बैठाते हो? मैं तुम्हें लज्जित करानेको
६ ये बातें कहता हूं। क्या यह ऐसा है कि तुम्हारे बीचमें एक ऐसा बुद्धिमान नहीं है जो अपने भाईयोंके बीचमें बिचारका कर्म कर सकता है? क्या इसीसे यह हुआ है कि अबिश्वासि-
७ योंके सन्मुख भाई भाईसे अपवाद करता है? यह तुम्हारा बड़ा दोष है कि तुम आपसमें झगड़ा करते हो; क्यों अन्याय
८ नहीं सहते हो? क्यों घाटा नहीं सहते हो? परंतु तुम यह न करके अपने भाईयोंपर अन्याय और उनका घाटा करते हो।

ईश्वरके राज्यमें पापियोंका अधिकार न होना।

९ क्या तुम नहीं जानते हो कि अन्यायी लोग जो हैं सो ईश्वर के राजमें अधिकारी नहीं होंगे? छल मत खाओ; न ब्यभि-चारी, न देवपूजक, न परस्त्रीगामी, न बवैसिया, न पुरुष-
१० गामी, न चोर, न लोभी, न मद्यप, न निंदक, न निचोड़ ईश्वर
११ के राजमें अधिकारी होंगे। तुममेंसे कोई कोई ऐसे थे परंतु तुम, हमारे प्रभु यीशु खीष्टके नामसे और हमारे ईश्वरके पवित्र आत्मासे, धोय हुये और पवित्र हुये और पुण्यवान हुये हो।

पवित्र होनेकी आवश्यकता।

खानेको सब कुछ मुझको दिया गया है परंतु सब कुछ १२ परायती नहीं है; हां, सब कुछ मुझको दिया गया है परंतु मैं किसीका अधीन नहीं हूंगा। भोजन जो है सो पेटके लिये १३ है और पेट जो है सो भोजनके लिये है; परंतु ईश्वर इसको और उसको नाश करेगा। शरीर जो है सो व्यभिचारके लिये नहीं है परंतु ईश्वरके लिये है और ईश्वर उसके लिये है; और जैसाकि ईश्वरने प्रभुको गोरमेंसे उठाया है तैसाही १४ वह अपने पराक्रमसे हमको भी उठावेगा। क्या तुम नहीं १५ जानते हो कि तुम्हारे शरीरें जो हैं सो खीष्टके अंग सा हैं? सो क्या मैं खीष्टके अंगोंको लेकर बेश्याके अंग बनाऊंगा? सो तो नहीं; क्या तुम नहीं जानते हो कि वही जो बेश्यासे मिल १६ गया है सो उसके संग एक शरीर सा ऊआ है? ईश्वरने कहा है कि वे दोनों एक सा होवेंगे; परंतु वही जो ईश्वरसे मिल १७ गया है सो एक आत्मा सा ऊआ है। व्यभिचार करनेसे भागो। १८ व्यभिचारको छोड़, जो कुछ पाप कि मनुष्य करता है सो शरीर से नहीं करता है; परंतु वही जो व्यभिचार करता है सो अपने शरीरके बिरुद्ध पाप करता है। क्या तुम नहीं जानते १९ हो कि तुम्हारा शरीर जो हैं सो पवित्र आत्माका मंदिर सा है अर्थात वही पवित्र आत्मा जो तुममें रहता है और जिसको तुमने ईश्वरसे पाया है? तुम अपनेयोंके नहीं हो क्योंकि तुम २० बड़े दामसे मोल लिये गये हो। इसलिये अपने शरीरसे, और अपने आत्मासे भी, जो ईश्वरका हैं, ईश्वरकी बड़ाई करो।

७ सातवां अध्याय।

बिबाहका बिबरण।

उन बातोंका उत्तर, जिनके बिषयमें तुमने मुझको लिखा, १ सो यह है, अर्थात, कि स्त्रीयोंको न छूना, यह पुरुषको भला है; तोभी चाहिये कि एक एक स्वामी अपनी अपनी स्त्रीको, २ और एक एक स्त्री अपने अपने स्वामीको, रखे कि व्यभिचारीसे

३ बच जावे। चाहिये भी कि स्वामी अपनी स्त्रीके संग, और
४ स्त्री अपने पुरुषके संग, प्रेम व्यवहार करते रहे। स्त्री जो
है सो अपनेकी नहीं, परंतु स्वामीकी है; तैसाही स्वामी जो
५ है सो अपनेका नहीं है, परंतु स्त्रीका। सो चाहिये कि
एक दूसरेसे अलग न रहे; जो दोनों आपसमें यह बिचार
करें कि उपवास और प्रार्थना करनेके कारणसे, हम एक
दूसरेसे, किसी समय तक, अलग रहे, तो यह होने सके; परंतु
देखइयो कि तुम एक संग फिर आओ, न हो कि शैतान तुम्हें
६ परीक्षा करे। मैं उपदेशसे ये बातें कहता हूं, आज्ञासे नहीं।
७ मैं यह चाहता हूं कि सब मनुष्य जो हैं सो मेरे समान
होवें; तौभी सबोंने ईश्वरसे दान पाया है, एकने इस प्रकारका,
और दूसरेने उस प्रकारका।

स्त्री पुरुषके पृथक होनेकी कथा।

८ मैं अनबियाहाओं और बिधवाओंको यह कहता हूं कि
९ जो वे मेरे समान रहें तो भला है; परंतु जो वे न रह सकें
तो बिवाह करें क्योंकि बिवाह करना जो है सो जलनेसे भला
१० है। बियाहाओंको मैं तो नहीं परंतु प्रभु यह आज्ञा करता
११ है कि स्त्री अपने स्वामीको न छोड़े परंतु जो उसको छोड़े
तो दूसरेसे बिवाह न करे अथवा अपने स्वामीसे फिर मेल
करे; तैसाही स्वामी भी अपनी स्त्रीको न छोड़े।

एक संग रहनेकी कथा।

१२ औरोंको प्रभु तो नहीं परंतु मैं यह कहता हूं कि जो किसी
भाईकी स्त्री अबिश्वासी है और स्त्री उसके संग रहनेसे प्रसन्न
१३ है तो उसको न छोड़े; तैसाही जो किसी स्त्रीका स्वामी
अबिश्वासी है और स्वामी उसके संग रहनेसे प्रसन्न है तो
१४ उसको न छोड़े क्योंकि अबिश्वासी स्वामी जो है सो बिश्वासी
स्त्रीसे शुचि होता है और अबिश्वासी स्त्री भी बिश्वासी
स्वामीसे शुचि होती है; इसलिये तुम्हारे संतान अशुचि नहीं
१५ हैं, वे शुचि हैं। परंतु जो अबिश्वासी जो है सो छोड़के जाय
तो जाय; कोई भाई अथवा कोई बहिन, ऐसेमें बंद किई

नहीं जाती है; तौभी ईश्वरने हमको मेल करनेको बुलाया है। हे स्त्री, क्या जाने कि तू अपने स्वामीको बचावेगी? हे १६ स्वामी, क्या जाने कि तू अपनी स्त्रीको बचावेगा?।

अपने २ पदमें रहनेका बिबरण करना।

जैसाकि ईश्वरने एक एकको भाग भाग करके दिया है और १७ जैसाकि एक एकको बुलाया है तैसाकि चाहिये कि एक एक चले; सब मंडलियोंमें मैं इसी प्रकारकी व्यवस्था देता हूं। सो तो १८ जो कोई, खतनः किये ऊये, बुलाया गया है तो चाहिये कि वह बेखतना सा किये ऊये न होवे; और जो कोई, बेखतनः ऊये, बुलाया गया है तो चाहिये कि वह खतनः न किया जावे; खतना जो है सो कुछ नहीं है और बेखतना जो है १९ सो कुछ नहीं है; परंतु ईश्वरकी आज्ञाओंका पालन करना जो है सोई सार है। चाहिये कि एक एक अपने अपने उस पदमें २० रहे जिसमें वह बुलाया गया है। क्या तू दास हो बुलाया गया २१ है? तो चिंता मत कर; परंतु जो निर्बंध होने सके तो निर्बंध हो क्योंकि वही जो दास हो प्रभुसे बुलाया गया है सोई २२ ईश्वरका निर्बंध है; और वही जो निर्बंध हो बुलाया गया है सोई खीष्टका दास है। तुम बड़े दामसे मोल लिये गये २३ हो; इस लिये मनुष्योंके दास मत होओ। हे भाईयो, २४ चाहिये कि एक एक उस पदमें, जिसमें वह बुलाया गया है, ईश्वरके सन्मुख रहे।

बिना बिवाहके रहनेका बिबरण।

कुआंरियोंके बिषयमें मैंने प्रभुसे कोई आज्ञा नहीं पाई है, २५ परंतु मैं सचाई कहनेका अनुग्रह पायके अपने बिचार बताता हूं। मेरा बिचार यही है कि इस समयके दुःखके कारणसे २६ यही अच्छा है कि मनुष्य बिवाह न करे। तौभी जो तू स्त्रीसे २७ बंधा होय तो उससे छूटनेकी इच्छा मत कर; जो तू स्त्रीसे छूटा है तो स्त्रीसे बंधनेकी इच्छा मत कर। जो तू बिवाह २८ करे तो पाप नहीं करता है; और जो कुआंरी बिवाह करे तो वह भी पाप नहीं करती है; तौभी वे शरीरका दुःख

२९ उठावेंगे;—परंतु तुम्हेंपर मुझे दया आती है। हे भाइयो, मैं यह कहता हूं कि समय जो रह गया है सोई थोड़ा है; इसलिये चाहिये कि जिनकी स्त्री हैं वे स्त्री होनेके
३० नाईं होवें; वे जो रोते हैं सो उनके नाईं होवें जो नहीं रोते हैं; वे जो आनंद करते हैं सो उनके नाईं होवें जो आनंद नहीं करते हैं; वे जो मोल लेते हैं सो उनके नाईं
३१ होवें जो कुछ नहीं रखते हैं; और वे जो इस संसारसे सुख लेते हैं सो उनके नाईं होवें जो सुख नहीं पाते हैं;
३२ क्योंकि इस संसारका सब कुछ जाता रहता है। सो मैं चाहता हूं कि तुम निश्चिंतित होओ। वही जो अनबियाहा है सो प्रभुकी यह चिंता करता है कि मैं किसी रीतिसे प्रभुको
३३ प्रसन्न करूं; परंतु वही जो बियाहा है सो संसारकी यह चिंता करता है कि मैं किसी रीतिसे अपनी स्त्रीको प्रसन्न
३४ करूं। बियाही और अनबियाहीमें यह भेद है, अर्थात, अनबियाही जो है सो प्रभुकी यह चिंता करती है कि किसी रीतिसे मेरे शरीर और आत्मा पवित्र हो जावें; परंतु बिवाही जो है सो संसारकी यह चिंता करती है कि मैं
३५ किसी रीतिसे अपने स्वामीको प्रसन्न करूं। मैं ये बातें कहता हूं कि तुम्हारा परायत होगा, न इस लिये कि मैं तुम्हें फंदेमें भजावे, हां इसलिये कि तुम उचित रूपसे कर्म करो और अचंचल मनसे प्रभुकी सेवा करते रहो।

कन्याके बिवाहका बखान।

३६ जो कोई पिता यह समझता है कि मैं बिवाहमें अपनी पुत्रीको न देनेसे अच्छा नहीं करता हूं क्योंकि वह बहुत स्यानी हो गई है और बिवाहमें उसे देना उचित है तो जो कुछ कि वह करने चाहे सो करे; वह पाप नहीं करता है;
३७ बिवाह करने देओ। परंतु जो कोई पिता परोजनता न रखते हुये, और अपनी इच्छाके अनुसार करने सकते हुये, बिचार करके यह ठानता है कि मैं अपनी पुत्रीको बिवाहमें नहीं
३८ दूंगा तो वह अच्छा करता है। सो वही जो अपनी

पुत्रीको बिवाहमें देता है सोई अच्छा करता है; परंतु वही जो अपनी पुत्रीको बिवाहमें नहीं देता है सोई और अच्छा करता है।

स्त्रियोंके दूसरीबार बिवाह करनेका बिवरण।

जितने दिन स्वामी जीता रहता है इतने दिन स्त्री बि- ३९ वाहके बंधनसे बंधी रहती है, परंतु जो उसका स्वामी मर गया है तो स्त्री छूट गई है; पीछे जिसे चाहे तो उसे बिवाह करे; तौभी केवल बिश्वासीसे बिवाह करने चाहिये। परंतु ४० मेरा बिचार यही है कि जो वह अनबिवाही रहे तो उसका सुख कुछ बड़ा होगा। और मैं जानता हूं कि ऐसा कहनेमें ईश्वरका पवित्र आत्मा मेरे द्वारासे कहता है।

८ आठवां अध्याय।

देवताको निवेदन की हुई वस्तुओंके खानेके कथा।

देवताओंके प्रसादके बिषयमें हम सबोंको ज्ञान है, तौभी १ ज्ञान (आपसे) फूलाता है परंतु प्रेम भलाईमें बढ़ा देता है; इसलिये जो कोई यह समझता है कि मैं कुछ जानता हूं तो २ वह, अबतक जैसा कि जानने चाहिये, तैसाकि कुछ नहीं जानता है; परंतु जो कोई ईश्वरको प्यार करता है तो वही ३ ईश्वरसे सिखाया जाता है। देवताओंके प्रसादके बिषयमें ४ हम यह जानते हैं कि संसारमें देवता जो है सो कुछ नहीं है और कि एक ईश्वरको छोड़ और कोई ईश्वर नहीं है। बहुतसे हैं, आकाशमें और पृथ्वीपर, जो ईश्वर कहलाते ५ हैं, हां, बहुतसे हैं जो ईश्वर और प्रभु कहलाते हैं; परंतु ६ एक ईश्वर हमारा है, अर्थात् पिता, जिससे सब कुछ है और जिसके हम हैं, और एक प्रभु है, अर्थात यीशु खीष्ट, जिसके द्वारासे सब कुछ है और जिसके द्वारासे हम हैं।

दुर्बल लोगोंपर दया करनेकी कथा।

परंतु सबोंको यह ज्ञान नहीं है क्योंकि कोई कोई हैं जो अब ७ तक देवताको कुछ जानके प्रसाद खाते हैं; सो उनके मन दुर्बल

८ हो मलीन होता है। खाना जो है सो हमें ईश्वरका अनुग्रह नहीं कराता है क्योंकि खानेसे हम न भले होते और न
९ खानेसे हम न बुरे होते हैं। सावधान होओ कि तुम प्रसाद
१० खा करके दुर्बल लोगोंके मार्गमें ठोकर नहीं लगाओ क्योंकि जो कोई तुझे, जिसको ज्ञान है, देवताके घरमें भोजन पर बैठा हुआ देखे तो क्या उसका दुर्बल मन जो है सो साहस
११ करके देवताओंके प्रसाद नहीं खायगा? इसी भांतिसे तेरा दुर्बल भाई, जिसके लिये खीष्ट मरा, तेरे ज्ञानसे नष्ट होगा।
१२ सो तो भाईयोंके बिरुद्ध यों पाप करनेसे, और उनके दुर्बल मनपर चोट लगानेसे, तुम खीष्टके बिरुद्ध पाप करते हो।
१३ इसलिये जो मैं, प्रसाद खानेसे, अपने भाईके मार्गमें ठोकर लगाऊं तो मैं कभी प्रसाद न खाऊंगा; हां, मैं ऐसा कभी न करूंगा, न हो कि मैं अपने भाईके मार्गमें ठोकर लगाऊं।

९ नवां अध्याय।

सुसमाचार प्रचारसे सुसमाचार प्रचारकोंके उपजीवनका विवरण।

१ क्या मैं प्रेरित नहीं हूं? क्या मैं निर्बंध नहीं हूं? क्या मैंने हमारा प्रभु योशु खीष्टको नहीं देखा है? क्या तुमने मेरे
२ द्वारासे प्रभुपर बिश्वास न किया? जो मैं और लोगोंके निकट प्रेरित नहीं हुआ हूं तो निश्चय करके मैं तुम्हारे निकट प्रेरित हुआ हूं क्योंकि तुम प्रभुपर बिश्वास करके मेरे प्रेरितताका
३ छाप हुये हो। उन्होंको, जो मेरे बिचार करते हैं, मेरा
४ उत्तर यही है, अर्थात, क्या खाने पीनेका अधिकार जो है सो
५ हमारा नहीं है? क्या जैसेकि और प्रेरित अर्थात प्रभुके भाई और कैफा करते हैं तैसेकि हम किसी धर्म बहिनको बिवाह
६ करके साथ साथ ले जानेका अधिकार नहीं रखते हैं? मुझे और बरणबाको छोड़, क्या और सबोंका यह अधिकार है
७ कि काम काज न करें? कौन वही है जो अपने धन उड़ाता हुआ कभी सिपाहीका कर्म करता है? कौन वही है जो दाखकी बारी लगाके उसका फल नहीं खाता है? कौन वही

है जो पशुओंका झुंड पालन करता है और उसका दूध नहीं पीता है? क्या मैं केवल मनुष्योंकी रीतियोंके अनुसार ८ ये बातें कहता हूं? अथवा क्या व्यवस्था भी इन्हें नहीं कहती है? मूसाकी व्यवस्थामें यह तो लिखा है, कि दाओनेहारे ९ बैलका मुख मत बांधो; क्या ईश्वर केवल बैलोंकी चिंता करता है? अथवा क्या उसने हमारे लिये यह नहीं कहा है? १० अवश्य है कि यह हमारे लिये लिखा गया है इसलिये कि वही जो जोतता है सो भरोसासे जोते, और वही जो दाओता है सो इस भरोसासे दाओते कि मैं कुछ कुछ पाऊं। जो हमने तुम्हारे बीचमें परमार्थी बीज बोया है तो क्या यह ११ बड़ी बात है कि हम तुम्हारे संसारिक फलसे कुछ पावें? जो १२ और लोग तुम्हारे ऊपर अधिकार रखते हुये कुछ पाते हैं तो क्या हम कुछ नहीं पावेंगे?। हमने अपने अधिकारके अनुसार कुछ न किया है; हां, हम सब कुछ सहते हैं इसलिये कि हम ख्रीष्टके सुसमाचारके फैलावनेमें ठोकर सा न होवें। क्या १३ तुम नहीं जानते हो कि वे जो मंदिरमें सेवा करते रहते हैं सोई मंदिरमेंसे खाते हैं; और कि वे जो बेदीकी सेवा करते हैं सोई बेदीके बलिदानोंसे कुछ पाते हैं?। ऐसाही प्रभुने यह १४ ठहराया है कि वे जो सुसमाचारका प्रचार करते रहते हैं सोई उन्होंसे, जिन्होंको सुसमाचारकी बात सुनाई जाती है, जीविका पावें।

बिन धन पानेसे पौलका सुसमाचार प्रचार कर्ना।

परंतु मैंने सुसमाचार-प्रचार करनेसे कुछ नहीं लिया है; १५ और मैंने ये बातें नहीं लिखा है कि मुझको कुछ दिया जाय; क्योंकि मेरा मरणा इससे भला है कि कोई मेरी बड़ाई व्यर्थ करे। जो मैं सुसमाचारका प्रचार करूं तो इसके लिये मुझ १६ को बड़ाई करनेका स्थान नहीं है क्योंकि प्रचार करनेका बोझ मुझपर रखा गया है, हां, हाय हाय मुझको, जो मैं सुसमाचारका प्रचार न करूं। जो मैं स्वेच्छासे यह करूं तो १७ फल पाऊंगा; परंतु कुइच्छासे करूं तौभी सुसमाचारके

१८ प्रचार करनेका बोझ मुझपर रखा गया है। सो मेरा फल क्या है? यह, अर्थात, कि मैं बे पैसेसे खीष्टके सुसमाचारका प्रचार करता हूं; इससे मैं अपने उस अधिकारको, जो मैं सुसमाचारके प्रचार करनेसे रखता हूं, कुरीतिसे नहीं चलाता हूं।

सब प्रकार लोगोंको तुष्ट करनेका यत्न करना।

१९ मैं किसीका दास नहीं हूं तौभी मैंने अपनेको सबोंका दास
२० किया है इसलिये कि मैं बहुतेरोंको अपना कर लेऊं। मैं यिहूदियोंके बीचमें यिहूदी सा हुआ इसलिये कि मैं यिहूदियोंको अपना कर लेऊं; मैं व्यवस्थाके अधीनोंके बीचमें व्यवस्थाका अधीन सा हुआ इसलिये कि मैं व्यवस्थाके अधीनों
२१ को अपना कर लेऊं; मैं ईश्वरकी व्यवस्थाका अधीन हो, हां, खीष्टकी व्यवस्थाका अधीन हो, व्यवस्था हीन लोगोंके बीचमें व्यवस्था हीन सा हुआ इसलिये कि मैं व्यवस्था हीन लोगोंको
२२ अपना कर लेऊं; मैं दुर्बल लोगोंके बीचमें दुर्बल सा हुआ इसलिये कि मैं दुर्बल लोगोंको अपना कर लेऊं; हां, मैं सब लोगोंके बीचमें सब सा हुआ इसलिये कि किसी
२३ प्रकारसे उन्होंमेंसे किसी किसीको बचाऊं। मैं सुसमाचारके प्रचार करनेमें यत्न करता हूं इसलिये कि मैं उसके फलका भागी होऊं।

खीष्टीयान् लोगोंकी यात्रा औ मल्लयुद्धकी कथा।

२४ क्या तुम नहीं जानते हो कि सब मनुष्योंमेंसे जो दौड़में दौड़ते हैं केवल एक मनुष्य दावं पाता है; सो तुमभी
२५ ऐसा दौड़ो कि दावंको पावो। जो कोई जीता चाहता है सोई अपनेको संजमी रखता है; वे तो यत्न करते हैं इसलिये कि नाशमान मुकुटको पावें; परंतु हम यत्न करते
२६ हैं इसलिये कि अबिनाशी मुकुटको पावें। सो मैं भी दौड़ता हूं परंतु बेठिकानासे नहीं; और मैं लड़ता हूं परंतु ऐसा
२७ नहीं जैसा कि कोई पवनको मारता है। मैं अपने शरीरको दबाय रखता हूं और बशमें लाता हूं, न हो कि मैं औरोंको सुसमाचार करके आप अग्राह्य होऊं।

१० दशवां अध्याय।

यिहूदियोंका अनुग्रह पाना, औ उनको दोषकी कथा।

हे भाईयो, मैं नहीं चाहता हूं कि तुम इससे अनजान १
रहो कि हमारे सब पित्र लोग जो थे सो मघके नीचे थे, और
समुद्रके बीचमें होके चल निकले, और मेघ औ समुद्रमें २
मूसाके पीछे जानेहारे हो डुबकी खाई; सबोंने भी एकही ३
प्रकारका परमार्थी भोजन खाया और एकही प्रकारका ४
परमार्थी पान पीया, अर्थात, उन्होंने उस परमार्थी नदीमेंसे
पीया जो पर्बतसे निकली; यही पर्बत जो था सो खीष्ट सा
था। परंतु ईश्वर उन्होंमेंसे बहुतोंसे अप्रसन्न हुआ इसलिये ५
वे जंगलमें मारे पड़ें।

हमें सावधान करनेको उनके दोष कहना।

इन बातोंसें हम चिताये जाते हैं कि न बुरी बस्तुओंकी ६
इच्छा करें जैसा कि उन्होंने इच्छा किई। सो तुम देवपूजक ७
मत होओ जैसाकि उन्होंमेंसे कोई कोई थे; उन्होंके बिषयमें
यह लिखा है कि लोग खाने पीने पर बैठ करके खेलनेको
उठे। न हम ब्यभिचार करें जैसाकि उन्होंमेंसे किसी किसीने ८
ब्यभिचार किया और एक दिनमें तीस सहस्र लोग मारे
पड़े। न हम खीष्टकी परीक्षा करें जैसाकि उन्होंमेंसे किसी ९
किसीने उसकी परीक्षा किई और सांपोंसे नष्ट हुये। न १०
कुड़कुड़ाओ जैसाकि उन्होंमेंसे किसी किसीने कुड़कुड़ाया,
और नाशकसे मार डाले गये। इनसब बातोंसे हम चिताये ११
जाते हैं, और वे हमको, जिन्हों पर जगतके अंत समय
आन पड़ा है, उपदेश देनेको लिखे गये हैं। सो तो जो १२
कोई अपनेको सुस्थिर जानता है चाहिये कि सावधान
हो कि न गिर पड़े। तुम किसी परीक्षामें न पड़े १३
हो उनको छोड़ जिन्होंमें मनुष्य पड़ते हैं; और ईश्वर
सच्चा है, वह तुमको ऐसी परीक्षामें पड़ने नहीं देगा
जिसमेंसे निकल न जा सकोगे; हां वह आपही परीक्षा-

मेंसे निकल जानेका ऐसा मार्गभी बनावेगा कि तुम सहने सको।

प्रभुके भोजनका विवरण।

१४ सो, हे पियारे भाइयो, देवपूजासे भागो। मैं तुमको १५ बुद्धिमान सा जानके ऐसा बात बोलता हूं; जो कुछ कि १६ मैं कहता हूं उसका बिचार करो। वही पात्र जिसके ऊपर हम धन्यबाद करते हैं क्या सोई खीष्टका लोहू सा नहीं है जिसके द्वारासे हम सबोंका परापत है? और वही रोटी जिसको हम तोड़ते हैं क्या सोई खीष्टका शरीर सा नहीं १७ है जिसके द्वारासे हम सबोंका परापत हैं। जैसोंकि वह रोटी एक है तैसेहि हमभी, जो बहुत हैं, एक शरीर सा हैं; क्योंकि हम सब जो हैं सो उस एक रोटीके भागी हैं। १८ इस्रायेली लोगोंको देखो; वे जो बलिदानोंके खानेहारे हैं क्या सोई उसी अनुग्रहके भागी नहीं हैं जो यज्ञबेदीके १९ द्वारासे होता है?। सो मैं क्या कहता हूं? क्या मैं यह कहता हूं कि देवता जो है सो कुछ है अथवा कि प्रसाद जो २० है सो कुछ है? सो नहीं; परंतु मैं यह कहता हूं कि वही बलिदान जो अन्यदेशी लोग चढ़ाते हैं सोई ईश्वरको नहीं परंतु भूतोंको चढ़ाये जाते हैं; इसलिये मैं यह नहीं चाहता हूं कि तुम उस बुराई के भागी हो जो भूतोंके २१ द्वारासे होती है। तुम प्रभुके पात्रमेंसे और भूतोंके पात्रमेंसे पीने नहीं सकते हो; न प्रभुकी रोटी न भूतोंकी रोटी खा २२ सकते हो। क्या हम प्रभुको क्रोधित करेंगे? क्या हम उससे और बलवंत हैं?।

देवताको निवेदनकी भई सामग्री खानेका निषेध करना।

२३ सब प्रकारका खाना मुझको दिया गया है परंतु सबसे मेरा परापत नहीं है; हां सब प्रकारका खाना मुझको दिया गया है परंतु सब मुझे भलाईसें नहीं बढ़ा देता है। २४ इसलिये चाहिये कि कोई केवल अपने स्वार्थको नहीं ढूंढ़े परंतु एक एक अपने अपने भाईपर भलाई करनेको ढूंढ़े।

सब कुछ कि हाटमें बिक जाता है सोई खाओ और कुछ मत २५ पूछो न हो कि दुबधामें पड़ो क्योंकि पृथ्वी जो है और २६ जो कुछ कि उसमें है सो प्रभुका है। जो अबिश्वासियोंमेंसे २७ कोई तुम्हें नेवता करे और तुम जाने चाहो तो जो कुछ कि तुम्हारे सन्मुख रखा जावे सो खाओ और कुछ मत पूछो न हो कि दुबधामें पड़ो। परंतु जो कोई तुम्हें कहे कि २८ यह तो प्रसाद है तो कहनेहारे लिये मत खाओ न हो कि वह दुबधामें पड़े; क्योंकि पृथ्वी जो है और जो कुछ कि उसमें है सो प्रभुका है; हां, मैं नहीं कहता हूं कि मत खाओ इसलिये कि तू आपही दुबधामें न पड़े, परंतु मैं २९ यह कहता हूं कि मत खाओ इसलिये कि तेरा नेवता करनेहारा जो है सो दुबधामें न पड़े क्योंकि खानेका जो मेरा अधिकार है सो दूसरेके मनके अधीन क्यों होवेगा? जो मैं अनुग्रह पायके खाऊं तो जिस बस्तुके लिये मैं धन्य- ३० बाद करूं उसे खानेसे क्यों मैं दोषी ठहराया जाऊंगा?। सो तुम क्या खावो, क्या पीवो, क्या और कुछ करो सबही, ३१ ईश्वरकी महिमा प्रकाश करनेको करो। न यिहूदियोंको, ३२ न यूनानियोंको, न ईश्वरकी मंडलीको ठोकर सा मत होओ; जैसाकि मैं अपने फलाफलको नहीं ढूंढ़ता हूं परन्तु सबोंको ३३ प्रसन्न करके उन्होंको परायत करानेको ढूढ़ता हूं इसलिये कि मैं उन्हें बचाऊं तैसेकि तुमभी करो; और जैसाकि मैं ख्रीष्टके पीछे जाता हूं तैसेकि तुमभी मेरे पीछे हो लेओ।

११ एग्यारहवां अध्याय।

पुरुषोंका मस्तक खुला रहना, औ स्त्रियोंके मस्तक ढके रहनेकी आवश्यकता।

हे भाईयो, मैं तुम्हारी प्रसंसा करता हूं इसलिये कि १ तुम सब बातोंमें मेरा स्मरण करते हो और कि उन बातोंको, २ जो मैंने तुम्हें सौंपी, मानते हो। मैं चाहता हूं कि तुम यह ३ जानो कि ख्रीष्ट जो है सो पुरुषका सिर सा है; और

पुरुष जो है सो स्त्रीका सिर सा है; और ईश्वर जो है सो
४ ख्रीष्टका सिर सा है। जो कोई पुरुष अपने सिरको ढांपके
प्रार्थना अथवा उपदेश करे तो अपने सिरका अपमान करता
५ है; और जो कोई स्त्री नंगे सिर प्रार्थना अथवा उपदेश
करे तो अपने सिरका अपमान करती है, यह ऐसा है
६ जैसाकि उसका सिर मुंडा हुआ है; जो स्त्री अपने सिरको न
ढांपे तो चाहिये कि मुंडी जावे? परंतु जो यह अपमान होता
है कि स्त्रीका बाल काटा जाय अथवा मुंडा जाय तो चाहिये
७ कि सिर ढांपा जाय। पुरुषको न चाहिये कि अपने सिर
ढांपे क्योंकि वह ईश्वरकी समानता और गौरव सा है परंतु
८ स्त्री जो है सो पुरुषका गौरव सा है। पुरुष जो है सो
९ स्त्रीसे नहीं परंतु स्त्री जो है सो पुरुषसे है; और पुरुष
जो है सो स्त्रीके लिये उत्पन्न नहीं हुआ परंतु स्त्री जो
१० है सो पुरुषके लिये उत्पन्न हुई है। सो चाहिये कि
११ दूतोंके लिये स्त्री अपने सिर ढांपे। तौभी प्रभुकी बिधिके
अनुसार पुरुष जो है सो स्त्रीसे अलग नहीं है और स्त्री
१२ जो है सो पुरुषसे अलग नहीं है क्योंकि जैसाकि स्त्री जो
है सो पुरुषसे है तैसा पुरुष जो है सो स्त्रीसे है परंतु
१३ सब जो हैं सो ईश्वरसे हैं। तुम आपही बिचार करो;
क्या उचित है कि स्त्री नंगे सिर ईश्वरके सन्मुख प्रार्थना
१४ करे? क्या तुम आपसे नहीं जानते हो कि जो पुरुषका बाल
१५ लंबा होय तो यह उसका अपमान है? परंतु जो स्त्रीका
बाल लंबा होय तो यह उसकी शोभा है क्योंकि उसका
१६ बाल जो है सो उसे ढांपनेको दिया गया है। जो इसमें
कोई झगड़ा करने चाहे तो चाहिये कि वह जाने कि
न हम, न ईश्वरकी मंडली जो है, सो इस प्रकारका ब्यवहार
करते हैं।

प्रभुके भोजके विषयमें करिन्थियों पर अनुयोग।

१७ मैं यह सुनाता हुआ प्रसंसा नहीं करता हूं, अर्थात,
कि तुम्हारे एकठे आनेपर तुम अपनेको भलाई करनेको

नहीं परंतु बुराई करनेको आते हो। पहिले मैंने सुना १८
है कि मंडलीमें तुम्हारे एकठे आनेपर तुम्होंमें बिभाग होते
हैं; और मैं इसका कुछ कुछ सच जानता हूं। अवश्य तो है १९
कि तुम्हारे बीचमें बिभाग होवे इसलिये कि वे मनुष्य, जो
तुममें सच्चे दिखाये गये हैं, जाने जायें। तुम्हारे एकठे होनेपर २०
यह तो प्रभुकी बियारी खानेको नहीं है क्योंकि खानेमें एक २१
दूसरेसे पहिले अपनी बियारी खा लेता है और एक भूखा
रहता है और दूसरा तृप्त होता है। क्या घर तुम्हारे नहीं २२
हैं जिन्होंमें तुम खा पी सकते हो? अथवा क्या तुम ईश्वरकी
मंडलीको तुच्छ जानते हुये उन्होंको, जिनके निकट कुछ
नहीं है, लज्जित कराते हो? इसके बिषयमें मैं तुमसे क्या
कहूंगा? क्या मैं इसमें तुम्हारी प्रसंसा करूंगा? मैं तुम्हारी
प्रसंसा नहीं करूंगा।

जो किसरीतिसे भोजन करना होगा उसका निर्णय करना।

जो कुछ कि मैंने प्रभुसे पाया सोई मैंने तुमको सौंप दिया २३
अर्थात कि जिस रातमें प्रभु यीशु पकड़वाया गया उसी
रातमें उसने रोटी लिई और ईश्वरका धन्यबाद करके उसे २४
तोड़ी और कहा कि यह लेके खाओ, यह मेरा शरीर सा
है जो तुम्हारे लिये तोड़ा जाता है, मेरा स्मरण करनेको यह
करो; और खानेके पीछे उसने कटोरा भी लेके कहा कि यह २५
कटोरा जो है सो मेरे लोहूका नया नियम सा है। जितनी
बार तुम ऐसा करके पीवो, इतनी बार मेरा स्मरण करनेको
यह करो; जितनी बार तुम यह रोटी खावो और इस २६
कटोरेमेंसे पीवो, इतनी बार तुम प्रभुके आने तक उसकी मृत्यु
की बातका प्रचार करते हो। और जो कोई कुरीतिसे यह २७
रोटी खावे अथवा प्रभुके इस कटोरेमेंसे पीवे तो वही प्रभुके
शरीर और लोहूके बिषयमें दंड जोग होगा। सो चाहिये २८
कि मनुष्य पहिले अपने मनकी दशाका बिचार करे, पीछे
रोटीसे खावे और कटोरेमेंसे पीवे। जो कोई कुरीतिसे खाता २९
और पीता है सोई प्रभुके शरीरके बिषयमें बिचार न करके

३० दंड सा खाता और पीता है। इस लिये तुममें बहुतेरे दुर्बल
३१ और पीड़ित हैं और बहुतसे सो गये हैं। जो हम आपही
अपने मनकी दशाका बिचार करें तो दंड नहीं उठाते;
३२ परंतु हमही जो दंड उठाते हैं, सोई प्रभुसे चिताये जाते हैं
इस लिय कि हम संसारिक लोगोंके संग दंड नहीं उठावें।

उसके विषयमें पौलका उपदेश।

३३ सो, हे मेरे भाईयो, भोजन करनेको तुम्हारे एकठे आनेपर
३४ एक दूसरेसे पहिले मत खा। जो कोई भूखा होवे तो
चाहिये कि अपने घरमें खावे इसलिये कि एकठे होनेके
कारणसे दंड न पावो। जो जो बातें रह गई हैं सो सो
मैं आके सुधारूंगा।

१२ बारहवां अध्याय।

आत्माके नाना प्रकारके दानका विवरण।

१ हे भाईयो, मैं नहीं चाहता हूं कि तुम पवित्र आत्माके
२ दानोंके विषयमें अनजान रहो। तुम जानते हो कि तुम
आपही अन्यदेशी हो, अपने व्यवहारके अनुसार, गूंगे मूरतोंको
३ सेवा करते रहते थे। सो मैं तुम्हें जनाता हूं कि वही जो
ईश्वरके आत्माको शिक्षाईसे बोलता है सोई यीशुको शापित
नहीं कहता है; और जो कोई यीशुको प्रभु कहता है
४ सोई पवित्र आत्माको शिक्षाईसे बोलता है। आत्माके दान जो
हैं सो नाना प्रकारके हैं परंतु आत्मा जो है सो एक है;
५ और सेवा जो हैं सो नाना प्रकारके हैं परंतु प्रभु जो है
६ सो एक है; और कर्म जो हैं सो नाना प्रकारके हैं परंतु
वही ईश्वर जो सबोंमें सब कुछ कराता है सोई एक है।
७ आत्माके दान जो हैं सो एक एक मनुष्यको दिये जाते
८ हैं इसलिये कि सबोंका परापत होवे। आत्माके द्वारासे
किसीको बुद्धिकी बात दिई जाती है; किसीको, एकही
९ आत्माके द्वारासे, ज्ञानकी बात; किसीको, एकही आत्माके
द्वारासे, बिश्वास; किसीको, एकही आत्माके द्वारासे, चंगा

करनेके दान; किसीको, आश्चर्य कर्म करनेके दान; किसीको १० भविष्यद्वाक्य कहनेके दान; किसीको आत्माओंको जाननेके दान; किसीको नाना देशोंकी भाषा बोलनेके दान; और किसीको भाषाओंके अर्थ कहनेके दान दिये जाते हैं। इसी ११ प्रकारसे वही एक आत्मा जो है सोई अपनी इच्छाके अनुसार एक एक मनुष्यको एक एक दान देते ऊये ये सब कर्म करता है।

शरीर पूरण करनेके लिये जैसे नाना अंगोंका प्रयोजन है वैसेही मंडलीके पूरणके लिये नाना दानका प्रयोजन है।

जैसाकि शरीर एक है और उसके अंग बऊतसे हैं, परंतु १२ ये बऊतसे अंग जो हैं सो एक शरीर होते हैं, वैसाही खीष्ट भी है। हम जो हैं, क्या यिहूदी होवें, क्या यूनानी १३ होवें, क्या दास होवें, क्या निर्बंध होवें, सोई एकही आत्मामें डुबकी खायके एक शरीर सा ऊये हैं और एक आत्मासे पिलाय गये हैं। शरीर जो है सो एक अंग नहीं है १४ परंतु बऊतसे अंग हैं। सो तो जो पांव यह कहे कि मैं हाथ १५ नहीं हूं इसलिये मैं शरीरका नहीं हूं तो क्या पांव जो है सो इस कारणसे शरीरका नहीं है? और जो कान यह कहे १६ कि मैं नेत्र नहीं हूं इसलिये मैं शरीरका नहीं हूं तो क्या कान जो है सो इस कारणसे शरीरका नहीं है? जो सारा १७ शरीर जो है सो नेत्र होता तो सुनना कहां होगा? और जो सुनना होता तो सूंघना कहां होगा?। परंतु ईश्वरने १८ अपनी इच्छाके अनुसार शरीरके बीचमें एक एक अंग रखे हैं। जो सब अंग जो हैं सो एक अंग होते तो शरीर कहां १९ होगा? इसलिये बऊतसे अंगोंसे एक शरीर ऊआ है। २० नेत्र जो है सो हाथसे यह नहीं कह सकता है कि मैं तेरा २१ प्रयोजन नहीं रखता; और सिर जो है सो पांवओंसे यह नहीं कह सकता है कि मैं तुम्हारा प्रयोजन नहीं रखता; परंतु शरीरके जो जो अंग बऊत दुर्बल हैं सो सो बऊत २२ आवश्यक हैं। और शरीरके जो जो अंग बऊत कुदृश्य हैं हम २३

उन्होंको अधिक शोभा देते हैं; इससे वेही अंग जो कुदृश्य हैं
२४ सोई सुदृश्य होते हैं। वेही अंग जो सुदृश्य हैं उनको शोभा
देनेको हमें आवश्य नहीं है। परंतु ईश्वरने आदर हीन अंगों-
२५ को आदर देके शरीरको ऐसा बनाया कि शरीरमें बिभाग
न होवे और कि सब अंग मिलके एक दूसरेका उपकार करे।
इससे जो एक अंग दुःखी होवे तो सब अंग दुःखी होते
२६ हैं और जो एक अंग सुख पावे तो सब अंग सुख पाते हैं।
२७ सो तुम अंग अंग हो खीष्टका शरीर सा ऊये हो। ईश्वरने
२८ मंडलीमें पहिले प्रेरितोंको, फिर भविष्यद्वक्ताओंको, फिर
उपदेशकोंको ठहराया है; इनके पीछे आश्चर्य कर्म करने-
हारोंको, तब चंगा करनेहारोंको, उपकार करनेहारोंको,
२९ प्रधानोंको और नाना भाषा बोलनेहारोंको। इनमेंसे क्या
सबही प्रेरित हैं? क्या सबही भविष्यद्वक्ता हैं? क्या सबही
३० उपदेशक हैं? क्या सबही आश्चर्य कर्म करनेहारे हैं? क्या
सबही चंगा करनेहारोंके दान रखनेहारे हैं? क्या सबही
नाना भाषा बोलनेहारे हैं? क्या सबही भाषाका अर्थ कहने-
३१ हारे हैं?। सो अच्छेसे अच्छे दानोंकी लालसा करो; और मैं
अब तुम्हें एक मार्ग बताता हूं जो बऊत अच्छा है।

१३ तेरहवां अध्याय।

संपूर्ण परमार्थके दानसे औ गुणसे प्रेमकी उत्तमता।

१ जो मैं मनुष्योंके और स्वर्गी दूतोंकी बोली बोलऊं और प्रेम
न करऊं तो मैं पीतलकी बजानेहारी तुरही अथवा ठंठनाती
२ झांझ सा हूं; और जो मैं भविष्यद्वाक्यमें, और सब प्रकारकी
गुप्त बातोंमें, और सब प्रकारकी बिद्यामें निपुण हूं और
इतने बिश्वास रखऊं कि मैं पर्बतोंको सरकाऊं और प्रेम न
३ करऊं तो मैं कुछ नहीं हूं; और जो मैं अपनी सब संपति
दान करके कंगालोंको देऊं, और अपने शरीर जलनेको दे
देऊं, और प्रेम न करऊं, तो मुझे कुछ फल न होगा।

उसके फलोंका बिबरण, औ बिश्वास औ भरोसेसे उसकी श्रेष्ठता ।

प्रेम धीरजवंत और हितदायक है; प्रेम डाह नहीं करता ४ है; प्रेम बड़ाई और अहंकार नहीं करता है; कुचाल नहीं ५ चलता है; अपना स्वार्थ नहीं ढूंढता है; झटसे क्रोध नहीं करता है; दूसरेपर दोष नहीं लगाता है; बुराईपर आनंद ६ नहीं करता है; सचाईपर हर्ष करता है; सबोंके बिषयमें ७ क्षमा करता है; सबोंके बिषयमें प्रतीति करता है; सबोंके बिषयमें भरोसा करता है; और सबोंके बिषयमें सब कुछ सहता है। भबिष्यद्वाक्यके दान जो हैं सो जाते रहेंगे; नाना ८ भाषाओंके बोलनेके दान जो हैं सो नहीं दिये जायेंगे; और ज्ञानकी बातके दान जो हैं सो लोप हो जायेंगे परंतु प्रेम जो है सो सदा रहेगा। हम थोड़ा सा जानते हैं और आगमकी ९ बात थोड़ीसी करते हैं परंतु जब वह जो संपूर्ण है आवेगा १० तब वह जो अल्प है जाता रहेगा। जब मैं बालक था तब ११ मैंने बालककी नाईं बात किई और बालककी नाईं बूझा और बालककी नाईं बिचार किया परंतु जब मैं स्याना हुआ तब मैंने बालककी बात दूर किई। जैसाकि कोई अबरकके १२ द्वारासे किसी बस्तुको देखता है तैसाकि हम अब देखते हैं परंतु उस समय आमने सामने देखेंगे। अब मैं थोड़ा सा जानता हूं परंतु जैसाकि मैं जाना जाता हूं तैसाकि उस समय में जानूंगा। अब बिश्वास और आशा और प्रेम हैं, ये तीन १३ रहते हैं, परंतु उन्होंके बीचमें प्रेम जो है सो सबसे बड़ा है।

१४ चौदहवां अध्याय।

नाना भाषाके कहनेसे उपदेश देनेकी श्रेष्ठता।

प्रेम करके पबित्र आत्माके दानोंकी इच्छा करो; परंतु सबसे १ यही अच्छा जानके उसकी इच्छा करो अर्थात् कि तुम उपदेश दे सको। वही जो अनजानी बोलियां बोलता है सोई मनुष्यों २ को नहीं बोलता है, वह ईश्वरको बोलता है क्योंकि कोई उसकी बात न समझता है, वह आत्मासे गुप्त बात बोलता है।

३ परंतु वही जो उपदेश देता है सोई मनुष्योंको शिक्षा और
४ चितावनी और शांतिकी बात देता है। वही जो अनजानी
बोली बोलता है सोई अपनेको भलाई करता है परंतु वही
५ जो उपदेश देता है सोई मंडलीको भलाई करता है। मैं यह
चाहता हूं कि तुम सब जो है सो अनजानीं बोलियां बोलने-
हारे होते परंतु मैं यह बहुत चाहता हूं कि तुम उपदेश
देनेहारे होते। वही जो उपदेश देता है सोई उससे बड़ा है
जो अर्थ न समझाके अनजानीं बोलियां बोलता है; ऐसा
करनेसे मंडलीके लोग लाभ नहीं पाते हैं।

औ उपदेश देके लोगोंको बुझानेकी आवश्यकता।

६ हे भाईयो, जो मैं अनजानीं बोलियां बोलता हुआ
तुम्हारे निकट आऊं, और न बुद्धिकी बात, न ज्ञानकी बात,
न उपदेशकी बात, और न शिक्षाकी बात कहऊं तो मुझसे
७ तुमको कौन सा लाभ होता है?। जो वेही बस्तु जो निर्जीव
हैं, अर्थात तुरही अथवा बीणा, बजानेमें राग रंग न करें तो
जो कुछ कि फूंके अथवा बजाये जाते हैं सो किस भांतिसे
८ जाने जांये। जो तुरहीका शब्द न समझा जाता है तो कौन
वही है जो लड़ाई करनेको अपने ताईं तैयार करेगा?।
९ वैसाही जो तुम अनजानीं बोलियां बोलते हुये नहीं समझा-
वो तो जो कुछ कि कहा गया है सो किस भांतिसे जाने
१० जांये? तुम तो पवनसे बोलनेहारोंकी नाईं हो। जगतमें
बहुत प्रकारकी बोलियां हैं और उनमेंसे एक नहीं है जो
११ अनर्थ है; परंतु जो मैं बोलनेहारेकी बोली न समझऊं तो
मैं उसके समझमें मूर्ख होंगा और वह मेरे समझमें मूर्ख
१२ होगा। सो जो तुम पवित्र आत्माके दानोंकी इच्छा करो
तो उन दानोंकी इच्छा करो जिन्होंके द्वारासे तुम मंडलीको
१३ भलाई करावो। इस लिये चाहिये कि वही जो अनजानीं
बोलियां बोलनेहारा होय यह प्रार्थना करे कि समझानेकी
१४ शक्ती पावे। जो मैं अनजानी बोली बोलता हुआ प्रार्थना
करऊं तो मेरा मन प्रार्थना करता है परंतु मैं किसीको लाभ

नहीं करता हूं। सो तो क्या है? मैं आत्मासे प्रार्थना करूंगा, १५ हां अर्थभी समझाता हुआ प्रार्थना करूंगा; और मैं आत्मासे भजन करूंगा, हां अर्थभी समझाता हुआ भजन करूंगा। नहीं तो, जो तू आत्मासे धन्यबाद करे तो १६ वही जो अनसिख है सो, तेरी बात न समझता हुआ, किस भांतिसे तेरे धन्यबादके कहनेपर आमीन कह सकेगा? तू तो भली प्रकारसे ईश्वरका धन्यबाद करता है परंतु १७ दूसरेको लाभ न होता है। मैं अपने ईश्वरका धन्यबाद १८ करता हूं कि मैं अनजानीं बोलियोंमें तुम सबोंसे अधिक बोलता हूं परंतु मंडलीमें पांच बातें कहना, जिन्होंके द्वारासे १९ लोगोंको लाभ होवे, यही मैं भला जानता हूं कि अनजानी बोलीकी दस सहस्र बातें कहनेसे।

बुझानेका फल।

हे भाईयो, मनमें बालकोंकी नाईं मत होओ; परंतु २० बुराईके बिषयमें बालकोंकी नाईं होओ, हां मनमें स्याने होओ। धर्म पुस्तकमें यह लिखा है कि प्रभु यह कहता है कि २१ मैं अनजानीं बोलियों और होंठोंसे इस लोगको बात करूंगा परंतु वे मेरी न सुनेंगे। सो अनजानीं बोलियोंके दान २२ जो हैं सो चिन्ह सा हैं बिश्वासियोंके लिये नहीं परंतु अबिश्वासियोंके लिये हैं; उपदेश देनेके दान जो हैं सो अबिश्वासियोंके लिये नहीं परंतु बिश्वासियोंके लिये हैं। जो २३ सब मंडली एकठी हो एक एक मनुष्य अनजानी बोली बोले और इतनेमें कोई अनसिख अथवा कोई अबिश्वासी भीतर आवे तो क्या वे नहीं कहेंगे कि तुम बौड़हे हो गये हो? परंतु २४ जो एक एक मनुष्य उपदेश करे और कोई अबिश्वासी अथवा कोई अनसिख भीतर आवे तो वह सबोंसे निश्चय किया जाता है और सबोंसे दोषी ठहराया जाता है, और उसके २५ मनकी गुप्त बात प्रगट किई जाती है; सो वह मुखके बल गिरके ईश्वरको दंडवत करेगा और यह कहेगा कि सत है, ईश्वर तुम्हारे बीचमें रहता है।

उपदेश औा भाषा कहनेके विषयमें पैालकी कथा।

२६ सो तो, हे भाईयो, क्या है? तुम्हारे एकठे आनेपर कोई कोई भजन करता, कोई कोई उपदेश देता, कोई कोई अनजानी बोली बोलता, कोई कोई भविष्यद्वाक्यकी बात बोलता, और कोई कोई अनजानी बोलीका अर्थ समझाता है;
२७ चाहिये कि सब कुछ भलाई करानेको किया जावे। जो कोई अनजानी बोली बोले तो चाहिये कि वह केवल दे दे अथवा तीन तीन पद, बारी बारी करके, बोले और दूसरा
२८ मनुष्य अर्थ बतावे; जो कोई अर्थ बतानेहारा निकट न होवे तो अनजानी बोली बोलनेहारा जो है सो मंडलीमें चुपका
२९ रहा, और आपसे और ईश्वरसे बोले। चाहिये भी कि उपदेशकोंमेंसे दे दे अथवा तीन तीन, बारी बारी करके, उपदेश करे और और लोग जो निकट हैं सो सुनते हुये
३० बिचार करें। जो किसी बैठनेहारेको कुछ, ईश्वरकी ओर से, प्रकाशित किया जावे तो चाहिये कि वह पहिले चुपका
३१ रहे; तुम सब, एक एक करके, उपदेश दे सकते हो, ऐसा कि
३२ सब जो हैं सो शिक्षा और उपदेश पावें। उपदेशकोंके मन जो हैं सो उपदेशकोंके बशमें हैं। क्योंकि ईश्वर जो है सो
३३ गड़बड़ाहटसे प्रसन्न नहीं है परंतु बिधिसे प्रसन्न है।

मंडलीमें स्त्रीलोगोंके प्रचार न करनेकी कथा।

३४ जैसाकि पबित्र लोगोंकी सब मंडलीयोंमें है तैसाकि यह चाहिये कि तुम्हारी स्त्रीयां जो हैं सो मंडलीयोंमें चुपकी रहें; बात सुनाना उनको नहीं दिई गई है परंतु जैसीकि व्यवस्था कहती है तैसीकि उनको आधीन होना चाहिये।
३५ जो वे बात सीखने चाहें तो चाहिये कि वे अपने घरमें अपने स्वामियोंसे पूछें क्योंकि अनुचित है कि कोई स्त्री मंडलीमें बात सुनावे।

पैालका शासनका वाक्य।

३६ क्या ईश्वरकी बात जो है सो तुममेंसे निकली है? अथवा
३७ क्या केवल तुम्हारेही निकट प्रकाशित हुई है?। जो तुम्होंमेंसे

कोई है जो अपनेको उपदेशक अथवा परमार्थि जानता है तो चाहिये कि वह यह मान लेवे कि जो कुछ कि मैं तुम्हें लिखता हूं सो प्रभुकी आज्ञा है? परंतु जो कोई अनजान ३८ है तो अनजान रहे। सो, हे भाईयो, उपदेश देनेकी इच्छा ३९ करो और अनजानों बोलियां बोलनेसे मत बरजो। चाहिये ४० कि सब कुछ सुडौल और बिधिसे किया जावे।

१५ पंदरहवां अध्याय।

खीष्टके उठनेकी कथा।

हे भाईयो, वही सुसमाचार जो मैंने तुम्हें सुनाया है १ सोई मैं तुम्हें फिर जताता हूं, अर्थात, वही सुसमाचार जिसे तुमने पाया है और जिसमें तुम रहते हो। जो तुम उस २ बातको रखो जिसका सुसमाचर मैंने तुम्हें सुनाया, तो उसके द्वारासे बच जाओगे; नहीं तो, तुम्हारा बिश्वास वृथा है। मैंने यही बड़ी बात, जो मुझको दिई गई थी, तुमको सौंपी, ३ अर्थात, कि खीष्ट, धर्म पुस्तककी बातोंके अनुसार, हमारे पापोंके लिये मरा, और गाड़ा गया, और धर्म पुस्तकोंकी बातों ४ के अनुसार, तीसरे दिनमें जी उठा। इसके पीछे उसने कैफाको ५ (अर्थात पितरको) दिखलाई दिई, फिर बारह शिष्योंको, फिर पांच एक सौ भाईयोंको, जिन्होंमेंसे बहुतेरे आजके दिन ६ तक जीते रहते हैं परंतु कोई कोई सो गये हैं, फिर याकूबको, ७ फिर सब प्रेरितोंको, और सबोंके पीछे मुझको भी, जो अ- ८ समयमें उत्पन्न हुआ, दिखलाई दिई। मैं जो हूं सो सब ९ प्रेरितोंसे छोटा हूं, हां मैं योग्य नहीं हूं कि मैं प्रेरित कह- लाऊं क्योंकि मैंने ईश्वरकी मंडलीको सताया; जो कुछ कि मैं १० हूं सो मैं ईश्वरके अनुग्रहसे हूं; और वही अनुग्रह जो मुझको दिया गया है सोई निष्फल नहीं हुआ है क्योंकि मैंने सब प्रेरितोंसे अधिक परिश्रम किया है; तौभी मैंने परि- श्रम नहीं किया परंतु ईश्वरका अनुग्रह जो मुझको दिया गया है उसीने परिश्रम किया है। सो क्या मैंने परिश्रम ११

किया है, क्या उन्होंने परिश्रम किया है, हम यों प्रचार करते हैं और तुमने बिश्वास किया है।

७उनके अस्वीकार करनेकारे अनुयोग कर्ना।

१२ जो यह प्रचार किया जाता है कि खीष्ट मृतकोंमेंसे जी उठा है तो तुममेंसे क्यों कोई कोई कहते हैं कि मृतकोंका जी
१३ उठना नहीं होगा? जो मृतकोंका जी उठना नहीं है तो
१४ खीष्टभी जी नहीं उठा है; जो खीष्ट नहीं जी उठा है तो हमारा प्रचार वृथा है और तुम्हारा बिश्वासभी वृथा है।
१५ और हम भी ईश्वरके बिषयमें झूठे साक्षी ऊये हैं क्योंकि हमने ईश्वरके बिषयमें यही साक्षी दिई है कि उसने खीष्टको उठाया है; जो मृतक जी नहीं उठे तो ईश्वरने
१६ खीष्टको नहीं उठाया है। सो तो जो मृतक नहीं उठे तो
१७ खीष्ट भी नहीं उठा; और जो खीष्ट नहीं उठा है तो तुम्हारा बिश्वास वृथा है हां तुम्हारे पाप क्षमा नहीं ऊये हैं; और
१८ वे लोग जो खीष्टके आश्रित होके मर गये हैं सो नष्ट ऊये हैं।
१९ जो हम केवल इस जगतमें खीष्टके आश्रित हैं तो हमारी दशा जो है सो सब मनुष्योंकीसे बुरी है।

खीष्टके उठनेमें उसके लोगोंके उठनेका ठहरना।

२० सच है, खीष्ट मृतकोंमेंसे उठा है और उनमेंसे जो सो गये
२१ हैं वह पहिला फल ऊआ है। जैसा कि मनुष्यके द्वारासे मृत्यु आई तैसाकि मनुष्यके द्वारासे मृतकोंका जी उठना होगा,
२२ अर्थात् जैसाकि सब जो आदममें हो मर जाते हैं तैसाकि
२३ सब जो खीष्टमें हो जीते किये जायेंगे; परंतु सब कोई अपनी अपनी बारीमें; खीष्ट जो पहिला फल है सोई, फिर वे जो खीष्टके हैं सो उसके आनेके समय पर जीते किये
२४ जायेंगे; तब अंत होगा, जिसी समयमें वह (अर्थात् खीष्ट) सब राज और प्रधानता और पराक्रमको नष्ट कर कर अपने
२५ राजको अपने पिता ईश्वरके हाथमें सोंपेगा। जब तक उसने अपने सब शत्रुओंको अपने पांवओंके नीचे नहीं किया
२६ है तब तक आवश्यक है कि वह राज करता रहे। मृत्यु भी

जो पीछला शत्रु है, नष्ट होगा क्योंकि ईश्वर सबोंको, खीष्टके २७ पांवओंके नीचे रखेगा। इसी बातसे अर्थात् कि ईश्वर सबोंको खीष्टके पांवओंके नीचे रखेगा, यही जाना जाता है कि वही जिसने खीष्टके पांवओंके नीचे सबोंको रखेगा सोई आपही आधीन किया नहीं जायेगा। जब सब उसके २८ आधीन किये गये हैं तब पुत्र भी आपही उसी का आधीन हो जायगा जिसने उसके नीचे सबोंको किया है* इसलिये कि ईश्वर सबमें सब होगा।

उठना न होनेसे धर्मकी निष्फलता होनी।

नहीं तो, जिन्होंने मृतकोंके जी उठनेका बिश्वास करके २९ डुबकी खाई है सो क्या करेंगे? जो मृतक जी नहीं उठे तो उन्होंने मृतकोंके जी उठनेका बिश्वास करके क्यों डुबकी खाई है? और हम क्यों घड़ी घड़ीमें जी जोखिममें रहते हैं? ३० तुम्हारे उस आनन्दके लिये, जो मैं हमारे प्रभु खीष्ट यीशुमें ३१ हो करता हूं, मैं दिन दिनमें मृत्युके मुखमें होता हूं। जो मैं ३२ ईफिस नगरमें, मनुष्योंकी रीतिके अनुसार, बन पशुओंके संग लड़ा तो मुझको कौनसा लाभ होता है? जो मृतक जी न उठें तो चाहिये कि हम खावें और पीवें, क्योंकि हम कलके दिन मरेंगे। छल न खाओ; जो कोई जो भला है ३३ बुरे लोगोंके संग जाय सो बुरा हो जायगा। सत कर्म ३४ करनेको जागो और भूलमें न पड़ो। तुम्होंमें कोई कोई हैं जो ईश्वरको नहीं जानते हो; मैं यह कहता हूं कि तुम लज्जित हो जावो।

उठनेके समय शरीरके बिशेष होना।

क्या जाने, कोई यह बात पूछेगा कि मृतकोंका जी उठना ३५ किस प्रकारसे होगा और किस प्रकारके शरीरमें उठेंगे? हे मूर्ख, जो वही बीज, जो तू बोता है, न मरे तो ३६ नहीं उगेगा; और जो कुछ कि तू बोता है सोई नहीं ३७ उगता है, परंतु दूसरा निकलता है क्या गेहूंका क्या और प्रकारका; ईश्वर जो है सोई अपनी इच्छाके अनुसार ३८

प्रकार प्रकारका बीज उत्पन्न करता है अर्थात् एक बीजको
३९ एक रूप और दूसरे बीजको दूसरा रूप देता है। सब
शरीर जो हैं सोई एकही प्रकारके नहीं हैं; अर्थात् मनुष्योंके शरीर एक प्रकारके, और पशुओंके शरीर दूसरे
प्रकारके, और मछलियोंके शरीर तीसरे प्रकारके, और पक्षि-
४० योंके शरीर चौथे प्रकारके हैं; शरीर भी हैं जो आकाशके
हैं और जो पृथ्वीके हैं; परंतु आकाशके शरीरोंका तेज
जो है सोई एक प्रकारका है और पृथ्वीके शरीरोंका तेज
४१ दूसरे प्रकारका है। जैसा कि सूर्जका तेज एक प्रकारका है,
और चांदका तेज दूसरे प्रकारका है और तारोंका तेज
तीसरे प्रकारका है, उन्होंका तेज प्रकार प्रकारके हैं तैसा कि
मृतकोंका भी उठना होगा।

किस रूपसे उठना होगा उसका निर्णय।

४२ शरीर जो है सो बिनाशी हो बोया जाता है परंतु अबि-
४३ नाशी हो उठाया जायगा; अपमानित हो बोया जाता है
परंतु गौरववंत हो उठाया जायगा; दुर्बल हो बोया जाता
४४ है, परंतु बलवंत हो उठाया जायगा; संसारिक शरीर हो
बोया जाता है, परंतु स्वर्गीय शरीर हो उठाया जायगा।
४५ एक संसारिक शरीर है और एक स्वर्गीय शरीर है। ऐसा
भी लिखा है कि वही जो पहिला मनुष्य आदम नाम था
सो जीता प्राणी था परंतु पीछला आदम (अर्थात् ख्रीष्ट)
४६ जीवनदायक आत्मा है। वही जो स्वर्गीय है सो पहिला
नहीं था परंतु वही जो संसारिक है सोई; पीछे वही जो
४७ स्वर्गीय है। पहिला मनुष्य जो है सो मिट्टीसे बनके संसारिक
था परंतु दूसरा मनुष्य जो है सो स्वर्गसे आके प्रभु है।
४८ जैसा कि वही जो संसारिक था तैसे कि वे हैं जो संसारिक
हैं; और जैसे कि वह जो स्वर्गसे आया तैसे कि वे होंगे
४९ जो स्वर्गीय हुये हैं। जैसे कि हमने संसारिक मनुष्यका
स्वरूप पाया है तैसे कि हम स्वर्गीय मनुष्यका स्वरूप
पावेंगे।

शेष दिनका बिबरण।

हे भाईयो, मैं यह कहता हूं कि संसारिक शरीर जो है ५० सो ईश्वरके राज्यका अधिकार करने नहीं सकता है क्योंकि जो कुछ कि बिनाशी है सो अबिनाशी स्थानमें रहने नहीं सकता है। देखो, मैं तुमसे यह भेद कहता हूं, अर्थात्, कि हम ५१ जो हैं सो सब नहीं सोवेंगे परंतु एक पलमें, हां एक पल ५२ मारतेमें, जिस समय पीछली तुरही बजेगा, उस समय हम सब औरही किये जायेंगे ; सच है कि तुरही बजेगी, और मृतक लोग अबिनाशी हो उठाये जायेंगे, और हम औरही किये जायेंगे। आवश्यक है कि यही बिनाशी शरीर जो है ५३ सो अबिनाशी हो जायगा और यही मरनेहारा शरीर जो है सो अमर हो जायगा। और जब यही बिनाशी शरीर ५४ जो है सो अबिनाशी हो जायगा और यही मरनेहारा शरीर जो है सो अमर हो जायगा: तब यही बात जो लिखी है सो पूरी किई जायगी, अर्थात्, कि मृत्यु जो है सो आधीन हो निगली गई है। हे मृत्यु, तेरा डंक कहां है? ५५ हे गोर, तेरी जय कहां है? मृत्युका डंक पाप, और पापका ५६ बल व्यवस्था है परंतु ईश्वरको धन्य होवे क्योंकि वह हमारे ५७ प्रभु यीशु ख्रीष्टके द्वारासे हमको जयमान करता है। सो, ५८ हे मेरे प्यारे भाईयो, सुस्थिर और अचल होओ और ईश्वर-के कर्म सदा करते रहो ; और जानो कि तुम्हारा परिश्रम जो प्रभुके लिये है सो निष्फल नहीं होगा।

१६ सोलहवां अध्याय।

दान करनेमें पौलका उपदेश

उस बिहरीके बिषयमें जो पवित्र लोगोंके लिये है ऐसाही १ करो जैसा कि मैंने गालातीय देशकी मंडलियोंको आज्ञा किई है, अर्थात्, कि तुम्होंमेंसे एक एक मनुष्य जो है सो एक २ एक एतवारमें अपनी अपनी कमाईके अनुसार, कुछ कुछ लाके मंडलीके भंडारीके हाथमें सौंप देवें, इसलिये कि मेरे

३ आनेपर बिहरी जो है सो तैयार होवे। और मेरे आनेपर, जिन्होंको तुम ठहराओ कि वे तुम्हारे दानको ले
४ जावें, उन्होंको मैं चिट्ठी देके यिरूशालम नगरको भेजूंगा; और जो मुझको भी जाना आवश्य होय तो मैं उन्होंके संग
५ जाऊंगा। माकिदनिया देशमें होके मुझे जाना होगा; जिस समय मैं माकिदनिया देशमें होके निकलूंगा, उस समयमें मैं
६ तुम्हारे निकट आऊंगा; और क्या जानें, तुम्हारे संग कुछ दिन रहूंगा, हां जाड़ा भी काटूंगा; पीछे तुमसे कुछ दूर आगे-
७ को पहुंचाया होके, जिस देशमें मैं जाता हूं, जाऊंगा; मैं अब तुम्हें मार्गपर देखा नहीं चाहता हूं; परंतु जो ईश्वरकी इच्छा होय तो मेरा भरोसा यह है कि पीछे मैं तुम्हार संग कुछ
८ दिन रहूंगा। तोभी मैं पचासवें दिनके पर्ब तक इफिस नगर
९ में रहूंगा क्योंकि वहां एक बड़ा दार खुला है जिसमें होके कार्म करनेको मैं जा सकता हूं; और बाद करनेहारे बहुत से भी हैं।

तीमथिय और अपल्लोके बिषयमें पौलकी कथा।

१० जो तीमथिय तुम्हारे निकट आवे तो देखइयो कि वह तुम्हारे निकट निर्भयसे रहे क्योंकि जैसा कि मैं करता हूं तैसा
११ कि वह भी प्रभुका कर्म करता है; चाहिये कि कोई उसे तुच्छ न करे; परंतु उसको अच्छी रीतिसे आगेको पहुंचा दीजिये इसलिये कि वह मेरे निकट आवे क्योंकि मैं उसकी
१२ बाट जोहता हूं कि वह भाइयोंके संग आवे। मैंने अपल्लो भाईको बहुत बिंती किई कि वह, भाइयोंके संग, तुम्हारे निकट जाय; परंतु उसने न चाहा कि तुम्हार निकट अब जाय
१३ तो भी अवसर पायके पीछे जायेगा। जागते रहो; खीष्टके
१४ धर्ममें सुस्थिर रहो; साहसी और बलवान होओ; और तुम्हारा सब कुछ जो है सो प्रेमसे किया जाय।

स्तिफान आदि भाइयोंके बिषयमें उसकी कथा।

१५ हे भाइयो, मैं तुमसे बिंती करता हूं कि तुम स्तिफानके घरानेको मानो क्योंकि उन्होंने आखाया देशमें पहिले बिस्वास

किया और पवित्र लोगोंकी सेवा करते रहे हैं; ऐसोंके, १६ और और सबोंके, जो काम और परिश्रम करते हैं, आधीन होओ। मैं स्तिफान और फर्तुनात् और आखायिके आनेपर १७ आनंदित हूं क्योंकि जो कुछ कि तुमने नहीं किया है सो उन्होंने पूरा किया है; उन्होंने तुम्हारे और मेरे मनको आराम १८ किया है; इसलिये तुम ऐसोंको मानइयो।

नमस्कार भेजना।

आशिया देशको मंडलियोंके लोग तुम्हें नमस्कार कहते हैं। १९ आक्किला और प्रस्किल्ला और उनके घरकी मंडलीके लोग तुम्हें, प्रभुके नामसे, बहुत बहुत नमस्कार कहते हैं। सब भाई २० तुम्हें नमस्कार कहते हैं। एक दूसरेको पवित्र चूमा करके नमस्कार कहो।

समाप्तकी कथा।

मैं पौल तुम्हें अपने हाथका लिखा हुआ नमस्कार करता हूं। २१ जो कोई प्रभु यीसु खीष्टको प्रेम न करे तो वह स्रापित होगा; २२ प्रभु आता है। प्रभु यीसु खीष्टका अनुग्रह तुमपर होवे। तुम २३ सबोंपर, जो खीष्ट यीसुमें हो, मेरा प्रेम होवे। आमीन। २४

करिन्थियोंकी मण्डली पर
दूसरा पत्र।

१ पहिला अध्याय।

मंगलाचरण।

पौल जो ईश्वरकी इच्छाके द्वारासे प्रेरित है, और तिम- १ थिय जो भाई है, ईश्वरकी मंडलीको, जो करिंथ नगरमें है, और सब पवित्र लोगोंको, जो सारे आखाया देशमें रहते हैं, यह पत्र लिखते हैं। हमारे पितासे और प्रभु यीसु खीष्टसे २ तुमको अनुग्रह और शांति दिये जायें।

खीष्टके शिष्योंको दुःखसे सुख बोध करना।

३ हमारे प्रभु, यीशु खीष्टके पिता ईश्वरको धन्य होवे; वह दयावंत पिता और शांतिदायक ईश्वर है, और हमको बड़े ४ दुःखोंमें शांति देता है; सो हम आपही उनको जो बड़े दुःखी हैं, उस शांतिसे, जो हमको ईश्वरसे दिई गई है, शांति ५ दे सकें। जैसेकि हमने खीष्टके लिये बज़तसे दुःख उठाया ६ है तैसेकि हमने, खीष्टके द्वारासे, बज़तसी शांति पाई है। जो हम दुःख उठाते ज़ये सहें तो तुम भी इसको देखनेसे ऐसे दुःख उठाते ज़ये, धीरज करके, शांति और कुशलक्षेम पाओगे; ७ तुम्हारे बिषयमें यही भरोसा हमारा है। और जो हम शांति पावें तो तुम भी इसको देखनेसे शांति और कुशल- ८ क्षेम पाओगे। हम यह जानते हैं कि जैसेकि तुम दुःखोंके भागी हो तैसेकि तुम शांतिके भागी भी होगे। हे भाईयो, हम नहीं चाहते हैं कि तुम उस दुःखका, जो आशिया देशमें हमपर पड़ा, अनजान रहो; हम अपनी सामर्थसे बाहिर दब गये यहांतक कि हम प्राणसे निरास ९ ज़ये, हां हम जानते थे कि अपनेयोंपर मार डाले जानेकी आज्ञा ज़ई है, ऐसा कि हमोंने अपनेयोंपर आश्रा न रखके केवल ईश्वरपर, जो मृतकोंको जिलाता है, आश्रा रखा; १० परंतु उसने हमको ऐसी भयानक मृत्युसे बचाया और अब भी बचाता है और हमारा भरोसा है कि वह आगेको ११ भी बचावेगा। सो तुम सब प्रार्थना करके हमारी सहायता करो; तब उस अनुग्रहके लिये, जो बज़तेरोंकी प्रार्थना करनेसे हमको मिले, बज़तेरोंसे ईश्वरका धन्यबाद किया जावे।

करिंथिय मंडलीपर प्रेरितोंका व्यवहार।

१२ हमारी बड़ाई यही है अर्थात् कि हमारा मन यही साक्षी देता है कि हमारा बोल चाल जो है सो ईश्वरके सन्मुख सीधाई और सचाईसे, न संसारिक बुद्धिसे, हां ईश्वर-

की इच्छाके अनुसार, संसारके लोगोंके बीचमें, और निज करके तुम्हारे बीचमें, हुआ है। जो जो बातें तुम पढ़के सम- १३ झते हो उनसे और कुछ हम नहीं लिखते हैं; और मेरा भरोसा यही है कि तुम उन्हें अंततक मानोगे जैसाहीकि तुममेंसे बहुतेरोंने हमें मान चुका है; सो जैसाकि तुम, प्रभु १४ यीशुके दिनमें, हमारा आनंद करानेहारे होगे तैसेहीकि हम भी तुम्हारा आनंद करानेहारे होंगे।

उनके निकट पौलके जानेको स्थिर कर्ना।

मैंने इस इच्छासे आगे तुम्हारे निकट आने ठहराया कि १५ तुम (मेरे आनेसे) और कुछ लाभ पावो; और तुमको छोड़के १६ माकिदनिया देशमें जाने, और माकिदनिया देशको छोड़के फिर तुम्हारे निकट आने, और तुम्होंसे यिहूदिया देशको भेजा जाने, येही सब मैंने ठहराया। ऐसे ठहरानेसे क्या १७ मैंने चंचलाहट किई? अथवा कि जो कुछ कि मैंने ठहराया क्या मैंने संसारके लोगोंकी रीतिपर ठहराया, ऐसा कि मैंने उनकी नाईं हां हां और ना ना कहा? सो नहीं; जैसाकि १८ ईश्वर सच्चा है तैसाकि वही बात जो मैंने तुमसे कही सोई हां हां और ना ना नहीं थीं। क्योंकि ईश्वरका पुत्र १९ यीशु खीष्ट, जिसकी बात तुम्हारे बीचमें हमसे अर्थात् मुझसे और सीलसासे और तीमथियसे प्रचारी गई, हां हां और ना ना नहीं है परंतु वह हां हां है क्योंकि ईश्वरकी सब प्रतिज्ञा २० जो हैं सोई यीशुमें हां और सत्य किईं जायेंगीं; इसीसे ईश्वरकी महिमा, हमोंके द्वारासे प्रकाश किई जायगी। वही २१ जो हमको और तुमको खीष्टके धर्ममें स्थिर करता है, और हमको अभिषेक किया है, सोई ईश्वर है; उसने भी हमपर २२ छाप किया है अर्थात उसने हमारे मनमें बयाना सा पवित्र आत्मा दिया है।

उसके पहले न जानेके कारण निर्णय कर्ना।

जो यह सच नहीं होय तो ईश्वर मेरे बिरोधमें साक्षी देवे २३ कि मैं तुमपर दया करके अबलग करिन्थ नगरमें नहीं आया।

२४ हम तुम्हारे बिश्वासपर प्रभुता नहीं रखते हैं परंतु हम तुम्हारे आनंदके बढ़ानेहारे हैं; तुम बिश्वास करके खड़े रहते हो।

२ दूसरा अध्याय।

पौलके आनेके समय दुःख न होवे इसी निमित्त बाहर हुए लोगोंको ग्रहण कर्नेका परामर्श।

१ मैंने अपने मनमें यह ठाना कि मैं तुम्हें दुःख देनेको फिर २ नहीं आऊंगा क्योंकि जो मैं तुमको दुःख देऊं तो उनको छोड़, जो मेरे द्वारासे दुःखी किये जायें, कौन और है जो मुझको ३ सुख दे सकेगा? मैंने तुम्हें यही लिखा है, न हो कि मैं आकर उनसे दुःख पाऊं, जिनसे चाहिये कि मैं सुख पाऊं। तुम सबोंके बिषयमें मेरा भरोसा यही है कि जिस बातसे ४ मेरा आनंद है उसीसे तुम्हारा आनंद भी है। मैंने बहुत उदास और दुःखी हो और बहुत आंसूओंसे तुम्हें लिखा है इस लिये नहीं कि तुम दुःखी हो जावो परंतु कि तुम ५ जानो कि मैं तुमको बड़ा प्यार करता हूं। जो किसीने मुझे दुःखी किया है तो उसने केवल मुझे नहीं परंतु तुम्होंमेंसे किसी किसीको भी दुःखी किये हैं; मैं तुम सबोंपर दोष नहीं ६ लगाता हूं। वही दंड जो उस मनुष्यको बहुतेरोंसे दिया ७ गया है सोई बहुत है; यही अच्छा है कि तुम उसको क्षमा और शांति देवो, न हो कि वह दुःखके सागरमें डूब जावे। ८ सो मैं तुमसे यही बिंती करता हूं कि तुम दिखाओ कि ९ तुम उसको प्यार करते हो। मैंने इसी कारणसे भी तुम्हें लिखा कि मैं निश्चय करके यह जानूं कि तुम सारी बातोंके बिषयमें १० माननेहारे हो अथवा नहीं। जिसको तुम क्षमा करते हो उसीको मैं भी क्षमा करता हूं, हां जिसको मैंने क्षमा ११ किया है उसीको मैंने ख्रीष्टके सन्मुख तुम्हारे कारण क्षमा किया है इसलिये कि शैतान हमें धोखा न देवे; हम उसके छलोंसे अनजान नहीं हैं।

सुसमाचार प्रचार करनेमें पौलके कर्मकी सफलता होती।

जब मैं खीष्टके सुसमाचार प्रचार करनेको त्रोया नगरमें १२ आया, प्रभुने मेरे सन्मुख एक बड़ा द्वार खोल दिया, तौभी १३ मैंने, अपने भाई तीतको न मिलनेसे, मनमें आराम न पाया; इसलिये मैंने त्रोया नगरके लोगोंसे बिदा होके माकिदनिया देशको चला गया। धन्य ईश्वरको जो हमें, खीष्टके १४ द्वारासे, जयमान सदा करता है, और सब स्थानोंमें, हमारे द्वारासे, अपने ज्ञानकी बात, सुगंध सी, प्रकाश करता है; क्योंकि हम जो हैं सो वे हैं जिन्होंके द्वारासे ईश्वर, त्राण १५ पानेहारों और नष्ट होनेहारोंके बीचमें, खीष्टकी बात, जो सुगंध सी है, प्रकाश करता है; उनके लिये जो मरनेपर हैं १६ हम मृत्युदायक सुगंध सी हैं और उनके लिये, जो जीनेपर हैं, हम जीवनदायक सुगंध सी हैं; और इन कर्मोंके करनेको कौन जोग है? हम जो हैं सो बहुतेरोंकी नाईं १७ नहीं हैं जो ईश्वरकी बातोंमें मिलौनी करते हैं; परंतु हम सचाईसे हो, हां ईश्वरकी आज्ञाके अनुसार, ईश्वरके सन्मुख खीष्टकी बात सुनाते हैं।

३ तीसरा अध्याय।

करिन्थिय लोगोंका पौलको प्रशंसा पत्र होना।

क्या हम अपनी बड़ाई फिर करते हैं? अथवा क्या यह १ प्रयोजन है कि हम, किसी किसी औरोंकी नाईं, तुम्हारे निकट नामवरीकी चिट्ठी लावें अथवा तुम्होंसे नामवरीकी चिट्ठी ले जावें? हमारी चिट्ठी जो है सोई तुमही हो; वह २ हमारे मनपर लिखी गई है और सब मनुष्योंसे जानी जाती और बढ़ी जाती है। यह प्रगट है कि तुम जो हो सो ३ खीष्टकी यही चिट्ठी है जो हमारी करनीसे होती है, सीयाहीसे नहीं लिखी हुई परंतु अमर ईश्वरके आत्मासे, न पाथरोंके पटियाओंपर लिखी हुई परंतु हृदयोंकी पटरीयोंपर।

मूसाकी व्यवस्था प्रचार करनेसे खीष्टके सुसमाचार प्रचार करनेकी उत्तमता।

४ हम खीष्टके द्वारासे ईश्वरपर ऐसा भरोसा रखते हैं। यह
५ नहीं कि हम अपने गुणसे कुछ बनाने सकते हैं परंतु हमारी
६ सामर्थ जो है सो ईश्वरसे होती है। उसने हमको मूसाकी व्यवस्थाके सेवक नहीं ठहराये हैं परंतु पवित्र आत्माके नये नियमके सामर्थवान सेवक ठहराया है क्योंकि व्यवस्था जो है सो मृत्यु सा दंड देती परंतु आत्मा जो है सो जीवन देता
७ है। जो मृत्यु करानेहारी व्यवस्थाका उपाय, जो पथरोंपर खोदा गया, ऐसा तजवंत था कि इस्रायेली लोग मूसाके मुखपर, उस जाते रहते तेजके कारणसे जो उसके मुखपर
८ लगता था, देख न सकते थे तो वही तेज जो आत्माके
९ उपायका है कितना और बड़ा है? जो दंडकी आज्ञाका उपाय तेजवंत था तो पुण्यके उपायका तेज जो है सो और
१० बहुत बड़ा है। वही जो कुछ कुछ तेजवंत था सो उसके
११ कारणसे, जो बहुत बड़ा तेजवंत है, तेजवंत नहीं है। जो वही, जो जाता रहा है, तेजवंत था तो वही, जो रहता है, सो बहुत और तेजवंत है।

दृष्टांतसे उसकी कथाका प्रचार देना।

१२ सो ऐसा भरोसा रखते हुये हम खोलके बात कहते हैं,
१३ न मूसाके समान जिसने अपने मुखपर घूंघट डाला इसलिये कि इस्रायेली लोग उस जाते हुये तेजवंत उपायका अर्थ न
१४ बूझें। उनकी बुद्धि अंधी हुई; आजके दिनतक वही घूंघट जो है सोई, पुराने नियमके पढ़नेमें, रहता है; वे नहीं जानते हैं कि घूंघट जो है सोई खीष्टके द्वारासे उठाया गया है;
१५ हां आजके दिनतक मूसाकी व्यवस्थाके पढ़नेमें घूंघट उन्होंके
१६ मनपर रहता है; परंतु जब उनके मन प्रभुकी ओर फिराये जावें तब घूंघट दूर किया जायगा क्योंकि प्रभु जो है सो
१७ आत्मा है, और जहां प्रभुका आत्मा है वहांही मुक्ति है। और
१८ हम सब विना घूंघटसे प्रभुके तेजको, जैसाकि दर्पणमें, देखते देखते, प्रभुके आत्माके द्वारासे, उसके सदृश तेजोमय होते हैं।

४ चौथा अध्याय।

सुसमाचार प्रचार करनेमें पौलका सीधापन श्रौ उद्योग।

सो हमने अनुग्रहसे यह उपाय पायके थकित नहीं होते १ हैं परंतु लज्जाके गुप्त कर्म न करके श्रौर छल न करके २ ईश्वरकी बात में मिलानी नहीं करते हैं, हां हम सच्चाईको प्रगट करके, ईश्वरके सन्मुख, हर एक मनुष्यके निकट अपने-योंको सच्चे दिखाते हैं। जो हमारा सुसमाचारपर घूंघट ३ डाला गया है तो वह नष्ट होनेहारोंसे ढांपा गया है, जिन्होंके द्वारासे इस जगतके पतिने (अर्थात शैताननें) अवि- ४ श्वासियोंके मनोंको अंधे किया है इसलिये कि खीष्टके तेजवंत सुसमाचारके उजाला जो है सो उन्होंके बीचमें न चमके; खीष्ट जो है सो ईश्वरकी समानता है। हम प्रचार करके यह ५ नहीं कहते हैं कि हम कुछ हैं परंतु यह कहते हैं कि खीष्ट यीसु जो है सो प्रभु है श्रौर हम जो हैं सो यीसुकी श्रोरसे तुम्हारे सेवक हैं; हां उसी ईश्वरने, जिसने यह कहा कि ६ अंधकारमेंसे उजाला होवे, उसीने हमारे मनोंमें उजाला किया है इसलिये कि हम यीसु खीष्टके मुखपर तेजवंत ईश्वरके ज्ञानको देखें।

प्रचार करनेमें उसका अनेक दुःख भोगना।

यही धन जो है सो हम मिट्टीके पात्रोंमें रखते हैं इस- ७ लिये कि उसकी बड़ी सामर्थ जो है सो हमारी नहीं परंतु ईश्वरकी दिखाई जावे। हम जो हैं सो हर एक स्थानमें ८ दुःखित हैं परंतु व्याकुल नहीं; उपायहीन हैं परंतु आशा-हीन नहीं; सताये जाते हैं परंतु छोड़ाये गये नहीं; गिराये ९ जाते हैं परंतु नष्ट नहीं; हम प्रभु यीसुकी नाईं सदा मृत्युसा १० भोगते हुये फिरते हैं इस लिये कि हमारे द्वारासे यह प्रगट होवे कि यीसु जीता है; हां हम जीतेजी हो यीसुके लिये ११ मृत्युके मुखमें सदा सोंपे जाते हैं इस लिये कि हमारे द्वारासे, जो मरणेहारे हैं, यह प्रगट होवे कि यीसु जीता है।

१२ सो हम जो हैं सो म्रत्युग्रस्त होते हैं परंतु तुम जो हो सो जीवन पाते हो।

वही दुःख अपने औ मंडलीके हितका कारण होना।

१३ जैसाकि यह लिखा है कि मैंने बिश्वास किया है इसलिये मैंने कहा है, तैसेकि हम भी बिश्वास करते हैं और इस
१४ लिये भी बात कहते हैं। हम यह जानते हैं कि जिसने प्रभु यीसुको उठाया है सोई हमें भी, यीशुके द्वारासे, उठाके,
१५ अपने सन्मुख, तुम्हारे संग पहुंचा देगा। तुम्हारे लिये सब कुछ है इस लिये कि वही अनुग्रह जो बहुतोंके द्वारासे अधिक किया गया है सोई उस धन्यबादके द्वारासे, जो बहुतोंसे किया
१६ जाय, ईश्वरकी महिमा अधिक प्रकाश किया जाय। इसलिये हम थकित नहीं होते हैं; हमारा शरीर जो है सो तो दुर्बल हो जाता है परंतु हमारा आत्मा जो है सो दिन दिन बलवंत हो
१७ जाता है। हमारा अबका दुःख जो है सो हमारे लिये बहुत
१८ बड़ा और अनंत सुख करवाता है। हम उन बस्तुओंपर जो देखनेमें आतीं हैं, नेत्र नहीं लगाते हैं परंतु उनहीपर जो देखनेमें नहीं आतीं हैं; क्योंकि जो देखनेमें आतीं हैं सो थोड़े दिनकी हैं परंतु जो देखनेमें नहीं आतीं है सो सदातक रहतीं हैं।

५ पांचवां अध्याय।

बिचार दिनमें अनंतपरमायु पानेके लिये सुसमाचार प्रचार करनेमें पौलका परिश्रम।

१ हम यह जानते हैं कि जो हमारा यही तंबू सा घर, जो मिट्टीसे बनाया गया है, उजार हो जावे तो ईश्वरसे एक और घर पावेंगे जो हाथसे नहीं बनाया गया है और जो
२ स्वर्गमें सदातक खड़ा रहेगा। हम जो इसी घरमें रहते हैं सोई आहें मारके यही इच्छा करते हैं कि हम अपने
३ उस घरमें पैठें जो स्वर्गमें है क्योंकि उसी घरमें जाके हम निरा-
४ श्रय नहीं होंगे। हम इसी तंबूमें रहते हुये दुःखित हो आहें

मारते हैं इसलिये नहीं कि हम बेघरे हो जावें परंतु इसी लिये कि हम स्वर्गी घरमें पैठें; इससे मृत्यु, जो है सो जीवनसे निकल जायगा। और जिसने हमको इसीके लिये तैयार ५ किया है सोइ ईश्वर है; उसने भी हमको बयाना सा पवित्र आत्मा दिया है। हम यह जानते हैं कि जितने दिन हम इसी ६ शरीरमें रहते हैं इतने दिन हम प्रभुसे दूर हैं तौभी हम चंचलाहट नहीं करते हैं क्योंकि हम बिश्वाससे चलते हैं ७ न दृष्टिसे; हां हम अचंचल हैं तौभी हम यह बज़त चाहते हैं ८ कि हम शरीरको छोड़ें और प्रभुके निकट जायें। सो ९ हम, क्या यहां रहें, क्या यहांसे चले जायें, यही इच्छा करते हैं कि हम प्रभुसे ग्रहण किये जायें क्योंकि खीष्टके बि- १० चारासनके सन्मुख हम सबको खड़ा होना होगा इसलिये कि एक एक उन भले अथवा उन बुरे कर्मोंके अनुसार, जो शरीरमें किये गये हैं, फल पावें।

उसके आचार औ प्रचार कर्मका निर्णय करना।

सो हम प्रभुके न्याय को जानते ज़ये मनुष्योंको चितावते हैं ११ और यह करके हम ईश्वरके सन्मुख सच्चे दिखाये जाते हैं; और मेरा भरोसा यही है कि हम तुम्हारे सन्मुख भी सच्चे दिखाये जाते हैं। ऐसे कहनेमें हम अपनी बड़ाई फिर १२ नहीं करते हैं परंतु हम तुमको, हमारे लिये, बड़ाई करनेको कारण देते हैं इसलिये कि तुम उनको उत्तर दे सको जो बाहिरीमें बड़ाई करते हैं, और भीतरीमें नहीं। जो हम १३ बौरे सा होवें तो ईश्वरके लिये ऐसे ज़ये हैं और जो हम ज्ञान-वान सा होवें तो तुम्हारे लिये ऐसे ज़ये हैं। हम खीष्टके १४ प्रेमसे उभारे जाते हैं क्योंकि हम यह बिचार करते हैं कि जो एक सबोंकी संती मरा तो सबही मरे हैं। एक सबोंकी संती १५ मरा इसलिये कि वे जो जीवन पाते हैं सो अपने लिये जीते न रहें परंतु उसके लिये जो मरके जी उठा। सो हम अबसे १६ किसीको, जातिके अनुसार, नहीं मानेंगे; और जो हम पहिले खीष्टको, जातिके अनुसार, माने तो आगेको ऐसे नहीं करेंगे।

१७ जो कोई खीष्टपर बिश्वास करे तो वही नया सा बनाया गया है; पुरानी बात जो है सो हो गई है; देखो, सब नयी हुई
१८ है। सब कुछ जो है सो ईश्वरसे होते हैं जिसने यीशु खीष्टके द्वारासे हमको अपनेसे मिला लिया है और मिलाप करानेके
१९ उपाय हमको सौंप दिया है अर्थात यही बात कि ईश्वर जो है सो संसारके लोगोंको पापका क्षमा करता हुआ उन्हें अपनेसे मिला लेता है, हां यही बात ईश्वरने हमें सौंप दिई
२० है। सो हम जो हैं सो खीष्टकी ओरसे दूत सा हैं, ऐसा कि ईश्वर, हमारे द्वारासे, बिंती करते हैं; और हमारी बिंती
२१ यही है कि तुम खीष्टके द्वारासे ईश्वरसे मिल जाओ; वही जिसने पाप न किया उसीने अपनेको पापी सा ठहराया इस लिये कि हम जो हैं सो उसीके द्वारासे ईश्वरके सन्मुख पुण्यवान ठहराये जायेंगे।

६ छठवां अध्याय।

सुसमाचार प्रचार करनेमें पौलकी बिश्वस्तता।

१ सो हम भी, जो ईश्वरकी नाई बिंती करनेहारे हैं, यही बिंती करते हैं कि तुम ऐसा मत करियो कि ईश्वरका अनुग्रह
२ जो है सो निष्फल होवे। ईश्वर यह कहता है कि मैं शुभ समयमें तेरी प्रार्थना सुनूंगा और त्राणके दिनमें तेरा सहायता करूंगा; देखो, अबका समय जो है सो शुभ है और आजका
३ दिन जो है सो त्राणका है। हम किसी भांतिसे किसीके मार्गमें अपनेको ठोकर सा नहीं करते हैं, न हो कि हमारी
४ सेवकाईपर कलंक लगाया जाय; परंतु सब दशाओंमें अपनेको ईश्वरके सच्चे सेवक दिखाते रहते हैं, अर्थात बहुत सहनेमें
५ और दुःखोंमें, और कंगालतामें, और बिपतोंमें, और मार खानेमें, और कैदखानाओंमे, और इधर उधर जानेमें और काम काज करनेमें, और चौकसी करनेमें और भूखे होनेमें;
६ और भी निर्मलतासे, और ज्ञानसे, और नम्रतासे, और मित्रतासे; और भी पवित्र आत्मासे, और निष्कपट प्रेमसे,

और सच्चाईकी बातसे, और ईश्वरके आश्चर्य कर्मसे, और ७
दहने और बायां हाथपर लगे ऊये अस्त्र शस्त्रसे, और सन्मान ८
औ असन्मानमें, और कुजश औ सुजशमें; और भी हम
कपटी औ सच्चे, नामी औ बेनामी गिने जाते हैं; मरते मरते ९
और देखो, हम जीते रहते हैं; मार खाते खाते और नहीं
मार डाले जाते हैं; दुःखमें होते होते और सदा आनंद करते १०
हैं; कंगाल हैं और बऊतोंको धनवान कराते हैं; और कुछ
न रखते ऊये सब कुछ रखते हैं। हे करिंथि मंडलीके लोगो, ११
हम बड़ा प्रेम करके तुमसे यों कहते हैं। हम तुमको बऊत १२
प्यार करते हैं परंतु तुमही हमको ऐसा बऊत प्यार नहीं
करते हो। मैं तुमको अपने बालक सा जानके यह कहता हूं १३
कि जैसाकि मैं तुमको प्यार करता हूं तैसेकि तुम बदले करके
मुझको प्यार करो।

देवपूजकोंके संग मेल करनेमें निषेध करना।

चाहिये कि तुमही जो हो सो अपनेको अबिश्वासियोंसे न १४
जोड़ो क्योंकि धर्म और अधर्मसे कौन सा संबंध है? और उजाला
और अंधकारसे कौन सा मेल है? और खीष्ट और बिलीयाल १५
देवतासे कौन सा मिलाप है? और बिश्वासीका अबिश्वासीके
संग कौन सा भाग है? और ईश्वरके मंदिरसे और मूरतोंसे १६
कौन सा काम है? तुमही जो हो सो अमर ईश्वरके मंदिर
सा हो, जैसा ईश्वरने कहा है अर्थात कि मैं उनमें बास
करते ऊये फिरूंगा; मैं उनका ईश्वर हूंगा और वे मेरे लोग
होंगे। इसलिये प्रभु यह कहता है कि तुम उनके बीचमेंसे १७
निकल आके अलग रहो और किसी अशुचि बस्तुको न छूओ
तब मैं तुमको ग्रहण करके तुम्हारा पिता हो जाऊंगा और १८
तुमही जो हो सो मेरे पुत्र और पुत्रीयां हो जाओगे; येही
बातें जो हैं सोई सर्वशक्तिमान प्रभु कहता है। सो, हे प्यारो,
ऐसी प्रतिज्ञाओंको पाके, आओ, हम अपनेको, शरीर और
आत्माकी सब मलीनतासे, दूर रखें और ईश्वरके भयसे सत
कर्म करते रहें।

७ सातवां अध्याय।

करिंथीय लोगों पर पौलका बिनय करना।

१ सो हमें ग्रहण कीजियो; हमने किसी पर अंधेर नहीं
२ किया है, न किसी को बिगाड़ा है और न किसीका कुछ
३ छीन लिया है। मैं तुम्हें दोषी ठहरानेको यही बात नहीं
कहता हूं; मैं तो आगे यह कहा कि हम तुमको ऐसा
प्यार करते हैं कि तुम्हारे संग मरने और जीने तैयार
४ हैं। मैं तुमपर बड़ा भरोसा रखता हूं और तुम्हारे बिषयमें
बड़ी बड़ाई करता हूं; हां मैं बड़ी शांति पाता हूं, और
अपने बड़े दुःखोंमें बड़ा आनंद करता हूं।

तीतसे उनका समाचार पाके कैसा सुख हुआ उसका निर्णय।

५ माकिदनिया देशमें आनेपर हमको कुछ आराम न मिला,
हां हम बड़े दुःखी थे; बाहरमें लड़ाइयां थीं, और भीतरमें
६ भय थे; परंतु ईश्वरने, जो दीन दुःखियोंको शांति देनेहारा
७ है, तीत भाईके आनेसे हमको शांति दिई; हां केवल उसके
आनेसे नहीं परंतु उसशांतिसे, जो उसने तुमसे पाई, हम
शान्त हुये क्योंकि उसने हमसे कहा कि तुम किसी रीतिसे
हमको देखने बहुत चाहते थे, किस रीतिसे तुम बिलाप
करते थे और किस रीतिसे तुम हमको बड़ा प्यार करते थे;
८ इसीसे मैं बड़ा आनंदित हुआ। मैंने आगेके पत्रसे तुमको
दुःख करके पछताया परंतु अब नहीं पछताता हूं क्योंकि मैं
देखता हूं कि तुम्हारा दुःख जो उस पत्रसे हुआ सो केवल
९ थोड़े दिनोंका था। अब मैं आनंद करता हूं इसलिये नहीं कि
तुम दुःखी थे परंतु इसलिये कि तुमने दुःखी होके मन
फिरायो; हां तुम ईश्वरकी इच्छाके अनुसार दुःखी थे; इससे
१० तुमने हमारे द्वारासे कुछ घटी न उठाई। वही दुःख जो
ईश्वरकी इच्छाके अनुसार है सोई उस पछताव करवाता
जिससे त्राण होता है और जिसके लिये कोई नहीं पछताता
है; परंतु वही दुःख जो संसारके अनुसार है सोई मृत्यु

जन्माता है। देखो, तुम अपने उस दुःखसे, जो ईश्वरकी ११ इच्छाके अनुसार था, कैसे चालाक ऊये हो हां कैसे माननेहारे, कैसे पापपर बिलाप करनेहारे, कैसे भय खानेहारे, कैसे मुझे देखने चाहनेहारे, कैसे मुझे प्यार करनेहारे, और कैसे पापीका दूर करनेहारे ऊये हो; हर एक प्रकारसे तुमने दिखाया है कि तुम इसी बातसे शुचि ऊये हो। मैंने तुम्हें पत्र १२ लिखा, न केवल उसके लिये जिसने अंधेर किया, न उसके लिये जिसने अंधेर उठाया परंतु इसके लिये कि तुम जानो कि हम, ईश्वरके सन्मुख, तुम्हारे बिषयमें कैसा सोच करते हैं। सो हम तुम्हारी शांतिसे शांति पाई है, हां हम तीत भाईके १३ आनंदसे बड़े आनंदित ऊये; तुम सभोंसे उसके मनको बड़ा आराम मिला। जो मैंने तीत भाईके सन्मुख तुम्हारे बिषयमें १४ कुछ बड़ाई किई है तो मैं लज्जित नहीं हूं; हां जैसाकि सब कुछ जो हमने तुम्हारे बिषयमें कहा है सो सत्य है तैसाकि यही बड़ाई जो मैंने तीत भाईके सन्मुख किई सो सत्य दिखाई गई है। तीत भाई स्मरण करता है कि किस रीतिसे १५ तुम सभोंने आज्ञा मानी और कैसे भयसे और कांपनेसे तुमने उसको ग्रहण किया; इन सबका स्मरण करके उसने तुमको बड़ा प्यार करता है। सो मैं आनंद करता हूं कि १६ मैं हर एक बातके बिषयमें तुमपर भरोसा कर सकता हूं।

८ आठवां अध्याय।

अन्य लोगोंका दृष्टांत, औ ख्रीष्टके प्रेमसे यिरूशालमके दरिद्रियोंको दान देनेमें करिन्थिय लोगोंपर पौलका निबेदन।

हे भाईयो, हम ईश्वरका उस अनुग्रहको, जो माकदिनिया १ देशकी मंडलियोंको दिया गया है, तुम्हें जनावेंगे अर्थात कि उन्होंने किस रीतिसे बड़े दुःखमें हो ऐसा बड़ा आनंद २ किया कि उन्होंने बड़े कंगाल हो बऊतसा दान दे दिया। मैं सच कहता हूं कि उन्होंने अपनी सामर्थ भर, हां ३ अपनी सामर्थसे बाहिर, अपनी इच्छासे दे दिया और

४ हमसे बड़ुत बिंती किई कि हम उनका दान ले लेके पवित्र
५ लोगोंको बांट देवें। और उन्होंने ऐसा किया जैसाकि हमने
अनुमान किया, सो नहीं; उन्होंने पहले अपने ताईं प्रभुको
दिया, पीछे अपने ताईं, ईश्वरकी इच्छाके अनुसार, हमको
६ दिया। ऐसे देखनेसे हमने तीत भाईसे बिंती किई कि
जैसाकि उसने तुम्होंके बीचमें बटोरनेका आरम्भ पहले
७ किया था तैसाकि वह समाप्ति करे। जैसाकि तुम सारी
बातमें गुणवान हो अर्थात बिश्वासमें, और बात बोलनेमें, और
ज्ञानमें, और सब प्रकारकी सामर्थमें, और हमको प्रेम
८ करनेमें, तैसाकि इसी दान देनेमें गुणवान होओ। मैं आज्ञा
करके यह नहीं कहता हूं, परंतु औरोंकी चालाकीको देख-
नेसे मैं कहता हूं इसलिये कि मैं जानऊं कि तुम्हारा प्रेम
९ सच्चा है कि नहीं। तुम हमारे प्रभु यीशु खीष्टके अनुग्रहको
जानते हो अर्थात कि वह धनवान था परंतु तुम्हारे लिये
कंगाल ड़ुआ इसलिये कि तुम उसकी कंगालताके द्वारासे
१० धनवान हो जावो। मैं तुम्हें यही उपदेश देता हूं कि यही
उचित है कि तुमही, जिन्होंने एक बरस आगेसे, न केवल
११ देनेको कहा, परंतु देनेका आरम्भ किया; सो अपने कर्मकी
समाप्ति करो इसलिये कि जैसेकि तुम चालाकी करके देना
कहा तैसेकि अपनी सामर्थके अनुसार देनेकी चालाक होवे।
१२ जो कोई देने चाहे तो जो कुछ कि वह देने सकता है, न
जो कुछ कि वह नहीं देने सकता है, सो ग्रहण किया जाता
१३ है। मैं नहीं चाहता हूं कि औरोंको आराम होगा और
१४ तुमको दुःख होगा; परंतु मैं यह चाहता हूं कि सब एकसा
हो जायेंगे ऐसा कि इसी समयमें तुम्हारे धनकी अधिकतासे
उनकी कंगालता दूर होवे और दूसरे समयमें उनके धनकी
१५ अधिकतासे तुम्हारी कंगालता दूर होवे; जैसाकि यह लिखा
है कि जिसने बड़ुत बटोरा उसका कुछ न बचा, और जिसने
थोड़ा बटोरा उसका कुछ न घटा।

उनपर तीतका और दूसरे एक भाईकी प्रशंसाकी कथा कर्नी।

ईश्वरको धन्य होय जिसने तुम्हारी ओर तीत भाईके १६ मनमें ऐसा प्रेम उत्पन्न किया कि उसने हमारी बिंतीके अनु- १७ सार किया, हां वह आपही ऐसा चालाकी था कि वह अपनी इच्छासे तुम्हारे निकट गया। और हमने उस भाईको, १८ उसके संग भेजा, जिसका नाम, सुसमाचारके द्वारासे, सब मंडलीयोंके बीचमें फैल गया है; और केवल यही नहीं १९ परंतु वह मंडलीयोंसे ठहराया गया कि वह हमारे संग तुम्हारे दान लेजाके बांट देवे, जिसके द्वारासे प्रभुकी महिमा और तुम्हारी चालाकी प्रगट होवें। हमने यह सब किया २० इसलिये कि कोई हमपर, उस बड़त धनके विषयमें जो बांट देनेको हमारे हाथमें सोंपा गया है, दोष न लगावे २१ क्योंकि हम यह चाहते हैं कि हमारा नाम जो है सो, केवल ईश्वरके सन्मुख नहीं, परंतु मनुष्योंके सन्मुख, भला हो रहे। और हमने उनके संग अपने उस भाईको भेजा जिसे २२ हमने बड़त कामोंमें सदा चालाक देखा है, हां उसकी चालाकी अब बड़त बढ़ गई है क्योंकि उसका भरोसा तुममें बड़ा है। तीत भाई जो है सोई मेरा साथी और तुम्हारी २३ सेवा करनेमें संगी कर्म करनेहारा है; और हमारे भाई जो हैं सोई मंडलीयोंके प्रेरित और खीष्टकी महिमा प्रकाश करनेहारे हैं। सो तुम, मंडलीयोंके सन्मुख, उनको दिखा २४ दीजियो कि तुम हमारे प्रेमके, जो तुम्हारी ओर है, और हमारी बड़ाई करनेके, जो तुम्हारे बिषयमें है, जोग हो।

९ नवां अध्याय।

दान कर्नेके परिश्रमी होनेमें करिन्थियों पर प्रशंसा करनी।

उस दानके विषयमें, जो पवित्र लोगोंके लिये है, तुम्हें १ लिखना बड़त उचित होता है क्योंकि मैंने तुम्हारी चालाकीको २ जानके माकिदनिया देशके लोगोंके सन्मुख यही बड़ाई किई कि आखाया देशके लोग जो हैं सो एक बरस आगेसे

देनेको तैयार हैं; इससे बज्जतेरे तुम्हारी चालाकीसे चालाक
३ ज्ञये हैं। सो मैंने भाइयोंको भेजा, न हो कि हमारी बड़ाई,
जो तुम्हारे बिषयमें इस बातमें किई गई है, व्यर्थ होवे।
४ सो जैसाकि मैंने कहा तैसाकि तुम तैयार हो रहो; क्योंकि
जो माकिदनिया लोग हमारे संग आके तुम्हें तैयार न
देखें तो हम लज्जित होंगे; हम नहीं कहते हैं कि तुम
लज्जित होओगे परंतु हम, जिन्होंने तुम्हारे बिषयमें बड़ाई
५ किई है, लज्जित होंगे। सो मैंने बिचार करके भाइयोंसे यह
बिंती किई कि वे तुम्हारे निकट आगेसे जावें और तुम्हारे
उस दानको, जिसकी चर्चा आगेसे किई गई थी, बटोरके
हाथमें रखें कि यह देखा जावे कि तुम सुइच्छासे, न कुइच्छा-
से, देते हो।

दान करनेसे क्या फल उसका निर्णय।

६ और भी मैं यह कहता हूं कि वही जो थोड़ा बोता है
सोई थोड़ा काटेगा और वही जो बज्जत बोता है सोई बज्जत
७ काटेगा। चाहिये कि एक एक अपनी इच्छासे देवे, न कु-
इच्छासे, न बेबसीसे, क्योंकि ईश्वर उसीको प्यार करता है
८ जो मनसे देता है। ईश्वर जो है सोई तुमको सब प्रकारके
अनुग्रह दे सकता है यहांतक कि तुम सब प्रकारकी भली
बस्तुओंको सदा रखते ज्ञये सब प्रकारके भले कर्म कर
९ सकोगे; जैसाकि यह लिखा है कि उसने बिथराया है,
उसने कंगालोंको दिया है, और उसका धर्म जो है सो सदा
१० तक रहता है। वही जो बोनेहारेको बीज और खानेहारेको
भोजन देता है सोई तुम्हारे बोये ज्ञये बीजका उपजा बज्जत-
११ सा करे और तुम्हारे धर्मका फल बड़ा बनावे यहांतक
कि तुम सब प्रकारकी बस्तुओंमें धनवान होके बज्जतसा
दे सकोगे; इससे हमारे द्वारासे ईश्वरका धन्यबाद किया
१२ जायगा क्योंकि इसी दानसे, केवल पवित्र लोगोंकी कंगाल-
ता दूर न जायेगा, परंतु ईश्वरका धन्यबाद भी बज्जतसा
१३ किया जायगा। वे जो इसी दानके पानेहारे होवें सो

ईश्वरकी स्तुति करेंगे क्योंकि वे देखेंगे कि तुम अपनी इच्छासे खीष्टके सुसमाचारकी बात मानते हो और उनको और और सबोंको बहुतसा दान देते हो। और इस बड़े अनु- १४ ग्रहको देखके, जो तुमको ईश्वरसे दिया गया है, वे तुमको बड़ा प्यार करके तुम्हारे बिषयमें प्रार्थना करेंगे। सो ईश्वरको १५ उस दानके लिये, जिसका बर्णन नहीं किया जा सकता है, ईश्वरका धन्यबाद होवे।

१० दशवां अध्याय।

बिपक्ष लोगोंके निकट अपने ताईं निर्दोष कर्ना।

मैं वही पौल जो (किसी किसीके कहनेके अनुसार) तुम्हारे १ सन्मुख हेठा हूं परंतु दूर हो साहस हूं, तुमको, खीष्टकी नम्रता और कोमलताका स्मरण कराके, उपदेश देता हूं। मैं यह चाहता हूं कि निकट होके मैं, उस सखतीसे, जो २ मैंने ठहराया है, उनपर सखत न हों जो कहते हैं कि हमारा बोल चाल जो है सो संसारिक है। हम संसारमें ३ हैं, सत्य, तौभी हम संसारके लोगोंकी नाईं नहीं लड़ते हैं। जिस अस्त्र शस्त्रोंसे हम लड़ाई करते हैं सो संसारिक ४ नहीं हैं, परंतु वे ऐसे प्रबल हैं कि वे, ईश्वरके द्वारासे, कोटोंको ढा देते हैं अर्थात वे उन बिद्याओंको और उस ५ बुद्धिको, जो ईश्वरके ज्ञानके बिरुद्धमें हैं, मिटा देते हैं और सब मनको पकड़के खीष्टके अधीनतामें लाते हैं। सो ६ तुम आज्ञा मानइयो; परंतु जो कोई आज्ञा न माने तो जानो कि ऐसोंको दंड देनेको हम तैयार हैं।

दूसरे लोगोंके कामको अपना कर्म कहके स्तुति करें ऐसे बिपक्षोंको दोषी कर्ना।

क्या तुम बाहिरीकी बस्तुओंपर नेत्र लगाते हो? जो ७ कोई अपने बिषयमें बिचार करे कि मैं खीष्टका हूं तो चाहिये कि वह फिर यह बिचार करे कि जैसाकि मैं खीष्टका हूं तैसाकि पौल भी खीष्टका है। जो मैं, उस सामर्थके ८

बिषयमें जो तुम्हेंापर भलाई करनेको, न बिनाश करनेको, प्रभुसे मुझको दिई गई है, बड़त बड़ाई करऊं तो मैं लज्जित ९ नहीं ड़ंगा; (परंतु मैं ऐसा नहीं करूंगा,) न हो कि कोई १० समझे कि मैं तुम्हें डरानेको चिट्ठी लिखता ड़ं। कोई कोई हैं जो कहते हैं कि उसकी चिट्ठीयां जो हैं सो भारी और सामर्थवान बातोंकी हैं परंतु उसका शरीर जो है सो ११ दुर्बल है और उसकी बोली जो है सो तुच्छ है; परंतु चाहिये कि ऐसे लोग जानें कि जैसेकि हम दूर हो चिट्ठीमें बात लिखते हैं तैसेकि हम निकट हो कर्म करनेमें होंगे। १२ हम अपनेयोंको उनमें गिनने नहीं सकते हैं अथवा अपनेयोंको उनसे उपमा देने नहीं सकते हैं जो अपनी बड़ाई करते हैं क्योंकि वे अपनेयोंको अपनेयोंसे नाप करते, और अपनेयोंको अपनेयोंसे उपमा देते ड़ये बूझनेहारे नहीं हैं; १३ हां हम उन सिवानोंके बिषयमें, जो हमारे नापसे बाहिर हैं, बड़ाई नहीं करेंगे परंतु उस सिवानेके नापके बिषयमें बड़ाई करेंगे जो ईश्वरने नाप करके हमको ठहराया है; वही १४ नाप जो है सो तुम्हारे सिवानेतक पड़ंचता है। तुम्हारे निकट आनेसे हम उस सिवानेके बाहिर नहीं गये हैं जो ठहराया गया; हां हम तुम्हारे निकट, खीष्टके सुसमा- १५ चार सुनाते ड़ये, पहिले आये। सो हम अपने सिवानेके बाहिर अर्थात और लोगोंके कर्मोंके बिषयमें बड़ाई नहीं करते हैं; परंतु हमारा भरोसा है कि तुम्हारे बिश्वासके बढ़नेसे हम अपने ठहराये ड़ये नापके समान, तुम्हारे द्वारासे, ऐसे बढ़ेंगे कि तुम्हारे सिवानेके उधर जाके सुसमाचार प्रचार १६ कर सकेंगे। हम उस सिवानेमें, बड़ाई करनेको, नहीं जायेंगे जो औरोंको ठहराया गया, और जिसमें सब तैयार किया १७ गया है। चाहिये कि वही जो बड़ाई करता है सोई प्रभुकी बड़ाई करे क्योंकि वही जो अपनी बड़ाई करता है सोई १८ सच्चा नहीं जाना जाता है परंतु वही, जिसकी बड़ाई प्रभु करता है, सोई सच्चा जाना जाता है।

११ एगारहवां अध्याय।

आवश्यकतासे पौलको अपनी स्तुति करनी।

मैं यह चाहता हूं कि तुम मुझे, मेरे मूर्खतामें, कुछ १
कुछ सहोगे हां मैं यह चाहता हूं कि तुम मुझे सहोगे क्योंकि
मैं तुमको बड़ा प्यार करता हूं। मैंने तुम्हें मांग लिया है २
कि मैं तुमको, सती कन्यासी, किसी स्वामीको अर्थात खीष्टको
सौंप देऊं। परंतु मैं डरता हूं कि यह ऐसा न होवे कि ३
जैसाकि सांपने, अपने छलसे, हवा माको भुलाया तैसाकि
तुम्हारे मन जो हैं सो उस सूधाईसे, जो खीष्टकी ओर
है, फेर जाय। जो कोई आके दूसरे यीसुका (अर्थात और ४
अच्छे त्राणकर्त्ताका) प्रचार करे जिसका प्रचार हमने नहीं
किया है, अथवा जो तुम दूसरे आत्माको (अर्थात और अच्छे
आत्माको) पावो जिसे तुमने नहीं पाया है, अथवा जो
तुम दूसरे सुसमाचारको (अर्थात और अच्छी सुसमाचारको)
सुनो जिसको तुमने नहीं सुनी है तो चाहिये कि तुम ऐसे
प्रचार करनेहारोंको ग्रहण करो। मैं तो अपनेको उनसे, जो ५
बड़े प्रेरित गिने जाते हैं, छोटा नहीं समझता हूं क्योंकि ६
जो मेरी बोली अनारी है तौभी मेरा ज्ञान ऐसा नहीं है; हां
हम सारी बातमें, हर समयमें, तुमसे जाने गये हैं। क्या ७
मैं दोषी हूं इसलिये कि मैंने अपनेको छोटा किया है कि
तुम बड़े हो जावो? अर्थात क्या मैं दोषी हूं इसलिये कि मैंने
सेंत मेंतसे तुमको सुसमाचार सुनाया? हां मैंने और मंड- ८
लियोंको लूट लिया अर्थात मैंने उनसे खूराकी लिई कि मैं
तुम्हारी सेवा करता। जब मैं तुम्हारे बीचमें खाली हाथ ९
ऊआ तो मैंने किसीसे कुछ नहीं मांग लिया; जो कुछ कि
प्रयोजन था सोई उन भाईयोंने, जो माकिदनिया देशसे
आये, मुझको दे दिया; मैंने, हर एक प्रकारमें, अपनेको ऐसा
रखा कि मैं तुमपर बोझ सा न होता और अपनेको ऐसा
रखूंगा। जैसाकि मैं खीष्टकी सच बात कहता हूं तैसाकि १०

यही मेरी बड़ाई जो है सो मुझसे, आखायाके सब देशमें,
११ लिया नहीं जायगा। क्यों? क्या मैं तुमको प्यार नहीं करता
१२ हूं; ईश्वर जानता है। परंतु जो कुछ कि मैं करता हूं
सोई मैं करते रहूंगा इसलिये कि मैं उनको, जो तुमसे कुछ
लेने चाहते हैं, लेनेका नमूना नहीं हो जाऊं कि वे, बड़ाई
१३ करनेमें, हमारे समान हो जावें। वे तो खीष्टके प्रेरितोंके
१४ भेष बनायेके झूठे प्रेरित और छल करनेहारे हैं। और यह
कुछ आश्चर्य नहीं है क्योंकि शैतान जो है सो आपही
१५ तेजस्वी दूतके भेष बनायेके अपनेको दिखाता है। सो यह तो
बड़ी बात नहीं है कि शैतानके सेवक जो हैं सो धर्मी
सेवकोंके भेष बनायके अपनेको दिखाते हैं। परंतु अंतमें
उनकी दशा जो है सो उनके कर्मोंके अनुसार होगी।

विपक्ष लोगोंसे अपने ताईं छोटा न करके दिखाना किंतु खीष्टके निमित्त
श्रमसे दुःखित होके अपने ताईं बड़ा दिखाना।

१६ मै फिर कहता हूं कि चाहिये कि कोई मुझे निर्बुद्धि
न जाने; परंतु जो कोई मुझे निर्बुद्धि जाने तो होने दे
१७ कि मैं कुछ कुछ बड़ाई करूं। जो कुछ कि मैं अपनी बड़ाई
करके कहता हूं सो मैं प्रभुकी आज्ञाके अनुसार नहीं कहता
१८ हूं, हां मैं निर्बुद्धि सा कहता हूं। बहुतेरे हैं जो अपनी
जातिके बिषयमें बड़ाई करते हैं; सो मैं भी ऐसी बड़ाई
१९ करूंगा। तुम तो आप बुद्धिमान हो निर्बुद्धियोंको अच्छी
२० भांतिसे सहने सकते हो क्योंकि जो कोई तुमको बेगारी लेवे
अथवा तुम्हारी संपतको छीन लेवे अथवा तुमसे कुछ लेवे
अथवा अपनेको बड़ा बनावे अथवा तुम्हारे मुखपर थपेड़ा
२१ मारे तो तुम यही सब सहते हो। कोई कोई कहते हैं कि
हम हेठे हैं; इस अपमानके बिषयमें मैं यह कहता हूं
कि जिस बातमें कोई साहसी है उसी बातमें मैं भी साहसी
२२ हूं; परंतु ऐसे कहनेमें मैं निर्बुद्धि सा कहता हूं। क्या वे
इब्रीय लोग हैं? तो मैं भी इब्रीय हूं; क्या वे इस्रायली
लोग हैं? तो मैं भी इस्रायली हूं; क्या वे इब्राहीमके संतान

हैं? तो मैं भी इब्राहीमका संतान हूं; क्या वे खीष्टके सेवक २३ हैं? तो मैं खीष्टकी सेवा करनेमें उनसे बड़ा हूं; मैं ऐसे कहनेमें फिर निर्बुद्धि सा कहता हूं; मैंने उनसे और परिश्रम किया है, उनसे और मार खाया है, उनसे और बार कैदखानेमें डाला गया हूं, और उससे और बार मृत्युके मुखमें सोंपा गया हूं; मैंने यिहूदियोंसे पांच बार एक कम चालीस २४ कोड़े खाय, तीन बार छड़ीयोंसे मारा गया, एक बार पाथरोंसे मारा गया, तीन बार नाव तोड़से बच गया, और एक रात दिन समुद्रमें रहा; मैं बहुतसी यात्रा करके नदीयोंके २५ भयमें, चोरोंके भयमें, अपने जातियोंके भयमें, अंदेशियोंके २६ भयमें, नगरके भयमें, बनके भयमें, समुद्रके भयमें, और झूठे भाईयोंके भयमें, हुआ; और भी मैं थकित और २७ दुःखित हुआ, मैं बार बार जागते रहा, मैं भूखा और प्यासा हुआ, मैंने बार बार उपवास किया, और मैंने शीत और नंगाई भोगा; इनको छोड़ सारे मंडलियोंका बोझ दिन २८ दिन मुझपर रहता है। कौन दुर्बल है और मैं दुर्बल नहीं २९ हूं? कौन ठोकर खाता है और मैं नहीं जलता हूं? जो ३० बड़ाई करनी उचित होय तो मैं अपने दुःखोंके विषयमें बड़ाई करूंगा। हमारे प्रभु यीशु खीष्टका पिता, जो सच्चिदानंद ३१ ईश्वर है, जानता है कि मैं, इन सब बातोंके बर्णन करनेमें, झूठ नहीं बोलता हूं। और दम्मेसक नगरमें उस अध्यक्षने, ३२ जो अरिता राजाकी ओरसे था, मुझे पकड़ने चाहके नगरपर चौकी बैठलाई; इसलिये मैं खिड़कीमेंसे टोकरीमें भीत परसे ३३ उतारा गया और उसके हाथोंसे बच निकला।

१२ बारहवां अध्याय।

स्वर्गीय दर्शनसे औ दुःख भोगनेमें अपने ताईं प्रेरित पदका प्रमाण देना।

बड़ाई करनी मुझे उचित नहीं है, तौभी मैं प्रभुके दर्श- १ नोंका और आकाश बाणियोंका बर्णन करूंगा। मैं किसी २

खीष्टीयान मनुष्यको जानता हूं, जो चौदह बरसके आगे, क्या शरीरमें था, सो मैं नहीं जानता, क्या शरीरसे बाहिर था, सो मैं नहीं जानता, ईश्वर जानता है; यही मनुष्य जो है
३ सो तीसरे स्वर्गमें उठाया गया; हां मैं ऐसे मनुष्यको जानता हूं, क्या शरीरमें था, क्या शरीरसे बाहिर था, सो मैं
४ नहीं जानता, ईश्वर जानता है; यही मनुष्य जो है सो फिरदौसमें(अर्थात स्वर्गमें)उठाया गया, जहां उसने अनकही बातें सुनीं जिनका बर्णन कोई मनुष्य करने नहीं सकता है।
५ इस मनुष्यके बिषयमें मैं बड़ाई करूंगा परंतु मैं अपने बिषयमें बड़ाई नहीं करूंगा, हां मैं अपने दुःखोंके बिषयमें
६ बड़ाई करूंगा। जो मैं बड़ाई करने चाहूं तो मैं निर्बुद्धि सा नहीं हूंगा क्योंकि मैं सच बात कहूंगा; परंतु मैं ऐसा नहीं करूंगा, न हो कि जिस प्रकारसे कोई मुझे देखता है अथवा मेरे बिषयमें सुनता है उस प्रकारसे मुझे और भले समझे।
७ मेरे शरीरमें एक कांटा दिया गया, जो शैतानका दूत सा हो मुझे दुःख दिया, न हो कि मैं उन बड़े दर्शनोंके द्वारासे बड़ा अभिमानी हो जाऊं, हां, न हो कि मैं बड़ा अभिमानी
८ हो जाऊं। मैंने तीन बार प्रभुकी बिंती किई कि यह कांटा
९ मुझसे दूर किया जावे; और प्रभुने मुझसे कहा कि तेरे बिषयमें मेरा अनुग्रह जो है सो बड़त होगा और मेरी शक्ति जो है सो दुर्बलतासे प्रकाश होवेगी। सो मैं आनंद करके अपनी दुर्बलताओंके बिषयमें बड़ाई करूंगा इसलिये कि
१० खीष्टकी शक्ति जो है सो मुझपर रहे। और मैं उस दुर्बलतासे, उस निंदासे, उस कंगालतासे, उस सताय जानेसे, और उस क्लेशसे, जो खीष्टके लिये हैं, प्रसन्न हूं क्योंकि जिस समय
११ मैं दुर्बल हूं उस समय मैं बलवान भी हूं। मैं बड़ाई करके निर्बुद्धि सा ऊआ हूं परंतु यह दोष जो है सो तुम्हारी ही है; उचित था कि तुम मेरी बड़ाई करते क्योंकि मैं उनसे, जो बड़े प्रेरित हैं छोटा नहीं हूं; तौभी मैं अपनेमें कुछ
१२ नहीं हूं। वे चिन्हें जो प्रेरितके हैं सोई तुम्हारे बीचमें

बझतसे किये गये हैं अर्थात लक्षण और अद्भुत कर्म और आश्चर्य कर्म।

लाभके निमित्त पौलको औ उसके सपक्ष लोगोंका श्रम न होना औ करिंथियोंको मंगलके लिये होना।

तुम, किस बातमें, और मंडलियोंसे छोटे हो? हां तुम १३ इसबातमें, उनसे छोटे हो कि मैंने तुमसे कुछ नहीं मांग लिया; मेरी यही दोष क्षमा करो। देखो, मैं तीसरे बार १४ तुम्हारे निकट आनेको तैयार हूं; और मैं तुमसे कुछ नहीं मांग लूंगा क्योंकि जो कुछ कि तुम्हारा है सो मैं नहीं मांगता हूं परंतु मैं तुमहीको ढूंढ़ता हूं। यह उचित नहीं है कि संतान जो हैं सो माता पिताके लिये धन बटोरे परंतु यह उचित है कि माता पिता जो हैं सो संतानोंके लिये धन बटोरें। सो मैं आनंद करके तुम्हारे आत्माओंके लिये खरच १५ करूंगा, हां मैं आपही खरच हो जाऊंगा। औ तुम मुझे इतना नहीं प्यार करो तितना मैं तुमको प्यार करता तौभी मैं ऐसा करूंगा। (कोई कोई हैं जो यह कहते हैं कि सत्य है) १६ कि पौलने तुमसे कुछ नहीं मांग लिया परंतु उसने छल करके तुमसे कुछ लिया। तो जिन्हें मैंने तुम्हारे निकट भेज दिया, क्या उनमेंसे, किसीके द्वारासे, मैंने तुमसे कुछ लिया?। मैंने १७ तीत भाईको बुलाया, और उसको, एक और भाईके संग, १८ तुम्हारे निकट भेजा; क्या तीत भाईने तुमसे कुछ लिया? क्या हम दोनों एकही मतसे और एकही चालसे नहीं चलते हैं?। क्या तुम फिर यह बिचार करते हो कि हम दोषी सा १९ तुमसे क्षमा मांग लेते हैं? हे भाईयो, सो नहीं; हम, ईश्वरके सन्मुख, खीष्टमें हो, यह कहते हैं कि हमने तुम्हारे प्राप्त करानेको सब कुछ किया है। मैं डरता हूं कि आकर मैं तुमको २० ऐसे न पाऊं जैसे मैं तुम्हें पाने चाहता हूं, और कि तुम मुझको ऐसा न पावो जैसा तुम मुझे पाने चाहते हो; हां मैं डरता हूं कि मैं तुम्हारे बीचमें बिबाद और डाह और क्रोध और झगड़े और कुबचन और फुसफुसाहट और अहंकार

२१ और ऊल्लरको देखऊं, इससे मेरा ईश्वर जो है सो मेरे फिर आनेपर मुझे, तुम्हारे निकट, दुःखी करेगा और मुझको, उन बहुतेरोंके लिये बिलाप करना होगा, जिन्होंने पाप किया और अपनी अपवित्रता और व्यभिचार और कामाभिलाषसे पश्चात्ताप न किया है।

१३ तेरहवां अध्याय।

पापियों पर पौलके शासनकी कथा, औ मंडलीके लोगोंको अपनी परीक्षा करनेमें पौलको बिनय करना।

१ तीसरी बार मैं तुम्हारे निकट आता हूं; और दो अथवा २ तीन साक्षियोंके मुखसे सब बातें ठहराई जायेंगी। मैंने आगे कहा, और जैसाकि मैं दूसरी बार सन्मुख होता तैसाकि मैं फिर कहता हूं कि जिन्होंने पाप किया, उनको, और और सबोंको जो ऐसे हैं, मैं, अपने फिर आनेपर, क्षमा नहीं ३ करूंगा; तब वही प्रमाण, जो तुम मुझसे मांगते हो, दिया जायगा, अर्थात, कि खीष्ट, मेरे द्वारासे, बोलता है; खीष्ट जो है सो तुम्हारे बीचमें दुर्बल नहीं, हां तुम्हारे बीचमें बलवंत ४ है। वही दुर्बल हो क्रूशपर मार डाला गया, सत्य, परंतु वह ईश्वरकी शक्तीसे जीता ऊआ; सो हम भी, जो खीष्टपर बिश्वास करनेहारे हैं दुर्बल हो, ईश्वरकी शक्तीसे, उसके ५ संग तुम्हारे बीचमें जीते दिखाये जायेंगे। अपनेको जांचके देखो कि तुम खीष्टके धर्ममें हो अथवा नहीं; हां अपनेको परखो; क्या तुम आपही नहीं जानते हो कि खीष्ट तुममें है अथवा ६ नहीं? जो खीष्ट तुममें नहीं हो तो तुम झूठे हो। मैं भरोसा ७ रखता हूं कि तुम जानोगे कि हम झुठे नहीं हैं। मैं ईश्वरसे यही बिंती करता हूं कि तुम कुछ बुरा न करो, न इसलिये कि हम सच्चे दिखाये जावें; हां, जो हम झूठे सा दिखाये ८ जावें तौभी तुम भला करो। यह सत्य है कि हम सच्चाईके बिरुद्धमें कुछ नहीं कर सकते हैं; परंतु जो कुछ कि हम ९ करते हैं सोई सच्चाईके लिये है। जबकि तुम बलवंत हो

और हम दुर्बल हैं तब हम आनंद करते हैं हां हम यह
चाहते हैं कि तुम सिद्ध हो जावो। सो, मैं दूर हो ये बातें १०
लिखता हूं इसलिये कि सन्मुख होके मैं उस सामर्थसे जो
प्रभुने, न ढा देनेको. परंतु बनानेको, मेरे ताईं दिई है, सखती न
करऊं। हे भाईयो, आनंदित होओ, सिद्ध होओ, शांत ११
होओ, एक मनसे होओ, और मिले रहो; तब ईश्वर,
जो प्रेम और शांतिदाता है, तुम्हारे संग रहेगा। तुम एक १२
दूसरेको पवित्र चूमा लेके नमस्कार करो। सब पवित्र लोग १३
तुम्हें नमस्कार कहते हैं। प्रभु यीशु खीष्टका अनुग्रह और १४
ईश्वरका प्रेम और पवित्र आत्माकी सहायता तुम सबोंपर
होवें। आमीन॥

गलातीय मंडलीयोंपर पत्र

१ पहिला अध्याय।

मंगलाचरण।

पौल, जो न मनुष्योंसे, न मनुष्योंके द्वारासे, परंतु यीशु १
खीष्टके और ईश्वर पिताके द्वारासे, जिसने यीशुको मृतकोंमें
से जी उठाया, प्रेरित हुआ, और सब भाई जो मेरे संग हैं, २
गलातीय देशके मंडलीयोंको नमस्कार कहते हैं। अनुग्रह ३
और आराम तुमको ईश्वर पितासे और हमारे प्रभु यीशु
खीष्टसे होवें; उसने (अर्थात यीशुने) हमारे पापोंकी संती ४
अपनेको दिया इसलिये कि वह हमको, ईश्वर पिताकी
इच्छाके अनुसार, इस बुरे संसारसे रक्षा करे। सदातक ५
उसकी महिमा प्रकाश किई जाय; आमीन।

गलातीय लोगोंका खीष्टके धर्मको त्यागनेसे पैालका आश्चर्य ज्ञान और दूसरे धर्मको दोष देना।

६ मैं अचंभित हूं कि तुमने ऐसा जलदी करके, उसे, जिसने तुम्हें खीष्टके अनुग्रह पानेको बुलाया, छोड़ दिया है और दूसरे ७ सुसमाचार पर मन लगाया है; वह तो दूसरा सुसमाचार नहीं है परंतु किसी किसीकी बात है जो तुम्हें घबराते हैं और ८ खीष्टके सुसमाचारमें मिलौनी करने चाहते हैं। सो तो, जो हम जो हैं. अथवा कोई स्वर्गी दूत जो है, उस सुसमाचारको छोड़, जो हमने तुम्हें प्रचार किया है, दूसरे सुसमाचार ९ प्रचार करे तो वह स्रापित होगा। जैसाकि मैंने अब कहा है तैसाकि मैं फिर कहता हूं कि जो कोई, उस सुसमाचारको छोड़, जो तुमने पाया है, दूसरे सुसमाचार प्रचार १० करे तो वह स्रापित होगा। क्या मैं अबतक मनुष्योंको मानता हूं अथवा ईश्वरको? क्या मैं यह ढूंढ़ता हूं कि मनुष्य मुझसे प्रसन्न होवें। जो मैं अबतक ढूंढ़ता हूं कि मनुष्य मुझसे प्रसन्न होवें तो मैं खीष्टका सेवक नहीं हो सकता हूं।

इसी धर्ममें और प्रेरितल पदमें पैालके नियुक्त होनेका बिबरण।

११ हे भाईयो, मैं तुमको जताता हूं कि वही सुसमाचार जो मुझसे प्रचारा गया है सो मनुष्योंके मतके अनुसार नहीं १२ है; क्योंकि मैंने उसको, न मनुष्योंसे पाया और न मनुष्योंसे १३ सीखा परंतु मैंने उसको यीशु खीष्टसे सीखके पाया। तुमने मेरे बिषयमें यह सुना है कि जबकि मैं यिहूदीय मतका था कि मैं उस समयमें ईश्वरकी मंडलीको बहुतसा सताते १४ हुये नाश करता था। मैं यिहूदीय मतका हो अपने हम जोलियोंसे निपुण था, ऐसा कि मैं उन बातोंके बिषयमें, १५ जो पित्र लोगोंसे चली आई थी, बड़ा गर्म था। परंतु मेरे उत्पन्न करनेहारे ईश्वरने, अपनी इच्छासे, अनुग्रह करके १६ मुझे बुलाया और अपना पुत्र मुझपर प्रकाश किया इसलिये कि मैं अनदेशियोंके बीचमें उसका सुसमाचार सुनाऊं। १७ इसपर मैंने किसी मनुष्यसे परामर्श न किया, और यिरूशा-

लम नगरको उन प्रेरितोंके निकट न गया, जो मुझसे आगे प्रेरित ठहराये गये थे, परंतु मैं आरब देशमें तुरंत गया, और कुछ दिन पीछे दम्मेसक नगरको फिर आया। तीन बरसके १८ पीछे मैं पितर से भेंट करनेको यिरूशालम नगरको गया और उसके संग पंद्रह दिन रहा। परंतु मैंने, प्रभुके भाई १९ याकूबको छोड़, प्रेरितोंमेंसे और किसीको नहीं देखा। देखो, २० ईश्वर जानता है कि जो कुछ कि मैं अब लिखता हूं सोई झूठ नहीं है। इसके पीछे मैंने सुरिया और किलिकिया २१ देशमें गया परंतु मैं उस समय खीष्टकी मंडलीके उन लोगोंसे. २२ जो यिहूदीय देशमें थे, पहिचाना नहीं गया; उन्होंने केवल २३ यह सुना था कि जिसने बिश्वासियोंको आगे सताया था सोई उस धर्मकी बात, जो वह आगे मिटा देता था, अब प्रचार करता है; इससे उन्होंने मेरे बिषयमें ईश्वरकी स्तुति किई। २४

२ दूसरा अध्याय।

यिरूशालममें पौलका जाना, औ उसके कारणका निर्णय।

चौदह बरसके पीछे मैं तीत भाईको संग लेकर बर्णबा १ भाईके संग यिरूशालम नगरको फिर गया। मैं ईश्वरकी २ आज्ञाके अनुसार गया और वही सुसमाचार जो मैं अनदेशि-योंके बीचमें प्रचार करता हूं, सोई मैंने उनको, जो बड़े गिने गये, एकांतमें बताया, न हो कि मेरी दौड़धूप निष्फल होवे अथवा हुई थी। इसपर किसीने नहीं कहा कि ३ मेरे संगी तीत भाईको, जो यूनानी देशका है, खतनः करानेका आवश्यक है। कोई कोई झूठे भाई भी वहां थे, जो छिपके ४ घूस आये थे इसलिये कि वे उस सामर्थका, जो हमने यीशु खीष्टसे पाई थी, भेद लेकर हमें अधीन करें; परंतु हमने ५ अपनेको उनके अधीन, एक घंटा भर. नहीं किया इसलिये कि सुसमाचार जो है सो तुम्हारे निकट सत्यभावसे रहे। जो बड़े ६ गिने गये वे कैसे थे यह मेरा कुछ काम नहीं है क्योंकि ईश्वर किसी मनुष्यकी मुखापेक्षा नहीं करता है; हां मैं कहता हूं

कि वे जो बड़े गिने गये उन्होंने मेरा ज्ञान नहीं बढ़ाया।
७ सो जब याकूब और कैफा (अर्थात पितर) और योहनने, जो खंभे सा गिने गये, देखा कि जैसाकि पितर खतने ऊये लोगोंके बीचमें सुसमाचार प्रचार करनेको ठहराया गया तैसाकि मैं अखतनेके लोगोंके बीचमेंसुसमाचार प्रचार करनेको
८ ठहराया गया, क्योंकि जिसने पितरको, खतने ऊये लोगोंके बीचमें, प्रेरितके कर्म करनेकी सामर्थ दिई थी उसीने मुझ को भी अनदेशियोंके बीचमें, प्रेरितके कर्म करनेकी सामर्थ
९ दिई; हां मैं यह कहता हूं कि जबकि इन तीनोंने उस अनुग्रहको, जो मुझे दिया गया था, देखा, तब उन्होंने मुझे और बर्णबाको साझेके दहिने हाथ दिया कि हम दोनों अनदेशियोंके बीचमें, और वे आपही खतने ऊये लोगोंके
१० बीचमें, बात सुनावें। वे केवल इतना चाहा कि हम दरिद्र लोगोंके लिय कुछ बटोरें; जिस कामपर मैं भी चालाक था।

खीष्टधर्मके विरुद्धाचरणके निमित्त पितरको दोषी कर्ना।

११ जब पितर आंतियखिया नगरको आया, मैंने उसका
१२ साम्ना किया क्योंकि वह दोषी था। वह अनदेशियोंके संग खाना खाते रहता था परंतु जबकि कोई कोई याकूबकी ओरसे आये तब वह खतने ऊये लोगोंके डरके मारे अन-
१३ देशियोंको छोड़के अलग हो रहा। और भी जितने और यिहूदियोंने (जो खीष्टियां ऊये थे) पितरके समान डिंभ किया यहांतक कि बर्णबा भी उनके डिंभ सागरमें खैंचा
१४ गया। सो जबकि मैंने देखा कि वे सुसमाचारकी सचाईके अनुसार ठीक न चलते थे तब मैंने उन सबोंके सन्मुख पितरसे कहा कि जो तू जो यिहूदी है यिहूदियोंकी रीतियोंके अनु- सार नहीं चलता था परंतु अनदेशियोंकी रीतियोंके अनुसार चलता था तो क्यों तू अनदेशियोंको अब सिखाता है कि यिहू-
१५ दियोंकी रीतियोंके अनुसार चलना उचित होता है? हम जो यिहूदी लोग हैं और अनदेशियोंकी नाईं चूकमें नहीं.
१६ सोई जानते हैं कि मनुष्य जो है सो व्यवस्थाके पालन करनेसे

नहीं परंतु यीशु खीष्टके द्वारासे पुण्यवान गिना जाता है; सो हमने खीष्ट यीशुपर बिश्वास किया है कि हम खीष्टपर बिश्वास करनेके द्वारासे, न व्यवस्थाके पालन करनेके द्वारासे, पुण्यवान गिने जावें क्योंकि व्यवस्थाके पालन करनेके द्वारासे कोई प्राणी पुण्यवान गिनने नहीं हो सकता है; परंतु जो १७ हम जो खीष्टके द्वारासे पुण्यवान होने चाहते हैं चूकमें पाये जावें तो क्या खीष्ट जो है सो चूकका करानेहारा है? सो तो नहीं; परंतु जो मैंने उन बस्तुओंको ढा दिया है १८ जिन्हें मैंने बनाया है तो मैं आपही दोषी ठहराया जाता हूं। मैं तो व्यवस्थाके द्वारासे व्यवस्थाकी ओर मरा हुआ हूं तो १९ भी मैं ईश्वरकी ओर जीता हुआ हूं। मैं खीष्टके संग क्रुशपर २० मार डाला गया हूं, सो तो मैं जीता नहीं; तौभी खीष्ट मुझमें जीता है; हां मैं शरीरमें हो ईश्वरके पुत्रपर, जिसने मझे प्यार किया और मेरी संती अपनेको दिया, बिश्वास करके जीता रहता हूं। इससे मैं ईश्वरके अनुग्रहको निष्फल २१ नहीं करता हूं क्योंकि जो व्यवस्थासे पालन करनेके द्वारासे पुण्य होय तो खीष्ट व्यर्थ मर गया है।

३ तिसरा अध्याय।

खीष्टको छोड़के व्यवस्थासे परित्राणकी चेष्टा करनेके हेतसे गलातीय लोगों-पर पौलका अनुयोग करना, औ व्यवास्थासे नहीं किंतु खीष्टके पुण्यसे हम पुण्यवान हो सकते हैं इसका दृढ प्रमाण देना।

हे निर्बुद्धि गलातीय लोगो, किसने तुमपर ऐसा टोना किया १ है कि तुम सत्यको नहीं मानते हो? जैसेके नेत्रोंसे तैसे कि तुमने देखा है कि यीशु खीष्ट क्रुशपर मार डाला गया है। मैं केवल यह तुमसे पूछता हूं, क्या तुमने व्यवस्थाके २ पालन करनेसे आत्मा पाया है अथवा बिश्वासकी बात सुन-नेसे? क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो कि आत्माके धर्मकी बात पहिले ३ ग्रहण करके शरीरके धर्मकी बात पीछे मानते हो? क्या तुमने ४ इतना दुःख व्यर्थ उठाया है? सो तो न होवे। क्या वही जो ५

तुमको आत्मा दिलाता है और तुम्हारे बीचमें आश्चर्य कर्म करता है सोई व्यवस्थाके कर्मोंकी बात प्रचार करके ऐसा करता है अथवा बिश्वासकी बात प्रचार करके ऐसा करता है?
६ इब्राहीम ईश्वरपर बिश्वास करके पुण्यवान गिना गया; सो
७ जानो कि वे जो बिश्वास करते हैं सोई इब्राहीमके संतान हैं।
८ पवित्र आत्मा यह जानता था कि ईश्वर अनदेशियोंको, बिश्वासके द्वारासे, पुण्यवान गिनेगा, इसके लिये उसने इब्राहीमको यह सुसमाचार सुनाया कि सब अनदेशी लोग
९ जो हैं सो तेरे द्वारासे आशीष पावेंगे। सो वेही जो बिश्वास
१० करते हैं सोई इब्राहीमके समान आशीष पाते हैं; परंतु वेही जो व्यवस्थाके कर्मोंकी ओर हैं सोई स्रापके तले हैं क्योंकि यह लिखा है कि सब कोई जो उन सब बातोंको नहीं मानते रहता है. जो व्यवस्थाके पुस्तकमें लिखीं गईं हैं, सोई स्रापित हैं।
११ यह प्रगट है कि कोई ईश्वरके सन्मुख, व्यवस्थाके द्वारासे, पुण्यवान नहीं गिना जाता है क्योंकि यह लिखा है कि वही जो पुण्यवान गिना गया है सोई बिश्वासके द्वारासे बच जायगा।
१२ व्यवस्था जो है सो बिश्वाससे अलग है, इसलिये यह लिखा है कि जो कोई सब आज्ञाओंका पालन करेगा सो बच जायगा।
१३ खीष्ट जो है सोई हमारी संती स्रापित हुआ; इससे उसने हमें मोल लेके व्यवस्थाके स्रापसे बचाया है, जैसाकि यह लिखा
१४ है कि सब कोई जो लकड़ेपर टंगा है सो स्रापित है; यह इसलिये हुआ कि वही आशीष जो इब्राहीमने पाई, सोई, यीशु खीष्टके द्वारासे, अनदेशियोंको भी दिई जावे और कि हम, बिश्वासके द्वारासे, उस आत्माको पावें जिसका बचन
१५ दिया गया था। हे भाईयो, मैं मनुष्योंकी रीतिपर बोलता हूं, जो कोई मनुष्य नियम ठहरावे तो दूसरा मनुष्य उसको
१६ कमती अथवा बढ़ती नहीं कर सकता; सो तो इब्राहीम और उसके संतानको बचन दिया गया; ईश्वर यह नहीं कहता है कि मैं संतानोंको बचन देता हूं परंतु यह कहता है कि मैं तेरे संतानको बचन देता हूं; वह एकके बिषयमें कहता है,

बङ्गतोंके बिषयमें नहीं कहता है; हां वह यह कहता है कि मैं तेरे संतानको, अर्थात् ख्रीष्टको बचन देता हूं। सो मेरी १७ बात यही है कि वही व्यवस्था जो चार सौ तीस बरसके पीछे दिई गई सोई उस नियमको, जो ईश्वरने ख्रीष्टके विषयमें ठहराया, ऐसा मिटा नहीं सकती कि वही बाचा निष्फल हो जावे; क्योंकि जो अधिकार जो है सो व्यवस्थाके द्वारासे मिल- १८ ता है तो बाचाके द्वारासे नहीं; परंतु ईश्वरने इब्राहीमको, बाचाके द्वारासे, उसे दिया। तो व्यवस्था जो है सो क्यों दिई १९ गई? वह दोषोंके कारणसे दिई गई; और जबतक वही संतान, जिसको बचन दिया गया, न आया तबतक व्यवस्था जोड़ी होती रहे। व्यवस्था भी, स्वर्गी दूतोंके द्वारासे, बिचवईके हाथमें सौंपी गई। एकको और बिचवई नहीं है परंतु २० ईश्वर एक है। सो क्या व्यवस्था ईश्वरकी बाचाओंके बिरुद्ध २१ है? सो तो न होवे; क्योंकि जो कोई उस व्यवस्थाके द्वारासे, जो दिई गई, बच सके तो व्यवस्थाके द्वारासे पुण्य आवश्य होता। परंतु धर्मशास्त्रने सबको पापी ठहराया है इसलिये २२ कि वही बाचा जो यीशु ख्रीष्टपर बिश्वास करनेके द्वारासे होता है बिश्वासियोंको पूरा किया जाय। जबतक बिश्वास २३ (अर्थात ख्रीष्ट) न आया था तबतक हम कैदी सा व्यवस्थामें बंद किये गये इसलिये कि हम उस बिश्वासकी (अर्थात ख्रीष्टकी) बाट जोहें जो प्रकाश किया जाता। सो व्यवस्था जो है उसने २४ शिक्षक की सी हो हमको ख्रीष्टके निकट पहुंचाया इसलिये कि हम पुण्यवान गिने जायें; परंतु बिश्वासके आनेसे २५ हम शिक्षकके बशमें नहीं रहते। ख्रीष्ट यीशुपर बिश्वास २६ करनेसे तुम सबही ईश्वरके संतान ङये हो; हां जितनोंने २७ ख्रीष्टके नामसे डुबकी खाई है तितनोंने ख्रीष्टको बस्त्र सा पहिरा है। सो तुम क्या यिहूदी हो अथवा यूनानी हो, क्या २८ बंदा हो अथवा निरबंदा हो, क्या पुरुष हो, अथवा स्त्री हो, सबही ख्रीष्ट यीशुमें एकसा ङये हो। और जो तुम ख्रीष्टके हो २९ तो इब्राहीमके संतान हो और बाचाके फलके अधिकारी हो।

४ चौथा अध्याय।

उत्तराधिकारीके नाईं व्यवस्थाके अधीन होना।

१ मैं यह कहता हूं कि जबलों अधिकारी जो है सो बालक २ है तबलों वह बंदा सा रहता है; वह सबोंका स्वामी है, सत्य, तौभी उस समयतक जो उसके पिताने ठहराया ३ है वह गुरूओं और अध्यक्षोंके अधीन रहता है। वैसेही हम भी, जब बालक सा थे, संसारकी रीतियोंके अधीन थे; ४ परंतु जब समय पूरा हुआ, ईश्वरने अपने पुत्रको भेजा इस-५ लिये कि वह उनको, जो व्यवस्थाके अधीन थे, मोल लेके छुड़ावे कि वे ले पालक पुत्र होनेका पद पावें; पुत्र (अर्थात खीष्ट) जो है सोई स्त्रीसे उत्पन्न हो और व्यवस्थाके अधीन हो आया।

पुत्र होनेसे दासका कर्म न कर्ना।

६ सो तुम सब ईश्वरके संतान हुये हो, इसलिये उसने अपने पुत्रके आत्माको तुम्हारे मनोंमें भेज दिया, ऐसा कि तुम, उसको ७ करनेसे, अब्बा, अर्थात, हे पिता, पुकारते रहते हो। सो तो तू अब बंदा सा नहीं परंतु पुत्र सा है; और पुत्र होनेसे तू, खीष्टके द्वारासे, ईश्वरकी वस्तुओंका अधिकारी हुआ है। ८ जबकि तुम ईश्वरको न जानते थे तब तुमने उनकी सेवा किई ९ जो सत्य ईश्वर नहीं हैं; परंतु अब तुम ईश्वरको जानते हो हां ईश्वर तुमको जानता है; सो तुम क्यों अगली निष्फल और तुच्छ रीतियोंकी ओर फिर जाते हो और उनके १० बंदे फिर होने चाहते हो? तुम दिनों और मासों और तिथों ११ और बरसोंको मानते हो। इससे मैं तुम्हारे बिषयमें डरता हूं कि ऐसा न होवे कि मैंने तुमपर परिश्रम व्यर्थ किया है।

गलातीय लोगोंको पहले प्रेमको प्रशंसा कर्ना औ मंगलकी चेष्टा कर्नी।

१२ हे भाईयो, मैं तुम्हारी यह बिंती करता हूं कि जैसा मैं हूं वैसेही तुम भी होओ क्योंकि जैसे तुम हो वैसाही मैं था। १३ तुमने मुझपर कुछ अंधेर नहीं किया है; तुम आपही जानते

हो कि मैंने शरीरमें दुर्बल हो तुमको सुसमाचार पहले सुनाया परंतु तुमने उस रोगको, जो मेरे शरीरमें था, निंदा १४ और तुच्छ न किया, हां तुमने ईश्वरके किसी दूत सा, हां मुझे यीशु खीष्ट सा ग्रहण किया। उस समयमें तुम्हारा आनंद कैसा १५ बड़ा था। मैं तुम्हारे विषयमें यही साक्षी देता हूं कि जो हो सकता तो तुम अपने नेत्रोंको उखाड़के मुझको देते। क्या १६ मैं तुमसे सत्य कहनेमें तुम्हारा बैरी ऊआ हूं? वे तुमको १७ उसकाते हो परंतु उत्तम रूपसे नहीं; हां वे तुमको हमारी ओरसे फिराने चाहते हो कि तुम उनकी ओर हो रहो। भले कर्ममें सदा चालाक होना, यह अच्छा है; न केवल जब १८ मैं तुम्हारे बीचमें हूं (परंतु जब मैं दूरभी हूं)। हे मेरे १९ बालको, जबलों तुम खीष्ट सा नहीं हो जावो तबलों मैं बड़ा दुःखी रहता हूं। मैं तुम्हारे निकट आने और और प्रकारकी २० बात कहने चाहता हूं क्योंकि मैं तुमसे घबराता हूं।

व्यवस्था औ सुसमाचारके भेदका निर्णय।

तुम जो व्यवस्थाके अधीन होने चाहते हो सो मुझसे यह २१ कहो, क्या तुम व्यवस्थाकी बात सुनते हो कि नहीं?। यह २२ लिखा है कि इब्राहीमके दो पुत्त्र थे, एक (हाजिरा) दासीसे और एक (सारा) निर्बंदीसे। वही जो बंदीसे था सोई २३ सुभावके अनुसार उत्पन्न ऊआ; परंतु वही जो निर्बंदीसे था सोई बाचाके अनुसार उत्पन्न ऊआ। ये दृष्टांत की सी हैं २४ अर्थात ये दो स्त्री जो थी सो दो नियम की सी हैं; एक तो, अर्थात वही नियम जो सीनय नाम पर्बत परसे दिया गया सोई घुलामीमें लाते है; यही हाजिरा है। हाजिरा जो २५ आरब देशके सीनय पर्बतके नियम की सी थी सोई अबके यिरूशालम नगरकी सी है जो अपने बालकोंके संग घुलामीमें है; परंतु सारा नाम निर्बंदी जो थी सोई ऊपरकी यिरूशा- २६ लमकी सी है, यह हम सबोंकी माता है; जैसाकि लिखा है २७ कि हे बांझ, तू जो नहीं जनी है, सो आनंद कर; हे तू जो जननेकी पीड़ नहीं जानी है, सो चिल्लायके रो; त्यागी ऊईके

बालक जो हैं सो उसीके बालकोंसे बड़त है जो स्वामीको
२८ रखती है; सो, हे भाईयो, हम जो हैं सो इसहाक सा,
२९ बाचाके अनुसार, संतान हैं; परंतु जैसाकि उस समयमें
उसने, जो स्वभावके अनुसार उत्पन्न ऊआ, उसीको सताया
जो आत्माके अनुसार उत्पन्न ऊआ, तैसाकि अब भी होता है।
३० तो धर्मपुस्तक क्या कहता है? वह यह कहता है कि इसी
दासीको और उसके पुत्रको निकाल; दासीका पुत्र जो है सो
३१ निर्बंदीके पुत्रके संग भागी न होगा। सो, हे भाईयो, हम
दासीके पुत्र नहीं हैं, हम निर्बंदीके पुत्र हैं।

५ पांचवां अध्याय।

त्वक्छेदनेसे त्राणकी चेष्टा कर्नेका निषेध, औ आपसमें प्रेम
कर्नेका बिनय।

१ सो, तुम उस कुट्टीमें जो खीष्टने हमको दिई है, स्थिर
२ रहो और घुलामीके जूएके तले फिर न आओ। देखो, मैं
पौल तुमसे यह कहता हूं कि जो तुम खतनः करवाओ तो
३ खीष्टसे तुमको कुछ फल न होगा। मैं हर एक मनुष्यको, जो
खतनः करवाता है, यह कहता हूं कि तुही जो है सो सारी
४ व्यवस्था पर चलनेका ऋणी है। तुमही, जो व्यवस्थाके पालन
करनेके द्वारासे पुण्यवान होने चाहता है, सोई खीष्टसे अलग
५ ऊए हो और अनुग्रहसे दूर ऊए हो। हम तो आत्माके द्वारासे,
बिश्वास करके, पुण्यवान ठहराये जानेके भरोसा रखते
६ हैं। खीष्ट यीशुमें न खतनः जो है और न अखतनः जो है सोइ
कुछ है परंतु वही बिश्वास जो है, जिससे प्रेम होता है, सोई
७ सार है। तुम तो अच्छी रीतिसे दौड़ते थे; किसने तुमको
८ ऐसा रोका कि सत्यको न मानते रहते हो?। जिसने तुमको
९ बुलाया है, उसने ऐसी मति तुमको नहीं दिई। थोड़ा सा
१० खमीर सारे पिंडेको खमीर करता है। मैं तुम्हारे बिषयमें,
प्रभुके द्वारासे, यह भरोसा रखता हूं कि तुमही जो हो, सो
और मतिके न होओगे। वही जो तुमको घबराता है सोइ,

जो कोई हो, अपने कर्मका फल पावेगा। हे भाईयो, जो मैं ११ प्रचार करता कि खतनः करवाना उचित होता है तो क्यों मैं सताया जाता हूं? ऐसे प्रचार करनेसे क्रुश जो है सो ठोकर सा न होता है। मैं यह चाहता हूं कि वे जो तुम्हें घबराते हैं १२ सो दूर किये जाते। हे भाईयो, तुम छुट्टी पानेको बुलाये १३ गये हो; यह छुट्टी पायके शरीरके अभिलाषोंके अनुसार मत करो परंतु प्रेम करके एक दूसरेकी सेवा करो। व्यवस्थाकी १४ सब बातें जो हैं सोई इसी एक बातमें लिखीं गईं हैं अर्थात् कि जैसाकि तू अपनेको प्यार करता है तैसाकि अपने भाईको प्यार कर। परंतु जो तुम एक दूसरेको काट १५ खाओ तो सावधान होओ, कि न हो कि एक दूसरेको नष्ट करो।

इन्द्रियोंके कर्मका औ आत्माके कर्मका बिबरण।

सो मैं तुमसे यह कहता हूं कि आत्माके अनुसार चलो; १६ सो तुम शरीरके अभिलाषोंके अधीन नहीं होओगे। शरीर १७ जो है सो आत्माके बिरुद्ध करता है और आत्मा जो है सो शरीरके बिरुद्ध करता है; ये दोनों ऐसे बिरुद्धी हैं कि तुम अपनी इच्छाके अनुसार नहीं कर सकते हो। परंतु जो तुम आत्मासे चलाये हो तो व्यवस्थाके अधीन नहीं १८ हो। शरीरके कर्म जो है सो अवश्य ये हैं, अर्थात, परस्त्री १९ गमन, व्यभिचार, असुचि कर्म, कामकी अभिलाषा, मूरत पूजा, २० जादूगरी, शत्रुता, झगड़े, हिंसा, क्रोध, बिबाद, बिरुद्धता, भूल-चूक, डाह, नरहत्या, मतवालपन, धुमधाम; इत्यादि। जैसाकि २१ मैंने तुमसे आगे कहा तैसाकि मैं फिर कहता हूं कि वे जो ऐसे कर्म करें सो ईश्वरके राजके अधिकारी न होंगे। परंतु २२ आत्माका फल जो है सो येही हैं, अर्थात, प्रेम, आनंद, शांति, धीरज, मित्रता, दानशीलता, सच्चाई, कोमलता और संयम; २३ इन सबोंके बिरुद्ध कोई व्यवस्था नहीं है। और वे लोग जो २४ खीष्टके हैं उन्होंने शरीरिक अभिलाषों और कामनाको क्रूश पर मार डाला है। जो हम आत्मिक होवें तो चाहिये कि २५

२६ आत्माके अनुसार चलें और ऐसा अभिमान न करें कि एक दूसरेको उसकावें और भड़कावें।

६ छठवां अध्याय।

दोषी भाई पर क्षमा करनेकी आवश्यकता।

१ हे भाईयो, जो तुम्हेंमें कोई मनुष्य दोषी हो जाय तो तुम ही जो परमार्थी हो, नम्रता करके, ऐसे मनुष्यको सीधा करो; सोच कीजियो कि क्या जाने, तू भी दोषी हो जाय।
२ एक दूसरेका बोझ उठाईयो; ऐसे करनेसे तुम खीष्टकी
३ आज्ञाका पालन करोगे। जो कोई छोटा हो अपनेको बड़ा
४ जानता है सोई अपनेको धोखा देता है। चाहिये कि एक एक अपने अपने कर्मकी परीक्षा करे; तब दूसरेपर दोष न लगाय-
५ के अपनेको दोषी ठहरावेगा। अपना अपना बोझ उठाना एक एकको होगा।

उपदेशकको दान देना, औ सत्कर्ममें प्रवृत्त होनेकी कथा।

६ चाहिये कि वही जो सुसमाचारकी शिक्षा पाता है सो अपनी
७ भली बस्तुओंसे शिक्षा देनेहारेको कुछ देवे। भूलो मत; ईश्वर जो है सोई ठगाया नहीं जायगा; जैसाकि कोई बोता है
८ तैसाकि काटेगा; जो कोई अपने शरीरके बिषयमें बोता है सोई शरीरसे बिनाशरूप अन्न काटेगा परंतु जो कोई आत्माक बिषयमें बोता है सोई आत्मासे अनंत जीवनरूप अन्न काटेगा।
९ चाहिये कि हम भले कर्म करनेमें थकित न होवें; जो हम
१० थकित न होवें तो ठीक समयमें काटेंगे। सो आओ, अवसर पायके सबोंपर भला करें, निज करके उनपर, जो बिश्वासके घरानेके हैं।

खतना न मानना खीष्टपर पौलका बिश्वास औ उसकी स्तुति करनी।

११ हे भाईयो, देख लीजियो कि कैसा बड़ा पत्र यही है जो
१२ मैंने अपने हाथसे लिख दिया है। जितने जो बड़ा नाम पाने चाहते हैं वेही हैं जो तुमको खतनः करानेका उपदेश देते हैं; वे ऐसा करते हैं केवल इसलिये कि वे आपही खीष्टके

कृशके कारणसे सताय नहीं जावें। सत्य है कि वे जो खतनः १३ किये गये हैं आपही व्यवस्थापर नहीं चलते हैं; परंतु वे तुम्हारा खतनः करवाना चाहते हैं इसलिये कि वे तुम्हारे लिये बड़ाई करें। परंतु ऐसा न होवे कि मैं, इसीको छोड़, १४ और किसीकी बड़ाई करऊं अर्थात हमारे प्रभु यीशु खीष्टके कृशकी, जिसके द्वारासे संसार जो है सो मेरी ओर मरवाया गया है और मैं जो हूं सो संसारकी ओर मरवाया गया हूं। खीष्ट यीशुके राजमें न खतनः कुछ है न अखतनः कुछ है १५ परंतु नयी सृष्टि जो है सोई सार है। जितनोंपर, जो इस १६ बातके अनुसार चलते हैं, और उन्होंपर, जो ईश्वरके सच्चे इस्रायेली लोग हैं, आराम और अनुग्रह होवें। चाहिये १७ कि आगेको, कोई मुझे दुःख न देवे क्योंकि मेरे शरीरमें, उनही चोटोंके चिन्हें, जो मैंने प्रभु यीशुके लिये खाया है, दिखलाई देते हैं। हे भाईयो, हमारे प्रभु यीशु खीष्टका १८ अनुग्रह तुम्हारे आत्मामें रहे। आमीन ॥

इफिसीयोंकी मंडलीपर पत्र

१ पहिला अध्याय।

मंगलाचरण, औ ईश्वरके मनोनीत बिश्वासी लोगोंका बिबरण.।

पौल, जो ईश्वरकी इच्छाके द्वारासे, यीशु खीष्टका प्रेरित है, १ उन पबित्र लोगोंको, जो इफिसिस नगरमें रहते हैं, और खीष्ट यीशुपर बिश्वास करते हैं, नमस्कार कहता है। हमारा पिता ईश्वर और प्रभु यीशु खीष्ट तुमको अनुग्रह २ और आराम देवें। ईश्वर और हमारे प्रभु यीशु खीष्टके ३ पिताको धन्य होवे, जिसने, खीष्टके द्वारासे, हमको सब प्रकारके परमार्थी दान अर्थात स्वर्गी दान दिया है। उसने, ४

५ संसारकी सृष्टि करनेसे पहिले, हमें ठहराया इसलिये कि हम, प्रेम करके, उसके सन्मुख, पबित्र और निष्कलंकी होवें। उसने, अपनी भली इच्छासे, हमें आगे ठहराया इसलिये ६ कि हम, यीसु ख्रीष्टके द्वारासे, ले पालक पुत्र होवें और उसके उस असीम अनुग्रहकी प्रकाश करें, जो उसने, अपने प्यारेके ७ द्वारासे, हमको दिया है। उसने, अपने बड़े बड़े अनुग्रहसे, प्यारेके लोहूके द्वारासे, हमको छुट्टी दिई अर्थात दोषोंका ८ क्षमा किया; और हमको सब प्रकारके बहुतसे ज्ञान और ९ समझ दिया है। उसने प्रेम करके, अपनी इच्छाके उसी भेदकी बात, जो उसने अपनेसे आगे ठहराई थी, हमपर प्रगट किई १० है अर्थात कि ठीक समयमें, सब कोई जो स्वर्गमें हैं और सब कोई जो संसारमें हैं सोई, ख्रीष्टके द्वारासे, एक संग किये ११ जायेंगे। उसके करनेसे हम, उसकी उस ठहराई हुई बातके १२ अनुसार, जिससे उसने अपनी इच्छाके सब कर्म करता है, अधिकारी ठहराये गये इसलिये कि हम, जिन्होंने ख्रीष्टपर १३ बिस्वास किया है, उसकी महिमा प्रकाश करें। उसके करनेसे तुमने भी सच्चाईकी बात, अर्थात, अपने त्राणका सुसमाचार सुनके और उस पर बिस्वास करके, उस पबित्र आत्माको, १४ जिसका बचन दिया गया था, पाया है; यही पबित्र आत्मा जो है सोई उस अधिकारका बयाना सा है, जो (ख्रीष्टके लोहूसे) मोल लिया गया और जिसके द्वारासे उसकी महिमा प्रकाश किई जावे।

यह गुप्त कथा बूझनेके लिये ईश्वरके सन्मुख ज्ञानके लिये प्रार्थना कर्नी।

१५ कि तुम प्रभु यीसुपर बिस्वास करते हो और सब पबित्र १६ लोगोंको प्यार करते हो; सो मैंने ये बातें सुनके तुम्हारे बिषयमें ईश्वरका धन्य सदा मानते और प्रार्थना करते रहता १७ हूं। मेरी प्रार्थना यही है कि हमारे प्रभु यीसु ख्रीष्टका तेजोमय पिता ईश्वर जो है सोई तुमको ज्ञान और आकाश बाणीका १८ दान देवे इसलिये कि तुम उसको जानो; और कि तुम्हारे मनके नेत्र खोल देवे इसलिये कि तुम ये बातें जानो अर्थात कि

कैसी वस्तु वे हैं, जिनकी आशा करनेको उसने तुम्हें बुलाया है, कैसा तेजवंत वही अधिकार है जो पवित्र लोगोंका है, और कैसी बड़ी सामर्थ वही है जो उसने अपनी बड़ी बड़ी १९ सामर्थके अनुसार, हम बिश्वासियोंकी ओर दिखलाई है। यही २० सामर्थ जो है सोई उसने ख्रीष्टकी ओर दिखलाई जब उसने उसे मृतकोंमेंसे उठायके अपने दहिने हाथपर स्वर्गमें बैठाया और उसे सब राज और पराक्रम और सामर्थ और अधिकार २१ करनेहारोंके, और और सब नामवरोंके उपर, जो इस जगतमें, हां जो आनेहारे जगतमें भी, कहा जाता है, ठहराया। उसने भी उसके अधीन सब कुछ किया है और २२ मंडलीके लिये उसके हाथमें सब कुछ सोंपा है; मंडली २३ जो है सोई ख्रीष्टका शरीर सा है अर्थात उसीकी भरपूरी है जो सबोंको भर देता है।

२ दूसरा अध्याय।

विश्वासी लोग स्वभावसे किस रूप थे औ अनुग्रहसे किस रूप होते हैं उसका विवरण।

उसने तुम्हें जिला दिया है जो उन दोषों और पापोंके १ द्वारासे मृतक सा थे जो तुम, इस संसारके लोगोंके स- २ मान और आकाश मंडलके राजाकी इच्छाके समान, आगे करते थे; यही राजा जो है सोई वही दुष्ट आत्मा है जो आज्ञा भंग करनेहारे लोगोंको उसकाता है; इन लोगों ३ के समान हम थे जब कि हम अपने शरीरके अभिलाषोंके अनुसार, शरीर और आत्माकी बूरे कर्म करते रहते थे; सत्य है, हम सुभावके अनुसार, और लोगोंकी नाईं, दंडके संतान थे; परंतु ईश्वर जो दया सागर है सोई, अपने उस बड़े ४ प्रेमके अनुसार जिससे उसने हमको प्यार किया, हमें, जो ५ दोषोंके द्वारासे मृतक सा थे, ख्रीष्टके द्वारासे, जिला दिया है, इसलिये तुमने अनुग्रहके द्वारासे बच गये हो; और भी ६ उसने हमें, ख्रीष्ट यीशुके द्वारासे, उठायके स्वर्गियोंके बीचमें

७ स्थान दिया है इसलिये कि वह अपने उस दयाके अनुसार, जो उसने, खीष्ट यीशुके द्वारासे, हमपर किई है, आनेहारे ८ समयोंके लोगोंको अपने बड़ा बड़ा अनुग्रह दिखलावे। सो तुम बिश्वास करके अनुग्रहके द्वारासे बच गये हो; यही तुमसे ९ नहीं है परंतु ईश्वरके दानसे है; न कर्मोंसे है, न हो कि कोई १० अपनेमें बड़ाई करे। हम उसीके हाथके बनाये ऊये काम हैं, और, खीष्टके द्वारासे, उन भले कर्म करनेको उत्पन्न ऊये हैं जो ईश्वरने ठहरायके यह आज्ञा किई कि हम उन्हें करें।

खीष्टसे उनके परित्राणका बिबरण।

११ सो स्मरण करो कि तुम आपही आगे देवपूजक थे और खतनः ऊये लोगोंसे अखतनःके लोग (अर्थात् तुच्छ लोग) कहे १२ जाते थे; और कि उसी समयमें खीष्टको न जानके इस्रायली लोगोंके अधिकारके भागी न थे, और उन नियमोंसे, जिन का बचन दिया गया, बाहिर थे, और निरभरोसा हो संसार १३ में नास्तिक थे। परंतु अब तुम खीष्ट यीशुपर बिश्वास करनेहारे हो, हां तुमही जो आगे दूर थे सो, खीष्टके लोहूके द्वारासे, १४ निकट ऊये हो। यीशु खीष्ट जो है सोई हम दोनोंका (अर्थात यिहूदियों और अनदेशियोंका) मिलाप करानेहारा है; उसने १५ दोनोंमेंसे एक किया है, उसने बीचकी भीत ढा दिया है, और उसने अपने शरीर देके शत्रुताको अर्थात उन रीतियोंको, जो (मूसाके) व्यवस्थामें लिखीं गईं हैं, लोप किया है; इसी प्रकारसे उसने, मिलाप करवाके, आपमें दोनोंमेंसे एक नया १६ मनुष्य सा बनाया है, हां उसने, अपने क्रूशके द्वारासे, दोनोंकी शत्रुता दूर करके उनमेंसे एक बनायके ईश्वरसे मिलाया है; १७ और उसने आके तुम्हें, जो दूर थे, और उन्हें, जो निकट थे, १८ मिलापका सुसमाचार प्रचार किया। इससे हम दोनोंने, उसके द्वारासे, पवित्र आत्माके करनेसे, पिताके निकट जाने का पंथ पाया है।

उनका पवित्र मंदिर स्वरूप होना।

१९ सो तुम अब अनजान और परदेशी नहीं हो परंतु पवित्र

लोगोंके संग एकही नगरमें रहते हो, और ईश्वरके घरानेके हो, और प्रेरितों और भविष्यद्वक्तोंकी उस नेऊ पर बनाये गये २० हो जिसके कोनेका पाथर जो है सोई यीसु खीष्ट है; सो २१ सब भीत मिलके प्रभुका पवित्र मंदिर होता है; इसीमें तुम दोनों बनाये गये हो इसलिये कि तुम, पवित्र आत्माके करनेसे, २२ ईश्वरका बासा सा होवो।

३ तीसरा अध्याय।

दूसरे देशियों पर सुसमाचार कर्नेके पौलका नियोग औ उनके निमित्त इसकी प्रार्थना।

मैं पौल जो हूं सो तुम अनदेशियोंके लिये यीसु खीष्टका १ बन्धुआ ऊआ हूं। निश्चय करके तुमने सुना है कि ईश्वरने २ अपने अनुग्रहकी बात तुम्हें सुनानेको मुझे ठहराया है, और कि उसने उस भेदको, जिसके बिषयमें मैं इस पत्रमें ३ कुछ कुछ लिख चुका हूं, मझको प्रकाश किया है; पत्रको पढ़नेसे ४ तुम जान सकोगे कि मेरा ज्ञान, खीष्टके भेदमें, कैसा है। यही भेद जो है सोई अगले समयोंके लोगोंको ऐसा प्रकाश ५ नहीं किया गया जैसाकि उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्तोंको, आत्माके द्वारासे, अब प्रकाश ऊआ है। भेदकी बात येही हैं अर्थात कि अनदेशी लोग जो हैं सो, ६ सुसमाचारके द्वारासे, खीष्टपर बिश्वास करके, एकही अधिकारके और एकही मंडलीके और उस बाचाके, जो ईश्वरसे दिया गया, एकही भागी होंगे। ईश्वरने, अपने बड़े अनुग्रहसे ७ और अपनी सामर्थ्यसे, इसी सुसमाचारका प्रचारकरनेहारे मुझे ठहराया है; हां मुझहीको, जो सब पवित्र लोगोंसे ८ छोटा हूं, यही अनुग्रह दिया गया है कि मैं अनदेशियोंके बीचमें खीष्टकी अनगिणत संपत प्रचार करऊं और कि ९ सबोंको यह समझा देऊं कि उस भेदका उपाय कैसा है जो अगले समयोंमें उस ईश्वरसे छिपाया गया जिसने, यीसु १० खीष्टके द्वारासे, सबको उत्पन्न किया इसलिये कि ईश्वरकी

उस ठहराई ऊई बातके अनुसार, जो उसने अगले समयोंमें,
११ हमारे प्रभु खीष्ट यीशुसे, ठहराई, ईश्वरका बड़ा बड़ा
ज्ञान जो है सोई, मंडलीके द्वारासे, उन राज और पराक्रम
करनेहारोंको, (अर्थात दूतोंको) जो खर्गपर रहते हैं,
१२ जनाया जाय; इससे हम, यीशुपर बिश्वास करनेके द्वारासे,
१३ भरोसा करके ईश्वरके सन्मुख जा सकते हैं; सो मैं बिंती
करता हूं कि तुम उन दुःखोंके कारणसे, जो मैं तुम्हारे लिये
भोगता हूं, उदास न होओ क्योंकि उन्होंसे तुम्हारी बड़ाई होती
१४ है। इसकारण मैं हमारे प्रभु यीशु खीष्टके पिताके सन्मुख,
१५ जिससे खर्ग और पृथ्वीकी सारी मंडलीका घराना नाम
१६ पाता है, अपने घूटने टेकके यह प्रार्थना करता हूं कि
वह अपने बड़े बड़े अनुग्रहके अनुसार तुम्हें यह देवे कि
तुम, उसके पबित्र आत्माके द्वारासे, अपने मनमें बड़ा बलवंत
१७ हो जावो, कि खीष्ट, बिश्वाससे, तुम्हारे मनमें रहे और कि
१८ तुम प्रेम करके ऐसे गढ़े और बनाये होवो कि सब पबित्र
लोगोंके समान यह समझ सको कि खीष्टके प्रेमकी लंबाई और
१९ चौड़ाई और गहिराई और उंचाई कितनी है, हां कि
तुम यह जान सको कि खीष्टका प्रेम जो है सोई जाननेसे
बाहिर है इसलिये कि तुम ईश्वरके सब दानोंसे भर जावो।

ईश्वरका धन्यबाद करना।

२० सो उसीको, जो, उस शक्तिके अनुसार जो हमारे बीचमें
प्रकाश होती है, हमारी सब प्रार्थनासे और समझ करनेसे
२१ बऊत बऊत और कर सकता है, हां उसीकी स्तुति, मंडलीसे,
यीशु खीष्टके द्वारासे, सदालक किई जाय। आमीन।

४ चौथा अध्याय।

एकचित्त होनेका परामर्श औ पारमार्थिककरके अभिप्रायका निर्णय।

१ सो मैं जो प्रभुके लिये बन्धुआ हूं तुमको यह उपदेश
देता हूं कि उस दशाके योग्य चलो जिसमें होना तुम
२ बुलाये गये हो, अर्थात, कि सब प्रकारकी दीनतासे और

नरमतासे और धीरजसे प्रेम करके एक दूसरेको सहो। और
जैसाकि पवित्र आत्मा सिखाता है तैसेकि मिलापके बंधनसे ३
बंध हो एक मनी रहनेका यत्न करो। जैसेकि तुम सब बुलाये ४
गये हो कि एकही बस्तुओंकी आशा रखो तैसेकि एक शरीर,
और एक आत्मा, और एक प्रभु, और एक बिश्वास, और एक ५
डुबकी, और एक ईश्वर है जो सबोंका पिता है और सबोंके ६
ऊपर और सबोंके बीचमें और तुम सबोंमें है। सो उस ७
दानके परिमाणके अनुसार, जो खीष्टसे दिया जाता है, हममें
से एक एक मनुष्यको दान दान दिया गया है, जैसाकि यह ८
लिखा गया है कि वह जयमान होके ऊपर गया और मनुष्यों
को दान दिया। इसी बातसे, अर्थात, ऊपर जानेकी बातसे, ९
क्या निकलता है? यही निकलता है, अर्थात, कि वही (जो
ऊपर गया) सोई पहिले जगतमें उतरा; वही जो १०
उतरा सोई वही है जो उस स्वर्गको चढ़ा जो सबके ऊपर
है इसलिये कि वह सबोंको दान देते ऊये भर देवे। उसने ११
येही दान दिया अर्थात कोई कोई प्रेरित, कोई कोई भविष्य-
दक्ता, कोई कोई सुसमाचार प्रचार करनेहारे, कोई कोई
चढ़वा है, और कोई कोई उपदेश देनेहारे। उसने दान करके १२
इन्हें इस कारणसे दिया कि वे सेवा करके पवित्र लोगोंको ठीक
करें अर्थात कि खीष्टकी मंडलीको भलाईमें बढ़ा देवें, ऐसा कि १३
हम सब जो हैं सो ईश्वरके पुत्रके धर्म और ज्ञानके बिषय-
में एक मनी हो जावें और कि स्याने सा होवें हां खीष्ट सा
हो जावें इसलिये कि हम आगेको बालक सा न रहें, और १४
मनुष्योंके छलके द्वारासे और उस भुलावाके द्वारासे, जिससे
भूलचूक होता है, हर प्रकारके उपदेशके बतासमें न लह-
रायें और न फिराये जावें परंतु प्रेम करके सचाईमें रहते १५
ऊये हर प्रकारकी भलाईमें खीष्टकी ओर, जो सिर सा
है, बढ़ते जावें, जिससे सारा शरीर, (अर्थात मंडली), १६
जोड़ाया और ठीक ठाक किया होनेके द्वारासे, और उस
कर्मके द्वारासे, जो एक एक अंग, अपनी अपनी सामर्थ्यके अनु-

सार, करता है, ऐसा बढ़ा जाता है कि वह आपही प्रेम करके अपनेपर भला कर सकता है।

दुष्टस्वभावके छोड़नेको इफिसीयोंको पौलका निर्णय औ धर्मकर्म करनेकी बिनय कथा।

१७ सो मैं प्रभुके नाम लेके यह आज्ञा करता हूं कि तुम उन अन्यदेशियोंके समान, जो अपने मनके भूलके अनुसार
१८ चलते हैं, न चलो। उनके मन जो हैं सो अंधकारसे भरे हुये हैं: वे, उस अज्ञानताके द्वारासे, जो उनके मनोंकी सख्तीसे
१९ होती है, अमर ईश्वरसे अलग हुये हैं; और सख्त हो ऐसे बूरे हो गये हैं कि वे लालसा करके सब प्रकारके अशुचि
२० कर्म करते हैं। परंतु तुम खीष्टसे ऐसा नहीं सिखाये गये
२१ हो; तुमने उसकी बात सुनी है, और उस सच्चाईके अनुसार,
२२ जो यीशुसे है, यही उपदेश पाया है कि अगले चालके पुराने मनुष्यको (अर्थात सूभावको) जो उन अभिलाषोंसे,
२३ जिन्होंसे छल होता है, बड़ा बूरा हुआ है, दूर करो; और
२४ अपने जी जानमें नया सा हो उस नये मनुष्यके समान होओ जो ईश्वरके समान धर्मी और सच्चा उत्पन्न हुआ है। सो
२५ चाहिये कि झूठ न करके एक एक अपने भाईसे सच कहे;
२६ क्योंकि हम एकही मंडलीके हैं। क्रोधी हो पाप न करो; सूर्य्यके
२७ डुबनेके इधर क्रोधित होने छोड़ दो, और शैतानको स्थान
२८ न दो। जो चोर है सो चोरी फिर न करे हां चाहिये कि वह अपने हाथोंसे काम करके कमावे कि कंगालोंको
२९ कुछ देवे। कुछ बूरी बात न कहो, परंतु जो कुछ कि भली
३० है सो कहो कि सुननेहारोंको भला किया जाय। ईश्वरके पबित्र आत्माको, जिसके द्वारासे तुम मुक्तिके दिनके लिये
३१ तैयार किये गये हो, अप्रसन्न न करो। सब प्रकारकी कड़वाहट, और क्रोध, और कोप, और कोलाहल, और निंदा,
३२ हां सब प्रकारकी बूराई, अपनसे दूर करो। आपसमें कोमलता और दया करो और जैसाकि ईश्वर, खीष्टके द्वारासे, तुमको क्षमा करता है तैसेकि एक दूसरेको क्षमा करो।

५ पांचवां अध्याय।

सब अशुचिक्रिया छोड़नेमें पौलकी विनय कर्नी।

सो तुम, प्रिय बालकोंके समान, ईश्वरका पीछा करो, और १
प्रेम करके चलो जैसाहीकि खीष्टने हमको प्यार करके २
हमारी संती अपनेको भेंट और बलिदान किया; यह ईश्वर-
के सन्मुख सुगंध सा था। जैसाकि पवित्र लोगोंको उचित ३
है तैसाकि न बेश्यागमन, न किसी प्रकारका अशुचि कर्म
करो और न अपनेयोंके बीचमें लोभकी बात कहने दो;
और न मलीन, और न मूढ़, और न ठट्ठकी बात, जो अनु- ४
चित हैं, कहो परंतु वही बात जो गुणकारी है सो कहो।
तुम तो यही जानते हो कि वही जो व्यभिचारी है अथवा ५
अशुचि कर्म करनेहारा है अथवा लोभी है, जो देवपूजक
सा है, सोई खीष्टके अर्थात् ईश्वरके राजमें अधिकार नहीं
पावेगा। सावधान होओ, न हो कि कोई अनर्थ बात ६
करके तुम्हें धोखा देवे क्योंकि ऐसे कुकर्मोंके द्वारासे ईश्वरका
क्रोध जो है सोई न मान्नेहारोंपर आता है; इससे तुमही ७
जो हो सो उनके साथ भागी न होओ। तुम आगे अंधकार- ८
मय थे परंतु अब प्रभुके द्वारासे उज्याला पाया है; सो
उज्यालेके संतानोंके समान चलो। पवित्र आत्माका फल जो ९
है सो सब प्रकारका भला और धर्मी और सत्य कर्म है; सो १०
देख लो कि प्रभुको कौनसा कर्म भावता है। अंधकारके ११
निष्फल कर्म मत करो, हां उनका दुष्कर्मी होना
दिखाओ। उनके गुप्त कर्म जो हैं सो ऐसे बुरे हैं कि उनके १२
कहनेसे लज्जा होती है। सब कर्म जो दुष्ट हैं सो उज्या- १३
लासे दिखाये जाते हैं और जो कुछ कि अपनेको दिखा
देता है सोई उज्याला सा है। इस कारण वह कहता है १४
कि हे सोनेहारे, जाग, और मृतकोंमेंसे निकल आ, और खीष्ट
तुझको उज्याला देगा।

सावधान रीतिसे आचरण करनेमें बिनय कर्नी।

१५ सो सावधान होओ कि तुम कैसे चलते हो; निर्बुद्धियोंके
१६ समान मत चलो परंतु बुद्धियोंके समान चलो। दिन सुफल करो
१७ क्योंकि अबका समय बुरा है; इसलिये निर्बुद्धि मत होओ,
१८ हां प्रभुकी इच्छाके समझनेहारे होओ। शराब न पीओ
यहांलों कि मतवाले हो जाओ परंतु पवित्र आत्मासे भर
१९ जाओ। आपसमें धर्म गीत और भजन और परमार्थी
२० कीर्त्तन गाया करके अपने मनसे प्रभुकी स्तुति करो। और
समस्त वस्तुओंके लिये, हमारे प्रभु यीशु खीष्टका नाम लेके,
ईश्वरका अर्थात् पिताका धन्य सदा मानो।

स्त्री पुरुषोंके उचित कर्म्मोंका निर्णय।

२१ ईश्वरसे डरके एक दूसरेके बशमें रहो। हे स्त्रीयो, अपने
२२ स्वामीयोंके बशमें ऐसी रहो जैसीकि प्रभुके बशमें रहना
२३ चाहिये क्योंकि स्वामी जो है सो स्त्रीका सिर सा है जैसाकि
खीष्ट जो है सो मंडलीका सिर सा और रक्षा करनेहारा है;
२४ हां, जैसीकि मंडली जो है सोई खीष्टके बशमें रहती है
तैसीकि चाहिये कि स्त्री जो हैं सो, हर एक बातके बिषयमें,
२५ अपनी स्वामीयोंके बशमें रहें। हे स्वामीयो, अपनी स्त्रीयोंको
ऐसा प्यार करो जैसाकि खीष्ट मंडलीको प्यार करके अपनेको
२६ उसको संती दिया इसलिये कि उसको अपनी बातके
द्वारासे पवित्र करे जैसाहीकि जलसे धोई जाती; और कि
२७ उसको ऐसी बड़ी सुंदर मंडली बनायके अपने सन्मुख
खड़ी कर देवे कि उस पर न कलंक, न झुरी, न और कुछ
२८ ऐसा लगे हां कि पवित्र और निर्दोष होवे। चाहिये कि
जैसेकि स्वामी अपने शरीरोंको प्यार करते हैं तैसेकि अपनी
स्त्रीयोंको प्यार करें; वही जो अपनी स्त्रीको प्यार करता
२९ है सोई अपनेको प्यार करता है; कोई नहीं है जो अपने
शरीर से कधी बैर करता है, हां सब अपने शरीरको
पालता पोषता है जैसाहीकि खीष्ट मंडलीको पालता पोषता
३० है क्योंकि हम जो हैं सो उसीके शरीरके अंग सा हैं हां

उसके मांस और उसकी हड्डियोंमेंसे हैं। यह लिखा है ३१ अर्थात कि मनुष्य जो है सो अपने माता पिताको छोड़के अपनी स्त्रीसे मिला रहेगा और वे दोनों एक सा होंगे। यह बड़ा भेद है; परंतु मैं खीष्ट और मंडलीके बिषयमें ३२ यह कहता हूं। सो चाहिये कि तुम्होंमेंसे एक एक अपनी ३३ अपनी स्त्रीको प्यार करे जैसाहीकि अपनेको प्यार करता है; और कि स्त्री भी अपने स्वामीका आदर मान करे।

६ छठवां अध्याय।

बालकोंके औ माता पिताके कर्त्ता कर्मोंका बिवरण।

हे बालको, प्रभुकी इच्छाके अनुसार अपने माता पिताको १ मानईयो क्योंकि यह ठीक है; यह आज्ञा, जिसपर प्रतिज्ञा २ लगती है, सो बड़ी है अर्थात कि अपने माता पिताको मानईयो कि तेरा भला होवे और देशमें तेरे दिन बज्जत ३ होवें। और, हे पिता सब, अपने बालकोंको क्रोधी मत ४ करो; परंतु प्रभुकी शिक्षा और उपदेश देके प्रतिपालन करो।

दासका औ प्रभुके कर्तव्य कर्मोंका बिवरण।

हे दासो, बड़ा आदरमान करके और सच्चे मनसे अपने ५ संसारिक स्वामीयोंको मानईयो जैसाहीकि खीष्टको मानना चाहिये; न मनुष्योंके उन प्रसन्न करनेहारोंके समान होओ जो ६ केवल अपने स्वामीयोंके सन्मुख सेवा करते रहते हैं; परंतु खीष्टके दासोंके समान होओ जो मनसे हां प्रसन्नतासे ईश्वरकी इच्छाके अनुसार कर्म करते हैं; सो तुम अपने स्वामीयोंकी ७ सेवा करो जैसाहीकि प्रभुकी सेवा करते हो; और जानो कि ८ जो कोई भला करता है, क्या बंदा होय क्या निर्बंदा होय, सोई प्रभुसे फल पावेगा। हे स्वामीयो, धमकी न करके अपने ९ दासोंसे ऐसाही करो; तुम जानते हो कि तुम्हारा भी एक स्वामी है जो स्वर्गमें रहता है और किसीका पक्षपात नहीं करता है।

ईश्वरके सज्जामें सुसज्जीभूत होनेका उन पर पौलका बिनय।

१० सो, हे मेरे भाईयो, प्रभुमें हो उसकी बड़ी सामर्थ्यपर
११ भरोसा करके स्थीर रहो। ईश्वरके सारे हथियार अपने पर
बांधो इसलिये कि शैतानके छली कर्मोंका साम्ना कर सको।
१२ केवल मनुष्योंसे कुश्ती करनी हमको नहीं होती है परंतु
प्रधान और पराक्रमी भूतोंसे, इस समयके अंधकारके अ-
१३ ध्यक्षोंसे, और दुष्ट आत्माओंसे भी, जो स्वर्गीयोंमें हैं। हां, मैं
फिर कहता हूं कि ईश्वरके हथियार ले लो इस लिये कि दुः-
समयमें साम्ना कर सको और सबोंपर जैमान होके खड़े होने
१४ सको। सो अपनी कमरको सच्चाईसे बांधके और धर्मका
१५ झिलम और शांतिदायक सुसमाचारके बनाये ऊये जूते
१६ पहिनके और इन सबोंपर बिश्वासकी ढाल रखके, जिसके
द्वारासे पापात्माके सब जलते ऊये तीरोंको बुझा सको, खड़े
१७ होओ; और भी त्राणका टोप और पबित्र आत्माका खड्ग, जो
१८ ईश्वरका बचन है, ले लो; हर समयमें सब प्रकारकी प्रार्थना
और बिंती, मनसे, करो, हां जागते रहते और परिश्रम करते
१९ ऊये सब पबित्र लोगोंके बिषयमें प्रार्थना करते रहो, और
बिशेष करके, मेरे बिषयमें भी प्रार्थना करो कि मुझको बात ऐसी
२० दिई जावे कि मैं साहस करके उस सुसमाचारका भेद सु-
नाऊं जिसके लिये मैं संदेशी हो जंजीरोंसे बंधा ऊआ हूं, हां कि
मैं साहस करके बातको ऐसा कहूं जैसा होकि कहा चाहिये।

तूखिकको प्रेरण करना औ भाईयोंको नमस्कार कहना।

२१ जो कुछ कि मुझपर ऊआ है और जो कुछ कि मैं करता हूं
सोई तूखिक, जो प्यारा भाई और प्रभुका सच्चा सेवक है,
२२ तुमको सुना देगा; मैंने उसे तुम्हारे निकट भेजा है इस
लिये कि तुम हमारी दशाकी बात जानो और कि वह तुम्हारे
२३ मनोंको शांति देवे। पिता ईश्वर और प्रभु यीशु खीष्टसे
आराम, और प्रेम, और बिश्वास, सब भाईयोंको दिये जावें।
२४ उन सबोंको अनुग्रह दिया जाय जो निष्कपटसे हमारे
प्रभु यीशु खीष्टको प्यार करते हैं। आमीन।

फिलिपियोंकी मण्डलीपर पत्र।

मंगलाचरण।

यीशु खीष्टके दास, पौल और तीमथिय, उन पवित्र लोगोंको, १ जो खीष्ट यीशुपर विश्वासी हो फिलपी नगरमें रहते हैं, और उनके मंडलाध्यक्षों और मंडलसेवकोंको, नमस्कार कहते हैं। हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु खीष्टसे तुमको अनुग्रह २ और आराम दिये जावें।

फिलिपियोंके बिश्वासको फलके लिये पौलका धन्यबाद करना उनके लिये उसकी प्रार्थना।

जिस समय मैं तुमको स्मरण करऊं, उसी समय मैं अपने ३ ईश्वरको धन्य मानता और अपनी हर एक प्रार्थनामें तुम ४ सबोंके बिषयमें आनंद करके प्रार्थना करता हूं क्योंकि जिस ५ दिनसे तुमने सुसमाचारकी बात ग्रहण किई, आजके दिनतक उसमें एक संग हो रहे हो; और मेरा भरोसा यही है कि ६ वही जिसने तुममें उत्तम कर्म करना आरंभ किया. सोई यीशु खीष्टके दिन तक करता करता रहके पूरा करेगा। उचित ७ यही है कि मैं तुम सबोंके बिषयमें ऐसा भरोसा रखऊं क्योंकि तुम सब मुझसा अनुग्रह पायके जंजीरोंसे मेरे बंधे होनेमें और मुझ कापहीको सच्चा दिखावनेमें और सुसमाचारकी सचाई ठहरावनेमें मुझे प्यार करते रहते हो। ईश्वर जानता है कि ८ जैसाकि यीशु खीष्ट प्यार करता है तैसाकि मैं तुमको प्यार करता हूं। और मेरी प्रार्थना यही है अर्थात कि तुम्हारा प्रेम ९ जो है सो ज्ञान और बुद्धिके संग ऐसा बढ़ते बढ़ते रहे कि १० तुम बुरी बातोंसे भली बातोंको जान सको, और कि उन फलों ११ से, जो यीशु खीष्टके द्वारासे हैं, लदे होयके खीष्टके दिनतक निष्कपट और निरदोष हो रहो; इससे ईश्वरकी महिमा और स्तुति किई जायें।

खीष्टका सुसमाचार प्रचार करनेमें उसके दुःखका बिवरण।

हे भाईयो, मैं यह चाहता हूं कि तुम जानो कि जो कुछ १२

कि मुझपर पड़ा है उसने सुसमाचारकी बात ऐसी फैलवाई है
१३ कि सारी राजधानीमें और और सब स्थानोंमें यह चर्चा ऊई
१४ कि मैं खीष्टके कारण जंजीरोंसे बंधा ऊआ हूं; और कि उन
भाईयोंमेंसे, जो प्रभुपर बिश्वास करते हैं, बऊतेरे मेरे जंजीरों-
को देखके बड़े साहसी ऊये हैं और निर्भयसे सुसमाचारकी
१५ बात सुनाने लगे हैं। कोई कोई तो हैं जो हिसका और
बिरोध करके खीष्टकी बात प्रचार करते हैं परंतु और कोई
१६ हैं जो प्रेम करके प्रचार करते हैं; वेही जो बिरोध करके
खीष्टकी सुसमाचार कुटिलतासे प्रचार करते हैं सोई यही
समझते हैं कि ऐसा करनेसे वे मेरी जंजीरोंको और भारी
१७ करें; परंतु वेही जो प्रेम करके प्रचार करते हैं सोई यह
जानते हैं कि मैं सुसमाचारको सच दिखावनेको ठहराया
१८ गया हूं। सो तो क्या है? चाहे, सत भावसे, चाहे,
असत भावसे, खीष्टका सुसमाचार, हर प्रकारसे, प्रचारा
जाता है; इससे मैं आनंद करता हूं और आनंद करऊंगा।
१९ मैं जानता हूं कि इसीसे, तुम्हारी प्रार्थनाके और यीशु
खीष्टके आत्माके उपकारके द्वारासे, मेरी छुट्टी होगी;
२० और मेरी आशा और भरोसा यही है कि मैं किसी प्रकारसे
लज्जित नहीं हूंगा, हां कि जैसाकि मेरे प्रचारनेके द्वारासे
सदा ऊआ है तैसाकि अब भी फिर होगा अर्थात कि खीष्ट
जो है सो, मेरे शरीरके द्वारासे, क्या जीनेमें क्या मरनेमें,
२१ नामवर किया जायगा। जो मैं जीता रहऊ तो यह खीष्टके
लिये होगा; जो मैं मर जाऊं तो यह मेरे लाभके लिये
२२ होगा। सो तो जो मेरे जीते रहनेके द्वारासे मेरे परि-
श्रमका कुछ फल होय तो मैं नहीं जानता हूं कि मैं क्या
२३ चाहूं। मैं इन दोनोंके अधरमें हूं, अर्थात, मैं चाहता हूं
कि यहांसे जाके खीष्टके संग रहने पाऊं क्योंकि यह मेरे
२४ लिये बऊत अच्छा होगा; और मैं यहां रहने चाहता हूं
२५ क्योंकि यह तुम्हारे लिये बऊत अच्छा होगा। और मैं निश्चय-
से जानता हूं कि मैं जीता रहके तुम सबोंके संग कुछ

दिन रहूंगा इसलिये कि तुम बिश्वासमें बढ़ जावो और आनंद करो। सो मेरे द्वारासे, अर्थात, तुम्हारे निकट मेरे २६ फिर आनेके द्वारसे, तुम ख्रीष्ट यीशुपर बिश्वास करके बड़ा आनंद करोगे।

सुसमाचारकी बिधिसे आचार व्यवहार कर्नेमें औ बैरियोंका भय न कर्नेमें उन पर पौलका बिनय कर्ना।

सो ख्रीष्टके सुसमाचारके अनुसार ऐसा चलो कि जो २७ मैं तुम्हें देखनेको आऊं अथवा नहीं आऊं तौभी मैं तुम्हारे बिषयमें यह सुनऊं कि तुम एक मनसे स्थिर हो सुसमाचारके धर्मके फैलावनेके जतन करते रहते हो और २८ कि बिरोधियोंसे कुछ न डरते हो। यह जो है सो बिरोधियोंके बिनाशका लक्षण है परंतु ईश्वरकी ओरसे तुम्हारे त्राणका लक्षण है। तुमको, ख्रीष्टके लिये, केवल यही नहीं २९ दिया गया है अर्थात कि उसपर बिश्वास करो परंतु यह भी कि उसके लिये दुःख उठाओ; तुम वही क्लेश ३० भोगते हो जो तुमने मुझे भोगते देखा, और अब सुनते हो कि मैं भोगता हूं।

२ दूसरा अध्याय।

परस्परमें प्रेम कर्नेको बिनय कर्ना।

जो ख्रीष्टसे कुछ शांति होय, जो प्रेमसे कुछ आनंद होय, १ जो पबित्र आत्मासे कुछ सहायता होय, जो तुममें कुछ स्नेह २ और दया होय तो एकीमन, और एकी प्रेम, और एकही इच्छा और एकी चितसे हो मेरा आनंद पूरा करो। तुम न झगड़ा ३ करो और न अहंकार करो परंतु दीन हो एक दूसरेको अपनेसे अच्छा जानो। चाहिये कि कोई केवल अपनेकी चिंता ४ न करे परंतु एक दूसरेकी चिंता भी करो।

ख्रीष्टके दृष्टांतोंसे नम्र होनेका बिनय।

चाहिये कि वही सुभाव जो ख्रीष्ट यीशुका था सोई ५ तुम्हारा भी होवे; वह ईश्वर रूपी था; जो ईश्वर सा दिखलाई ६

७ देता तो लूटकर्म न करता परंतु उसने अपने ताईं छोटा कर
८ मनुष्य भेष धारण करके दास रूपी दिखलाई दिई। इसीरीति मनुष्यरूपी होके उसने अपनेको छोटा करके मृत्युके अर्थात
९ क्रूशकी मृत्युके हाथमें अपनेको सौंप दिया। सो ईश्वरने उसको
१० ऊंचा पद दिया है और उसको सबोंसे नामवर ठहराया है इसलिये कि यीशुके नामपर हर एक घुटने, क्या स्वर्गमें हैं क्या
११ पृथ्वीपर हैं क्या पृथ्वीके नीचे हैं, टेकें, और हर एक को जीभ यह माने कि यीशु खीष्ट जो है सो प्रभु है; इससे ईश्वरकी महिमा प्रकाश किई जाय।

दूसरे लोगोंके लिये धर्म्मका आचरण कर्नेको बिनय कर्ना।

१२ हे मेरे प्रिय, तुम्होंने मेरे सन्मुख हो मेरी बात सदा मानी; और केवल यह नहीं परंतु मेरे असन्मुख हो अबही अधिक मानते रहते हो; सो इसी प्रकारसे अपने उद्धारका
१३ कर्म, भयसे और काम्पनेसे, करते रहईयो; ईश्वर जो है सोई तुमको ऐसी सामर्थ देगा कि उसकी इच्छाके अनुसार
१४ चाहोगे और कर्म करोगे। बिन कुड़कुड़ाहटोंसे और बिन
१५ झगड़ाओंसे सब कर्म करो इसलिये कि निर्दोष और निष्कपट दिखाये जावो हां कि टेढ़े तिरछे लोगोंके बीचमें, ईश्वरके
१६ निष्कलंक संतान दिखाये जावो। ऐसा करके तुम जीवनकी बात प्रकाश करते हुये, ज्योति सा, जगतमें होओ। इससे खीष्टके दिनमें मेरी यही बड़ाई होगी कि मैंने व्यर्थ न दौड़ा है, और व्यर्थ न परिश्रम किया है।

उनकी सेवा कर्नेको पौलकी इच्छा औ उनके निकट तीमथिय औ इफपरदितको भेजनेकी कथा।

१७ जो मैं तुम बिश्वास करनेहारों और आज्ञा पालन करनेहारोंके लिये बलिदान सा मार डाला जाऊं तौभी मैं आनंद
१८ करूंगा हां मैं तुम सबोंके संग आनंद करूंगा; सो तुम
१९ भी आनंद करो हां मेरे संग आनंद करो। मैं प्रभु यीशुके अनुग्रहसे यह भरोसा रखता हूं कि मैं तुम्हारे निकट तीमथियको जल्द भेज सकूं इसलिये कि मैं तुम्हारी दशाको

जानके आनंदित हो जाऊं। उसे छोड़ मेरे निकट मुझसा २०
और कोई नहीं है जो सत्य भावसे तुम्हारे बिषयमें चिंता
करेगा; क्योंकि सब अपने अपने बिषयमें चिंता करते हैं, न २१
उनके बिषयमें जो खीष्ट यीशुके हैं; परंतु तुम तीमथियके बि- २२
षयमें यह जानते हो कि जैसाकि पुत्र पिताके संग है तैसाकि
उसने मेरे संग सुसमाचारकी सेवा किई है। सो मेरा भरोसा २३
यही है कि उन बातोंको देखनेके पीछे, जो मेरे उपर होंगीं,
मैं तीमथियको तुम्हारे निकट जलद भेज सकूंगा; हां मैं प्रभुके २४
अनुग्रहसे यह भरोसा रखता हूं कि मैं आपही तुम्हारे
निकट जलद आ सकूंगा; तौभी मैंने यह उचित जाना कि २५
इसी समय तुम्हारे निकट इपफरूदित भेज देना; वही मेरा
भाई और मेरा संगी कर्म करनेहारा और मेरा संगी सिपाही;
और तुम्हारा सन्देसी, और मेरा पालनकरनेहारा है; वह २६
आपही तुमको बहुत देखने चाहता था, और इसलिय उदास
हुआ कि तुमने सुना था कि वह आपही बीमार पड़ा था। २७
सत्य है कि वह बीमारीसे मरनेपर हुआ था परंतु ईश्वरने
उसपर दया किई, और केवल उसीपर नहीं, परंतु मुझपर भी
दया किई, न हो कि मेरा दुःख और भारी होवे। सो मैं २८
तुम्हारे निकट उसे बड़ा जलद भेजता हूं इसलिये कि तुम उसे
फिर देखते हुये आनंद करो और कि मेरा दुःख कम हो
जावे। सो बड़ा प्रेम करके उसको प्रभुके नाममें ग्रहण करो २९
और ऐसोंको नामवर जानो क्योंकि वह खीष्टके कर्म करनेमें ३०
मरनेपर था हां उसने अपने प्राणको कुछ न समझा इस लिये
कि वह मेरी वही सेवा करते जो तुम करने चाहते थे।

३ तीसरा अध्याय।

लक्छेदनेस परित्राण न होना, केवल खीष्टके बिश्वाससें परित्राण होना
औ खीष्टके पानेमें पौलका उद्योग करना।

हे मेरे भाइयो, प्रभुपर बिश्वास करके आनंद करो। १
येही बात तुम्हें बारबार लिखना सो मुझको दुःखदाई नहीं

२ है परंतु तुम्हारे लिये भला है। सो उन मनुष्योंसे, जो कुत्ते सा है, सावधान होओ; दुराचारी लोगोंसे सावधान होओ; और खतनः करावने हारोंसे सावधान होओ।
३ हम ही जो मनसे ईश्वरकी सेवा करते और यीशु खीष्टमें आनंद करते और जातिका भरोसा नहीं रखते हैं सोई
४ सच्चे खतनः ऊये लोग हैं। सत्य है, मैं जातिका भरोसा कर सकता हूं, हां, जो और कोई जातिका भरोसा कर सके तो मैं
५ उससे अधिक भरोसा कर सकता हूं क्योंकि मेरा खतनः आठवें दिनमें ऊआ, मैं इस्रायेलका संतान हूं, मैं बिन्यामीनके घरानेका हूं, मेरे माता पिता दोनों इब्रीय लोग थे, मैं व्यवस्था
६ पालन करनेमें फिरूशी था, मैं खीष्टके मंडलीके सतावनेमें बड़ा
७ गर्म था, और व्यवस्थाके कर्म करनेमें निर्दोषी गिना गया; परंतु ये सब, जिन्होंसे लाभ समझा जाता है सोई मैंने खीष्टके
८ लिये टूटा समझा, हां, मैं अपने प्रभु खीष्ट यीशुके उत्तम ज्ञानके लिये सब कुछ टूटा जानता हूं; मैंने उसके लिये सब कुछकी हानि उठाई है; हां, मैं उन्हें कूड़ा सा समझता हूं
९ इसलिये कि मैं खीष्टको पाऊं और कि मैं अपने पुण्यको, जो व्यवस्थाके द्वारासे होता है, दूर करके, और उसी पुण्यको, जो खीष्टपर बिश्वास करनेके द्वारासे होता है, अर्थात उसी पुण्यको, जो ईश्वरसे बिश्वासके द्वारासे, ठहराया गया है,
१० ग्रहण करके खीष्टमें पाया जाऊं; हां, मैंने सब कुछकी हानि उठाई है इसलिये कि मैं खीष्टको, और मृतकोंमेंसे उसकी जी उठनेकी सामर्थको, और उसके दुःखोंके लाभको जानऊं,
११ और कि मैं उसकी मृत्युके समान किया जाके किसी रीतिसे
१२ मृतकोंमेंसे जी उठने पाऊं। यह नहीं है कि मैंने अब सब कुछ पाया है अथवा सिद्ध ऊआ हूं, परंतु मैं यत्न करता हूं कि मैं उसीको पाऊं जिसे पानेको मैं खीष्ट यीशुसे पकड़ा गया;
१३ हां, हे भाइयो, मैं यह नहीं समझता हूं कि मैंने सब कुछ पाया है परंतु यही मैं करता हूं अर्थात मैं उन बस्तुओंकी, जो पीछे हैं, चिंता न करते ऊये, उनकी ओर, जो आगे हैं,

घुड़ दौड़में दौड़ते रहता हूं, इस लिये कि मैं खीष्ट यीसुसे १४ उस दांवको पाऊं जिसे पानेको मैंने ईश्वरसे ऊपर बुलाहट पाई है। सो, चाहिये कि हम सब जो सिद्ध होने चाहें सो १५ ऐसा बूझके करें; और जो किसी बातके बिषयमें तुम्हारा मन औरही होवे तो ईश्वर तुमको बूझा देगा; इतनेमें जो १६ कुछ कि हम अब बूझते हैं चाहिये कि उसके अनुसार हम एक मनसे चलें।

दुष्ट लोगोंके अनुगामी न हो किंतु अपनेके अनुगामी होनेको बिनय कर्ना।

हे भाईयो, मेरा पीछा करो; और उन लोगोंपर नेत्र लगा १७ दीजियो जो हम लोगोंके समान चलते रहते हैं। बहुत चलने- १८ हारे हैं, जिनकी चर्चा मैंने तुमसे बार बार किई है और अब रो रोके फिर करता हूं; वे खीष्टके क्रूशके शत्रु होके अंतमें १९ बिनाश किये जायेंगे; उनके ईश्वर जो है सो पेट है, उनकी बड़ाई जो है सो लज्जाके कर्म है, और उनके मन जो हैं सो संसारिक बस्तुओंपर लगते हैं। परंतु हम जो हैं सो स्वर्गी २० लोगके समान हैं; हम स्वर्गको और अपने मन लगाके त्राण करनेहारे प्रभु यीसु खीष्ट की बाट जोहते हैं, जो अपनी उस २१ सामर्थके द्वारासे जिससे वह सब कुछ अपने बशमें कर सकता है, हमारे अधम शरीरको ऐसा बदल डालेगा कि वह उसके तेजोमय शरीर सा हो जायगा।

४ चौथा अध्याय।

अधिक निवेदन कर्ना।

सो हे मेरे बड़े प्यारे भाईयो, हां मेरे आनंद और मुकुट सो १ प्यारे भाईयो, प्रभुपर बिश्वास करते हुये स्थिर हो रहईयो। हे उयोदिया और सन्तुखि, मैं तुमसे बिंती करता हूं कि २ प्रभुमें एकही मनसे हो रहईयो। और, हे मेरे सहाई, ३ मैं तुझसे भी बिंती करता हूं कि उन स्त्रियोंकी सहायता कीजियो जिन्होंने सुसमाचारके बिषयमें मेरे संग और

क्लीमनीके संग और और भाईयोंके संग, जिन्होंके नाम जीवनकी पुस्तकमें लिखे हैं, परिश्रम किया है।

नाना धर्म कर्मके बिषयमें उपदेश करना।

४ प्रभुपर बिश्वास करके सदा आनंद करो; हां मैं फिर ५ कहता हूं कि आनंद करो। तुम्हारी मिलनसारी जो है सो ६ सब मनुष्यको प्रगट किई जाय; प्रभु निकट है। किसी बातकी बड़ी चिंता न कीजिये परंतु अपनी हर एक बातके बिषयमें ७ धन्यबाद करके ईश्वरसे प्रार्थना और बिंती करो; और वह्नो अनबूझी शांती जो ईश्वर देता है सोई यीशु ख्रीष्टमें तुम्हारे ८ मन और तुम्हारी बुद्धिकी रक्षा करेगी। हे भाईयो, जो कुछ कि सत्य है, जो कुछ कि योग्य है, जो कुछ कि भला है, जो कुछ कि शुचि है, जो कुछ कि प्रेमके योग्य है, और जो कुछ कि स्तुतिके योग्य है, हां जो जो भला और नामवरी है, इन ९ सबोंकी चिंता कीजियो। तिसपर भी जो कुछ कि तुमने मुझसे सीखा है और पाया है और सुना है, और देखा है, उसीके अनुसार करो; तब शांती देनेहारा ईश्वर जो है सो तुम्हारे संग होवेगा।

पौलकी कृतज्ञता औ नमस्कार भेजना।

१० मैं प्रभुके अनुग्रहसे इसलिये बड़ा आनंद करता हूं कि तुम मेरे बिषयमें फिर चिंता करने लगे हो; सत्य है कि तुम मेरे बिषयमें चिंता करते थे परंतु तुम्हें सहायता करनेका अवसर ११ न मिला। मैंने कंगालताके बिषयमें यह्नी नहीं कहता हूं क्योंकि मैंने यह सीखा है कि जिस दशामें मैं हों उसी दशामें संतोषी १२ हो रहता; मैं जानता हूं कि घटाव क्या है और बढाव क्या है, हां मैंने सब स्थानोंमें और सब लोगोंमें संतोषी होना और भूखा होना, बहुतायत रखना और कमती रखना सीखा है; १३ मैं उस सामर्थके द्वारासे, जो ख्रीष्ट मुझको दिलाता है, सब १४ कुछ सह सकता हूं। तौभी तुमने, मेरे दुःखके समयमें मेरी १५ सहायता करके भला किया है। हे फिलपी लोगो, तुम जानते हो कि जबकि मैं सुसमाचार प्रचार करनेको पहिले

माकिदनिया देशमें गया तो उन मंडलियोंमेंसे, जिन्होंने मुझसे बात सुनी थी, तुम्हें छोड़ किसीने मेरी सहायता न किई; परंतु जबकि मैं थिसलनीकी नगरमें था तो तुमने एक दो बार १६ मेरे परोजनके लिये कुछ कुछ भेजा। मैं यही नहीं कहता हूं १७ इसलिये कि मैं तुमसे कुछ पाने चाहता हूं परंतु मैं यह चाहता हूं कि वही फल होगा जो तुम्हारे लिये लाभवंत होगा। मेरे हाथमें सब कुछ है, हां बहुत है; मैं भरा हुआ हूं; १८ मैंने ईपफरूदितसे उसी दानको पाया है जो तुमसे भेजा गया; यह सुगंधि सा है, हां वही बलिदान सा है जो ईश्वरके सन्मुख परमार्थी और मनभावना है। मेरा ईश्वर जो १९ है सोई अपने अनगिणित धनसे सब कुछ जो परोजनी है तुमको, खीष्ट यीशुके द्वारासे, देगा। हमारे पिता ईश्वरकी २० महिमा नित्य नित्य प्रकाश किई जाय, आमीन। यीशु खीष्टके सब पवित्र लोगोंको नमस्कार कहो। वेही भाई जो मेरे संग २१ हैं सोई तुम सबको नमस्कार कहते हैं। सब पवित्र लोग २२ जो हैं, बिशेष करके, वे जो कैसर राजाके घरके हैं, सोई तुमको नमस्कार कहते हैं। हमारे प्रभु यीशु खीष्टका अनु- २३ ग्रह तुम सबोंपर होवे; आमीन।

कलसीय मंडलीपर पत्र।

१ पहिला अध्याय।

मंगलाचरण।

पौल, जो यीशु खीष्टकी इच्छाके द्वारासे, प्रेरित है, और १ भाई तीमथिय, उन पवित्र लोगोंको अर्थात बिश्वासी भाई- २ योंको, जो कलसी नगरमें रहते हैं, नमस्कार कहते हैं। हमारे पिता ईश्वरसे और प्रभु यीशु खीष्टसे अनुग्रह तुमको दिया जाय।

कलसीय लोगोंके विश्वासके निमित्त पौलका धन्यवाद करना।

३ हम अपने प्रभु यीशु खीष्टके पिता ईश्वरका धन्यबाद करके
४ तुम्हारे बिषयमें सदा प्रार्थना करते रहते हैं क्योंकि हमने
सुना है कि तुम उन बस्तुओंका भरोसा करके, जो तुम्हारे
५ लिये स्वर्गमें धरीं गई हैं, खीष्ट यीशुके धर्ममें रहते और सब
पबित्र लोगोंको प्यार करते रहते हो। तुमने, सुसमाचारकी
सच्ची बातोंके द्वारासे, इन स्वर्गी बस्तुओंकी बात सुनी है
६ क्योंकि सुसमाचार जो है सोई तुम्हारे बीचमें प्रचारा गया है
जैसाहीकि सारे जगतमें प्रचारा जाता है; और फलभी
लाता है जैसाहीकि वह, उसी दिनसे जिसमें तुमने ईश्वरकी
अनुग्रहकी बात सत्यसी सुनके जाना है, तुम्हींके बीचमें फल
७ लाता रहता है। येही बातें तुमने इपफरासे सीखीं हैं जो
मेरा प्यारा संगी दास है, और खीष्टकी ओरसे तुम्हारा सच्चा
८ सेवक है; उसने हमको बताया है कि तुम मनसे हमको
बड़ा प्यार करते हो।

उसके पारमार्थिक मंगलके लिये उसकी प्रार्थना करनी, औ खीष्टके ईश्वरका
प्रमाण देना, औ उन पर खीष्टका अनुग्रह।

९ सो हमने जिस दिनसे यही बात सुनी है उसी दिनसे
तुम्हारे बिषयमें प्रार्थना करके यही बिंती करते रहते हैं,
अर्थात, कि तुम बड़ी बुद्धि और परमार्थी समझसे भरे होके
१० ईश्वरकी इच्छाको जानो; कि सब प्रकारके सत्य कर्म करके
प्रभुके इच्छाके अनुसार चलो; कि ईश्वरके ज्ञानमें बढ़के
११ फल लावो; कि ईश्वरकी तेजवंत सामर्थके द्वारासे ऐसे
सामर्थवान होओ कि आनंद करके बड़े धीरजवंत और संतोषी
१२ होवो; और कि पिता ईश्वरका धन्यबाद करो, जिसने
हमको ऐसे किया है कि हम पबित्र लोगोंके उस अधिकारके,
१३ जो उजालेमें हैं, भागी होनेके योग्य हुये हैं। उसने
(अर्थात ईश्वरने) हमको अंधकारके पराक्रमसे बचायके अपने
१४ प्यारे पुत्रके राजमें पहुंचा दिया, जिसके लोहूके द्वारासे
१५ हमको त्राण अर्थात पापका क्षमा मिलता है। वह अदृश्य

ईश्वरकी समानता है और सारी सृष्टिका आदि करनेहारा है। उसीसे सब कुछ उत्पन्न हुआ है, क्या स्वर्गमें है, क्या १६ पृथ्वीपर है, क्या दृश्य है, क्या अदृश्य है, क्या सिंहासन है, क्या अधिकार है, क्या राज है, क्या पराक्रम है, हां सब कुछ जो है सो उसीके द्वारासे और उसके लिये उत्पन्न हुआ है। सब १७ वस्तुओंका वह अगला है और उसके द्वारासे सब कुछ स्थिर रहता है। वह शरीरका सिर है अर्थात मंडलीका प्रभु १८ है। और वह मृतकोंमेंसे पहिला फल और उनके जी उठने-के आदि करनेहारा है इसलिये कि वह सब प्रकारसे प्रधान १९ होवे क्योंकि पिता ईश्वरकी इच्छा यही है कि यीशुमें सारी २० भरपूरी रहे और कि उसके लोहूके द्वारासे, जो क्रूशपर बहाया गया, मिलाप कराके, अपनी ओर सबोंको, क्या पृथ्वीपर है, क्या स्वर्गपर है, एक मनी करे; हां उसने, अपने २१ शरीरके मृत्युके द्वारासे, तुमहींको भी, जो आगे कुकर्मोंके कारणसे पराये थे और मनमें शत्रु थे, मिलाया है इसलिये २२ कि वह तुमको पवित्र और निष्कलंक और निर्दोषी ठहरायके अपने सन्मुख खड़े कर देवे; यह तो ऐसा होगा जो तुम ख्रीष्टके धर्ममें गढ़े जाके स्थिर रहो और उस सुसमाचारका २३ भरोसा रखते हुये रहो, जिसकी बात तुमने सुनी है, जिसका प्रचार सारे संसारमें किया जाता है, और जिसका प्रचार करनेहारोंमेंसे मैं पौल जो हूं सो एक है।

पौलका सुसमाचार प्रचार करनेका अनुग्रह पाना।

अब मैं उन दुःखोंमें, जो मैं तुम्हारे लिये भोगता हूं, आनंद २४ करता हूं, और मैं उन दुःखोंको बचती, जो ख्रीष्टने अपने शरीरके लिये अर्थात अपने मंडलीके लिये, मुझको ठहराये हैं, भोगते भोगते रहता हूं। इस मंडलीका मैं एक सेवक २५ हूं क्योंकि ईश्वरने मुझे इसलिये ठहराया है कि मैं तुम्हारे बीचमें ईश्वरकी बात अर्थात उसी भेदकी बात प्रचार करूं जो अगल समयोंके लोगोंसे छिपाई गई परंतु उसके पवित्र २६ उस सामर्थ्यवान ईश्वर पर, जिसने उसे मृतकोंमेंसे उठाया

२७ लोगोंको अब प्रकाश किई गई है; हां ईश्वरने चाहा कि अपन पवित्र लोगोंको यही जनाया जाय कि उसी भेदकी प्रतापी धन सी बात, जो अन्यदेशियोंके बिषयमें प्रगट ऊई है, कैसी है अर्थात् कि खीष्टके द्वारासे बिभवके पानेकी आशा
२८ तुमको ऊई है। इसीको प्रचार करके हम हर एक मनुष्यको उपदेश देते और सब प्रकारके बुद्धिसे हर एक मनुष्यको सिखाते रहते हैं इसलिये कि हम हर एक मनुष्यको, खीष्ट
२९ यीशुके द्वारासे, सिद्ध कराके पऊंचा देवें। इसीके लिये मैं भी उसी बड़ी सामर्थ्यके अनुसार, जो ईश्वरसे मुझको दिई गई है, बड़ा परिश्रम करता रहता हूं।

२ दूसरा अध्याय।

खीष्टके धर्ममें स्थिर होनेको पौलका बिनय कर्ना।

१ मैं चाहता हूं कि तुम जानो कि तुम्हारे बिषयमें और उनके बिषयमें जो लायदिकिया मंडलीके हैं हां उनके बिषयमें भी जिन्होंने मुझे नहीं देखा है, मैं कैसी बड़ी चिंता करता हूं।
२ मैं चाहता हूं कि वे आपसमें प्रेम करके शांति पावें इसलिये कि वे ईश्वर पिताके और खीष्टके उस भेदको पूरा समझके
३ सत जानें और मान लेवें, जिसमें बुद्धि और ज्ञानका सब
४ धन पाया जाता है। सो मैं यह कहता हूं, न होवे कि कोई
५ फुसलानेकी बात करके तुम्हें भुलावे। मैं तो शरीरके अनुसार दूर हूं तौभी मैं आत्माके अनुसार तुम्हारे बीचमें हूं और मैं तुम्हारे सुचालको और तुम्हारे अटल बिश्वासको, जो तुम खीष्टपर करते हो, देखते ऊये आनंद करता हूं।
६ सो जैसाकि तुमने प्रभु यीशु खीष्टको ग्रहण किया है तैसाही
७ उसमें गढ़े और बने होते ऊये, और उसके उस धर्ममें स्थिर होते ऊये, जिसकी बात तुम सिखाये गये हो, और ईश्वरका बऊतसा धन्यबाद करते ऊये, उसकी इच्छाके अनुसार चलते रहो।

निरर्थक कपटको बिद्यासे सावधान रहनेका निबेदन ।

सावधान होओ, न होय कि कोई, उस बिद्याके द्वारासे, ८ जो बड़ी छली है, जो मनुष्योंके कहावटोंके और संसार की रीतियोंके अनुसार है, और जो खीष्टके अनुसार नहीं है, तुम्हें भूलावे क्योंकि खीष्ट जो है सो शरीरमें हो ठीक ईश्वर ९ और सब राज और अधिकारका सिर सा है; इसीसे १० तुम उसके द्वारासे सिद्ध होते हो। उसके द्वारासे भी तुम ११ खीष्टके बिना हाथसे खतनःसे खतनः किये गये हो अर्थात् शरीरके पापोंसे छुड़ाये गये हो; हां डुबकी पानेसे तुम १२ खीष्टके समान गाड़े जाकर उसके समान भी, उस सामर्थ्यवान ईश्वरपर जिसने उसे मृतकोंमेंसे उठाया, बिश्वास करके, उठाये गये हो; हां, ईश्वरने तुम्होंको, जो अखतनःके द्वारासे १३ अर्थात पापोंके द्वारासे मृतक सा थे, पापोंका क्षमा करके, खीष्टके समान जीते किया है। (सत्य है कि) खीष्टने उस १४ लिखी ऊई व्यवस्थाको, जो हमारे बिरुद्ध हो बैरी सी थी, मेट डाला है और उसे क्रूशपर लगायके बीचमेंसे उठा दिया है। ऐसे करनेमें उसने अधिकारी और पराक्रमी भूतोंको १५ नंगे से किया है, और जय जय करके उन्हें प्रकाशरूपसे लजवाया है।

स्वर्गीय दूतोंकी पूजासे सावधान कर्नेका निबेदन ।

सो चाहिये कि तुम न देखो कि कोई तुम्हें, खाने पीनेके, १६ अथवा पर्बके, अथवा अमावस्के अथवा अठवारोंके बिषयमें दोषी ठहरावे क्योंकि येही जो हैं सो आनेहारी बातोंकी १७ पर्छाईं सी थीं परंतु खीष्ट जो है सोई सार है। सावधान १८ होओ कि तुम उन लोगोंसे बिगाड़े न जावो जो झूठी दीनता और स्वर्गी दूतोंका भजन करते हैं, जो अपने संसारिक मनसे फूलते ऊये उन बातोंका सोच करते हैं जो उन्होंने नहीं देखीं हैं, और जो उस सिरको, (अर्थात खीष्टको) नहीं मानते १९ हैं जिससे सारी शरीर (अर्थात मंडली) गांठों और

बंदोंक द्वारासे मिलके और संभाले जाके, ईश्वरके अनुग्रहसे बढ़ जाता है।

संसारके कर्मसूत्र औ मनुष्योंकी रीति त्यागनेका निवेदन कर्ना।

२० सो तो जो तुम, खीष्टके द्वारासे, संसारकी रीतियोंकी ओर मृतक सा ऊये हो तो क्यों फिर उनलोगोंकी रीतियोंके २१ अनुसार चलते हो जो संसारिक हैं और जो यह कहते हैं कि इस बस्तुको न छूओ, न उस बस्तुको चखो, न ऐसी बस्तु-२२ पर हाथ लगाओ। येही सब बस्तु जो हैं सोई, मनुष्योंकी आज्ञाओं और शिक्षाओंके द्वारासे, काममें आके नष्ठ करातीं २३ हैं। ऐसी आज्ञा और शिक्षा जो हैं सोई भजन करनेमें, और दीनता करनेमें, और शरीरके दबानेमें, बुद्धिकी दिखाई देती हैं; परंतु वे शरीरको अनादर करके संतुष्ठ नहीं करतीं हैं।

३ तीसरा अध्याय।

स्वर्गमें खीष्टपर मन लगानेका पौलका बिनय।

१ जो तुम खीष्टके संग जी उठे हो तो उपरकी बस्तुओंपर मन २ लगाओ जहां खीष्ट ईश्वरकी दहिनी ओर बैठता है; हां, ३ उपरकी बस्तुओंपर मन लगाओ, न पृथ्वीकी बस्तुओंपर, क्योंकि तुम मरे सा ऊये हो, और तुम्हारा जीवन जो है सो खीष्टके ४ संग, ईश्वरमें छिपा है। हमारे जीवनदायक खीष्टके प्रकाश होनेपर तुम भी उसके संग ऐश्वर्यमें प्रकाशित होगे।

पापके दमन कर्नेको।

५ सो अपने शारीरिक अभिलाषोंको अर्थात बेश्यागमनको, अशुचि क्रियाओंको, और कुइच्छाओंको और देवपूजक सा ६ लाभको मरवाओ; ईश्वरका कोप जो है सो ऐसे कर्मोंके करने-७ हारोंपर आता है। तुम भी ऐसे कर्म करके इन लोगोंके संग ८ आगे चलते थे। सो इन सब कर्मोंको, अर्थात कोपको, और क्रोधको और बुराईको और निंदाको, और अपने मुखसे गालीको दूर ९ करो। पुराने मनुष्यको (अर्थात पुराने स्वभावको, उसके कर्मोंके १० संग, दूर करके और उस नये मनुष्यको, (अर्थात उस नये स्वभाव

को,) जो ईश्वरकी समानताके अनुसार ज्ञानवंत उत्पन्न ऊआ है, ग्रहण करके, एक दूसरेसे झूठ न बोलो। इसीमें न यूनानी ११ है और न यिहूदी है, न खतनः ऊये लोग है और न अखतनः ऊये लोग है, न बरबर देशके लोग है और न तातेर देशके लोग है, और न बंदे हैं और न निर्बंदे हैं, परंतु खीष्टमें हो सब एक सा है।

नाना धर्म कर्म कर्नेको निवेदन कर्ना।

सो ईश्वरके चुने ऊये और पवित्र और प्यारे लोग हो दया १२ और अनुग्रह और दीनता और नरमता और धीरता करो। एक दूसरेको सहके अपराध क्षमा करो; हां, जो कोई किसीसे १३ झगड़ा रखे तो जैसाकि खीष्टने तुमको क्षमा किई है तैसेकि १४ तुम भी क्षमा करो। विशेष करके प्रेम करो क्योंकि प्रेम जो १५ है सो परमार्थी बंधन है। उसी शान्तीको, जो ईश्वर देता है, और जिसे पायके तुम एक शरीर अर्थात एक मंडली होनेको बुलाये गये हो, अपने मनमें राज करने देओ; और धन्यबाद करो। खीष्टकी बात, बड़े समझ और बड़े प्रेमसे, अपने मनमें १६ ऐसी बसने दो कि तुम एक दूसरेको सिखावो और चितावो और अपने मनसे धन्यबाद करके परमार्थी गीतों और भजनोंसे प्रभुका भजन करो। और जो कुछ कि तुम करो, क्या १७ बात बोलनेमें क्या कर्म करनेमें, प्रभु यीसुके नाम पर करो और उसके नाम लेके ईश्वर पिताका धन्यबाद करो।

स्त्री पुरुष औ बालक, औ पिता माता, औ दास, औ प्रभुके कर्तव्य कर्मोंका निर्णय कर्ना।

हे स्त्रीयो, प्रभुके बिधिके अनुसार, अपने अपने स्वामीके १८ बशमें रहो। हे स्वामीयो, अपने अपने स्त्रीको प्यार करो और १६ उनसे कड़वा मत होओ। हे बालको, हर बातमें अपने माता २० पिताकी आज्ञा पालन करो क्योंकि यह ईश्वरके सनमुख भला है। हे पित्रो, अपने संतानोंको चिड़ाओ मत, न हो कि वे उदास २१ होवें। हे दासो, अपने संसारिक स्वामीयोंकी आज्ञा पालन २२ करो; और उन मनुष्योंकी नाईं न होओ जो अपने स्वामी-

योंको संतुष्ट करनेको केवल उनके सन्मुख बड़ा परिश्रम करते हैं; परंतु तुम ईश्वरसे डर रखनेहारे हो, सच्चे मनसे, अपने
२३ स्वामीयोंका काम करो; हां जो कुछ कि तुम करो सो, प्रभुकी सेवा सी, न मनुष्योंकी सी करो, और जानो कि प्रभुसे स्वर्गके अधिकारका फल पाओगे क्योंकि तुम प्रभु खीष्टकी सेवा करते
२४ हो; परंतु वही जो बुराई करे सोई अपनी बुराईका फल पावेगा क्योंकि ईश्वर जो है सो किसीका पक्षपात नहीं करता है। हे स्वामीयो, जो कुछ कि ठीक और न्यायी है सो अपने दासोंके बिषयमें करो और जानो कि स्वर्गी स्वामी जो है सो तुम्हारे ऊपर है।

४ चौथा अध्याय।

प्रार्थना करनेमें नित्य प्रवृत्त होनेका औ संसारी लोगोंके निकट सावधान रीतिसे आचरण करनेका निवेदन।

१ जागते हुये प्रार्थना और धन्यबाद करते करते रहो।
२ हमारे बिषयमें भी यह प्रार्थना करो कि हमको बात प्रचार-
३ नेके खुले हुये द्वार मिले, इसलिये कि हम खीष्टके उस
४ भेदकी बात, जिसके लिये मैं बंधुआ हूं, सुनाऊं, और कि
५ मैं उसे ऐसा प्रकाश करूं जैसाकि उचित होता है। समय-को सफल करके उन्होंके बीचमें, जो मंडलीसे बाहिर हैं,
६ बुद्धिसे चलते रहो। चाहिये कि तुम्हारी बातचीत जो है सो गुणके लोणसे मिलाई जाय इसलिये कि तुम जानो कि हर एकको क्योंकर उत्तर दिया चाहिये।

भाईयोंके बिषयमें नाना कथा औ नमस्कार भेजना।

७ तूखिक जो प्यारा भाई और खीष्टका सच्चा सेवक और
८ मेरा संगी दास है सोई तुमको मेरी सब बात जतावेगा। मैंने उसे तुम्हारे निकट इसलिये भेजा है कि वह तुम्हारी दशा
९ जान करके तुमको शांती देवे; और भी मैंने उसके संग अनीसिमको भेजा है जो तुम्हारी मंडलीका एक सच्चा और प्यारा भाई है; ये दोनों जो हैं सो तुमको यहांकी सब बातें

जतावेंगे। आरिस्तार्ख जो मेरा संगी बंधुआ है; बर्णबाका १० भांजा मार्क भाई, जिसके विषयमें तुमने यही संदेस पाया कि जो वह तुम्हारे निकट आवे तो उसे ग्रहण करो; और यीशु जो यूस्त कहलाता है; ये तीनों तुमको नमस्कार ११ कहते हैं; यिहूदी खीष्टानोंमेंसे केवल येही ईश्वरके राजके लिये मेरे संगी कर्म करनेहारे हैं और मेरी शांती देनेहारे हैं। ईपफरा, जो तुम्हारी मंडलीका एक भाई और १२ खीष्टका एक सेवक है, तुमको नमस्कार कहता है; वह तुम्हारे विषयमें बहुत प्रार्थना सदा करता है इसलिये कि तुम ईश्वरकी सारी इच्छाके अनुसार बड़े सिद्ध हो जाओ; मैं उसके विषयमें यही साक्षी देता हूं कि वह तुम्हारे विषय- १३ में और उनके विषयमें जो लायदिकिया और हियरा-पली नगरोंमें रहते हैं, बड़ी चिंता करता है। प्यारा भाई १४ लूक, जो बैद है, और दीमा भाई तुमको नमस्कार कहते हैं। तुमही जो हो सो उन भाईयोंको, जो लायदिकिया नगर- १५ में रहते हैं, और नुमफाको और उस मंडलीको जो उसके घरमें है, नमस्कार कहो। इस पत्रके पढ़ चुकनेपर ऐसा १६ करो कि वह लायदिकिया नगरकी मंडलीमें पढ़ा जाय, और उसी पत्रको, जो लायदिकिया नगरका है, तुम भी पढ़ो। आरखिप्पको यह कहो कि सावधान होओ कि उस सेवाको १७ पूरी करो जो प्रभुसे तुमको ठहराई गई है। मैं पौल जो १८ हूं सोई अपने हाथसे नमस्कार लिखता हूं। मेरे जंजी-रोंका स्मरण कीजियो। तुमको ईश्वरसे अनुग्रह दिया जावे। आमीन॥

थिसलनीकी मंडलीपर पहिला पत्र।

१ पहिला अध्याय।

मंगलाचरण।

१ पौल और सिल और तीमथिय जो हैं सो ईश्वर पिता और प्रभु यीशु खीष्टकी उस मंडलीको जो थिसलनीकी नगरमें है, नमस्कार करते हैं। हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु खीष्टसे तुमको अनुग्रह और शांती दिये जायें।

थिसलनीकियोंका विश्वास औ भरोसा औ आचरणको प्रशंसा करनी।

२ हम तुम सबोंके विषयमें सदा धन्यबाद करते रहते हैं, और ३ तुम्हारे कर्मका, जो बिश्वाससे होता है, और तुम्हारे परिश्रमका, जो प्रेमसे होता है, और तुम्हारे आशाका, जो हमारे प्रभु यीशु खीष्टसे होता है, स्मरण करके अपने पिता ईश्वरके सन्मुख ४ तुम्हारे विषयमें सदा प्रार्थना करते रहते हैं। हे भाइयो, ५ हम जानते हैं कि तुम ईश्वरके प्यारे हो क्योंकि हमारा सुसमाचार तुम्हारे बीचमें केवल बातसे नहीं, परंतु सामर्थसे, और पवित्र आत्मासे, और बहुत परमाणोंसे प्रचारा गया; हां तुम आपही जानते हो कि हम, तुम्हारे बीचमें, तुम्हारे लिये कैसे थे। सो तुम बड़े दुःख उठायके और उस आनंदसे भरे होके, जो पवित्र आत्मासे दिया जाता है, ६ सुसमाचारकी बात ऐसी ग्रहण किई कि तुम हमारे, हां ७ प्रभुके पीछा चलनेहारे हुये यहांतक कि उन विश्वासियोंको, जो माकिदूनिया और आखाया देशमें रहते हैं, नमूने सा ८ हुये; हां तुमसे प्रभुकी बात जो है सो केवल माकिदूनिया और आखाया देशमें सुनाई गई नहीं परंतु सब स्थानोंमें तुम्हारा बिश्वास, जो ईश्वरपर है, ऐसा जनाया गया है कि हमको ९ तुम्हारे विषयमें कुछ कहना आवश्यक नहीं होता है। सब लोग आपही हमारे बिषयमें चर्चा करते हैं कि किस प्रकारसे हम तुमसे ग्रहण किये गये और किस प्रकारसे तुम मूर-

तोंको छोड़के ईश्वरकी ओर ऐसे फिरे कि अमर और सच्चे ईश्वरकी सेवा करनेहारे और स्वर्गसे उसके पुत्र यीशुके १० उतरनेकी बाट जोहनेहारे हुये। यह वही है जो हमको आनेहारे क्रोधसे बचाता है और जिसको ईश्वरने मृतकोंमेंसे उठाया है।

२ दूसरा अध्याय।

पौलसे किस् प्रकारसे थिसलनीकियोंके निकट सुसमाचार प्रकाशित हुआ उसका बिबरण।

हे भाईयो, तुम तो आपही जानते हो कि हमारा आना १ जो था सो तुम्हारे बीचमें वृथा न हुआ; हां, तुम जानते हो २ कि पहिले हमने फिलिप्पी नगरमें दुःख और अपमान उठाया, तौभी हम अपने ईश्वरपर भरोसा करके तुम्हें ईश्वर-का सुसमाचार, बड़े साहससे, प्रचार किया। हमने न ३ भूठसे, न अपवित्रतासे, न छलसे उपदेश दिया परंतु जैसा ४ कि ईश्वरने हमको ऐसे सच्चे जाना कि उसने हमें सुसमा-चार प्रचार करनेहारे ठहराया है तैसेकि हम उपदेश देते हैं; हम मनुष्योंको संतुष्ट करनेको नहीं बोलते हैं परंतु ईश्वरको, जो मनका परीक्षा करनेहारा है, संतुष्ट करनेको बोलते हैं; हां, तुम जानते हो कि हमने लोभ- ५ के छलसे फुसलानेकी बात कधी नहीं किई है (ईश्वर साक्षी है) न मनुष्योंसे, न तुमसे, न किसी औरोंसे नाम ६ पाने ढूंढा है। हमने ख्रीष्टके प्रेरित हो तुमपर बोझा रख-नेका अधिकार रखा था तौभी तुम्हारे बीचमें दयाशील हो ऐसा नहीं किया; हां जैसीकि माता अपने बालकोंको ७ पालती है तैसेकि हम तुमको बड़ा प्यार करके, न केवल ८ ईश्वरका सुसमाचार, देने परंतु अपने प्राण भी तुमको देने तैयार थे। हे भाईयो, तुम आपही स्मरण करते हो कि ९ हमने किस प्रकारसे रात दिन अपने हाथसे काम करके परिश्रम किया यहांतक कि हमने तुम्हांमेंसे किसीसे कुछ न

१० लेके तुमको ईश्वरका सुसमाचार प्रचार किया। तुम साक्षी हो, और ईश्वर भी साक्षी है कि हम तुम्हारे बीचमें, जो बिश्वास करते हो, कैसे पवित्र और सच्चे और निर्दोषी थे;
११ हां तुम जानते हो कि जैसाकि पिता बालकोंको तैसेकि हम तुम्होंमेंसे एक एकको उपदेश देते और मनाते और
१२ चेतावते रहे इसलिये कि तुम्हारी चाल जो है सो उस ईश्वरके सन्मुख ठीक होवे जिसने तुम्हें अपने बिभवके राजमें बुलाया है।

उन्होंने किसरीतिसे सुसमाचार ग्रहण किया उसका बिबरण।

१३ हम ईश्वरका धन्यबाद इसलिये सदा करते हैं कि तुमने हमसे ईश्वरकी बात सुनके उसको मनुष्योंकी बात सी नहीं जानी परंतु जैसीकि है तसीकि ईश्वरकी उस बात जानके
१४ ग्रहण किई जो तुमही बिश्वासियोंमें कर्म करती है। इससे, हे भाईयो, तुम ईश्वरकी उन मंडलीयोंके पीछे चलनेहारे ऊये जो यिहूदी देशमें खीष्टपर बिश्वास करतीं हैं क्योंकि जैसेकि उन्होंने यिहूदीयोंसे दुःख उठाया तैसेकि तुमने अपने देशके
१५ लोगोंसे दुःख उठाया है। यिहूदियोंने प्रभु यीशुको और भविष्यद्वक्ताओंको मार डाला और हमोंको सताया है; वे भी ईश्वरकी इच्छाके अनुसार नहीं चलते और सब मनु-
१६ ष्योंके ऐसे बिरोधी हो कि वे अन्यदेशियोंको त्राणकी बात सुनानेको हमें हटकाते हैं; इसी रीति वे अपने पाप सदा बढ़ाते रहते हैं; परंतु अंतमें उन्होंपर ईश्वरका क्रोध आवेगा।

औ उनके संग भेट कर्नेको पौलकी इच्छा।

१७ हे भाईयो, हम तुमसे शरीरमें (मनमें नहीं) थोड़े देरसे
१८ अलग ऊये हो तुमको फिर देखने बऊत चाहते हैं; हां, मैं पाल जो हूं सो तुम्हारे निकट दो एक बार आनेपर था
१९ परंतु शैतानसे रोका गया। हमारी आशा और आनंद और बड़ाईका मुकुट जो हैं सो कौन हैं? क्या तुमही जो हो सो, हमारे प्रभु यीशु खीष्टके सन्मुख, येही नहीं होगे, जिस

दिनमें वह प्रगट हो जायगा? हां, तुमही जो हो सो हमारी २०
बड़ाई और आनंद होगे।

३ तीसरा अध्याय।

उनके शान्ति देनेके लिये तीमथियको भेजना औ तीमथियके फिर आनेमें उसका संबाद पाके पौलका धन्यबाद औ प्रार्थना कर्ना।

सो और देरी न कर सकनेपर हम आथिनी नगरमें १
अकेले छोड़े जानेको संतुष्ट हो अपने भाई तीमथियको जो २
ईश्वरका सेवक और खीष्टके सुसमाचार प्रचार करनेमें मेरा
सहायक है, भेज दिया इसलिये कि वह तुम्हें बिश्वास
करनेमें ढाड़स और शांती देवे, न हो कि कोई इन दुःखोंके ३
कारणसे हट जाय। तुम तो आपही जानते हो कि हम
दुःख उठानेको ठहराये गये हैं क्योंकि तुम्हारे संग होनेपर ४
हमने तुमसे कहा कि हमको दुःख उठाने होगा; और तुम
जानते हो कि जैसाकि हमने कहा तैसा ज्रआ है। सो ५
और देरी न कर सकनेपर मैंने भेजा इसलिये कि मैं जानऊं
कि तुम्हारा बिश्वास कैसा है, न हो कि परीक्षकने किसी
रीतिसे तुमको ऐसी परीक्षा किई है कि हमारा परिश्रम
वृथा ज्रआ है। अब तीमथियने तुम्हारे निकटसे फिर आयके ६
हमसे यह अच्छी बात सुनाई है अर्थात कि तुम बिश्वास
और प्रेम करके स्थिर रहते हो और कि हमारे विषयमें ऐसी
चिंता सदा करते हो कि जैसेकि हम तुम्हें देखने चाहते हैं
तैसे तुमही हमें देखने चाहते हो। सो, हे भाईयो, हम ७
तुम्हारे बिश्वासके कारणसे अपने सब दुःख और क्लेशमें
शांत ज्रये हैं, हां, प्रभुकी ओर तुम्हारे स्थिर होनेके कारण- ८
से हमारा प्राण बच गया है। उस शांतीके लिये जो ९
हमने, अपने ईश्वरके सन्मुख, तुम्हारे कारणसे पाई है, किस
रीतिसे ईश्वरका धन्यबाद करें? रात दिन हम यह बज्रत १०
प्रार्थना करते हैं कि तुम्हें देखें और तुम्हारे बिश्वासकी कमती
पूरा करें। हमारा पिता ईश्वर और हमारा प्रभु यीशु ११

१२ खीष्ट ऐसा करे कि हम तुम्हारे निकट पहुंचें। और प्रभु ऐसा करे कि तुम आपसमें बहुत प्रेम करो; हां, सबोंको बहुत प्रेम
१३ करो इसलिये कि जिस दिनमें हमारा प्रभु यीशु खीष्ट, अपने सब पवित्र लोगोंके संग आवे, तो तुम्हारे मन, हमारे पिता ईश्वरके सन्मुख, निर्दोषी हो दृढ़ होवे।

४ चौथा अध्याय।

आज्ञापालनके लिये उनकी प्रशंसा।

१ हे भाईयो, हम प्रभु यीशुके नाम लेके तुमसे बिंती करके यही उपदेश देते हैं कि जैसेकि तुम हमसे सिखलाये गये हो कि किस रीतिसे चलना और ईश्वरको संतुष्ट करना तुमको
२ उचित होता है तैसे करते करते रहईयो। तुम तो जानते हो कि क्या क्या आज्ञा वेही हैं जो हमने प्रभु यीशुकी ओरसे, तुमको दिईं हैं।

अशुचि होनेसे निषेध।

३ ईश्वरकी इच्छा यही है कि तुम पवित्र होओ, अर्थात
४ कि तुम व्यभिचार न करो; कि तुम्हांमेसे एक एक अपने अपने
५ शरीरको पवित्रता और प्रतिष्ठामें रखे; कि उन अंदेशियोंकी नाईं न होओ जो ईश्वरको न जानके कुअभिलाषोंके
६ कर्म करते हैं; और कि कोई कामी हो अपने भाईको न ठगे; क्योंकि उस बातके अनुसार, जो हमने आगे तुमसे कही और ठहराई, प्रभु इन सब दुष्कर्म करनेहारोंका पलटा लेगा।
७ ईश्वरने अशुचि कर्म करनेको हमें नहीं बुलाया है परंतु सत्य
८ कर्म करनेको बुलाया है। जो कोई इन बातोंको तुच्छ करता है सोई केवल मनुष्यको (अर्थात हमको) नहीं परंतु ईश्वरको तुच्छ करता है जिसने हमको पवित्र आत्मा दिया है।

परस्परसे प्रेमी औ कर्मशील होनेकी आज्ञा।

९ यह आवश्यक नहीं है कि मैं तुमसे यह लिख कहूं कि भाईयोंको प्यार करना तुमको उचित होता है क्योंकि तुम आपही ईश्वरसे ऐसे सिखलाये गये हो कि एक दूसरेको प्यार

करते हो, हां, तुम उन सब भाईयोंको, जो माकिदनिया १० देशमें रहते हैं. प्यार करते हो; तो भी, हे भाईयो, हम तुमको उपदेश देते हैं कि प्रेम करते करते रहो, चैनसे ११ रहो, और अपने कामकाज करो, हां, जैसेकि हमने तुमको आज्ञा दिई, तैसेकि अपने हाथोंसे कामकाज करो इसलिये १२ कि उनके सन्मुख, जो मंडलीसे बाहिर है, निर्दोषसे चलो और सब कुछ जो परोजनी है सो रखो।

मृतक लोगोंके लिये अत्यंत शोक करनेमें निषेध, औ पीछले दिनका निरूपण।

हे भाईयो, मैं नहीं चाहता हूं कि तुम उनके बिषयमें १३ जो सो गये हैं, (अर्थात मर गये हैं,) अनजान रहो, इसलिये कि तुम उनकी नाईं, जो आशा न रखते हैं, शोकित न होओ। हम बिश्वास करते हैं कि यीशु मरा और जी उठा; १४ इसी प्रकारसे ईश्वर उनको, जो सो गये हैं, यीशुके द्वारासे, उसके संग ले आवेगा। हम प्रभुसे सिखलाये होके तुमसे यह १५ कहते हैं कि हम लोग जो प्रभुके आनेके समयमें जीते रहते होंगे सो उनके आगे, जो सो गये हैं, नहीं जायेंगे। प्रभु १६ आपही जयजयकारसे और प्रधान दूतके शब्दसे और ईश्वर-की तुरहीके फूंकनेसे स्वर्गसे उतरेगा; इसपर खीष्टाश्रित लोग, जो मर गये हैं, पहिले जी उठेंगे; इस पीछे हम १७ जो जीते रहते होंगे सो उन्होंके संग प्रभुसे भेट करनेको आकाशके मेघोंमें उठाये जायेंगे; तब हम प्रभुके संग सदा रहेंगे। सो इनबातोंसे एक दूसरेको शांती देओ। १८

५ पांचवां अध्याय।

शेष दिनके निमित्त प्रस्तुत रहनेकी आवश्यकता।

हे भाईयो, यह आवश्यक नहीं है कि मैं कालों और १ समयोंके बिषयमें तुम्हें कुछ लिखऊं क्योंकि तुम आपही निश्चय- २ से जानते हो कि जैसाकि रातको चोर आता है तैसाकि प्रभुका दिन आवेगा। लोग कहेंगे कि शांती है, कुछ डर ३

नहीं है; तौभी जैसीकि गर्भिणीपर पीर आ जाती है
तैसा उनका नाश तुरंत होगा; वे भागने नहीं सकेंगे।
४ परंतु, हे भाईयो, तुम ऐसे अंधेरेमें नहीं हो कि यही दिन
५ चोरकी नाईं तुमपर अचांचक आवेगा; तुमही उजाले
और दिनके सन्तान हो; हम रात और अंधेरेके लोग नहीं
६ हैं। सो चाहिये कि हम औरोंकी नाईं न सोवें परंतु
७ जागें और सचेत रहें। जो सोते हैं सो रातको सोते हैं
और जो मतवाले होते हैं सो रातको मतवाले होते हैं;
८ परंतु चाहिये कि हम जो हैं सो दिनके लोग हो सचेत रहें
और बिस्वास और प्रेमकी झिलम और त्राणके भरोसा
९ का टोप पहिनें। ईस्वरने हमें क्रोधके फल भोगनेको नहीं
ठहराया है परंतु हमारे प्रभु यीशु खीष्टके द्वारासे त्राण
१० पाने को हमें ठहराया है जिसने हमारी संती मरा इसलिये
११ कि हम, क्या जागें क्या सोवें, उसके संग जीते रहें। सो
जैसेकि तुम करते हो तैसे एक दूसरेको शांती देओ और
भलाईमें बढ़ाते रहईयो।

नाना प्रकार धर्म कर्म कर्नेको आवश्यकता औ पत्रकी समाप्तिकी कथा।

१२ हे भाईयो, हम तुमसे यह बिंती करते हैं कि उनको,
जो तुम्हारे बीचमें परिश्रम करते हैं और प्रभुसे तुम्हारे प्रधान
१३ ठहराये गये हैं और तुमको चितावते हैं, मानो; और उन्हें,
उनके कर्मके कारणसे, प्रेम करके बड़े जानो; और आपसमें
१४ मिले रहो। फिर, हे भाईयो, हम तुमको यह उपदेश देते
हैं कि उनको, जो बिधिके अनुसार नहीं चलते हैं, चिताओ,
दुःखीयोंको शांती देओ, दुर्बलोंको संभालो, और सबोंसे
१५ नरम होओ। सावधान होओ कि कोई बुराईकी संती
बुराई न करे परंतु एक दूसरेपर भला करो, हां, सबों
१६ पर भला करो। सदा आनंद करो। निरंतर प्रार्थना करो।
१७ हर बातके बिषयमें धन्यबाद करो क्योंकि ईस्वर, खीष्ट यीशुके
१८ द्वारासे, तुमसे, यही चाहता है। पबित्र आत्माको मत
१९ हटाओ। आचार्य्यबाणीयोंको तुच्छ न जानो। सब कुछ

परखो, और जो कुछ कि अच्छा है सो हाथमें रखो। सब २० प्रकारकी बुड़ाईसे दूर रहो। मेरा प्रार्थना यही है कि शांती २१ दाता ईश्वर तुमको संपूर्णरूपसे पवित्र करे, हां, कि तुम्हारा २२ सब कुछ जो है अर्थात तुम्हारा आत्मा और प्राण और शरीर २३ जो है सो हमारे प्रभु यीशु खीष्टके आनेके समय तक निर्दोषी रखे जावें। जिसने तुम्हें बुलाया है सोई सच्चा है; वह ऐसाही २४ करेगा। हे भाईयो, हमारे बिषयमें प्रार्थना कीजियो; सब २५ भाईयोंको पवित्र चूमा लेके नमस्कार कहो। मैं ईश्वरके २६ नाम लेके तुमको यही आज्ञा करता हूं कि सब पवित्र भाई- २७ योंको यही पत्र पढ़ाओ। हमारे प्रभु यीशु खीष्टका अनु- २८ ग्रह तुमको दिया जाय।

थिसलनीकी मडलीपर दूसरा पत्र

१ पहिला अध्याय।

मंगलाचारण।

पौल और सिल और तीमथिय जो हैं सो थिसलनीकी १ नगरकी उस मंडलीको, जो हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु खीष्टपर बिश्वास करती है, नमस्कार कहते हैं। हमारे २ पिता ईश्वरसे और प्रभु यीशु खीष्टसे तुमको अनुग्रह और शांती दिये जावें।

धर्म कर्मका आचरण औ दुःखभोगनेके निमित्त उनकी प्रशंसा औ शान्ति कर्ना औ उनके निमित्त प्रार्थना कर्नी।

हे भाईयो, यह उचित है कि हम तुम्हारे बिषयमें ईश्वर ३ का धन्यबाद सदा करें क्योंकि तुम्हारा बिश्वास बहुत बढ़ता जाता है और कि आपसमें प्रेम करते करते ऐसे रहते हो कि हम आपही, तुम्हारे बिषयमें, ईश्वरकी मंडलियोंमें बड़ाई ४ करते हैं, हां, हम इसलिये बड़ाई करते हैं कि तुम उन दुःखों

और क्लेशोंमें, जो तुमपर पड़े हैं, स्थिर और सच्चे रहते ५ हो। यही जो है सो ईश्वरके ठीक बिचारका एक चिन्ह है अर्थात कि तुम ईश्वरके उस राजके जोग गिने गये हो ६ जिसके लिये दुःख उठाते हो क्योंकि ईश्वरके समझमें यह ठीक है कि उनको, जो तुमको दुःख देते हैं दुःख, और ७ तुमको, जो दुःख पाते हो, हमारे संग सुख दिया जाय। सोई ईश्वर करेगा जिसदिनमें प्रभु यीसु अपने सामर्थ- ८ वान दूतोंके संग, आगकी लौमें, स्वर्गसे उतरेगा इस लिये कि वह उनका पलटा लेगा जो ईश्वरको नहीं पहिचानते हैं और हमारे प्रभु यीसु खीष्टके सुसमाचारको नहीं मानते हैं। ९ येही लोग जो हैं सोई प्रभुके सन्मुखसे और उसके बड़े १० तेजसे हटाये जाके अनंत दंड पावेंगे। सोई ईश्वर करेगा जिस दिनमें प्रभु आवेगा इसलिये कि वह अपने पवित्र लोगोंसे बड़ा नामवरी किया जावे और सब बिश्वासियोंसे सराहा जाय। इन लोगोंके बीचमें तुम ही होगे क्योंकि ११ तुमने हमारा साक्षी सच जाना। सो हम तुम्हारे बिषयमें यही प्रार्थना सदा करते हैं कि हमारा ईश्वर जो है सो तुमको ऐसे ऐश्वर्य्यके पानेके जोग गिने और तुम्हारे बिश्वास १२ दृढ़ करके अपनी सारी भली इच्छाको पूरी करे ऐसाकि हमारे ईश्वरके और प्रभु यीसु खीष्टके अनुग्रहके अनुसार हमारे प्रभु यीसु खीष्टकी नाम, तुम्हारे द्वारासे, ऐश्वर्यमान होवे और तुम उसके द्वारासे ऐश्वर्यमान होवो।

२ दूसरा अध्याय।

स्थिर रहनेको पौलका बिनय कर्ना और पापीपुरुषका निर्णय।

१ हे भाईयो, हमारे प्रभु यीसु खीष्टके आनेके और उसके सन्मुख हमारे एकठे होनेके बिषयमें हम तुमसे यही बिंती २ करते हैं अर्थात कि जो कोई मनुष्य किसी आत्माके द्वारासे, अथवा बातके द्वारासे, अथवा छल करके हमारे नामपर पत्र लिख भेजनेके द्वारासे, तुमसे यह कहे कि प्रभुका दिन निकट

ऊआ है तो जल्द न हिल जाओ और न घबराओ। ऐसा न देओ कि कोई तुमको किसी प्रकारसे धोखा देवे। येही बात जो ३ हैं सो खीष्टके दिनसे पहिले होंगे अर्थात बऊतसे लोग खीष्टके धर्मसे हट जायेंगे और वही पापी मनुष्य प्रकाश किया जायगा जो नष्ट पुत्र और बिरोधी है; वह उन ४ सबोंसे, जो ईश्वर अथवा पूजनीय कहलाता है, अपनेको ऐसा बड़ा बनावेगा कि वह ईश्वरके मंदिरमें ईश्वर सा बैठेगा और अपनेको ईश्वर सा दिखलावेगा। क्या तुम्हें चेत नहीं है ५ कि मैंने तुम्हारे संग होते ऊये तुमसे येही बातें कहीं?। वही ६ जो अब ऐसा रोकता है कि यही पापी मनुष्य, उसके समयमें प्रकाश नहीं किया जावे, सो तुम जानते हो। कुकर्मका ७ भेद जो है सो अब कर्म करता है, परंतु वही जो रोकता है सोई रोकता रहेगा जबतक बीचमेंसे निकाला जाये; तब पापी मनुष्य जो है सो प्रकाश किया जायगा। पीछे प्रभु अपने मुखके ८ श्वाससे उसे हटावेगा और अपने आनेके तेजसे उसे नष्ट करेगा। यही पापी मनुष्य जो है सो शैतानके करनेके समान, ९ सब प्रकारके आश्चर्यित कर्म और लक्षण और अद्भुत कर्म १० और कुकर्मके छल करके, आवेगा, जिन्होंके कारणसे वे, जिन्होंने सचाईको ऐसा प्यार नहीं किया और ऐसा ग्रहण नहीं किया कि त्राण पावें, नाश किये जायेंगे। ईश्वर इन लोगों ११ को ऐसी भूलमें पड़ने देगा कि वे झूठको सच जानें। सो वे १२ सब सचाईको न मानके और कुकर्मसे संतुष्ट होके दंड पावेंगे।

उनके चुनेके लिये ईश्वरका धन्यबाद कर्ना।

हे भाईयो, प्रभुके प्यारो, यह उचित है कि हम तुम्हारे १३ विषयमें ईश्वरका धन्यबाद सदा करें क्योंकि ईश्वरने पहिलेसे तुम्हें ठहराया है इसलिये कि पवित्र आत्माकी कराई ऊई पवित्रताके द्वारासे और सचाईके बिश्वास करनेके द्वारासे त्राण पावो; हां, ईश्वरने हमारे सुसमाचारके द्वारासे १४ तुम्हें बुलाया है इसलिये कि तुम हमारे प्रभु यीशु खीष्टके ऐश्वर्यके अधिकार पावो।

उनके लिये प्रार्थना कर्नी।

१५ सो, हे भाईयो, स्थिर रहो और उन बातोंको, जो तुमने
१६ हमसे अथवा हमारे पत्रसे सीखों हैं, मानते रहो। और
हमारा प्रभु यीशु खीष्ट आपही और हमारा पिता ईश्वर,
जिसने हमको प्यार किया है और अनुग्रह करके हमको
१७ अनंत शान्ती और उत्तम भरोसा दिया है, तुम्हारे मनको
शान्ती देते रहें और तुमको सब प्रकारकी सत्य बातमें और
सत्य कर्ममें स्थिर करते रहें।

३ तीसरा अध्याय।

अपने निमित्त प्रार्थना कर्नेको उनको पौलका बिनय कर्ना।

१ हे भाईयो, हमारे बिषयमें यह प्रार्थना कीजियो कि प्रभुकी
बात जो है सो ऐसी फैल जाय और ऐसी मानी जाय जैसी
२ कि तुम्हारे बीचमें है, और कि हम जो हैं सो अबिचारी
और दुष्ट मनुष्योंसे बच जावें क्योंकि सबोंको बिश्वास नहीं
३ है। ईश्वर सच्चा है; वह तुमको दृढ़ करेगा और बुराईसे
४ बचावेगा। तुम्हारे बिषयमें, प्रभुके अनुग्रहसे, हमारा भरोसा
यही है अर्थात कि तुम उन आज्ञाओंपर, जो हमने तुमको
५ दिईं हैं, चलते हो और चलते रहोगे। प्रभु तुम्हारे मनोंको
ऐसे करे कि तुम ईश्वरको प्यार करो और खीष्टकी नाईं
धीरजवंत होओ।

आज्ञा माननेहारे औ आलसियोंको उसका उपदेश।

६ हे भाईयो, हम प्रभु यीशु खीष्टके नाम लेके तुमको यही
आज्ञा देते हैं कि उन भाईयोंसे अलग रहो जो बिधिपर
नहीं चलते हैं और उन बातोंके अनुसार नहीं करते हैं जो
७ उन्होंने हमसे सुनीं हैं। तुम आपही जानते हो कि किस
रीतिसे हमारे पीछे तुमको चलना होगा। हमने तुम्हारे
बीचमें हो बिधिके बिरोध कुछ न किया और किसीकी रोटी
८ सेंत न खाई; हां, रात दिन हमने काम काज किया इस-
९ लिये कि तुममेंसे किसीपर भार न होवें। हम तो तुमसे कुछ

लेनेका अधिकार रखते थे परंतु कुछ न लिया इसलिये कि हम तुमको बतावें कि जैसेकि हम करते हैं तैसे तुमको करना होगा। तुम्हारे बीचमें होनेपर हमने तुमको यही १० आज्ञा दिई कि जो कोई मनुष्य काम काज न करे उसको खाना न देना चाहिये। हमने सुना है कि तुम्होंमेंसे कोई ११ कोई हैं जो बिधिपर नहीं चलते हैं; वे अपने काम काज नहीं करते हैं; हां, वे औरोंके कामपर हाथ देते हैं। हम १२ अपने प्रभु यीशु खीष्टकी ओरसे ऐसे लोगोंको यही आज्ञा देते हैं कि वे चैनसे काम काज करके अपनेही खाना खावें। हे भाईयो, सतकर्म करनेमें ढीले न होओ। जो कोई १३ हमारे इस पत्रकी बात न माने तो ऐसे मनुष्यको देख लेओ १४ और उसीसे अलग रहो इसलिये कि वह लज्जित होवे; तौभी उसे शत्रु सा न जानो परंतु उसे भाई सा जानके १५ चिताओ। शांतीदायक प्रभु आपही तुमको सब रीतिसे सदा १६ शांती देवे। प्रभु तुम सबोंके संग होवे।

पत्रके समाप्तिकी कथा।

मैं पौल जो हूं, सो अपने हाथसे नमस्कार लिखता हूं; १७ मेरे सब पत्रोंका चिन्ह यही है। हमारे प्रभु यीशु खीष्टका १८ अनुग्रह तुम सबोंको दिया जाय। आमीन॥

तीमथियपर पहिला पत्र

१ पहिला अध्याय।

मंगलाचरण।

पौल, जो हमारे बचानेहारे ईश्वरके और हमारे आशा- १ दाता यीशु खीष्टकी आज्ञाके अनुसार, यीशु खीष्टका प्रेरित हो तीमथियको जो मेरा धर्म पुत्र है, नमस्कार कहता हूं। हमारे पिता ईश्वरसे और हमारे प्रभु यीशु खीष्टसे तुमको २ अनुग्रह और दया और शांती दिये जावें।

बंशावली औ व्यवस्था औ सुसमाचार औ प्रेरितलपदमें तीमथिय पर पौलका उपदेश।

३ माकिदनिया देशमें मेरे जानेपर मैंने तुझसे यह बिंत किई कि तू इफिस नगरमें रहइयो इसलिये कि किसी ४ किसीको चितावे कि वे नये उपदेश न देवें और कहानियों और अनंत बंशावलीयोंपर मन नहीं लगावें क्योंकि इन्होंके कारणसे झगड़े होते हैं और ईश्वरके धर्ममें कोई नहीं बढ़ता ५ है। आज्ञाका फल यही है अर्थात वही प्रेम जो निर्मल हृदयसे और उत्तम मनसे और निष्कपट बिश्वाससे होता ६ है; परंतु कोई कोई हैं जो इसे छोड़के अनर्थ कहानियोंपर ७ मन लगाते हैं। वे व्यवस्थाके उपदेशक होने चाहते हैं परंतु वे नहीं समझते हैं कि क्या कहते हैं, न किन बातोंके बिषय- ८ में वे बचन देते हैं। हम जानते हैं कि जो कोई मनुष्य व्यवस्थापर उचित रीतिसे चले तो वही (अर्थात व्यवस्था) ९ फलदायक है। और यह भी हम जानते हैं कि व्यवस्था जो है सो धर्मी लोगोंके बिरोध नहीं है परंतु आज्ञाओं और बिधियोंके भंग करनेहारोंके बिरोध, अधर्म करनेहारों और भूलानेहारोंके बिरोध, अशुचियों और भ्रष्टोंके बिरोध, पितृ घातकों और मातृघातकों और मनुष्यघातकोंके बिरोध, १० बेश्यागामीयों और पुरुषगामीयों और पुरुषोंके चोरोंके बिरोध, झूठ बोलनेहारों और झूठी किरिया खानेहारोंके बिरोध, और और सबोंके बिरोध है जो धर्मी शिक्षाके ११ अनुसार नहीं चलते हैं। यही सब भी सच्चिदानंद ईश्वरके उस तेजोमय सुसमाचारसे बरजे गये हैं जो प्रचार करनेको १२ मुझे सौंपा गया है। मैं अपने सामर्थदेनेहारे प्रभु यीशु खीष्टका धन्यबाद इसलिये करता हूं कि उसने मुझे ऐसे सच्चे जाना कि उसने मुझे सुसमाचारके प्रचार करनेहारे ठह- १३ राया है। मैं तो आगे निंदा करनेहारा और सतावने- हारा और उपद्रव करनेहारा था, परंतु मैंने दया पाई; जो कुछ कि मैंने किया सो अज्ञानतासे और अबिश्वाससे किया;

हां, हमारे प्रभुने मुझपर ऐसा अनुग्रह किया कि खीष्ट १४ यीसुकी ओर मेरा बिस्वास और प्रेम बड़ा ऊआ। यह बात १५ सची है और बऊत ग्रहणके जोग है, अर्थात, कि खीष्ट यीसु जो है सो पापी लोगोंके बचानेको जगतमें आया, जिन सबोंसे मैं बड़ा पापी हूं। परंतु मैंने इसलिये दया पाई १६ कि यीसु खीष्ट मुझपर, जो ऐसा बड़ा पापी हूं, अपनी बड़ी दया नमुना सा दिखलावे कि और पापी लोग उसपर बिस्वास करके अनंत जीवन पावें। उस राजाके, जो सनातन १७ है, अर्थात उस ईस्वरके, जो अमर और अदृश्य और अद्वैत बुद्धिमान है, आदर और महिमान सदा प्रकाश होवें। आमीन।

स्थिर रहनेका निर्णय, औ कितेक लोगोंके धर्म छोड़नेका प्रकाश कर्ना।

हे पुत्र तीमथिय, मैं उन आगमबाणोंके अनुसार, जो तेरे १८ बिषयमें आगे कहे गये, तुझको यही आज्ञा देता हूं, अर्थात, कि तू उन्होंके अनुसार बिस्वास रखके और सचौटी करके अच्छी रीतिसे लड़ाई कर। किसी किसीने सचौटीको छोड़के १९ अपने बिस्वासकी नाव तोड़ डाली है; उन्होंके बीचमें ऊमि-नये और सिकंदर नाम हैं, जिन्हें मैंने शैतानके हाथमें सोंप २० दिया कि वे दंड पायके फिर निंदा न करें।

२ दूसरा अध्याय।

सर्वसाधारण लोगोंके लिये प्रार्थना कर्नेको पौलकी आज्ञा।

सो मैं यही उपदेश पहिले देता हूं कि सब मनुष्यों- १ के बिषयमें और बिशेष करके राजाओं और उन सबोंके २ बिषयमें, जो अधिकार रखते हैं, बिंती और निबेदन और प्रार्थना और धन्यबाद किये जावें इसलिये कि हम चैनसे और कुशलसे सब प्रकारके धर्म और सतकर्म करके दिन काटें; क्योंकि हमारे बचानेहारे ईस्वरके सन्मुख यह भला ३ और मनभावना है। वह यह चाहता है कि सब मनुष्य ४ जो हैं सो त्राण पावें और सच्चाईका ग्रहण करके मानें।

५ ईश्वर एक है, और ईश्वर और मनुष्यके बिचवई जो है सो
६ एक है, अर्थात, पुरुष खीष्ट यीशु है, जिसने सभोंकी मुक्तिको
७ मोल लेके अपने प्राण दे दिया। मैं ठीक समयमें इसी
बातके प्रगट करनेको प्रचारक और प्रेरित ठहराया गया
इसलिये कि मैं अनदेशियोंको बिश्वासकी और सतकर्मकी बात
सिखाऊं; इस बिषयमें मैं खीष्टके नाम लेके सच बोलता हूं,
भूठ नहीं बोलता।

स्त्रियोंके अलंकारका और उपदेश न देनेका आज्ञा कर्ना।

८ सो मैं यह चाहता हूं कि पुरुष लोग जो हैं सो सब
स्थानोंमें बिना क्रोध और बिना बिरोधसे पवित्र हाथ उठाय-
९ के प्रार्थना करें। इसी रीतिसे स्त्री लोग भी अपनेयोंको
उचित बस्त्र पहिनके लज्जासे और संकोचसे हो रहें, न बाल
गूंथनेसे, न सोनेसे न मोतीयोंसे, न बहुमोल बस्त्रसे परंतु
१० उन सतकर्मोंसे संवारे जावें जो ईश्वरकी दासीयोंको उचित
११ होते हैं। चाहिये कि स्त्रीलोग सब प्रकारसे अधीन हो
१२ चुपकेसे सीख लिया करें। मैं यह ठहराता हूं, कि स्त्री जो
है सो पुरुषको न सिखावे, न उसपर अधिकार रखे, परंतु
१३ कि चुपकेसे रहे; क्योंकि पहिले आदम पिता बनाया गया,
पीछे हवा माता; और आदम पिताने फल नहीं खाया
१४ परंतु स्त्री फल खायके अपराधिनी हुई; तोभी जो स्त्रीलोग
बिश्वास और प्रेम और पवित्रता और संकोच करके रहें तो
वे बालक जननेसे, बच जायेंगे।

३ तिसरा अध्याय।

अध्यक्षोंके व्यवहारका निर्णय।

१ यह सच है कि जो कोई मनुष्य मंडलाध्यक्षका पद
२ पाने चाहे तो वह अच्छा कर्म करने चाहता है। अवश्य
है कि मंडलाध्यक्ष जो है सो निर्दोषी होवे और केवल एक
पत्नीका पति होवे और चौकस होवे और सुशील होवे
और संमानी होवे और अतिथिपालक होवे और सिखाने

सकनेहारा होवे; और न मदिरा पीते पीते रहनेहारा ३ होवे और न मरखाहा होवे, और न लालची होवे, परंतु नरम और मिलनसार और निर्लोभी होवे; अच्छी रीतिसे ४ अपने घरानेका चलानेहारा होवे और बड़ा गंभीर हो अपने संतानोंको बशमें रखनेहारा होवे क्योंकि जो कोई ५ अच्छी रीतिसे अपने घरानेको चलाने नहीं जानता है तो वह क्योंकर ईश्वरकी मंडलीकी रखवारी करेगा? और न नया ६ शिष्य होवे, न हो कि गर्बसे फूलके शैतानके दंडके जोग होवे; और भी चाहिये कि वह मंडलीके बाहिर लोगोंसे शुभ- ७ नामी होवे न हो कि निंदित हो शैतानके फंदेमें पड़े।

सेवकोंके व्यवहारका निर्णय।

इसी रीतिसे चाहिये कि मंडलसेवक जो हैं सो गंभीर ८ होवें; न दो रंगी होवें; न मदिराका बड़े पीनेहारे होवें, और न लालची होवें, परंतु निर्मल मनसे बिश्वासके भेदके ९ रखनेहारे होवें। और चाहिये कि वे पहिले परखे जावें; १० पीछे इसके, जो निर्दोषी दिखाई देवें, सो सेवकाई करें। इसी रीतिसे चाहिये कि इनकी पत्नी भी गंभीर होवें; ११ न कलंक लगानेहारीआं होवें, परंतु चौकस होवें और सब बातोंमें सच्ची होवें। और चाहिये कि मंडलसेवक जो हैं १२ सो केवल एक पत्नी का पति होवे और अच्छी रीतिसे अपने संतानोंका और अपने घरानेका चलानेहारा होवे। वे १३ जो मंडलीकी सेवकाई, अच्छी रीतिसे, करें सो अच्छा पद पाते हैं और ख्रीष्ट यीशुके धर्ममें बड़ा साहसी होते हैं।

तिमथियसके निकट लिखनेसे पौलका अभिप्राय।

मैं भरोसा रखता हूं कि मैं तेरे निकट जलद आऊं, परंतु १४ जो कुछ देरी होवे तो इन बातोंसे, जो मैंने लिखा है, तू जाने १५ कि ईश्वरके उस घरमें क्योंकर चलना होगा जो अमर ईश्वरकी मंडली है और सचाईका खंभा और नेउं सा है। धर्मके भेदकी १६ बातें निःसंदेह येही हैं, अर्थात, कि ईश्वर जो है सो शरीर- में प्रगट ऊआ, आत्मासे निर्दोषी ठहराया गया, दूतोंसे देखा

गया, अन्यदेशियोंके बीचमें प्रचारा गया, जगतमें किसी किसीने उस पर बिश्वास किया, और ऐश्वर्य्यमें उठाया गया।

४ चौथा अध्याय।

धर्म्म त्यागनेका भविष्यद्वाक्य।

१ पवित्र आत्मा जो है सो खोलके यह कहता है कि पीछले समयोंमें कोई कोई होंगे जो धर्म्मसे छूट जायेंगे; वे उन भरमानेवाले आत्माओं और भूतोंके शिक्षाओं पर चित
२ लगावेंगे जो कपट करके झूठ बोलते हैं, और अपने
३ अपने मनको सन्न करते हैं, और विवाह करनेसे बरजते हैं, और उस खानाको न खाने देते हैं जो ईश्वरसे इस लिये उत्पन्न हुआ कि बिश्वास करनेहारे और सचाईके
४ माननेहारे धन्यबाद करके खावें। सब वस्तु जो ईश्वरसे उत्पन्न हुई है सो भली है और धन्यबाद करनेहारोंसे खाया जानेके
५ जोग है क्योंकि सोई ईश्वरकी बातसे और प्रार्थना करनेसे
६ पवित्र किई जाती है। जो बिश्वासी भाईयोंको ये बातें सुनावे तो तू यीशु खीष्टका सेवक होगा जो धर्म्मकी बातोंसे और उस शिक्षासे, जो तूने पाई है, पाला हुआ है।

धर्म्मके विषयमें तीमथियके निकट पौलके नाना प्रकारके उपदेश।

७ अधर्म्मी और अनर्थ कहानियों पर मन न लगा परंतु
८ ईश्वरका कर्म करते करते रहो। शारीरिक कर्म करनेसे लाभ थोड़ा होता है परंतु धर्म्मीक कर्म करनेसे लाभ बहुत होता है क्योंकि इससे इस कालके लाभकी प्रतिज्ञा होती है और पर
९ लोकके लाभकी प्रतिज्ञा भी होती है। सोई बात सच है और
१० बहुत ग्रहणके जोग है। हम परिश्रम करते हैं और निंदा सहते हैं क्योंकि हमारा भरोसा जो है सो उस अमर ईश्वर पर है जो सब मनुष्योंका, और, बिशेष करके, बिश्वासियोंका
११ बचानेहारा है। येही बातें प्रचार करके उपदेश दे।
१२ किसीको न दे कि तुझे तेरी जवानी के कारणसे तुच्छ करे परंतु बातचीतसे, और चालसे, और प्रेमसे, और स्वभावसे,

और बिश्वाससे, और पबित्रतासे बिश्वसियोंको नमुना सा हो। जबतक मैं न आऊं तबतक पढ़ता और उपदेश देता १३ और सिखाता रहईयो। अपने उस दानको अचेत न हो १४ जो तुझको आगमज्ञानके अनुसार मंडलाध्यक्षोंके हाथके रखनेसे दिया गया। इन बातोंपर ऐसा चित लगा और १५ उनमें ऐसा लौलीन रह कि सभोंके बिषयमें तेरा गुण प्रगट होवे। अपने पर और अपनी शिक्षापर चौकस रह, और १६ स्थिर हो; ऐसे करनेसे तू अपनेको और अपने सुननेहारोंको बचावेगा।

५ पांचवां अध्याय।

निपस्कारका औ बिषयोंके पालन करनेको बिबरण।

किसी वृद्धको डांट न दे परंतु उसको पिता सा जानके १ बुझा। इसी रीतिसे भी जवानोंको भाई से, वृद्धीको माता २ सी, और जवान स्त्रीयोंको बहिन सी बड़े शुद्धाचारसे बुझा। उन बिधवाओंको, जो सचमुच बिधवे हैं पालन कर। जो ३ किसी बिधवाके कोई लड़का लड़की होवें अथवा कोई नाती ४ पोता होवें तो चाहिए कि ये पहिले सीखें कि अपने ही घरमें सतकर्म करके अपने माता पिताका भाग भर देवें; सोई ईश्वरके सन्मुख भला और मन भावना है। वही जो ५ सच्ची और निर्बंधु बिधवा है सोई ईश्वर पर भरोसा रखती है और रात दिन बिंती और प्रार्थना करके रहती है; परंतु वही जो सुख भोगती भोगती रहती है सोई जीत जी ६ मृतक सी है; येही बातें करके उन्हें जता कि वे निर्दोषी ७ हो जावें। जो कोई अपनेयोंको, और बिशेष करके, अपने ८ घरानेके पालन न करे तो वह धर्मको छोड़के अबिश्वासियोंसे बुरा हो गया है। चाहिये कि वही बिधवा जो साठ ९ बरससे कम नहीं है सोई ठहराई जावे, हां, वही बिधवा जो एक पतिकी ऊई और इन सतकर्म करनेमें नामी ऊई १० अर्थात बालकोंके पालन करनेमें, अतिथियोंके पालन करनेमें,

पवित्र लोगोंके पांवओंके धोनेमें, दुःखीयोंकी सहायता
११ करनेमें, हां, सब प्रकारके सत कर्म करनेमें नामी ऊई। परंतु
जवान बिधवायोंको ग्रहण न कर क्योंकि क्या जाने वे चंचला-
१२ हटसे खीष्टके बिरोध होके बिवाह करेंगीं; इससे वे
१३ अपने पहिले धर्मको छोड़के दंडके जोग हो जायेंगीं। वे आल-
सी भी हो घर घरमें डोलें फिरेंगीं; और केवल आलसी
नहीं, परंतु बकवाही भी होवेंगीं, और औरोंके कामपर
१४ हाथ देवेंगीं, और अनुचित बातें करेंगीं। सो मैं यह चाहता
हूं, कि जवान स्त्रीयां जो हैं सो बिवाह करें, और बालक
जनें, और ग्रहस्थी करें, और बिरोधीको निंदा करनेका
१५ कारण न देवें, क्योंकि कोई कोई हैं जो शैतानके पीछा चली
१६ गईं हैं। जो किसी बिश्वासीकी अथवा किसी बिश्वासिनीकी
कोई बिधवा होय तो चाहिये कि उनका उपकार करें
और मंडलीपर उन्हें भार होने न देवें इसलिये कि मंडली
जो है सो उनहीका उपकार करें जो सचमुच बिधवा हैं।

प्राचीन लोगोंका निरूपण।

१७ चाहिये कि वे मंडलाध्यक्ष जो अच्छी रीतिसे काम करते हैं,
और, बिशेष करके, वे जो बात करनेमें और सिखा देनेमें
परिश्रम करते हैं दुना दानके जोग गिने जावें क्योंकि
१८ शास्त्रमें यह लिखा है कि दाओनेहारे बैलका मुख मत बांध।
यह बात भी सच है कि मजूर जो है सो अपनी मजूरीके
१९ जोग है। जो दो तीन साक्षी न होवें तो किसी मंडलाध्यक्ष
२० पर किसीका अपबाद न मानईयो। पाप करनेहारोंको
सबोंके सन्मुख डांट दे इसलिये कि और लोग भयमान
२१ होवें। मैं ईश्वरके, और प्रभु यीशु खीष्टके, और स्वर्गी
दूतोंके सन्मुख, यही आज्ञा देता हूं कि तू मुखापेक्षा और
पक्षपात न करके इन बातोंको मानता रह।

तीमथियको पौलका बिशेष उपदेश करना।

२२ हाथ किसीपर जलद न रख, और औरोंके पापोंका भागी
२३ न हो; अपने तईं शुद्ध रख। अबसे केवल पानी न पिया

कर परंतु अपने झोझपीड़ाके और अपने बज्जत दुर्बलताओंके कारणसे कुछ कुछ दाखका रस पी। किसी किसी मनुष्योंके पाप २४ जो हैं सो बिचारके आगे, और किसी किसीके, बिचारके पीछे, प्रगट होते हैं; और वे कर्म जो सत नहीं हैं सो २५ छिपाये नहीं जा सकते हैं।

६ छठवां अध्याय।

दासोंका कर्त्तव्य कर्म औ दुष्ट उपदेशको छोड़ना औ धर्मका उपदेश।

चाहिये कि सब कोई जो लौंडापनाके जूयेके नीचे होवें सो १ अपने स्वामियोंको बड़े सन्मानके जोग जानें, इसलिये कि ईश्वरके नामको और शिक्षाकी निंदा न किई जाय। चाहिये २ भी कि वे दास, जिन्होंके स्वामी बिश्वासी हैं सो उन्होंको तुच्छ न करें क्योंकि ऐसेही जो हैं सो भाई हैं; हां, चाहिये कि उनकी बज्जत सी सेवा करें क्योंकि वे बिश्वासी, और प्रिय, और प्रभुके उत्तम कर्मके फलके भागी हैं। ये बातें सिखाके उपदेश देता रह। जो कोई और प्रकारकी शिक्षा ३ करे और हमारे प्रभु यीशु खीष्टकी उन अच्छी बातोंको जो सत कर्मके अनुसार हैं, ग्रहण न करे तो वही अहंकारी ४ और निर्बुद्धि है, हां, वही उन प्रश्नोंका और उनबातों-का बड़बड़िया है जिन्होंसे डाह औ झगड़ा और निंदा और बुरी चिंता और उन लोगोंके बिबाद होते हैं जिनके मन ५ बुरे हैं और सचाईको न मानके यह बिचार करते हैं कि ईश्वरकी सेवा जो है सो संसारिक लाभ है। ऐसे मनु- ६ ष्योंसे परे रहिये। सच है कि सन्तोषताके संग ईश्वरको सेवा जो है सो बड़ा फलदायक है। हम तो जगतमें कुछ नहीं ७ लाया, और यह प्रगट है कि हम उसमेंसे कुछ न ले जा सकते हैं। सो चाहिये कि हम अन्न और बस्त्र पाते ज्जये सन्तोषी ८ होवें। वे जो धनी होने चाहते हैं सो लोभमें और फंदेमें ९ और बज्जतसे ओछे और दुःखदाई अभिलाषोंमें पड़ते हैं जो मनुष्योंको नष्ट करके नरकमें डुबाते हैं; क्योंकि धनका १०

चाह जो है सो सब बुराईयोंकी एक जड़ है, और कोई कोई उसका लालच करके धर्मसे भटक गये और बक्तसे दुःखोंसे छिद गये हैं।

धर्मके विषयमें तीमथियको पौलका निवेदन।

११ सो, हे ईश्वरका मनुष्य, तू इनसे भाग, और सत कर्म, और ईश्वरकी सेवा, और बिश्वास, और प्रेम, और धीरज और
१२ दीनताईका पीछा कर। धर्मकी सच्ची लड़ाई करके उस अनंत जीवनको पकड़, जिसे पानेको तू बुलाया गया और जिसका बिश्वासी तू अपनेको बक्तसे साक्षियोंके सन्मुख अच्छी रीतिसे
१३ बतलाया। मैं ईश्वरके सन्मुख, जो सबोंका जिलानेहारा है, और खीष्ट यीशुके सन्मुख, जिसने पन्तिय पिलातके सन्मुख
१४ साक्षी दिई, तुझको यही आज्ञा देता हूं कि तू उस आज्ञाको, निष्कलंकसे और निर्दोषसे, हमारे प्रभु यीशु खीष्टके आनेतक
१५ मानते रह। उसने अपने समयमें यह दिखावेगा कि कौन वही है जो धन्य है, और अद्वैत सामर्थवान है, और राजाओंका राजा और प्रभुओंका प्रभु है, और अद्वैत सनातन है,
१६ और अगम्य ज्योतिमें निवासी है, और जिसको किसी मनुष्यने न देखा है, और न देख सकता है; उसीकी महिमा और पराक्रम सदा प्रकाशित होवें। आमीन।

धनी लोगोंको किसरीति उपदेश देना होता है उसका बिवरण और पत्रकी समाप्ति।

१७ इस संसारके धनमानोंको यही उपदेश कर कि गर्व न करो और अनस्थीर धनपर भरोसा न रखो, परंतु अमर ईश्वरपर भरोसा करो जो हमारे खर्चके लिये सब कुछ बक्ताईसे
१८ देता है, और कि भला करो, हां सत कर्मोंसे धनी होओ,
१९ अर्थात दान देओ, और सहायता करो, और स्वर्गमें अपने
२० लिये अच्छी पूनजी रखो कि अनंत जीवन पावो। हे तीमथिय, वही जो तुमको सोंपा गया है सो यतनसे रख, और अधर्मी और अनर्थ बातोंसे, और झूठी बिद्याकी बिरोध बातोंसे,
२१ अपने मुख फेर क्योंकि कोई कोई हैं जो इनको मानके

खीष्टके धर्मसे भटक गये हैं। तुझको अनुग्रह दिया जाय। आमीन।

तीमथियपर दूसरा पत्र।

१ पहिला अध्याय।

मंगलाचरण।

पौल जो ईश्वरकी इच्छासे यीशु खीष्टका प्रेरित, और जीवनकी प्रतिज्ञाका प्रचार करनेहारा है, अपने प्यारे पुत्र तीमथियको नमस्कार कहता है। पिता ईश्वरसे और हमारे प्रभु यीशु खीष्टसे तुमको अनुग्रह और दया औ आराम दिये जायें। १ २

सत्य बिश्वासके लिये तीमथिय पर पौल प्रेरितका प्रेम।

मैं ईश्वरका, जिसकी सेवा मैं, सच्चे मनसे, अपने पितरोंके समान करता हूं, धन्यबाद करता रहता हूं, हां, मैं अपने प्रार्थनाओंमें तेरे बिषयमें रात दिन सदा प्रार्थना करता रहता हूं। तेरे आंसुओंका स्मरण करके मैं तुझे बहुत देखने चाहता हूं इसलिये कि मैं आनंदसे भर जाऊं। उस सच्चे बिश्वासका स्मरण करके जो पहिले तेरी नानी लोयीमें और तेरी माता उनिकीमें था मैं निश्चयसे जानता हूं कि तेरा बिश्वास भी ऐसाही है। ३ ४ ५

धर्म कर्म औ दुःखभोगनेके बिषयमें तीमथियपर पौलका उपदेश

सो मैं तुझे चेत करावता हूं कि तू उस दानको उस्कावे जो ईश्वरसे, मेरे हाथोंके रखनेके द्वारासे, तुझको दिया गया। ईश्वरने हमको हेठापनका स्वभाव नहीं दिया है परंतु साहस और प्रेम और सुज्ञानताका स्वभाव दिया है। इसलिये न उस साक्षीसे, जो प्रभुके बिषयमें है, न मुझसे, जो प्रभुके लिये बन्धुआ हूं, लज्जित हो, परंतु ईश्वर ६ ७ ८

पर भरोसा करके उन दुःखोंका भागी हो जो सुसमाचारके
९ प्रचार करनेसे होते हैं। ईश्वरने हमको बचाया, और पवित्र होनेको बुलाया है, न हमारे पुण्यके कारणसे, परंतु अपनी उस मनसाके कारणसे जो उसने सृष्टके पहिले ठहराया और जिसके अनुसार उसने हमको खीष्ट यीशुके द्वारासे अनुग्रह
१० दिया है। यही मनसा जो है सो हमारे बचानेहारे यीशु खीष्टके आनेसे प्रगट ऊई है, जिसने मृत्युको बशमें किई और सुसमाचारके द्वारासे जीवन और अमरताको प्रकाश किया।
११ इस सुसमाचारके बिषयमें मैं ठहराया गया हूं कि मैं अन्यदेशिओंके बीचमें प्रचार करनेहारा और प्रेरित और
१२ उपदेशक होऊं। इसी कारण मैं यही दुःख पाता हूं परंतु मैं लज्जित नहीं क्योंकि मैं जानता हूं कि किसपर मैं भरोसा रखता हूं; और मेरा भरोसा यही है कि जो कुछ कि मैं उसके हाथमें सोंप दिया है सोई वह उसी दिनतक रक्षा करेगा।

धर्ममें स्थिर होनेकी कथा।

१३ तू खीष्ट यीशुपर बिश्वास करके और प्रेम करके उन अच्छी बातोंको, जो तूने मुझसे सुनी हैं दृढ़तासे रख।
१४ उस पवित्र आत्माकी सहायतासे, जो हममें रहता है, उस उत्तम बस्तुको, (अर्थात सुसमाचारको) जो तुझको सोंपी गई है, यतनसे रख।

कितक लोगोंका धर्म छोड़ना, औ अनसिफरका धर्म प्रकाश करना।

१५ तू यह जानता है कि आशिया देशके सब लोग, जिनमें
१६ फगिल्ल और हर्म्मगिनि हैं, मुझे छोड़ गये हैं। प्रभु जो है सो अनीसिफरके घरानेपर दया करे; उसने मुझको बारबार
१७ सुख दिया और मेरे जंजीरोंसे लज्जित न था, हां, रोम नगरमें आके उसने मुझे खोज खोज करके पाया। प्रभु
१८ ऐसा करे कि वही बिचारके दिनमें प्रभुसे दया पावे। कितनी बातोंमें उसने ईफिस नगरमें मेरी टहल किई सोई तू आपही अच्छी रीतिसे जानता है।

२ दूसरा अध्याय।

धर्म कर्म्ममें नित्य प्रवृत्त होनेका औ दुःख सहनेका बिवरण।

हे मेरे पुत्र, तू खीष्ट यीशुके अनुग्रहपर भरोसा करके दृढ़ १
हो। जो कुछ कि तूने बहुत साक्षीयोंके सन्मुख मुझसे सुना २
है सो सच्चे मनुष्योंको सौंप दे जो औरोंको सिखा दे सकेंगे।
तू यीशु खीष्टके अच्छे सिपाहीके समान दौड़ धूप कर। ३
जो कोई सिपाहीका कर्म करता है सोई अपनेको और ४
प्रकारके धंधेमें नहीं फसाता है इसलिये कि सेनापतिको
प्रसन्न करे। जो कोई कुश्ती करनेहारा बिधिके अनुसार ५
कुश्ती न करे तो मुकुट नहीं पाता है। किसानको चाहिये कि ६
पहिले परिश्रम करे, पीछे फल पावे। जो मैं कहता हूं ७
सो चेत कर; और प्रभु तुझको सब बातोंकी समझ देवे।
यीशु खीष्टका स्मरण कर जो दायूद राजाके बंशमेंसे था, ८
और, मेरे सुसमाचारके अनुसार, मृतकोंमेंसे उठाया गया;
उसके लिये मैं कुकर्मीके समान यहांतक दुःख पाता हूं कि ९
जंजीरोंसे बंधा हुआ हूं; परंतु ईश्वरकी बात जो है सोई
बंधा नहीं है। सो मैं प्यारे लोगोंके लिये सब कुछ सहता हूं १०
कि वे खीष्ट यीशुसे मुक्ति पायके स्वर्गकी अनंत बिभवके भागी
होवें। यही बात सत्य है अर्थात कि जो हम यीशुके समान ११
मरवाये जावें तो उसीके समान भी जीवेंगे; जो हम क्लेश १२
सहें तो उसीके समान भी राज करेंगे; परंतु जो हम उसे
न मान लेवें तो वह हमें भी न मान लेगा; हां, जो हम १३
सच्चे न रहें तौभी वह सच्चा रहेगा; वह अपनेको झूठा
नहीं ठहराने सकता है।

तीमथियपर कर्तव्य औ अकर्तव्य बिषयमें नाना प्रकारका उपदेश।

इनही बातोंका स्मरण करके प्रभुके सन्मुख यही उपदेश १४
दे कि बातोंकी लड़ाई न करें क्योंकि इससे कुछ फल नहीं होता
है, हां इससे सुननेहारे जो हैं सो बिगड़ जाते हैं। जतन १५
कर कि तू ईश्वरके सन्मुख गुणी ठहराये जाय अर्थात ऐसा

कार्जकारी ठहराये जाय जिसको लज्जित होनेका कारण नहीं होता है, और ऐसा सुनानेहारा ठहराये जाय जो
१६ सच्चाईकी बात सीधाईसे चलाता है। अधर्मी और अनर्थ बातोंसे परे रह क्योंकि इन्होंके कारणसे अधमता बहुत हो
१७ जायगी और वे खोरा घावकी नाईं खाते रहेंगे। ऐसी
१८ बातोंके कहनेहारोंके बीचमें हुमिनेय और फिलीत हैं जो भूल चूक करके और किसी किसीको धर्मसे हटा देके कहते
१९ हैं कि मृतकोंकी जी उठनेका दिन बीत गया है। तौभी ईश्वरकी नेउं जो है सो स्थिर रहती है और उसपर यह लिखा है अर्थात कि ईश्वर अपने सब लोगोंको जानता है, और यह कि हरएक जो खीष्टका नाम लेता है सो कुकर्मसे
२० परे रहता है। बड़े घरमें केवल सोने और रूपेके पात्र नहीं हैं परंतु काठ और मट्टीके पात्र भी हैं; और उनमेंसे कोई कोई बड़े कामके लिये और कोई कोई छोटे कामके लिये हैं।
२१ सो तो जो कोई अपनेको अधर्मोंसे परे रहे तो वह बड़े कामका वही पात्र सा होगा जो शुद्ध किया हुआ और स्वामीके कामके जोग और हरएक अच्छे कामके लिये तैयार
२२ है। सो जवानीकी कामनाओंसे भाग और उनकी नाईं जो पवित्र मनसे प्रभुके नाम लेके प्रार्थना करते रहते हैं सत कर्म
२३ और धर्म और प्रेम और मिलाप कर। अनर्थ और निर्बुद्धी बातोंसे परे रह; तू जानता है कि इन्होंसे झगड़े होते हैं।
२४ चाहिये कि प्रभुका सेवक जो है सो झगड़ा न करे परंतु
२५ सबोंकी ओर नरम होवे, सिखानेको तैयार होवे, दुःखका सहनेहारा होवे और नरमीसे बिरोधियोंको समझा देनेहारा होवे; क्या जाने ईश्वर उनके मन ऐसा फिरावे कि वे
२६ सच्चाईको मान लेवें और शैतानके फंदेसे चौंक निकलें जिसमे वे, उसकी इच्छाके अनुसार, बंधे हुये हैं।

३ तीसरा अध्याय।

भ्रष्ट लोगोंके विषयमें भविष्यद्वाक्य।

चाहिये कि तू यह जान कि पीछले दिनोंमें बड़ा दुःसमय १ होगा। मनुष्य जो हैं सो अपनेही प्रेमी, और लोभी, और २ घमण्डी, और अहंकारी, और निंदक, और माता पिताकी आज्ञा न माननेहारे, और गुण न माननेहारे, और अशुचि, और मायारहित, और बचन तोड़नेहारे, और मिथ्यापवादी, ३ और कामी, और क्रोधी, और भले लोगोंके बैरी, और बिश्वास घातक, और ढीठ, और फूलनेहारे, और ईश्वरसे ४ सुख बिलासके अधिक प्रेमी, और ईश्वरकी सेवाकी बाहिरी ५ बात करनेहारे परंतु उसकी भीतरी बात न माननेहारे होंगे; ऐसे लोगोंसे परे रहो। इन्होंमेंसे वही हैं जो घरोंमें ६ घुस जाते हैं और उन ओच्छी स्त्रियोंको बशमें लावते हैं जो पापोंसे लदीं हैं और नाना प्रकारके कामाभिलाषोंसे खैंचीं जातीं हैं, और सदा सीखती सीखती रहतीं हैं तौभी सचाई- ७ को पकड़ नहीं सकतीं हैं। जैसे कि यान्नी और याम्बरीने ८ मूसाका साम्ना किया तैसे येही दुष्ट मनी और धर्म भ्रष्ट लोग सचाईका साम्ना करते हैं। परंतु वे आगेको न बढ़ेंगे; ९ जैसे कि यान्नी और याम्बरीकी मूढ़ता सबोंपर प्रगट हुई तैसे इन्होंकी मूढ़ता प्रगट भी हो जायेगी।

पौलका अपने आचार व्यवहारका प्रकाश कर्ना औ धर्मपुस्तककी प्रशंसा कर्नी।

परंतु तू जो है सो शिक्षामें, और बोलचालमें, और १० अभिप्रायमें, और बिश्वासमें, और नम्रतामें, और प्रेममें और धीरजमें, और उन दुःखों और क्लेशोंमें, जो आंतियखिया ११ और इकनिय और लूस्त्रा नगरोंमें मुझपर पड़े, मेरे पीछा चलनेहारा हुआ है। मैंने ऐसे दुःख उठाया, परंतु प्रभुने मुझे इन्होंसे बचाया। सब मनुष्य जो ख्रीष्ट यीशुके धर्मके १२ अनुसार दिन काटते हैं सोई सताये जायेंगे। दुष्ट १३

और छली मनुष्य जो हैं सो छल करके और छल खायके बुरे
१४ बुरे होते रहेंगे। सो तू उन्होंके संग रहईयो जिन्होंसे तूने
सीख लिया है और समझाया गया है; तू जानता है कि तूने
१५ किससे सीखा है; हां, तूने अपनी लड़काईसे उन धर्मपुस्तकों-
को जाना है जो उसी त्राण पानेका ज्ञान दे सकते हैं जो खीष्ट
१६ यीशुपर बिश्वास करनेके द्वारासे होता है। धर्म पुस्तकोंकी सब
बातें जो हैं सो ईश्वरसे लिखवाईं गईं हैं; और वे शिक्षा
देनेको, और चितावनेको, और सुधरनेको, और सत कर्म
१७ करनेके उपदेश देनेको कामके हैं इसलिये कि ईश्वरका सेवक
जो है सो सिद्ध होवे और सब सत कर्म करनेको तैयार हो
रहे।

४ चौथा अध्याय।

सुसमाचार प्रचार करनेमें नित्य प्रवृत्त होनेका बिनय।

१ सो मैं ईश्वरके और प्रभु यीशु खीष्टके सन्मुख, जो अपने
राजमें प्रगट होके जीवतों और मृतकोंका बिचार करेगा,
२ तुझको यही आज्ञा देता हूं अर्थात कि बातका प्रचार कर;
समयमें और असमयमें लगा रह; सब प्रकारकी नरमता
और सिखाईसे चिता दे, और डांट दे, और उपदेश दे।
३ समय आवेगा जिसमें लोग सच्चो सिखाई नहीं लेंगे परंतु,
अपनी इच्छाओंके अनुसार, उनही शिक्षकोंको अपने निकट
४ बुला लेंगे जो उनके कान खुजलावेंगे; सो वे अपने कानोंको,
५ सत सुननेसे फेरकर कहानियोंपर मन लगा देंगे। परंतु तू
सबमें चौकस हो; दुःख सह ले; सुसमाचारके प्रचार करनेमें
लगा रह; और अपनी सेवकाईको पूरी कर।

पौलके मृत्यु औ भावी सुखकी कथा।

६ अब मैं चढ़ाये जानेपर हुआ हूं और मेरे जात्राका समय
७ आन पहुंचा है; मैंने अच्छी लड़ाई किई है, मैंने दौड़को
८ समाप्त किया है, और मैं धर्मसे नहीं हट गया हूं। मेरे
लिये वह सत मुकुट धरा है, जिसे प्रभु, जो सच्चा बिचार

करनेहारा है, बिचारके दिनमें मुझको देगा, और केवल मुझको नहीं, परंतु उन सबको भी, जो उसके प्रगट होनेकी बाट जोहते हैं।

नानाप्रकार संबादकी कथा।

तू जलदीसे मेरे निकट आनेका जतन कर। दीमा जो है ९ सो इस संसारके प्यारसे मुझको छोड़के थिसलनीकी नगरको १० गया है; क्योंकि जो है सो गलातिया देशमें; और तीत जो है सो दलमातिया देशमें गया है; केवल लूक जो ११ है सो अब मेरे संग है। मार्क जो है सो अपने संग ले आ क्योंकि वह सेवकाईमें मेरे कामका है। तूखिकको मैंने ईफिस १२ नगरको भेजा है। उस लबादाको जो मैंने त्रोया नगरमें १३ कार्प्पके यहां छोड़ा और पोथियों और बिशेष करके, चमड़ी पत्रोंको अपने संग ले आईयो। सिकंदर ठठेरेने मुझपर १४ बहुत बुराई किई; प्रभु उसके कर्मोंके अनुसार उसको फल देगा; उससे सावधान हो क्योंकि उसने हमारी बातोंका १५ बहुत बिरोध किया है। बिचारासनके सन्मुख मेरे पहिले १६ खड़े होनेमें कोई मेरी ओर नहीं खड़ा हुआ, हां, सब मुझको छोड़ गया; मेरा प्रार्थना यही है कि इसका लेखा उनसे नहीं लिया जाय; परंतु प्रभु जो है उसीने मेरी ओर खड़ा हो मुझको १७ ऐसी सामर्थ दिई कि मेरे द्वारासे सुसमाचारकी बात सत दिखाई गई और सब अन्यदेशी लोग उसे सुनी; मैं भी सिंहके मुखसे (अर्थात कैसर राजाके हाथसे) बच गया। और १८ प्रभु मुझको सब बुरे कर्मसे छुड़ाके अपने स्वर्गी राजमें पहुंचा देगा; उसकी महिमा सदा प्रकाशित होवे। आमीन।

नमस्कार जताना।

प्रिस्किल्लको और आकुलाको और अनीसिफरके घरानेको १९ नमस्कार कह। इरास्त जो है सो करिंथ नगरमें रहता है; २० त्रफिमको मैंने मीलित नगरमें बीमार छोड़ा। जाड़ेसे २१ पहिले यहां आनेका जतन कर। उबल और पदी और लीन और क्लौदिया और सब भाई तुझको नमस्कार कहते हैं।

२२ प्रभु यीशु ख्रीष्ट तेरे संग रहे। तुमपर अनुग्रह होवे। आमीन।

तीत पर पत्र।

१ पहिला अध्याय।

मंगलाचरण।

१ पौल जो ईश्वरका दास और यीशु ख्रीष्टका प्रेरित है इसलिये कि ईश्वरके प्यारे लोगोंके धर्मकी बात फैल जाय और २ ईश्वरकी सेवाकी उस सत बात मानी जाय, जिससे उस अनंत जीवनकी आशा होती है, जिसकी प्रतिज्ञा, ईश्वरने, ३ जो झूठा नहीं है, पुराने समयोंमें किई, और अपने समयमें उस प्रचारसे प्रगट किई जो हमारे बचानेहारे ईश्वरकी ४ आज्ञाके अनुसार मुझको सौंपी गई है, तीतको, जो ख्रीष्टानोंके धर्ममें सच्चा पुत्र है, नमस्कार कहता है। हमारे पिता ईश्वर और बचानेहारे प्रभु यीशु ख्रीष्टसे अनुग्रह, दया, और आराम दिये जावें।

तीतका क्रीति उपद्वीपमें रहनेका अभिप्राय, और उत्तम उपदेशकोंके गुणका निर्णय औ दुष्ट उपदेशकोंका निर्णय।

५ मैंने तुझे क्रीती उपद्वीपमें रख छोड़ा इसलिये कि तू उन कर्मोंको पूरे करे जो बननेपर ऊये थे, और कि तू मेरी आज्ञाके अनुसार, नगर नगरमें मंडलाध्यक्षोंको ठहरावे। ६ चाहिये कि वही जो मंडलाध्यक्षोंके कर्मके जोग है सो निर्दोष होवे, और केवल एक स्त्रीका स्वामी होवे और उसके संतान बिश्वासी, और कुकर्म करनेसे और दंगा कर- ७ नेसे दोष रहित होवें। अवश्य भी है कि मंडलाध्यक्ष जो है सो ईश्वरका भंडारा सा हो निर्दोषी होवे, और अपना स्वार्थी न होवे, और क्रोधी न होवे, और मतवाला न होवे

और मरखाहा न होवे. और लालची न होवे, परंतु अति- ८
थियोंका पालक होवे, और सत लोगोंका प्रेमी होवे, और
सुज्ञानी होवे, और न्यायी होवे, और पवित्र होवे, और
संजमी होवे, और सच्चाईका पक्का सिखावनेहारा होवे, ९
इसलिये कि वह चोखी बात करके उपदेश दे सके और १०
विरुद्धोंको पछाड़ सके। बहुत हैं, विशेष करके खतनः हुये
लोगोंके बीचमें, जो दंगा करनेहारे और बकवादी और
छली है, जिनके मुख बंद करने आवश्य होता है। वे लोभके ११
मारे अनुचित बातें सिखाते हुये घराने घरानेको बिगाड़ते
हैं। अपने कवियोंमेंसे एकने यह कहा कि क्रीती उपद्वीपके १२
रहनेहारे जो हैं सो नित्य नित्य झूठ बोलते हैं, बनैले
पशु से हैं, और बड़े पेटू हैं। यही साक्षी सत हैं; इस १३
कारणसे तू उनको सख़्तीसे धमका इसलिये कि वे धर्ममें
सीधे होवें, और कि यिहूदीय कहानियोंपर और उन १४
मनुष्योंकी आज्ञाओंपर अपने मन न लगावें जो सच्चाईसे
फिर गये हैं। सुद्ध लोगोंको सब कुछ सुद्ध हैं, परंतु अपवित्र १५
और अविश्वासी लोगोंको कुछ सुद्ध नहीं है, हां, उनके
हृदय और मन अशुचि है; वे कहते हैं कि हम ईश्वरको १६
जानते हैं, परंतु वे घिनित और आज्ञा भंग करनेहारे और
हरएक अच्छे कर्मके बिषयमें निकम्मे हो अपने कर्मोंसे ईश्वर-
को तुच्छ करते हैं।

२ दूसरा अध्याय।

बूढ़े औ युवा औ दासोंको किस रीतिसे उपदेश देना होता है
उसका निर्णय।

परंतु तू वे बातें कह जो अच्छी सिक्षाके जोग हैं, अर्थात १
कि बूढ़े मनुष्य जो हैं सो अचेत, और गंभीर, और सुज्ञानी २
होवें, और बिश्वास और प्रेम और धीरजताके बिषयमें
स्थिर होवें; और कि बूढ़ी स्त्री जो हैं सो इसी प्रकार भी ३
बोलचालमें साध होवें; न दोष लगानेहारी, और न बहुत

मदिरा पीनेहारी होवें, परंतु अच्छी बातोंकी सिखावनेहारी
४ होवें इसलिये कि वे जवान स्त्रीयोंको यह सिखावें कि अपने
अपने स्वामीको और अपने अपने बालकोंको प्यार करें,
५ और संजमी होवें, और सुद्ध होवें, और गृहिणी होवें,
और शीलवान होवें, और अपने अपने स्वामीके बशमें रहें
६ इसलिये कि ईश्वरकी बात निंदित नहीं किई जावे। इसी
७ प्रकारसे भी जवानोंको उपदेश दे कि वे संजमी होवें। सब
बातोंमें अपनेको सत कामोंका नमुना सा दिखला; और सच्चाईके
८ बिषयमें अपनेको सच्चा, और गंभीर, और सरल, और ऐसी
बात बोलनेहारा दिखला, जिसपर दोष नहीं लग जा
सकता है, इसलिये कि बिरोधी जो हैं सो तुझपर दोष न लग
९ सकनेसे लज्जित होवें। दासोंको उपदेश दे कि अपने स्वामीयोंके
१० बशमें रहें, और न ढीठ हो, और न चोरी कर, उन्हें सब
बातोंमें प्रसन्न करें, हां, कि सब प्रकारकी सचौटी करें इस-
लिये कि हमारे बचानेहारे ईश्वरकी शिक्षा भली दिखाई
देवे।

सुसमाचारका अभिप्राय।

११ बचानेहारे ईश्वरका अनुग्रह जो है सो सब प्रकारके
१२ मनुष्योंको प्रगट हो हमको यह सिखाता है अर्थात कि हम
अधर्म और संसारिक अभिलाषोंको दूर करके संजमी, और
१३ सीधे, और धर्मी, जगतमें रहें, और कि हम अपने महान
ईश्वर बचानेहारे यीशु खीष्टके प्रगट होनेकी आनंदित आशा
१४ रखें जिसने अपनेको हमारी सन्ती दिई इसलिये कि उसने
हमें कुकर्मसे छुड़ाके सुद्ध करें कि हम उसके प्यारे लोग
१५ होवें और सत्य कर्म करते रहें। येही बातें कहके उप-
देश दे और साहस करके डांट दे। किसीको न दे कि तुझको
तुच्छ करे।

---

३ तीसरा अध्याय।

किस प्रकारसे उपदेश देना होता है उसका निर्णय।

लोगोंको चिता दे कि वे राजाओं और प्रधानोंके बशमें १ रहते ऊये माने; कि सब प्रकारके सत्य कर्म करनेको तैयार हो रहें; कि निंदा न करें; कि मिलनसार होवें; कि नरम २ होवें; और कि सब मनुष्योंपर सब प्रकारकी कोमलता करें। हम लोग भी आगे निर्बुद्धी थे, और आज्ञा भंग ३ करनेहारे थे, और भूलेभटके थे, और नाना प्रकारके सुख बिलासके अभिलाषोंके दास थे, और डाह और हिस्का करके चलते थे, और घिनौने थे, और एक दूसरेसे बैर करते थे; परंतु हमारे बचानेहारे ईश्वरकी दया और अनुग्रह मनुष्योंपर ४ प्रगट होनेपर उसने हमको बचाया, न हमारे पुण्यके द्वारासे, ५ परंतु अपनी दयाके अनुसार, नये जनमके धोनेके द्वारासे, अर्थात उस नये करनेके द्वारासे, जो उस पवित्र आत्मासे होता है जो उसने, हमारे बचानेहारे यीशु खीष्टके द्वारासे, ६ हमपर बऊताईसे ढाल दिया इसलिये कि हम उसके अनु- ७ ग्रहसे पुण्यवान गणित होके अनंत जीवनकी आशाके अधि- कारी होवें। यही बात सत है; और मैं चाहता हूं कि ८ तू येही बातें नित्य नित्य सुना दे इसलिये कि वे जो ईश्वर पर बिश्वास करते हैं सो सत्य कर्म करनेका जतन करते रहें। येही बातें जो हैं सो मनुष्योंके लिये भली और फलदा- यक हैं। परंतु ओछी बातोंसे और बंशावलियोंसे और झगड़ा- ९ ओंसे और व्यवस्थाके बिषयमें बिबादोंसे परे रह क्योंकि वे निर्लाभ और निकम्मे हैं। वही मनुष्य जो धर्मभ्रष्ट है १० सो नष्ट होनेहार है, और अपनेसे दोषी होके पाप करता है ११ यही जानके उसे दो बार चिता देके बाहिर कर।

तीत पर पौलिका बिनय करना औ पत्रकी समाप्ति।

तेरे निकट अर्तिमा अथवा तूखिक भाईके मेरे भेजनेपर १२ मेरे निकट नीकपलि नगरमें आनेका जलद जतन कर; मैंने

१३ ठहराया है कि वहांही जाड़ा काटूं। व्यवस्थापक ज़ीना भाई और अपल्लो भाईको ऐसा भेज दे कि उनको किसी
१४ वस्तुकी कुछ कमती न होवे। चाहिये कि हमारे लोग सीखें कि प्रयोजनके लिये अच्छे कर्म करें इसलिये कि वे निष्फल न
१५ होवें। सब जो मेरे संग हैं सो तुझको नमस्कार कहते हैं। उन सबोंको नमस्कार कह जो खीष्टके धर्मके लिये हमको प्यार करते हैं। तुम सबोंपर अनुग्रह होवे। आमीन।

फिलिमोन्को पत्र

१ पहिला अध्याय

मंगलाचरण।

१ पौल, जो यीशु खीष्टका बन्धुआ है, और तीमथिय भाई
२ जो है, सो हमारे प्रिय सहायक फिलिमोनको, और प्रिय अफियाको, और हमारे संगी सिपाही अर्खिप्पको, और फिलिमोनके घरकी रहनेहारी मंडलीको नमस्कार कहते हैं।
३ हमारे पिता ईश्वरसे और प्रभु यीशु खीष्टसे तुमको अनुग्रह और आराम दिये जावें।

फिलिमोनका बिश्वास औ प्रेमसे पौलका आनंदित होना।

४ मैं तेरे बिश्वासकी बात जो प्रभु यीशुपर है, और तेरे
५ प्रेम की बात जो पबित्र लोगोंपर है, सुनके अपने ईश्वरको धन्यबाद करता हूं, और तेरा स्मरण करके यही प्रार्थना
६ करता रहता हूं कि वही दानशीलता जो तेरे बिश्वासका फल है सो ऐसा करावे कि लोग कहेंगे कि हम सबोंके भले कर्म जो हैं सो खीष्ट यीशुपर बिश्वास करनेका गुण
७ हैं। हे भाई, हम तेरे प्रेमके कारणसे बड़े आनंदित और शांत हैं क्योंकि पबित्र लोग जो हैं सो तेरे द्वारासे आराम पाते हैं।

अनीसीमको क्षमा करनेको औ भाईके तुल्य ग्राह्य करनेको फिलिमोनको पौलका निवेदन।

मैंने तो ख्रीष्टसे अधिकार पाया है कि जो कुछ कि ८ तुझे करना उचित होता है सो करनेकी आज्ञा दे सकता हूं; परंतु मैं आज्ञा नहीं करता हूं; मैं जो बुड्ढा पौल और ९ अब यीशु ख्रीष्टका बन्धुआ हूं प्रेमसे बिंती करता हूं; हां, मैं अपने पुत्र अनीसिमके बिषयमें, जिसने कैदखानेमें १० मेरे द्वारासे नया जनम पाया है, तुझसे बिंती करता हूं। वह आगे तेरे संग हो कुछ कामका नहीं था परंतु अब तुझको ११ और मुझको बड़े कामका ऊआ है। मैंने तेरे निकट उसे भेजा १२ है; उसे मेरे प्राण सा जानके ग्रहण कीजियो। मैं तो अपने १३ निकट उसे रखा चाहता था इसलिये कि वह तेरी सन्ती मेरी टहल करे क्योंकि मैं अब सुसमाचारके लिये कैदखानेमें हूं; परंतु बिना तेरी इच्छासे मैंने कुछ करने न चाहा १४ इसलिये कि तेरी दानशीलता जो है सो बेगारीसे नहीं परंतु सुखभावसे दिखाई देवे। क्या जाने वह तुझसे कुछ देर १५ तक अलग ऊआ इसलिये कि तू उसे फिर पाके अपने निकट सदा रखे। सो तू उसे दासकी नाईं नहीं परंतु दाससे १६ बड़ा, हां, प्रिय भाईकी नाईं उसे ग्रहण कीजियो। जो वह मेरा प्रिय भाई ऊआ है तो कितने अधिक, शरीरके और प्रभुके अनुसार, तेरा प्रिय भाई ऊआ है। सो तो जो तू मुझे १७ सखा जाने तो उसे मुझ सा ग्रहण कीजियो। जो उसने १८ तेरा कुछ बिगाड़ा है अथवा कुछ धरावता है तो उसे मेरे नामपर लिख लीजियो; मैं भर दूंगा; देखो, मुझ पौलने १९ अपने हाथसे लिख दिया है। मैं तुझे नहीं कहता हूं कि तू अपना प्राण मेरा धराता है, (परंतु मैं यह कहता हूं) कि हे भाई, मुझको, प्रभुके लिये, यह सूद दीजियो, अर्थात २० कि प्रभुके लिये मेरे मनको संतुष्ट कर। मैं भरोसा रखता हूं २१ कि जो कुछ कि मैंने तुझको लिखा है सो तू करेगा, हां, मैं जानता हूं कि तू अधिक करेगा। और भी मेरे लिये २२

रहनेके स्थान तैयार कीजियो क्योंकि मेरा भरोसा यही है कि मैं तुम्हारे प्रार्थनाके द्वारासे छुट्टी पायके तुमको दिया
२३ जाऊंगा। इपाफ्रा, जो ख्रीष्ट यीशुके लिये मेरा संगी बन्धुआ
२४ है, और मार्क, और अरिस्तार्ख, और दीमा, और लूक भाई, जो मेरे सहायक हैं, तुझको नमस्कार कहते हैं।
२५ हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टका अनुग्रह जो है सो तुम्हारे संग होवे। आमीन।

इब्रियोंको पत्र।

१ पहिला अध्याय।

ईश्वरके निकटसे ख्रीष्टका आना, औ गुण औ कर्ममें दिव्य दूतोंसे उसका श्रेष्ठ होना।

१ ईश्वरने, जिसने पुराने समयोंमें भविष्यद्वक्ताओंके द्वारासे,
२ हमारे पित्रोंको बात करके करके नाना प्रकारसे कहा, इन पीछले दिनोंमें हमोंसे भी, अपने पुत्रके द्वारासे, कहा है, जिसे उसने सबोंका अधिकार ठहराया है, और जिसके
३ द्वारासे उसने सब वस्तुओंको बनाया है। वही (अर्थात् पुत्र) जो है, सोई ईश्वरकी महिमाका तेज, और उसका ठीक स्वरूप, और अपनी सामर्थसे सब वस्तुओंका स्थिर करनेहारा है। वह हमारे पापोंके कारण अपनेको बलिदान करके महा
४ ईश्वरकी दहिनी ओर चढ़ बैठा। जैसाकि वह स्वर्गी दूतोंसे बड़ा है तैसा उसने एक नाम पाया है जो उन्होंके नामसे
५ बड़ा है क्योंकि ईश्वरने किसी दूतसे यही कधी नहीं कहा कि तू मेरा पुत्र है, मैंने आजही तुझे उठाया है, मैं उसका
६ पिता हूंगा, और वह मेरा पुत्र होगा; परंतु संसारमें अपने पहिलौटेके लानेपर ईश्वरने यह कहा कि चाहिये कि ईश्वर
७ के सब दूत उसकी पूजा करें। दूतोंके विषयमें यही कहा

गया है कि ईश्वर अपने दूतोंको पवन सी, और अपने सेवकोंको आगकी लौ सी करता है; परंतु पुत्रके विषयमें यही कहा ८ गया है कि हे ईश्वर, तेरा राज सिंहासन जो है सो सनातन है, तेरा राजदंड जो है सो धर्मका दंड है, तू धर्मको प्यार ९ करता है, और पापसे घिनाता है, इसलिये हे ईश्वर, तेरा ईश्वरने तुझे तेरे संगीयोंको बड़ा ठहरायके तुझपर आनंद का तेल ढाल दिया है; और भी यही कहा गया है कि हे १० प्रभु, तूने आरम्भमें पृथ्वीकी नेउं डाला, और आकाशमंडल जो है सो तेरे हाथका काम है, वे नष्ट होवेंगे, परंतु तू नित्य ११ नित्य रहता है, हां वे सब बस्त्रकी नाईं पुराने होवेंगे, तू १२ उन्हें चादरकी नाईं लपेटेगा और वे बदल जायेंगे, परंतु तूही नित्य है, और तेरे बरस न घटेंगे। और भी वही बात जो १३ ईश्वरने स्वर्गी दूतोंसे कधी नहीं कही सोई उसने पुत्रसे कही, अर्थात्, कि जबतक मैं तेरे शत्रुओंको पांवओंकी चौकी न करूं तबतक तू मेरी दहिनी ओर बैठ। दूत लोग जो हैं १४ क्या वे सब सेवाकारी आत्मा नहीं हैं जो भेजे जाते हैं कि वे उन्होंकी सहायता करें जो मुक्ति पावेंगे?।

२ दूसरा अध्याय।

खीष्टका हमारे त्राणके लिये अवतीर्ण होना, इसलिये उसकी आज्ञा मानने की आवश्यकता।

सो चाहिये कि हम उन बातोंपर, जो हमने सुनीं हैं, १ अच्छे प्रकारसे मन लगावें, न हो कि हम उन्हें बहने देवें। जो वही बात, जो दूतोंके द्वारासे कही गई, अटल ऊई, और २ हरएक अपराधीको और आज्ञा भंग करनेहारोंको ठीक दंड मिला तो हम क्योंकर बच जायेंगे जो हम उस बड़े त्राण ३ की बातकी चिंता न करें जो पहिलेमें प्रभुसे कही गई और पीछे उसके सुननेहारोंसे हमारे बीचमें सच ठहराई गई? हां, ईश्वर आपहीने, अपने इच्छाके अनुसार, लक्षण और ४ अद्भुत कर्म और आश्चर्य क्रिया करके और पवित्र आत्माके

५ दान देके उन्होंकी बात सच ठहराई*। ईश्वरने उस संसारको, जो आनेहारा था, और जिसके बिषयमें हम अब बोलते हैं
६ स्वर्गी दूतोंके बशमें नहीं किया है; परंतु किसीने कहीं यह कहके साची दिई है कि मनुष्य कौन है कि तू उसका स्मरण करता है? अथवा मनुष्यका संतान कौन है कि तू उसकी चिंता
७ करता है? तूने स्वर्गी दूतोंसे उसको थोड़े दिन छोटा किया, तूने अपने हाथोंके कामोंपर उसको प्रधान किया, और तूने
८ उसके पांवोंके नीचे सब कुछ धरा। ईश्वरने, उसके बशमें सब कुछ रखनेसे कुछ नहीं छोड़ा है जो उसके बशमें नहीं रखा जायेगा; परंतु अबतक हम सब कुछ उसके बशमें नहीं
९ देखते हैं तौभी हम देखते हैं कि यीशुने, जो स्वर्गी दूतोंसे थोड़े दिन छोटा किया गया, महिमा और आदरका मुकुट पाया है क्योंकि उसने मृत्यु भोगा है, हां, उसने ईश्वरके
१० अनुग्रहसे हरएक मनुष्यके लिये मृत्यु भोगा है। सो यही उचित था कि वही जिसके लिये सब कुछ है, और जिसके द्वारासे सब कुछ ज्ञुआ है, त्राण देनेहारे प्रधानको ऐसा बड़ा ठहरावे क्योंकि उसने, स्वर्गके बिभवमें बज्जत पुत्रोंके लानेमें,
११ बड़ा दुःख उठाया। वही जो पबित्र करता है, और वेही जो पबित्र किये जाते हैं, सोई दोनों एक से हैं; इस कारणसे
१२ वह उन्हें भाई कहनेसे लज्जित नहीं होता है; वह धर्मपुस्तकमें यह कहता है कि मैं अपने भाईयोंको तेरे नामका प्रचार
१३ करूंगा, मैं मंडलीके बीचमें तेरी स्तुति गाऊंगा, मैं तुझपर भरोसा करूंगा, मुझे और उन बालकोंको देखो, जो ईश्वरने
१४ मुझको दिया है। सो जैसेकि बालक शरीरमें रहते हैं तैसा यीशुने शरीरमें जन्म लिया इसलिये कि वह मरनेके द्वारासे
१५ शैतानको, जो मरवाने सकता था, तुच्छ करे और उन्हें छुड़ावे जो, मृत्युके डरके मारे, जीवन भर बन्धुआ सा रहते
१६ थे। वह (अर्थात् यीशु) दूतोंकी सहायता नहीं करता है, वह
१७ इब्राहीमके बंशकी सहायता करता है। सो अवश्य था कि वह, सब बातोंके बिषयमें, अपने भाईयोंकी नाईं हो जावे इस

लिये कि वह, उन बातोंकी बिषयमें जो ईश्वरकी है, दयावंत और सच्चा प्रधान याजक होवे अर्थात कि लोगोंके पापोंके लिये प्रायश्चित्त करे। जिन बातोंसे वह परिच्छित हो दुःख उठाया, वह उन्होंकी, जो उन बातोंसे परिच्छित हुये हैं, सहायता कर सकता है।

३ तीसरा अध्याय।

मूसासे ख्रीष्टकी श्रेष्ठता।

हे पवित्र भाईयो, जो स्वर्गी बुलाहटसे बुलाये गये हो, १ उसी प्रेरित और प्रधान याजककी, जो हमने मान लिया है, अर्थात ख्रीष्ट यीशुकी चिंता करके देख लीजियो। जैसा २ मूसा ईश्वरके सारे घरमें सच्चा था तैसा यीशु अपने ठहरानेहारेके निकट सच्चा था। वह मूसासे अधिक आदर पानेके ३ जोग था क्योंकि वही जो घरका बनानेहारा है सोई घरसे अधिक आदर पानेके जोग है। हर घर जो है सो किसीसे ४ बनाया गया है, परंतु वही, जिसने सब कुछ बनाया है, सोई ईश्वर है। मूसा सेवक हो उसके सारे घरमें सच्चा था इस ५ लिये कि वह उन बातोंकी साक्षी देवे जिनका बर्णन होनहार था परंतु ख्रीष्ट जो है सो पुत्र हो अपने घरमें सच्चा था। ६ जो हम अंततक भरोसा करते, हां, आनंदित आशा रखते रहें तो हम उसीका घर हैं।

इस्रायेल लोगोंसे उसपर अबिश्वासकारियोंकी अधिक दंडनीयता।

पवित्र आत्मा यों कहता है कि जो तुम आजही उसकी ७ बात सुनो तो जैसे कि तुम्हारे पित्रोंने जंगलमें हो रिसके दिन ८ में अर्थात् परीक्षाके दिनमें किया तैसे मत करो, अर्थात् अपने अपने मन सख्त न करो; वे चालीस बरस लों मेरे कर्मोंको ९ देखते रहें तौभी उन्होंने मेरी परीक्षा करके सिर उठाया; सो मैंने उन्होंसे क्रोध करके कहा कि यही लोग अपने अपने १० मनमें सदा भूलते और मेरे मार्गपर नहीं चलते हैं इसलिये ११ मैंने क्रोध करके किरिया खाई कि वेही मेरे आरामके स्थानमें

१२ पैठने नहीं पावेंगे। सो, हे भाइयो, सावधान होओ, न होय कि तुम्होंमेंसे किसीका मन ऐसा दुष्ट और अबिश्वासी
१३ होय कि अमर ईश्वरसे फिर जावें; परंतु आजही होतेही, एक दूसरेको चिताओ, न होय कि तुम्होंमेंसे कोई पापकी
१४ ठगाईसे कठीन हो जावे। जो हम अंततक ऐसे भरोसा दृढ़ता से करते रहें जैसेकि हमने पहिले किया, तो हम खीष्टके
१५ धर्मके फलके भागी होंगे। इसबातके अनुसार, अर्थात् कि जो तुम आजहीके दिन, उसीकी बात सुनो तो अपने अपने
१६ मन सख्त न करो जैसे उन्होंने रिषके दिनमें किया,—वे लोग कौन थे जिन्होंने सुनके सिर उठाया? क्या सब वेही नहीं हैं
१७ जो, मूसाकी अगवाईसे, मिसर देशमेंसे निकले?। वे कौन थे जिन्होंसे ईश्वरने चालीस बरस लों अप्रसन्न हो रहा? क्या वेही नहीं हैं जिन्होंने पाप किया और जिनकी लोथें जंगलमें
१८ पड़ें?। और किनसे उसने किरिया खायके कहा कि तुम मेरे आरामके स्थानमें पैठने नहीं पाओगे? क्या वेही नहीं हैं
१९ जिन्होंने माना नहीं?। सो हम देखते हैं कि वे अबिश्वासके कारणसे पैठने न सकते थे।

४ चौथा अध्याय।

बिश्वाससे मनका बिश्राम पाना।

१ चाहिये कि हम डरें, न होय कि ईश्वरके आरामके स्थानमें पैठनेके पानेकी प्रतिज्ञा पा करके तुम्होंमेंसे कोई उसमें पैठने
२ न पावे। हमने भली बस्तुओंकी प्रतिज्ञा पाई जैसी यिखायली लोगोंने पाई; परंतु वही बात जो उन्होंने सुनी सोई उनको फलदायक नहीं हुई क्योंकि उन्होंने उसको सच न जानके
३ सुनी। हम जो बिश्वास करते हैं सो आरामके स्थानमें पैठने पावेंगे; परंतु अबिश्वासी लोग जो हैं सो पैठने नहीं पावेंगे क्योंकि ईश्वरने कहा है कि मैंने अपने क्रोधमें किरिया खाई
४ है कि वे मेरे आरामके स्थानमें पैठने नहीं पावेंगे। ईश्वरने सब बस्तुओंको सिरजकर आराम लिया; इसलिये सातवें

दिनके बिषयमें यह लिखा गया है कि ईश्वरने अपने सब कर्म करके आराम लिया; और यह बात, अर्थात्, कि अबिश्वासी ५ लोग जो हैं सो मेरे आरामके स्थानमें पैठने नहीं पावेंगे। सो आरामके स्थानमें किसी किसीको पैठना होगा; परंतु जो ६ वे, जिन्होंने आगे प्रतिज्ञा पाई अबिश्वासके कारणसे उसमें नहीं पैठे तो उनको, जो बिश्वास करते हैं, उसमें पैठने होगा। फिर, ईश्वरने दायूदके भजनोंकी पोथीमें किसी दिनका ७ ठिकाना करके यह कहता है कि जो तुम आजही उसकी बात सुनो तो अपने अपने मनको सख्त न करो। देखो, कनानी देशमें यिहूदी लोगोंके पैठनेके बहुत बरसके पीछे दायूद था, तौभी ईश्वरने उसके द्वारासे आजही बात कहा। जो यिहोशूयने यिहूदी लोगोंको आराम दिया था तो ८ ईश्वरने इसके पीछे दूसरे दिनके बिषयमें कुछ न कहता। इन ९ सब बातोंसे जाना जाता है कि ईश्वरके लोगोंके लिये आराम का स्थान है; और कि वही जो आरामके स्थानमें पैठनेहारा १० होय सोई अपने काम करके आराम पावेगा जैसा ईश्वरने अपने काम करके आराम लिया। सो चाहिये कि हम ११ आरामके स्थानमें पैठनेका जतन करें न होय कि कोई, यिहूदी लोगोंके समान, अबिश्वासके कारणसे मारा पड़े।

ईश्वरके वाक्यकी शक्ति।

ईश्वरकी बात जो है सो जीती सी और सामर्थी सी है १२ और बड़ा चोखा दो धारा खड्ग सो है; वह शरीरसे आत्मा को, और गांठसे गांठको, और हड्डीसे गूदेको अलग करनेहारी सी है; और वह मनकी अभिलाषों और चिंतोंकी जांचनेहारी है; कोई प्राणी नहीं है जो उससे छिपा है, हां, १३ सब कुछ जो है सो उसीकी दृष्टिमें नंगा और खुला है जिस को हमसे लेखा देना होगा।

खीष्टके हेतसे ईश्वरके निकट जाना।

हमारा एक प्रधान याजक है जो स्वर्गमें होके चला गया १४ है, अर्थात्, यीशु जो ईश्वरका पुत्र है; सो चाहिये कि हम

१५ अपने धर्मको दृढ़तासे रखें। हमारा प्रधान याजक ऐसा है
कि वह हम दोषीयोंपर दया करता है क्योंकि वह आपही
१६ हमारे समान, सब प्रकारमें, पापको छोड़, परखा गया। सो
चाहिये कि हम निर्भय हो अनुग्रहके सिंहासनके निकट
आवें इसलिये कि हम दया पावें और वही अनुग्रह मिले
जिससे, दुःसमयमें, सहायता होवे।

५ पांचवां अध्याय।

खीष्टका महापुरोहित होना।

१ हर एक प्रधान याजक जो मनुष्योंमेंसे लिया जाता है सो
ईश्वरकी सेवा करनेको ठहराया जाता है इसलिये कि
२ मनुष्योंके पापोंके कारण नैवेद्यों और बलिदानोंको चढ़ावे। वह
अज्ञानों और भटके ऊयओं पर दया कर सकता है क्योंकि
३ वह आपही दोषी है। इसके लिये अवश्य है कि वह अपने
पापोंके कारण बलिदान चढ़ावे जैसे लोगोंके पापोंके कारण
बलिदान चढ़ाता है।

परमेश्वरसे उसका महापुरोहित पदमें नियुक्त होना।

४ जैसाकि कोई मनुष्य आपही प्रधान याजकका पद नहीं ले
सकता है, उसीको छोड़, जो हारोणकी नाईं ईश्वरसे बुलाया
५ जाता है तैसा खीष्ट जो है सो आपहीने प्रधान याजकका पद
नहीं लिया परंतु ईश्वरने उसको पद देके कहा कि तू मेरा
६ पुत्र है, आजही मैंने तुझे उठाया है; और भी दूसरे स्थलमें
यह कहा है कि तू मिल्किसिदिककी रीतिके अनुसार, नित्य
७ याजक है। यीशु अपने अवतारके दिनोंमें उंचे शब्दसे और
आंसूओंसे उसके सन्मुख जो उसे मृत्युसे बचा सकता था, बिंती
८ और प्रार्थना करके, डरसे छुड़ाया गया। वह ईश्वरका पुत्र
था तौभी उसने, उन दुःखोंसे, जो उसने उठाया, सीखा कि
९ आज्ञा मान्ना कैसा है। सो सिद्ध होके वह अपने सब मान्ने-
१० हारोंका अनंत त्राण करनेहारा ऊआ और ईश्वरसे, मिल्कि-
सिदिक की रीतिके अनुसार, प्रधान याजक पुकारा गया।

दुर्बोधलोगोंकी अज्ञानताके लिये अनुयोग कर्ना।

इस मिल्किसिदिकके विषयमें हमारी बहुत बातें हैं, ११ जिनका वर्णन, तुम्हारे नासमझ मनके कारणसे, बड़ा कठिन है। जो तुम लोग अपने मन लगाया था तो अब सिक्षक १२ होते परंतु आवश्यक होता है कि कोई तुम्हें ईश्वरकी पोथीयों की सहज बातें फिर सिखाता, हां, आवश्यक होता है कि कोई तुम्हें दूध पिलाता, न कि रोटी खिलाता। जिसको दूध १३ पीना आवश्यक होता है सोई धर्मकी बातोंमें निपुण नहीं है, हां बालक सा है; परंतु रोटी जो है सो उन स्याने लोगोंके १४ लिये है जिनके मन, अभ्यासके कारणसे, जानता है कि भला क्या है और बुरा क्या है।

६ छठवां अध्याय।

धर्मके विषयमें अधिक अभ्यास कर्नेका बिनय।

चाहिये कि हम खीष्टकी सहज बातें अब रहने दें और १ उन बातोंके बिषयमें कुछ कहें जिनके द्वारासे स्याने से हो जावें, अर्थात्, चाहिये कि हम मृत्यु जोग कर्मोंसे मन फिरानेकी, और ईश्वरपर बिश्वास करनेकी, और डुबकीयोंके दिखावनेकी, २ और हाथोंके रखनेकी, और मृतकोंकी जो उठानेकी, और अटल बिचार करनेके दिनकी बातें, जो धर्मकी नेउं सी हैं कुछ न कहें। जो ईश्वर ऐसा करने दे तो हम ऐसा अब ३ करेंगे।

धर्म छोड़नेका निषेध।

जो कोई एक बार उजाला पावें और स्वर्गी दानके रसका ४ स्वाद पावें और पबित्र आत्माका भागी होवें और ईश्वरका ५ सुबचन और आवनेहारे संसारके सामर्थके स्वाद पावें, और इस पीछे धर्म भ्रष्ट होवें तो अनहोना है कि वे ऐसे नये हो ६ जावें कि उनके मन. फिराये जायें; उन्होंने क्रूशपर ईश्वरके पुत्रके मार डालनेहारे से हो उसको प्रगटमें लाज दिलाया है। वही भूमि जो उस मेंहको जो उसपर बारंबार बरसता ७

हैं, पीती है, और किसानोंके लिये अच्छा फल उपजावती है,
८ सोई ईश्वरसे आशीर्बाद पाती है, परंतु वही भूमि जो कांटे
ऊंटकटारे उपजावती है सोई अग्राह्य और स्रापित होके
अंतमें जल जायगी।

धर्ममें स्थिर होनेका बिनय, और धर्मका फल देनेमें ईश्वरका अंगीकार
और सपथ कर्ना।

९ हे प्यारो, सोई हम कहते हैं तौभी हम तुम्हारे बिषयमें
भरोसा रखते हैं कि तुम ऐसे लोगोंके समान नहीं होओगे;
१० परंतु त्राण पानेहारे होओगे। ईश्वर जो है सो ऐसा अन्यायी
नहीं है कि तुम्हारे कामोंको और प्रेमके उस परिश्रमको
भूलेगा जो तुमने उसके नामपर पवित्र लोगोंकी सेवा करनेमें
११ दिखलाया है और अब दिखलाते हो। हम बऊत चाहते
हैं कि तुम्होंमेंसे हरएक ऐसा चालाक हो रहे इसलिये कि
१२ अंततक पूरी आशा रखनेहारे होते होते रहो, हां, कि तुम
ढीले न हो उन्होंके पीछे चलनेहारे होओ जो बिश्वास और
धीरजताके द्वारासे उन भली बस्तुओंके पानेहारे ऊये हैं
१३ जिनकी प्रतिज्ञा दिई गई; क्योंकि ईश्वरने इब्राहीमको बाचा
देनेमें अपने नामसे और बड़ा नाम न पायके अपने नाम लेके
१४ यह किरिया खाई अर्थात् कि मैं तुझे आशीर्बाद करके तेरा
१५ बंश बऊतसा करूंगा। सो इब्राहीमने कुछ देरी करके बाचा
१६ का फल पाया। मनुष्य जो हैं सो बड़ा नाम लेके किरिया
खाते हैं और बात ठहरावनेको किरिया खानेके पीछे उनका
१७ बिबाद जाता रहता है। सो ईश्वरने बाचाके अधिकारीयोंको
अपनी मनसाकी स्थिरता बऊत दिखाने चाहके किरिया खाई
१८ इसलिये कि दो अटल बातोंसे, जिनसे ईश्वर झूठ बोलने न
सकता था, हमही, जो उस आसा लेनेको, जो हमारे सन्मुख
१९ है, भागते हैं, बड़ी शांती पावें। यही हमारी आसा जो है
सो मनका वही सामर्थी और स्थिर लंगर सा है जो स्वर्गी
२० ओटके भीतर जाती है जहां यीशु, जो मिल्कीसिदककी रीति-
के अनुसार प्रधान याजक सदा है, हमारे लिये पैठा है।

७ सातवां अध्याय।

मिल्कीसिदकको नाईं खीष्टका महापुरोहित हाना।

मिल्कीसिदक जो है सो शालम नगरका राजा और महा १
ईश्वरका एक याजक था; जिस समय इब्राहीम, किसी किसी
राजाओंको मार करके फिर चले आता था, उसी समय
मिल्कीसिदकने उसके निकट आयके आशीर्बाद किया और
इब्राहीमने उसीको अपनी सब संपतका दसवां भाग दिया। २
वह पहिले मिल्कीसिदक कहलाता था अर्थात् धर्मराजा;
पीछे शालम राजा कहलाता था अर्थात् शांतिका राजा। न ३
उसका माता पिता और न उसका बंश, न उसके दिनोंकी
आदि और न उसके जीवनकी अंत (जाने जाते हैं); वह
ईश्वरके पुत्रके समान हो नित्य याजक रहता था। सो, ४
देखो, कि यही जन कैसा बड़ा था जिसको हमारे बड़े पिता
इब्राहीमने अपनी संपतका दशवां भाग दिया। वे जो लेवीके ५
बंशमेंसे याजक ठहराये गये हैं सोई व्यवस्थाके अनुसार लोगों
से अर्थात् अपने उन भाईयोंसे, जो इब्राहीमसे निकले हैं,
दशवां भाग लेनेका अधिकार रखते हैं; परंतु यही (अर्थात ६
मिल्कीसिदक) जो लेवीके बंशमेंसे नहीं था, उसीने इब्रा-
हीमसे दसवां भाग लिया, और उसीको, (अर्थात इब्रा-
हीमको) जिससे प्रतिज्ञा किई गई, आशीष दिया। सो ७
निश्चय है कि वही जो छोटा है उसीने बड़ेसे आशीष पाया।
वेही जो मरनेहारे हैं सोई इसी समयमें दसवां भाग लेते हैं ८
परंतु वही, जिसके विषयमें यही कहा जाता है, अर्थात्, कि
वह जीता है, सोई उसी समयमें। यही कह जा सकता है कि ९
लेवी जो दसवां भागका लेनेहारा था सोई आपहीने इब्रा-
हीमके द्वारासे दसवां भाग दे दिया क्योंकि जिस समय मिल्की- १०
सिदकने उसके पिता इब्राहीमसे भेंट किई, उसी समय
लेवी इब्राहीमकी कटीमें था।

हारोणकी नाईं महापुरोहितोंसे उसकी श्रेष्ठता ।

११ सो तो जो वे लाग जो लेवीकी याजकताके बशमें रखे गये, उसके द्वारासे सिद्ध हो सके तो क्या प्रयोजन था कि दूसरा याजक, मिल्कीसिद्दककी रीतिपर, न हारोणकी
१२ रीतिपर, ठहराया जावे? जो याजकता टल गई है तो
१३ आवश्य है कि व्यवस्था भी टल गई है । जिसके बिषयमें ये बातें कहीं जातीं हैं सोई उसी घरानेका है जिसमेंसे
१४ किसीने यज्ञबेदीका कर्म्म कभी नहीं किया क्योंकि यह प्रगट है कि हमारा प्रभु जो है सो यिहूदीके घरानेमेंसे था जिस-
१५ मेंसे मूसाने किसी याजकको नहीं ठहराया । और यह भी अधिक प्रगट है कि मिल्कीसिदककी रीतिपर दूसरा याजक
१६ खड़ा हुआ है, जो संसारिक मतके अनुसार नहीं परंतु सामर्थवान और अनंत जीवन रखते हुये ठहराया गया है
१७ क्योंकि ईश्वरने यह साक्षी दिई है कि तूही जो है सो
१८ मिल्कीसिदककी रीतिपर नित्य याजक है । वही व्यवस्था भी जो अगली थी सोई लाप किई गई है क्योंकि वह दुर्बल
१९ और निष्फल थी; हां, व्यवस्था जो है उसीने किसीको सिद्ध नहीं किया परंतु उस अच्छी आशाके आनेसे, जिसके रखनेसे हम ईश्वरके निकट पहुंचते हैं, हम सिद्ध होते हैं ।
२० किरियासे यीशु जो है सो याजक ठहराया गया परंतु
२१ और मनुष्य जो है सो किरियासे याजक नहीं ठहराये गये ; हां, यीशु उसीकी किरियासे याजक ठहराया गया जिसने उससे कहा कि प्रभुने किरिया खाई है और नहीं पछतावेगा कि तूही
२२ जो है सो मिल्कीसिदककी रीतिपर नित्य याजक है । सो जैसा यीशु इसी रीतिसे और याजकोंसे बड़ा है तैसा वह
२३ उनके नियमसे और अच्छे नियमका बिचवई है । वेही याजक तो बहुतेरे थे क्योंकि मृत्यु जो है उसीने उनको
२४ रहने नहीं दिई परंतु यीशु जो है सो अमर हो याजक
२५ सदातक रहता है । सो वह उन्होंको, जो उसके द्वारासे ईश्वरके निकट आते हैं अंततक बचाने सकता है क्योंकि

वह उनके विषयमें निवेदन करनेको सदा जीता रहता है। हमको ऐसा महायाजक आवश्यक था जो पवित्र है, २७ और निष्कपट है, और पापियोंसे अलग है, और स्वर्गोंके ऊपर ऊंचाया गया है, और उन इस्रायेली महायाजकोंके समान नहीं हैं जो दिन दिन पहिले अपने पापोंके लिये बलि- २८ दान चढ़ाते और पीछे लोगोंके पापोंके लिये बलिदान चढ़ाते रहते हैं; क्योंकि उसने अपनेको बलिदान चढ़ायके लोगोंके लिये एक बार इस कर्मको पूरा किया। व्यवस्था जो है सो २९ असिद्ध मनुष्योंको महायाजक ठहराती है परंतु किरियाकी वही बात जो व्यवस्थाके पीछे कही गई सोई पुत्रको ठहराती है जो सिद्ध सदा रहता है।

८ आठवां अध्याय।

खीष्टके महापुरोहित होनेसे हारोणके महापुरोहितत्वका लोप होना, और सुसमाचारके नये नियमसे पुराने नियमका लोप हो जाना।

इन बातोंमेंसे जो कही गई है यही सार है अर्थात कि १ हमारा एक ऐसा महायाजक है जो स्वर्गोंमें महा ईश्वरके सिंहासनकी दहिनी ओर बैठके उस सत्य तंबूके पवित्र स्थान- २ में सेवा करनेहारा है जो ईश्वरने खड़ा किया है, न मनुष्यने। हर एक महायाजक जो है सो दान और बलिदान ३ चढ़ानेको ठहराया गया है; सो आवश्यक होता है कि यीशुके हाथमें भी चढ़ानेको कुछ होवे। जो यीशु पृथ्वी- ४ पर रहता तो वह याजक नहीं होता क्योंकि याजक तो हैं जो, व्यवस्थाके अनुसार, दान चढ़ाते हैं और उस पवित्र स्थानमें सेवा करते हैं जो स्वर्गी पवित्र स्थानकी समानता और ५ छाया सा है क्योंकि मूसाने पवित्र तंबूके बनानेपर हो ईश्वरसे यही उपदेश पाया अर्थात कि सावधान हो, उस नमूनाके अनुसार, जो तुझको पर्वतपर दिखाया गया, सब कुछ बना। परंतु जैसा हमारा महायाजक और ६ याजकोंके नियमसे उस और अच्छे नियमका बीचवई है

जो और अच्छी प्रतिज्ञाओंपर ठहराया गया है तैसा
७ उसने उन्होंकी सेवासे और अच्छी सेवा पद पाया है। जो
वही नियम जो पहिला था सो कच्चा न होता तो दूसरे
८ नियम करनेका प्रयोजन न रहता। ईश्वर उसे कच्चा बताके
लोगोंसे कहता है कि देखो, दिन आते हैं जिन्होंमें मैं इस्रा-
९ येली बंशसे और यिहूदीय बंशसे नया नियम करूंगा; उस
नियमके समान नहीं जो मैंने उनके पितरोंसे उस दिन
किया जिसमें मैंने उन्हें मिसर देशमेंसे निकालनेको उनका
हाथ पकड़ा; उन्होंने मेरा नियमको न माना, इसलिये मैं
१० उनसे अप्रसन्न हुआ। फिर, प्रभु यह कहता है कि वही
नियम जो मैंने इन दिनोंके पीछे इस्रायेली बंशसे करूंगा
यही है, अर्थात, मैं उनके मनमें अपनी व्यवस्था रखूंगा और
उनके अंतःकरणपर उन्हें लिखूंगा, मैं उनका ईश्वर हूंगा
११ और वे मेरे लोग होंगे, उनमेंसे कोई अपने परोसीको,
और कोई अपने भाईको यह कहके नहीं सिखावेगा कि
प्रभुको जान, क्योंकि वे सब, क्या छोटा क्या बड़ा, मुझे
१२ जानेंगे; मैं भी उनके कुक्रिया क्षमा करके उनके पापों और
१३ उनके अपराधोंका फिर स्मरण न करूंगा। इसी प्रकारसे
ईश्वरने नये नियमकी बात कहके पहिलेको पुराना किया;
इसलिये वही नियम जो पुराना और जीर्ण हुआ है सोई
लोप होनेपर हुआ है।

९ नवां अध्याय।

व्यवस्थाके अनुसारसे बलिदान इत्यादिका बिबरण।

१ सो पहिले नियमके संग पूजा करनेके बिधि और सांसारिक
२ पबित्र स्थान थे; एक तंबू बनाया गया जिसमें दो कोठरी
थीं; पहिली कोठरीमें दीअट, और मेज, और दर्शनकी
रोटीयां थीं; यही कोठरी जो है सो पबित्र स्थान कहलाती
३ है। इस कोठरीकी ओटके पीछे दूसरी कोठरी है जो महा
४ पबित्र स्थान कहलाती है; इसमें सोनेकी धूपदानी थी, और

नियमकी वह संदूक थी, जो चारों ओर सोनेसे मढ़ी गई, और सोनेका घड़ा था जिसमें मान्ना था, (अर्थात् वही खाना जो इस्रायेली लोगोंने जंगलमें खाया,) और हारोणकी फूलती ऊई छड़ी थी, और नियमकी पटियां थीं, और नियमकी संदूकपर तेजोमय किरूबी थे जिनने कल्याासन- ५ पर छाया किया। इन सबोंके बिषयमें अभी बऊत बात कहना आवश्यक नहीं होता है। ये सब तो बनाये गये; तब याजक ६ लोग पहिली कोठरीमें ईश्वरकी सेवा करनेको सर्बदा आते जाते रहे परंतु दूसरी कोठरीमें महायाजक अकेला बरस ७ बरसमें एकबार लोहू लेके गया जो उसने अपनेके और लोगोंके अपराधोंके लिये चढ़ाया। इससे पबित्र आत्माने ८ यही बताया अर्थात कि पहिला तंबू रहतेही महा पबित्र स्थानमें पैठनेका मार्ग खुला नहीं ऊआ। तंबू जो है सो अबके ९ समयतक चिह्न सा रहता है जिसमें दान और बलिदान चढ़ाये जाते हैं जो सेवा करनेहारेके मनको सिद्ध नहीं कर सकते हैं क्योंकि जो, सिद्धि करनेके समयतक ठहराये १० गये हैं, सोई केवल येही हैं, अर्थात, खाने और पीनेकी बस्तु, और नाना डुबकी, और शरीरिक ब्यवहारें।

इन् सबसे खीष्टके बलिदानकी श्रेष्ठता।

परंतु खीष्ट जो है सो अच्छी होनहार बस्तुओंका महा- ११ याजक, उस तंबूके द्वारासे, जो पहिले तंबूसे बड़ा और सिद्ध, और बिन हाथोंसे बनाया ऊआ है अर्थात इसी सृष्टिका नहीं है, आया है, और अपने लोहूके द्वारासे, न बकरों और न १२ बछरोंके द्वारासे, अनंत मुक्ति कराके महा पबित्र स्थानमें एक बार गया है। जो बैलों और बकरोंका लोहू, और १३ बछियाकी राख जो अपबित्रोंपर छिड़की जाती है, शरीरकी अपबित्रता दूर कर सकते हैं तो कितने अधिक खीष्टका १४ लोहू, जिसने, सनातन आत्माके द्वारासे, अपने ताईं ईश्वरको निष्कलंक बलिदान चढ़ाया, मृत्युजोगके कर्मोंसे तुम्हारे मनको पबित्र करेगा यहां तक कि हम अमर ईश्वरकी सेवा करें।

१५ इसलिये भी वह (अर्थात यीशु) नये नियमका बीचवई है कि उन अपराधोंके लिये, जो पहिले नियमके समयमें किये गये थे, अपनेको बलिदान करे इसलिये कि बुलाये हुये लोग जो हैं सो उस अनंत अधिकारके भागी होवें
१६ जिसकी प्रतिज्ञा किई गई। नियम करनेमें बलि चढ़ाना
१७ आवश्यक होता है। वही नियम जो बलिपर किया गया है सोई पक्का है परंतु जो बलि नहीं चढ़ाया जाता तो नियम
१८ निकम्मा है। इसलिये पहिला नियम जो है सोई भी बिन
१९ लोहूसे नहीं ठहराया गया क्योंकि मूसाने सब लोगोंको, व्यवस्थाके अनुसार, सब आज्ञा सुनाकर बछियाओं और बकरोंका लोहू, जल और लाल ऊन और जूफाके संग, लिया
२० और पुस्तक और सब लोगोंपर छिड़ककर कहा कि यही लोहू जो है सो उस नियमका है जो ईश्वरने तुमसे ठहराया
२१ है। उसने तंबूपर और सेवाके पात्रोंपर भी लोहू छिड़का।
२२ और करीब सब कुछ, व्यवस्थाके अनुसार, लोहूसे पवित्र किया गया, हां, बिन लोहू बहाये पाप मोचन नहीं होता
२३ है। सो आवश्यक होता है कि वही वस्तु जो स्वर्गीकी वस्तुओंकी समानता हैं सोई पवित्र किई जावें परंतु स्वर्गी वस्तु जो हैं सोई इनसे और अच्छे बलियोंके द्वारासे पवित्र किई जावें।
२४ ख्रीष्ट जो है सो हाथके बनाये हुये उस पवित्र स्थानमें, जो सच्चे पवित्र स्थानकी समानता है, नहीं गया है परंतु स्वर्गहीमें गया है जहां वह हमारे लिये ईश्वरके सन्मुख
२५ खड़ा होता है। आवश्यक नहीं होता है कि जैसा महा याजक, महा पवित्र स्थानमें बलिके लोहूको लेके बरस बरस जाय तैसा यीशु अपनेको बार बार बलिदान चढ़ावे;
२६ नहीं तो, आवश्यक होता है कि वह जगतकी सृष्टिसे अनेक बार मारा जाता; परंतु वह अन्त्यके समयमें पापोंके मिटानेको अपने ताईं बलिदान देके एक बार प्रगट हुआ।
२७ और जैसा मनुष्योंको एक बार मरना होता है और इसके पीछे बिचारके आसनके सन्मुख खड़ा होना होता है तैसा

खीष्ट जो है सोई बऊतोंके पापोंके दूर करनेको एक बार २८ बलिदान ऊआ, और वह, उन्होंको, जो उसकी बाट जोहते हैं, अपनेको, बलिदान सा नहीं, दूसरे बार दिखा देगा इसलिये कि उन्होंको त्राण देवे।

१० दसवां अध्याय।

व्यवस्थानुयायी बलिदानके हेतसे पापमोचन न होना।

व्यवस्था जो है सो होनहार भली वस्तुओंका क्वाया सा १ हो, न उनकी ठीक समानता, उनलोगोंको, जो बरस बरस बलिदानोंके चढ़ानेको आते हैं, सिद्ध करने नहीं सकती है; नहीं तो, तो लोग इन बलिदानोंके चढ़ाने रहने देते क्योंकि २ सेवा करनेहारे जो एक बार पवित्र किये गये हैं सो अपनेको फिर पापी नहीं जानते; परंतु हर बरस इनबलि- ३ दानोंसे पापोंका स्मरण होता है क्योंकि अनहोना है कि बैलों ४ और बकरोंके लोऊसे पाप मिटाये जावें।

खीष्टके बलिदान होनेसे सब प्रकारके पापोंका मोचन होना।

इसलिये खीष्टने संसारमें आके कहा कि हे ईश्वर तूने ५ बलिदान और नैवेद्य न चाहके मेरे लिये शरीर बनाया है, ६ हां, तूने होम और पाप मोचनका बलिदान न मांगता है; सो ७ मैं कहता हूं कि हे ईश्वर, देखो, तेरी इच्छाके अनुसार करनेको मैं आता हूं, मेरे विषयमें धर्म पुस्तकमें लिखा है। सो ८ इसी कहनेसे, अर्थात, कि हे ईश्वर, तू न बलिदान, और न नैवेद्य, और न होम, और न पाप मोचनका बलिदान चाहता है, न उनहींसे संतुष्ट है, जो व्यवस्थाके अनुसार चढ़ाये जाते हैं; और इसी कहनेसे कि हे ईश्वर, देखो, तेरी इच्छाके ९ अनुसार करनेको मैं आता हूं, यही जाना जाता है अर्थात कि ईश्वर पहिलेको मिटाता है इसलिये कि दूसरेको ठहरावे। १० सो ईश्वरकी इसी इच्छाके अनुसार हम यीशु खीष्टके शरीरके एक बार चढ़ानेके द्वारासे पवित्र किये गये हैं।

उसके बलिका एकत्व श्री संपूर्ण होना।

हर एक याजक जो है सो दिन दिन खड़ा हो सेवा करते रहता है और वेही बलिदान बार बार चढ़ावते रहता
११ है जो पापोंको मिटाने नहीं सकते हैं, परंतु यीशु जो है सोई पाप मोचनका पूरा बलिदान एक बार चढ़ायके
१२ ईश्वरकी दहिनी ओर जा बैठा जहां वह बाट जोहते रहता है जबतक उसके शत्रु उसके पांवओंकी चैाकी सी न किये
१४ जावें। सो उसने एक बार चढ़ानेके द्वारासे उनहींको सिद्ध
१५ किया है जो पवित्र किये गये हैं। इस बिषयमें पवित्र आत्मा भी हमको साक्षी देता है, अर्थात, वह पहिले
१६ यह कहता है, कि प्रभु यह बोलता है कि वही नियम जो मैं इन दिनोंके पीछे उन्होंसे करूंगा सो यही है, मैं अपनी आज्ञाओंको उन्होंके अंतःकरणोंमें रखूंगा और उन्होंके मन-
१७ पर उन्हें लिखूंगा; फिर प्रभु यह कहता है कि उन्होंके पापों और उन्होंके अपराधोंका स्मरण मैं फिर नहीं करूंगा। सो
१८ जहां पापमोचन होता है वहां पापोंके लिये बलिदान चढ़ाना फिर प्रयोजन नहीं होता है।

उसके लोगोंका ढाढ़से होना।

१९ हे भाईयो, यीशुने हमोंके लिये अपने लोहूके बहानेसे, हां,
२० अपने शरीरकी ओटके फाड़नेसे एक जीवन दायक और नया पंथ बनाया है जिसको पकड़नेसे हम स्वर्गी महा पवित्र
२१ स्थानमें कुशलसे पहुंचें, और भी ईश्वरके घरके लोगोंके
२२ महा याजक हुआ है, तो चाहिये कि हम उस मनसे, जो बुराईसे पवित्र किया गया है, और उस शरीरसे, जो निर्मल जलसे धोया गया है, हां, सच्चे मनसे, बड़ा भरोसा
२३ और बिश्वास करके, निकट आवें। चाहिये भी कि हम उस बातको, जिससे आशा होती है, और जिसे हमने मान लिया है, दृढ़ करके रखें क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा किई है सोई
२४ सच्चा है। चाहिये भी कि हम एक दूसरेको चितावें इस-
२५ लिये कि हम प्रेम और सत्य कर्म करें। और भी चाहिये

कि तुम मंडलीमें एकठे होनेसे न छोड़ देवें, जैसे कोई कोई करते हैं, परंतु इसके बिषयमें एक दूसरेको इतना अधिक चितावें जितना अधिक निकट तुम उस दिनको पऊंचते देखते हो।

धर्म छोड़नेका निषेध कर्ना।

जो हम, धर्मका ज्ञान पानेके पीछे, जान बूझके पाप करें २६ तो इस पापका कोई प्रायश्चित नहीं रहता है; केवल वही दंड जो भयंकर है, और वही क्रोध जो आगकी नाईं २७ बिरोधियोंको खा लेगा, सो फल सा रहते हैं। जो वही २८ जो मूसाकी व्यवस्थाको तुच्छ करता है, दो तीन मनुष्योंकी साक्षी देनेपर, निर्दयसे मार डाला जाता है तो बूझो, २९ कि कितने अधिक दंडके जोग वही गिना जायगा जिसने ईश्वरके पुत्रको निंदा किई है और नियमके लोहूको, जिससे पबित्रता होती है, अपबित्र जाना है, और अनुग्रह देनेहारे आत्माको छेड़ा किया है?। हम उसे जानते हैं जिसने ३० ये बातें कहीं है, अर्थात, कि बदला लेना मेराही काम है, प्रभु कहता है कि मैंही बदला लूंगा, और, फिर, कि प्रभु अपने लोगोंका न्याय करेगा। अमर ईश्वरके हाथोंमें पड़ना ३१ कैसा भयानक है।

धर्मके निमित्त दुःखभोग औ सहिष्णुता कर्नेको प्रशंसा।

हे भाइयो, अगले दिनोंका स्मरण करो जिन्होंमें तुमने ३२ उज्याला पानेके पीछे लड़ाई सी करके बऊत दुखोंको सह लिया, अर्थात, प्रगटमें निंदित और सताये ऊये, और उन्होंके ३३ संगी ऊये जिन्होंने इसी रीतिसे दुःख उठाया, हां, तुम ३४ मेरे बंधनके दुःखसे दुःखी ऊये; और भी तुमने अपनी अपनी संपतका लूटना आनंदसे सहा क्योंकि तुम जानते थे कि स्वर्गमें और अच्छी और स्थीर संपत तुम्हारी है। सो तो ३५ अपनी आशाको दूर न करो जिससे बड़ा फल होगा। तुम्हें ३६ धीरज करना उचित है इस लिये कि ईश्वरकी इच्छाके अनुसार करके प्रतिज्ञाकी बात पावो। जो आवेगा सो ३७

३८ थोड़े दिनोंके पीछे आवेगा, देरी न करेगा, और पुण्यवान लोग बिश्वासके द्वारासे बचेंगे, परंतु जो कोई धर्मको छोड़
३९ देवे, उसीसे ईश्वर संतुष्ट न है। परंतु हम जो हैं सो उनमेंसे नहीं हैं जो धर्मको छोड़के नाश किये जायेंगे, हां, हम उनमेंसे हैं जो बिश्वास करके मुक्ति पावेंगे।

११ एग्यारहवां अध्याय।

बिश्वास कर्नेको निर्णय कर्ना औ अनेक दृष्टांतोंसे उसके फलका निर्णय।

१ बिश्वास जो है सो आवनेहारी बस्तुओंको पानेकी दृढ़ आशा
२ है और अनदेखी बस्तुओंका प्रमाण देनेहारा है। बिश्वास
३ करनेसे प्राचीन लोगोंने बड़ा नाम पाया। बिश्वाससे हम निश्चय करते हैं कि जगतें जो हैं सो ईश्वरकी बातसे बनाये गये, हां, कि वे बस्तु जो देखनेमें आतीं हैं सो देखीं
४ ऊई बस्तुओंसे उत्पन्न नहीं ऊईं। बिश्वाससे हाबिलने अपने भाई काबिलके बलिसे और अच्छे बलि ईश्वरको चढ़ाया; सो ईश्वरने हाबिलके बलिपर साक्षी दिई; इसीसे जाना गया कि हाबिल धर्मी मनुष्य था; सो मृतक हो अपने
५ बलिके द्वारासे अबतक बोलता है। बिश्वाससे हनोक न मरके स्वर्गको उठाया गया, हां, वह न मिल गया क्योंकि ईश्वरने उसे ले लिया था; उसके ले जानेसे पहिले यह जाना गया
६ कि उसने ईश्वरको प्रसन्न किया। बिना बिश्वास ईश्वरको प्रसन्न करना अनहोना है; हां, चाहिये कि वही जो ईश्वरके निकट आता है सो इसका बिश्वास करे अर्थात कि ईश्वर है और कि वह उनहींको, जो उसका खोज करते हैं,
७ फल देता है। बिश्वाससे नोहने आवनेहारी बातोंके बिषयमें ईश्वरसे उपदेश पाया और मानके जहाजको बनवाया इसलिये कि उसका घराना बच जावे; ऐसे बिश्वाससे उसने संसारके लोगोंको दोषी ठहराया और उस पुण्यका
८ अधिकारी ऊआ जो बिश्वासके द्वारासे होता है। बिश्वाससे इब्राहीमने बुलाया होके माना और उस देशको

चला गया जो उसको पीछे दिया जाना ठहराया गया, हां, वह न जानता था कि कहां जाता है, तौभी चला गया। बिश्वाससे ९ भी इब्राहीम प्रतिज्ञाके देशमें, जो उसी समय औरोंके हाथमें था, जा बसा, और इसहाक और याकूबके संग, जो एकही प्रतिज्ञाके अधिकारी थे, तंबूमें रहा; वह उस १० नगरकी बाट जोहता था जिसकी नेवें हैं और जिसका बनानेहारा और रचा करनेहारा ईश्वर है। बिश्वाससे सारा, ११ (इब्राहीमकी स्त्री), बुढ़ी हो गर्भधारण करनेकी शक्ति पाके पुत्र जनी इसकारण कि उसने उसीको सच्चा जाना जिसने प्रतिज्ञा किई। सो एक मनुष्यसे, जोहो मरा सा था, ऐसे १२ बहुत लोग उत्पन्न हुये कि वे स्वर्गके तारों और समुद्रके तीरके बालूके समान अनगणित थे। येही सब प्रतिज्ञाओंको बस्तुयोंको १३ न पायके मर गये परंतु उन्हें दूरसे देखके बिश्वास किया और आनंद करके यह कहा कि हम आपही संसारमें परदेशी और यात्री हैं। वे लोग जो इसी रीतिसे बात १४ करते हैं सोई खोलके कहते हैं कि हम अमुक देशको ढूंढते हैं। जो उनके मन उस देशमें होते, जिसमेंसे उन्होंने १५ निकल आया था, तो उनके बशमें था कि फिर जाते परंतु वे दूसरे देशके, अर्थात स्वर्गी देशके चाहनेहारे थे; इस- १६ लिये ईश्वर लज्जित नहीं है कि उनका ईश्वर कहलावे, हां, उसने उनके लिये एक नगर बनाया है। बिश्वाससे १७ इब्राहीमने परीक्षित हो अपने पुत्र इसहाकको चढ़ाया, हां, जिसने प्रतिज्ञा पायके अपने उस एकलौटे पुत्रको चढ़ाया जिसके बिषयमें यही कहा गया था, कि इसहाकसे तेरे १८ संतान होवेंगे; इब्राहीमने निश्चय किया कि ईश्वर १९ इसहाकको मृतकोंमेंसे उठाने सकता था जिन्होंमेंसे उसने (अर्थात इब्राहीमने) उसको, दृष्टांतमें, पाया। बिश्वाससे २० इसहाकने, आवनेहारी बातोंके बिषयमें, याकूब् और एसाको आशीष दिया। बिश्वाससे याकूबने मरनेपर हो २१ यूसफके दो पुत्रोंको आशीष दिया और अपनी लाठीके

२२ बल रखते ऊये आराधना किया। बिश्वाससे यूसफने मरने-
पर हो मिसर देशमेंसे इस्रायेली लोगोंके निकल जानेकी बात
२३ कही और अपनी हड्डीयोंके बिषयमें आज्ञा किई। बिश्वाससे
मूसा उत्पन्न हो अपने माता पितासे तीन मासतक छिपाया
गया क्योंकि उन्होंने देखा कि वह अति सुंदर बालक है; और
२४ वे राजाकी आज्ञासे न डरे। बिश्वाससे मूसाने स्याना होके न
२५ चाहा कि फिरौन राजाकी पुत्रीका पुत्र कहलावे; परंतु यह
अधिक चाहा कि ईश्वरके लोगोंके संग दुःख भोगे; सो उसने
२६ पापोंके सुखोंको, जो थोड़े दिनोंके हैं, तुच्छ किया; हां, उसने
मिसर देशके लोगोंकी संपतसे, खीष्टके लिये निंदा पाना, बड़ी
संपत जाना क्योंकि वह अंतकालके फलपर दृष्टि करता रहा।
२७ बिश्वाससे उसने राजाके क्रोधसे न डरते ऊये मिसर देशको
छोड़ गया क्योंकि उसने अदृश्य ईश्वरको दृश्य जानके दृढ़ होता
२८ रहा। बिश्वाससे उसने निस्तार पर्ब्ब और लोहूके छिड़कनेकी
बिधि किई इसलिये कि पहलौटे पुत्रोंका नाश करनेहारा जो
२९ है सो यिस्रायेली लोगोंको न छूवे। बिश्वाससे यिस्रायेली लोग
सूफसागरके बीचमें होके, जैसे सूखी भूमिपर, पार गये;
परंतु मिसर देशके लोग इसी रीति करते ऊये डूब गये।
३० बिश्वाससे यिस्रायेली लोग यिरीहो नगरकी चारों ओर सात
दिनमें सात बेर घूमते रहे; पीछे उसकी भीतें गिर पड़ीं।
३१ बिश्वाससे राहब बेश्याने भेदियोंको कुशलसे पऊनई किई; सो
अबिश्वासियोंके संग नाश न ऊई।

बिश्वास कर्नेसे जो आश्चर्य क्रिया और दुःख भोग ऊए हैं उनका निर्णय।

३२ मैं और क्या कहऊं? अवसर नहीं है कि मैं गिदियोन और
बारक और शिमसोन और यिफतह और दायूद और शिमूयेल
और भविष्यद्वक्ताओंका बर्णन करऊं, जिन्होंने बिश्वाससे राजोंको
३३ उलटाया, और न्याय किया, और प्रतिज्ञाओंका फल पाया,
३४ और सिंहोंके मुख बंद किया, और आगके तेजको बुझा दिया,
और खड्गके धारोंसे बच गये, और दुर्बल हो बलवंत ऊये,
और लड़ाईमें बीर ऊये, और शत्रुओंकी सेनाओंको मार

हटाया; स्त्रियोंने अपने मृतकोंको जी उठनेसे फिर पाया; ३५
कोई कोई लाठियोंसे मार डाले जानेसे छुट्टी नहीं मांगे, इस ३६
लिये कि वे इस शरीरके जीवनसे और अच्छे जीवन पावें;
और और कोई निंदे किये गये, और कोड़े खाये, हां, जंजीरोंसे ३७
बांधे गये और कैदखानेमें डाले गये; वे पाथरोंसे मारे गये,
और आरेसे चीरे गये, और सूलीपर चढ़ाये गये, और खड्गसे
मारे पड़े; वे भेड़ों और बकरोंकी खाल ओढ़े हुये फिरते फिरते
रहे; और वे दीनहीन और दुःखित और सताये हो ३८
बनोंमें और पर्व्वतोंपर और पशुओंकी गुफाओंमें और भूमिके
गड़होंमें भूलते फिरे; संसार जो है सो इन लोगोंके योग
न था। इन सबोंने बिश्वास करनेके द्वारासे बड़ा नाम पाया, ३९
तौभी प्रतिज्ञाका फल नहीं पाया; वे हमारे बिना सिद्ध ४०
नहीं हो सकते थे इसलिये ईश्वरने हमारे लिये कोई और
अच्छी वस्तु तैयार किई।

१२ बारहवां अध्याय।

बिश्वास करने औ दुःख सहनेसे धर्म्ममें स्थिर रहना।

सो चाहिये कि हम साक्षियोंकी इतनी बड़ी घटासे घेरे १
हुये हुए एक बोझा और अटकावनेहारे पापको दूर करें
और धुनी लगाके उस दौड़में, जो हमारे लिये ठहराया गया
है, दौड़ें, और यीशुकी ओर दृष्ट करें जो धर्म्मका आदि २
और सिद्धि करनेहारा है; उसने क्रुशका दुःख उठाया इस
लिये कि उस आनंदको पावे जो उसके सन्मुख था; हां,
उसने क्रुशका अपमानको तुच्छ जानके ईश्वरके सिंहासनकी
दहिनी ओर जा बैठा है। सो उसीका स्मरण करो जिसने ३
पापियोंका इतनी बिरुद्धता सह लिई, न होय कि तुम
अपने मनमें उदास हो थक जावो। तुमने पापसे लड़ाई ४
करते हुये अबतक अपने लोहू नहीं बहाया है। क्या तुम ५
उस उपदेशको भूल गये हो, जो तुमको, जैसे पुत्रोंको, दिया
गया है, अर्थात, कि हे मेरे पुत्र, प्रभुके दिये हुये ताड़नको

तुच्छ न जान और उसको दिई ऊई चितावनीके कारणसे उदास
६ न हो; जिसे प्रभु प्यार करता है वह उसीको चितावता
है, और जिस पुत्रको वह ग्रहण करता है उसीको मार
७ खिलाता है। जो तुम धीरज करके ताड़न सहो तो ईश्वर
तुमको पुत्र जानके व्यवहार करता है क्योंकि कौन वही
८ पुत्र है जिसको पिता मार नहीं खिलाता है?। जो तुम ताड़न
रहित हो, जिसे सब पाते हैं, तो पुत्र नहीं हो, हां, बद
९ नसल हो। जो हमने अपने शरीरिक पिताओंको, जिन्होंने
हमें मार खिलाये, माना है, तो कितने अधिक हम अपने
१० आत्माओंके पिताको मानेंगे इसलिये कि हम जीवें?। उन्होंने
थोड़े दिनोंतक, अपनी इच्छाके अनुसार, हमें मार खिलाया
परंतु ईश्वर हमें सीधे करनेको मार खिलाता है ऐसा कि
११ हम उसके समान पवित्र हो जावें। किसी प्रकारका ताड़न
जो है सो अबके समयमें आनंदका नहीं है, हां, दुःखका है,
परंतु वे जो ताड़न पाते हैं सो उसके कारणसे पीछे धर्मका
शांतिदायक फल पाते हैं।

धर्म छोड़नेसे सावधान कर्ना।

१२ सो ढीले हाथों और दुर्बल घुटनोंको दृढ़ करो, और
१३ अपने पांवओंके लिये मार्गको चौरस करो इसलिये कि वे जो
१४ लंगड़े हैं सो न गिर पड़ें, हां, चंगे हो जावें। सबोंसे मिले
रहो और सतकर्म करते रहो, जिसके बिना कोई प्रभुको
१५ नहीं देखेगा। सावधान होओ कि कोई ईश्वरके अनुग्रहसे
छूट न जावे और कि कड़वाहटकी कोई जड़ उत्पन्न न
१६ होवे जिसके द्वारासे बऊतेरे अपवित्र हो जावें, और कि
कोई पेटू और अधर्मी न होवे, एसौकी नाईं (अर्थात याकूबका
पुत्र) जिसने थोड़े खानेके लिये अपने जन्म अधिकारको
१७ बेच डाला; तुम जानते हो कि पीछे उसने पछतायके अपने
पितासे जन्म अधिकारका आशीष मांग लिया परंतु न पाया,
हां, उसने आंसू बहाते बहाते ऊये मांग लिया तौभी अपने
पिताके मन फिरानेको उपाय नहीं पाया।

व्यवस्थाके मंगलसे सुसमाचारका मंगल बड़ा होना।

तुम उस पर्वतको नहीं पहुंचे हो, जो छूआ जा सकता था, १८
न उसके जलते हुये आगको, न उसके काले मेघको, न
उसके अंधेरेको, न उसकी आंधीको देखते हो, न उसकी १९
तुरहीका शब्दको, न उसकी उन बातोंको सुनते हो जो यिस्रा-
यली लोगोंने सुनके डरके मारे यही निवेदन किया कि हमें
और सुनाने मत दीजिये; वे इसी आज्ञाको न सह सकते थे, २०
अर्थात, कि जो कोई पशु पर्वतको छूवे तो पत्थरोंसे अथवा
भालेसे मारा जायगा; हां, वही दर्शन ऐसा बड़ा भयंकर २१
था कि मूसाने कहा कि मैं बहुत डरता और कांपता हूं।
परंतु तुम सियोन नाम पर्वतको पहुंचे हो, और अमर २२
ईश्वरके नगरको अर्थात स्वर्गी यिरूशालमको, और लाख लाख
स्वर्गी दूतोंको, और उन पहलौटोंकी महा सभाको, जिनके २३
नाम स्वर्गमें लिखे हैं, और ईश्वरको, जो सबोंका विचार करने-
हारा है, और धर्मी लोगोंकी आत्माओंको, जिन्होंने अपने
फल पाया है, और नये नियमका बिचवैया यीशुको, और २४
छिड़के हुये लोहूको, जो हाबिलके लोहूकी बातसे अच्छी
बात बोलता है।

सुसमाचारमें स्थिर होनेकी आवश्यकता।

सावधान होओ कि तुम उसीकी आनाकानी न करो जो २५
तुमको उपदेश देता है। जो वे, जिन्होंने उसीकी आनाकानी
किई जिसने पृथ्वीपर उपदेश दिया, नहीं भाग निकले, तो
हम क्योंकर भाग निकलेंगे जो हम उसीकी आनाकानी करें
जो स्वर्गमेंसे उपदेश देता है। उस समय पृथ्वी जो है २६
सो उसके शब्दसे हिल गई परंतु इस समय उसने यह
कहके प्रतिज्ञा किई है कि फिर एक बार मैं केवल पृथ्वीको
नहीं, परंतु स्वर्गको भी हिलाऊंगा। इन बातोंसे, अर्थात, २७
फिर एक बारकी बातोंसे, यही जाना जाता है कि वे वस्तु जो
हिलाई जाती हैं सो बनाई हुई वस्तुओंकी नाई लोप किई
जायेंगी इसलिये कि वे वस्तु जो नहीं हिलाई जाती हैं

२८ स्थीर रहेंगी। सो चाहिये कि हम उसी राजको पायके, जो नहीं हिलाया जा सकता है, धन्यबाद करें; इससे हम ईश्वरकी सेवा, सन्मान और धर्मी भयसे, करके ग्रहण किये जायेंगे। हमारा ईश्वर जो है सो भस्म करनेहारी आग सी है।

१३ तेरहवां अध्याय।

भाईयोंके प्रेमका बिवरण।

१ चाहिये कि तुम भाई की सी आपसमें प्रेम करते रहो। २ अतिथिकी पहुनई करने न भूलो; किसी किसीने न जानके ३ स्वर्गी दूतोंको पहुनई किई है। अपने अपनेको बंधुयोंकी सी जानके उन्होंका स्मरण करो जो यीशुके लिये बंधुआ हैं; और अपने अपनेको शरीरमें सा जानके उन्होंका स्मरण ४ करो जो दुःखी हैं। बिवाह करनेसे और व्यभिचार न करनेसे सबोंको मर्याद होती है; परंतु ईश्वर बेश्यागामियों ५ और व्यभिचारियोंको दंड देगा। चाहिये कि तुम्हारा चाल लोभसे बाहिर होय; जो कुछ कि तुम्हारे हाथमें है उसीसे संतुष्ट होओ क्योंकि ईश्वरने कहा है कि मैं तुझे कभी न छोडूंगा, हां, मैं किसी भांतिसे तुझे कभी न ६ त्याग करूंगा। सो हम भरोसासे यह कहने सकते हैं, अर्थात्, कि प्रभु जो है सो मेरा सहायक है, मैं न डरूंगा, मनुष्य जो ७ है सो मुझपर क्या करने सकता है? अपने उन उपदेशकोंका स्मरण करो जिन्होंने तुम्होंको ईश्वरकी बात सुनाई, और उन्होंकी सो बिश्वास करके उन्होंके बोल चालकी सारका ८ ध्यान करो अर्थात यीशु खीष्टका, जो कल था, और आज है और सदातक होगा।

नाना प्रकारकी शिक्षासे टल जानेका निषेध।

९ नाना प्रकारकी नयी शिक्षाओंसे इधर उधर मत फिराये जाओ; यह भला है कि मन जो है सो धर्ममें स्थीर होवे, न खानेकी बातोंसे, जिनसे उनके माननेहारोंको कुछ फल प्राप्त

नहीं होता है। हमारी तो एक यज्ञबेदी है जिसके चढ़ाये १०
ऊये दानोंसे, वे जो यिखायली मंदिरमें सेवा करते हैं,
खानेका अधिकार न रखते हैं। उन पशुओंका लोहू, जो ११
प्रायश्चित्तके लिये मारे जाते हैं, महायाजकके हाथसे, महा
पवित्र स्थानमें, लाया जाता है, परंतु उनके शरीर जो हैं सो
नगरके बाहिर जलाये जाते हैं; सो यीशु जो है उसीने १२
भी नगरके द्वारके बाहिर मृत्यु भोग किया इसलिये कि
अपने लोहूसे लोगोंको पवित्र करे। इसलिये चाहिये कि १३
हम उसकी नाईं अपमान सहके नगरके बाहिर उसके
निकट चल निकलें क्योंकि यहां ठहरनेका कोई नगर हमारा १४
नहीं है परंतु एकको, जो आवनेहारा है, हम ढूंढ़ते हैं।
सो चाहिये कि हम यीशुके द्वारासे ईश्वरकी स्तुतिका दान १५
नित्य नित्य चढ़ावें अर्थात् अपने मुखसे उसका नाम मान लेवें।
और परोपकार और दान करने न भूलो क्योंकि ऐसे १६
चढ़ावाओंसे ईश्वर संतुष्ट होता है।

शिक्षकोंके मान कर्नेकी कथा।

अपने उपदेशकोंको मान करके उनकी बशमें रहो; वे, १७
उनकी नाईं हो जिन्होंसे लेखा लेना होगा, तुम्हारी रक्षा
करनेको जागते रहते हैं इसलिये कि वे आनंदसे यह
करें न उदासीसे क्योंकि यह तुम्हारे लिये निष्प्रयोजन होगा।
हमारे बिषयमें प्रार्थना करो; हम निश्चय जानते हैं कि १८
हमारे मन ऐसे सच्चे हैं कि हम अच्छी भांतिसे सब कुछ करने
चाहते हैं; हां, हम तुमसे बऊत बिंती करते हैं कि तुम १९
मेरे बिषयमें निबेदन करो कि मैं तुमको जलद फिर आने
पाऊंगा।

मंगल प्रार्थनाकी कथा।

मेरा निबेदन यही है अर्थात कि शांतिदायक ईश्वर, जिसने २०
हमारे प्रभु यीशुको, जो सनातन नियमके लोहूके द्वारासे
भेड़ोंका बड़ा चरवाहा ऊआ है, मृतकोंमेंसे जी उठाया
है, तुमको, हरएक सत्य कर्मके बिषयमें, ऐसे सामर्थ्यवान २१

करे कि तुम उसकी इच्छाके अनुसार चलो, और कि वह तुम्होंमें, जो कुछ कि अपने देखनेमें भला है, यीशु खीष्टके द्वारास, उत्पन्न करे। उसकी महिमा सदा प्रकाशित होवे आमीन।

समाचार औ नमस्कार भेजना।

२२ हे भाईयो, मैं तुमसे बिंती करता हूं कि तुम इन थोड़ी
२३ बातोंको, जो मैंने लिख दिई है, मान लो। जानो कि तीमथिय भाई जो है सो छूट गया है; जो वह जलद
२४ फिर आवे तो मैं उसके संग तुम्हें देखूंगा। अपने सब उपदेशकों और सब पवित्र लोगोंको नमस्कार करो। जो
२५ इतलिय देशके हैं सो तुम्हें नमस्कार करते हैं। तुम सबोंको अनुग्रह दिया जावे। आमीन।

याकूबका पत्र।

१ पहिला अध्याय।

मंगलाचरण।

१ याकूब जो ईश्वरका और प्रभु यीशु खीष्टका सेवक है सो इस्रायेली बारह घरानोंको, जो तितर बितर हुये हैं, नमस्कार करता है।

दुःखमें आनंद करना।

२ हे मेरे भाईयो, नाना प्रकारके दुःखोंमें पड़नेपर बड़ा
३ आनंद समझो; जानो कि तुम्हारे बिश्वासकी परीक्षा करनेसे
४ धीरज उत्पन्न होता है। बड़े धीरजवान होओ इसलिये कि तुम सिद्ध और परिपूर्ण होओ और किसी गुणसे घाट न

ईश्वरसे धीरजका मांगना।

५ जो तुम्होंमेंसे कोई बुद्धिहीन होवे तो चाहिये कि वह ईश्वरसे मांगे जो सबोंका बड़ा दाता है और तुच्छ नहीं करता है,

सब उसको दिया जायेगा। बिश्वास करके मांगो और ६
दूबधा न करो; वही जो दूबधा करता है सो समुद्रकी उस
लहरकी नाईं है जो पवनसे चलती और लहरती है। ऐसा ७
मनुष्य न समझे कि मैं ईश्वरसे कुछ पाऊंगा। जिसके मनमें ८
दूबधा है वह अपने सब चालमें अनस्थीर रहता है।

धनमें अहंकार करनेका निषेध कर्ना।

चाहिये कि वही भाई जो दरिद्र है सो अपने ऊंचे पदसे ९
आनंदित होय; परंतु वही जो धनवान है सो अपने नीचे पदसे १०
आनंदित होय। धनवान जो है सो घासके फूलके समान
जाता रहेगा; हां, जैसे सूर्जके उठनेकी धूपसे घास सूख ११
जाता है और उसका फूल झड़ पड़ता है और उसके स्वरूप-
की शोभाभी नष्ट होती है, वैसेही धनवान अपनी गतिमें
कुम्हलावेगा।

ईश्वर पापका मूल नहीं है, परंतु सब मंगलका मूल है, ईसका बर्णन।

वही मनुष्य जो जांचा जाता है सो धन्य है क्योंकि परी- १२
क्षित होनेके पीछे वह उस अमरता सा मुकुट पावेगा, जो
प्रभु अपने बाचाके अनुसार उनहीको देगा जो उसको प्यार
करता है। चाहिये कि वही जो कुमति ऊआ है सो न कहे १३
कि मैं ईश्वरके करनेसे कुमति ऊआ हूं; ईश्वर जो है सो
पाप रहित है, और उसके करनेसे कोई कुमति नहीं होता
है; परंतु जो कोई कुमति ऊआ है सोई अपनी कुअभिलाषीसे १४
खींचा और फुसलाया जाता है। कुअभिलाषा जो है सो १५
गर्भ धारिणीकी नाईं पाप उत्पन्न करता है और पाप जो है
सो बढ़के मृत्यु जन्माता है। हे मेरे प्यारे भाईयो, भूलके १६
धोखा न खाईयो; हर एक अच्छा और परिपूर्ण दान जो १७
है सो ऊपरसे अर्थात ज्योतियोंके पितासे उतरता है जिसका
न घुमाव है और न घुमावकी छाया है। उसने अपनी १८
इच्छाके अनुसार, हमें, सच्चाईकी बातके द्वारासे, उत्पन्न
किया इसलिये कि हम उसके सृष्टिके बीचमें एक प्रकारके
पहिले फल सा होवें। सो, हे मेरे प्यारे भाईयो, चाहिये १९

कि हर एक मनुष्य सुन्नेमें फुर्तीला, और कहनेमें धीमा,
२० और क्रोधमें धीरा होय; मनुष्यके क्रोधसे वही सत्य कर्म,
जो ईश्वरकी इच्छाके अनुसार है, नहीं होता है।

कपट विरुद्धका बात कहनी।

२१ सो सब प्रकारके अशुचि और असत्य कर्मको दूर करके
उस बोई हुई बातको नम्रतासे ग्रहण करो जो तुमको
२२ बचाने सकती है। बातके मान्नेहारे होओ और केवल वेही
२३ सुन्नेहारे न होओ जो अपनेको धोखा देता हैं; जो कोई केवल
सुन्नेहारा होय और मान्नेहारा नहीं होय तो वह उस मनुष्यके
समान है जो दर्पणमें अपने मुखको ठीक देखता है, और
२४ देखके चला जाता है और जल्द भूल जाता है कि कैसा था।
२५ परंतु वही जो उद्धार दायक व्यवस्थामें देखके उसमें स्थिर
रहता है और सुनके न भूल जाता है, हां, कर्म करता है, सोई
२६ अपने करनेमें धन्य होगा। जो तुम्होंमेंसे कोई अपनेको धर्मी
जाने और अपनी जीभको लगाम न देवे, तो ऐसा मनुष्य
२७ अपने मनको धोखा देता है; उसका धर्म वृथा है। वही
धर्म जो ईश्वर पिताके सन्मुख पवित्र और निर्मल है सोई
यही है, अर्थात, कि दुःखी माता पिताहीनों और विधवा-
ओंकी सहायता करना, और अपनेको संसारके कुकर्मसे
निष्कलंक रखना।

२ दूसरा अध्याय।

दरिद्रलोगोंके असमादर औ धनीलोगोंके समादर कर्नेकी अनावश्यकता।

१ हे मेरे भाईयो, तुम पक्ष करनेमें, हमारे तेजस्वी प्रभु यीशु
२ ख्रीष्टका धर्म पालन नहीं करते हो; क्योंकि जो तुम्हारी
सभामें कोई मनुष्य आवे, जिसने सोनेकी अंगूठी और
सुथरा कपड़ा पहिना है, तो तुम उसका सन्मान करके उस-
३ को कहते हो कि इसी अच्छे स्थानमें बैठिये; परंतु जो कोई
कंगाल मनुष्य भीतर आवे, जिसका कपड़ा बुरा है, तो
उसको कहते हो कि वहां खड़ा हो अथवा यहां मेरे पांवओं

की चौकीके निकट बैठ; ऐसा करनेमें क्या तुम पक्ष और ४
कुविचार करनेहारे नहीं हो? हे मेरे प्यारे भाईयो, सुनो, ५
क्या ईश्वरने इस संसारके कंगालोंको प्यार नहीं किया है
और उन्होंको बिश्वासका धन नहीं दिया है और उस राजके
अधिकारी उन्हें नहीं ठहराया है जिसकी बाचा उसने
अपने प्यार करनेहारोंसे किया? परंतु तुमने कंगालोंको ६
तुच्छ किया है। धनवान जो हैं क्या वे तुम्होंपर अंधेर नहीं
करते और बिचारासनके सन्मुख नहीं खैंच ले जाते हैं? क्या ७
वे उस उत्तम नामकी निंदा नहीं करते हैं जिसके तुम
कहलाते हो?। स्वर्गी राजाकी आज्ञाओंमेंसे, जो धर्म ८
पुस्तकमें लिखीं हैं, सोई यह एक है अर्थात कि अपने भाई-
को अपने समान प्यार कर; जो इस आज्ञाका पालन
करो तो भला करते हो; परंतु जो पक्ष करो तो पाप ९
करते हो और व्यवस्थासे दोषी ठहराये जाते हो। जो कोई १०
एक आज्ञाको छोड़ सब और आज्ञाओंको माने सोई तो
सब आज्ञाओंके तोड़नेका दोषी है; जिसने कहा है कि ११
व्यभिचार मत कर, उसने भी कहा कि नरहत्या मत कर;
इसलिये जो तू व्यभिचार न करे परंतु नरहत्या करे तो तू
व्यवस्थाका लंघन करनेहारा हुआ है। सो उनके समान, जो १२
उद्धार दायक व्यवस्थाके अनुसार बिचार किये जायेंगे, बात
कहो और कर्मभी करो क्योंकि वही जो दया नहीं करता १३
है सो निर्दयसे बिचार किया जायगा परंतु दयावान जो है
सो दंडके ऊपर जय जय करेगा।

कर्म रहित बिश्वासका वृथा होना, औ निष्फल औ सफल बिश्वासका
लक्षण।

हे मेरे भाईयो, जो कोई जो सत्य कर्म नहीं करता है यह १४
कहे कि मैं बिश्वास करता हूं तो उसके ऐसे बिश्वाससे क्या
फल होता है? क्या ऐसा बिश्वाससे उसका उद्धार होने
सकता है?। जो कोई भाई अथवा बहिन वस्त्रहीन और १५
भोजनहीन होवे, और तुम्होंमेंसे कोई उसको शरीरके प्रयो- १६

उनको वस्तु न देके कहे कि कुशलसे चला जा, जाड़ाया जा और भरपेट हो तो इससे क्या लाभ होता है? इसी
१७ भांति वही बिश्वास, जिससे सत्यकर्म नहीं होता है,
१८ अकेला हो मृतक सा होता है। क्या जाने कोई कहेगा कि बिश्वास तेराही है और सत्यकर्म मेराही है; सो तू अपने सत्यकर्मसे अपने बिश्वासको मुझे दिखा, और मैं अपने
१९ बिश्वाससे अपने सत्य कर्मको तुझे दिखाऊंगा। तू बिश्वास करता है कि ईश्वर एक है; ऐसे बिश्वास करनेसे तू भला करता है; परंतु भूत जो हैं सो ऐसा बिश्वास करके कांपते
२० हैं। हे निर्बुद्धि मनुष्य, क्या तू नहीं जानता है कि वही बिश्वास, जिससे सत्यकर्म नहीं होता है कोई मृतक सा है।
२१ क्या हमारा पिता इब्राहीम जो है सो यज्ञबेदीपर अपने पुत्र इसहाकको चढ़ाके सत्य कर्मोंसे धर्मी नहीं दिखाया गया?
२२ क्या तू नहीं देखता है कि उसके बिश्वाससे सत्यकर्म ऊये।
२३ और सत्य कर्मोंसे उसका बिश्वास सिद्ध ऊआ; सो यही लिखी ऊई बात प्रगट है अर्थात कि इब्राहीमने ईश्वरपर बिश्वास किया है और उसका बिश्वास जो था सो उसके लिये पुण्य
२४ गिना गया; और वह ईश्वरका मित्र कहलाया। सो तुम देखते हो कि मनुष्य सत्यकर्मोंसे धर्मी दिखाया जाता है, न
२५ केवल बिश्वाससे। और क्या तुम नहीं देखते हो कि राहब बेश्या भी भेदीयोंकी पक्ऊनई करके और उन्हें दूसरे मार्गसे
२६ बाहर कर देके सत्यकर्मोंसे धर्मी दिखाई गई?। सो जैसा वही शरीर, जिसमेंसे प्राण निकल गया है, मरा है तैसाही वही बिश्वास, जिससे सत्यकर्म नहीं होते हैं, मृतक सा है।

३ तीसरा अध्याय।

दूसरे लोगोंको दोषी करनेमें जीभको बशमें करनेकी आवश्यकता।

१ हे मेरे भाईयो, शिक्षक शिक्षक मत होओ; तुम जानते
२ हो कि इसलिये हमसे बड़ा लेखा लेना होगा; हम सब जो हैं सो बऊत बातोंके बिषयमें चूक करते हैं; जो कोई

बातमें चूक न करे तो वही सिद्ध है और सारे शरीरको वशमें रखने सकता है। देखो, हम घोड़ोंके मुखमें लगाम ३ देते हैं इसलिये कि वे हमको मानें और कि हम उनके सारे शरीरको फिरावें। जहाजोंको भी देखो, वे बहुत बड़े हैं, ४ और बड़ी बयारोंसे उड़ाई जातीं हैं तौ भी मांझी जो है सो छोटीसी पतवारसे, अपनी इच्छाके अनुसार, उन्हें फिराता है। ऐसाही जीभ जो है सो बड़ा छोटा अंग है, तौभी ५ बड़ी बातको बोलनेहारी है। देखो, थोड़े आगसे कैसी बड़ी ६ बन जलाई जाती है; सो जीभ जो है वह आग सी है, हां, पाप सागर सी है। हमारे अंगोंके बीचमें जीभ हो सारे शरीरको अशुचि करती है, हां, सारी जगतको जलाती है और वह आपही नरकसे जलाई जाती है। सब प्रकारके ७ बनैले पशु, और पक्षी, और कीड़े मकोड़े, और जलजतुं जो हैं सो मनुष्यके वशमें हुये हैं और होते हैं परंतु मनुष्योंमेंसे ८ कोई नहीं है जो जीभको वशमें रख सकता है, हां, वह एक अजीत दुष्ट है जो मरवाये हुये विषसे भरी हुई है। हम एकही जीभसे पिता ईश्वरका धन्यवाद करते हैं और ९ मनुष्योंको, जो ईश्वर सा है, सराप देते हैं, हां, एकही १० मुखसे आशीर्बाद और सराप निकलते हैं। हे मेरे भाईयो, ऐसा होना उचित नहीं है। क्या सोताके एकही मुखसे मीठा ११ जल और खारा जल निकल आता है?। हे भाईयो मेरे, क्या १२ यही हो सकता है कि अंजीरमें जैतून और अंगूरमें अंजीर लगें? वैसेही एकही सोतासे मीठा जल और खारा जल नहीं निकल आता है।

ज्ञानियोंका दोषका न होना।

तुममेंसे कौन है जो ज्ञानवान और बुद्धिमान है? चाहिये १३ कि ऐसा मनुष्य सत्यकर्म करके नम्रतासे अपने ज्ञान दिखावे। जो तुम अपने मनमें कड़वा डाह रखो और झगड़ालू १४ होओ तो बड़ाई न करो और सचाईके विरुद्ध झूठ न कहो। ऐसा ज्ञान ऊपरसे नहीं उतरता है परंतु संसारिक १५

१६ और शरीरिक और शैतानिक है। जहां डाह और झगड़ा
१७ हैं वहां अंधेर और हर प्रकारके कुकर्म हैं। परंतु वही
ज्ञान जो ऊपरसे उतरता है सो पहिले* निर्मल है, पीछे
मिलनसार है, मन्दा है, नरम है, दयासे और अच्छे फलोंसे
भरा ऊआ है, और पक्षपात और कपट रहित है। शांति-
१८ कारी लोग जो हैं सो धर्मी और शांतिदायक बीज बोते हैं।

४ चौथा अध्याय।

युद्ध औ लोभ औ ईर्षा औ अहंकार आदिको बरजना।

१ ये बिबादें और झगड़ें जो तुम्होंके बीचमें हैं सो कहांसे
होते हैं? क्या वे उन अभिलाषोंसे नहीं होते हैं जो तुम्हारे
२ मनमें लड़ाई करते हैं? तुम लालसा करते हो परंतु कुछ
नहीं पाते हो; तुम मार डालते हो और डाह रखते
हो तौभी नहीं पाने सकते हो? तुम झगड़ा और बिबाद
करते हो तौभी नहीं पाते हो क्योंकि तुम प्रार्थना
३ नहीं करते हो, हां, तुम प्रार्थना करते हो तौभी नहीं
पाते हो क्योंकि तुम बुरी बस्तुओंको मांगते हो इसलिये कि
४ अपने अभिलाषोंपर उन्हें उड़ावे। हे व्यभिचारीयो और
व्यभिचारिणीयो क्या तुम नहीं जानते हो कि संसारिक
लोगोंसे मीतभाव करना सो ईश्वरसे बैर रखना है?। जो कोई
संसारके लोगोंसे मीतभाव करने चाहता है सो ईश्वरका बैरी
५ है। क्या तुम समझते हो कि धर्म पुस्तक व्यर्थ बोलता है?
अथवा कि वही आत्मा, जो हममें रहता है, डाह कराता
६ है? सो नहीं, ईश्वर जो है सो अनुग्रह देता रहता है; हां, यह
कहा गया है कि ईश्वर अहंकारियोंके साम्ना करता है
७ परंतु दीनोंको अनुग्रह देता है। इसलिये ईश्वरको मानो;
शैतानके साम्ना करो, इससे वह तुमसे भाग जायगा;
८ ईश्वरके निकट आओ, इससे वह तुम्हारे निकट आवेगा।
हे पापियो, अपने हाथोंको शुद्ध करो; हे दो मनके लोगो,
९ अपने मनको शुद्ध करो। व्याकुल और शोकित हो बिलाप

करो; चाहिये कि तुम्हारा हंसना जो है सो रोना होवे और तुम्हारा आनंद जो है सो उदास होवे। प्रभुके सन्मुख दीन १० होओ, इससे वह तुमको ऊंचा करेगा।

अपबाद न कर्नेकी कथा।

हे भाईयो, एक दूसरेपर दोष न लगाओ; वही जो ११ अपने भाईपर दोष लगाता है और अपने भाईको दोषी ठहराता है सोई व्यवस्था पर दोष लगाता है और व्यवस्थाको दोषी ठहराता है; जो तू व्यवस्थाको दोषी ठहरावे तो तू व्यवस्थापर चलनेहारा नहीं है, तू दोष ठहरावनेहारा है। व्यवस्था देनेहारा एक है जो बचाने और नाश करने सकता १२ है; तो तू कौन है जो दूसरेको दोषी ठहरावता है?।

बेपारके औ दीर्घायुके बिषयमें बड़ाई न कर्नेकी कथा।

कोई कोई हैं जो यह कहते हैं कि आज अथवा कल १३ हम अमुक नगरको जाके एक बरस रहेंगे, और बेपार करके कमावेंगे; हे ऐसे कहनेहारो, तुम नहीं जानते हो १४ कि कल क्या होगा; तुम्हारा जीवन क्या है? वह धुआं सा है जो थोड़े समय तक दिखाई देता है, तब अदृश्य होता है; यही कहना तुमको उचित होता है, अर्थात कि जो ईश्वरकी १५ इच्छा होवे और हम जीते रहें तो हम ऐसा अथवा वैसा करेंगे। तुम इस भांति भरोसा करके आनंद करते हो, १६ परंतु ऐसा भरोसा बुरा है। जो कोई भला करना जानता १७ है और नहीं करता है सो पापी है।

५ पांचवां अध्याय।

बड़े धनवान् लोगोंको दंडका भय कर्नेको उचित होना।

हे धनवान लोगो, उनबिपतोंके लिये, जो तुमपर चली १ आतीं हैं, बिलाप करके रोओ। तुम्हारा धन जो है सो २ खा जायगा और तुम्हारे कपड़ोंमें कीड़े लगेंगे। तुम्हारे सोनेमें ३ और तुम्हारे रूपेमें मोरचा लगेगा; और उनका मोरचा तुम्हारे बिरुद्ध साक्षी देगा, और आगकी नाईं तुम्हारे शरीर

को खायेगा, हां, तुमने अंतके दिनोंके लिये धन बटोरा है ।
४ मजूरोंने तुम्हारे खेतोंको काटे हैं परंतु तुमने अन्याय करके उनको मजूरी नहीं दिई है; देखो, यही मजूरी जो है सो पुकारती है, और मजूरोंकी दोहाई जो है सो सेनापति
५ परमेश्वरके कानोंमें पैठा है । तुमने धरतीपर सुख भोग करके दिन काटा है, और खिलार ऊये हो, हां, तुमने
६ अपनेको पाला है जैसे बड़े खानेके दिनमें करते हो । तुमने धर्मी लोगोंको दोष ठहरायके मार डाला, और उन्होंने तुम्हारे साम्ना न किया ।

दुःखमें धार्मिक लोगोंको सहनेकी आवश्यकता ।

७ हे भाईयो, प्रभुके आनेतक धीरजवंत हो रहो । देखो, जबतक भूमीके अनमोल फल पक्का नहीं हो जावे, तबतक किसान धीरज करता रहता है, हां, जबतक अगला और पीछला जल न बरसे तबतक किसान धीरज करता रहता हैं;
८ सो तुम भी धीरज करो और अपने मनको दृढ़ करो; प्रभुके आनेका समय निकट है। हे भाईयो, एक दूसरे पर दोष
९ न लगाओ इसलिये कि तुम आपही दोषी न ठहराये जाओगे; देखो, बिचारकरनेहारा जो है सो द्वारपर खड़ा
१० है। हे मेरे भाईयो, उन भविष्यद्वक्ताओंको, जिन्होंने प्रभुके नाम लेके बात सुनाई, दुःख उठानेका और धीरज करनेका
११ नमुना जानो । देखो, हम धीरजवंत लोगोंको धन्य कहते हैं। तुमने आयुबके धीरजकी बात सुनी है, और तुमने देखा है कि अंतमें प्रभुने उसके बिषयमें क्या क्या किया, हां, तुमने देखा है कि प्रभु जो है सो नरम और दयावंत है ।

बिना अर्थके सौंह कर्नेका निषेध कर्ना

१२ हे मेरे भाईयो, चाहिये कि तुम पृथ्वीका, अथवा स्वर्गका, अथवा और बस्तुका नाम लेके सौंह न करो; चाहिये कि तुम्हारा हां जो है सो हां होवे और तुम्हारा ना जो है सो ना होवे इसलिये कि दंड न पाओ ।

पीड़ाके समय प्रार्थना करनी।

जो तुम्हारे बीचमें कोई दुःखित होय तो चाहिये कि १३ वह प्रार्थना करे; जो कोई आनंदित होय तो ईश्वरका भजन करे; और जो कोई बिराम होय तो मंडलीके प्रधानोंको १४ बुलावे और वे उसके बिषयमें प्रार्थना करें और प्रभुके नाम लेके उसको तेलसे मलें; और वही प्रार्थना जो बिश्वाससे १५ किया जावे सो बीमारको बचावेगा और प्रभु उसको चंगा करेगा; और जो उसने पाप किया हो तो उसको क्षमा किई जायगी। एक दूसरेसे क्षमा मांगो और एक दूसरेके १६ बिषयमें प्रार्थना करो इसलिये कि तुम चंगे हो जावो; धर्मी मनुष्यके मनकी प्रार्थनासे अति सफल होती है। एलिय १७ भविष्यद्वक्ताने, जिसका स्वभाव हम लोगोंके स्वभावके समान था, यही प्रार्थना किई कि जल न बरसे, इससें उस देशपर तीन बरस छः मासतक जल न बरसा; फिर उसने प्रार्थना १८ किई, तब आकाशसे जल बरसा और भूमीसे फल निकला।

भ्रान्तभाईयोंके फिरानेकी कथा।

हे भाईयो, जो तुम्हारे बीचमें कोई सत्य धर्मके मार्गको १९ छोड़ जाय, और कोई उसको फिरावे तो जाने कि वही २० जो एक पापीको भूलके मार्गसे फिराता है सो उसके आत्माको मृत्युसे बचावेगा और उसके बहुत पापोंको छिपावेगा।

पितरका पहिला पत्र।

१ पहिला अध्याय।

मंगलाचरण।

पितर जो यीशु ख्रीष्टका प्रेरित है सो उनही लोगोंको १ नमस्कार कहता है जो पन्त और गलातिया और कप्पदकिया और आशिया और बिथुनिया देशमें तितर बितर हुये २

हैं और ईश्वरको आगे ठहराई ऊई बातके अनुसार, पवित्र आत्माकी पवित्रतासे, प्यारे ठहराये गये हैं इसलिये कि व आज्ञाओंको मानें और यीसु खीष्टके लोहूसे छिड़के जावें तुमको बऊत अनुग्रह और शांति दिये जावें।

अनुग्रहके निमित्त ईश्वरका धन्यबाद कर्ना, औ भविष्यद्वक्ताओंसे परित्राणकी कथा।

३ हमारे प्रभु यीसु खीष्टका पिता ईश्वर जो है सो धन्य होवे; उसने बड़ी कृपा करके, मृतकोंमेंसे यीसु खीष्टके ४ जी उठनेके द्वारासे, हमको नया जनम दिया है इसलिये कि हम अक्षय और निर्मल और अजर अधिकारके जीवनदायक ५ भरोसा पावें। यही अधिकार जो है सोई स्वर्गमें तुम्हारे-ही लिये रखा गया है जो बिश्वास करके, ईश्वरकी सामर्थ्यसे, रक्षा किये गये हो इसलिये कि उस मुक्तीको पावो जो ६ अंतकालमें प्रकाशित होनेको तैयार है। तुम नाना प्रकारकी परीक्षाओंसे अब कुछ कुछ दुःख पाते हो तौभी मुक्तीके भरोसा ७ करके आनंद करो; हां, मैं कहता हूं कि प्रयोजन होता है कि तुम नाना प्रकारकी परीक्षाओंसे अब कुछ कुछ दुःख पावो इसलिये कि तुम्हारा परखे ऊये बिश्वास, जो आगके परखे ऊये क्षय सोनेसे अधिक मोलका है, यीसु खीष्टके प्रकाश होनेके समयमें प्रशंसा और आदर और गौरवके ८ योग्य पाया जायगा। यीसुको न देखके तुम प्यार करते ९ हो, हां, उसे न देखते ऊये उसपर बिश्वास करते हो; परंतु अपने बिश्वासका फल अर्थात आत्माओंकी मुक्तीको पाकरके तुम ऐसे बड़े आनंद करोगे कि बर्णनसे बाहिर और तेजसे १० भरा होगा। इस मुक्तीके बिषयमें, उन भविष्यद्वक्ताओंने, जिन्होंने उस अनुग्रहका समाचार आगेसे कहा जो तुमको ११ दिया गया है, खोज और बिचार करते रहे; हां, उन्होंने यह बिचार करते रहे कि खीष्टके आत्माने, जो उनमें था, किस समय अथवा किस भांतिके समय बताया जिसमें खीष्ट दुःख उठावेगा और इसके पीछे उसका गौरव कैसा

होगा। इन भविष्यद्वक्ताओंको यह जताया गया कि जो १२ बातें उन्होंके द्वारासे कहीं गईं थीं सो उन्होंके दिनोंमें नहीं परंतु हम लोगोंके दिनोंमें पूरीं किईं जायेंगीं; और येही बातें जो हैं सो उन्होंसे हमको प्रचारीं गईं जिन्होंने पवित्र आत्माकी उस शक्तीसे, जो स्वर्गसे आया है, तुमको सुसमाचार सुना दिया है; स्वर्गी दूत जो हैं सो इन सब बातोंका ध्यान करते रहते हैं।

ईश्वरके अमोघ वाक्योंके अनुसारसे आचरण कर्नेको पितरका बिनय।

सो अपने अपने मनको कमर सा बांधके सचेत होओ १३ और उस अनुग्रहके पानेका बड़ा भरोसा करते रहो जो यीशु खीष्टके प्रकाश होनेके समय तुमको दिया जायगा। आज्ञा माननेहारे संतानोंकी नाईं होओ और उन कुअभिला- १४ षाओंके अनुसार न करो जिन्होंके अनुसार तुमने अपनी १५ अज्ञानताके दिनोंमें किया; हां, जैसा वही, जिसने तुम्हें बुलाया, पवित्र है तैसे तुम भी अपने सारे बोल चालमें पवित्र १६ होओ क्योंकि यह लिखा है कि मैं पवित्र हूं सो तुम भी पवित्र होओ। जो तुम उसको जो पक्षपात न करके १७ हर एक मनुष्यके कर्मका न्याय करता है, अपने स्वर्गी पिता कहो तो भय सहित अपने प्रबासके समय काटो। तुम जानते १८ हो कि तुम, न क्षय बस्तुओंके द्वारासे अर्थात रूपे अथवा सोनेके द्वारासे अपने उस बिर्था ब्यवहारसे उद्धार किये गये हो जो तुमने अपने पित्रोंसे सीखा परंतु खीष्टके बड़े १९ मोलके लोहूके द्वारासे, जो निर्दोष और निष्कलंक भेड़के बच्चाके नाईं है उद्धार किये गये हो; वह (अर्थात खीष्ट) जो २० है सो संसारके रचनाके पहिलेसे ठहराया गया और इस पीछले समयमें तुम्हारे ही लिये प्रगट हुआ जो उस ईश्वर पर २१ बिश्वास करते हो जिसने उसे मृतकोंमेंसे उठाया और गौरव दिया इसलिये कि तुम ईश्वरपर बिश्वास और भरोसा करो। तुम सत्यधर्म पालन करके अपने अपने मनको, पवित्र आत्माके २२ द्वारासे, शुद्ध करो इसलिये कि बिन कपटसे भाईयोंको

प्यार करो, हां, शुद्ध मनसे एक दूसरेको बड़ा प्यार करो;
२३ क्योंकि तुमने न क्षय होनेहारे बीजसे परंतु अक्षय बीजसे, अर्थात ईश्वरकी अमर और सनातन बातसे नया जन्म पाया
२४ है। सब प्राणी जो है सो घासके समान है और मनुष्योंकी सब शोभा जो है सो घासके फूलके समान है, हां, घास जो है सो सूख जाती है और उसका फल जो है
२५ सो झड़ पड़ता है, परंतु ईश्वरकी बात जो है सो सदातक रहती है; और यही बात जो तुमको प्रचारी जाती है सोई वही है।

२ दूसरा अध्याय। • •

ख्रीष्टका भीतिमूलस्वरूप होना, और सेवकोंका मंदिरस्वरूप होना.।

१ सो सब प्रकारकी बुराईको, और सब प्रकारके छलको, और कपटको, और डाहको, और सब प्रकारकी बुरी बातोंको न
२ करके नये जन्मे बच्चोंके नाईं सत्य बात सा दूध पीनेकी इच्छा
३ करो इसलिये कि तुम बढ़ जावो क्योंकि तुमने प्रभुके अनुग्रह
४ के स्वादको जाना है। तुम उस जीवनदायक पाथरके निकट, जो मनुष्योंसे तुच्छ किया गया है परंतु ईश्वरसे प्यारा और अन-
५ मोल जाना जाता है, आके और जीते सा पाथर होके आत्मीक मंदिर बनाये गये हो और पवित्र याजक हो गये हो इसलिये कि उन परमार्थिक बलियोंको चढ़ावो जो ईश्वरको,
६ यीशु ख्रीष्टके द्वारासे, भावते हैं; क्योंकि धर्मपुस्तकमें यह लिखा है, अर्थात्, कि देखो, मैं सियोन पर्बतपर एक पाथर रख देता हूं जो कोनेका बड़ा पाथर है, और प्यारा है, और अनमोलका है; जो कोई उसपर बिश्वास करता है सोई लज्जित
७ नहीं होगा। यही पाथर जो है सो तुम्हारी ओर, जो बिश्वास करते हैं, अनमोलका है; परंतु उन्होंकी ओर, जो नहीं मानते हैं, यही पाथर जो थवइयोंसे तुच्छ किया गया है सो कोनेका
८ सिरा ऊआ है, और ठोकर सा ऊआ और ठेस दिलानेहारा चटान सा ऊआ है। वे लोग जो बातको नहीं मानते हैं

सोई ठाकर खाते हैं; वे इसके लिये भी ठहराये गये। परंतु ९ तुमही जो हो सो प्यारे लाग हो, और राजीय याजक हो, और पवित्र जाति हो, और मोल लिये ऊये लाग हो इसलिये कि उसीके गुणोंका प्रचार करो जिसने तुम्हें अंधेरेमेंसे बुलायके अपने आश्चर्य उज्यालेको पऊंचाया है। हां, तुमही जो आगे १० ईश्वरके लाग न थे सो अब उसके लाग ऊये हो और तुमही जो आगे दया पानेहारे न थे सो अब दया पानेहारे हो।

सुखकी अभिलाषाको त्याग कर्ना, औ शासनकर्ताओंके बशमें होनेकी आज्ञा।

हे प्यारो, मैं तुमको यही उपदेश देता हूं, अर्थात्, कि ११ प्रवासी और बिदेशीके नाईं हो मनके बिरुद्धकारी शरीरिक सुखाभिलाषाओंसे परे रहो; और अनदेशियोंके बीचमें १२ अपने बोल चालमें सत्य होओ, ऐसा कि वे, जो तुम्हें बुराई करनेहारे कहते हैं, तुम्हारे सत्यकर्मोंको देखके अनुग्रहके दिनमें ईश्वरकी स्तुति करें। प्रभुकी आज्ञा यही है, अर्थात्, १३ कि राज लोगोंके बशमें रहो, क्या राजाके, जो सबसे बड़ा है, क्या बिचार करनेहारोंके, जो राजासे ठहराये गये हैं, १४ कि कुकर्मीयोंको दंड देवे और सत्य कर्मीयोंकी प्रशंसा करें। ईश्वरकी इच्छा यही है, अर्थात्, कि तुम सत्यकर्म करके १५ निर्बुद्ध मनुष्योंको न देवे कि वे निंदा करें। तुम निर्बंध हो १६ तौभी अपनी निर्बंधताको ओट सा न बनाओ कि उसके भीतर जाके बुराई करो; परंतु ईश्वरके सेवक हो सबोंका १७ आदर करो; भाईयोंको प्यार करो; ईश्वरसे डरो; और राजाको मानो।

प्रभुवोंके बशम रहने दासोंके आज्ञा।

हे दासो, बड़ा आदर करके अपने स्वामियोंके बशमें रहो १८ केवल उन्होंके नहीं जो भले और नरम हैं परंतु उन्होंके भी जो सख्त हैं। जो कोई ईश्वरको मान्य करके अन्यायसे दुःख भोगे १९ तो यह महातमी है परंतु जो दोष करके मार खाने सहो २० तो कौनसा महातम है? हां, जो सत्यकर्म करके दुःख भोगने

२१ सहो तो यह ईश्वरकी ओरसे महातमी है। तुम दुःख भोगनेको बुलाये गये हो; हां, खीष्ट आपहीने तुम्हारी संती दुःख भोगके और अपनेको नमुना सा ठहरायके चला गया इस
२२ लिये कि तुम उसके पीछे पीछे चले आवो। उसने न पाप
२३ किया, न छलकी बात कही; निंदित हो निंदा न किई, दुःख पायके धमकाया नहीं परंतु अपने ताईं उसीको सोंपा जो
२४ न्यायसे बिचार करता है। उसने हमारे पापोंके दंडको, अपने शरीरमें, क्रूशपर पाया इसलिये कि हम पापकी ओर
२५ मरके धर्मकी ओर जीते रहें। उसके मार खानेसे तुम चंगे हो गये हो; हां, तुम भटके हुये भेड़ोंके नाईं थे परंतु अब अपने चरवाहे और प्रधानके निकट फिर आये हो।

३ तीसरा अध्याय।

स्त्री पुरुषके कर्त्तव्य कर्मोंका निर्णय।

१ हे स्त्रियो, अपने अपने स्वामीके बशमें रहो इसलिये कि जो कोई कोई स्वामी ईश्वरकी बात न मानें तो वे, बिन बातसे,
२ स्त्रियोंके बोल चालके द्वारासे, अर्थात् तुम्हारे पवित्र बोल चाल
३ को देखके और तुमसे आदर पाके मानने खेंचे जावें। चाहिये कि तुम्हारा सिंगार जो है सो न बाहिरीका होवे अर्थात् सिर गूंधनेका अथवा गहिना पहिन्नेका अथवा भड़कीला कपड़ा
४ पहिन्नेका परंतु भीतरीका होवे अर्थात् नरम और संतोषी मनका सिंगार, जो न बिगाड़ें जावें और ईश्वरके सन्मुख बड़े
५ मोलका है। इसी भांति अगले समयके पवित्र स्त्रीयोंने ईश्वर पर भरोसा करके और अपने अपने स्वामीके बशमें होके
६ अपनेको संवारा; इन्होंमेंसे सारा थी; उसने इब्राहीमको प्रभु कहके माना; उसकी (अर्थात् साराकी) पुत्रीआं तुमही
७ हो जो बिन भयसे सत्य कर्म करते रहतीं हो। हे स्वामियो, अपनी अपनी स्त्रीके संग, ज्ञानसे, रहा करो; उनको दूर्बल जानके आदर करो; और उनको, अपने सा, जीवनदायक

अनुग्रहके अधिकारी जानो इसलिये कि तुम्हारी प्रार्थनाका कोई अटकाव न होवे।

परस्पर प्रेम करनेकी कथा, और धर्मके लिये दुःख भोगनेकी कथा, और आत्मासे पहिले लोगों पर ईश्वरकी कथाका प्रचार होना।

निदान, चाहिये कि तुम सब एकही मनके होओ, एक ८ दूसरेके दुःख भोगो, भाईयों की सी प्रेम करो, दयावान होओ, और मिलनसार होओ; बुराई की सन्ती बुराई न करो, ९ निंदाकी सन्ती निंदा न करो, हां, आशीष करो; तुम जानते हो कि तुम आपही आशीष पानेको बुलाये गये हो। जो कोई १० चाहे कि जीवनसे आनंदित होवे और अच्छे दिनोंको देखे तो चाहिये कि अपनी जीभको बुरी बात और अपने होठोंको छलकी बात कहने न देवे; हां, कुकर्म न करके सत्य कर्म करे ११ और मिलाप की खोज करके प्रेम करता रहे। प्रभुके नेत्र १२ जो हैं सो धर्मी लोगोंपर और उसके कान जो हैं सो उनकी प्रार्थनाओं की ओर लगे रहते हैं, परंतु प्रभुका मुख जो है सो कुकर्मीयोंसे फिरा हुआ है। जो सत्य कर्म करते रहो तो १३ वह कौन है जो तुम्हारी हानी कर सकता है? हां, जो धर्मके १४ लिये दुःख पावो तो धन्य हो; उनसे डरो मत और घबरा न जाओ; हां, अपने अपने मनसे प्रभु परमेश्वरका सन्मान १५ करो, और सदा तैयार हो रहो कि नरमतासे और सन्मान से हरएकको उत्तर देवो जो तुमसे यह पूछे कि तुम्हारे भरोसाका कारण जो है सो क्या है?। सच्चे होओ कि वे जो १६ तुम्हें कुकर्मी कहते हैं तुम्हारे उस भले बोल चालको, जो खीष्ट-पर बिश्वास करनेके द्वारासे होता है, देखके लज्जित हो जावेंगे। जो ईश्वरकी इच्छा यों है कि तुम दुःख पावो तो भला १७ करके दुःख पाना उससे अच्छा है कि बुरा करके दुःख पावो। खीष्ट जो है सो आपहीने भी पापोंके लिये एक बार दुःख भोगा; १८ हां, वही जो धर्मी था सो अधर्मीयोंके सन्ती दुःख भोगा इस लिये कि हमको ईश्वरके निकट पहुंचावे; वह तो शरीरमें हो मरवाया गया परंतु आत्मासे जिलाया गया। आत्माके द्वारा १९

२० से उसने उन प्राणीयोंको, जो कैदमें हैं, जाके प्रचारा; ये प्राणी जो हैं सोई, जिन दिनोंमें ईश्वर देरी करता रहे, नमान्नेहारे थे, अर्थात् जिन दिनोंमें नोहने उस जहाजको
२१ बनाया जिसमें थोड़े अर्थात् आठ जनें जलसे बच गये। वह जल जो है सो उस डुबकी का नमुना था जो हमको बचाता है; हम डबकी के उस जलसे, जो शरीरके मैलको दूर करता है, नहीं बच जाते हैं परंतु ईश्वरके सन्मुख सच्चे मनकी बातोंसे,
२२ अर्थात् यीशु खीष्टके जी उठनेसे बच जाते हैं। वह स्वर्गमें चढ़के ईश्वरकी दहिनी ओर बैठा है और सब दूतें और प्रधान और अधिकारी उसके बशमें हैं।

४ चौथा अध्याय।

खीष्टके नाईं पाप पक्षमें मृत होनेका बिनय।

१ खीष्टने शरीरमें हो हमारी सन्ती दुःख भोगा; इसलिये तुम भी दुःख भोगनेको तैयार हो रहो। जिस किसीने शरीर
२ में दुःख भोगा है सोई पापसे अलग ऊआ है यहांतक कि जब लग जीता न रहता तबलग मनुष्योंके कामाभिलाषाओंके अनुसार नहीं परंतु ईश्वरकी इच्छाके अनुसार चलता रहता
३ है। चाहिये कि जो दिन बीत गये हैं सो बस होवें जिन्होंमें हमने देवपूजकोंके समान असुची, कामी, मतवाले, जमघटी,
४ पेटू, और घिन्न देवपूजक थे॥ वे आश्चर्य मानके निंदा करते हैं क्योंकि तुम उनके संग बुराई की एकही ओर तक नहीं
५ दौड़ते हो; परंतु वही जो जीवतों और मृतकोंके बिचार
६ करनेपर तैयार है उनसे लेखा लेगा। इसलिये उन लोगोंको भी, जो मर गये हैं, सुसमाचार प्रचारा गया; उनके शरीर जो हैं सो मनुष्योंकी सी मर गये हैं परंतु उनके आत्मा जो हैं सो ईश्वरके संग जीते रहते हैं।

धर्मके आचरण करनेका बिनय।

७ सबोंका अंत निकट है; इसलिये सचेत होओ और प्रार्थना
८ करके चौकस होओ। बिशेष करके एक दूसरेको बड़ा प्यार

करो; प्रेम जो है सो बहुत पापोंको ढांपता है। बिना ९ कुड़कुड़ाये एक दूसरेकी पहुनाई करो। तुमने जिस रीतिका अनुग्रह दान पाया है उस रीतिके अनुसार, ईश्वरके नाना १० प्रकारके दानोंके भंडारी हो, एक दूसरेको बांट देवे। जो कोई ११ कुछ कहे तो चाहिये कि ईश्वरके बचनके अनुसार कहे; जो कोई कुछ दिलावे तो चाहिये कि ईश्वर की दिई हुई सामर्थ के अनुसार दिलावे इसलिये कि सब बातोंमें ईश्वर की महिमा जो है सो यीशु खीष्टके द्वारासे, प्रकाशित होवे। उसकी महिमा और पराक्रम सदातक प्रकाशित होवे; आमीन।

धर्मके लिये दुःख भागियोंके ढाढ़सकी कथा कहनी।

हे प्यारो, उस तानेहारी आगसे, जो तुम्हारी परीक्षा करने १२ को तुम्हांके बीचमें जलती हुई है, घबरा न जाओ; कोई आचंभेकी बात तुमपर आन नहीं पड़ी है; हां, आनंद करो १३ कि तुम उन दुखोंके, जो खीष्टके लिये हैं, भागी हुये हो; उसकी महिमा प्रकाशित होनेके समयमें तुम बड़े आनंदित होओगे। जो खीष्टके नामके लिये तुम निंदित हो तो धन्य हो; गौरव १४ और ईश्वरका आत्मा जो है सो तुमपर रहते हैं; वह उनसे निंदित होता है परंतु तुमसे यशपति होता है। चाहिये कि १५ तुममेंसे कोई हत्या करनेसे, चोरी करनेसे, बुराई करनेसे औरोंके कामपर हाथ लगानेसे दंड न पावे; परंतु जो कोई १६ खीष्टियान होनेके कारणसे दंड पावे तो लज्जित न होय, हां, ऐसे दंड पानेसे ईश्वरका गुणानुबाद करे। समय आ पहुंचा १७ है जिसमें ईश्वरके मंदिर पर बड़ा क्लेश पड़ेगा; जो हमपर पड़े तो उनकी दशा कैसी होगी जो सुसमाचारकी बात न मानते हैं?। जो धर्मी लोग कठिनसे बच जावे तो अधर्मी और पापी लोग कहां शरण पावेंगे?। चाहिये कि वे लोग जो ईश्वर १८ की इच्छाके अनुसार दुःख भोगते हैं सो सत्यकर्म करके अपने अपने प्राणको सच्चे सृजन्हारके हाथमें सोंप देवें।

५ पांचवां अध्याय।

प्राचीन लोगोंके कर्तव्य कर्मका वर्णन।

१ मैं जो मंडलाध्यक्ष, और खीष्टके दुःखोंका साक्षी, और उस महिमाका, जो प्रकाशित होगी, भागी हूं, उन मंडलाध्यक्षों
२ को, जो तुम्होंके बीचमें हैं, यह उपदेश देता हूं, अर्थात्, कि ईश्वरके उस झुंडको, जो तुम्होंके संग है, पालन करो; उनकी रक्षा करो, न कुइच्छासे परंतु सुइच्छासे, न मलीन लाभके
३ लिये परंतु सारे मनसे। और ईश्वरके अधिकारोंके अधिकारी
४ सा नहीं परंतु झुंडको नमुना सा होओ; सो तो प्रधान पालकके प्रकाशके समयमें तुम तेजस्वी और अक्षय मुकुट पाओगे।

युबोंके कर्मका बिबरण।

५ हे जवानो, बूढोंके बशमें रहो, हां, सबही जो हो सो दीनता सा अलंकार पहिनके एक दूसरेके बशमें रहो; ईश्वर जो है सो अहंकारियोंके साम्ना करता है परंतु दीन लोगोंको
६ अनुग्रह देता है। सो तो ईश्वरके बली हाथके तले दीन हो
७ रहो इसलिये कि वह अपने समयपर तुमको ऊंचा करे। जो बोझा तुम्हारा है सो ईश्वरपर रखो; वह तुम्हारे बिषयमें
८ चिंता करता है। सचेत होओ और जागते रहो, तुम्हारा बैरी शैतान जो है सो गरजते हुये सिंहके नाईं ढूंढता फिर-
९ ता है इसलिये कि किसीको खा लेवे; खीष्टके धर्ममें स्थिर हो शैतानके साम्ना करो; तुम जानते हो कि तुम्हारे भाई जो संसारमें हैं सोई ऐसा दुःख उठाते हैं।

मंगल प्रार्थना।

१० सब प्रकारके अनुग्रह देनेहारा ईश्वर, जिसने अनंत गौरव पानेको हमें, खीष्ट यीशुमें, बुलाया है, आपही तुमको, जिन्होंने कुछ कुछ दुःख सह लिया है, सिद्ध, और स्थिर,
११ और बली, और अटल करे। उसका गौरव और पराक्रम सदाही सदा प्रकाशित होवे। आमीन।

समाप्तको कथा, औ नमस्कार भेजना ।

मैंने सिलवानके हाथसे, जो मेरी समझमें सच्चा भाई है, १२ तुमको ये थोड़ीसी बातें लिख भेजा है इसलिये कि मैं उपदेश दूं और यह साक्षी दूं कि ईश्वरका सच्चा अनुग्रह वही है जिसमें तुम सुस्थिर रहते हो । प्यारे लोग जो बाबिलमें रहते १३ हैं और मेरा पुत्र मार्क जो है, सो तुमको नमस्कार करते हैं । एक दूसरेको, प्रेमका चुमा लेकर, नमस्कार कहो । तुम १४ सबको, जो खीष्ट यीशुपर बिश्वास करते हो, शान्ति होवे । आमीन ।

पितरका दूसरा पत्र ।

---

१ पहिला अध्याय ।

मंगलाचरण ।

शिमोन पितर जो यीशु खीष्टका दास और प्रेरित है सो उनको, जिन्होंने हमारे ईश्वरके अर्थात बचानेहारे यीशु खीष्टके धर्मके द्वारासे, हमारे समान बहुत मोलका बिश्वास पाया है, पत्र लिखता है । ईश्वरके और हमारे प्रभु यीशुके जाननेके द्वारासे बहुतसा अनुग्रह और आराम तुमको दिये जावें ।

अनुग्रहके निमित्त कृतज्ञता, औ नाना धर्म कर्म करनेमें पितरके बिनय करना ।

हम उसीको जानते हैं जिसने बड़ी बड़ी कृपा करके हमको बुलाया है ; उसीके द्वारासे ईश्वरने अपनी शक्तिसे हमको जो कुछ कि जीविकाके और भक्तताके लिये प्रयोजन है, दिया है । बड़े बड़े और अति मोलकी बाचा भी हमको दिई गई हैं इसलिये कि तुम उनके कारणसे संसारीक लोगोंकी कुइच्छा-

पापोंके कर्मसे भाग निकलके ईश्वरके स्वभावके भागी हो
५ जावो। इसीलिये तुम बजत जतन करके अपनी सच्चाईपर
६ सत्यकर्म, और सत्यकर्मपर ज्ञान, और ज्ञानपर संजम, और
७ संजमपर धीरज, और धीरजपर भक्तता, और भक्ततापर
भाईयोंका प्रेम, और भाईयोंके प्रेमपर सबोंका प्रेम लगा दो;
८ जो ये सब तुममें रहें और बढ़े तो वे तुमको हमारे प्रभु यीसु
खीष्टके पहचानमें आलस्यी और बिफल होने न देंगे; परंतु
९ जिस मनुष्यमें ये बातें नहीं हैं सो अपने नेत्र बंद करके अंधा
१० है और अपने अगले पापोंसे शुद्ध होनेको भूला है। हे भाई-
यो, तुम बुलाये जये और चुने जये हो; यही बात स्थिर
करनेका जतन करो। ऐसे करनेसे तुम कभी न हट जाओगे;
११ परंतु हमारे बचानेहारे प्रभु यीसु खीष्टके अनंत राजमें
तुमको आनंदसे प्रवेश करनेको दिया जायगा।

अपने मरनेकी कथा, औ खीष्टके सत्य त्राणकर्त्ता होनेकी कथा।

१२ तुम ये बातें जानते हो और उनको सत्य बूझके सुस्थिर
रहते हो तौभी मैं तुमको सदा स्मरण करानेको मन लगाऊंगा;
१३ हां, मैं यह उचित जानता हूं कि जबलों मैं इस तंबू सा
शरीरमें रहूं तबलों तुमको स्मरण कराके कराके रहूं क्योंकि
१४ मैं जानता हूं कि उसबातके अनुसार, जो हमारे प्रभु
यीसु खीष्टने मुझसे कहा है, मुझे इस तंबू सा शरीरको जलद
१५ छोड़ना होगा। सो मैं जतन करता हूं कि तुम मेरे मरनेके
१६ पीछे, इनबातोंका स्मरण करते रहो। हमने तुमको अपने
प्रभु यीसु खीष्टके पराक्रम और आनेकी बात सुनानेमें बनाई
जई कहानियां नहीं सुनाईं; हमने उसकी (अर्थात यीसुकी)
१७ महिमाको अपने आंखोंसे उसीसमय देखा जिससमय उसने
पिता ईश्वरसे आदर और गौरव पाया क्योंकि अत्यंत तेजमेंसे
उसके बिषयमें यही आकाशबाणी जई, अर्थात, यही मेरा
१८ प्यारा पुत्र है जिससे मैं बड़ा प्रसन्न हूं; जिससमय हम उसके
संग पबित्र पर्बतपर थे उसीसमय हमने स्वर्गमेंसे यही आकाश-
१९ बाणी सुनी। हम लोगके निकट एक और बड़ी पक्की बात भी है,

अर्थात, आगमकी बात है जो उस दीपकके समान है जो अंधेरे स्थानमें उज्याला देता है; जबलों पौ न फटे और प्रातःकालका तारा तुम्हारे मनोंमें न उठे तबलों इसी बातपर मन लगाना तुमको भला होगा। यह विशेष करके जानो कि २० धर्म पुस्तकके आगमकी बातें जो हैं सो आपसे नहीं खुलतीं हैं क्योंकि मनुष्यकी इच्छासे आगमकी बात कभी नहीं आई २१ परंतु ईश्वरके पवित्र लोगोंने पवित्र आत्माकी शिक्षासे बात कही।

२ दूसरा अध्याय।

झूठे भविष्यद्वक्ताओंके विषयकी कथा।

आगेके लोगोंके बीचमें झूठे भविष्यदक्ता थे; इसरीति १ तुम्हारे बीचमें झूठे उपदेशक होंगे जो छल करके वही बात सिखावेंगे जिससे बिनाश सा दंड होगा, हां, वे उस प्रधानको, जिसने उन्हें मोल लिया, झूठा कहके अकस्मात अपनेयोंका बिनाश सा दंड करावेंगे; बहुतेरे उनकी बुराईयोंके पीछे हो २ लेंगे जिनके कारणसे सचाईका मार्ग निंदित किया जायगा; और लोभी हो वे बनाई हुई बातोंके द्वारासे तुमसे बहुत ले ३ लेंगे; परंतु वही दंड जो आगेसे कहा गया सो उनको जलद दिया जायगा और उनके बिनाशकी देरी नहीं होगा।

उनको दोष औ दंड औ धार्मिकोंके रक्षाकी कथा।

जो ईश्वरने पापी दूतोंको क्षमा न करके उन्हें नरकमें डाल ४ दिया और उन्हें अंधकार सा जंजीरोंसे बांधके बिचारके दिन-तक रखता है, तो उन झूठे उपदेशकोंको क्षमा न करेगा। और भी उसने प्राचीन जगतको न क्षमा किया; हां, उसने ५ नाहको, जो धर्मका आठवां प्रचार करनेहारा था, बचा लिया, तौभी सब और अधर्मीयोंको जगतके संग जलमें डुबा दिया। और भी उसने सिदोम और आमोरा नगरोंको भस्म ६ करके बिनाश सा दंड दिया और उन्हें नमुना सा ठहराया कि जो पीछे अधर्मी होवें सो जानें कि अधर्मीयोंका दंड कैसा

७ होगा; तौभी उसने लोटको, जो धर्मी हो नगरोंके अशुद्ध
८ लोगोंके बोल चालसे दुःखित था, बचाया; हां, धर्मी लोटने
उन लोगोंके बीचमें रहते हुये और उनकी अधर्मी बातोंका
सुनते और उनके अधर्मी कर्मोंको देखते हुये दिन दिन अपने
९ सच्चे मनमें बड़ा दुःखित था। ईश्वर जो है सो धर्मीयोंको
परीक्षासे उद्धार करनेको और अधर्मीयोंको बिचारके दिनतक
१० दंड पानेको रखने जानता है, हां, ईश्वर जो है सो उनहींको,
जो कामकी अभिलाषाओंमे कुकर्म करते रहते हैं और अधि-
कारीयोंको तुच्छ करते हैं, बिचारके दिनतक दंड पानेको रखने
जानता है। ये मनुष्य जो हैं सो निडर हैं, और स्वच्छन्द हैं,
११ और राज लोगोंको निंदा करने नहीं डरते हैं; वे स्वर्गी
दूतोंके नाईं, जो उनसे बहुत बली और सामर्थी हैं, नहीं हैं,
क्योंकि स्वर्गीदूत जो हैं सो प्रभुके सन्मुख पापी दूतोंको निंदा
१२ नहीं करते और दोष नहीं लगाते हैं; परंतु येही मनुष्य जो
हैं सो उन पशुओंके नाईं हैं जो निर्बुद्धी और जंगली हैं और
केवल पकड़े जाने और मार डाले जानेके योग्य हैं; वे उन-
बातोंको, जिन्हें नहीं बूझते हैं, निंदा करके अपने अपने अधर्मका
१३ फल पाके अपनी दुष्टतासे नष्ट होंगे। वे आसुची और खोटे हो
दिन भर रंग रस करना सुख जानते हैं; और सुख भोगी हो
१४ अपने कपटोंसे तुमसे बड़े खाना पाते पाते रहते हैं। वे औरोंकी
स्त्रीयोंपर आंखें लगाते हैं और पाप करनेसे परे नहीं रहते
हैं; वे अनस्थिर प्राणियोंको बहकाते हैं; और उनके मन जो
१५ हैं सो लोभ करनेमें बड़े चालाक हैं। वे सरापित लोग हैं; वे
सीधे मार्गको छोड़के भटक गये हैं और बिसोरके पुत्र
बलियमके मार्गको पकड़े हैं जिसने अधर्मताकी मजूरी पाने
१६ चाहा; यही भविष्यद्वक्ता (अर्थात बलियम) अपने अपराधके
लिये डांटा गया क्योंकि गूंगा गधा जो था सो मनुष्यके शब्दसे
१७ बोलके उसकी बौड़ाहापनको रोक रखा। वे सूखे कूआं सा हैं
और येही मेघ सा हैं जो चौवाईसे उड़ाये जाते हैं; वे रखे
१८ जाते हैं कि घोर नरकमें डाले जावें। वे फूलके हो और अनर्थ

बातं कहते ऊये उन्हें जो थोड़े दिनसे भूलानेहारोंसे बच निकले, बहकाते हैं यहां तक कि वे कामाभिलाषोंके अनुसार चलते हैं। वे औरोंको उद्धार पानेकी बाचा करते हैं, तौभी वे १९ आपही दुष्टताके दास हैं क्योंकि जो कोई किसीसे जीता गया है सोई उसीका दास है। जो वे, जो बचानेहारे २० प्रभु यीशु खीष्टकी पहचानके द्वारासे संसारकी मलीनतासे भाग निकले, उसमें फिर फंस जावें और उसके वशमें होवें तो उनकी पीछली दशा जो है सो उनकी पहिली दशासे अधिक बुरी है। जो कोई धर्मके मार्गको जानके उस पवित्र आज्ञासे, २१ जो उसको दिई गई थी, हट जावे तो भला होता कि कभी न जानता। उसमें यह बात सच्ची ठहराई गई है, अर्थात २२ कि कुत्ता जो है सो अपने छांड़को गया है और वही सूअर, जो धोया गया था, कीचड़में फिर लोटने लगा है।

३ तीसरा अध्याय।

खीष्टके आनेकी औ संसारके जलनेकी कथा।

हे प्यारो, मैं तुमको यह दूसरा पत्र अब लिखता हूं, इस १ लिये कि मैं दोनों पत्रोंकी बातोंके द्वारासे स्मरण कराके तुम्हारे सरल मनको जागा देऊं ऐसा कि उन बातोंको, जो पवित्र २ भविष्यद्वक्ताओंसे आगे कही गईं, और उस आज्ञाको, जो हमसे, जो बचानेहारे प्रभुके प्रेरित हैं, दिई गई, स्मरण करो। पहिले यह जानो कि पीछले दिनोंमें निंदा करनेहारे ३ होंगे जो अपने कुअभिलाषाओंके अनुसार करके कहेंगे कि ४ उसके (अर्थात यीशुके) आनेकी बात कहां है? जबसे पितृ लोग सो गये तबसे सब कुछ, जैसा सृष्टिके आरंभसे ऊये हैं वैसेही अबतक रहते हैं। वे जो उसका आना नहीं चाहते हैं ५ सो नहीं जानते हैं कि ईश्वरकी बाणीसे आकाश आगेसे ऊये और पृथ्वी जलमेंसे और जलके द्वारासे ऊई; जिनके द्वारासे ६ वही संसार जो तब ही था सोई जलमें डूबके नष्ट ऊआ; परंतु येही आकाश और पृथ्वी जो अब ही हैं सोई, उसकी ७

बातसे, रक्षित किये गये हैं इसलिये कि वे जलाये जायेंगे, हां, वे उसी दिनतक रक्षित किये जायेंगे जिसमें अधर्मी लोग
८ बिचार किये जायेंगे और दंड पावेंगे। सो, हे प्यारो, यह जानो कि प्रभुके निकट एक दिन जो है सो सहस्र बरसके समान है और सहस्र बरस जो हैं सो एक दिनके समान
९ है। कोई कोई कहते हैं कि प्रभु अपने आनेकी बात पूरी करनेको देरी करते हैं; सो नहीं, परंतु वह हम लोगोंके लिये देरी करता है; वह नहीं चाहता है कि कोई नष्ट हो जायगा, हां वह चाहता है कि सबही मन फिरावे।
१० जिसरीति रातको चोर आता है उसरीति प्रभुके दिन आवेगा; उस समय आकाश मंडल जो है सो बड़े धूमसे जाता रहेगा और समस्त तत्व जो हैं सो जलकर गल जायेंगे, हां, पृथ्वी जो है और जो कुछ कि उसमें हैं सोई सब जल जायेंगे।
११ जो ये सब लोप हो जायेंगे तो चाहिये कि चाल चालमें और ईश्वरकी सेवा करनेमें बड़े पवित्र होते रहो और कि
१२ ईश्वरके उस दिनके आनेकी बाट जोहते और जी करते रहो, जिसमें आकाश जलकर गल जायेंगे और समस्त तत्व
१३ जलके पिघल जायेंगे। परंतु हम, उसकी बाचाके अनुसार, नये आकाश मंडल और नयी पृथ्वीकी, जिनमें धर्म रहता है, बाट जोहते रहते हैं।

धर्मका आचरण कर्नेके लिये पितरका बिनय कर्ना।

१४ सो, हे प्यारो, तुम जो इन बातोंकी बाट जोहते हो सो जतन करो कि निष्कलंक और निर्दोष होओ और मिलाप-
१५ में प्रभुसे पाये जावो; और हमारे प्रभुके आनेकी देरी जो है सो त्राणके लिये जानो; सोई हमारे प्यारे भाई पौलने भी, उस ज्ञानके अनुसार जो उसको दिया गया, तुमको लिख
१६ दिया, हां, उसने अपने सब पत्रोंमें इन बातोंके विषयमें कुछ कहा है। उनमें कोई कोई बातें हैं जिनका समुझना कठिन है; वे जो अज्ञान और अनस्थिर हैं सो ऐसी बातोंको और धर्म पुस्तककी और बातोंको भी यहांतक उलटाते हैं कि

वे अपनेको नष्ट करते हैं। सो, हे प्यारो, तुम आगेहीसे ये १७ सब बातें जानते ऊये सावधान होओ, न होय कि औरोंके १८ समान, अधर्मियोंकी चूकमें पड़के अपने पक्के धर्मको छोड़ जावो; हां हमारे बचानेहारे प्रभु यीशु खीष्टके अनुग्रह और पहचानमें बढ़ते रहो। अबही और सदाही सदा उसका गौरव प्रकाशित होवे। आमीन।

योहनका पहिला पत्र।

१ पहिला अध्याय।

वाक्यरूप खीष्टका बिबरण।

जो कुछ कि हमने जीवनदायक बचनके बिषयमें पहिलेसे १ सुना है, जो कुछ कि हमने अपने नेत्रोंसे देखा है, जो कुछ कि हमने ध्यान करके देखा है, और जो कुछ कि हमने अपने हाथोंसे छूआ है, सोई हम जताते हैं। जीवन जो है २ सो प्रकाशित ऊआ; हमने उसे देखा है; और हम साक्षी देते हैं; और हम उस अनंत जीवनको, जो पिताके निकट था और हमारे निकट प्रकाशित ऊआ, तुम्हें जताते हैं। हां, ३ जो कुछ कि हमने देखा है और सुना है सो हम तुमको जताते हैं इसलिये कि हमारे संग तुम्हारी मित्रता होवे; हमारी मित्रता जो है सो पिताके और उसके पुत्र यीशु खीष्टके संग है। हम ये बातें तुमको लिखते हैं इस लिये कि ४ तुम्हारा आनंद संपूर्ण हो जावे।

उसके सहित हमारी मित्रता, और उससे पाप मोचन होना।

वही संदेश जो हमने उससे पाया है और तुमको सुनाते ५ हैं सो यही है, अर्थात, कि ईश्वर जो है सो उजियाला सा है और उसमें कुछ अंधकार नहीं है। जो हम अंधकारमें ६ चलते रहते ऊये कहें कि हमारी मित्रता जो है सो ईश्वरके

संग है तो हम झूठ बोलते हैं, हम सत्य कर्म करनेहारे ७ नहीं हैं। ईश्वर उज्यालेमें रहता है; जो हम उज्यालेमें चलते रहें तो हम आपसमें मित्रता करते हैं, और ईश्वरके पुत्र यीशु ख्रीष्टका लोहू जो है सो हमको सब प्रकारके पाप ८ से शुद्ध करता है। जो हम कहें कि हम निष्पापी हैं तो हम अपनेको धोखा देते हैं और सचाई जो है सो हममें रहती ९ नहीं है। जो हम अपने पापोंको मान लेवें तो ईश्वर सच्चा और न्यायी है, वह हमारे पापोंको क्षमा करके हमको १० सब प्रकारकी बुराईसे शुद्ध करेगा। जो हम कहें कि हमने कुछ पाप न किया है तो हम ईश्वरको झूठी ठहराते हैं, और उसकी बात जो है सो हममें नहीं रहती है।

२ दूसरा अध्याय।

ख्रीष्टको हमारे पापका प्रायश्चित्त होना।

१ हे मेरे बच्चो, मैं तुमको ये बातें लिखता हूं इसलिये कि पाप न करो। तौभी जो कोई पाप करे तो यीशु ख्रीष्ट जो सच्चा है २ सो पिताके निकट हमारा सहायक है। वह हमारे पापोंके लिये प्रायश्चित है, और केवल हमारे पापोंके लिये नहीं, वह सब संसारके पापोंके लिये प्रायश्चित्त है।

ईश्वरकी आज्ञा पालनेमें उसके तत्वज्ञानका चिन्ह होना।

३ जो हम उसकी आज्ञाओंको मानते रहते हैं तो इससे हम ४ जानते हैं कि हमने उसे जाना है। जो कोई, जो उसकी आज्ञाओंको नहीं मानता रहता है, कहे कि मैंने उसे जाना ५ है तो वह झूठा है और उसमें सचाई नहीं रहती है। सच है कि जो कोई उसकी बात मानता रहता है सोई उसको ६ पूरे प्रेमसे प्यार करता है; इससे हम जानते हैं कि हम उसके लोग हैं। जो कहता है कि मैं उसीका हूं तो चाहिये कि जैसा वह चलता रहा तैसा तू चले।

परस्पर प्रेम करनेकी कथा।

७ हे भाइयो, मैं तुमको नयी आज्ञा नहीं लिखता हूं; वही

पुरानी आज्ञा जो पहलेसे तुमको मिली सोई लिखता हूं; पुरानी आज्ञा जो है सो वही बात है जो तुमने पहलेसे सुनी है। हां, मैं वही नयी आज्ञा लिखता हूं जो यीसुके ८ और तुम्हारे बिषयमें सत्य है क्योंकि अंधकार गया है और सत्य उज्याला अब चमकता रहता है। जो कोई अपने भाई- ९ का बैर करते रहते ऊये कहता है कि मैं उज्यालेमें चलता रहता हूं सोई अबतक अंधकारमें चलता रहता है। जो १० कोई अपने भाईको प्यार करता रहता है सोई उज्यालेमें चलता रहता है और ठोकर नहीं खाता है। परंतु जो ११ कोई अपने भाईका बैर करता रहता है सोई अंधकारमें चलता रहता है, और नहीं जानता है कि कहां चला जाता है क्योंकि अंधकार जो है सो उसके नेत्रोंको देखने नहीं देता है।

संसारको प्रेम करनेका निषेध।

हे बच्चो, मैं तुमको लिखता हूं क्योंकि तुम्हारे पाप जो हैं सो १२ उसके नामके द्वारासे क्षमा किये गये हैं। हे पित्रो, मैं तुमको १३ लिखता हूं क्योंकि तुमने पहलेसे उसे जाना है। हे जवानो, मैं तुमको लिखता हूं क्योंकि तुमने पापात्माको हटाया है। हे बच्चो, मैं तुमको लिखता हूं क्योंकि तुमने पिताको १४ जाना है। हे पित्रो, मैं तुमको लिखता हूं क्योंकि तुमने पहिलेसे उसे जाना है। हे जवानो, मैं तुमको लिखता हूं क्योंकि तुम बलवान हो, और ईश्वरकी बात तुममें रहती है, और तुमने पापात्माको हटाया है। संसारको और १५ संसारकी वस्तुओंको मत चाहो; जो कोई संसारको चाहे तो पिता को प्यार नहीं करता है। सब कुछ जो संसारमें १६ है, अर्थात शरीरका सुख और नेत्रोंका सुख और बड़े नामका सुख जो है सो पितासे नहीं; परंतु संसारसे होते हैं। १७ संसार जो है और उसका सुख जो है सो चले जाते हैं; परंतु वही जो ईश्वरकी इच्छाके अनुसार चलता है सोई सदालक रहता है।

झूठे ख्रीष्टसे सावधान होना और सच्चे ख्रीष्टमें विश्वास कर्नेका निवेदन कर्ना।

१८ हे बच्चो, पीछला समय आन पहुंचा है; तुमने सुना है कि पीछले समयमें ख्रीष्ट का कोई बैरी आवेगा; सो, अबही ख्रीष्टके बहुत बैरी हुये हैं; इससे हम जानते हैं कि अबके १९ समय जो है सो पीछला समय है। वे हममेंसे निकल गये हैं परंतु वे हमोंकी ओरके नहीं थे; जो वे हमोंकी ओरके होते तो हमोंके संग रहते; परंतु वे हमोंको छोड़के निकल गये हैं इसलिये कि प्रगट होवे कि वे हमोंकी ओरके २० नहीं हैं। तुमही जो हो सो पवित्र आत्मासे दान पाये २१ हो जिसके द्वारासे सब कुछ जानते हो। मैंने तुमको न इसकारणसे लिखा है कि तुम सच्चाईको नहीं जानते हो परंतु इसकारणसे लिखा है कि तुम उसे जानते हो और २२ कि कोई झूठ सच्चाईमेंसे नहीं है। वही जो कहता है कि यीशु जो है सो ख्रीष्ट नहीं है, सोई झूठा है। वही जो कहता है कि न पिता, न पुत्र है, सोई ख्रीष्टका बैरी २३ है। जो कोई कहता है कि पुत्र नहीं है सोई पिताको नहीं मानता है; परंतु जो कोई पुत्रको मानता है सोई पिताको २४ मानता है। जो कुछ कि तुमने पहलेसे सुना है सो अपनेमें रहने दो। जो वही बात जो तुमने पहिलेसे सुना है, तुममें रहे तो तुम पुत्रकी ओर और पिताकी ओर रहोगे; २५ और वही बाचा जो उसने हमसे किई सो अनंत जीवनकी २६ है। मैने ये बातें तुम्हें उनके बिषयमें लिखा है जो तुमको २७ भुलाने चाहते हैं। वही दान जो तुमने उससे पाया है तुममें रहता है ऐसा कि प्रयोजन नहीं है कि कोई तुमको सिखावे। वही दान जो तुमको सब बातोंके बिषयमें सिखाता है सोई सत्य है और झूठ नहीं; जैसा उसने तुम्हें २८ सिखाया वैसा उसमें रहो। हे बच्चो, उसमें रहो, तो जिस समय वह प्रकाशित होवेगा उस समय हम निर्भय होवेंगे २९ और उसके सम्मुख उससे लज्जित नहीं किये जायेंगे। जो तुम

जानते हो कि वह सच्चा है तो तुम समझते हो कि जो कोई धर्मी कर्म करता है सो उससे उत्पन्न हुआ है।

३ तीसरा अध्याय।

हम पर ईश्वरका अनुग्रह, औ पापको छोडनेकी, औ परस्पर प्रेम कर्नेकी औ धर्म कर्म कर्नेकी आवश्यकता।

देखो, पिताने हमको कैसा प्यार किया है कि हम ईश्वरके पुत्र कहलावें। परंतु जगतके लोगोंने उसे नहीं जाना है; इसलिये हमको भी नहीं जानते हैं। हे प्यारो, अब हम ईश्वरके पुत्र हैं; परंतु नहीं जाना जाता है कि पीछे हम कैसे होंगे; तौभी हम जानते हैं कि उसके प्रकाशके समय हम उसके सदृश होंगे क्योंकि जैसा वह है वैसा हम उसे देखेंगे। जो कोई उससे यह आशा रखता है सोई अपनेको ऐसा पवित्र करता है जैसा वह आप पवित्र है। जो कोई पाप करता है सो आज्ञाको नहीं मानता है क्योंकि पाप जो है सो आज्ञा न मान्ना है। तुम जानते हो कि यीशु इसलिये प्रगट हुआ कि हमारे पापोंको दूर करे और कि उसमें कुछ पाप नहीं है। जो कोई उसकी ओर रहता है सो पाप करता नहीं रहता है; जो कोई पाप करता रहता है उसने उसे न देखा है और न जाना है। हे बच्चो, सावधान होओ कि कोई तुमको धोखा न देवे; वही जो सत्यकर्म करता रहता है सोई सच्चा है जैसा यीशु सच्चा है; परंतु वही जो पाप करता रहता है सोई शैतानकी ओर है; शैतान जो है सो पहिलेसे पाप करता आया है परंतु ईश्वरका पुत्र जो है सो प्रगट हुआ इसलिये कि शैतानके कर्मोंको नाश करे। वही जो ईश्वरसे उत्पन्न हुआ है सो पाप करता नहीं रहता है क्योंकि उसका बीज (अर्थात् बात) उसमें रहता है, और वह पाप करता रहने नहीं सकता है क्योंकि वह ईश्वरसे उत्पन्न हुआ है; इससे ईश्वरके लोग कौन हैं, और शैतानके लोग कौन हैं, जाना जाता है। जो कोई सत्यकर्म नहीं करता

रहता है सोई ईश्वरका नहीं है, न वही जो अपने भाईको
११ प्यार न करता रहता है; वही आज्ञा जो हमने पहिलेसे
१२ सुना है सो यही है कि हम एक दूसरेको प्यार करें, और कि
काबिलके समान न होवें जिसने पापात्मा की ओर हो अपने
भाईको मार डाला। किस कारणसे काबिलने अपने भाईको
मार डाला? इस कारणसे कि उसके कर्म बुरे थे और उसके
१३ भाईके कर्म सत्य थे। हे मेरे भाईयो, जो संसारके लोग
१४ तुम्हारे बैरी होवें तो आचंभित न होओ। हम भाईयोंको
प्यार करते हैं; इससे हम जानते हैं कि हम आपही
जो मृतक से थे सो जीते से ऊये हैं। जो कोई अपने भाईको
प्यार नहीं करता रहता है सो मृतक सा रहता है, हां,
१५ जो कोई अपने भाईका बैरी है सोई हत्यारा सा है; और
तुम जानते हो कि किसी हत्यारेमें अनंत जीवन नहीं रहता
१६ है। यीशुने हमारी सन्ती अपने प्राण दे दिया; इससे
हम जानते हैं कि प्रेम कैसा है; सो चाहिये कि हम
१७ भाईयोंके लिये प्राण दे देवें। जो कोई धनवान होवे और
अपने भाईकी दुरदशाको देखके दया नहीं करे तो वह
१८ किस रीतिसे ईश्वरको प्यार करता है?। हे मेरे बच्चो,
चाहिये कि हम न केवल बातसे, न केवल जीभसे, परंतु
१९ कर्मसे और सचाईसे प्यार करें; इससे हम जानेंगे कि हम
आपही सचाईकी ओर हैं और कि हम उसके सन्मुख अपने
२० अपने मनको शांति देने सकेंगे। जो हमारा मन हमको
दोषी ठहरावे तो ईश्वर, जो हमारे मनसे बड़ा है और सब
कुछ जानता है, निश्चय करके हमको दोषी ठहरावेगा;
२१ हे प्यारो, जो हमारा मन हमको दोषी नहीं ठहरावे तो
२२ ईश्वरके सन्मुख हम स्थिर हैं, और जो कुछ कि मांगें सो
उससे पाते हैं क्योंकि हम उसकी आज्ञाओंको मानते हैं और
उनबातोंके अनुसार करते हैं जो उसके सन्मुख भली हैं।
२३ उसकी आज्ञा यही है, अर्थात् कि हम उसके पुत्र यीशु
खीष्टके नामपर बिश्वास करें और एक दूसरेको प्यार

करें जैसा उसने हमें आज्ञा दिई है। जो कोई उसकी आज्ञा- २४
ओंको मानता है सोई उसकी ओर है और वह उसकी
ओर है। इससे अर्थात उस आत्मासे, जो उसने हमको
दिया है, हम जानते हैं कि वह हमारी ओर है।

४ चौथा अध्याय।

परीक्षाके बिना सब शिक्षकोंको ग्राह्य नहीं करना।

हे प्यारो, हर एक शिक्षककी बात सत्य न जानो परंतु
शिक्षकोंकी परीक्षा करो कि वे ईश्वरकी ओरसे आये हैं
कि नहीं; क्योंकि बहुतसे झूठे भविष्यद्वक्ता संसारमें निकल १
आये हैं। कि शिक्षक ईश्वरकी ओरसे आया है कि नहीं तुम २
इस रीतिसे जानोगे, अर्थात, जो शिक्षक कहता है कि
यीशु खीष्ट मनुष्य सा अवतार हुआ, सोई ईश्वरकी ओरसे
आया है; परंतु वही शिक्षक जो कहता है कि यीशु ३
खीष्ट मनुष्य सा अवतार न हुआ सोई ईश्वरकी ओरसे
नहीं आया है। यह वही है जो खीष्टका बैरी है, जिसके
बिषयमें तुमने सुना है कि वह आता है, हां, अब संसारमें
है। हे बच्चो, तुम तो ईश्वरके हो और उनको हटाया ४
है क्योंकि वही जो तुम्हारी ओर हैं सो उसीसे बड़ा है
जो उनकी ओर है। वे संसारकी ओर है, इसलिये वे ५
संसारीक बातें बोलते हैं, और संसार जो हैं सो उनकी बात
मानते हैं। हम ईश्वरकी ओर हैं; जो कोई ईश्वरको जानते ६
हैं सोई हमारी बात मानता है; जो कोई ईश्वरकी ओर
नहीं है सोई हमारी बात नहीं मानता है। इसी रीतिसे
हम सच्चे शिक्षकको और झूठे शिक्षकको जान सकते हैं।

परस्पर प्रेम करनेके फलका निर्णय।

हे प्यारो, चाहिये कि हम एक दूसरेको प्यार करें ७
क्योंकि प्रेम जो है सो ईश्वरकी ओरसे होता है; जो कोई प्रेम
करता है सोई ईश्वरसे उत्पन्न हुआ है और ईश्वरको
जानता है; जो कोई प्रेम नहीं करता है सोई ईश्वरको ८

९ नहीं जानता है क्योंकि ईश्वर जो है सो प्रेमी है। किस रीतिसे ईश्वरने हमको प्यार किया है सो इससे जाना जाता है, अर्थात, उसने अपने एकलौटे पुत्रको इस जगतमें भेज दिया इसलिये कि हम उसके द्वारासे जीवन
१० पावें। इसमें प्रेम है, अर्थात, कि हमने ईश्वरको प्यार नहीं किया तौभी उसने हमको ऐसा प्यार किया कि उसने अपने पुत्रको भेज दिया इसलिये कि वह हमारे
११ पापोंका प्रायश्चित होवे। हे प्यारो, जो ईश्वरने हमको ऐसा प्यार किया तो चाहिये कि हम एक दूसरेको प्यार
१२ करें। किसीने ईश्वरको कभी नहीं देखा है; जो हम एक दूसरेको प्यार करें तो ईश्वर हमारी ओर है और हमको
१३ बड़ा प्यार करता है। उसने अपने आत्मामेंसे हमको कुछ दिया है; इससे हम जानते हैं कि हम उसकी ओर
१४ हैं और वह हमारी ओर है। हमने देखकर साक्षी देते हैं कि पिताने पुत्रको भेज दिया इसलिये कि वह
१५ संसारका बचानेहारा होवे। जो कोई कहे कि यीशु जो है सो ईश्वरका पुत्र है तो ईश्वर जो है सो उसकी ओर
१६ है और वह ईश्वरकी ओर है। हमने जानके बिश्वास किया है कि ईश्वरने हमको प्यार किया है। ईश्वर जो है सो प्रेमी है; जो कोई प्रेम करता रहता है सो ईश्वरकी ओर रहता
१७ है और ईश्वर उसकी ओर रहता है। इसी रीतिसे हमारा प्रेम जो है सो सिद्ध होता है; इससे हम बिचारके दिनमें निर्भयसे होंगे क्योंकि हम उसके सदृश हो इसी जगतमें
१८ रहते हैं। प्रेममें कुछ डर नहीं है, हां, वही प्रेम जो सिद्ध है सो डरको दूर करता है; डरसे दुःख है; और वही जो
१९ डरता है सो प्रेम करनेमें सिद्ध नहीं हुआ है। हमने उसे प्यार करते हैं क्योंकि उसने पहलेसे हमको प्यार किया।
२० जो कोई, जो अपने भाईका बैर करता है, यह कहे कि मैं ईश्वरको प्यार करता हूं तो वह झूठा है; जो कोई अपने भाईको देखते हुये प्यार नहीं करता है सो ईश्वरको न

देखते ज़ये किस रीतिसे प्यार कर सकता है? । हमने २१ उससे यही आज्ञा पाई है, अर्थात, कि जो कोई ईश्वरको प्यार करता है सो अपने भाईको भी प्यार करे।

५ पांचवां अध्याय।

भाईयोंके संग प्रेम कर्ना और ईश्वरकी आज्ञा पालन कर्ना और ईश्वरके प्रेमका चिङ्ग होना।

जो कोई यही बिश्वास करता है कि यीशु जो है सो १ खीष्ट है, सोई ईश्वरसे उत्पन्न ज़ग्रा है; और जो कोई उत्पादकको प्यार करता है सोई उसीको प्यार करता है जो उससे उत्पन्न ज़ग्रा है। हम जानते हैं कि जो हम २ ईश्वरको प्यार करें और उसकी आज्ञाओंको मानें तो हम ईश्वरके सन्तानोंको भी प्यार करते हैं। ईश्वरको प्यार करना ३ यही है, अर्थात, कि हम उसकी आज्ञाओंको मानें; और उसकी आज्ञा जो हैं सो सख्त नहीं हैं। जो कोई ईश्वरसे ४ उत्पन्न ज़ग्रा है वह जगतको हटाता है, और जगतका हटावनेहारा जो है सो हमारा बिश्वास है। कौन वही ५ है जो जगतका हटावनेहारा है? सोई वही है जो यही बिश्वास करता है कि यीशु जो है सो ईश्वरका पुत्र है। यह वही है जो जल और लोहूसे प्रकाशित ज़ग्रा; केवल ६ जलसे नहीं परंतु जल और लोहूसे प्रकाशित ज़ग्रा। पवित्र आत्मा जो है सोई साक्षी देता है क्योंकि पवित्र आत्मा जो है सोई सत्य है। हां, तीन हैं जो स्वर्गमें हो साक्षी ७ देते हैं, अर्थात, पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा; ये तीनों एक हैं। और तीन हैं जो पृथ्वीपर साक्षी देते हैं अर्थात ८ पवित्र आत्मा और जल और लोहू; ये तीनोंकी साक्षी भी एकही हैं। जो हम मनुष्योंकी साक्षी सत्य जानें तो ९ कितने अधिक ईश्वरकी साक्षी सत्य जानें। जो कोई ईश्वरके १० पुत्र पर बिश्वास करता है सोई अपनेसे जानते हैं कि ईश्वरकी साक्षी सत्य है, परंतु वही जो ईश्वरको सच्चा

न जानता है सोई उसीको झूठा किया है; उसने उस बातको सच्ची न जानी है जो ईश्वरने अपने पुत्रके विषयमें कही
११ है। जो साक्षी ईश्वरने अपने पुत्रके विषयमें दिई है सोई यही है, अर्थात, कि ईश्वरने हमको अनंत जीवन दिया है और यही जीवन जो है सो उसके पुत्रके द्वारासे होता है।
१२ वही जो पुत्रको ग्रहण करे सो जीवन पाता है; परंतु
१३ जो पुत्रको ग्रहण नहीं करे सो जीवन नहीं पाता है। ये बातें मैंने तुमहीको लिखा है जो ईश्वरके पुत्रपर बिश्वास करते हो इसलिये कि तुम जानो कि तुम्हारे लिये अनंत जीवन है और कि ईश्वरके पुत्रके नामपर बिश्वास करते रहो।

ईश्वरका अपने लोगोंकी प्रार्थना सुननी और सफल कर्ना।

१४ उसपर हम यही भरोसा रखते हैं, अर्थात, कि जो हम उसकी इच्छाके अनुसार कुछ मांगे तो वह हमारी बात सुनता
१५ है; और जो हम जानते हैं कि वह हमारी बात सुनता है तो यह भी हम जानते हैं कि जो कुछ कि हम उससे मांग
१६ लेते हैं सो पावेंगे। जो कोई देखे कि उसके भाई जो है सो ऐसा पाप करता है जिससे मृत्युका दंड नहीं होता है तो चाहिये कि वह प्रार्थना करे और ईश्वर उसको बचा-वेगा, हां, उन्होंको बचावेगा जो उनपापोंको करते हैं जिनसे मृत्युका दंड नहीं होता है। एक प्रकारका पाप है जिससे मृत्युका दंड होता है; मैं नहीं कहता हूं कि कोई ऐसे पाप
१७ करनेहारेके विषयमें प्रार्थना करे। सब अधर्म जो है सो पाप है परंतु एक प्रकारका पाप है जिससे मृत्युका दंड नहीं
१८ होता है। हम जानते हैं कि वही जो ईश्वरसे उत्पन्न हुआ है सोई पाप नहीं करता रहता है, हां, जो कोई ईश्वरसे उत्पन्न हुआ है सो अपनेको पापसे दूर रखता है, और
१९ पापात्मा जो है सो उसकी हानि नहीं कर सकता है। हम जानते हैं कि हम ईश्वरकी ओर हैं और कि सारे संसारके
२० लोग जो हैं सो पापात्माके आधीन हो रहते हैं। और भी हम जानते हैं कि ईश्वरका पुत्र आया है और हमको

समझ दिया है कि उसीको जानें जो सच्चा है। और हम उसकी ओर हैं, जो सच्चा हैं, अर्थात, उसके पुत्र यीशु खीष्टकी ओर हैं। यही जो है सोई सत्य ईश्वर है और अनंत जीवन देनेहारा है। हे बच्चो, देवताओंकी मूरतोंसे अपनेको २१ दूर रखो। आमीन।

योहनका दूसरा पत्र

मंगलाचरण।

मैं जो मंडलाध्यक्ष हूं सो प्यारी स्त्रीको और उसके १ सन्तानोंको, जिन्हें मैं सच्चाईसे प्यार करता हूं लिखता हूं; और केवल मैंही नहीं परंतु सबही जो सत्यधर्म जानते हैं प्यार करते हैं; हां, मैं कहता हूं कि हम सब जो हैं २ सो, उस सच्चाईके लिये जो हममें रहती है और हममें सदातक रहेगी, प्यार करते हैं। पिता ईश्वरसे और पिताके ३ पुत्र यिशु खीष्टसे अनुग्रह और दया और शांति, सच्चाई और प्रेममें, तुमको दिये जावें।

प्रेम ओ धर्माचरणमें नित्य प्रवृत्त होना औ, झूठे मित्रकोंसे सावधान होनेका बिनय कर्ना।

मैंने बड़ा आनन्द किया क्योंकि मैंने देखा कि तेरे सन्तानों- ४ मेंसे कोई कोई उस आज्ञाके अनुसार, जो हमने पितासे पाया, सच्चाईसे चलते रहते हैं। हे स्त्री, मैं तुझको नयी आज्ञा ५ नहीं लिखता हूं परंतु वही आज्ञा जो हमने पहिलेसे पाई है सोई लिखता हूं; उस आज्ञाके अनुसार मैंने तुझे बिंती करता हूं कि हम एक दूसरेको प्यार करें। प्रेम जो है सो यही ६ है, अर्थात, कि हम उसकी आज्ञाओंके अनुसार चलते रहें; हां, म जो है सो वही आज्ञा है जो तुमने पहिलेसे

७ सुनी है कि तुम उसके अनुसार चलते रहो। बहुतसे झूठे सिखावनेहारे संसारमें निकल आये हैं जो कहते हैं कि यीशु खीष्ट जो है सो मनुष्य सा अवतार न हुआ। ऐसे ८ मनुष्य जो हैं सो झूठे और खीष्टके बैरी हैं। सावधान होओ, न होवे कि हमारा कर्म निष्फल होवे और हम पूरा ९ फल न पावें। ईश्वर जो है सो उसीकी ओर नहीं है जो आज्ञाको दूर करता है और उस बातके अनुसार जो खीष्टके विषयमें है, नहीं सिखावता है; परंतु पिता और पुत्र जो हैं सो उसीकी ओर हैं जो उस बातके अनुसार जो खीष्टके १० विषयमें है, सिखावता है। जो कोई तुम्हारे निकट आवे और यही बातही नहीं सिखावे तो उसकी पहुनई न करो और ११ उसको आशीष न देओ; जो कोई उसको आशीष देता है सोई उसके बुरे कामोंका भागी होता है।

पत्रकी समाप्ति।

१२ मुझे तुमको बहुतसी बात लिखना है परंतु कागज पर सियाही से लिखना नहीं चाहता हूं; मेरा भरोसा यही है कि मैं तुम्हारे निकट आके तुमसे बात कहूं इसलिये कि १३ हमारा आनंद पूरा हो जावे। तेरी प्यारी बहिनके सन्तान जो हैं सो तुझे नमस्कार कहते हैं। आमीन।

योहनका तीसरा पत्र।

धर्माचरण औ पहुनईके निमित्त योहनसे गायसकी प्रशंसा।

१ मैं जो मंडलाध्यक्ष हूं सो प्यारे गायसको, जिसको मैं २ सच्चाईसे प्यार करता हूं, नमस्कार कहता हूं। हे प्यारे, मेरी प्रार्थना यही है, अर्थात, कि जैसी तेरे मनकी दसा भली है तैसी सब बातोंके विषयमें तेरी दसा भली होवे और कि तू ३ भला चंगा होवे। किसी किसी भाईयोंने आके साक्षी दिई है कि तू सत्यधर्म ग्रहण करके सत्य कर्म करता रहता है;

उन्होंकी बात सुनके मैंने बड़ा आनंद किया। मुझको इससे और कोई बड़ा आनंद नहीं है कि मैं सुनूं कि मेरे संतान ४ सच्चाईके अनुसार चलते रहते हैं। हे प्यारे, जो कुछ कि तू ५ उन भाईयों और उन परदेशियोंके बिषयमें, जो तेरे यहां आये हैं, करता है सोई सच्चे मनसे करता है। उन्होंने मंड- ६ लीके सन्मुख तेरे प्रेमके बिषयमें साक्षी दिई है। जो तू उनको ईश्वरके सेवक जानके और उनकी सहायता करके उनके मार्गमें आगे पहुंचावे तो अच्छा करेगा । उन्होंने ७ ईश्वरके नामके लिये निकला है और अन्यदेशियोंसे कुछ नहीं लिया। सो उचित है कि हम ऐसोंकी सहायता करें इस- ८ लिये कि हम सच्चाईके फैलावनेमें उनके संग परिश्रम करें।

दियत्रिफी पर अनुयोग, दीमीत्रियकी प्रशंसा।

मैंने मंडलीको पत्र लिखनेकी इच्छा किई परंतु दियत्रिफी, ९ जो उनमें सबसे बड़ा होने चाहता है, हमको नहीं मानता १० है। जो मैं आऊं तो मैं उसको उसके कर्मोंको स्मरण कराऊंगा; वह हमारे बिरुद्ध बुरी बात बकता है; और इसके ऊपर, आपही भाईयोंकी पहुनई न करता है और औरोंको, जो उनकी पहुनई करने चाहते हैं, बरजता है, और मंडलीमेंसे बाहिर करता है। हे प्यारे, ११ बुराईका पीछा न कर परंतु भलाईका पीछा कर; वही जो भला करता है सो ईश्वरका है परंतु वह जो बुरा करता है सो ईश्वरको नहीं जानता है। दीमीत्रिय नामके बिषयमें १२ सब मनुष्योंसे और सत्य धर्मसे अच्छी बात कही जाती है; हां, हम भी साक्षी देते हैं, और तुम जानते हो कि हमारी साक्षी सत्य है।

पत्रकी समाप्ति।

मुझको तो बहुत और बात लिखना है, परंतु मैं नहीं १३ चाहता हूं कि सियाही और कलमसे तुझको लिखऊं। मेरा भरोसा यही है कि मैं जल्द तुझको देखऊं और १४ तुझसे बात करऊं। तुझको शांति दिई जावे। हमारे मित्र जो

यहां हैं सो तुझको नमस्कार करते हैं। तूभी मित्रोंके नाम लेके नमस्कार कह।

यिहूदाका पत्र।

मंगलाचरण।

१ यिहूदा जो यिशु खीष्टका दास और याकूबका भाई है सो उन लोगोंको, जो पिता ईश्वरसे पवित्र किये गये हैं और यीशु खीष्टसे बुलाये गये और रक्षित किये गये २ हैं, नमस्कार कहता है। तुमको बहुतसी दया और शांति और प्रेम दिये जावें।

धर्ममें स्थिर होनेकी कथा और दुष्टशिक्षकोंका पाप और दंड।

३ हे प्यारो, मैंने उस त्राणके बिषयमें, जो सबोंके लिये ठहराया गया है, तुम्हें लिखनेको जी लगायेके यही उचित जाना है, अर्थात, कि तुमको यही उपदेश लिखते हुये देऊं कि जतन करो कि वही धर्म, जो पवित्र लोगोंको सोंपा गया, ४ नष्ट नहीं हो जावे क्योंकि कोई कोई अधर्मी मनुष्य, जो आगेसे दंड पानेको लिखे गये, आ घुसे, और हमारे ईश्वरके अनुग्रहपर भरोसा करके अशुचि कर्म करते हैं और कहते हैं कि प्रभु यीशु खीष्ट जो है सो अद्वैत प्रभु ईश्वर नहीं ५ है। मैं तुमको इसीका, जो तुम जान चुके हो, स्मरण कराने चाहता हूं, अर्थात, कि प्रभुने मिसर देशसे अपने लोगोंको उद्धार करके उनको, जो अबिश्वासी थे, बिनाश किया। ६ और उन दूतोंको, जिन्होंने अपने पदमें न रहके अपने स्थानको छोड़ दिया, ईश्वरने, अनंत अंधकारके बंधनोंसे, महा ७ बिचारके दिनतक, रखा है। उनके नाईं सिदोम और अमोरा नगरोंके लोग और उनकी चारों ओरके नगरोंके लोग जो थे सो छिनाला करके और और प्रकारोंके अशुचि

कर्म करके अनबूझी आगके बीचमें दुःख भोगते हुये औरोंको चितावनेको रखे जाते हैं। इसी भांति ये स्वप्नदर्शी जो ८ शरीरको अशुचि करते हैं, और राजोंको तुच्छ करते हैं, और राज लोगोंको निंदा करते हैं, सो दुःख भोगेंगे। मिखायेल ९ जो स्वर्गी दूतोंका प्रधान है सोई मूसाकी लोथके विषयमें शैतानसे बिवाद करके निंदा न किई परंतु केवल यही बात कही कि प्रभु तुझको दंड देगा। परंतु येही मनुष्य जो हैं सो १० उन बातोंको, जो वे न समझते हैं, निन्दा करतें हैं, हां, वे उन बातोंसे जो वे स्वभावसे पशुओंके नाईं समझते हैं, अपनेको अशुचि करते हैं। हाय हाय, वे काबिलके मार्गपर चलते रहते ११ हैं और लाभ पानेको बिलियमकी भूलसे भूलते हैं और कोरहके नाईं आज्ञा लंघन करके बिनष्ट होते हैं। वे तुम्हारे १२ प्रेमके जेवनारमें कलंक से हो निसचिंतासे तुम्हारे संग खाते हैं और अपनेको पालते हैं। वे निर्जल मेघ से हैं जो पवनसे उड़ाये जाते हैं। वे पेड़ से हैं जिनके न पत्ते न फल हैं, वे सुख गये और जड़से उखाड़े गये हैं। १३ वे समुद्रके प्रचंड लहरें से हैं जो अपनी लज्जाका फेन भर लाते हैं। वे फिरते हुये तारे से हैं जिनके लिये अनंत घोर अंधकार ठहराये गये हैं। हनोक, जो आदम १४ पिताके दिनोंसे सातवां भविष्यद्वक्ता था, उसने इन मनुष्योंके विषयमें कहा कि देखो, प्रभु अपने कड़ोरों साधोंके संग १५ आवेगा इसलिये कि सबोंका बिचार करे और सब अधर्मियोंको, उनके अधर्मी कर्मोंके लिये, दंड देवे, हां, वह आवेगा इसलिये कि अधर्मी पापी लोगोंको, उनकी सख्त बातोंके लिये जो उन्होंने उसके बिरुद्ध कहीं हैं दंड देवे। वे बिबाद १६ करनेहारे और दोष लगानेहारे हैं और अपनेके अभिलाषाओंके अनुसार चलते हैं। वे अहंकारकी बातें कहते हैं और लाभ पानेको बड़े मनुष्योंका लल्लोपत्तो करते हैं। हे पियारो, उन बातोंका स्मरण करो जो हमारे प्रभु यीशु १७ ख्रीष्टके प्रेरितोंने आगे कहीं; उन्होंने तुमसे कहा कि पीछले १८

समयमें निंदा करनेहारे होंगे जो अपने कुअभिलाषाओंके
१९ अनुसार चलेंगे । वे हैं जो अपने ताईं अलग करते हैं
और संसारिक हैं और आत्मासे रहित हैं।

यिहूदाकी कथा।

२० हे पियारो, अपनेको अपने अति पवित्र धर्ममें, स्थिर करके, पवित्र आत्माकी सहायतासे, प्रार्थना करते रहो। ईश्वरको
२१ प्यार करते रहो और हमारे प्रभु यीशुकी उस दयाकी
२२ बाट जोहते रहो जिससे अनंत जीवन होता है। विचार करके किसी किसी पर दया करो और किसी किसीको
२३ डरायके आगमेंसे निकाल दो, परंतु उस बस्तुको, जो शरीरसे (अर्थात पापसे) बिगड़ गई है, घिन करो,

मंगल प्रार्थनाकी कथा।

२४ सो उसीको, जो तुमको छूट जानेसे बचाने सकता है और अपने तेजके सन्मुख निर्दोषसे और बड़े आनंदसे खड़े कराने सकता है, हां, उसीको, जो अद्वैत ईश्वर और
२५ हमारा बचानेहारा है, गौरब और महिमा और पराक्रम और राज अब और सदा प्रकाशित होवे। आमीन।

योहनका प्रकाश।

१ पहिला अध्याय।

आभास।

१ यीशु ख्रीष्टका प्रकाश जो ईश्वरने उसको दिया इसलिये कि अपने दासोंको उन बातें जतावे जो जल्द पूरीं किईं जायेंगीं। उसने अपने दूतके द्वारासे भेजके अपने दास
२ योहनको जताया जिसने ईश्वरकी बातके बिषयमें, और यीशु ख्रीष्टकी साक्षीके विषयमें, और जितनी और बातोंके बिषयमें

जो उसने देखीं, साक्षी दिई। वही जो पढ़ता है, और ३
वे जो इस आश्चर्य्यबाणीको सुनते हैं और उन बातोंको
जो इसमें लिखीं हैं पालन करते हैं, सो धन्य हैं क्योंकि
समय निकट है।

मंगलाचरण।

योहन जो है सो उन सात मंडलियोंको, जो आशिया देशमें ४
हैं, नमस्कार कहता है। अनुग्रह और शांति तुमको उसीसे
दिया जावें जो है, और जो था और जो आवनेहारा
है, और उन सात आत्माओंसे जो उसके सिंहासनके सन्मुख
हैं, और यीशु खीष्टसे जो सच्चा साक्षी है, और मृतकोंका ५
पहलौटा है, और पृथ्वीका राजाधिराज है। उसीको, जिसने
हमको प्यार करके और अपने लोहूमें हमको पापोंसे धो
करके हमको अपने पिता ईश्वरके निकट राजा से और ६
याजकसे ठहराया है, हां, उसीकी महिमा और पराक्रम
सदा प्रकाशित होवे। आमीन।

खीष्टके आनेकी कथा।

देखो, वह मेघपर चढ़के आता है; सबही उसको देखेंगे; ७
जिन्होंने उसे छेदा, वे भी उसको देखेंगे; हां, संसारके सब
लोग उसको देखकर रोये पीटेंगे; ऐसा होवे; आमीन।
प्रभु परमेश्वर यह कहता है कि मैं जो हूं सो क और त्र ८
हूं, (अर्थात आदि और अंत), हां, मैं वही हूं जो है, जो
था, जो आवनेहारा है और जो सर्वशक्तिमान है।

पत्म उपद्वीपमें योहनके बंधनेकी कथा, औ खीष्टको दर्शन औ सात
दीपस्वरूप सात मंडलीको देखना।

मैं योहन जो तुम्हारा भाई और यीशु खीष्टके लिये दुःख ९
भोगनेमें और उसके राजके और उसको बाट जोहनेमें
तुम्हारा संगभागी हूं सो ईश्वरको बात सुनानेके और यीशु
खीष्टके बिषयमें साक्षी देनेके लिये पतम नाम टापूसे हो १०
प्रभुके दिनमें आत्मामें था। उस समय मैंने पीछेसे तुरही का
सा यही बड़ा शब्द सुना, कि मैं क और त्र हूं, अर्थात ११

मैं आदि और अंत हूं, जो कुछ कि तू देखता है सो पत्रमें लिखके उन सात मंडलियोंको, जो आशिया देशमें हैं, भेज दे, अर्थात, इफिसको, और समूर्नाको, और पर्गामको, और थुयातेराको, और सार्द्दीको, और पिलादिलफियाको, और
१२ लायदिकेयाको। मैंने उसीको, जिसने मुझसे कहा, देखने फिरा; और फिरके देखा कि सात सोनेकी दीवट हैं, और
१३ इन सात सोनेकी दीवटोंके बीचमें किसीको, जो मनुष्यके पुत्र के सदृश था, देखा; उसका पहरावा लंबा था और उसकी
१४ कमरपर सोनाका पटुका था; उसके सिरका बाल रूईके समान, हां, पाला सा श्वेत था; उसके नेत्रें आगकी लवर से
१५ थे; उसके पांव चोखे पीतल के से थे जो भट्टीमें ताया जाता
१६ है; उसका शब्द बहुतसे पानीयोंका सा शब्द था; उसके दहिने हाथमें सात तारे थे; उसके मुखसे चोखा दो धारा खड्ग निकलता था; और उसके स्वरूपके तेज दो पहरके
१७ सूरजके तेजके समान था। मैंने उसको देखके उसके पांवओं पर गिर पड़के मरा सा हुआ। इस पर उसने
१८ अपने दहिना हाथ मुझपर रखके कहा, कि मत डर, मैं आदि और अंत हूं, मैं मरा था परंतु अब जीता हूं, और देखो, मैं सदाही सदा जीता रहूंगा; आमीन; और मेरे
१९ हाथमें मृत्यु और परलोककी कुंजीयां हैं। जो कुछ कि देखता है, अर्थात जो कुछ कि है और जो कुछ कि इनके
२० पीछे होंगे, सो लिख। उन सात तारोंका, जो तू मेरे दहिने हाथमें देखता है, और उन सात सोनेके दीवटोंका भेद जो है सो यही है, अर्थात, वे सात तारे जो हैं सो सात मंडलियोंके दूत (अर्थात मंडलाध्यक्ष) हैं और सात सोनेके दीवट जो हैं सो सात मंडलीयां हैं।

२ दूसरा अध्याय।

इफीसिय मंडलीको खोहको कथा।

१ उस मंडलीके दूतको, जो इफिस नगरमें है, यह लिख

कि वही, जो अपने दहिने हाथमें सात तारोंको रखता है और सात सोनेके दीवटोंके बीचमें फिरता है, यह कहता है कि मैं तेरे कर्मोंको और तेरे परिश्रमको और तेरे धीरजको २ जानता हूं, और कि तू दुष्टोंको सह नहीं सकता है, और कि तूने उनको, जो अपने ताईं प्रेरित कहते हैं, परीक्षा किया है और उन्हें झूठे पाया है, और कि तू स्थिर रहता है, ३ और मेरे नामके लिये दुःख उठायके थकित नहीं हुआ है; येही सब मैं जानता हूं। तौभी मुझे तुझपर यही है, अर्थात, ४ कि जैसा तूने पहिले प्रेम किया तैसा अब प्रेम नहीं करता है। चेत कर कि तू कैसा गिर पड़ा है और मन फिराके पहिले ५ कर्म कर; नहीं तो, मैं जलद आऊंगा; जो तू अपने मन नहीं फिरावे तो मैं दीवटको उसके स्थानमेंसे उठायके ले जाऊंगा। तौभी यही तेरा है, अर्थात, कि तू नीकलायतीय लोगोंके कर्मों ६ को घिनावता है जिनको मैंभी घिनावता हूं। जिसके कान हैं ७ सो उन बातोंको सुने जो पवित्र आत्मा मंडलियोंको कहता है। जो जयमान होवे उसीको मैं यह दूंगा, अर्थात, कि उस जीवनदायक पेड़का फल खावे जो ईश्वरकी बारीके बीचमें खड़ा होता है।

समूर्ना मंडलीको कथा।

उस मंडलीके दूतको, जो समूर्ना नगरमें है, यह लिख कि ८ वही जो आदि और अंत है, और मरा था परंतु अब जीता है, सो यह कहता है कि मैं तेरे कर्मोंको, और तेरे दुःखको, और तेरे कंगालताको जानता हूं, तौभी तू धनी है; और उन ९ बुरी बातोंको भी मैं जानता हूं जो उनसे कहीं गईं हैं जो अपने को यिहूदी कहते हैं, परंतु वे यिहूदी नहीं हैं, वे शैतानकी मंडलीके हैं। जो कुछ कि तुझको सहना होगा, उससे कुछ १० न डर; देखो, शैतान जो है सो तुम्हेंमेंसे किसी किसीको कैदखानामें रखावेगा कि परीक्षा किये जावो; और दश दिनतक तुमको दुःख होवेगा। मृत्यु सहनेतक स्थिर रहो और मैं तुमको अनंत जीवन का मुकुट दूंगा। जिसके ११

कान हैं सो उन बातोंको सुने जो पवित्र आत्मा मंडलियोंको कहता है। जो जयमान होवे सो दूसरी मृत्युसे हानि नहीं उठावेगा।

पर्गाम मंडलीको कथा।

१२ उस मंडलीके दूतको, जो पर्गाम नगरमें है, यह लिख कि वही जो चोखे दो धारे खड्गको रखता है सो यह कहता है १३ कि मैं तेरे कर्मोंको और तेरे रहनेके स्थानको जानता हूं; तू उस स्थानमें रहता है जिसमें शैतानका सिंहासन है; तौभी तू मेरे नामको मानता रहता है और मेरे धर्मसे नहीं हट गया है; हां, तू उन दिनोंमें, जिनमें मेरा सच्चा साक्षी अन्तिपा, जो तुम्हारे निकट, अर्थात, शैतानके रहनेके स्थानमें, १४ मार डाला गया, मानता रहा। तौभी मुझे तुझपर कुछ कुछ है, अर्थात, कि तू अपने यहां उनको रखता है जो उस बिलियमकी बात मानते हैं जिसने बालाक राजाको सिखाया कि किस रीति यिस्रायली लोगोंके आगे ठोकर रखा जाय इसलिये १५ कि वे देवताओंके प्रसाद खावें और बेश्यागमन करें। इसरीति भी तू अपने यहां उनको रखता है जो निकलायतियोंकी बातें १६ मानते हैं। सो मन फिरा, नहीं तो, मैं जलद आऊंगा, और १७ अपने मुखके खड्गसे उनसे लड़ाई करूंगा। जिसके कान हैं सो उन बातोंको सुने जो पवित्र आत्मा मंडलियोंको कहता है। जो जयमान होवे उसीको मैं यह दूंगा कि गुप्त मान्ना खायेगा, और भी मैं उसको श्वेत पाथर दूंगा जिसपर वही नया नाम लिखा गया है जो पानेहारेको छोड़ और कोई नहीं जानता है।

थुयातेरा मंडलीको कथा।

१८ उस मंडलीके दूतको, जो थुयातेरा नगरमें है, यह लिख कि ईश्वरका पुत्र, जिसके नेत्रें आगकी लवर से हैं और पांव १९ चोखा पीतलके से हैं, यह कहता है कि मैं तेरे कर्मोंको, और तेरे प्रेमको, और तेरी सेवाको, और तेरे बिश्वासको, और तेरे धीरजको जानता हूं और कि तेरे पीछले कर्म जो हैं सो

पहिलेयोंसे बड़त हैं। तौभी मुझे तुझपर कुछ कुछ है, अर्थात, २० कि तू अपने यहां उस नारी इसेबलको रखता है जो अपनेको भविष्यद्वक्ती कहती है और अपनी शिक्षाके द्वारासे मेरे दासों को भुलाती है इसलिये कि वे बेश्यागमन करें और देवता-ओंके प्रसाद खावें। मैंने उसको समय दिया है इसलिये कि अपने २१ व्यभिचारसे मन फिरावे परंतु अपने व्यभिचारसे अपने मन फिराने न चाहती है। देखो, मैं उसको खाटपर डालूंगा; २२ जो वे जो उससे व्यभिचार करते हैं उसके कर्मोंसे मन नहीं फिरावे तो मैं उन्होंको बड़ा दुःख दूंगा और उसके संतानोंको मार डालूंगा। इससे सब मंडली जानेंगीं कि मैं जो हूं सो चित्त २३ और मनका परीक्षक हूं और कि मैं तुम सबोंको, तुम्हारे कामोंके अनुसार, फल दूंगा। परंतु मैं और लोगोंको जो २४ थूयातेरा नगरके मंडलीमें हैं अर्थात उन्होंको जो इस शिक्षाको नहीं मानते हैं और उन बातोंको, जो शैतानकी गहरी बातें कहीं जातीं हैं, नहीं जानते हैं, यह कहता हूं कि मैं तुमपर और बोझ न रखूंगा; परंतु जो कुछ कि तुम रखते हो सो २५ जबतक मैं न आऊं तबतक रखते रहो। जो जयमान होवे २६ और अंततक मेरे कर्म पालन करता रहेगा मैं उसीको अन-देशियोंपर अधिकारी ठहराऊंगा और वह उन्होंपर, लोहे २७ के दंडसे, राज करेगा, और वे कुम्हारके पात्रोंके नाईं टूट जायेंगे, जैसा मैंने भी अपने पितासे पाया है; और मैं २८ उसको भोरका तारा दूंगा। जिसके कान हैं सो उन बातोंको सुने जो पवित्र आत्मा मंडलियोंको कहता है।

३ तीसरा अध्याय।

सार्दी मंडलीको कथा।

उस मंडलीके दूतको, जो सार्दी नगरमें है, यह लिख कि १ वही जो ईश्वरके सात आत्माओंको और सात तारोंको रखता है, यह कहता है, कि मैं तेरे कर्मोंको जानता हूं; तू जीनेका नाम रखता है परंतु तू मरा है। जागता रह; और जो कुछ २

कि रह गया है और मरनेपर ऊआ है सो दृढ़ कर; मैंने तेरे
३ कर्मोंको, अपने ईश्वरके सन्मुख, पूरे नहीं पाया है। चेत कर
कि तूने किस रीतिसे ग्रहण किया और सुना है; पालन
करके मन फिरा। जो तू न जागता रहे तो मैं चोरके नाईं
तेरे निकट आऊंगा, हां, तू न जानेगा कि किस समय मैं तेरे
४ निकट आऊंगा। सार्दी नगरमें तेरे निकट थोड़े लोग हैं
जिन्होंने अपने कपड़ेको मलीन नहीं किया है; वे श्वेत बस्त्र
५ पहिनके मेरे संग फिरेंगे क्योंकि वे योग्य हैं। जो जयमान
होवे सो श्वेत कपड़ेसे पहिनाया जायेगा, और मैं उसका
नाम जीवनके पुस्तकमेंसे नहीं मिटाऊंगा, और मैं अपने
पिता और उसके दूतोंके सन्मुख उसका नाम मान लेऊंगा।
६ जिसके कान हैं सो उन बातोंको सुने जो पवित्र आत्मा
मंडलियोंको कहता है।

फिलादिलफिया मंडलीको कथा।

७ उस मंडलीको, जो फिलादिलफिया नगरमें है, यह लिख
कि वही जो पवित्र और सच्चा है, और दायूदकी कुंजी रखता
है, और खोलता और कोई बंद नहीं कर सकता है, और
बंद करता है और कोई नहीं खोल सकता है, यह कहता है
८ कि मैं तेरे कर्मोंको जानता हूं; देखो, मैंने तेरे सन्मुख खुला
ऊआ दार रखा है जिसको कोई बंद नहीं कर सकता है
क्योंकि तुझको थोड़ी सामर्थ्य है और तूने मेरी बात पालन
९ किया है, और मेरा नाम मानता रहा है। देखो, मैं शैतानकी
सभामेंसे किसी किसीको, जो यिहूदी न हो, झूठ करके, अपने
को यिहूदी कहते हैं, आने कराऊंगा, हां, मैं उन्होंको ऐसे
करूंगा कि वे आवें और तेरे पांवओंपर दंडवत करें, और
१० वे जानेंगे कि मैंने तुझे प्यार किया है। तूने स्थिर हो मेरी
बात पालन किया है; इसलिये मैं तुझे परिक्षाकी उस घड़ीमें
रक्षा करूंगा जो सारे संसारपर आती है और जिसमें पृथ्वीके
११ लोग परीक्षा किये जायेंगे। देखो, मैं जलद आता हूं। जो
कुछ कि तेरे हाथमें है सो रख, न होय कि कोई तेरा मुकुटको

छीन लेवे। जो जयमान होवे, उसीको मैं अपने ईश्वरके मंदिरमें १२ खम्बा सा ठहराऊंगा और वह फिर कभी बाहिर न जायेगा, और मैं उसपर अपने ईश्वरका नाम, और अपने ईश्वरके नगरका नाम, अर्थात नये यिरूशालमका, जो स्वर्गसे मेरे ईश्वरकी ओरसे उतरता है, और मेरा नया नाम लिखूंगा। जिसके कान हैं सो उन बातोंको सुने जो पवित्र आत्मा १३ मंडलियोंको कहता है।

लायदिकिया मंडलीको कथा।

उस मंडलीके दूतको, जो लायदिकेया नगरमें है, यह १४ लिख कि वही जो आमीन है और सीधा और सच्चा साक्षी है और ईश्वरकी सृष्टिका आदि करनेहारा है, यह कहता है कि मैं तेरे कर्मोंको जानता हूं; तू न गरम है, न १५ ठंढा है; मैं चाहता हूं कि तू ठंढा होता अथवा गरम होता; तू सूक्ष्म है, न ठंढा है, न गरम है, इसलिये मैं १६ अपने मुखमेंसे तुझे फेंकूंगा। तू कहता है कि मैं धनवान १७ हूं, हां, मैं बड़ा धनवान हूं, हां, मैं भरा ऊआ हूं; तू नहीं जानता है कि तू अभागी और लाचार और कंगाल और अंधा और नंगा है। मैं तुझको यही उपदेश देता हूं, अर्थात, १८ कि तू मुझसे उस सोनेको, जो आगसे ताया गया है, मोल ले कि धनवान हो जावे, और श्वेत कपड़ेको कि पहिनाया जावे और कि तेरी नंगाई न देखी जावे, और अंजनको कि अपने आंखोंपर लगावे कि तू देखे। जितनोंको मैं प्यार १९ करता हूं तितनोंको मैं धमकाता और ताड़ना करता हूं; इस लिये सावधान हो और मन फिरा। देखो, मैं द्वारपर २० खड़ा हो खटखटाता हूं; जो कोई मेरा शब्द सुनके द्वार खोल देवे तो मैं पैठके उसके संग भोजन करूंगा और वह मेरे संग भोजन करेगा। जो जयमान होवे उसीको २१ मैं अपने सिंहासनपर अपने संग बैठने दूंगा जैसा कि मैं जयमान हो अपने पिताके संग उसके सिंहासनपर

२२ बैठा हूं । जिसके कान हैं सो उन बातोंको सुने जो पवित्र आत्मा मंडलियोंको कहता है ।

४ चौथा अध्याय ।

स्वर्गमें ईश्वरका सिंहासन औ प्राचीन लोगोंका चक्षुसे परिपूर्ण चार प्राणियोंका दर्शन होना ।

१ इसके पीछे मैंने देख लिया; और देखो, कि स्वर्गमें एक खुला ऊआ द्वार है और उसी शब्दने, जो तूरहीकी नाईं पहिले मुझसे बात किई, मुझसे फिर कहा कि यहां ऊपर आ, जो कुछ कि इनके पीछे होंगे सो मैं तुझको बतलाऊंगा ।
२ इसपर मैं आत्मामें तुरंत ऊआ; और, देखो, कि स्वर्गमें एक सिंहासन दिखाई दिई और उसपर एक बैठता है ।
३ बैठनेहारेका स्वरूप जो था सो यशम और अकीका सा था; और सिंहासनकी चारों ओर जमरूद सा मेघ धनुक
४ थां; और आसपास चौबीस और सिंहासन थे जिनपर चौबीस प्राचीन बैठते थे जिनके बस्त्र श्वेत थे और सिरों
५ पर सोनेके मुकुट थे । सिंहासनमेंसेभी बिजलीयां और गरजें और शब्दें निकलते थे, और उसके सन्मुख सात
६ दीपक जलते थे; ये ईश्वरके सात आत्मा हैं । सन्मुख भी कांच सा समुद्र, अर्थात, एक बड़ा पात्र जो बिलौरके नाईं निर्मल था । और बीचमें और सिंहासनकी चारों
७ ओर चार प्राणी थे जो नेत्रोंसे आगे पीछे भरे थे । पहिला प्राणी जो था सो सिंहके सदृश था; दूसरा प्राणी जो था सो बैलके सदृश था; तीसरा प्राणीका मुख जो था सो मनुष्यके मुखके सदृश था; और चौथा प्राणी जो था सो
८ उड़ते ऊये उकाबके सदृश था । इन चार प्राणीयोंके एक एकको छः छः पर थे; भीतर बाहिर नेत्रोंसे भरे थे; और न रात न दिन चैन करके यह कहते रहते हैं कि प्रभु जो है सो पवित्र है, पवित्र है, पवित्र है, वह परमेश्वर भी है, और सर्व शक्तिमान है, और था, और है, और

आवनेहारा। जिस समय ये प्राणी उसीको, जो सिंहा- ९
सनपर बैठता है और सदाही सदा जीता रहता है,
बड़ाई और सन्मान और गुणानुबाद करें उस समय चौबीस
प्राचीन जो हैं सो उसीके सन्मुख, जो सिंहासनपर बैठता है १०
और सदाही सदा जीता रहता है, दंडवत करके उसका
भजन करते और सिंहासनके आगे अपने मुकुटोंको उतारके
यह कहते कि हे प्रभु, तूही महिमा और सन्मान और ११
पराक्रम पानेके योग्य है क्योंकि तूने सब कुछ सिरजा है;
तेरी इच्छाके द्वारासे वे हैं; और सिरजे गये हैं।

५. पांचवां अध्याय।

सात छापसे छापकी ऊई पोथीका दर्शन, औ खीष्टसे उसका खोलना
औ दिव्य दूत औ प्राचीन लोग औ प्राणीयोंसे उसकी प्रशंसा होनी।

मैंने देखा कि उसीके दहिने हाथमें, जो सिंहासनपर १
बैठता था, एक पोथी थी जो भीतर बाहिर लिखी ऊई और
सात मुहरोंसे बांधी गई। और भी मैंने देखा कि एक बली २
दूतने बड़े शब्दसे यह पुकारा कि वह कौन है जो इस पोथी
के खोलनेके और उसकी मुहरोंके तोड़नेके योग्य है?। परंतु ३
न स्वर्गमें, न पृथ्वीपर, न पृथ्वीके नीचे कोई था जो पोथी
खोलने और उसमें देखने सकता था। इसपर मैं बऊत रोया ४
क्योंकि कोई न पाया गया जो पोथी खोलने और उसमें देखने
के योग्य था। इतनेमें प्राचीनोंमेंसे एकने मुझसे कहा कि मत ५
रो, देखो, वही सिंह जो यिहूदाके घरानेमेंसे है और दायूद
का जड़ है सो जयमान हो पोथी खोलने और उसकी मुहरें
तोड़ने सकता है। फिर मैंने देखा, और देखो, कि सिंहासन ६
के और चार प्राणीयोंके बीचमें और प्राचीनोंके बीचमें
भेड़का एक बच्चा खड़ा था, जो मरवाया गया था, और
जिसके सात सींग और सात नेत्र थे; ये ईश्वरके सात आत्मा
हैं जो पृथ्वीपर भेजे गये हैं। इसीने आके उसीके हाथसे, ७
जो सिंहासन पर बैठता था, पोथी लिई। पोथीके लेनेपर ८

चार प्राणी और चौबीस प्राचीन जो थे सो भेड़के बच्चेके सन्मुख गिर पड़े; एक एकके हाथमें बीणा और सुगंधसे भरे ऊये सोनेके पात्र थे; ये पवित्र लोगोंकी प्रार्थनाओंकी
९ बातें हैं। उन्होंने नया भजन करते ऊये कहा कि तू पोथी लेने और उसकी मुहरें तोड़नेके योग्य है क्योंकि तू मरवाया गया और अपने लोहूसे हमको ईश्वरके लिये, सब जातियोंमेंसे, और भाषा भाषा बोलनेहारोंमेंसे, और सब
१० राजोंमेंसे और सब देशोंमेंसे मोल लिया है और ईश्वरकी ओर हमको राजाओंके से और याजकोंके से ठहराया है;
११ और हम पृथ्वीपर राज करेंगे। फिर मैंने देखके बऊतस दूतोंके शब्दें सुना; वे सिंहासनके और प्राणीयोंके और प्राचीनोंकी चारों ओर थे; उनकी गिनती सहस्रों सहस्र
१२ और लाखों लाख थीं; उन्होंने बड़े शब्दसे यह कहा कि भेड़का वही बच्चा जो मरवाया गया सो पराक्रम और धन और ज्ञान और सामर्थ्य और सन्मान और महिमा और धन्यवाद
१३ पानेके योग्य है। और मैंने हरएक प्राणीको जो स्वर्गमें हैं, और पृथ्वीपर हैं, और पृथ्वीके नीचे हैं, और समुद्रपर हैं, और सबको जो उनमें हैं यह कहते सुना कि उसीको, जो सिंहासनपर बैठता है, और भेड़के बच्चाको, धन्यबाद और सन्मान और महिमा और पराक्रम सदाही सदा होवे;
१४ इसपर चार प्राणीयोंने कहा कि आमीन; और चौबीस प्राचीनोंने गिरके उसीको, जो सदाही सदा जीता रहता है, दंडवत किई।

६ छठवां अध्याय।

छोइका पहिली छाप खोलना।

१ मैंने देखा कि भेड़के बच्चाने मुहरोंमेंसे एकको तोड़ा; इस पर मैंने चार प्राणीयोंमेंसे एक, गरजके शब्दसे, यह कहता
२ सुना कि आके देख। तब मैंने देख लिया, और देखा कि एक श्वेत घोड़ा है और उसपर एक बैठता है जिसके हाथमें धनुक

है। उसको एक मुकुट दिया गया, और वह जयमान हो निकल गया कि फिर जय करे।

दूसरी छाप खोलनी।

फिर उसने दूसरी मुहरको तोड़ा; इसपर मैंने दूसरा ३ प्राणी यह कहता सुना कि आके देख। तब दूसरा घोड़ा ४ देखनेमें आया, जिसका वर्ण लाल था, और उसपर एक बैठता था जिसको सामर्थ्य दिई गई कि पृथ्वीसे मेल दूर करे और कि वे एक दूसरेको मार डालें; और उसको एक बड़ा खड्ग दिया गया।

तीसरी छाप खोलनी।

उसने तीसरी मुहरको तोड़ा; इसपर मैंने तीसरे प्राणी ५ यह कहता सुना कि आके देख। सो एक काला घोड़ा देखनेमें आया, और वही, जो उसपर बैठता था, अपने हाथमें तुला रखता था। तब मैंने चार प्राणीयोंके बीचमेंसे एक शब्द यह ६ कहता सुना कि चौअन्नीका एक सेर गेहूं और चौअन्नीका तीन सेर जव; परंतु तेल और दाखके रसका घाटा न करो।

चौथी छाप खोलनी।

फिर उसने चौथी मुहरको तोड़ा; इसपर मैंने चौथे प्राणी ७ यह कहता सुना कि आके देख। तब मैंने देख लिया, और ८ देखो, कि एक हरा घोड़ा है, और उसीका नाम, जो उसपर बैठता था, मृत्यु है; उसके पीछे परलोक हो लेता था; और उसको पृथ्वीकी चौथाईपर अधिकार दिया गया कि खड्गके द्वारासे और अकालके द्वारासे और मरीके द्वारासे और बनैले पशुओंके द्वारासे मार डाले।

पांचवीं छाप खोलनी।

फिर उसने पांचवीं मुहरको तोड़ा; इसपर मैंने देखा कि ९ उनके आत्मा, जो ईश्वरको बातके लिये और उस साक्षीके लिये, जो उन्होंने दिई, मार डाले गये, बेदीके नीचे हैं; उन्होंने १० बड़े शब्दसे पुकारके कहा कि हे पवित्र और सच्चा स्वामी, कबतक बिचार न करेगा और पृथ्वीके उन रहनेहारोंसे

११ बदला न लेगा जिन्होंने हमारे लोहूको बहा दिया?। और उनको श्वेत वस्त्र दिया गया और उनको यही कहा गया कि थोड़ा धीरज करो जबतक तुम्हारे संगदासोंकी और तुम्हारे भाईयोंकी गिन्ती पूरी न होवें जो तुम्हारे सदृश मार डाले जायेंगे।

छठवीं छाप खोलनी।

१२ फिर उसने छठवीं मुहरको तोड़ा; इसपर मैंने देखा कि बड़ा भूईंडोल हुआ, और सूरज जो है सो बालसे बनाये हुये टाटके समान काला हो गया, और चन्द्रमा जो है १३ सो लोहू सा हुआ, और तारे जो हैं सो स्वर्गसे पृथ्वीपर १४ गिरे जैसेही गूलरके पेड़का कच्चा फल, बड़ी आंधीके कारणसे, गिरता है, और स्वर्ग जो है सो पोथीके नाईं लपेटा हुआ १५ टल गया, और हरएक पर्वत और टापू जो थे सो अपने स्थानोंसे हट गये; और पृथ्वीके राजाओं और प्रधान लोगों और सेनापतियों और धनवानों और बलियों और हर एक बन्दा और हर एक निर्बंधाने अपनेको पर्वतोंके गढ़ों १६ और चटानोंमें छिपाया और पर्वतों और चटानोंसे कहा कि हमपर गिरो और हमको उसके मुखसे, जो सिंहासनपर १७ बैठता है, और भेड़के बच्चेके कोपसे छिपाओ क्योंकि उसके कोपका महादिन आया है; और कौन ठहर सकता है?।

७ सातवां अध्याय।

ईश्वरके लोगोंका छाप करना औ यिहूदियोंकी संख्या।

१ इसके पीछे मैंने चार दूतोंको पृथ्वीके चार कोनोंपर खड़े देखा; वे पृथ्वीके चार पवनोंको थाम रखते थे कि कोई पवन न पृथ्वीपर, न समुद्रपर, न किसी पेड़पर २ बहे। और भी मैंने देखा कि एक और दूत सूरजके उठनेके स्थानसे ऊपर आया जिसके हाथमें अमर ईश्वरकी मुहर थी। उसने, बड़े शब्दसे, उन चार दूतोंको, जिनको ३ सामर्थ्य दिई गई कि वे पृथ्वी और समुद्रको हानि करावे,

पुकारके कहा कि न पृथ्वीको, न समुद्रको, न पेड़ोंको हानि करो जबतक हम अपने ईश्वरके दासोंके कपालोंपर मुहर न करें। और मैंने उनकी गिनती, जो मुहर किये गये, ४ सुनी; यिस्रायेली लोगोंके सब घरानोंसे एक सौ चवालीस सहस्र मुहर किये गये, अर्थात, यिहूदाके घरानेसे बारह ५ सहस्र; रूबेनके घरानेसे बारह सहस्र; गादके घरानेसे बारह सहस्र; आशेरके घरानेसे बारह सहस्र; नप्तालीके ६ घरानेसे बारह सहस्र; मनश्शीके घरानेसे बारह सहस्र; शिमियोनके घरानेसे बारह सहस्र; लेवीके घरानेसे बारह ७ सहस्र; इसाखरके घरानेसे बारह सहस्र; सिबूलूनके घराने ८ से बारह सहस्र; यूसफके घरानेसे बारह सहस्र; और बिनयामीनके घरानेसे बारह सहस्र।

दूसरे देशियोंका असंख्य होना।

इसके पीछे मैंने देख लिया, और देखो कि बहुतसे लोग थे ९ जिनको कोई मनुष्य गिन्न नहीं सकता था; वे सब देशोंमेंसे, और सब घरानोंमेंसे, और भाषा भाषा बोलनेहारोंमेंसे निकल आये थे; वे सिंहासनके आगे और भेड़के बच्चेके सम्मुख खड़े थे; वे श्वेत कपड़े पहिने गये और उनके हाथोंमें तालकी डालियां थीं; और वे बड़े शब्दसे यह पुकारके कहते थे कि त्राणके १० लिये, हमारे ईश्वरकी, जो सिंहासनपर बैठता है, और भेड़के बच्चेकी, जय जय होवे। और सब दूत जो सिंहासनकी चारों ११ ओर खड़े थे और सब प्राचीन और चार प्राणी जो थे सो सब सिंहासनके आगे मुखके बल गिरके बोले कि आमीन, हमारे १२ ईश्वरको प्रशंसा और महिमा और ज्ञान और धन्यवाद और सन्मान और पराक्रम और सामर्थ्य सदाही सदा होवे, आमीन।

खीष्टके रक्तसे उनका त्राण औ सुख।

पीछे प्राचीनोंमेंसे एकने मुझसे कहा कि ये जो श्वेत कपड़े १३ पहिने हुये हैं सो कौन हैं और कहांसे आये हैं? मैंने उत्तर १४ देके कहा कि हे महाराज, आप जानते हैं। तब उसने मुझसे

कहा कि ये वेही हैं जिन्होंने बड़ा दुःख उठाया और अपना अपना कपड़ा धोके भेड़के बच्चेके लोहूमें उन्हें उज्जल किया;
१५ इसलिये वे ईश्वरके सिंहासनके आगे हैं और रातदिन उसके मंदिरमें उसकी सेवा करते रहते हैं; और वही, जो
१६ सिंहासन पर बैठता है, सो उनके बीचमें बास करेगा। वे फिर न भूखे होंगे और न प्यासे होंगे; उनपर न सूरजकी
१७ धूप, न और किसी प्रकारकी धूप गिरेगी क्योंकि भेड़का बच्चा जो है सो उन्हें चरावेगा और उन्हें अमृत जलके सोतोंपर ले चलेगा, और ईश्वर जो है सो उनके नेत्रोंसे सब आंसू पोंछेगा।

८ आठवां अध्याय।

सात छाप खोलनी।

१ उसने सातवीं मुहरको तोड़ा; इसपर सबही जो स्वर्गमें
२ थे आध घड़ी तक चुप हो रहे। तब मैंने देखा कि सात दूत ईश्वरके सन्मुख खड़े हैं और उनको सात तुरही दिई गई हैं।
३ पीछे दूसरा दूत, हाथमें सोनेकी धूपदानी लाके, आया और बेदीके निकट खड़ा हुआ। उसको बहुत सा धूप दिई गई इसलिये कि वह उसे पवित्र लोगोंकी प्रार्थनाओंके संग उस
४ सोनेकी बेदी पर देवे जो सिंहासनके आगे है। और धूपका धूवां जो था सो, पवित्र लोगोंकी प्रार्थनाओंके संग, दूतके
५ हाथसे, ईश्वरके सन्मुख चढ़ गया। फिर दूतने धूपदानीको लेके बेदीके आगसे भर दिया और पृथ्वीपर डाल दिया; इस पर शब्दें और गरजें और बिजलियां और भूईंडोल हुये।

पहिली तुरहीकी ध्वनि।

६ पीछे, उन सात दूतोंने, जिनके हाथमें सात तुरही थीं,
७ फूंकनेको अपने ताईं तैयार किया। पहिले दूतने फूंका; इस पर ओले और लोहूसे मिली हुई आग पृथ्वीपर डाली गई; इससे पृथ्वीकी तिहाई जल गई; और पेड़ोंकी तिहाई जल गई; और सारी हरियाली घास जल गई।

दूसरी तुरहीकी ध्वनि।

तिस पीछे, दूसरे दूतने फूंका; इसपर एक पर्वत जो ८ आगसे जलता था, समुद्रमें डाला गया; इससे समुद्रकी तिहाई लोहू सा हो गया, और समुद्रके सब प्राणीयोंकी ९ तिहाई मर गई और जहाजोंकी तिहाई नष्ट हो गई।

तीसरी तुरहीकी ध्वनि।

तीस पीछे, तीसरे दूतने फूंका; इसपर स्वर्गसे एक बड़ा १० तारा, जो दीपक सा जलता था, गिर पड़ा और नदीयों और जलके सोतोंकी तिहाई पर लगा; और वही तारा जो है ११ सो नागदौना कहलाता है; इससे जलोंकी तिहाई नाग-दौना सा हुआ; और उस जलके पीनेसे बहुतसे मनुष्य मर गये क्योंकि वह कड़वा था।

चौथी तुरहीकी ध्वनि।

तिस पीछे, चौथे दूतने फूंका; इसपर सूरजकी तिहाई और १२ चंद्रमाकी तिहाई और तारोंकी तिहाई मारीं गईं; इससे उनकी तिहाई अंधियारी हो दिनके और रातके उज्याला इतना कम हुआ। तब मैंने देखा और सुना कि स्वर्गके बीचमें १३ एक दूत उड़ता और बड़े शब्दसे यों कहता है कि उन तीन दूतों के फूंकनेपर, जिनकी फूंकना रह जाती है, पृथ्वीके रहनेहारों पर सन्ताप सन्ताप सन्ताप होगा।

९ नवां अध्याय।

पांचवीं तुरहीका शब्द, उससे तारोंका गिर्ना, औ कुण्डका खुल जाना, उससे बहुतेरेही टिड्डियों निकलना।

पांचवें दूतने फूंका; इसपर मैंने देखा कि एक जो तारा सा १ था स्वर्गसे पृथ्वीपर गिर पड़ा और उसीको अथाह कुंडकी कुंजी दिई गई। उसने अथाह कुंडको खोला; और कुंडसे २ धूवां निकला जो बड़ी भट्टीके धूवां सा था; और कुंडके धूवांसे सूरज और आकाश जो थे सो अंधियारे हो गये। इसी ३ धूवांमेंसे टिड्डीआं पृथ्वीपर निकल आईं; उनको, पृथ्वीके

४ बिछुयोंके नाईं, सामर्थ्य दिई गई; और उनको यह कहा गया कि न पृथ्वीके घासको, न किसी हरियालीको, न किसी पेड़को हानि करो, केवल उन मनुष्योंको हानि करो जिनके ५ माथोंपर ईश्वरकी मुहर नहीं है। और भी टिड्डीयोंको यह आज्ञा दिई गई कि उन मनुष्योंको मत मार डालो परंतु पांच महीनेतक उन्हें सताओ। वही कष्ट जो इन टिड्डीयोंसे हुआ सो उसी कष्टके नाईं था जो बिछुके डंकके मारनेसे ६ मनुष्यको होता है। उन दिनोंमें मनुष्य मृत्युको ढूंढेंगे, परंतु नहीं मिलेगी, और मरने चाहेंगे परंतु मृत्यु उनसे भाग ७ जायगी। उन टिड्डीयोंका स्वरूप जो था सो उन घोड़ोंके स्वरूपके समान है जो लड़ाई करनेको तैयार हैं। उनके सिरोंपर सोनेके मुकुट सा कुछ था। उनके मुख जो थे सो ८ मनुष्योंके मुख से थे। उनका बाल जो था सो स्त्रीयोंका बाल ९ सा था। उनके दांत जो थे सो सिंहोंके दांत से थे। उनकी झिलम जो थीं सो लोहेकी झिलम सी थीं। उनके परोंका शब्द जो था सो घोड़ोंके उन रथोंका शब्द सा था जो लड़ाईमें १० दौड़ते हैं। उनकी दुम जो थी सो बिछुयोंकी दुम सी थी और डंक उनकी दुमोंमें थे। उनको ऐसी सामर्थ्य दिई गई ११ कि वे पांच महीनेतक मनुष्योंको सतावें। और उनका राजा जो था सो अथाह कुंडका दूत था; उसका नाम इब्रीय भाषामें अबद्दोन और यूनानी भाषामें अपल्लुयोन (अर्थात १२ बिनाशक) है। यों एक सन्ताप बीत गया है; देखो, दो सन्तापें उसके पीछे चले आते हैं।

छठोवीं तुरहीका शब्द औ उससे चार दूतोंकी मुक्ति।

१३ छठवें दूतने फूंका; इसपर मैंने सुना कि उस सोनेके बेदीके १४ चार कोनोंमेंसे, जो ईश्वरके सन्मुख है, एक शब्दने उस छठवें दूतको, जिसके हाथमें तुरही थी, यह कहा कि उन चार दूतोंको, जो फरात नाम बड़ी नदीके निकट बांधे हैं, १५ छुड़ा। तब वे चार दूत छुड़ाये गये; वे एक घड़ीतक और एक दिनतक और एक महिनेतक और एक बरसतक

मनुष्योंकी तिहाई मार डालनेको तैयार किये गये। सवारों- १६
की सेनाकी गिंती जो थी सो बीस करोड़ थी; मैंने उनकी
गिंती सुनी। मैंने दर्शनमें देखा कि घोड़े जो थे और उनके १७
सवार जो थे सो इसी डौलके थे, अर्थात, सवारकी झिलम जो
थीं सो आग और सम्बुल और गंधकके रंगकी थीं; और
घोड़ोंके सिर जो थे सो सिंहोंके सिर से थे; और उनके
मुखोंमेंसे आग और धूवां और गंधक निकलती थी; इन तीनोंसे १८
अर्थात उस आगसे और धूवांसे और गंधकसे, जो उनके
मुखोंसे निकलती थी, मनुष्योंकी तिहाई मार डाली गई। उन १९
घोड़ोंके मुखमें और दुमोंमें सामर्थ्य थी क्योंकि उनके दुम जो
थे सो उन सांपोंके समान जो अपने सिरोंसे सताते हैं। वे २०
मनुष्य जो उनके मारनेसे नहीं मार डाले गये उन्होंने अपने
हाथोंके बनाई हुई वस्तुओंसे मन ऐसा नहीं फिराया कि
देवोंका, और सोने और रूपे और पीतल और पाथर और
लकड़ीका पूजा न करें जिनको न देखनेकी, न सुननेकी, और
न चलनेकी सामर्थ्य है; और उन्होंने अपनी हत्याओं और २१
अपने टोनाओं और अपने व्यभिचारों और अपनी चोरीयोंसे
मन नहीं फिराया।

१० दसवां अध्याय।

शक्तिमान दिव्य दूतका देखना, औ ईश्वरके नामसे उसकी सौंह करना
औ भोजनके लिये योहनको पुस्तक देना।

मैंने देखा कि एक और बलवान दूत स्वर्गमेंसे उतर आया; १
उसका वस्त्र जो था सो मेघ सा था; उसके सिरपर मेघ
धनुष सा कुछ था; उसका मुख जो था सो सूरज सा था;
उसके पांव जो थे सो आगकी खम्भे से थे; और उसके २
हाथमें एक छोटा खुला हुआ पुस्तक था। उसने अपने दहिने
पांवको समुद्रपर, और अपने बायां पांवको पृथ्वीपर रखके ३
बड़े शब्दसे, जैसा सिंह गरजता है, पुकार दिया। उसके
पुकारनेपर सात गरजोंने अपने शब्दें दिये। सात गरजोंके ४

शब्दोंके देनेपर मैं लिखनेपर था। इतनेमें मैंने स्वर्गमेंसे एक शब्द यह कहता सुना कि जो कुछ कि सात गरजोंने कहा, ४ उसपर मुहर करके मत लिख। इसपर उसी दूतने, जो मैंने समुद्र और पृथ्वीपर खड़ा देखा, अपने दहिना हाथ ६ स्वर्गकी ओर उठाया और उसीको, जो सदाही सदा जीता रहता है, जिसने स्वर्गको, और जो कुछ कि उसमें है, और पृथ्वीको, और जो कुछ कि उसमें है, और समुद्रको, और जो कुछ कि उसमें है, बनाया, किरिया खाके कहा कि और ७ कुछ समय नहीं होगा; हां, सातवें दूतके फूंकनेके दिनोंमें ईश्वरका भेद जो है सो पूरा किया जायगा, जैसा कि उसने अपने दासोंको, अर्थात भविष्यद्वक्ताओंको सुनाया। ८ पीछे उसी शब्दने, जो मैंने स्वर्गसे कहता सुना, फिर मुझसे यह कहा कि जा, और उस छोटे खुले हुये पुस्तकको, जो उस दूतके हाथमें है जो समुद्र और पृथ्वीपर खड़ा ९ है, ले। सो मैंने उस दूतके निकट जाके कहा कि छोटा पुस्तक मुझको दीजिये। इसपर उसने मुझसे कहा कि उसको लेके खा; वह तेरे मुखमें मधु सा मीठा होगा परंतु तेरे १० पेटको दुःखी करेगा। सो मैंने दूतके हाथसे छोटा पुस्तक लेके खाया; और वह मेरे मुखमें मधु सा मीठा था परंतु ११ पीछे पेटको बड़ा दुःखी किया। तब उसने मुझसे कहा कि तुझको आवश्यक है कि फिर बहुत राजके लोगोंको और बहुत देशके लोगोंको और भाषा भाषा बोलनेहारोंको और बहुत राजाओंके सम्मुख आचार्यबाणी कहनी पड़ेगी।

११ एगारहवां अध्याय।

मंदिरका नापना औ दो साचीयोंकी कथा औ बध कर्ना औ साढ़े तीन दिनके पीछे जी उठना औ स्वर्गमें जाना।

१ मुझको एक नरकट, छड़ीके नाईं, दिया गया; इसपर उसी दूतने खड़ा हो मुझसे कहा कि उठके ईश्वरके मंदिरको, और बेदीको, और उनको, जो उसमें भजन करते हैं, नाप;

परंतु मंदिरके आंगनको रहने दे; उसको मत नाप; क्योंकि २ वह अन्यदेशियोंको दिया गया है; और वे बयालीस महीने तक पवित्र नगरको रौंदेंगे। मैं अपने दो साक्षीयोंको आज्ञा ३ दूंगा, ऐसा कि वे टाट पहिनके एक सहस्र दो सौ साठ दिन तक आचार्य्यबाणी कहेंगे। ये वे हैं जो दो जैतूनके पेड़ ४ और दो दीवट हैं जो पृथ्वीके प्रभुके सन्मुख खड़े हैं। जो कोई ५ उन्हें सताने चाहे तो उनके मुखसे आग निकलके उनके शत्रुओंको भस्म करेगा; और जो कोई उन्हें सताने चाहे तो आवश्यक है कि सोई इसीरीति मार डाला जायेगा। उनको आकाश बंद करनेकी सामर्थ्य दिई गई है यहां तक ६ कि उनकी आचार्य्यबाणीके दिनोंमें जल न बरसे; और भी उनको सामर्थ्य दिई गई है यहां तक कि वे सब जलको लोहू बनावें; और जब जब वे चाहें तब तब पृथ्वीको सब प्रकारकी बिपत करें। जिस समय उनकी साक्षी समाप्त होवेगी ७ उस समय वही पशु, जो अथाह कुंडमेंसे निकलता है, उनसे लड़ाई करके जीतेगा और उन्हें मार डालेगा। और उनकी ८ लोथें जो हैं सो उस बड़े नगरकी सड़कपर पड़े रहेंगे जो आत्मीक रूपसे सिदोम और मिसर कहलाता है, जहां हमारा प्रभु क्रूशपर मार डाला गया। और राजोंमेंसे और ९ घरानोंमेंसे और भाषा भाषा बोलनेहारोंमेंसे बहुतेरे उनकी लोथोंको साढ़े तीन दिन तक देखेंगे परंतु उन्हें गाड़ने नहीं १० देंगे। और पृथ्वीके रहनेहारे जो हैं सो उनके मरनके लिये आनंदित और मगन होंगे और एक दूसरेको भेट भेजेंगे क्योंकि ये दो भविष्यद्वक्ता जो हैं, उन्होंने पृथ्वीके रहनेहारोंको बहुत सताया। परंतु साढ़े तीन दिनके पीछे जीवात्मा, ११ ईश्वरकी ओरसे, उनमें पैठा; इसपर वे अपने पांवओंपर खड़े हुये; और उनके देखनेहारे जो थे सो बहुत डर गये। और उन्होंने स्वर्गसे एक बड़ा शब्द सुना जिसने उनसे कहा १२ कि यहां ऊपर आओ। तब वे मेघपर चढ़के स्वर्गको चले गये और उनके शत्रुओंने उनको जाते देखा। और उसी १३

घड़ीमें भूईंडोल ज्ञआ, और उस नगरका दसवां भाग गिर पड़ा और भूईंडोलके द्वारासे सात सहस्र मनुष्य मारे गये। और वे जो बच गये सो बज्ञत डर गये और स्वर्गके ईश्वरका
१४ धन्यवाद किया। सो यही दूसरा सन्ताप बीत गया है; देखो, तीसरा सन्ताप जलद आता है।

सातवीं तुरहीका शब्द।

१५ सातवें दूतने फूंका; इसपर स्वर्गमें बड़े शब्दें ज्ञये जिन्होंने कहा कि पृथ्वीका राज जो है सो हमारे प्रभुका और उसके खोष्टका ज्ञआ है और वह सदाही सदा राज करेगा।
१६ और चौबीस प्राचीन जो ईश्वरके सन्मुख अपने सिंहासनोंपर बैठते थे अपने मुखके बलपर गिरा और ईश्वरका भजन
१७ करके कहा कि हे प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो है, जो था, और जो आवनेहारा है, हम तेरा धन्यवाद करते हैं क्योंकि तू अपना बड़ा पराक्रम प्रकाश करके राज करता है;
१८ अनदेशि लोग क्रोधित ज्ञये; तेरे क्रोधका समय आया है, और मृतकोंके बिचार करनेका समय भी आया है जिसमें तू अपने दासोंको, अर्थात भविष्यदक्ताओंको और पवित्र लोगोंको, और तेरे नामके माननेहारोंको, क्या छोटोंको क्या बड़ोंको, कर्मका फल देवे, और उन्होंको बिगाड़े जो पृथ्वीको बिगाड़ते हैं।

स्वर्गके मंदिरका खुलना।

१९ पीछे स्वर्गमें ईश्वरका मंदिर खुल गया और उसके मंदिरमें प्रभुके नियमका संदूक देखनेमें आया; और बिजलियां और शब्दें और गरजें और भूईंडोल और बड़े ओले ज्ञये।

१२ बारहवां अध्याय।

एक अचंभेको स्त्रीको देखना, औ उसके पुत्रका प्रसव होना, और नागसे पुत्र सहित उसका बनमें भागना।

१ स्वर्गमें एक बड़ा अचंभा दिखाई दिई, अर्थात, एक स्त्री सूरजसे ओढ़ी ज्ञई; उसके पांवोंके नीचे चंद्रमा थी; उसके

सिरपर बारह तारोंका मुकुट था; और गर्भवती हो जन्नेकी २
पीर और दुःखके मारे चिल्लाती थी। फिर स्वर्गमें एक और ३
अचंभा दिखाई दिई, अर्थात, एक बड़ा लाल अजगर,
जिसके सात सिर और दस सींग थे; उसके सिरोंपर सात ४
मुकुट थे; और अपने दुमसे तारोंकी तिहाई खैंचके पृथ्वी-
पर उन्हें डाली। यही अजगर जो है सो उस स्त्रीके सन्मुख,
जो जन्नेपर थी, खड़ा था इसलिये कि जिस समय स्त्री
जने उसके बच्चेको खा लेवे। पीछे स्त्री वही पुत्र जनी जिसको ५
होगा कि वह सब देशियोंपर लोहेके सोंटोंसे राज करेगा।
स्त्रीके जन्नेपर उसका पुत्र जो था सो ईश्वरके और उसके
सिंहासनके निकट उठाया गया; और स्त्री जो थी सो ६
जंगलमें भाग गई जहां ईश्वरने उसके लिये स्थान तैयार
किया था इसलिये कि वे उसको वहां एक सहस्र दो सौ साठ
दिन तक पालें।

मिखायेल ओ नागका युद्ध, ओ नागका हारना, ओ स्त्रीको
ताड़ना कर्नी।

स्वर्गमें लड़ाई हुई; मिखायल और उसके दूतोंने उस ७
अजगरसे लड़ाई किई; परंतु अजगर और उसके दूत लड़ाई
करके जीत न सकते थे; सो स्वर्गमें उनके लिये कोई ८
स्थान न मिला; हां, वही बड़ा अजगर जो पुराना सांप ९
है, और परीक्षा करनेहारा और शैतान कहलाता है और
सारी पृथ्वीको भुलानेहारा है, सोई, और उसके संग
उसका दूत, पृथ्वीपर गिराये गये। इसपर मैंने स्वर्गमेंसे एक १०
बड़ा शब्द यह कहता सुना कि अब हमारे ईश्वरका जय
और पराक्रम और राज और उसके ख्रीष्टका अधिकार
प्रकाशित हुये हैं क्योंकि वही जिसने हमारे भाईयोंपर दोष
लगाया, अर्थात वही, जिसने ईश्वरके सन्मुख उनपर रात
दिन दोष लगाया, गिराया गया है; हां, उन्होंने अपने ११
अपने प्राणको मृत्युतक प्यारा न जानके भेड़के बच्चेके लोहूके
द्वारासे और अपनी साक्षीकी बातकी द्वारासे उसको हटाया

१२ है। सो, हे स्वर्गो, और तुमही जो उनमें रहते हो, आनंद करो; परंतु पृथ्वीके और समुद्रके बासियोंपर सन्ताप है; शैतान बड़त क्रोध करके तुम्हारे निकट उतर आया है क्योंकि
१३ वह जानता है कि उसको थोड़ा समय रहता है। पीछे अजगर अपने ताईं पृथ्वीपर गिराये ड्रये देखके उस स्त्रीको
१४ सताने लगा जो पुत्र जनी। इसपर स्त्रीको बड़े उकावके दो पर दिये गये इसलिये कि अजगरके सन्मुखसे जंगलमें अपने स्थानमें उड़ जावे कि वहां एक काल और दो काल
१५ और आधे काल तक पाली जावे। और सांपने अपने मुखसे पानी नदी सी स्त्रीके पीछे फेंका कि उसे पानीकी धारसे
१६ बहा ले जावे। परंतु पृथ्वीने स्त्रीकी सहायता किई; हां, पृथ्वी जो थी सो अपने मुख खोलके उस नदीको पी लिया
१७ जो अजगरने अपने मुखसे फेंक दिया। इससे अजगर स्त्रीपर क्रोधित हो उसके और सन्तानोंसे लड़ाई करनेको चला गया जो ईश्वरकी आज्ञाओंको मानते हैं और यीशु ख्रीष्टके बिषयमें साक्षी देते हैं।

१३ तेरहवां अध्याय।

सात माथे और दश सींग औ दश मुकुट संयुक्त एक जंतुका समुद्रमेंसे निकलना, औ उसको नागका पराक्रम देना।

१ मैंने समुद्रके बालू पर खड़ा हो देखा कि समुद्रमेंसे एक पशु निकल आया; उसके दस सींग और सात सिर थे; उसके सींगोंपर दस मुकुट थे; और उसके सिरोंपर निन्दा
२ के नामें थे। वही पशु जो मैंने देखा सो चीता सा था; परंतु उसके पांव जो थे सो भालूके से थे; और उसका मुख जो था सो सींगका सा था। अजगर जो था, उसीने इस पशुके ताईं अपने सामर्थ्यको और अपने सिंहासनको और अपने
३ बड़े अधिकारको दे दिया। और भी मैंने देखा कि इस पशुके सिरोंमेंसे एक तो ऐसा मारा गया था कि मरा सा ड्रआ परंतु उसका मरा सा घाव चंगा ड्रआ था और सारी पृथ्वीके

रहनेहारे जो थे सो अचंभित हो पशुके पीछे हो लेते थे। वे अजगरका भजन करते थे जिसने पशुको अपने अधिकार ४ दिया; और भी पशुका भजन करके यह कहते थे कि वही कौन है जो पशुके समान है? कौन वही है जो उससे लड़ाई कर सकता है?। और उसको बड़ी बातें और निंदाकी बातें ५ कहनेको शक्ती दिई गई; और भी उसको सामर्थ्य दिई गई कि बयालीस महिने तक लड़ाई करे। उसने अपने मुख खोल ६ दिया कि ईश्वरको और उसके नामको और उसके तंबूको और उनको, जो स्वर्गमें रहते हैं, निंदा करें। और उसको ७ सामर्थ्य दिई गई कि पवित्र लोगोंसे लड़ाई करके जीत लेवे, हां, उसको सामर्थ्य दिई गई कि सब घरानोंपर और सब राजोंपर और भाषा भाषा बोलनेहारोंपर और सब अनदेशि-येंापर राज करे। और पृथ्वीके सब रहनेहारे उसका भजन ८ करेंगे जिनके नाम उस मार डाले ऊये भेड़के बच्चेके जीवनके पुस्तकमें, जगतके सिरजनेसे पहिले, नहीं लिखे गये। जिसके कान हैं सो सुने। जो कोई दूसरेको बंदी करके ले जावे तो ९ वह आपही बंदी होके ले लिया जायगा। जो कोई दूसरेको १० खड्गसे मार डाले तो वह आपही खड्गसे मार डाला जायगा; इसमें पवित्र लोगोंका धीरज और बिश्वास प्रकाशित होते हैं।

पृथ्वीमेंसे दूसरे पशुका निकलना, औ पहिले जंतुकी प्रतिमा बनानी औ सब लोगोंको उसकी पूजा करानी।

फिर मैंने देखा कि एक और पशुने पृथ्वीमेंसे निकल आया; ११ उसके दो सींग थे जो मेमनाके से थे; उसकी शब्द जो था सो अजगरका सा था; और उसने पहिले पशुके सब अधिकारका काम, उसके सन्मुख, किया; और उसने कराया १२ कि पृथ्वी और उसके सब रहनेहारे उस पहिले पशुका भजन करें जिसका मरा सा घाव चंगा हो गया था। और १३ भी उसने बड़े चिन्हें दिखाया यहांतक कि मनुष्योंके सन्मुख स्वर्गमेंसे पृथ्वीपर आग उतार दिया; और उसने, उन चिन्होंके

१४ द्वारासे जो उसको, पहिले पशुके सन्मुख करनेको, दिये गये, पृथ्वीके रहनेहारोंको यह कहता भुलाया कि उस पशुकी मूरत बनाओ जो खड्गसे मारा गया, तौभी जीता है। और भी
१५ उसको सामर्थ्य दिई गई कि पशुके मूरतमें आत्मा देवे कि पशुका मूरत बोले; और भी उसको सामर्थ्य दिई गई कि करावे कि वे जो पशुका भजन न करें सो मार डाले जावें।
१६ और उसने कराया कि सब, क्या छोटे क्या बड़े, क्या धनी क्या कंगाल, क्या निर्बंदी क्या बंदी, अपने दहिने हाथपर
१७ अथवा माथेपर छाप देवे, और कि वही, जो छापको अथवा पशुके नामको, अथवा उसके नामके अंकको न रखता था,
१८ मोल लेने और बेच डालनेके अधिकार न रखे। इसमें बुद्धि है; वही जो बुद्धिमान है सो पशुके अंककी गिंती करें क्योंकि वह मनुष्यको अंक हैं और उसका अंक छः सौ छयासठ है।

१४ चौदहवां अध्याय।

सियोन पर्वतमें अपने लोगोंके संग खीष्टको दर्शन होना।

१ मैंने देखा, और देखो कि भेड़का बच्चा जो है सो सियोन पर्वतपर खड़ा है और उसके संग एक सौ चवालीस सहस्र लोग हैं जिनके माथोंपर उसके पिताका नाम लिखा है।
२ और मैंने स्वर्गमेंसे शब्द सुने जो बहुत जलोंके शब्दके से और बड़ी गरजके शब्दके से थे। और मैंने बीणा बजानेहारोंका,
३ जो बीणा बजाते थे, शब्द सा सुना। वे सिंहासनके और चार प्राणीयोंके और प्राचीनोंके सन्मुख नया भजन गाते थे; और उस भजनको कोई सीखने नहीं सकता था, उनही एक सौ चवालीस सहस्रको छोड़ जो पृथ्वीपरसे मोल लिये गये हैं।
४ ये वेही हैं जिन्होंने स्त्रीयोंके संग अपनेको अशुद्ध नहीं किया है क्योंकि वे कुंवार हैं। ये वेही है जिन्होंने भेड़के बच्चेके पीछे हो लिया जहां तहां उसने बताया। ये वेही हैं जो मनुष्योंके बीचमेंसे मोल लिये गये और ईश्वरके और भेड़के

बच्चेके लिये पहिले फल से हैं; और उनके मुखमें झूठ पाया ५ नहीं गया है; हां, वे ईश्वरके सिंहासनके सन्मुख निर्दोषी हैं।

सुसमाचार प्रचारकारी औ बाबिलका बिनाश प्रकाशकारी एक दूतको दर्शन।

मैंने एक और दूतको आकाशके बीचमें उड़ते देखा जिसके ६ निकट अनंत सुसमाचार था कि पृथ्वीके सब रहनेहारोंको, अर्थात सब अनदेशियोंको और सब घरानोंको और भाषा भाषा बोलनेहारोंको और सब राजके लोगोंको सुनावे; ७ और उसने बड़े शब्दसे कहा कि ईश्वरसे डरो और उसकी महिमा प्रकाशित करो क्योंकि उसको न्यायीकी घड़ी आन पहुंची हैं; हां, उसीका भजन करो जिसने स्वर्गको, और पृथ्वीको, और समुद्रको, और जलके सोतोंको बनाया। और एक और दूत उसके पीछे यह कहता आया कि वही बड़ी ८ नगरी बाबिल जो है सो गिर पड़ी है, सो गिर पड़ी है, क्योंकि उसने अपने व्यभिचारके क्रोधकी सी मदिरा सब देशके लोगोंको पीलाई। और इनके पीछे तीसरे दूतने आके बड़े ९ शब्दसे यह कहा कि जौ कोई पशुका और उसकी मूरतका भजन करे और अपने माथेपर और अपने हाथपर उसका १० छाप लेवे तो वही ईश्वरके क्रोधकी उस अनमिश्रित मदिरा-मेंसे पीयेगा जो उसके क्रोधके कटोरेमें ढाली गई है और वह पवित्र दूतोंके और भेड़के बच्चेके सन्मुख आगमें और गंधकमें पीड़ा पावेगा। और उनकी पीड़ाका धूवां जो है सो ११ सदाही सदा उठता रहेगा; हां, वेही जिन्होंने पशुका और उसकी मूरतका भजन किया और उसके नामका अंक लिया, सो न रात न दिन आराम पावेंगे। इसमें पवित्र लोगोंका धीरज प्रकाशित है; हां, इसमें वे जो ईश्वरकी १२ आज्ञाओंको और यीशुके धर्मको पालन करते हैं सो प्रकाशित है। मैंने स्वर्गमेंसे एक शब्द यह कहता सुना कि यही लिख, १३ अर्थात, कि वेही जो प्रभुके आश्रय लेके मरे हैं सो उसी दमसे धन्य हैं; हां, आत्मा कहता है कि वे अपने परि

श्रमसे आराम पाते हैं; और उनके काम उनके पीछे चले जाते हैं।

ईश्वरका कोपरूप शस्य काटना औ कोपस्वरूप दाखको यंत्रमें निचोड़ना।

१४ और मैंने देखा, और देखो कि एक श्वेत मेघ है और एक उसपर बैठता है जो मनुष्यका पुत्र सा है; उसके सिरपर सोनेका मुकुट है; और उसके हाथमें चोखा हंसुआ है।
१५ पीछे एक और दूत मंदिरमेंसे निकलके आया और उसको, जो मेघपर बैठता था, बड़े शब्दसे यह कहा कि अपने हंसुआको लेके काट; काटनेका समय आया है क्योंकि पृथ्वीकी
१६ खेती पक्की ऊई है। सो उसने, जो मेघपर बैठता था, अपने हंसुआको पृथ्वीपर लगाया और पृथ्वीकी खेती काटी
१७ गई। तिस पीछे एक और दूत स्वर्गके मंदिरमेंसे निकला, जिस
१८ के हाथमें भी चोखा हंसुआ था। और एक और दूत बेदीकी ओरसे निकला जो आगका अधिकार रखता था; उसने उसको, जिसके हाथमें चोखा हंसुआ था, बड़े शब्दसे कहा कि अपने चोखा हंसुआ लगा और पृथ्वीके दाखके गुच्छोंको काट
१९ क्योंकि पृथ्वीके दाखके फल पक्क गया है। इसपर दूतने पृथ्वी-पर अपना हंसुआ लगाया और पृथ्वीके दाखका फल काटके ईश्वरके क्रोधके बड़े कोलहूमें डाल दिया; और कोलहू जो
२० था सो नगरके बाहिर हो रौंदा गया; और कोलहूसे लोहू घोड़ोंके लगामोंतक सौ कोसके दूरको बह निकला।

१५ पंद्रहवां अध्याय।

सात उत्पातकारी सात दूतोंको देखना, औ पशुके जयकारियोंका गीत।

१ फिर मैंने देखा कि स्वर्गमें एक और बड़ा आश्चर्यित चिन्ह है अर्थात सात दूत हैं जिनके हाथमें सात पिछली विपतें
२ हैं जिनसे ईश्वरके क्रोध समाप्त हो जावे। और भी मैंने देखा कि आगसे मिले ऊये समुद्र है जो कांच सा है; और वे जो पशुपर और उसकी मूरतपर, और उसके नामके अंकपर जयमान ऊये कांच सा समुद्रके तीरपर खड़े हैं और उनके

हाथमें ईश्वरके बीण हैं। उन्होंने ईश्वरके दास मूसाका ३ गीत और भेड़के बच्चेका गीत गाते कहा कि हे प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, तेरे कर्म जो हैं सो बड़े और आश्चर्जित हैं; हे देशियोंके राजा, तेरे मार्ग जो हैं सो ठीक और सत्य हैं; हे प्रभु, वह कौन है जो तुझसे न डरेगा और तेरे ४ नामकी महिमा प्रकाश न करेगा; तूही अकेला पवित्र है; सब देशोंके लोग आके तेरे सन्मुख भजन करेंगे; तेरे सच्चे कर्म जो हैं सो प्रकाशित हुये हैं।

ईश्वरके कोपरूप सात पात्रोंका ढालना।

इसके पीछे मैंने देखा, और देखो, कि स्वर्गमें साक्षीके तंबू ५ सा मंदिर खुला हुआ है; और वे सात दूत, जिनके हाथमें ६ सात विपतें हैं, मंदिरमेंसे निकल आये; उनके कपड़ा जो था सो श्वेत और चमकीली मलमलका था; और सोनेके कमरबंद उनके कमरोंपर बांधे गये। इतनेमें चार प्राणियों- ७ मेंसे एकने इन सात दूतोंको सोनेके सात पात्र दिया जो उस ईश्वरके क्रोधसे भरे हुये जो सदाही सदा जीता रहता है। और मंदिर जो है सो ईश्वरकी महिमासे और उसकी ८ शक्तिसे भरा हुआ; और जबलों सात दूतोंकी सात विपतें सिद्ध न हुई तबलों कोई मंदिरमें पैठने न सकता था।

१६ सोलहवां अध्याय।

पात्र ढालने।

तब मैंने मंदिरमेंसे एक बड़ा शब्द सुना जो सात दूतोंसे १ कहा कि जाके ईश्वरके क्रोधके सात पात्रोंको पृथ्वीपर ढाल दो।

पहिला पात्र ढालना।

इसपर पहिले दूतने जाके अपना पात्र पृथ्वीपर ढाल २ दिया। इससे उन मनुष्योंपर, जिनपर पशुका छाप था और उसकी मूरतका भजन किया था, बड़े बुरे घाव हुये।

दूसरा पात्र ढालना।

दूसरे दूतने अपना पात्र समुद्रपर ढाल दिया; इससे ३

उसका जल मरे ऊये मनुष्यके लोहू सा ऊआ और समुद्रके सब प्राणी मर गये।

तीसरा पात्र ढालना।

४ तीसरे दूतने अपना पात्र नदीयोंपर और जलोंके सोतोंपर ५ ढाल दिया; इससे सब जल लोहू सा हो गया। तब मैंने जलोंका दूत यह कहता सुना कि हे प्रभु, तू वही है जो सच्चा है, जो है, जो था, और जो पवित्र है क्योंकि तूने ऐसा ६ न्याय किया है; उन्होंने पवित्र लोगोंका और भविष्यद्वक्ताओं-का लोहू बहाया इसलिये तूने उनको लोहू पिलाया है; ७ वे इसीके योग्य हैं। इसपर मैंने बेदीकी ओरसे एक शब्द यह कहता सुना कि हां, प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, तेरे बिचारें जो हैं सो सत्य और ठीक हैं।

चौथा पात्र ढालना।

८ चौथे दूतने अपना पात्र सूरजपर ढाल दिया और उसको सामर्थ्य दिई गई कि आगसे मनुष्योंको झुलसावे; इससे ९ मनुष्योंने महा तापसे जलते ऊये उस ईश्वरके नामकी निंदा किई जो इन बिपतोंका अधिकार रखता है; हां, उन्होंने मन नहीं फिराया कि उसकी स्तुति करें।

पांचवां पात्र ढालना।

१० पांचवें दूतने अपना पात्र पशुके सिंहासन पर ढाल दिया; इससे उसका राज अंधकार हो गया; और उन्होंने पीड़ाके ११ मारे अपनी जीभ चबाई, हां, उन्होंने अपनी पीड़ाओंके और अपने घावओंके मारे स्वर्गके ईश्वरकी निंदा किई और अपने कर्मोंसे मन नहीं फिराया।

छठवां पात्र ढालना।

१२ छठवें दूतने अपना पात्र फिरात नाम महा नदीपर ढाल दिया; इससे उसका जल सूख गया इसलिये कि पूरबके १३ राजाओंका मार्ग तैयार किये जावे। और भी मैंने देखा कि अजगरके मुखसे, और पशुके मुखसे, और झूठे भविष्यद्वक्ताके १४ मुखसे तीन अशुद्ध आत्मा, जो भेक से थे, निकल आये; वे तो

देव हैं जो चिन्ह दिखाते हैं; वे तो सब पृथ्वीके राजाओं-पर निकल जाते इसलिये कि उन्हें सर्व्वशक्तिमान ईश्वरके बड़े दिनकी लड़ाईके लिये एकठे करें। देखो, मैं चोरकी नाईं १५ आता हूं; वही धन्य है जो जागता रहता है और अपने कपड़ोंकी रक्षा करता है कि नंगा न होवे और कि मनुष्य उसकी नंगाई न देखें। और उन्होंने उन्हें किसी स्थानमें एकठे १६ किया जो इब्रीय भाषामें हर्मगिदोन कहलाता है।

सातवां पात्र ढालना।

सातवें दूतने अपना पात्र आकाशपर ढाला; इसपर एक बड़ा १७ शब्द स्वर्गके मंदिरके सिंहासनकी ओरसे यह कहता निकला कि हो गया है। तब शब्दें और गरजें और बिजलियां हुईं १८ और ऐसा बड़ा भूईंडोल हुआ कि उसके समान, जिस दिनसे मनुष्य पृथ्वीपर होने लगे, कोई भूईंडोल न था। और वही १९ बड़ी नगरी जो थी सो तीन भाग हो गई और देशोंके नगरें भी गिर पड़ें; हां, बाबिल बड़ी नगरी जो थी सो ईश्वरके आगे स्मरण किई गई कि अपने बड़े बड़े क्रोधकी मदिराकी कटोरेमेंसे उसको पिलावे। और हर टापू भागा २० और हर पर्वत न मिला; और आकाशसे बड़े बड़े ओले, २१ जो मन भरके ऐसे थे, मनुष्योंपर गिरे; और ओलोंकी बिपतके कारणसे मनुष्योंने ईश्वरकी निंदा किई; हां, वह बिपत बड़ी भारी थी।

१७ सतरहवां अध्याय।

सात मस्तक औ दश सींगके पशुपर बाबिल नामक बेश्याका चढ़ना, औ सात मस्तक और दश सींगका तात्पर्य्य, औ उसका पराजय, औ खीष्टका जय।

उन सात दूतोंमेंसे, जिनके हाथमें सात पात्र थे, एकने १ आयके मुझसे कहा कि इधर आ, मैं तुझको उस बड़ी बेश्याका दंड दिखाऊंगा जो बहुत पानियोंके निकट बैठती है, जिससे पृथ्वीके राजाओंने व्यभिचार किया है और जिसके २

व्यभिचारकी मदिरामेंसे पृथ्वीके रहनेहारे पीके मतवाले
३ ऊये हैं। फिर वही दूत, आत्माके द्वारासे मुझे जंगलमें ले
गया; और मैंने देखा कि वहां एक स्त्री लाल रंगके पशुपर
बैठती है; पशु जो था सो निंदाके नामसे भरा था; और
४ सात सिर और दस सींग उसके थे। स्त्रीका कपड़ा बैंगनी
और लाल रंगका था और सोने और हीरों और मोतीयोंसे
सिंगारा ऊआ। उसके हाथमें सोनेका कटोरा था जो
घिनौनी बस्तुओंसे और उसके व्यभिचारकी अशुचि बस्तुओं-
५ से भरा था। और उसके माथेपर यही नाम लिखा था,
अर्थात, बड़ी बाबिल, बेश्याओंकी और पृथ्वीकी घिनौनी
६ बस्तुओंकी माता। और भी मैंने देखा कि स्त्री जो है सो
पवित्र लोगोंके और यीशुके साक्षीयोंके लोहूके पीनेसे मतवाली
७ है। और उसको देखनेसे मुझे बड़ा अचंभा ऊआ। इसपर
उस दूतने मुझसे कहा कि क्यों आश्चर्य मानता है? मैं तुझको
इस सात सिर और दस सींग रखनेहारी स्त्रीका और
८ उसके ढोनेहारे पशुका भेद बतलाऊंगा। वही पशु जिसे
तू देखता है सो था और नहीं है; और अथाह कुंडमेंसे नि-
कलने और नष्ट होनेपर है। और पृथ्वीके रहनेहारे, जिनके
नाम जगतके उत्पन्न होनेके आगे जीवनके पुस्तकमें नहीं
लिखे गये, इस पशुको देखनेसे जो था, और नहीं है, हां है,
९ अचंभा मानेंगे। जिसकी बुद्धि है सोई इसको बूझे; सात
सिर जो हैं सो सात पर्बत हैं जिनपर स्त्री बैठती है; वे भी
१० सात राजा हैं; पांच तो गिर पड़े हैं; एक तो है; और
पीछला अबतक नहीं आया है; उसके आनेपर उसका
११ रहना थोड़े दिन होगा। और वही पशु जो था, और नहीं
है, सोई आठवां है, और उन सातोंमेंसे भी है और नष्ट
१२ होनेको जाता है। और वे दस सींग जिन्हें तूने देखा, सो
दस राजा हैं; उन्होंने अबतक राज नहीं पाया है, परंतु
१३ वे पशुके संग, एक घड़ीतक, राजकी सामर्थ्य पावेंगे; वे
तो एकमनी हो अपनी सामर्थ्य और अपने अधिकार उस

पशुको देंगे; वे तो भेड़के बच्चेसे लड़ाई करेंगे परंतु भेड़के १४ बच्चा जो है सो उनको हटावेगा क्योंकि वह प्रभुओंका प्रभु है और राजाओंका राजा है, और वे जो उसके संग हैं सो बुलाये ऊये और प्यारे और सच्चे हैं। फिर उसने मुझे यह १५ भी कहा कि वेही जल जिन्हें तूने देखा, जिनके निकट बेश्या बैठती थी, सो लोग और भीड़ और जाति और नाना भाषा बोलनेहारे हैं। और वे दस सींग, जिन्हें तूने देखा, १६ और वेही पशु जो हैं सो बेश्याको घिन्न करेंगे, और उसको निर्वस्त्र और नंगी करेंगे और वे उसका मांस खावेंगे और १७ उसको आगमें जलावेंगे, क्योंकि ईश्वरने उनको यह दिया है कि वे उसकी इच्छाके अनुसार करें और कि जबलों ईश्वर-की बातें पूरीं न किईं जावें तबलों एकमनी हो अपने राज पशुको देवें। और वही स्त्री, जिसे तूने देखा, सो वही बड़ी १८ नगरी है जो पृथ्वीके राजाओंपर राज करती है।

१८ अठारहवां अध्याय।

बाबिलका गिर्ना, औ उसमेंसे ईश्वरके लोगोंको बाहिर आना, औ उसके लिये राजा औ बणिक औ जहाजी लोगोंका बिलाप कर्ना, औ ईश्वरके लोगोंका आनंद कर्ना।

इसके पीछे मैंने एक और दूतको स्वर्गसे उतरता देखा; १ उसका पराक्रम बऊत बड़ा था; उसकी छटासे पृथ्वी उजियाली सी हो गई; और उसने बड़े शब्दसे कहा कि बड़ा २ बाबिल नगरी जो है सो गिर पड़ी है, सो गिर पड़ी है, वह देवओंका बासा ऊई है, और हर अशुचि भूतका स्थान ऊइ है और हर अशुचि और घिनौने पंछीका पिंजरा सा ऊई है क्योंकि उसने अपने व्यभिचारके क्रोधकी मदिरामेंसे ३ सब देशके लोगोंको पिलाया है; और पृथ्वीके राजा जो हैं उन्होंने उससे व्यभिचार किया है और पृथ्वीके साहूकार जो हैं सो उसके सुख बिलासोंकी बऊतायतके द्वारासे धनवान ऊये हैं। और मैंने स्वर्गमेंसे एक और शब्द यह कहता सुना ४

कि हे मेरे लोगो, इस बाबिल नगरीमेंसे निकल आओ इसलिये कि उसके पापोंके भागी न होवो और उसकी बि-
५ पतोंमें न पड़ो क्योंकि उसके पाप जो हैं सो स्वर्गतक पहुंचे हैं
६ और ईश्वरने उसके कुकर्मोंका स्मरण किया है; जैसा उसने तुमको दिया तैसा तुम उसको दो, हां, उसके कर्मोंके अनुसार उसको दूगुना दो; उस कटोरेको जो उसने भर दिया,
७ दूगुना भर दो; जितनी उसने अपने ताईं बड़ी किई और सुख बिलास करनेमें अपने दिन काटा, तितनी पीड़ा और शोक उसको दो; वह अपने मनमें यह कहती है कि मैं रानी हो बैठती हूं, मैं बिधवा नहीं हूं, और मैं कभी
८ शोकित नहीं हूंगी। इसलिये एक दिन येही सब बिपतें उसपर आवेंगी अर्थात मृत्यु और शोक और काल; और वह आगमें जलाई जायगी क्योंकि प्रभु परमेश्वर जो उसका
९ बिचारकरनेहारा है सो सामर्थ्यवान है। और पृथ्वीके राजा, जिन्होंने उससे व्यभिचार और सुख भोग किया, उसके जलनेका धूवां देखके उसके लिये रोवेंगे और बिलाप करेंगे;
१० और उसकी पीड़ाके डरके मारे दूरसे खड़े हो कहेंगे कि हे बड़ी नगरी बाबिल, हे बलवान नगरी बाबिल, हाय, हाय,
११ एक घड़ीमें तुझे ऐसा दंड हुआ है। और पृथ्वीके साहूकार जो हैं सो उसके लिये रोवेंगे और बिलाप करेंगे
१२ क्योंकि अबसे कोई उनका माल नहीं मोल लेंगे, अर्थात, सोने और रूपे, और हीरे, और मोती, और मलमल, और बैंगनी, और लाल रंगके बस्त्र, और रेश्मी बस्त्र, और चंदनकी और हाथी दांतके सब प्रकारकी बस्तु, और अनमोल लकड़ीके सब प्रकारकी बस्तु, और पीतलके और लोहेके
१३ और संग मरमरके सब प्रकारकी बस्तु, और दारचीनी, और सुगंध, और मुर, और लोबान, और मदिरा, और तेल, और मैदा, और गेहूं, और गाय बैल, और भेड़, और घोड़े,
१४ और रथें, और मनुष्योंके शरीरें और प्राणें; और वे फल जिनपर तेरा जी लगा सो तुझसे चले गये हैं, और जो

कुछ कि सुखदाई और सुन्दर थे सो भी नष्ट हो गये हैं, और उन्हें तू फिर कभी नहीं पावेगी। साहूकार जो इन १५ वस्तुओंके बेच डालनेसे धनवान हुये सो उसकी पीड़ाके डरके मारे दूर खड़े रहेंगे और रोते और बिलाप करते कहेंगे कि हाय, हाय, वह बड़ी नगरी जो मलमल, और १६ बैंगनी रंगका वस्त्र, और लाल रंगका वस्त्र पहिनी, और सोनेसे और हीरोंसे और मोतीयोंसे सिंगार हुई, एक घड़ीमें इतनी बड़ी संपत उड़ गई है। और हर नाखुदा, और १७ हर जहाजी, और मलाह, और सब जो समुद्रपर बैपार करनेको जानेहारे हैं, सो दूरसे खड़े हुये और नगरीके १८ जलनेका धूवां देखके चिल्लाया कि कौन नगरी इस बड़ी १९ नगरीके समान है?। और उन्होंने अपने सिरोंपर धूल उड़ाते चिल्लाया और रोते और बिलाप करते कहा कि हाय, हाय, वही बड़ी नगरी, जिसके धनसे, सब जो समुद्रपर जहाजें चलाते हैं, धनवान हुये, सो एक घड़ीमें उजड़ गई है। हे स्वर्ग, हे पवित्र प्रेरितो, और हे भविष्यद्वक्ताओ, आनंद २० करो; ईश्वरने उससे तुम्हारा पलटा लिया है।

बाबिलके गिर्नेका दृष्टांत।

और एक बलवान दूतने एक पाथर बड़ी चक्कीके समान २१ उठाया और समुद्रमें फेंकके कहा कि इसी रीतिसे बाबिल बड़ी नगरी जो है सो नीचे फेंकी जायगी और फिर पाई नहीं जायगी। और बीणा बजानेहारोंके और गीत गानेहारोंके २२ और बांसली बजानेहारोंके और नरसिंगा फूंकनेहारोंके शब्द तुझमें फिर सुना नहीं जायगा। और कोई कारीगर तुझमें फिर पाया नहीं जायगा, और चक्कीका शब्द फिर तुझमें सुना नहीं जायगा, और दीपकका उज्याला तुझमें फिर नहीं २३ चमकेगा और दूलहा और दूलहीनका शब्द तुझमें फिर सुना नहीं जायगा क्योंकि सब देशोंके लोग तेरे साहूकारोंको पृथ्वीके बड़े मनुष्य हुये देखके तेरी मायासे मोहित हुये। और उसमें भविष्यद्वक्ताओंके और पवित्र लोगोंका लोहू २४

पाया गया, हां, सबोंका लोहू जो पृथ्वीपर बहाया गया सो पाया गया

१९ उन्नीसवां अध्याय।

बाबिल् बेश्याके दण्डके लिये स्वर्गके लोगोंको गीत गाना, और खीष्टका धर्म बिवाह औ दूतको भजन करानेका निषेध।

१ इसके पीछे मैंने स्वर्गमेंसे बड़ी भीड़का सा बड़ा शब्द यह कहता सुना कि परमेश्वरकी स्तुति करो, त्राण और महिमा और सन्मान और शक्ति हमारे प्रभु परमेश्वरको हो; उसके २ बिचारें जो हैं सो सत्य और ठीक हैं; उसने उस बड़ी बेश्याको दंड दिया है जिसने अपने व्यभिचारसे पृथ्वीको भ्रष्ट किया; और उसने अपने दासोंके लोहूका पलटा उसके ३ हाथसे ले लिया है। और उन्होंने फिर कहा कि परमेश्वरकी स्तुति करो, उस बेश्याका धूवां सदाही सदा उठता रहेगा। ४ और चौबीस प्राचीन और चार प्राणी जो हैं सो गिरे और उस ईश्वरका, जो सिंहासनपर बैठता है, भजन करके ५ कहा कि आमीन, परमेश्वरकी स्तुति करो। और सिंहासनपरसे एक शब्द यह कहता निकला कि हे ईश्वरके सब दासो, हे ईश्वरके माननेहारो, क्या छोटे क्या बड़े, उसीका भजन करो। और मैंने बड़ी भीड़का सा शब्द और बहुत ६ जलोंका सा शब्द, और बड़ी गरजोंका सा शब्द एक शब्द यह कहता सुना कि परमेश्वरकी स्तुति करो; प्रभु परमेश्वर ७ सर्वशक्तिमान जो है सो राज करता है, आओ, आनंदित और मगन होवें और उसकी महिमा प्रकाशित करें क्योंकि भेड़के बच्चेके बिवाहका दिन आया है और उसकी दूलहीनने ८ अपनेको सिंगारा है। और उसको यह दिया गया कि महीन सुथरी और चमकती हुई मलमलसे पहिनाई जाय; ९ महीन मलमल जो है सो पवित्र लोगोंका पुण्य है। तब उसने मुझसे कहा कि यह लिख, अर्थात, कि वेही जो भेड़के बच्चेके बिवाहके भोजनके लिये नेवते गये हैं सो धन्य हैं।

फिर उसने मुझसे कहा कि येही बातें जो हैं सो ईश्वरकी सत्य बातें हैं। और मैं उसके आराधन करनेको उसके १० पांवओंपर गिरा। इसपर उसने मुझसे कहा कि ऐसा न कर; जैसा तू और तेरे भाई, जो यीशुके विषयमें साक्षी देते हैं, ईश्वरके दास हैं तैसा मैं हूं; ईश्वरका आराधन कर क्योंकि वही साक्षी जो यीशुके विषयमें हैं आचार्य्यबाणीका सार है।

जयकारी खीष्टको दर्शन।

मैंने स्वर्ग खुला हुआ देखा; और देखो, एक श्वेत घोड़ा ११ देखनेमें आया, और वही जो उसपर बैठता था सो सच्चा और सीधा कहलाता है और वह न्याय करके बिचार और लड़ाई करता है। उसके नेत्र जो हैं सो आगकी लवर- १२ के से थे; उसके सिरपर बहुत मुकुट थे; उसका एक नाम लिखा हुआ जो उसके बिना कोई नहीं जानता; उसका १३ कपड़ा जो था सो लोहूमें डुबाया हुआ था; और उसका नाम जो है सो ईश्वरका बचन कहलाता है। स्वर्गकी सेना १४ जो है सो महीन मलमल सुथरी और चमकती हुई पहिनके श्वेत घोड़ोंपर उसके पीछे हो लेती थी। उसके मुखसे १५ चोखा खड्ग निकलता था जिससे वह देशोंके लोगोंको मारे। वह आपही लोहेके सोंटेसे उन्होंपर राज करेगा; वह आपही सर्व्वशक्तिमान ईश्वरके क्रोधकी मदिराकी कोलहूको लताड़ता है: और उसकी जांघके कपड़ा पर यही नाम १६ लिखा है, अर्थात, राजाओंका राजा और प्रभुओंका प्रभु।

मांस खानेके लिये पक्षियोंको बुलाना।

और मैंने एक दूत सूरजमें खड़ा देखा; उसने सारे १७ पंक्षियोंको, जो आकाशमें उड़ते हैं, बड़े शब्दसे यह कहा कि आओ, परमेश्वरके बड़े खानेपर एकठे होओ कि राजाओंका मांस और सेनापतियोंका मांस और बलवानोंका मांस और १८ घोड़ों और उनके सवारोंका मांस और सब निर्बंदों और बंदोंका, और छोटों और बड़ोंका मांस खाओ। और मैंने १९ उस पशुको और पृथ्वीके राजाओंको और उनकी सेनाओंको

एकठे ऊये देखा इसलिये कि वे उससे, जो घोड़ेपर बैठता
२० था, और उसकी सेनासे लड़ाई करें। और वही पशु पकड़ा
गया और उसके संग वही झूठा भविष्यद्वक्ता भी जिसने
उसके सन्मुख वेही चिन्हें दिखलाया जिनके कारणसे उसने
उस पशुके छाप रखनेहारोंको और उसकी मूरतके भजन
करनेहारोंको भुलाया। ये दोनों जीते जी उस आगकी
२१ झीलमें जो गंधकसे जलती है, डाले गये। परंतु बचे ऊये
लोग उस खड्गसे, जो उसीके मुखसे निकलता था जो घोड़ेपर
बैठता था, मार डाले गये। और सब पंछी आके उनके मांससे
टप्त ऊये।

२० बीसवां अध्याय।

एक सहस्र बर्ष पर्यन्त शैतानको बद्ध कर्ना।

१ और मैंने देखा कि एक दूतने स्वर्गसे उतरा, जिसके
२ हाथमें अथाह कुंडकी कुंजी और बड़ा जंजीर हैं। उसने
उस अजगरको अर्थात उस बूढ़ा सांपको, जो पापात्मा और
३ शैतान है, पकड़के एक सहस्र बरसतक बांधा; और अथाह
कुंडमें उसे डालके बंद किया और उसपर मुहर किया
इसलिये कि जबलों सहस्र बरस न बीत जावें तबलों देशोंके
लोगोंको फिर न भुलावे। इसके पीछे आवश्य होता है कि
थोड़े दिनतक छूट जाय।

पहिला जी उठना, औ शैतानका छूटना, औ युद्धके लिये याजूज, औ
माजूजका एकट्ठे होना औ उनका बिनाश, औ शैतानका
नरकमें डालना।

४ तब मैंने सिंहासनोंको देखा; उन्होंको जो उनपर बैठते
थे बिचार करनेका अधिकार दिया गया। और भी मैंने
उनके आत्माओंको देखा जिनके सिर यीशुको साक्षीके और
ईश्वरकी बातके लिये काट डाले गये और जिन्होंने न उस
पशुका न उसकी मूरतका भजन किया और न अपने माथेपर
और न अपने हाथपर उसका छाप लिया; वे जीते

हो खीष्टके संग सहस्र बरसतक राज करते रहे। परंतु ५
मृतकोंके बचे ऊये लोग जो थे सो, जबतक सहस्र बरस न
बीत गये, तबतक न जी गये; यह तो पहला जी उठना है।
वेही जो पहले जी उठनेके भागी हैं सो धन्य और पवित्र ६
हैं; दूसरी मृत्युका अधिकार जो है सो उन्होंपर नहीं है,
परंतु वे ईश्वरके और खीष्टके याजक होंगे, हां, वे ईश्वरके
और खीष्टके याजक हो उसके संग सहस्र बरसतक राज
करेंगे। और सहस्र बरसके बीत जानेपर शैतान अपने ७
कैदसे छूटेगा और पृथ्वीके चार कोनोंके देशोंके लोगोंके ८
भुलानेको निकल जायगा अर्थात याजूज और माजूजको
जिनकी गिनती जो है सो समुद्रकी बालूके समान है कि
उनको लड़ाईपर एकठे करे। वे पृथ्वीकी चौड़ाईपर फैलके ९
पवित्र लोगोंकी छावनी और प्यारे लोगोंका नगर घेर लेंगे।
तब स्वर्गमेंसे ईश्वरके निकटसे आग उतरेगी और उन्हें नष्ट
करेगी। पीछे शैतान, जिसने उन्हें भुलाया, उस झीलमें डाला १०
जायगा जो गंधकसे जलता है और जिसमें वह पशु और झूठा
भविष्यद्वक्ता हैं; वे रात दिन सदाही सदा कष्ट पावेंगे।

बिचारके दिनकी कथा।

तिस पीछे मैंने एक महा श्वेत सिंहासनको देखा जिसपर ११
एक बैठता था, जिसके सन्मुखसे पृथ्वी और स्वर्ग भाग गये
और फिर नहीं पाये गये। और मैंने मृतकोंको, क्या छोटे १२
क्या बड़े, ईश्वरके सिंहासनके आगे खड़े देखा। और पुस्तकें
खुल गये और एक और पुस्तक भी खुल गया जो जीवनका
पुस्तक है; और मृतक जो थे सो अपने कर्मोंके अनुसार, उन
बातोंसे जो पुस्तकमें लिखीं गईं, बिचार किये गये। और १३
समुद्रने उन मृतकोंको, जो उसमें थे, बाहिर किया; और मृत्यु
और परलोकने उन मृतकोंको, जो उनमें थे, बाहिर किया;
और एक एक अपने अपने कर्मोंके अनुसार बिचारा गया।
और मृत्यु और परलोक जो थे सो आगकी झीलमें डाले १४
गये; यही जो है सो दूसरी मृत्यु है। जिस किसीका नाम १५

जीवनके पुस्तकमें लिखा हुआ न मिला सोई आगकी झीलमें डाला गया।

२१ इक्कीसवां अध्याय।

नये आकाश मंडलका औ नयी पृथ्वीका देखना।

१ और मैंने एक नया स्वर्ग और एक नयी पृथ्वीको देखा; पहिला स्वर्ग और पहिली पृथ्वी जो थे सो जाते रहे; समुद्र भी फिर न हुआ।

नयी धर्म नगरी यिरूशालमको देखना।

२ और मुझ योहनने देखा कि स्वर्गमेंसे ईश्वरके निकटसे एक नगर नया यिरूशालम उतरा जो उस दूलहीनके नाईं सिंगारा हुआ जो अपने स्वामीके लिये सिंगारी गई है। ३ और मैंने स्वर्गमेंसे बड़ा शब्द यह कहता सुना कि देखो, ईश्वरका डेरा जो है सो मनुष्योंके बीचमें है और वह उनके बीचमें बासा करेगा; वे उसके लोग होंगे, और वह आपही ४ उनके संग होगा, हां, उनका ईश्वर होगा; और वह उनके आंखोंसे सब आंसू पोंछेगा; और न मृत्यु फिर होगी; न बिलाप, न रोना, और न पीड़ा होंगे क्योंकि ५ वे बातें जो पहिलों थीं सो सब बीत गईं हैं। और उसने, जो सिंहासनपर बैठता है, कहा कि देखो, मैं सब कुछ नया करता हूं। उसने मुझसे भी कहा कि लिख, क्योंकि ६ वे बातें जो हैं सो ठीक और सच्चीं हैं। फिर उसने मुझसे कहा कि हो गया है; मैं तो क और ज्ञ हूं, अर्थात, मैं आदि और अंत हूं; उसीको जो प्यासा है मैं जीवनकी सोतेका ७ जल सेंत दूंगा। वही जो जयमान होय सो इनका अधिकारी होगा, और मैं उसका ईश्वर हूंगा और वह मेरा पुत्र होगा। ८ परंतु अनस्थीर और अबिश्वासी और घिनौना और हत्यारा और बेश्यागामी और जादुगरें और मूरत पूजक और सब झूठे जो हैं सो उस झीलमें जो आग और गंधकसे जलती है, अपने अपने भाग पावेंगे; यह तो दूसरी मृत्यु है।

उसका तेज औ आकार औ धन औ सुखका वर्णन।

तिस पीछे उन सात दूतोंमेंसे, जो सात पीछली बिपतोंके ९ भरे ज्ञये सात पात्रोंको रखते थे, एकने मेरे निकट आके कहा कि इधर आ, मैं तुझको भेड़के बच्चेकी दूलहीन दिखाऊंगा। इसपर उसने मुझे आत्मामें किसी बड़े ऊंचे पर्बतपर ले जाके १० पवित्र नगर यिरूशालमको स्वर्गपरसे ईश्वरके निकटसे उतरते ज्ञये दिखाया। उस नगरमें ईश्वरकी ज्योति थी; उसका ११ (अर्थात नगरका) उजियाला जो था सो अनमोल रतनका सा था, हां, यसमका सा जो बिलौरके नाईं निर्मल था; उसकी १२ दीवार जो थी सो बड़ी ऊंची थी जिसमें बारह फाटक थे; और फाटकोंपर बारह दूत खड़े थे; और फाटकोंपर इस्रायेलके बारह घरानोंके नाम लिखे ज्ञये थे। पूरबको तीन १३ फाटक थे; उत्तरको तीन फाटक थे; दक्षिणको तीन फाटक थे; और पच्छिमको तीन फाटक थे। और नगरकी दीवार १४ की बारह नीवें थीं और उनपर भेड़के बच्चेके बारह प्रेरितोंके नाम लिखे ज्ञये थे। जिस दूतने मुझसे बात किई, उसीके १५ हाथमें सोनेसे बनाई ज्ञई छड़ी थी इसलिये कि वह नगरको और उसके फाटकोंको और उसके दीवारको नापे। नगर १६ जो था सो चौकोनेका था और उसकी लंबाई और चौड़ाई जो थीं सो एकही थीं। दूतने नगरको छड़ीसे नापके साढ़े सात सौ कोस पाया; उसकी लंबाई और चौड़ाई और ऊंचाई एकही थीं। उसने उसकी दीवारको नापके मनुष्यके १७ हाथके से अर्थात दूतके हाथके से एक सौ चवालीस हाथ पाया। उसकी दीवार जो थी सो यसमकी थी। नगर जो १८ था सो चोखे सोनेका जो कांच सा निर्मल था। नगरकी दीवार १९ की नीवें जो थीं सो सब प्रकारके अनमोल रतनोंसे सिंगारीं ज्ञईं। उसकी पहिली नीव जो थी सो यसमकी, दूसरी नीलमकी, तीसरी सुबचिराघकी, चौथी जमरूदकी, पांचवीं अकीक, छठवीं लाल, सातवीं सुनहरे पत्थरकी, आठवीं २० फिरोजेकी, नवीं पुखराजकी, दसवीं लाजवर्दकी, ग्यारहवीं

याकूतकी, और बारहवीं मरतीस। बारह फाटक जो थे सो
२१ बारह मोटीयां थीं,। एक एक मोटीसे एक एक फाटक
बनाया गया। और नगरकी सड़क जो थी सो कांच सा चोखे
२२ सोनेकी थी। और मैंने नगरमें कोई मंदिर नहीं देखा
क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर और भेड़का बच्चा जो हैं
सो उसका मंदिर सा हैं। और नगरको सूरज और
२३ चान्दका उजियालेका प्रयोजन नहीं कि उसमें चमकें क्योंकि
ईश्वरकी ज्योति जो है सो उसको उजियाला करती है
और भेड़का बच्चा जो है सो उसका दीपक सा है। देशोंमें
२४ से जिन्होंने मुक्ति पाई है सो उसके उजियालेमें फिरेंगे।
पृथ्वीके राजा जो हैं सो अपने ऐश्वर्य और महिमाको
२५ उसमें लावेंगे। उसके फाटकें जो हैं सो दिन भर बंद
किये नहीं जायेंगे; वहां रात कभी न होगी। और
२६ सब देशोंके लोग जो हैं सो अपने अपने ऐश्वर्य और
महिमा को उसमें लावेंगे। परंतु सब जो अपवित्र और
२७ घिनौने और झूठे हैं सो उसमें पैठने नहीं पावेंगे; केवल
वेही जिनके नाम भेड़के बच्चेके जीवनके पुस्तकमें लिखे हुये
हैं सो उसमें पैठने पावेंगे।

२२ बाईसवां अध्याय।

अमृत नदी औ अमृत वृक्षका देखना, औ ईश्वरके लोगोंका सुख।

१ तिस पीछे दूतने मुझको अमृत जलकी नदी दिखलाई जो
बिलौरके नाईं निर्मल हो ईश्वरके और भेड़के बच्चेके सिंहा-
२ सनसे निकलती थी। नगरकी सड़कके बीचमें और नदीकी
दोनों ओरोंपर जीवनदायक पेड़ थे जो बारह प्रकारका
फल लाते हैं; वे महीने महीने एक एक प्रकारके फल लाते
हैं; और उनके पत्ते जो हैं सो देशोंके लोगोंके चंगा करनेको
३ हैं। कोई सराप फिर न होगा। ईश्वरके और भेड़के
बच्चेके सिंहासन जो है सो उसमें होगा। उसके सेवक जो
४ हैं सो उसकी सेवा करेंगे; वे उसके मुखको देखेंगे; और

उसका नाम जो है सो उनके माथांपर होगा। रात वहां ५ नहीं होगी; उनको दीपक और सूरजके उजियालेका प्रयोजन नहीं होंगे क्योंकि प्रभु परमेश्वर जो है सो उनको उजियाला करेगा। और वे सदाही सदा राज करेंगे।

दूत औ खीष्टकी कथा।

उसने मुझसे कहा कि ये बातें जो हैं सो सत और सीधीं ६ हैं। पवित्र भविष्यद्वक्ताओंके प्रभु परमेश्वरने अपने दूतको भेजा है कि अपने दासोंको वेही बातें बतलावे जो जलदीसे बन पड़ेंगीं। (यीशु कहता है) कि देखो, मैं जलद आता ७ हूं; वही जो इस पुस्तककी आश्चर्यबाणीयोंको मानता है सो धन्य है।

दूतका अपनी पूजा कर्नेका निषेध।

मुझ योहनने इन बातोंको देखा और सुना; और सुन्ने और ८ देखनेपर मैंने उस दूतके पांवओंपर, जिसने मुझको ये बातें दिखलाईं, भजन करनेको गिर पड़ा। इसपर उसने मुझसे ९ कहा कि ऐसा न कर; जैसे तू और तेरे भाई भविष्यद्वक्ता और वे जो इस पुस्तककी आश्चर्य्यबाणीयोंके मान्नेहारे हैं ईश्वरके दास हैं वैसा मैं भी उसका दास हूं; ईश्वरका भजन कर। फिर उसने मुझसे कहा कि इस पुस्तककी १० आश्चार्य्यबाणीपर मुहर मत कर; समय निकट है। वही ११ जो अन्यायी है सो अन्यायी रहे; वही जो अशुचि है सो अशुचि रहे; वही जो सच्चा है सो सच्चा रहे; और वही जो पवित्र है सो पवित्र रहे।

खीष्टकी कथा।

देखो, मैं यीशु जलदीसे आता हूं, और मैं एक एक मनुष्य- १२ को, उसके कर्मके अनुसार, फल दूंगा। मैं ता क और ह्ल १३ हूं, अर्थात आदि और अंत हूं, और पहिला और पीछला हूं। वेही जो उसकी आज्ञाओंको मानते हैं सो धन्य हैं; उनको १४ जीवनके पेड़के फल खानेका अधिकार होगा और वे फाटकों- से नगरमें पैठेंगे। परंतु कुत्ते जो हैं अर्थात जादुगरें और १५

बेश्यागामी और हत्यारे और मूरत पूजक और सब जो
१६ झूठको चाहते और करते हैं, बाहिर हैं। मुझ यीशुने
अपने दूतको भेजा है कि वह मंडलियोंको इन बातोंकी साक्षी
देवे। मैं जो हूं सो दायूदका जड़ और फल हूं, और
१७ चमकीला और भोरका तारा हूं। आत्मा और दूलहीन जो
हैं सो यह कहते हैं कि आ; वही जो सुनता है सो
भी कहता है कि आ; और वही जो प्यासा है सो आवे;
और वही जो चाहता है सो अमृत जल सेंतसे लेवे।

इसी पुस्तकके न्यूनाधिक करनेहारेपर शाप औ मंगल प्रार्थना।

१८ मैं सबोंको, जो इस पुस्तककी आश्चर्यबाणीयोंको सुनते
हैं, कहता हूं कि जो कोई इन बातोंपर कोई और बात
लगावे तो ईश्वर जो है सो उसपर उन बिपतोंको, जो इस
१९ पुस्तकमें लिखीं हैं, लगा देगा; और जो कोई इस पुस्तककी
आश्चर्यबाणीयोंसे कोई बात निकाल डाले तो ईश्वर जो है
सो उसका भाग जीवनकी पुस्तकमेंसे और पवित्र नगरसे
२० और उन बातोंसे जो इस पुस्तकमें लिखीं हैं, काटेगा। वही
जो इन बातोंकी साक्षी देता है सोई यह कहता है कि मैं
जलदीसे आता हूं। आमीन। हां, हे प्रभु यीशु, आ। हमारे
प्रभु यीशु ख्रीष्टका अनुग्रह जो है सो तुम सबोंका होवे।
आमीन।